अर्रहीक़ुल मख़्तूम

सीरत-ए-नबवी ﷺ

पर दुनिया भर में अव्वल ईनाम याफ़्ता किताब

मौलाना सफ़िय्युर्रहमान मुबारकपुरी
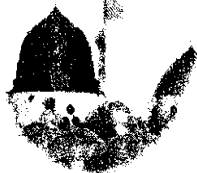
अर्रहीक़ुल मख़्तूम

सीरत-ए-नबी ﷺ

पर दुनिया भर में अव्वल ईनाम याफ़ता किताब

लेखक: मौलाना सफ़िय्युर्रहमान मुबारकपुरी

www.idaraimpex.com

पुस्तक का नाम :

अर्रहीक़ुल मख़्तूम

Ar-Raheequl Makhtoom

लेखक: मौलाना सफ़िय्युर्रहमान मुबारकपुरी

अनुवादक : अहमद नदीम नदवी

सम्पादक : मुहम्मद सलीम

प्रकाशन 2014

ISBN 81-7101-649-9

TP 259 14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar

New Delhi-110 025 (India)

Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545

Email: **sales@idaraimpex.com**

Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typeset at: DTP Division

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT

P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

किताब का परिचय

الحمد لله والصلاة والسلام على رسول الله وعلى آله وصحبه ومن والاه اما بعد

यह रबीउल अव्वल सन् 1396 हि० (मार्च 1976 ई०) की बात है कि कराची में इस्लामी जगत की पहली सीरत कान्फ्रेंस (हज़रत मुहम्मद की जीवनी पर आधारित कान्फ्रेंस) हुई, जिस में राबिता-ए-आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और इस कान्फ्रेंस के अन्त में सारी दुनिया के क़लमकारों को दावत दी कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (चरित्र व आचरण) के विषय पर दुनिया की किसी भी जीवित भाषा में लेख लिखें। पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं पोज़ीशन हासिल करने वालों को क्रमवार पचास, चालीस, तीस, बीस और दस हज़ार रियाल के इनाम दिए जाएंगे। यह एलान राबिता के सरकारी आर्गन अख़बारुल आलमिल इस्लामी के कई अंकों में छपा, लेकिन मुझे इस प्रस्ताव और एलान के बारे में समय पर जानकारी न हो सकी।

कुछ दिनों बाद जब मैं बनारस से अपने वतन (घर) मुबारकपुर गया तो मेरे फुफेरे भाई माननीय उस्ताद (गुरू) मौलवी अब्दुर्रहमान साहब मुबारकपुरी हफ़िज़हुल्लाह (इब्ने शैखुल हदीस मौलवी उबैदुल्लाह रहमानी साहब मुबारकपुरी हफ़िज़हुल्लाह) ने मुझ से इसका ज़िक्र किया और ज़ोर दिया कि मैं भी इस मुक़ाबले में हिस्सा लूं। मैंने अपनी

अज्ञानता और अनुभवहीनता की विवशता बताई, पर मौलावी साहब आग्रह करते रहे और बार-बार विवशता दिखाने पर फ़रमाया, कि मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि इनाम मिले, बल्कि मैं चाहता हूं कि इसी "बहाने" एक "काम" हो जाए। मैं उनके बराबर आग्रह करने पर चुप तो हो गया, लेकिन नीयत यही थी कि इस मुक़ाबले में हिस्सा नहीं लूंगा।

कुछ दिनों बाद जमीअ़त अहले हदीस हिंद के आर्गन पन्द्रह रोज़ा 'तर्जुमान दिल्ली' में राबिता के इस प्रस्ताव और एलान का उर्दू अनुवाद छपा तो मेरे लिए एक अनोखी स्थिति पैदा हो गई। जामिया सलफ़िया के डिग्री और सेकेंड्री छात्रों में से आम तौर से जिस किसी से सामना होता, वह मुझे इस मुक़ाबले में शरीक होने की सलाह देता। सोचा कि शायद दुनिया के लोगों के ये बोल "अल्लाह का नक़्क़ारा" है, फिर भी मुक़ाबले में हिस्सा न लेने के अपने दिली फ़ैसले पर मैं लगभग अटल रहा, कुछ दिनों बाद छात्रों के "मश्वरे" और "तक़ाज़े" भी लगभग ख़त्म ही हो गये, पर कुछ छात्र अपने तक़ाज़े पर क़ायम रहे। कुछ ने लेख (पुस्तक) के स्वरूप को वार्ता का विषय बना रखा था और कुछ का उभारना तो आग्रह की सीमाओं को छू रहा था। अंत में बड़ी झिझक के बाद मैं तैयार हो गया।

काम शुरु किया, लेकिन थोड़ा-थोड़ा, कभी-कभी और धीमे तरीक़े से। चुनांचे अभी बिल्कुल शुरु ही हुआ था कि रमज़ान की बड़ी छुट्टी का वक़्त आ गया। इधर राबिता ने आने वाले मुहर्रमुल-हराम की पहली तारीख़ को लेखों के वसूल होने की आख़िरी तारीख़ तय किया था। इस तरह लेख पूरा करने के वक़्त में से साढ़े पांच माह गुज़र चुके थे और ज़्यादा से ज़्यादा साढ़े तीन महीने में लेख पूरा करके डाक के सुपुर्द कर देना ज़रूरी था, ताकि समय पर पहुंच जाए और इधर अभी सारा काम बाक़ी था। मुझे यक़ीन नहीं था कि इस थोड़ी सी मुद्दत में मुसव्वदा तैयार करना, उसे दोबारा देखना, नक़्ल करना और साफ़ करने का काम हो

सकेगा, पर आग्रह करने वालों ने चलते-चलते ताकीद की कि किसी तरह के ढीलेपन और डगमगाहट के बिना काम में जुत जाऊं। रमज़ान के बाद "सहारा" दिया जाएगा। मैंने भी फ़ुर्सत के दिनों को ग़नीमत समझा। क़लम को घोड़े की लगाम कसी, और मेहनत और छानबीन के भारी समुद्र में कूद पड़ा। पूरी छुट्टी सुहाने सपनों के कुछ क्षणों की तरह गुज़र गई। और ये लोग वापस पलटे तो लेख का दो तिहाई हिस्सा तैयार किया जा चुका था, चूंकि मुसव्वदे को दोबारा देखने का मौक़ा न था, इसलिए अस्ल मुसव्वदा ही इन लोगों के हवाले कर दिया कि नक़्ल व सफ़ाई और देख भाल का काम कर डालें। बाक़ी हिस्से की कुछ दूसरी ज़रूरी चीज़ों को जुटाने और तैयार करने में भी उनसे किसी हद तक सहयोग लिया। जामिया की ड्युटी और गहमा-गहमी शुरू हो चुकी थी, इसलिए छुट्टियों के समय की रफ़्तार बाक़ी रखना सम्भव न था, फिर भी डेढ़ महीने बाद जब ईदे अज़्हा की छुट्टी का समय आया तो रतजगों की बरकत से लेख तैयारी के आख़िरी मरहले में था जिसे तेज़ी की एक छलांग ने आख़िर तक पहुंचा दिया और मैंने मुहर्रम के शुरू के बारह-तेरह दिन पहले यह लेख डाक के हवाले कर दिया।

महीनों बाद मुझे राबिता के दो रजिस्टर्ड पत्र 8-10 दिन आगे-पीछे वसूल हुए। खुलासा यह था कि मेरा लेख राबिता की मुक़र्रर की हुई शर्तों के मुताबिक़ है, इसलिए मुक़ाबले में शरीक कर लिया गया है। मैंने इत्मीनान की सांस ली।

इसके बाद दिन पर दिन बीतते गए, यहां तक कि डेढ़ साल की मुद्दत बीत गयी, मगर राबिता बिल्कुल चुप। मैंने दोबारा ख़त लिख कर मालूम करना भी चाहा कि इस सिलसिले में क्या हो रहा है तो भी चुप्पी न टूटी। फिर मैं खुद अपने कामों और मस्अलों में उलझ कर यह बात लगभग भूल गया कि मैंने किसी "मुक़ाबले" में हिस्सा लिया है।

शाबान के शुरू में सन् 1398 हि० (6-7-8 जुलाई 1978) को

कराची (पाकिस्तान) में पहली कुल एशिया इस्लामी कांफ्रेंस आयोजित हो रही थी। मुझे उसकी कार्यवाहियों से दिलचस्पी थी। इसलिए उसके ताल्लुक़ से अख़बार के कोनों में दबी हुई ख़बरें भी ढूंढ कर पढ़ता था, एक दिन भदोही स्टेशन पर ट्रेन के इन्तिज़ार में----जो लेट थी----- अख़बार देखने बैठ गया। अचानक एक छोटी सी ख़बर पर नज़र पड़ी कि इस कांफ्रेंस की किसी मीटिंग में राबिता ने "सीरत निगारी" (प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी पर आधारित लेखों) के मुक़ाबले में कामियाब होने वाले पांच नामों का एलान कर दिया है और उन में एक लेख लिखने वाला भारतीय भी है। यह ख़बर पढ़ कर भीतर ही भीतर तलब बढ़ती रही। बनारस वापस आकर विस्तार से जानना चाहा, मगर कोई नतीजा न निकला।

10 जुलाई 1978 ई० को चाश्त के वक़्त----पूरी रात मुनाज़रा बजरडीहा की शर्तें तय करने के बाद बेख़बर सो रहा था कि अचानक कमरे से मिली सीढ़ियों पर छात्रों का शोर व हंगामा सुनाई पड़ा और आंख खुल गई। इतने में छात्रों का रेला कमरे के अंदर था। उनके चेहरों पर अथाह हर्ष के चिन्ह और ज़ुबानों पर मुबारकबादी के शब्द थे।

"क्या हुआ? क्या विरोधी ने मुनाज़रा करने से इंकार कर दिया?" मैंने लेटे ही लेटे पूछा?

"नहीं, बल्कि आप सीरतनिगारी (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी पर आधारित लेख लिखने) के मुक़ाबले में प्रथम आ गए।"

"अल्लाह! तेरा शुक्र है! आप लोगों को यह बात कैसे मालूम हुई?" मैं उठ कर बैठ चुका था।

"मौलवी उज़ैर शम्स यह ख़बर लाए हैं।"

"मौलवी उज़ैर यहां आ चुके हैं?"

"जी हां।"

और कुछ क्षणों बाद मौलवी उज़ैर मुझे विस्तार में बता रहे थे।

फिर 22 शाबान सन् 1398 हि० (29 जलाई सन् 1978 ई०) को राबिता की रजिस्ट्री मिली, जिसमें कामियाबी की ख़बर के साथ खुशख़बरी भी लिखी थी कि मुहर्रम 1399 हि० को मक्का मुकर्रमा में राबिता के आफ़िस में पुरस्कार वितरण (इनाम की तक़्सीम) के लिए एक प्रोग्राम होगा और इस में मुझे शरीक होना है। यह प्रोग्राम मुहर्रम के बजाए 12 रबीउल आख़िर 1399 हि० को हुआ।

इस प्रोग्राम की वजह से मुझे पहली बार हरमैन शरीफ़ैन (मक्का-मदीना) की ज़ियारत (दर्शन) का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 10 रबीउल आख़िर, जुमेरात (बृहस्पतिवार) के दिन अस्र से कुछ पहले मुकर्रमा के नूर से चमचमाते माहौल में दाख़िल हुआ। तीसरे दिन साढ़े आठ बजे राबिता में हाज़िरी का हुक्म था। यहां ज़रूरी कार्यवाहियों के बाद लगभग दस बजे कुरआन पाक की तिलावत से प्रोग्राम शुरू हुआ। सऊदी न्यायालय के चीफ़ जस्टिस शैख़ अ़ब्दुल्लाह बिन हुमैद रह० सभा के अध्यक्ष थे। मक्का के नायब गवर्नर अमीर सऊद बिन अ़ब्दुल मोहसिन जो स्वर्गीय मलिक अ़ब्दुल अज़ीज़ के पोते हैं--------पुरस्कार बांटने के लिए तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने संक्षिप्त भाषण दिया। उनके बाद राबिता के असिस्टेंट सेक्रेट्री जनरल शैख़ अ़ली अल-मुख़्तार ने सम्बोधित किया। उन्होंने किसी हद तक विस्तार से बताया कि यह इनामी मुक़ाबला क्यों हुआ? और फ़ैसले के लिए क्या कार्य-पद्धति अपनायी गयी। उन्होंने साफ़ किया कि राबिता को मुक़ाबले के एलान के बाद एक हज़ार से ज़्यादा (यानी 1182) लेख मिले, जिनके अलग-अलग पहलुओं का जायज़ा लेने के बाद आरंभिक कमेटी ने एक सौ तिरासी (183) लेखों को मुक़ाबले के लिए चुना और आख़िरी फ़ैसले के लिए उन्हें शिक्षा मंत्री शैख़ हसन बिन अ़ब्दुल्लाह आले अश-शैख़ के नेतृत्व में क़ायम विशेषज्ञों की आठ सदस्यीय कमेटी के सुपुर्द कर दिया।

कमेटी के ये आठों सदस्य मलिक अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ यूनिवर्सिटी जद्दा की शाखा कुल्लीयतुश शरीआः (और अब जामिया उम्मुल कुरा) मक्का मुकर्रमा के उस्ताद और सीरते नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और इस्लामी तारीख़ के विशेषज्ञ हैं, इनके नाम ये हैं---

1. डा० इब्राहीम अ़ली शऊत,
2. डा० अहमद सय्यैद दर्राज,
3. डा० अ़ब्दुर्रहमान फ़हमी मुहम्मद,
4. डा० फ़ाइक़ बक्र सव्वाफ़,
5. डा० मुहम्मद सईद सिद्दीक़ी,
6. डा० शाकिर महमूद अ़ब्दुलमुनअ़िम,
7. डा० फ़िक्री अहमद उकाज़,
8. डा० अ़ब्दुल फ़त्ताह मंसूर,

इन विशेषज्ञों ने बराबर छान-बीन करते रहने के बाद एक राय होकर पांच लेखों के नीचे लिखे क्रम के साथ इनाम का हक़दार ठहराया---

1. अर्रहीक़ुल मख़्तूम (अ़रबी), लेखक--सफ़िय्युर्रहमान मुबारकपुरी, जामिया सलफीया, बनारस, भारत (प्रथम)

2. ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (अंग्रेज़ी) लेखक--डा० माजिद अ़ली ख़ां, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली, भारत (द्वितीय)

3. पैग़म्बरे आज़म व आख़िर (उर्दू) लेखक—डा० नसीर अहमद नासिर, वाइस चांसलर जामिया मिल्लिया इस्लामिया, भावलपूर, पाकिस्तान (तृतीय)

4. मुंतक़न नुक़ूल फ़ी सीरते आज़म रसूल (अ़रबी), लेखक—शैख़ हामिद महमूद बिन मुहम्मद मंसूर लैमूद, जीज़ा मिस्र (चतुर्थ)

5. सीरतु नबी यिल-हुदा वर्रहमा (अ़रबी) लेखक--उस्ताद अ़ब्दुस्सलाम हाशिम हाफ़िज़ मदीना मुनव्वरा, सऊदी अ़रब (पंचम)

असिस्टेन्ट सेक्रेट्री जनरल मोहतरम शैख़ अली अल-मुख़्तार ने इन बातों के बाद हौसला बढ़ाने वाले मुबारकबाद भरे और दुआओं वाले शब्दों पर अपना भाषण समाप्त किया।

इसके बाद मुझे अपना विचार रखने के लिए बुलाया गया। मैंने अपने संक्षिप्त भाषण में राबिता को भारत के अंदर दावत व तब्लीग़ के कुछ ज़रूरी मगर छोड़ दिए गए अंशों की ओर तवज्जोह दिलायी, और इसके ऐसे नतीजों और असरों (प्रभाव) की ओर तवज्जोह दिलायी, जिसकी आशा की जाती है। राबिता की ओर से इसका हौसला बढ़ाने वाला जवाब दिया गया।

इसके बाद अमीरे मोहतरम सऊद बिन अ़ब्दुल मोहसिन ने क्रम से पांचों पुरस्कार दिए और कुरआन की तिलावत पर सभा समाप्त हुई।

17 रबीउल आख़िर, जुमेरात (बृहस्पतिवार) के दिन हमारे क़ाफ़िले का रुख़ मदीना मुनव्वरा की ओर था। रास्ते में बद्र के एतिहासिक जंगी (लड़ाई के) मैदान को थोड़ी देर देख कर आगे बढ़े तो अ़स्र से कुछ पहले हरमे नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दर व दीवार का जलाल व जमाल निगाहों के सामने था। कुछ दिन बाद एक सुबह ख़ैबर भी गए और वहां का एतिहासिक क़िला अंदर और बाहर से देखा, फिर कुछ घूम-फिर कर संध्या-समय मदीना मुनव्वरा को वापस हुए और आख़िरी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जलवा गाह, जिब्रीले अमीन के उतरने की जगह, फ़रिश्तों के आने के ठिकाने और इस्लाम के इस क्रान्ति-केन्द्र में दो सप्ताह गुज़ार कर देखने के शौक़ ने फिर हरमे काबा की राह ली, यहां तवाफ़ व सअ़ी (दौड़) के "हंगामे" में और एक सप्ताह बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। नातेदारों, दोस्तों, बुज़ुर्गों, आ़लिमों और बड़ों ने, क्या मक्का, क्या मदीना, हर जगह हाथों-हाथ लिया। यूं मेरे सपनों-कामनाओं की पवित्र धरती हिजाज़े मुक़द्दस के अंदर एक महीने की मुद्दत आंख झपकते ही गुज़र गयी और मैं फिर भारत वापस आ गया।

حیف در چشم زدن صحبت یار آخر شد   روئے گل سیر ندیدیم و بہار آخر شد

(अफ़सोस, आंख झपकते ही यार की संगति का अंत हो गया। फूल के चेहरे को देखने से अभी जी न भरा था कि बहार का अंत हो गया)

हिजाज़ से वापस हुआ तो भारत व पाक के उर्दू जानने वालों की ओर से किताब का उर्दू में अनुवाद करने का तक़ाज़ा शुरू हो गया, जो कई वर्ष बीत जाने के बाद भी बराबर चलता रहा। इधर नयी-नयी मसरूफ़ियात इतनी सामने आती गई कि अनुवाद के लिए समय निकालना असंभव सा था, फिर भी मसरूफ़ियात की इस भीड़ में अनुवाद शुरू कर दिया गया और अल्लाह का बहुत अधिक शुक्र है कि कुछ महीनों की थोड़ी कोशिश से पूरा हो गया।

وَلِلّٰهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ

आख़िर में मैं उन तमाम बुज़ुर्गों, दोस्तों और नातेदारों का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी समझता हूं, जिन्होंने इस काम में किसी भी तरह मुझे सहयोग दिया, ख़ास तौर से मान्य उस्ताद मौलवी अब्दुर्रहमान साहब रहमानी और प्रिय जन शैख़ उज़ैर साहब और हाफ़िज़ मुहम्मद इलयास साहब, मदीना युनिवर्सिटी से पढ़ कर फ़ारिग़ लोगों का कि उनके मश्वरे और प्रोत्साहन ने मुझे थोड़े से समय में इस पुस्तक की तैयारी में बड़ी सहायता पहुंचाई। अल्लाह इन सब को अच्छा बदला दे, अल्लाह हमारा समर्थक व सहायक हो। किताब को कुबूल फ़रमाए और लिखने वाले और मदद करने वालों और फ़ायदा उठाने वालों के लिए कल्याण और मुक्ति का साधन बनाए। आमीन!

सफ़ियुर्रहमान मुबारकपुरी

13 रमज़ानुल मुबारक 1404 हि०

आत्म-कथा

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على سيد الأولين والآخرين،
محمّد خاتم النبيين، وعلى آله وصحبه اجمعين، امّا بعد،

चूंकि राबिता-ए-आलमे इस्लामी ने सीरत-ए-नबवी (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी पर लेख लिखने) के मुक़ाबले में हिस्सा लेने वालों को पाबन्द किया है कि वे अपनी ज़िंदगी के हालात भी लिखें, इसलिए नीचे की पंक्तियों में अपनी सादा ज़िंदगी के बारे में कुछ बातें पेश कर रहा हूं।

वंश

सफ़िय्युर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अकबर बिन मुहम्मद अली बिन अब्दुल मोमिन बिन फ़क़ीरुल्लाह मुबारकपुरी आज़मी।

जन्म

सर्टीफ़िकेट में मेरा जन्म 6 जून 1943 ई० लिखा हुआ है, लेकिन यह अनुमान की बात है। खोज करने पर मालूम हुआ है कि जन्मतिथि 1942 ई० के मध्य की है। जन्म-स्थली गांव हुसैनाबाद है जो मुबारकुर के उत्तर में एक मील की दूरी पर एक छोटी सी बस्ती है। मुबारकपुर ज़िला आज़मगढ़ का एक मशहूर, इल्मी (पढ़ा-लिखा) और औद्योगिक क़स्बा है।

शिक्षा

मैंने बचपन में कुरआन मजीद का कुछ हिस्सा अपने दादा और चचा से पढ़ा, फिर 1948 ई० में मदरसा दारुत्तालीम मुबारकपुर में दाख़िल हुआ। वहां छः साल रह कर प्राइमरी कक्षा और मिडिल कोर्स की शिक्षा पूरी की। कुछ फ़ारसी भी पढ़ी। इसके बाद जून 1954 ई० में मदरसा एहयाउल-उलूम मुबारकपुर में दाख़िल हुआ और वहां अरबी भाषा और व्याकरण (नह्व व सर्फ़) और कुछ दूसरी कलाओं की शिक्षा प्राप्त करनी शुरू की। दो वर्ष बाद मदरसा फ़ैज़े आम मऊ पहुंचा। इस मदर्से (स्कूल) को इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्कूल की हैसियत हासिल है और मऊ नाथ भंजन क़स्बा मुबारकुर से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

फ़ैज़े आम में मेरा दाख़िला मई सन् 1956 ई० में हुआ। मैंने वहां पांच साल बिताए और अरबी भाषा, व्याकरण और शरई ज्ञान-विज्ञान अर्थात तफ़्सीर, हदीस, उसूले हदीस, फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह आदि की शिक्षा प्राप्त की। जनवरी सन् 1961 ई० में मेरी शिक्षा पूरी हो गयी और मुझे बाक़ायदा शहादतुत्तख़र्रुज (यानी सनदे तक्मील) दे दी गई। यह सनद (प्रमाण-पत्र) फ़ज़ीलत फ़िश्शरीअः और फ़ज़ीलत फ़िल उलूम की सनद है और पढ़ाने और फ़त्वा देने की इजाज़त पर सम्मिलित है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे तमाम परीक्षाओं में डिस्टिंकशन मार्क्स (नुमायां नम्बरों) से सफलता मिलती रही।

पढ़ाई के समय में मैंने इलाहाबाद बोर्ड की परीक्षाओं में भी शिरकत की। फ़रवरी 1959 ई० में मौलवी और फ़रवरी 1960 ई० में आलिम की परीक्षाएं दीं और दोनों में फ़र्स्ट डिवीज़न से सफल रहा।

फिर एक लम्बी मुद्दत के बाद अध्यापकों से मुताल्लिक़ नयी परिस्थितियों को दृष्टि में रख कर मैंने फ़रवरी 1976 ई० में "फ़ाज़िले अदब" (और फ़रवरी 1978 ई० में फ़ाज़िले दीनियात) की परीक्षा दी और अल्लाह का शुक्र है कि दोनों में फ़र्स्ट डिवीजन से सफल हुआ।

जीवन की कुछ उपलब्धियां

1961 ई० में "मदरसा फ़ैज़े आम" से फ़ारिग़ होकर मैंने ज़िला इलाहाबाद, फिर शहर नागपुर में पढ़ने-पढ़ाने और बोलने व भाषण देने का कार्य अपनाया। दो साल बाद मार्च 1963 ई० में मादरे इल्मी मदरसा फ़ैज़े आम के नाज़िमें अअ्ला (सब से बड़े ज़िम्मेदार) ने मुझे पढ़ाने के काम के लिए बुलाया, लेकिन मैंने वहां दो साल मुश्किल से गुज़ारे थे कि परिस्थितियों ने अलग होने पर मजबूर कर दिया, अगला साल "जामिअ़तुर्रशाद" आज़मगढ़ की भेंट चढ़ा और फ़रवरी 1966 ई० से मदरसा दारुल-हदीस मऊ की दावत पर वहां अध्यापक हो गया। तीन साल यहां गुज़ारे और पढ़ाने के अ़लावा नायब सदर मुदर्रिस (उप हेड मास्टर) की हैसियत से शैक्षिक मामलों और आन्तरिक प्रबन्धों की निगरानी में भी शरीक रहा। फिर इस्तीफ़ा देकर मदरसा फ़ैज़ुल उलूम सिवनी की सेवा में जा लगा, जो मऊ नाथ भंजन से कोई सात सौ किलोमीटर मध्य प्रदेश में स्थित है। वहां जनवरी 1969 से मैंने पढ़ाने की ज़िम्मेदारी निभाने के अ़लावा हेड मास्टर की हैसियत से मदरसे के तमाम बाहरी-भीतरी इन्तिज़ामों की ज़िम्मेदारी भी संभाली और जुमा का ख़ुत्बा देना और आस-पास के देहातों में जा-जा कर दावत व तब्लीग़ का काम करना भी अपने रोज़ के कामों में शामिल किया।

फिर 1972 के आख़िर से मदरसा दारूत-तालीम मुबारकपुर में पढ़ाने की ज़िम्मेदारी संभाली और 2 साल बाद अकतूबर 1974 ई० में जामिया सलफ़ीया आ गया, जब से यहीं काम कर रहा हूं।

किताबें जो लिखी गयीं

पढ़ाई पूरी कर लेने के बाद मैंने इस लम्बी मुद्दत में कुछ न कुछ पढ़ने-पढ़ाने के साथ-साथ लिखने-पढ़ने का काम भी जारी रखा। चुनांचे मेरी मुख्य पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

(1) तज़किरा-ए-शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

(1972): यह किताब चार बार छप चुकी है।

(2) तारीख़े आले सऊद (उर्दू सन् 1972 ई०)

यह किताब दो बार छप चुकी है।

(3) इत्तिहाफुल किराम, तालीक़ बुलूगुल मराम लि-इब्ने हजर अस्क़लानी (अरबी) 1974ई० में प्रकाशित

(4) क़ादियानियत, अपने आईने में

(उर्दू 1976 ई०) प्रकाशित,

(5) फ़ित्न-ए-क़ादियानियत और मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी

(उर्दू, 1976 ई०) प्रकाशित,

(6) अर्रहीकुल मख़्तूम, राबिता-ए-आलमे इस्लामी में पेश करने के लिए लिखी गई।

(7) इंकारे हदीस, हक़ या बातिल?

(उर्दू 1977 ई०) प्रकाशित

(8) रज़्मे हक़ व बातिल

(मुनाज़रा बजडीहा की रिपोर्ट सन् 1978 ई०) प्रकाशित

(9) इबराज़ुल हक़ वस्सवाब फ़ी मस्अलतिस्सुफ़ूर वल हिजाब

(अरबी 1978 ई०) परदे से मुताल्लिक़ अल्लामा डा० तक़ीयुद्दीन हिलाली मराकशी की राय पर नक़्द (आलोचना) है और पत्रिका अल-जामियतुस्सलफ़ीया में क़िस्तों में छपा है।

(10) ततव्वरुश-शुऊब वद्दयानातु फ़िल हिन्द व मजालुद्दावतिल इस्लामीया फ़ीहा

(अरबी 1979 ई०) कुछ क़िस्तें पत्रिका 'अल-जामियतुस्सलफ़ीया' में छप चुकी हैं।

(11) अल-फ़िर्क़तुन्नाजीया वल फ़िरकुल इस्लामियतिल-उख़रा

(अरबी 1982 ई०) अप्रकाशित

(12) इस्लाम और अदमे तशद्दुद

(उर्दू 1984 ई०) प्रकाशित (हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद भी छप चुका है)

(13) अहले तसव्वुफ़ की कारस्तानियां

(उर्दू 1986 ई०) प्रकाशित

(14) अल-अहज़ाबुस्सियासीया फ़िल इस्लाम

(अरबी 1986 ई०) प्रकाशित

इन पुस्तकों के अलावा मासिक "मुहद्दिस" बनारस की एडिटरशिप की ज़िम्मेदारियां भी निभा रहा हूं।

والله الموفق وازمة الامور كلها بيده ربنا تقبله منا بقبول حسن وانبته نباتا حسناً

इस किताब के बारे में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الحمد لله الذى ارسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله، فجعله شاهدا ومبشرا ونذيرا، وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا، وجعل فيه اسوة حسنة لمن كان يرجو الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا، اللّٰهم صل وسلم وبارك عليه وعلى آله وصحبه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، وفجرلهم ينابيع الرحمة والرضوان تفجيرا، اما بعد

यह बड़ी ख़ुशी की बात है कि रबीउल-अव्वल सन् 1396 हि० में पाकिस्तान के अंदर होने वाली सीरत कान्फ्रेंस के अंत में राबिता-ए-आ़लमे इस्लामी ने सीरत (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जीवन-चरित्र) के विषय पर लेख लिखने का एक विश्वव्यापी मुक़ाबला करने का एलान किया है, जिसका उद्देश्य यह है कि क़लमकारों में एक तरह की उमंग और चिन्तनात्मक खोजों में एक तरह का मेल पैदा हो। मेरे विचार में यह बड़ा मुबारक क़दम है, क्योंकि अगर गहराई में जाकर देखा जाए तो मालूम होगा कि हक़ीक़त में नबी की सीरत और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मिसाली ज़िंदगी ही वह अकेला स्त्रोत है जिससे इस्लामी दुनिया की ज़िंदगी और इंसानी समाज की बेहतरी के स्त्रोत फूटते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते बा बरकात पर अनगिनत दरूद व सलाम हो।

फिर यह मेरी भलाई और ख़ुशक़िस्मती होगी कि मैं भी इस मुबारक मुक़ाबले में शिरकत करूं, लेकिन मेरी हैसियत ही क्या है कि मैं प्यारे और अगले पिछले लोगों के सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िंदगी पर रोशनी डाल सकूं। मैं तो अपना सारा सौभाग्य और पूरी सफलता इसी में समझता हूं कि मुझे आपकी रोशनी का कुछ हिस्सा मिल जाए, ताकि मैं अंधेरों में भटक कर हलाक होने के बजाए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक उम्मती (मानने वाले) की हैसियत से आपके चमचमाते रास्ते पर चलता हुआ ज़िंदगी गुज़ारूं और इसी रास्ते में मेरी मौत भी आए और फिर आपकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) की बरकत से अल्लाह मेरे गुनाहों पर माफ़ी की क़लम फेर दे।

एक छोटी सी बात अपनी इस किताब की शैली के बारे में भी कहने की ज़रूरत महसूस कर रहा हूं और वह यह है कि मैंने किताब लिखने से पहले ही तय कर लिया था कि इसे बोझ बन जाने वाली लम्बाई और मक़सद अदा न कर पाने वाले संक्षेप, दोनों से बचते हुए बीच वाली मोटाई में लिखूंगा, लेकिन जब सीरत की किताबों पर निगाह डाली तो देखा कि घटनाओं के क्रम और छोटी-छोटी बातों की तफ़्सील में बड़ा मतभेद है, इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि जहां-जहां ऐसी शक्ल सामने आए, वहां वार्ता के हर पहलू पर नज़र दौड़ा कर और भरपूर छान-फटक करके जो नतीजा निकालूं उसे असल किताब में लिख दूं। और दलीलों और गवाहों की तफ़्सील और तर्जीह की वज्हों का ज़िक्र न करूं, वरना किताब अनचाही सीमा तक लम्बी हो जाएगी, अलबत्ता जहां यह डर हो कि मेरी रिसर्च (जाँच पड़ताल) पढ़ने वालों के लिए हैरत और ताज्जुब की वजह बनेगी, या जिन घटनाओं के सिलसिले में आ़म लिखने वाले कोई ऐसा चित्र सामने लाए हों जो मेरे हिसाब से सही न हो, वहां दलीलों की ओर भी इशारा कर दूं।

ऐ अल्लाह! मेरे लिए दुनिया और आख़िरत की भलाई तय फ़रमा। तू यक़ीनी तौर पर माफ़ करने वाला और देने वाला है, अ़र्श का मालिक है और बुज़ुर्ग व बरतर है।

जुमा
24 रजब 1396 हि० मुताबिक़
23 जुलाई 1976 ई०

सफ़िय्युर्रहमान मुबारकपुरी
जामिया सलफ़ीया
बनारस, भारत

इस्लाम के प्रारम्भ में अरब की स्थिति

अरब...... भूभाग और क़ौमें

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत (चरित्र-आचरण आदि), वास्तव में रब के उस संदेश के व्यवहारिक प्रतिबिन्ब का नाम है, जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इंसानी गिरोह के सामने रखा था और जिसके द्वारा इंसान को अंधेरों से निकाल कर रोशनी में और बंदों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल कर दिया था। चूंकि इस पाक सीरत का पूरा नक़्शा खींचना संभव नहीं, जब तक कि रब के उस पैग़ाम (संदेश) के उतरने से पहले के हालात और बाद के हालात का मुक़ाबला न किया जाए, इसलिए असल वार्ता से पहले इस अध्याय में इस्लाम के पहले की अ़रब क़ौमों और उनके हालात बताते हुए उन हालात का चित्र दिया जा रहा है, जिनमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भेजे गए थे।

अरब का भूभाग

अ़रब शब्द का मूल अर्थ है बिना घास-पानी की वीरान ज़मीन, पुराने समय से यह शब्द अरब प्रायद्वीप और उसमें बसने वाली क़ौमों के लिए बोला गया है।

अरब के पश्चिम में लाल सागर और सीना प्रायद्वीप है। पूरब में अरब खाड़ी और दक्षिणी इराक़ का एक बड़ा भाग है। दक्षिण में अरब सागर है जो वास्तव में हिन्द सागर का फैलाव है। उत्तर में शाम

(सीरिया) देश और किसी हद तक उत्तरी इराक़ है। इनमें से कुछ सीमाओं के बारे में मतभेद भी है। कुल क्षेत्र का अंदाज़ा दस लाख से तेरह लाख वर्ग मील तक किया गया है।

अरब प्रायद्वीप प्राकृतिक और भौगोलिक दृष्टि से बड़ा महत्व रखता है। आन्तरिक रूप से यह हर तरफ़ से मरूस्थल से घिरा हुआ है, जिसके कारण यह ऐसा सुरक्षित क़िला बन गया है कि बाहरी क़ौमों के लिए उस पर क़ब्ज़ा करना और अपना प्रभाव फैलाना बहुत कठिन है। यही वजह है कि अरब प्रायद्वीप के मध्य के निवासी प्राचीन समय से अपने तमाम मामलों में पूरी तरह स्वतंत्र दिखाई पड़ते हैं। हालांकि ये ऐसी दो महान शक्तियों के पड़ोसी थे कि अगर यह ठोस प्राकृतिक रुकावट न होती तो उनके आक्रमण को रोक लेना अरब वासियों के बस की बात न थी।

बाहरी रूप से अरब प्रायद्वीप पुरानी दुनिया के तमाम मालूम महाद्वीपों के बीचों-बीच स्थित है और जल-थल दोनों रास्तों से उनके साथ जुड़ा हुआ है। इसका उत्तर-पश्चिमी कोना अफ़्रीक़ा महाद्वीप में प्रवेश करने का दरवाज़ा है। उत्तर-पूर्वी कोना यूरोप की कुंजी है। पूर्वी कोना ईरान, मध्य एशिया और दूर पूरब के दरवाज़े खोलता है और भारत और चीन तक पहुंचाता है। इसी तरह हर महाद्वीप समुद्र के रास्ते भी अरब प्रायद्वीप से जुड़ा हुआ है और उनके जहाज़ अरब बन्दरगाहों पर सीधे-सीधे आकर रुकते हैं।

इस भौगोलिक स्थिति की वजह से अरब प्रायद्वीप के उत्तरी और दक्षिणी कोने विभिन्न क़ौमों के ठिकाने और व्यापार-संस्कृति, कला व धर्मों के लेन-देन का केन्द्र रह चुके हैं।

अरब जातियां

इतिहासकारों ने नस्ल की दृष्टि से अरब क़ौमों की तीन क़िस्में बतायी हैं--

(1) अ़रब बाइदाः

यानी वे पुराने अरब क़बीले और क़ौमें जो बिल्कुल ख़त्म हो गईं और उन के बारे में ज़रूरी बातें भी मालूम नहीं, जैसे आ़द, समूद, तस्म, जदीस, अमालिक़ा वग़ैरह।

(2) अ़रब आ़रिबाः

यानी वे अरब क़बीले जो यअ़रुब बिन यशजब बिन क़हतान की नस्ल से हैं इन्हें क़हतानी अरब कहा जाता है।

(3) अ़रब मुस्तारबाः

यानी वे अ़रब क़बीले जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल से हैं इन्हें अ़दनानी अरब कहा जाता है।

अ़रब आ़रिबाः— यानी क़हतानी अरब की असल जगह यमन देश था। यहीं उनके परिवार और क़बीले विभिन्न शाखाओं में फूटे, फैले और बढ़े। इनमें से दो क़बीलों ने बड़ी प्रसिद्धि पाई।

(क) हिमयरः

जिसकी प्रसिद्ध शाखाएं ज़ैदुल जम्हूर, क़ुज़ाआ़ और सकासिक हैं।

(ख) कहलानः

जिसकी प्रसिद्ध शाखाएं हमदान, अन्मार, तई, मज़हिज, किन्दा, लख़्म, जुज़ाम, अज़्द, औस, ख़ज़रज और औलादे जफ़ना हैं जिन्होंने आगे चल कर शाम देश के हर ओर बादशाही क़ायम की और आले ग़स्सान के नाम से मशहूर हुए।

आम कहलानी क़बीलों ने बाद में यमन छोड़ दिया और अ़रब प्रायद्वीप के अलग-अलग भागों में फैल गए। उनके आम तौर से वतन छोड़ने का वाक़िया सैले अ़रिम से कुछ पहले उस वक़्त पेश आया, जब

रूमियों ने मिस्र और शाम पर क़ब्ज़ा करके यमन वालों के व्यापार के समुद्री रास्ते पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया और थलीय रास्तों की आसानी ग़ारत करके अपना दबाव इतना बढ़ा दिया कि कहलानियों का व्यापार नष्ट होकर रह गया।

कुछ आश्चर्य नहीं कि कहलानी और हिमयरी परिवारों में नोक झोंक भी रही हो और यह भी कहलानियों के वतन छोड़ने की एक असरदार वजह बनी हो। इसका इशारा इससे मिलता है कि कहलानी क़बीलों ने तो वतन (देश) छोड़ दिया, लेकिन हिमयरी क़बीले अपनी जगह बाक़ी रहे।

जिन कहलानी क़बीलों ने वतन छोड़ा, उनकी चार क़िस्में की जा सकती हैं।

1. अज़्द:

उन्होंने अपने सरदार इमरान बिन अम्र मज़ीक़िया की सलाह पर वतन (देश) छोड़ दिया। पहले तो ये यमन ही में एक जगह से दूसरी जगह रहते रहे और हालात का पता लगाने के लिए आगे-आगे चलने वाली टुकड़ियों को भेजते रहे, लेकिन अन्त में उत्तर की ओर चले और अलग-अलग शाखाएं घूमते-घुमाते अलग-अलग जगहों पर हमेशा के लिए रहने-सहने लगे। इसका विस्तृत वर्णन नीचे दिया जा रहा है।

सालबा बिन अम्रः

इसने पहले तो हिजाज़ का रुख़ किया और सालबीया और ज़ीक़ार के बीच रहने-सहने लगे। जब उसकी औलाद बड़ी हो गई और ख़ानदान मज़बूत हो गया तो मदीना की तरफ़ कूच किया और उसी को अपना वतन बना लिया। इसी सालबा की नस्ल से औस और ख़ज़रज हैं जो सालबा के बेटे हारिस के बेटे हैं।

हारिसा बिन अम्रः

यानी ख़ुज़ाआ और उसकी संतान, ये लोग पहले हिजाज़ भू-भाग में घूमते-घामते मर्रुज़्ज़हरान में ठहरे, फिर हरम पर धावा बोल दिया और बनू जुरहुम को निकाल कर ख़ुद मक्का में रहने-सहने लगे।

इमरान बिन अम्रः

इसने और इसकी संतान ने उमान में रहना शुरू किया, इसलिए ये लोग अज़्दे उमान कहलाते हैं।

नस्र बिन अज़्दः

इससे ताल्लुक़ रखने वाले क़बीलों ने तिहामा में निवास किया। ये लोग अज़्दे शनूआ कहलाते हैं।

जफ़ना बिन अम्रः

इसने शाम (सीरिया) देश का रुख़ किया और अपनी संतान समेत वहीं ठहर गया। यही आदमी ग़स्सानी बादशाहों का पूर्वज है। इन्हें आले ग़स्सान इसलिए कहा जाता है कि इन लोगों ने शाम जाने से पहले हिजाज़ में ग़स्सान नाम के एक चश्मे (सोते) पर कुछ दिनों पड़ाव किया था।

2. लख़्म व जुज़ाम

इन ही लख़्मियों में नस्र बिन रबीआ था। जो हियरा के बादशाहों आले मुंज़िर का पूर्वज है।

3. बनू तईः

इस क़बीले ने बनू अज़्द के वतन छोड़ देने के बाद उत्तर का रुख़ किया, और अजा और सलमा नामी दो पहाड़ियों के चारों ओर स्थायी रूप से बस गए, यहां तक कि ये दोनों पहाड़ियां तई क़बीला के ताल्लुक़ से मशहूर हो गईं।

4. किन्दाः

ये लोग पहले बहरैन------वर्तमान अल-अहसा------में ठहरे, लेकिन मजबूरी में वहां से हज़रमौत गए, मगर वहां भी अमान न मिली और अन्त में नज्द में डेरे डालने पड़े। यहां इन लोगों ने ज़ोरदार शासन की बुनियाद रखी, पर इस शासन को दृढ़ता न मिली और इसके निशान जल्द ही ख़त्म हो गए।

कहलान के अलावा हिमयर का भी सिर्फ़ एक क़बीला क़ुज़ाआ ऐसा है-----और इसके हिमयरी होने में भी मतभेद है------जिसने यमन से वतन छोड़ कर इराक़ सीमाओं में बादियतुस्समावा में रहना-सहना शुरू किया।[1]

अरब मुस्तारबा

इनके पूर्वज सय्यिदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से इराक़ के एक शहर ऊर के निवासी थे। यह शहर फ़ुरात नदी के पश्चिमी तट पर कूफ़ा के क़रीब स्थित था। इसकी ख़ुदाई होने पर जो लिखित सामग्री मिली है, उनसे इस शहर के बारे में बहुत सी बातें सविस्तार सामने आई हैं और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वंश की कुछ विस्तृत बातें और देश-वासियों की धार्मिक और सामूहिक परिस्थितियों से भी परदा हटा है।

यह मालूम है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यहां से हिजरत करके शहर हर्रान तशरीफ़ ले गए थे और फिर वहां से फ़लस्तीन जाकर उसी देश को अपनी पैग़म्बरों वाली गतिविधियों का केन्द्र बना लिया था और दावत व तब्लीग़ के लिए यहीं से देश के भीतर-बाहर अपने काम में लगे रहा करते थे। एक बार आप मिस्र तशरीफ़ ले गए। फ़िरऔन ने आपकी बीवी हज़रत सारा का हाल सुना तो उनके बारे में उसकी नीयत

---

1) इन क़बीलों की और इनके स्वदेश छोड़ने की अधिक जानकारी के लिए देखिए अल-ख़िज़री की मुहाज़िरातु तारीख़िल- उममिल-इस्लामिया 1/11-13

ख़राब हो गयी और अपने दरबार में बुरे इरादे से बुलाया, लेकिन अल्लाह ने हज़रत सारा की दुआ के नतीजे में ग़ैबी (परोक्ष) रूप से फ़िरऔन की ऐसी पकड़ की कि वह हाथ-पांव मारने और फेंकने लगा। उसकी बुरी नीयत उसके मुंह पर मार दी गई और वह घटना के रूप से समझ गया कि हज़रत सारा अल्लाह की बड़ी ख़ास और क़रीबी बंदी हैं और वह हज़रत सारा की इस विशेषता से इतना प्रभावित हुआ कि अपनी बेटी[2] हाजरा को उनकी सेवा में दे दिया, फिर हज़रत सारा ने हज़रत हाजरा को हज़रत इब्राहीम के निकाह में दे दिया।[3]

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, हज़रत सारा और हज़रत हाजरा को साथ लेकर फ़लस्तीन वापस तशरीफ़ लाए, फिर अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहि० को हज़रत हाजरा के गर्भ से एक लायक़ बेटा------ इस्माईल अ़लैहिस्सलाम---दिया, लेकिन उस पर हज़रत सारा जो निःसन्तान थीं बड़ी ग़ैरत आई और उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मजबूर किया कि हज़रत हाजरा को उनके नवजात बच्चे समेत देश निकाला दे दें। परिस्थिति ऐसी पैदा हुई कि उन्हें हज़रत सारा की बात माननी पड़ी और वह हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अ़लैहि० को साथ लेकर हिजाज़ तशरीफ़ ले गए और वहां एक वीरान घाटी में बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब ठहरा दिया। उस वक़्त बैतुल्लाह शरीफ़ न था, केवल टीले की तरह उभरी हुई ज़मीन थी। बाढ़ आती थी, तो दांए बाएं से कतरा कर निकल जाती थी। वहीं मस्जिदे हराम के ऊपरी भाग में ज़मज़म के पास एक बहुत बड़ा पेड़ था। आप ने उसी पेड़ के पास हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलैहि० को छोड़ा था। उस समय मक्का में न पानी था, न आदम और न आदमज़ाद, इसलिए हज़रत

---

2) कहा जाता है कि हज़रत हाजरा दासी थीं लेकिन अल्लामा मनसूरपुरी ने सिद्ध किया है कि वह दासी नहीं बल्कि आज़ाद थीं और फ़िरऔन की बेटी थीं देखिए रहमतुल लिल-आलमीन 2/36-37

3) उपरोक्त हाशिया 2/34 तथा बुख़ारी 1/484

इब्राहीम अ़लैहि० ने एक बर्तन में खजूर और एक मश्क में पानी रख दिया, इसके बाद फ़लस्तीन वापस चले गए, लेकिन कुछ ही दिनों में खजूर और पानी ख़त्म हो गया और बड़ी परेशानी हुई, मगर इस कठिन घड़ी में अल्लाह की दया-कृपा से ज़मज़म का सोता फूट पड़ा और कुछ समय तक के लिए रोज़ी का सामान और जीवन की पूंजी बन गया। विस्तृत विवेचन मालूम और मशहूर है।[4]

कुछ दिनों बाद यमन से एक क़बीला आया, जिसे इतिहास में जुरहुम द्वितीय कहा जाता है। यह क़बीला इस्माईल अलैहि० की मां से इजाज़त लेकर मक्का में ठहर गया। कहा जाता है कि यह क़बीला पहले मक्का के आस-पास की घाटियों में रहता था। सहीह बुख़ारी में इतना और है कि (रहने के उद्देश्य से) ये लोग मक्का में हज़रत इस्माईल अलैहि० के आने के बाद और उनके जवान होने से पहले आए थे, लेकिन इस घाटी से उनका गुज़र इससे पहले भी हुआ करता था।[5]

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी छोड़ी हुई चीज़ों की निगरानी के लिए कभी-कभार मक्का तशरीफ़ लाया करते थे, लेकिन यह न मालूम हो सका कि इस तरह उन का आना कितनी बार हुआ, अलबत्ता इतिहास में चार बार उनके आने का विवेचन सुरक्षित है, जो यह है---

1. क़ुरआन में बयान किया गया है कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सपने में दिखाया कि वह अपने सुपुत्र (हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम) को ज़िब्ह कर रहे है। यह सपना एक तरह का अल्लाह का हुक्म था और बाप-बेटे दोनों अल्लाह के इस हुक्म को पूरा करने के लिए तैयार हो गए। और जब दोनों ने हुक्म पूरा करने के लिए सर झुका दिया और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया, तो अल्लाह ने पुकारा, "ऐ इब्राहीम! तुम ने सपने को सच कर दिखाया, हम नेकों

---

4) बुख़ारी किताबुल अंबिया 1/474-475

5) बुख़ारी 1/475

को इसी तरह बदला देते हैं। यक़ीनी तौर पर यह एक खुली हुई आज़माइश थी और अल्लाह ने इन्हें फ़िद्ये में एक बड़ा ज़बीहा अ़ता फ़रमाया।"[6]

बाइबिल की किताब पैदाइश में ज़िक्र है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से 13 साल बड़े थे और कुरआन ही से यह पता चलता है कि यह घटना हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के जन्म से पहले पेश आयी थी, क्योंकि पूरी घटना बता चुकने के बाद हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के जन्म की शुभ सूचना का उल्लेख है।

इस घटना से मालूम होता है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के जवान होने से पहले कम से कम एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का की यात्रा ज़रूर की थी। बाक़ी तीन यात्राओं का विवरण सहीह बुख़ारी की एक लम्बी रिवायत में है जो इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मरफ़ूअ़न रिवायत की गई है।[7] इस का सार यह है—

2. हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जब जवान हो गए, जुरहुम से अ़रबी भाषा सीख ली और उनकी निगाहों में जचने लगे, तो उन लोगों ने अपने ख़ानदान की एक औरत से आपकी शादी कर दी। इसी बीच हज़रत हाजरा का इंतिक़ाल हो गया। उधर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़्याल हुआ कि अपना तरका (छोड़ा हुआ माल) देखना चाहिए। चुनांचे वह मक्का तशरीफ़ ले गए, लेकिन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात न हुई, बहू से हालात मालूम किए तो उसने तंगदस्ती की शिकायत की। आपने वसीयत की कि इस्माईल अलैहिस्सलाम आएं तो कहना, अपने दरवाज़े की चौखट बदल दें। इस वसीयत का मतलब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम समझ गए। बीवी को तलाक़ दे दी और

6) सूरः साफ्फात 103-107

7) बुख़ारी 1/475-476

एक दूसरी औरत से शादी कर ली जो जुरहुम के सरदार मज़ाज़ बिन अम्र की बेटी थी।[8]

3. इस दूसरी शादी के बाद एक बार फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मक्का तशरीफ़ ले गए, मगर इस बार भी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात न हुई। बहू से हालात मालूम किए तो उसने अल्लाह की हम्द व सना (गुण-गान) की। आपने वसीयत की कि इस्माईल अलैहिस्सलाम अपने दरवाज़े की चौखट बाक़ी रखें और फ़लस्तीन वापस हो गए।

4. इसके बाद फिर तशरीफ़ लाए तो इस्माईल अलैहिस्सलाम ज़मज़म के कुंए के क़रीब एक पेड़ के नीचे तीर घढ़ रहे थे। देखते ही लपक पड़े और वही किया जो ऐसे मौक़े पर एक बाप अपने बेटे के साथ और बेटा बाप के साथ करता है। यह मुलाक़ात इतनी लम्बी मुद्दत के बाद हुई थी कि एक नर्म दिल और मेहरबान बाप अपने बेटे से और एक आज्ञापालक बेटा अपने बाप से मुश्किल से ही इतनी लम्बी जुदाई सहन कर सकता है। इसी बार दोनों ने मिलकर ख़ाना-ए-काबा बनाया, बुनियाद खोद कर दीवारें उठाईं और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सारी दुनिया के लोगों को हज के लिए आवाज़ दी।

अल्लाह ने मज़ाज़ की बेटी से इस्माईल अलैहिस्सलाम को बारह बेटे दिए,[9] जिनके नाम ये हैं—

1. नाबित या नबायूत, 2. कै़दार, 3. अदबाईल, 4. मिशाम, 5. मशमाअ़ 6. दूमा, 7. मीशा, 8. हदद, 9. तैमा, 10. नफ़ीस, 11. यतूर, 12. कै़दमान।

---

8) क़ल्बु जज़ीरतिल- अरब 230

9) उपरोक्त हाशिया

इन बारह बेटों से बारह क़बीले वजूद में आए और सबने मक्का ही में रहना सहना किया, इनके खान-पान का आश्रय ज़्यादा तर यमन और मिस्र व शाम के व्यापार पर था। बाद में ये क़बीले अरब प्रायद्वीप के अलग-अलग भागों में----बल्कि अरब के बाहर भी-----फैल गए और इनके हालात ज़माने की गहरी तारीकी में दब कर रह गए, सिर्फ़ नाबित और क़ैदार की औलाद इस गुमनामी से अलग हैं।

नब्तियों की संस्कृति को उत्तरी हिजाज़ में तरक़्क़ी और बढ़ौतरी मिली। उन्होंने एक ताक़तवर हुकूमत क़ायम करके आस-पास के लोगों को अपना कर दाता बना लिया। बतरा इनकी राजधानी थी। किसी को इनके मुक़ाबले की ताब न थी, फिर रूमियों का दौर आया और उन्होंने नब्तियों को बीता हुआ क़िस्सा बना दिया। मौलवी सैयद सुलैमान नदवी रह० ने एक रोचक वार्ता और गहरी खोज के बाद साबित किया है कि आले ग़स्सान और अंसार यानी औस व ख़ज़रज क़हतानी अरब न थे, बल्कि इस इलाक़े में नाबित बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम की जो बची-खुची नस्ल रह गई थी, वही थे।[10]

क़ैदार बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल मक्का ही में फलती फूलती रही, यहां तक कि अ़दनान और फिर उनके बेटे मअ़द्द का ज़माना आ गया। अ़दनानी अरब का वंश-क्रम सहीह तौर पर यहीं तक सुरक्षित है।

अ़दनान, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वंश-क्रम में इक्कीसवीं पीढ़ी पर पड़ते हैं। कुछ रिवायतों में बयान किया गया है कि आप जब अपने वंश-क्रम का उल्लेख करते तो अ़दनान पर पहुंच कर रुक जाते और आगे न बढ़ते। फ़रमाते कि वंश-विशेषज्ञ ग़लत कहते हैं।[11] मगर उलमा के एक वर्ग का विचार है कि अ़दनान से आगे भी वंश

---

10) तारीख़ अरज़ुल-क़ुरआन 2/78-86

11) तबरी 2/191-194,अल-अअ़लाम 5/6

बयान किया जा सकता है। उन्होंने इस रिवायत को कमज़ोर बताया है। इनकी खोज के अनुसार अदनान और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच चालीस पीढ़ियां हैं।

बहरहाल मअद्द के बेटे नज़ार से-------जिनके बारे में कहा जाता है कि इनके अलावा मअद्द की कोई संतान न थी---- कई परिवारों ने जन्म लिया। हक़ीक़त में नज़ार के चार बेटे थे और हर बेटा एक बड़े क़बीले की बुनियाद साबित हुआ। चारों के नाम ये हैं-------(1) इयाद, (2) अनमार, (3) रबीआ और (4) मुज़र। इनमें से आख़िर के दो क़बीलों की शाखाएं और शाखाओं की शाखाएं बहुत ज़्यादा हुईं। चुनांचे रबीआ से असद बिन रबीआ, अनज़ा अब्दुल क़ैस, वाइल, बक्र, तग़्लिब और बनू हनीफ़ा आदि अस्तित्व में आए।

मुज़र की संतान दो क़बीलों में बंटी।

(1) क़ैस ऐलान बिन मुज़र (2) इलयास बिन मुज़र।

क़ैस ऐलान से बनू सुलैम, बनू हवाज़िन, बनू ग़तफ़ान, ग़तफ़ान से अब्स, ज़ुबयान, अशजअ और ग़नी बिन आसुर के क़बीले वजूद में आए।

इलयास बिन मुज़र से तमीज बिन मुर्रा, हुज़ैल बिन मुदरिका, बनू असद बिन ख़ुज़ैमा और कनाना बिन ख़ुज़ैमा के क़बीले वजूद में आए, फिर कनाना से क़ुरैश क़बीला वजूद में आया। यही क़बीला फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना की औलाद है।

फिर क़ुरैश भी अलग-अलग शाखाओं में बंट गए। मशहूर क़ुरैशी शाखाओं के नाम ये हैं---- जम्ह, सहम, अदी, मख़्ज़ूम, तैम, ज़ोहरा और क़ुसई बिन किलाब के परिवार यानी अब्दुद्दार, असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा और अब्दे मुनाफ़ ये तीनों क़ुसई के बेटे थे। इन में से अब्दे मुनाफ़ के चार बेटे हुए, जिनसे चार छोटे-छोटे क़बीले वजूद में आए, यानी अब्दे शम्स, नौफ़ल, मुत्तलिब और हाशिम। इन्हीं हाशिम की नस्ल से अल्लाह

ने हमारे हुज़ूर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चुना।[12]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से इसमाईल अलैहिस्सलाम को चुना फिर इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से किनाना को चुना और किनाना की नस्ल से कुरैश को चुना फिर कुरैश में से बनू हाशिम को चुना और बनू हाशिम में से मुझे चुना।[13]

इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'अल्लाह ने दुनिया को पैदा किया, तो मुझे सब से अच्छे गिरोह में बनाया, फिर उनके भी दो गिरोहों में से ज़्यादा अच्छे गिरोह के अंदर रखा, फिर क़बीलों को चुना, तो मुझे सब से अच्छे क़बीले के अंदर बनाया, फिर घरानों को चुना, तो मुझे सब से अच्छे घराने में बनाया, इसलिए मैं अपनी ज़ात के एतबार से भी सब से अच्छा हूं और अपने घरानों के एतबार से भी सब से बेहतर हूं।[14]

बहरहाल अदनान की नस्ल जब ज़्यादा बढ़ गई तो वह चारे-पानी की खोज में अरब के हर ओर बिखर गई, चुनांचे क़बीला अब्दुल क़ैस ने, बकर बिन वाइल की शाखाओं ने और बनू तमीम के परिवारों ने बहरैन का रुख़ किया और उसी इलाक़े में जा बसे।

बनू हनीफ़ा बिन साब बिन अली बिन बक्र ने यमामा का रुख़ किया और उसके केन्द्र हिज्र में ठहर गए।

बक्र बिन वाइल की बाक़ी शाखाओं ने, यमामा से लेकर बहरैन, काज़िमा तट, खाड़ी, सवादे इराक़, उबुल्ला और हीत तक के क्षेत्रों में रहना-सहना शुरू कर दिया।

---

12) मुहाज़रातु [illegible] 1/15

13) मुस्लिम 2/245, तिरमिज़ी 2/201

14) तिरमिज़ी 2/201

बनू तग़लब फ़रातिया द्वीप में ठहर गए, अल्बत्ता उनकी कुछ शाखाओं ने बनू बक्र के साथ ठहरना पसंद किया।

बनू तमीम ने बादिया बसरा को अपना वतन बनाया।

बनू सुलैम ने मदीना के क़रीब डेरे डाले। उनके रहने की जगह वादियुल-कुरा से शुरू होकर ख़ैबर और मदीना के पूरब से होती हुई हर्रा बनू सुलैम से मिली दो पहाड़ियों पर ख़त्म होती थी।

बनू सक़ीफ़ ने तायफ़ को वतन बना लिया और बनू हवाज़िन ने मक्का के पूरब में औतास घाटी के आस-पास डेरे डाले। उनकी बस्ती मक्का-बसरा मार्ग पर आबाद थी।

बनू असद तैमा के पूरब और कूफ़ा के पच्छिम में ठहर गए। उनके और तैमा के बीच बनू तई का एक ख़ानदान बहतर आबाद था। बनू असद की आबादी और कूफ़ा के बीच पांच दिन की दूरी थी।

बनू ज़ुबयान तैमा के क़रीब हौरान के चारों ओर आबाद हुए।

तिहामा में बनू किनाना के परिवार रह गए थे। इनमें से क़ुरैशी परिवारों का रहना-सहना मक्का और उसके चारों ओर था। ये लोग बिखरे हुए थे, इनमें कोई ताल-मेल न था, जब तक कि कुसई बिन किलाब उभर कर समाने आया और क़ुरैशियों को एक करके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा व श्रेष्ठता दिलायी।[15]

---

15) मुहाज़िरातु ख़िज़्री 1/15-16

नुबूवत के दौर का अरब

रेखांकित शब्द जगहों के
नाम हैं बाक़ी क़बीलों के नाम हैं।

अ़रब हुकूमतें और सरदारियां

इस्लाम से पहले अरब के जो हालात थे, उनका उल्लेख करते वक़्त मुनासिब मालूम होता है कि वहां की हुकूमतों, सरदारियों और धर्मों का भी एक छोटा सा ख़ाका (परिलेख) सामने लाया जाए, ताकि इस्लाम के ज़ाहिर होने के समय जो हालात थे, वह आसानी से समझ में आ सकें।

जिस वक़्त अरब प्रायद्वीप पर इस्लामी सूरज की चमचमाती किरणें रोशनी डाल रही थीं, वहां दो प्रकार के शासक थे----एक ताज पहने बादशाह, जो वास्तव में पूरी तरह आज़ाद और ख़ुद-मुख़्तार न थे और दूसरे क़बीलों के सरदार जिन्हें अधिकारों और मान-जान की दृष्टि से वही हैसियत हासिल थी जो ताज वाले बादशाहों को हासिल थी। लेकिन उनके अधिकतर लोगों को एक मुख्य बात यह भी मिली हुई थी कि वे पूरे तौर पर स्वाधीन और ख़ुद-मुख़्तार थे। ताज वाले बादशाह ये थे------यमन के बादशाह, आले ग़स्सान के बादशाह (सीरिया) और हियरा (इराक़) के बादशाह। बाक़ी अरब शासक ताजधारी न थे।

यमन की बादशाही

अरब आरबा में से जो सबसे पुरानी क़ौम मालूम हो सकी, वह सबा की क़ौम है। ऊर (इराक़) से जो शिला-लेख मिले हैं, उनमें ढाई हज़ार वर्ष ईसा पूर्व इस क़ौम का वर्णन मिलता है, लेकिन इसकी तरक़्क़ी का ज़माना ग्यारह सदी ईसा पूर्व से शुरू होता है, उसके इतिहास के महत्वपूर्ण युग यह हैं----

1. 650 ईसा पूर्व से पहले का युगः

इस युग में सबा के बादशाहों की उपाधि (लक़ब) मुकर्रबे सबा था। इनकी राजधानी सरवाह थी, जिसके खंडहर आज भी मआरिब के पश्चिम में एक दिन की राह पर पाए जाते हैं और ख़ुरैबा के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसी युग में मआरिब के मशहूर बांध की बुनियाद रखी गयी जिसे यमन के इतिहास में बड़ा महत्व प्राप्त है। कहा जाता है कि इस युग में सबा राज्य को इतनी तरक़्क़ी हुई कि उन्होंने अ़रब के भीतर और अ़रब के बाहर जगह-जगह अपनी नव-आबादियां क़ायम कर ली थीं।

2. 650 ईसा पूर्व से 115 ईसा पूर्व तक का युगः

इस युग में सबा के बादशाहों ने मुकर्रब का शब्द छोड़ कर मलिक (बादशाह) की उपाधि अपनायी और सरवाह के बजाए मआरिब को अपनी राजधानी बनाया। इस शहर के खंडहर आज भी सनआ़ के 60 मील पूरब में पाए जाते हैं।

3. 115 ईसा पूर्व से 300 ई० तक का युगः

इस युग में सबा के राज्य पर क़बीला हिमयर को दबदबा प्राप्त रहा और उसने मआरिब के बजाए रैदान को अपनी राजधानी बनाया। फिर रैदान का नाम ज़िफ़ार पड़ गया। इसके खंडहर आज भी शहर 'यरयम' के क़रीब एक गोल पहाड़ी पर पाए जाते हैं।

यही युग है जिसमें सबा क़ौम का पतन शुरू हुआ। पहले नब्तियों ने उत्तरी हिजाज़ पर अपनी सत्ता जमाई, फिर सबा को उनकी नव-आबादियों से निकाल बाहर किया। फिर रूमियों ने मिसर व शाम (सीरिया) और उत्तरी हिजाज़ पर क़ब्ज़ा करके उनके व्यापार के समुद्री रास्ते को समाप्त कर दिया और इस तरह उनका व्यापार धीरे-धीरे नष्ट हो गया। इधर क़हतानी क़बीले ख़ुद भी आपस में लड़-झगड़ रहे थे। इन

हालात का नतीजा यह हुआ कि क़हतानी क़बीले अपना वतन छोड़कर इधर-उधर बिखर गए।

4. सन् 300 ई० के बाद से इस्लाम के शुरू तक का युग:

इस युग में यमन के भीतर लगातार अशान्ति और बिखराव पाया जाता रहा है। क्रान्तियां आईं, गृह युद्ध हुए और बाहर के देशों को हस्तक्षेप करने के अवसर मिल गए, यहां तक कि एक समय ऐसा भी आया, कि यमन की आज़ादी छिन गयी। चुनांचे यही युग है जिसमें रूमियों ने अ़दन पर सैनिक क़ब्ज़ा कर लिया और उनकी मदद से हब्शियों ने हिमयर व हमदान के आपसी खिंचाव का फ़ायदा उठाते हुए 340 ई० में पहली बार यमन पर क़ब्ज़ा किया जो 378 ई० तक बाक़ी रहा। इसके बाद यमन की आज़ादी तो बहाल हो गयी, मगर 'मआरिब' के प्रसिद्ध बांध में रुकावटें पड़नी शुरू हो गयीं, यहां तक कि 450 ई० या 451 ई० में बांध टूट गया और वह भारी बाढ़ आयी जिसका उल्लेख क़ुरआन मजीद (सूरः सबा) में सैले अरिम के नाम से किया गया है। यह प्रबल दुर्घटना थी, इसके नतीजे में बस्तियों की बस्तियां वीरान हो गईं और बहुत से क़बीले इधर-उधर बिखर गए।

फिर 523 ई० में एक और संगीन घटना सामने आयी यानी यमन के यहूदी बादशाह ज़ू-नवास ने नजरान के ईसाइयों पर एक भयानक हमला करके उन्हें ईसाई धर्म छोड़ने पर मजबूर करना चाहा और जब वे इस पर तैयार न हुए तो ज़ू-नवास ने खाइयां खुदवा कर उन्हें भड़कती हुई आग के अलाव में झोंक दिया।

क़ुरआन ने सूरः बुरूज की आयतों में इसी कंप-कंपा देने वाली घटना की ओर इशारा किया है। इस घटना का फल यह निकला कि ईसाई धर्म जो रूमी बादशाहों के नेतृत्व में अ़रब क्षेत्रों की विजयों और प्रचार-प्रसार के लिए पहले ही से चुस्त और तेज़ था, बदला लेने पर तुल गया और हब्शियों को यमन पर आक्रमण करने पर उभारते हुए उन्हें

समुद्री बेड़ा जुटाया। हब्शियों ने रूमियों की शह पाकर 525 ई० में अरयात के नेतृत्व में सत्तर हज़ार की सेना से यमन पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। क़ब्ज़े के बाद शुरू में तो हब्श के बादशाह के गवर्नर की हैसियत से अरयात ने यमन पर शासन किया, लेकिन फिर उसकी सेना के एक सहायक कमांडर---अबरहा--ने उसे क़त्ल करके ख़ुद सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लिया और हब्श के बादशाह को भी अपने इस क़ब्ज़े पर राज़ी कर लिया।

यह वही अबरहा है जिसने बाद में काबा को ढाने की कोशिश की और एक बड़ी फ़ौज के अलावा कुछ हाथियों को भी चढ़ाई करने के लिए साथ लाया, जिसकी वजह से यह फ़ौज हाथियों वाली (फ़ौज) के नाम से मशहूर हो गई।

इधर हाथियों की इस घटना में हब्शियों की जो तबाही हुई, उससे लाभ उठाते हुए यमन वालों ने फ़ारस की सरकार से मदद मांगी और हब्शियों के ख़िलाफ़ विद्रोह का झंडा उठा कर सैफ़ ज़ी यज़न हिमयरी के बेटे मादीकर्ब की सरदारी में हब्शियों को देश से निकाल बाहर किया और एक आज़ाद क़ौम की हैसियत से मादीकर्ब को अपना बादशाह चुन लिया। यह 575 ई० की घटना है।

आज़ादी के बाद मादीकर्ब ने कुछ हब्शियों को अपनी सेवा और शाही-ज़ीनत के लिए रोक लिया, लेकिन यह शौक़ मंहगा साबित हुआ। इन हब्शियों ने एक दिन मादीकर्ब को धोखे से क़त्ल करके ज़ी यज़न के वंश से शासन का चिराग़ हमेशा के लिए गुल कर दिया। इधर किसरा ने इस स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए सनआ पर एक फ़ारसी नस्ल का गवर्नर मुक़र्रर करके यमन को फ़ारस का एक प्रांत बना लिया।

इसके बाद यमन पर एक के बाद एक फ़ारसी गवर्नरों की नियुक्ति होती रही, यहां तक कि आख़िरी गवर्नर बाज़ान ने 628 ई० में इस्लाम अपना लिया और उसके साथ ही यमन फ़ारसी सत्ता से मुक्त होकर

इस्लाम की छत्र-छाया में आ गया।[1]

हियरा की बादशाही

इराक़ और उसके आस-पास के इलाक़ों पर कोरोश कबीर (ख़ोरस या साइरस ज़ुलक़ुरनैन 557 ईसा पूर्व---- 529 ईसा पूर्व) के ज़माने से ही फ़ारस वालों का शासन चला आ रहा था, कोई न था, जो उनके मुक़ाबले में आने का साहस करता, यहां तक कि 326 ईसा पूर्व में सिकन्दर मक़्दूनी ने दारा प्रथम को हरा कर फ़ारसियों की ताक़त तोड़ दी, जिसके नतीजे में उनका देश टुकड़े-टुकड़े हो गया और बिखराव शुरू हो गया। यह बिखराव 230 ई० तक जारी रहा और इसी बीच क़हतानी क़बीलों ने अपना देश छोड़ कर इराक़ के एक बहुत बड़े हरे-भरे सीमावर्ती क्षेत्र में रहना सहना शुरू किया, फिर वतन छोड़ कर आने वाले अदनानियों का रेला आया और उन्होंने लड़-भिड़ कर फ़रातिया द्वीप के एक भाग को अपने रहने की जगह बना लिया।

इधर 226 ई० में अर्द-शीर ने जब सासानी शासन की बुनियाद रखी, तो धीरे-धीरे फ़ारसियों की ताक़त एक बार फिर पलट आई। अर्द-शीर ने फ़ारसियों को जोड़ने की कोशिश की और अपने देश की सीमा पर आबाद अरबों को अधीन कर लिया। इसी के नतीजे में क़ज़ाआ ने शाम देश का रास्ता पकड़ा। जबकि हियरा और अंबार के अरब निवासियों ने अधीन बनना गवारा कर लिया।

अर्द-शीर के समय में हियरा, बादियतुल इराक़ और द्वीप के रबीअ़ी और मुज़री क़बीलों पर जज़ीमतुल-वज़ाह का शासन था। ऐसा लगता है कि अर्द-शीर ने महसूस कर लिया कि अ़रब निवासियों पर सीधे-सीधे शासन करना और उन्हें सीमा पर लूट मार से रोके रखना

---

1) अर्ज़ुल-क़ुरआन 1/133 से आख़िर तक मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी ने क़ौमे सबा के हालात विस्तार से लिखे हैं। मौलवी मौदूदी ने भी तफ़्हीमुल-क़ुरआन 4/195-198 पर क़ौम सबा के बारे में लिखा है। लेकिन इतिहास की किताबों में 'सिनीन' के बारे में भिन्नता है।

संभव नहीं, बल्कि उसकी केवल एक ही शक्ल है कि खुद किसी ऐसे अ़रब को उनका शासक बना दिया जाए, जिसे अपने कुंबे-क़बीले का समर्थन प्राप्त हो। इसका एक फ़ायदा यह भी होगा कि ज़रूरत पड़ने पर रूमियों के ख़िलाफ़ उनसे मदद ली जा सकेगी और सीरिया के रूम पसंद अ़रब शासकों के मुक़ाबले में इराक़ के इन अ़रब शासकों को खड़ा किया जा सकेगा।

हियरा के बादशाहों के पास फ़ारसी सेना की एक यूनिट हमेशा रहा करती थी, जिससे देहाती अरब विद्रोहियों के कुचलने का काम लिया जाता था।

सन् 268 ई० में जज़ीमा फ़ौत हो गया और अ़म्र बिन अ़दी बिन नस्र लख़मी उसका उत्तराधिकारी (जानशीं) हुआ। यह क़बीला लख़्म का पहला शासक था और शापुर और अर्द-शीर का समकालीन था। इसके बाद क़बाज़ बिन फ़ीरोज़ के समय तक हियरा पर लख़्मियों का बराबर शासन रहा। क़बाज़ के युग में मुज़दक सामने आया, जो इबाहियत पसन्द था (यानी खुदा का इन्कारी था) क़बाज़ और उसकी बहुत सी प्रजा ने मुज़दक का साथ दिया, फिर क़बाज़ ने हियरा के बादशाह मुंज़िर बिन माउस्समा को संदेश भेजा कि तुम भी यही धर्म अपना लो। मुंज़िर बड़ा स्वाभिमानी था, इंकार कर बैठा। नतीजा यह हुआ कि क़बाज़ ने उसे हटा कर उसकी जगह मुज़दकी सिद्धान्तों पर चलने वाले हारिस बिन अ़म्र बिन हज्र किन्दी को हियरा का शासन सौंप दिया।

क़बाज़ के बाद फ़ारस की बागडोर किसरा नौशेरवां के हाथ आई। उसे इस मज़हब से बड़ी नफ़रत थी। उसने मुज़दक और उसके साथियों की एक बड़ी तायदाद को क़त्ल कर दिया, मुंज़िर को दोबारा हियरा का शासक बना दिया और हारिस बिन अ़म्र को अपने यहां बुला भेजा, लेकिन वह बनू कल्ब के इलाक़े में भाग गया और वहीं अपनी ज़िंदगी बिता दी।

मुंज़िर बिन माउस्समा के बाद नोमान बिन मुंज़िर के ज़माने तक हियरा का शासन इसी की नस्ल में चलता रहा, फिर ज़ैद बिन अदी इबादी ने किसरा से नोमान बिन मुन्ज़िर की झूठी शिकायत की। किसरा भड़क उठा और नोमान को अपने पास तलब किया। नोमान चुपके से बनू शैबान के सरदार हानी बिन मसऊद के पास पहुंचा और अपने बाल-बच्चों और माल दौलत को उसकी अमानत में देकर किसरा के पास गया। किसरा ने उसे क़ैद कर दिया और वह क़ैद ही में फ़ौत हो गया।

इधर किसरा ने नोमान को क़ैद करने के बाद उसकी जगह इयास बिन क़बीसा ताई को हियरा का शासक बनाया और उसे हुक्म दिया कि हानी बिन मसऊद से नोमान की अमानत तलब करे। हानी स्वाभिमानी था। उसने सिर्फ़ इंकार ही नहीं किया, बल्कि लड़ाई का एलान भी कर दिया। फिर क्या था? इयास अपने साथ किसरा के लाव-लश्कर और मरज़-बानों की जमाअत लेकर रवाना हुआ और ज़ी-क़ार के मैदान में दोनों फ़रीक़ों के दर्मियान घमासान की लड़ाई हुई जिसमें बनू शैबान को जीत मिली। और फ़ारसियों को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। यह पहला मौक़ा था जब अरब ने अजम पर विजय प्राप्त की। यह घटना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म के थोड़े ही दिनों बाद की है। आपका जन्म हियरा पर इयास के शासन के आठवें महीने में हुआ था।

इयास के बाद किसरा ने हियरा पर एक फ़ारसी शासक नियुक्त किया, लेकिन 632 ई० में लख़्मियों की सत्ता फिर बहाल हो गयी और मुन्ज़िर बिन मारूर नामी इस क़बीले के एक आदमी ने बागडोर संभाली, लेकिन अभी उसको सत्ता में आए सिर्फ़ आठ महीने हुए थे कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० इस्लाम को ज़बरदस्त बाढ़ (फ़ौज) लेकर हियरा में दाख़िल हो गये।

शाम (सीरिया) की बादशाही

जिस समय अ़रब क़बीलों की हिजरत ज़ोरों पर थी, क़बीला क़ुज़ाआ़ की कुछ शाखाएं शाम (सीरिया) में आकर आबाद हो गईं। उनका ताल्लुक़ बनी सुलैम बिन हलवान से था और उन्हीं में एक शाख बनू ज़जअ़म बिन सुलैम थी, जो ज़जाइमा के नाम से प्रसिद्ध हुई। क़ुज़ाआ़ की इस शाखा को रूमियों ने अ़रब रेगिस्तान के बद्दुओं की लूटमार रोकने और फ़ारसियों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए अपना साथ देने वाला बनाया और उसी के एक व्यक्ति के सर पर शासन का ताज रख दिया। इसके बाद मुद्दतों उनका शासन रहा। उनका सबसे मशहूर बादशाह ज़ियाद बिन हयूला गुज़रा है। अंदाज़ा किया गया है कि ज़जाइमा का शासन-काल पूरी दूसरी सदी ईसवी पर छाया रहा है। इसके बाद इस इलाक़े में आले ग़स्सान का आना-जाना हुआ और ज़जाइमा का शासन जाता रहा। आले ग़स्सान ने बनू ज़जअ़म को हरा कर उनके सारे हिस्से पर क़ब्ज़ा कर लिया। यह स्थिति देखकर रूमियों ने भी आले ग़स्सान को शाम-क्षेत्र के अरब निवासियों का बादशाह मान लिया। आले ग़स्सान की राजधानी दूमतुल-जन्दल थी और रूमियों के नुमाइन्दे के रूप में शाम क्षेत्र में उनका शासन बराबर चलता रहा, यहां तक कि फ़ारूक़ी ख़िलाफ़त में सन् 13 हि० में यरमूक की लड़ाई हुई और आले ग़स्सान का अन्तिम शासक जबला बिन ऐहम इस्लाम की गोद में आ गया।[2] (यद्यपि उसका गुरुर इस्लामी समता को ज़्यादा दिनों तक सहन न कर सका और वह विधर्मी हो गया)।

हिजाज़ की सरदारी

यह बात तो मशहूर है कि मक्का में आबादी की शुरुआत हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम से हुई। आप ने 137 वर्ष की उम्र पाई।[3] और

2) मुहाज़िरातु ख़िज़री 1/34, अरज़ुल-क़ुरआन 2/80-82
3) पैदाईश (बाईबल) 25:17

पूरी ज़िंदगी मक्का के सरदार और बैतुल्लाह के मुतवल्ली रहे।[4] आपके बाद आपके दो बेटे——नाबित फिर क़ैदार या क़ैदार फिर नाबित——एक के बाद एक मक्का के सरदार हुए। उनके बाद उनके नाना मज़ाज़ बिन अम्र जुरहमी ने ज़िम्मेदारी अपने हाथ में ले ली। और इस तरह मक्का की सरदारी बनू जुरहम की ओर चली गई और एक मुद्दत तक उन्हीं के हाथ में रही। हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम चूंकि (अपने बाप के साथ मिलकर) बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) की बुनियाद डालने वाले और बनाने वाले थे, इसलिए उनकी औलाद को एक इज़्ज़त वाला मक़ाम ज़रूर हासिल रहा, लेकिन सत्ता और अधिकार में उनका कोई हिस्सा न था।[5]

फिर दिन पर दिन और साल पर साल बीतते गए, लेकिन हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद गुमनामी के दौर से न निकल सकी, यहां तक कि बुख़्ते-नस्र के ज़ाहिर होने से कुछ पहले बनू जुरहम की ताक़त कमज़ोर पड़ गयी और मक्का के क्षितिज पर अदनान का राजनीतिक सितारा जगमगाना शुरू हुआ। इसका सबूत यह है कि बुख़्ते-नस्र ने ज़ाते इर्क़ में अ़रबों से जो लड़ाई लड़ी थी उसमें अ़रब सेना का सेनापति जुरहमी न था।[6]

फिर बुख़्ते नस्र ने जब 587 ईसा पूर्व में दूसरा हमला किया तो बनू अ़दनान भाग कर यमन चले गए। उस समय बनू इसराईल के नबी हज़रत यरमियाह थे। वह अ़दनान के बेटे मअ़द्द को अपने साथ शाम देश ले गए और जब बुख़्ते-नस्र का ज़ोर ख़त्म हुआ और मअ़द्द मक्का आए तो उन्हें मक्का में क़बीला जुरहम का केवल एक आदमी जरशम बिन जलहमा मिला। मअ़द्द ने उसकी लड़की मुआ़ना से शादी की और इसके गर्भ से नज़्ज़ार पैदा हुआ।[7]

4) क़ल्बु जज़ीरतिल-अरब 230-237
5) क़ल्बु जज़ीरतिल-अरब 230 तथा इब्ने हिशाम 1/111-113
6) क़ल्बु जज़ीरतिल-अरब 230
7) रहमतुल-लिल-आ़लमीन 2/48

इसके बाद मक्का में जुरहम की हालत ख़राब होती गई। उन्हें तंगदस्ती ने आ घेरा। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वालों पर ज़्यादतियां शुरू कर दीं और ख़ाना-ए-काबा का माल खाने से भी बचाव न किया।[8] इधर बनू अदनान भीतर ही भीतर उनकी हरकतों पर कुढ़ते और भड़कते रहे, इसलिए जब बनू ख़ुज़ाआ ने मर्रज़्ज़हरान में पड़ाव किया और देखा कि बनू अदनान बनू जुरहम से घृणा करते हैं तो इसका फ़ायदा उठाते हुए एक अदनानी क़बीले (बनू बक्र बिन अब्दे मुनाफ़ बिन कनाना) को साथ लेकर बनू जुरहम के ख़िलाफ़ लड़ाई छेड़ दी और उन्हें मक्का से निकाल कर सत्ता पर ख़ुद क़ब्ज़ा कर लिया। यह घटना दूसरी सदी ईसवी के बीच की है।

बनू जुरहम ने मक्का छोड़ते वक़्त ज़मज़म का कुंआ पाट दिया और उसमें कई ऐतिहासिक चीज़ें दफ़न करके उसके निशान भी मिटा दिए। मुहम्मद बिन इसहाक़ का बयान है कि अ़म्र बिन हारिस बिन मज़ाज़[9] जुरहमी ने ख़ाना-ए-काबा के दोनों हिरन[10] और उसके कोने में लगा हुआ पत्थर—हजरे अस्वद—निकाल कर ज़मज़म के कुएं में दफ़न कर दिया। और अपने क़बीला बनू जुरहम को साथ लेकर यमन चला गया। बनू जुरहम को मक्का से हटाए जाने और वहां की सत्ता से महरूम होने का बड़ा दुख था,

चुनांचे अ़म्र ने इसी सिलसिले में ये पद्य कहे—

كان لم يكن بين الحجون إلى الصفا   انيس وَ لَمْ يسمر بمكة سامر

بلى نحن كنا اهلها فابادنا   صروف الليالى والجدود العوائر[11]

8) फ़त्हु जज़ीरतिल-अरब 231

9) यह वह व्यक्ति नहीं जिसकी चर्चा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कथा में हुई है।

10) मसूदी ने लिखा है फ़ारिस के लोग पिछले युग में ख़ाना-ए-काबा के लिए उपहार आदि भेजते रहते थे सासान बिन बाबक ने सोने के बने हुए दो हिरन, रतन, तलवारें और सोना भेजा था। अ़म्र ने सब ज़मज़म के कुंए में डाल दिया था (मुरूजुज़-ज़हब 1/205)

11) इब्ने हिशाम 1/114-115

'लगता है हजून से सफ़ा तक कोई जान-पहचान थी ही नहीं और न किसी क़िस्सा कहने वाले ने मक्का की रात की महफ़िलों में क़िस्से कहे। क्यों नहीं! यक़ीनन हम ही इसके निवासी थे, लेकिन समय के चक्करों और टूटे हुए भाग्यों ने हमें उजाड़ फेंका।'

हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का समय लगभग दो हज़ार वर्ष ईसा पूर्व का है। इस दृष्टि से मक्का में क़बीला जुरहम का वजूद कोई दो हज़ार एक सौ वर्ष रहा और उनका शासन लगभग दो हज़ार वर्ष तक चला।

बनू ख़ुज़ाआ ने मक्का पर क़ब्ज़ा करने के बाद बनू बक्र को शामिल किए बिना अकेले अपना शासन चलाया, अलबत्ता तीन महत्वपूर्ण पद ऐसे थे जो मुज़री क़बीलों के हिस्से में आए।

1. हाजियों को अ़रफ़ात से मुज़दलफ़ा ले जाना और यौमुन्नफ़रः

13 ज़िलहिज्जा को जो कि हज के सिलसिले का आख़िरी दिन है---मिना से रवाना होने का परवाना देना। यह पद इलयास बिन मुज़र के ख़ानदान बनू ग़ौस बिन मुर्रा को प्राप्त था जो सूफ़ा कहलाते थे। इस पद का विवरण यह है कि 13 ज़िल हिज्जा के हाजी कंकड़ी न मार सकते थे, जब तक कि पहले सूफ़ा का एक-एक आदमी कंकडी न मार लेता, फिर हाजी कंकड़ी मार कर फ़ारिग़ हो जाते और मिना से चलने का इरादा करते तो सूफ़ा के लोग मिना के एक ही रास्ते में अक़्बा के दोनों तरफ़ घेरा डाल कर खड़े हो जाते और जब तक ख़ुद न गुज़र लेते, किसी को गुज़रने न देते। उनके गुज़र लेने के बाद बाक़ी लोगों के लिए रास्ता ख़ाली होता। जब सूफ़ा ख़त्म हो गए तो यह पद बनू तमीम के एक परिवार बनू सअ़द बिन ज़ैद मुनात को मिल गया।

2. 10 ज़िल हिज्जा की सुबह को मुज़दलफ़ा से मिना की तरफ़ इफ़ाज़ा (रवाना होना):

यह पद बनू उद्वान को प्राप्त था।

3. हराम महीनों को आगे-पीछे करना:

यह पद बनू कनाना की एक शाख़ा बनू तमीम बिन अदी को प्राप्त था।[12]

मक्का पर बनू ख़ुज़ाआ की सत्ता कोई तीन सौ वर्ष चली।[13] और यही समय था जब अ़दनानी क़बीले मक्का और हिजाज़ से निकल कर नज्द, इराक़ के चारों ओर और बहरैन आदि में फैले और मक्का के चारों ओर सिर्फ़ क़ुरैश की कुछ शाखाएं बाक़ी रहीं, जो ख़ानाबदोश थीं। इनकी अलग अलग टोलियां थीं और बनू कनाना में इनके कुछ बिखरे घराने थे, पर मक्का की हुकूमत और बैतुल्लाह की निगरानी में इनका कोई हिस्सा न था, यहां तक कि क़ुसई बिन किलाब ज़ाहिर (क़ाबिज़) हुआ।[14]

क़ुसई के बारे में बताया जाता है कि वो अभी गोद ही में था कि उस के बाप का इंतिक़ाल हो गया। इसके बाद उसकी मां ने बनू उज़रा के एक आदमी रबीआ़ बिन हराम से शादी कर ली। ये क़बीला चूंकि शाम के अतराफ़ में रहता था इसलिए क़ुसई की मां वहीं चली गयी और वह क़ुसई को भी अपने साथ लेती गई। जब क़ुसई जवान हुआ तो मक्का वापस आया। उस वक़्त मक्का का शासक हुलैल बिन जशीया ख़ुज़ाई था। क़ुसई ने उस के पास उस की बेटी हुब्बी से निकाह का लिए पैग़ाम भेजा। हुलैल ने मंज़ूर कर लिया और शादी कर दी।[15] इसके बाद जब हुलैल का इंतिक़ाल हुआ तो मक्का और बैतुल्लाह के शासन के लिए ख़ुज़ाआ और क़ुरैश के दरमियान जंग हो गई और इसके नतीजे में मक्का और बैतुल्लाह पर क़ुसई को अधिकार हासिल हो गया।

लड़ाई की वजह क्या थी? इस बारे में तीन बयान मिलते हैं—

---

12) इब्ने हिशाम 1/44, 119-122

13) याक़ूत- मादा मक्का

14) मुहाज़िरातु ख़िज़री 1/35, इब्ने हिशाम 1/117

15) इब्ने हिशाम 1/117-118

एक यह कि जब कुसई की औलाद खूब फल-फूल गयी, उसके पास दौलत की भी ज़्यादती हो गई और उसकी इज़्ज़त भी बढ़ गयी और उधर हुलैल का इंतिकाल हो गया तो कुसई ने महसूस किया कि अब बनू खुज़ाआ और बनू बक्र के बजाए मैं काबा का मुतवल्ली (निगराँ) होने और मक्का की हुकूमत का कहीं ज़्यादा हक़दार हूं। उसे यह एहसास भी था कि कुरैश ख़ालिस इस्माईली अरब हैं और बाक़ी आले इस्माईल के सरदार भी हैं, (इसलिए सरदारी के हक़दार वही हैं) चुनांचे उसने कुरैश और बनू खुज़ाआ के कुछ लोगों से बातें कीं कि क्यों न बनू खुज़ाआ और बनू बक्र को मक्का से निकाल बाहर किया जाए। इन लोगों ने उसकी राय से सहमति बताई।[16]

दूसरा बयान यह है कि ——खुज़ाआ के कहने के मुताबिक़——खुद हुलैल ने कुसई को वसीयत की थी कि वह काबा की निगरानी करेगा और मक्का की बाग-डोर संभालेगा।[17]

तीसरा बयान यह है कि हुलैल ने अपनी बेटी हुब्बी को बैतुल्लाह की देख भाल सौंपी थी और अबू गबसान खुज़ाई को इसका वकील बनाया था, चुनांचे हुब्बी के नायब की हैसियत से वही ख़ाना-ए-काबा की कुंजियों का मालिक था। जब हुलैल का इंतिक़ाल हो गया तो कुसई ने अबू ग़बसान से एक मश्क शराब के बदले काबे का मुतवल्ली (निगराँ) होना ख़रीद लिया, लेकिन खुज़ाआ ने यह ख़रीदना व बेचना मंजूर न किया और कुसई को बैतुल्लाह से रोकना चाहा। इस पर कुसई ने बनू खुज़ाआ को मक्का से निकालने के लिए कुरैश और बनू कनाना को जमा किया और वह कुसई की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए जमा हो गए।[18]

---

16) इब्ने हिशाम 1/117-118

17) इब्ने हिशाम 1/117-118

18) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/55

बहरहाल वजह जो भी हो, घटनाओं का सिलसिला इस तरह है कि जब हुलैल का इंतिक़ाल हो गया और सूफ़ा ने वही करना चाहा, जो हमेशा करते आए थे, तो क़ुसई ने क़ुरैश और कनाना के लोगों को साथ लिया और अ़क़बा के नज़दीक, जहां वे जमा थे, उनसे आकर कहा कि तुम से ज़्यादा हम इस प्रतिष्ठा के हक़दार हैं, इस पर सूफ़ा ने लड़ाई छेड़ दी, मगर क़ुसई ने उन पर ग़लबा हासिल करके उनका दर्जा छीन लिया। यही मौक़ा था जब ख़ुज़ाआ और बनू बक्र ने क़ुसई से दामन छुड़ा लिया। इस पर क़ुसई ने उन्हें भी ललकारा, फिर क्या था, दोनों फ़रीक़ों में ज़बरदस्त लड़ाई छिड़ गयी और दोनों तरफ़ के बहुत से आदमी मारे गए। इसके बाद समझौते की आवाज़ें बुलन्द हुई और बनू बक्र के एक आदमी यामर बिन औफ़ को हकम (फ़ैसला करने वाला) बनाया गया। यामर ने फ़ैसला किया कि ख़ुज़ाआ के बजाए क़ुसई ख़ाना-ए-काबा की निगरानी और सत्ता का ज़्यादा हक़दार है। साथ ही क़ुसई ने जितना ख़ून बहाया है सब बेकार क़रार देकर पांव तले रौंद रहा हूं, अल्बत्ता ख़ुज़ाआ और बनू बक्र ने जिन लोगों को क़त्ल किया है, उनकी दियत अदा करें और ख़ाना-ए-काबा को बिना रोक-टोक क़ुसई के हवाले कर दें। इसी फ़ैसले की वजह से यामर का लक़ब (उपाधि) शद्दाख़ पड़ गया।[19] शद्दाख़ का अर्थ है पांवों तले रौंदने वाला।

इस फ़ैसले के नतीजे में क़ुसई और क़ुरैश को मक्का पर पूरी बरतरी और सरदारी मिल गयी। और क़ुसई बैतुल्लाह का दीनी (धार्मिक) रहनुमा बन गया, जिसके दर्शन के लिए अ़रब के कोने कोने से आने वालों का तांता बंधा रहता था। मक्का पर क़ुसई के क़ब्ज़े की यह घटना पांचवी सदी ईसवी के मध्य यानी 440 ई० की है।[20]

---

19) इब्ने हिशाम 1/123-124

20) क़ल्बु जज़ीरतिल-अ़रब 232

कुसई ने मक्का का इंतिज़ाम इस तरह किया कि कुरैश को मक्का के चारों ओर से बुला कर पूरा शहर उन पर बांट दिया और हर परिवार के रहने सहने का ठिकाना मुक़र्रर कर दिया, अलबत्ता महीने आगे पीछे करने वालों को और साथ ही आले सफ़वान, बनू उदवान और बनू मुर्रा बिन औफ़ को उनके पदों पर बाक़ी रखा, क्योंकि कुसई समझता था कि यह भी दीन है जिसमें तब्दीली करना ठीक नहीं।[21]

कुसई का कारनामा यह भी है कि उसने हरमे-काबा के उत्तर में दारुन्नदवा बनाया (इसका दरवाज़ा मस्जिद की ओर था)। दारुन्नदवा असल में कुरैश की पार्लियामेन्ट थी जहां तमाम बड़े-बड़े और अहम मामलों के फ़ैसले होते थे। कुरैश पर दारुन्नदवा के बड़े उपकार हैं, क्योंकि यह उनके एक होने की गारंटी था और यहीं उनके उलझे हुए मामले तय होते थे।[22]

कुसई के बड़कपन के नीचे लिखे सबूत थे--

1. दारुन्नदवा की अध्यक्षताः

जहां बड़े-बड़े मामलों के बारे में मश्वरे होते थे, और जहां लोग अपनी लड़कियों की शादियां भी करते थे।

2. लिवाः

यानी लड़ाई का झंडा कुसई ही के हाथों बांधा जाता था।

3. हिजाबत---- ख़ाना-ए-काबा की निगरानीः

इसका मतलब यह है कि ख़ाना-ए-काबा का दरवाज़ा कुसई ही खोलता था और वही ख़ाना-ए-काबा की सेवा और कुंजी थामने का काम अंजाम देता था।

---

21) इब्ने हिशाम 1/124-125

22) इब्ने हिशाम 1/125,मुहाज़िराते ख़िज़री 1/36, अख़बारुल-किराम 152

4. सिक़ाया (पानी पिलाना)

इसकी शक्ल यह थी कि हौज़ में हाजियों के लिए पानी भर दिया जाता था और उसमें कुछ खजूर और किशमिश डाल कर उसे मीठा बना दिया जाता था। जब हाजी लोग मक्का आते थे तो उसे पीते थे।[23]

5. रिफ़ादा (हाजियों की मेहमानदारी):

इसका मतलब यह है कि हाजियों के लिए मेहमानदारी के तौर पर खाना तैयार किया जाता था। इस मक़सद के लिए क़ुसई ने क़ुरैश पर एक ख़ास रक़म मुक़र्रर कर रखी थी जो हज के मौसम में क़ुसई के पास जमा की जाती थी। क़ुसई उस रक़म से हाजियों के लिए खाना तैयार कराता था। जो लोग तंग-दस्त होते, या जिनके पास खाने को न होता, वे यही खाना खाते थे।[24]

ये सारे पद क़ुसई को हासिल थे। क़ुसई का पहला बेटा अ़ब्दुद्दार था, मगर इसके बजाए दूसरा बेटा अ़ब्दे मुनाफ़, क़ुसई की ज़िंदगी ही में रहनुमाई के पद पर पहुंच गया था, इसलिए क़ुसई ने अ़ब्दुद्दार से कहा, कि ये लोग यद्यपि बुज़ुर्गी और रहनुमाई में तुम पर बाज़ी ले जा चुके हैं, मगर मैं तुम्हें इनके बराबर करके रहूंगा। चुनांचे क़ुसई ने अपने सारे पद और पदवियों की वसीयत अ़ब्दुद्दार के लिए कर दी, यानी दारुन्नदवा की सरदारी, ख़ाना-ए-काबा की निगरानी, देख-भाल, झंडा, पानी और हाजियों की मेहमानदारी सब कुछ अ़ब्दुद्दार को दे दिया, चूंकि किसी काम में क़ुसई का विरोध नहीं किया जाता था और न उसकी कोई बात रद्द की जाती थी, बल्कि उसका हर फ़ैसला, उसकी ज़िंदगी में भी और उसकी मौत के बाद भी पैरवी के लायक़ दीन समझा जाता था, इसलिए उसकी वफ़ात के बाद उसके बेटों ने किसी विरोध के बिना उसकी

---

23) मुहाज़िराते ख़िज़री 1/36

24) इब्ने हिशाम 1/130

वसीयत क़ायम रखी, लेकिन जब अब्दे मुनाफ़ की वफ़ात हो गयी तो उसके बेटों ने इन पदों के बारे में अपने चचेरे भाइयों यानी अ़ब्दुद्दार की औलाद से झगड़ा किया। इसके नतीजे में कुरैश दो गिरोह में बंट गए और क़रीब था कि दोनों में लड़ाई हो जाती, पर फिर उन्होंने समझौते की आवाज़ बुलन्द की और इन पदों को आपस में बांट लिया। चुनांचे पानी पिलाने और मेहमानदारी के पद बनू अ़ब्दे मुनाफ़ को दिए गए और दारुन्नदवा की सरदारी, झंडा और निगरानी बनू अ़ब्दुद्दार के हाथ में रही। फिर बनू अ़ब्दे मुनाफ़ ने अपने हासिल किए हुए पदों के लिए कुरआ (फ़ाल) डाला, तो कुरआ हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ के नाम निकला, इसलिए हाशिम ही ने अपनी ज़िंदगी भर सिक़ाया व रिफ़ादा का इन्तिज़ाम किया, अलबत्ता जब हाशिम का इंतिक़ाल हो गया तो उनके भाई मुत्तलिब ने उनकी जानशीनी की, मगर मुत्तलिब के बाद उनके भतीजे अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम ने——जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा थे——यह मंसब (पदभार) संभाल लिया और उनके बाद उनकी औलाद उनकी जानशीं हुई, यहां तक कि जब इस्लाम का दौर आया तो हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब इस पद पर मौजूद थे।[25]

इनके अ़लावा कुछ और पद भी थे जिन्हें कुरैश ने आपस में बांट रखे थे। इन पदों और प्रबन्धों द्वारा कुरैश ने एक छोटा सा राज——बल्कि सरकार जैसा प्रशासन——स्थापित कर रखा था, जिसकी सरकारी संस्थाएं और संगठन कुछ इसी ढंग के थे जैसे आज की पार्लियामेन्ट्री सभाएं और संस्थाएं हुआ करती हैं। इन पदों की रूप-रेखा नीचे दी जा रही है।

---

25) इब्ने हिशाम पुस्तक 1/129

1. ऐसारः

यानी फ़ाल निकालने और भाग्य मालूम करने के लिए मूर्तियों के पास जो तीर रखे रहते थे, उनकी देख-रेख----यह पद बनू जमह को प्राप्त था।

2. धन-सम्पत्ति

यानी मूर्तियों के क़रीब होने के लिए जो चढ़ावे और क़ुरबानियां पेश की जाती थीं, उनकी व्यवस्था करना, साथ ही झगड़ों और मुक़दमों का फ़ैसला करना, यह काम बनू सहम को सौंपा गया था।

3. शूराः

यह पद बनू असद को प्राप्त था।

4. अश्नाक़ः

यानी बदले और जुर्माने की व्यवस्था। इस पद पर बनू तैम आसीन थे।

5. उक़ाबः

यानी राष्ट्रीय-ध्वज उठाने की ज़िम्मेदारी बनू उमैया की थी।

6. कुब्बाः

यानी सैनिक कैम्प की व्यवस्था और घुड़सवारों का नेतृत्व, यह बनू मख़्ज़ूम के हिस्से में आया था।

7. सिफ़ारतः

बनू अ़दी का पद था।[26]

---

26) तारीख़े अरज़ुल-क़ुरआन 2/104-106

बाक़ी अ़रब सरदारियां

हम पिछले पृष्ठों में क़हतानी और अ़दनानी क़बीलों के वतन (स्वदेश) छोड़ने का उल्लेख कर चुके हैं और बतला चुके हैं कि पूरा अ़रब देश इन क़बीलों में बंट गया था, इसके बाद उनकी सरदारियों का ख़ाका कुछ यूं था कि जो हियरा क़बीलों के आस-पास आबाद थे, उन्हें हियरा शासकों के अधीन माना गया और जिन क़बीलों ने बादियतुश्शाम में रहना शुरू कर दिया था, उन्हें ग़स्सानी शासकों के अधीन माना गया, मगर यह मातहती सिर्फ़ नाम की थी, व्यवहारिक न थी। इन दो जगहों को छोड़ कर अरब के भीतर आबाद क़बीले आज़ाद थे।

इन क़बीलों में सरदारी व्यवस्था चल रही थी। क़बीले खुद अपना सरदार तय करते थे और इन सरदारों के लिए इनका क़बीला एक छोटा सा राज्य हुआ करता था। राजनीतिक अस्तित्व और सुरक्षा की बुनियाद, क़बीलों की एकता पर आधारित पक्षपात और अपने भू-भाग की सुरक्षा, के मिले जुले स्वार्थ थे।

कबीलों के सरदारों का दर्जा अपनी क़ौम में बादशाहों जैसा था। क़बीला सुलह और युद्ध में बहरहाल अपने सरदार के फ़ैसले के अधीन होता था और किसी हाल में उससे अलग-थलग नहीं रह सकता था। सरदार को वही मन-मानी करने और ज़ुल्म ढाने का हक़ हासिल था, जो किसी डिक्टेटर को हासिल हुआ करता है, यहां तक कि कुछ सरदारों का यह हाल था कि अगर वे बिगड़ जाते तो हज़ारों तलवारें यह पूछे बिना नंगी होकर निकल आतीं कि सरदार के गुस्से की वजह क्या है? फिर भी चूंकि एक ही कुंबे के चचेरे भाइयों में सरदारी के लिए खींचातानी भी हुआ करती थी, इसलिए इसका तक़ाज़ा था कि सरदार अपने क़बीले के जन-साधारण के प्रति उदारता दिखाए, खूब माल ख़र्च करे, मेहमानों की आवभगत में आगे-आगे रहे। दया-भाव और उदारता से काम ले, वीरता का व्यवहारिक प्रदर्शन करे और स्वाभिमान की रक्षा करे, ताकि लोगों की

नज़र में आम तौर से और कवियों की नज़र में ख़ास-तौर से गुणों और विशेषताओं का योग बन जाए, (क्योंकि कवि उस युग में क़बीले का मुख हुआ करता था) और इस तरह सरदार अपने मुक़ाबले के लोगों से ऊंचा दर्जा हासिल कर ले।

सरदारों के कुछ विशेष अधिकार भी हुआ करते थे जिन्हें एक कवि ने यूँ बताया हैं---

لک المرباع فینا و الصفایا　　　　وحکمک والنشیطة والفضول

'हमारे बीच तुम्हारे लिए माले ग़नीमत का चौथाई है और चुना हुआ माल है और वह माल है जिसका तुम फ़ैसला कर दो और जो राह चलते हाथ आ जाए और जो बांटे जाने से बच रहे।

मिरबाअ़:

ग़नीमत के माल का चौथाई हिस्सा,

सफ़ी:

वह माल जिसे बांटने से पहले ही सरदार अपने लिए चुन ले।

नशीता:

वह माल जो असल क़ौम तक पहुंचने से पहले रास्ते ही में सरदार के हाथ लग जाए।

फ़ुज़ूल:

वह माल जो बांटने के बाद बच रहे और ग़ाज़ियों (योद्धाओं) की तायदाद पर बराबर न बंट सके। जैसे बंटने से बचे हुए ऊंट घोड़े वग़ैरह, इन सब क़िस्मों के माल पर क़बीले के सरदार का हक़ हुआ करता था।

राजनीतिक स्थिति

अ़रब प्रायद्वीप के शासकों का उल्लेख हो चुका। अनुचित न होगा कि अब उन की कुछ राजनीतिक परिस्थितियों का भी उल्लेख कर दिया जाए।

अ़रब प्रायद्वीप के वे तीनों सीमावर्ती क्षेत्र जो अन्य देशों के पड़ोस में पड़ते थे, उनकी राजनीतिक स्थिति, बड़े बिखराव, अशान्ति और पतन व गिरावट का शिकार थी। इंसान स्वामी और दास या शासक और शासित के दो वर्गों में बंटा हुआ था। सारे फ़ायदे शासकों---और मुख्य रूप से विदेशी शासकों----को मिले हुए थे और सारा बोझ दासों के सर था। इससे अधिक खुले शब्दों में यूं कहा जा सकता है कि प्रजा हक़ीक़त में एक खेती थी जो शासन के लिए टैक्स और आमदनी जुटाती थी और शासन उसे स्वादों, इच्छाओं, सुख-वैभव और ज़ुल्म व ज़्यादती के लिए इस्तेमाल करती थीं। प्रजा अपने आप में हाथ-पांव मार रहे थे और उन पर हर ओर से ज़ुल्म की वर्षा हो रही थी। पर शिकायत का कोई अक्षर वे मुख पर न ला सकते थे, बल्कि ज़रूरी था कि तरह-तरह का अपमान, निरादर और दमन व आत्याचार सहन करें और ज़ुबान बंद रखें, क्योंकि ज़ुल्म व जब्र की हुक्मरानी थी और मानवाधिकार नाम की किसी चीज़ का कहीं कोई अस्तित्व न था।

इन इलाक़ों के पड़ोस में रहने वाले क़बीले अनिश्चितता के शिकार थे। उन्हें स्वार्थ और इच्छाएं इधर से उधर और उधर से इधर फेंकती रहती थीं। कभी वे इराक़ियों की आवाज़ में आवाज़ मिलाते थे और कभी शामियों (सीरिया वालों) की हां में हां मिलाते थे।

जो क़बीले अ़रब के अन्दर आबाद थे, उनके भी जोड़ ढीले थे और वे भी बिखराव के शिकार थे। हर ओर क़बीलों के आपसी झगड़ों, नस्ली दंगों और धार्मिक मतभेदों की गर्मबाज़ारी थी, जिसमें क़बीले के लोग हर हाल में अपने-अपने क़बीले का साथ देते थे, चाहे वे हक़ पर हों या न हों, चुनांचे उनका एक तर्जुमान (दूत) कहता है---

وَمَا أَنَا إِلَّا مِنْ غَزِيَّةَ إِنْ غَوَتْ   غَوَيْتُ، وَإِنْ تَرْشُدْ غَزِيَّةُ أَرْشُدِ

'मैं भी तो क़बीला ग़ज़ीया ही का एक व्यक्ति हूं। अगर वह ग़लत रास्ते पर चलेगा तो मैं भी ग़लत रास्ते पर चलूंगा और अगर वह सही रास्ते पर चलेगा तो मैं भी सही रास्ते पर चलूंगा।'

अरब में कोई ऐसा बादशाह न था जो उनकी आवाज़ को ताक़त पहुंचाता और न कोई ऐसा था जिसकी ओर कठिनाइयों और परेशानियों में रुजू (याद) किया जाता और जिसपर वक़्त पड़ने पर भरोसा किया जाता।

हां, हिजाज़ की सरकार को मान-सम्मान की निगाह से निश्चित रूप से देखा जाता था। और उसे धर्म-केन्द्र का निगरां और रहनुमा भी समझा जाता था। यह सरकार एक प्रकार से सांसारिक-नेतृत्व और धार्मिक-अगुवाई का योग था। इसे अ़रबों पर धार्मिक-नेतृत्व के नाम से सत्तासीन (बालादस्त) थे और हरम और उसके आस-पास के क्षेत्रों पर इसका नियमित शासन था। वही अल्लाह के घर के दर्शनार्थियों की ज़रुरतों का इन्तिज़ाम और इब्राहीमी शरीअ़त के हुक्मों को लागू करती थी और उसके पास पार्लीमानी संस्थाएं और संगठन भी थे। लेकिन यह शासन इतना कमज़ोर था कि अ़रब के भीतर की ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने की ताक़त न रखता था, जैसा कि हब्शियों के हमले के मौक़े पर ज़ाहिर हुआ।

अ़रब के दीन और धर्म

अ़रब निवासी आ़मतौर से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की दावत व तब्लीग़ के नतीजे में इब्राहीमी दीन की पैरवी करने वाले थे, इसलिए सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करते थे और तौहीद (एकेश्वरवाद) पर चल रहे थे, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उन्होंने एक अल्लाह का पाठ भुला दिया। फिर भी उनके अन्दर तौहीद और इब्राहीमी दीन की कुछ निशानियां बाक़ी रहीं, यहां तक कि बनू ख़ुज़ाआ़ का सरदार अ़म्र बिन लुहई सामने आया। उसका पालन-पोषण बड़े नेक कामों, सदक़ा व ख़ैरात और दीनी मामलों से गहरी दिलचस्पी पर हुआ था, इसलिए लोगों ने उसे मुहब्बत की नज़र से देखा और उसे बड़े उलेमा और बुज़ुर्ग औलिया में से समझ कर उसकी पैरवी की। फिर इस आदमी ने शाम देश की यात्रा की, देखा तो वहां मूर्तियों की पूजा की जा रही थी। उसने समझा कि यह भी बेहतर और हक़ है, क्योंकि शाम देश पैग़म्बरों की धरती और आसमानी किताबों के उतरने की जगह थी, चुनांचे वह अपने साथ हुबल बुत भी ले आया और उसे ख़ाना-ए-काबा के अंदर गाड़ दिया और मक्का वालों को अल्लाह के साथ शिर्क की दावत दी। मक्का वालों ने उसे मान लिया। इसके बाद हिजाज़ निवासी भी मक्का वालों के पद-चिन्हों पर चल पड़े, क्योंकि वे अल्लाह के घर के निगरां और हरम के बाशिंदे थे।[1] इस तरह अरब में मूर्ति-पूजा आरम्भ हुई।

---

1) मुख़्तसर सीरतुर-रसूल (शेख़ अ़ब्दुल-वहाब)।2

हुबल के अलावा अरब के सब से पुराने बुतों (मूर्तियों) में से मुनात है। यह लाल-सागर के तट पर कुदैद के क़रीब मुशल्लल में गड़ा हुआ था।[2]

इसके बाद ताइफ़ में लात नामक बुत (मूर्ति) वजूद में आया। फिर नख़ला घाटी में उज़्ज़ा का बुत सामने आया। यह तीनों अरब के सबसे बड़े बुत थे। इसके बाद हिजाज़ के हर क्षेत्र में शिरक की ज़्यादती और बुतों की भरमार हो गयी। कहा जाता है कि एक जिन्न अम्र बिन लुहई के आधीन था। उसने बताया कि नूह क़ौम के बुत—यानी वद्द, सुवाअ़, यग़ूस, यऊक़ और नस्र—जद्दा में दफ़न हैं। इस ख़बर पर अम्र बिन लुहई जद्दा गया और इन बुतों को खोद निकाला, फिर उन्हें तिहामा लाया और जब हज का ज़माना आया तो इन्हें अलग-अलग क़बीलों के हवाले किया। ये क़बीले इन बुतों को अपने-अपने क्षेत्रों में ले गए। इस तरह हर-हर क़बीले में फिर हर-हर घर में एक बुत हो गया।

फिर मुश्रिकों ने मस्जिदे हराम को भी बुतों से भर दिया। चुनांचे जब मक्का जीत लिया गया, तो बैतुल्लाह के चारों ओर तीन सौ साठ बुत थे, जिन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथों से तोड़ा। आप हर एक को छड़ी से ठोकर मारते जाते थे और वह गिरता जाता था। फिर आपने हुक्म दिया और इन सारे बुतों को मस्जिदे हराम से बाहर निकाल कर जला दिया गया।[3]

ग़रज़ शिर्क और बुत-परस्ती जाहिलियत (अज्ञानता) वालों के लिये दीन की सब से बड़ी निशानी बन गयी थी, जिन्हें घमंड था कि वे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन पर हैं।

---

2) बुख़ारी 1/22

3) मुख़्तसर सीरतुर-रसूल(शेख़ अब्दुल-वहाब) 13,50,51,52,54

फिर अज्ञानता युग में उनके यहां बुत-परस्ती के कुछ ख़ास तरीक़े और रस्में भी रिवाज में थीं जो ज़्यादातर अम्र बिन लुहई की गढ़ी हुई थी। अज्ञानता युग के लोग समझते थे कि अम्र बिन लुहई की गढ़ी हुई बातें दीने इब्राहीमी में तब्दीली नहीं, बल्कि अच्छी बातें है। नीचे हम जाहिलियत युग के लोगों में भीतर चल रही बुत-परस्ती की कुछ अहम रस्मों का ज़िक्र करते हैं।

1. जाहिलियत के समय के मुश्रिक बुतों (मूर्तियों) के पास मुजाविर बन कर बैठते थे उनकी शरण खोजते थे। उन्हें ज़ोर-ज़ोर से पुकारते थे और ज़रूरतें पूरी करने और कठिनाईयां दूर करने के लिए उनसे फ़रियादें और दुआएं करते थे और समझते थे कि वे अल्लाह से सिफ़ारिश करके हमारी मुराद पूरी करा देंगे।

2. बुतों का हज व तवाफ़ करते थे। उनके सामने विनम्रता से पेश आते थे और उन्हें सज्दा करते थे।

3. बुतों के लिए नज़राने और क़ुर्बानियाँ पेश करते और क़ुर्बानी के इन जानवरों को कभी बुतों के आस्ताने पर ले जा कर ज़िब्ह करते थे और कभी कहीं भी ज़िब्ह कर लेते थे मगर बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते थे। ज़िब्ह की इन दोनों शक्लों का उल्लेख अल्लाह ने क़ुरआन में किया है। इर्शाद है, وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ (5:3) यानी वे जानवर भी हराम हैं जो आस्तानों पर ज़िब्ह किए गए हों। दूसरी जगह इर्शाद है, وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ (6:121) यानी उस जानवर का मांस मत खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो।

4. बुतों से क़रीब होने का एक तरीक़ा यह भी था कि मुश्रिक अपने हिसाब से अपने खाने-पीने की चीज़ों और अपनी खेती और चौपाए की पैदावार का एक हिस्सा बुतों के लिए ख़ास कर देते थे। इस संबंध में उनकी रोचक रीति यह थी कि वे अल्लाह के लिए भी अपनी खेती और जानवरों की पैदावार का एक हिस्सा ख़ास करते थे, फिर

अनेकों कारणों से अल्लाह का हिस्सा तो बुतों की तरफ़ कर सकते थे, लेकिन बुतों का हिस्सा किसी भी हाल में अल्लाह की ओर नहीं कर सकते थे। अल्लाह का इर्शाद है----

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

''अल्लाह ने जो खेती और चौपाए पैदा किए हैं उनका एक हिस्सा उन्होंने अल्लाह के लिए मुक़र्रर किया और कहा, यह अल्लाह के लिए है--- उनके विचार में--- और यह हमारे शरीकों के लिए हैं तो जो उनके शरीकों के लिए होता है, वह तो अल्लाह तक नहीं पहुंचता (मगर) जो अल्लाह के लिए होता है, वह उनके शरीकों तक पहुंच जाता है। कितना बुरा है वह फ़ैसला जो ये लोग करते हैं?'' (6:136)

5. बुतों के क़रीब होने का एक तरीक़ा यह भी था कि मुश्रिक खेती और चौपाए में अलग-अलग क़िस्म की नज़रें मानते थे। अल्लाह का इर्शाद है----

وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ

''इन मुश्रिकों ने कहा कि ये चौपाए और खेतियां मना की गई हैं उन्हें वही खा सकता है, जिसे हम चाहें। उनके विचार से---और ये वह चौपाए है जिनकी पीठ हराम की गई है (न उन पर सवारी की जा सकती है न सामान लादा जा सकता है) और कुछ चौपाए ऐसे हैं जिन पर ये लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए---अल्लाह का नाम नहीं लेते।'' (6:138)

6. इन्हीं जानवरों में बहीरा, साइबा, वसीला और हामी थे। इब्ने इस्हाक़ कहते है कि बहीरा, साइबा की बच्ची को कहा जाता है और

साइबा उस ऊंटनी को कहा जाता है, जिससे दस बार लगातार मादा बच्चे पैदा हों, बीच में कोई नर न पैदा हो। ऐसी ऊंटनी को आज़ाद छोड़ दिया जाता था, उस पर सवारी नहीं की जाती थी, उसके बाल नहीं काटे जाते थे और मेहमान के सिवा कोई उसका दूध नहीं पीता था। इसके बाद यह ऊंटनी जो मादा बच्चे जनती, उसका कान चीर दिया जाता और उसे भी उसकी मां के साथ आज़ाद छोड़ दिया जाता, उस पर सवारी न की जाती, उसका बाल न काटा जाता और मेहमान के सिवा कोई उसका दूध न पीता। यही बहीरा है और इसकी मां साइबा है।

वसीला उस बकरी को कहा जाता था, जो पांच बार दो-दो मादा बच्चे जने (यानी पांच बार में दस मादा बच्चे पैदा हों) बीच में कोई नर न पैदा हो। उस बकरी को इसलिए वसीला कहा जाता था कि वह सारे मादा बच्चों को एक दूसरे से जोड़ देती थी। इसके बाद उस बकरी से जो बच्चे पैदा होते, उन्हें सिर्फ़ मर्द खा सकते थे, औरतें नहीं खा सकती थीं, अलबत्ता अगर कोई बच्चा मुर्दा पैदा होता, तो उसको मर्द और औरत सभी खा सकते थे।

हामी उस नर ऊंट को कहते हैं जिसके जोड़ी खाने से लगातार दस मादा बच्चे पैदा होते, बीच में कोई नर न पैदा होता। ऐसे ऊंट की पीठ सुरक्षित कर दी जाती थी, न उसपर सवारी की जाती थी, न उसका बाल काटा जाता था, बल्कि उसे ऊंटों के रेवड़ में जोड़ा खाने के लिए आज़ाद छोड़ दिया जाता था, और इसके सिवा कोई दूसरा फ़ायदा न उठाया जाता था। अज्ञानता युग की मूर्ति-पूजा के इन तरीक़ों का खंडन करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया—

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۖ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ

"अल्लाह ने न कोई बहीरा, न कोई साइबा, न कोई वसीला और

न कोई हामी बनाया है, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं और उनमें से अक्सर बुद्धि नहीं रखते।'' (5:103)

एक दूसरी जगह फ़रमाया----

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ

''इन (मुश्रिकों) ने कहा कि इन चौपायों के पेट में जो कुछ है, वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, अलबत्ता अगर वह मुर्दा हो तो उसमें मर्द और औरत सब शरीक हैं।''(6:139)

चौपायों की बताई गई क़िस्में यानी बहीरा, साइबा वग़ैरह के कुछ दूसरे अर्थ भी बताए गए हैं[4] जो इब्ने इसहाक़ के बयान की गई तफ़्सीर से कुछ हद तक अलग हैं---

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रह० का बयान है, ये जानवर उनके तगूतों (झूठे ख़ुदाओं) के लिए थे।[5] और सहीह बुख़ारी की रिवायत में है कि अम्र बिन लुहई पहला आदमी है जिसने मूर्तियों के नाम पर जानवर छोड़े।[6]

अरब अपनी मूर्तियों के साथ यह सब कुछ इस अक़ीदे के साथ करते थे कि ये बुत उन्हें अल्लाह के क़रीब कर देंगे और अल्लाह के हुज़ूर उनकी सिफ़ारिश कर देंगे, चुनांचे क़ुरआन मजीद में बताया गया है कि मुश्रिक कहते थे----

مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ

''हम उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए कर रहे हैं कि वे हमें अल्लाह से क़रीब कर दें।'' (39:3)

4) इब्ने हिशाम 1/89,90
5) बुख़ारी 1/499
6) बुख़ारी 1/499

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ

"ये मुश्रिक अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जो उन्हें न नफ़ा पहुंचा सकें, न नुक़्सान और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं।" (10:18)

अ़रब के मुश्रिक अज़लाम यानी फ़ाल के तीर भी इस्तेमाल करते थे। (अज़लाम बहुवचन है ज़लम की और ज़लम उस तीर को कहते हैं जिसमें पर न लगे हों) शकुन के लिए इस्तेमाल होने वाले ये तीर तीन प्रकार के होते थे—

एकः वह जिस पर सिर्फ़ 'हां' या 'नहीं' लिखा होता था। इस तरह के तीर सफ़र और निकाह वग़ैरह जैसे कामों के लिए इस्तेमाल किए जाते थे, अगर फ़ाल में 'हां' निकलता तो काम कर डाला जाता, और अगर 'नहीं' निकलता तो साल भर के लिए स्थगित कर दिया जाता और आगे फिर शकुन निकाली जाती।

दूसरीः क़िस्म वह थी, जिस पर पानी और दियत (देनदारी की चीज़ें) वग़ैरह लिखी होती थीं, और

तीसरीः क़िस्म वह थी जिस पर यह लिखा होता था कि 'तुम में से है' या 'तुम्हारे अ़लावा से है' या 'मिला हुआ है'।

इन तीरों का इस्तेमाल यह था कि जब किसी के वंश में संदेह होता तो उसे एक सौ ऊंटों सहित हुबल के पास ले जाते, ऊंटों को तीर वाले महन्त के हवाले करते और वह तमाम तीरों को एक साथ मिला कर घुमाता-झिंझोड़ता, फिर एक तीर निकालता। अब अगर यह निकलता कि, 'तुम में से है' तो वह इनके क़बीले का मान्य व्यक्ति समझा जाता और यह निकलता कि 'तुम्हारे ग़ैर (पराए) से है' तो हलीफ़ (जिससे समझौता हो) और अगर यह निकलता कि 'मुलहिक़ (मिला हुआ) से है' तो उनके भीतर अपनी हैसियत पर बाक़ी रहता, न क़बीले का व्यक्ति

माना जाता, न हलीफ़।[7]

इसी से मिलता-जुलता एक रिवाज मुश्रिकों में जुआ खेलने और जुए के तीर इस्तेमाल करने का था। इसी तीर की निशानदही पर वे जुए का ऊंट ज़िब्ह करके उसका मांस बांटते थे।[8]

अरब के मुश्रिक काहिनों, अर्राफ़ों और नजूमियों की ख़बरों पर भी ईमान रखते थे। काहिन उसे कहते हैं जो आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करे, और छिपे रहस्यों को जानने का दावेदार हो। कुछ काहिनों का यह भी दावा था कि एक जिन्न उनके अधीन है जो उन्हें ख़बरें पहुंचाता रहता है और कुछ काहिन कहते थे कि उन्हें ऐसी समझ दी गयी है, जिससे वे ग़ैब का पता लगा लेते हैं। कुछ इसके दावेदार थे कि जो आदमी उनसे कोई बात पूछने आता है उसकी कथनी-करनी से या उसकी हालत से, कुछ बातों और वजहों के ज़रिए वारदात (घटनाओं) की जगहों का पता लगा लेते हैं, इस क़िस्म के आदमी को अर्राफ़ कहा जाता था, जैसे वह आदमी जो चोरी के माल और चोरी की जगह और गुमशुदा जानवर वग़ैरह का पता-ठिकाना बताता।

नजूमी उसे कहते हैं जो तारों पर विचार करके और उनकी चाल और वक़्तों का हिसाब लगा कर पता लगाता है कि दुनिया में क्या हालात पैदा होने वाले हैं और कौन सी घटनाएं घटित होने वाली हैं[9] इन नजूमियों की ख़बरों को मानना असल में तारों पर ईमान लाना है और तारों पर ईमान लाने की एक शक्ल यह भी थी कि अरब के मुश्रिक

7) मुहाज़िराते ख़िज़री 1/56,इब्ने हिशाम 1/102-103

8) इसका तरीक़ा यह था कि जुआ खेलने वाले एक ऊंट काट कर उसके 10 या 28 भाग लगाते। फिर तीरों से लाटरी निकालते किसी तीर पर जीत का निशान होता और कोई तीर बिला निशान के। जिसके नाम पर निशान वाला तीर निकलता वह सफ़ल माना जाता और अपना हिस्सा लेता और जिसके नाम बिला निशान वाला तीर निकलता उसे क़ीमत देनी पड़ती।

9) मिरआतुल-मफ़ातीह 2/302 लखनऊ मुद्रण

नक्षत्रों पर ईमान रखते थे और कहते थे कि हम पर फ़्लां और फ़्लां नक्षत्र से वर्षा हुई है।[10]

मुश्रिकों में अपशगुन की भी रस्म थी। इसे अ़रबी में तियरः कहते हैं। इसकी शक्ल यह थी कि मुश्रिक किसी चिड़िया या हिरन के पास जाकर उसे भगाते थे। फिर अगर वह दाहिनी ओर भागता, तो उसे अच्छाई और कामियाबी की निशानी समझ कर अपना काम कर गुज़रते और अगर बाईं ओर भागता तो उसे दुर्भाग्य की निशानी समझ कर अपने काम से बाज़ (रुके) रहते। इसी तरह अगर कोई चिड़िया या जानवर रास्ता काट देता तो उसे भी मनहूस समझते।

इसी से मिलती जुलती एक हरकत यह भी थी कि मुश्रिक लोग ख़रगोश के टख़ने की हड्डी लटकाते थे और कुछ दिनों, महीनों, जानवरों, घरों और औरतों को मनहूस समझते थे। बीमारियों की छूत के क़ायल थे और रूह के उल्लू बन जाने का अ़क़ीदा रखते थे। यानी उनका अ़क़ीदा था कि जब तक मक़्तूल (क़त्ल किए गए व्यक्ति) का बदला न लिया जाए, उसको शान्ति नहीं मिलती और उसकी रूह उल्लू बन कर वीरानों में घूमती रहती है और 'प्यास-प्यास' या 'मुझे पिलाओ, मुझे पिलाओ' की आवाज़ लगाती रहती है। जब उसका बदला ले लिया जाता है तो उसे आराम और सुकून मिल जाता है।[11]

इब्राहीमी दीन में क़ुरैश की बिदअ़तें

ये थे जाहिलियत युग के लोगों अक़ीदे और अ़मल, उनके साथ ही उनके अंदर इब्राहीमी दीन की कुछ बातें बाक़ी भी थीं, यानी उन्होंने यह दीन पूरे तौर पर नहीं छोड़ा था, चुनांचे वे बैतुल्लाह का पूरा सम्मान करते और उसका तवाफ़ करते थे, हज व उमरा करते थे, अ़रफ़ात व

10) देखिए मुस्लिम किताबुल-ईमान 1/95

11) बुख़ारी 2/851,857

मुज़दलफ़ा में ठहरते थे और हद्य के जानवरों की कुरबानी करते थे, अलबत्ता उन्होंने इस इब्राहीमी दीन में बहुत सी बिदअतें ईजाद करके शामिल कर दी थीं। जैसे--

कुरैश की एक बिदअ़त यह थी कि वे कहते थे कि हम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद (सन्तान) हैं। हरम के पासबान (देख-भाल करने वाले), अल्लाह के घर के वाली (ज़िम्मेदार) और मक्का के निवासी हैं कोई आदमी हमारे दर्जे का नहीं और न किसी के हक़ हमारे हक़ों जितने हैं----और इसी आधार पर ये अपना नाम हुम्स (बहादुर और गर्मजोश) रखते थे---- इसलिए हमारी शान के ख़िलाफ़ है कि हम हरम की सीमाओं से बाहर जाएं। चुनांचे हज के ज़माने में ये लोग अरफ़ात नहीं जाते थे और न वहां से इफ़ाज़ा करते थे, बल्कि मुज़दलफ़ा ही में ठहर कर वहीं से इफ़ाज़ा कर लेते थे अल्लाह ने इस बिदअ़त (नयी बात) का सुधार करते हुए फ़रमाया--------- ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ "तुम लोग भी वहीं से इफ़ाज़ा करो जहां से सारे लोग इफ़ाज़ा करते है।"[12]

उनकी एक बिदअ़त यह भी थी कि वे कहते थे कि हुम्स (कुरैश) के लिए एहराम की हालत में पनीर और घी बनाना ठीक नहीं और न यह ठीक है कि बाल वाले घर (यानी कम्बल के ख़ेमे) में दाख़िल हों और न यह ठीक है कि साया हासिल करना हो तो चमड़े के ख़ेमे के सिवा कहीं और साया हासिल करें।[13]

उनकी एक बिदअ़त यह भी थी वे कहते थे कि हरम के बाहर के निवासी हज या उमरा करने के लिए आएं और हरम के बाहर से खाने की कोई चीज़ लेकर आएं तो उसे उनके लिए खाना सही नहीं।[14]

12) इब्ने हिशाम 1/99,बुख़ारी 1/226

13) इब्ने हिशाम 1/202

14) इब्ने हिशाम 1/202

उनकी एक बिदअ़त यह भी थी कि उन्होंने हरम के बाहर के निवासियों को हुक्म दे रखा था कि वे हरम में आने के बाद पहला तवाफ़ हुम्स से हासिल किए हुए कपड़ो ही में करें। चुनांचे अगर उनका कपड़ा न मिलता तो मर्द नंगे तवाफ़ करते और औ़रतें अपने सारे कपड़े उतार कर सिर्फ़ एक छोटा सा खुला हुआ कुरता पहन लेतीं और उसी में तवाफ़ करतीं और तवाफ़ के समय यह पद्य पढ़ती जातीं:

اَلْیَوْمَ یَبْدُوْ بَعْضُهٗ اَوْ کُلُّهٗ وَمَا بَدَا مِنْهُ فَلَا اُحِلُّهٗ

'आज कुछ या कुल (शर्मगाह) खुल जाएगी, लेकिन जो खुल जाए मैं उसे (देखना) हलाल नहीं क़रार देती।'

अल्लाह ने इस ख़ुराफ़ात के ख़ातमे के लिए फ़रमायाः

یٰبَنِیْ اٰدَمَ خُذُوْا زِیْنَتَکُمْ عِنْدَ کُلِّ مَسْجِدٍ

"ऐ आदम के बेटों! हर मस्जिद के पास अपनी ज़ीनत अ़ख़्तियार कर लिया करो" (7:31)

बहरहाल अगर कोई औरत या मर्द बड़ा और प्रतिष्ठित बन कर हरम के बाहर से लाए हुए अपने ही कपड़ों में तवाफ़ कर लेता तो तवाफ़ के बाद इन कपड़ों को फेंक देता, उनसे न ख़ुद फ़ायदा उठाता, न कोई और।[15]

कुरैश की एक बिदअ़त यह भी थी कि वह हालते एहराम में घर के अंदर दरवाज़े से दाख़िल न होते थे, बल्कि घर के पिछवाड़े एक बड़ा सा सूराख़ बना लेते और उसी से आते-जाते थे और अपने इस उजडपन को नेकी समझते थे। कुरआन करीम ने इससे भी मना फ़रमाया।(2:189)

यही दीन----यानी शिर्क और बुत-परस्ती और वहम का गुमान और ख़ुराफ़ात पर आधारित अक़ीदा व अ़मल वाला दीन-----आम अ़रब वालों का दीन था।

15) इब्ने हिशाम 1/202 1/202-203, बुख़ारी 1/226

इसके अलावा अरब प्रायद्वीप के चारों ओर यहूदी धर्म, मसीही धर्म, मजूसी धर्म और सबाई धर्म ने भी घुसपैठ करने के मौक़े पा लिए थे, इसलिए उनकी संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत की जा रही है।

अरब प्रायद्वीप में यहूदियों के कम से कम दो युग हैं-----

पहला युग उस समय से ताल्लुक़ रखता है जब फ़लस्तीन में बाबुल और आशूर के राज्य की जीतों की वजह से यहूदियों को देश छोड़ना पड़ा। इस राजा की कठोरता और बुख़्ते-नस्र के हाथों यहूदी बस्तियों की तबाही और वीरानी, उनके हैकल की बर्बादी और उनकी बड़ी सख्या के बाबुल देश से निकाले जाने का नतीजा यह हुआ कि यहूदियों की एक जमाअत फ़लस्तीन छोड़ कर हिजाज़ के उत्तरी भाग में आ बसी।[16]

दूसरा युग उस समय शुरू होता है जब टाइटस रूमी के नेतृत्व में सन् 70 ई० में रूमियों ने फ़लस्तीन पर क़ब्ज़ा किया। इस मौक़े पर रुमियों के हाथों यहूदियों की पकड़-धकड़ और यसरिब, ख़ैबर और तैमा में आबाद होकर यहां अपनी बाक़ायदा बस्तियां बसा लीं और क़िले व गढ़ियां बना लीं। वतन छोड़ने वाले इन यहूदियों के ज़रिए अरब निवासियों में किसी क़दर यहूदी धर्म का भी रिवाज हुआ और उसे भी इस्लाम आने से पहले और उसके आरंभिक युग की राजनीतिक घटनाओं में एक उल्लेखनीय हैसियत हासिल हो गई। इस्लाम आने के समय मशहूर राजनीतिक क़बीले ये थे---- ख़ैबर, नसीर, मुस्तलिक़, क़ुरैज़ा और क़ैनुक़ाअ। समहूदी ने "वफ़ाउल् वफ़ा" के पृ० 116 में बताया है कि यहूदी क़बीलों की तायदाद बीस से ज़्यादा थी।[17]

यहूदी धर्म यमन में भी पला बढ़ा, यहां उसके फैलने की वजह तबान असअद अबू कर्ब था। यह आदमी लड़ाई लड़ता हुआ यसरिब

---

16) क़ल्बु जज़ीरतिल-अरब 25।

17) इब्ने हिशाम 1/202

पहुंचा, वहां यहूदी धर्म अपना लिया और बनू क़ुरैज़ा के दो यहूदी उलेमा को अपने साथ यमन ले आया और उनके ज़रिए यहूदी धर्म को यमन में वुसअत और फैलाव हुआ। अबू कर्ब के बाद उसका बेटा युसूफ़ जू-नवास यमन का हाकिम हुआ तो उसने यहूदी धर्म के जोश में नजरान के ईसाइयों पर हल्ला बोल दिया और उन्हें मजबूर किया कि यहूदी धर्म कुबूल करें, पर उन्होंने इंकार कर दिया। इस पर जू-नवास ने खाई खुदवाई और उसमें आग जला कर बूढ़े-बच्चे, मर्द-औरत सब को बिना ख्याल किये आग के अलाव में झोंक दिया। कहा जाता है कि इस दुंघटना का शिकार होने वालों की तायदाद बीस से चालीस हजार के बीच थी। यह अक्टूबर 523 ई० की घटना है। कुरआन मजीद ने सूरः बुरूज में इसी घटना का उल्लेख किया है।[18]

जहां तक ईसाई धर्म का ताल्लुक़ है तो अ़रब इलाक़े में इसका आगमन हब्शी और रूमी क़ब्ज़ा करने वालों और विजेताओं के ज़रिए हुई। हम बता चुके हैं कि यमन पर हब्शियों का क़ब्ज़ा पहली बार 340 ई० में हुआ और 370 ई० तक बाक़ी रहा। इस बीच यमन में ईसाई मिशन काम करता रहा, लगभग उसी ज़माने में एक करामतों वाला ज़ाहिद, जिसकी दुआएं मान ली जाती थीं और जिसका नाम फ़ीमयून था, नजरान पहुंचा और वहां के निवासियों में ईसाई धर्म का प्रचार किया। नजरान वालों ने उसकी और उसके दीन की सच्चाई की कुछ ऐसी निशानियां देखीं कि उन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया।[19]

फिर जू-नवास की कार्यवाही की प्रतिक्रिया के तौर पर हब्शियों ने दोबारा यमन पर कब्ज़ा कर लिया और अबरहा ने यमन राज्य की बाग-डोर अपने हाथ में ली, तो उसने बड़े उत्साह और उमंग के साथ बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म को बढ़ाने की कोशिश की। इस उत्साह ही का

18) इब्ने हिशाम 1/20-22,27,31,35,36, तफ़सीरे सूरः बुरुज

19) इब्ने हिशाम 1/31-34

नतीजा था कि उसने यमन में एक काबा तामीर किया और कोशिश की कि अ़रब निवासियों को (मक्का और बैतुल्लाह से) रोक कर उसी का हज कराए और मक्का के बैतुल्लाह शरीफ़ को ढा दे, लेकिन उसके इस साहस पर अल्लाह ने उसे ऐसी सज़ा दी कि अगले-पिछले तमाम लोगों के लिए एक सबक़ बन गया।

दूसरी ओर रूमी क्षेत्रों के पड़ोस में होने की वजह से आले ग़स्सान, बनू तग़लब और बनू तई आदि अ़रब क़बीलों में ईसाई धर्म फैल गया था, बल्कि हीरा के कुछ अ़रब बादशाहों ने भी ईसाई धर्म अपना लिया था।

जहां तक मजूसी धर्म का ताल्लुक़ है, तो इसे अधिकतर फ़ारस के पड़ोसी अ़रबों में बढ़ौतरी मिली थी, जैसे इराक़े अ़रब, बहरैन (अल-अहसा), हजर और अ़रब खाड़ी के तटवर्ती क्षेत्र, इनके अ़लावा यमन पर फ़ारसी क़ब्ज़े के दौरान वहां भी इक्का-दुक्का लोगों ने मजूसी धर्म अपना लिया।

बाक़ी रहा साबी मज़हब तो इराक़ वग़ैरह के पुराने खण्डहरों की खुदाई के दौरान जो शिला-लेख मिले हैं, उनसे पता चलता है कि यह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की कुलदानी क़ौम का धर्म था। पुराने ज़माने में शाम और यमन के बहुत से निवासी भी इस धर्म के मानने वाले थे, लेकिन जब यहूदी और फिर ईसाई धर्म आया तो इस धर्म की बुनियादें हिल गईं और इसका रौशन चिराग़ बुझ कर रह गया, फिर भी मजूस के साथ मिल जुल कर उनके पड़ोस में इराक़े अरब और अ़रब खाड़ी के तट पर उस धर्म के कुछ न कुछ पैरवी करने वाले बाक़ी रहे।[20]

धार्मिक स्थिति

जिस वक़्त इस्लाम का चमकता सूरज उदित हुआ है, यही धर्म थे जो अ़रब में पाये जाते थे, लेकिन ये सारे धर्म टूट-फूट का शिकार थे। मुश्रिक लोग, जिनका दावा था कि हम इब्राहीमी धर्म पर हैं, इब्राहीमी

---

20) तारीख़े अरज़ुल-क़ुरआन 2/193-208

शरीअ़त के करने और न करने वाले हुक्मों से कोसों दूर थे। इस शरीअ़त ने जिन नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी, उनसे इन मुश्रिकों का कोई ताल्लुक़ न था। उनमें गुनाहों की भरमार थी और लम्बा समय होने के कारण उनमें मूर्ति-पूजकों की वही आ़दतें और रस्में पैदा हो चली थीं जिन्हें दीनी (धार्मिक) बकवासों का दर्जा मिला हुआ है। इन आ़दतों और रस्मों ने उनके सामूहिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन पर बड़े गहरे प्रभाव डाले थे।

यहूदी धर्म का हाल यह था कि वह केवल दिखावा और हुकूमत चलाने का ज़रिया बन गया था। यहूदी पेशवा अल्लाह के बजाए स्वयं रब बन बैठे थे, लोगों पर अपनी मर्ज़ी चलाते थे और उनके दिलों में आने वाले विचारों और होंठों की हरकतों तक का हिसाब किताब करते थे। उनकी पूरी तवज्जोह इस बात पर जमी हुई थी कि किसी तरह माल और राज्य मिले, भले ही दीन बर्बाद हो और कुफ़्र और ख़ुदा को न मानने को बढ़ावा मिले और इन शिक्षाओं के साथ लापरवाही ही क्यों न बरती जाए जिनको पवित्र मान्ने का अल्लाह ने हर आदमी को हुक्म दिया है और जिनको अ़मली जामा पहनाने पर उभारा है।

ईसाई धर्म एक न समझ में आने वाली मूर्ति-पूजा बन गया था। उसने अल्लाह और इंसान को अजीब तरह से मिला-जुला दिया था, फिर जिन अरबों ने इस दीन को अपनाया था, उन पर इस दीन (धर्म) का कोई वास्तविक असर न था, क्योंकि उसकी शिक्षाएं उनके जाने-पहचाने तरीक़े से मेल नहीं खाती थीं और वे अपने जीने के तरीक़े को छोड़ नहीं सकते थे।

अरब के बाक़ी धर्मों के मानने वालों का हाल मुश्रिकों जैसा ही था, क्योंकि उनके दिल एक जैसे थे, विश्वास एक से थे और रस्म व रिवाज में एकरूपता थी।

जाहिली (अज्ञानतापूर्ण) समाज की कुछ झलकियां

अरब प्रायद्वीप की राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों का बयान कर लेने के बाद अब वहां की सामूहिक, आर्थिक और नैतिक परिस्थितियों की रूप-रेखा संक्षिप्त में लिखी जा रही है।

सामूहिक परिस्थिति

अरब आबादी अनेक वर्गों पर आधारित थी और हर वर्ग की परिस्थितियां एक दूसरे से बहुत ज़्यादा अलग-अलग थीं। चुनांचे शालीन वर्ग में मर्द और औरत का ताल्लुक़ अच्छी तरक़्क़ी पर था। औरत को बहुत आज़ादी हासिल थी। उसकी बात मानी जाती थी और उसका इतना सम्मान और रक्षा की जाती थी कि इस राह में तलवारें निकल पड़ती थीं और ख़ून ख़राबे हो जाते थे। आदमी जब अपने दया भाव और वीरता पर, जिसे अरब में ऊंचा स्थान प्राप्त था, अपनी प्रशंसा करना चाहता, तो आम तौर से औरत ही को सम्बोधित करता। कभी-कभी औरत चाहती तो क़बीलों को समझौते के लिए इकट्ठा कर देती और चाहती तो उनके बीच लड़ाई और ख़ून-ख़राबे के शोले भड़का देती, लेकिन इन सबके बावजूद निर्विवाद रूप से मर्द ही को परिवार का 'बड़ा' माना जाता था और उसकी बात निर्णायक हुआ करती थी। इस वर्ग में मर्द और औरत का ताल्लुक़ निकाह के बंधन के रूप में होता था

और यह निकाह औरत के वलियों (अभिभावकों) की निगरानी में अंजाम दिया जाता था। औरत को यह हक़ न था कि अपने वलियों के बिना अपने तौर पर अपना निकाह कर ले।

एक ओर शालीन वर्ग का यह हाल था तो दूसरी ओर दूसरे वर्गों में मर्द और औरतों के मेल मिलाप की और भी कई शक्लें थीं, जिन्हें बदकारी, निर्लज्जता, नग्नता और दुराचार के सिवा कोई और नाम नहीं दिया जा सकता। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि अज्ञानता काल में निकाह की चार शक्लें थीं। एक तो वही शक्ल थी जो आज भी लोगों में पायी जाती है कि एक आदमी दूसरे आदमी को उसकी सरपरस्ती में पाई जाने वाली लड़की के लिए निकाह का पैग़ाम देता है, फिर मंज़ूरी के बाद यह महर देकर उससे निकाह कर लेता।

दूसरी शक्ल यह थी कि औरत जब माहवारी से पाक होती तो उसका पति कहता कि फ़लाँ व्यक्ति के पास संदेश भेज कर उससे उसकी शर्मगाह हासिल करो (यानी ज़िना कराओ) और शौहर ख़ुद उससे अलग-थलग रहता और उसके क़रीब न जाता, यहां तक कि स्पष्ट हो जाता कि जिस आदमी से शर्मगाह हासिल की थी (यानी ज़िना कराया था), उससे गर्भ ठहर गया है। जब गर्भ स्पष्ट हो जाता तो उसके बाद अगर पति चाहता तो उस औरत के पास जाता। ऐसा इसलिए किया जाता था कि लड़का सज्जन और गुणवान पैदा हो। इस निकाह को 'निकाहे इस्तब्ज़ाअ' कहा जाता था। (और इसी को हिन्दुस्तान में नियोग कहते हैं)

निकाह की तीसरी शक्ल यह थी कि दस से कम आदमियों की एक जमाअत इकट्ठा होती। सब के सब एक ही औरत के पास जाते और बदकारी करते। जब वह औरत गर्भवती हो जाती और बच्चा पैदा होता तो पैदा होने के चन्द रात बाद वह औरत सबको बुलवाती और सबको आना पड़ता। मजाल न थी कि कोई न आए। इसके बाद वह औरत

कहती कि आप लोगों का जो मामला था, वह तो आप लोग जानते ही हैं और अब मेरे पेट से बच्चा पैदा हुआ है और ऐ फ़्लां! वह तुम्हारा बेटा है। वह औरत उनमें से जिसका नाम चाहती ले लेती, और वह उसका बेटा मान लिया जाता।

चौथा निकाह यह था कि बहुत से लोग इकट्ठा होते और किसी औरत के पास जाते। वह अपने पास किसी आने वाले को इंकार न करती। ये रंडियां होती थीं जो अपने दरवाज़ों पर झंडियां गाड़े रखती थीं, ताकि यह निशानी का काम दे और जो उनके पास जाना चाहे, बे धड़क चला जाए। जब ऐसी औरत गर्भवती होती और बच्चा पैदा होता, तो सबके सब उसके पास जमा होते और अनुमान करके बताने वाले को बुलाते। वह अपनी राय के मुताबिक़ उस लड़के को किसी भी व्यक्ति से जोड़ देता, फिर यह उसी से जुड़ जाता और उसी का लड़का कहलाता। वह इससे इंकार न कर सकता था------जब अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैग़म्बर बना कर भेजा तो जाहिलियत के सारे निकाह ख़त्म कर दिए, सिर्फ़ इस्लामी निकाह बाक़ी रहा जो आज रिवाज में है।[1]

अ़रब में मर्द और औ़रत के मिलने-जुलने की कुछ शक्लें ऐसी भी थीं जो तलवार की धार और नेज़े की नोक पर वजूद में आती थीं यानी क़बीलों की आपसी लड़ाइयों में जीतने वाला क़बीला हारने वाले क़बीले की औ़रतों को क़ैद करके अपने हरम में दाख़िल कर लेता था, लेकिन ऐसी औ़रतों से पैदा होने वाली औलाद ज़िंदगी भर शर्म महसूस करती थी।

अज्ञानता युग में किसी सीमा के बिना अनेकों पत्नियां रखना भी एक जानी-पहचानी बात थी, लोग ऐसी दो औरतें भी एक ही वक़्त में

1) बुख़ारी किताबुन-निकाह 2/769, अबू दाऊद-बाब वुजूहुन-निकाह

निकाह में रख लेते थे जो आपस में सगी बहन होती थीं। बाप के तलाक़ देने या वफ़ात पाने के बाद बेटा अपनी सौतेली मां से भी निकाह कर लेता था, तलाक़ का अधिकार मर्द को हासिल था और उसकी कोई सीमा निश्चित न थी।[2]

ज़िनाकारी (व्याभिचार) तमाम वर्गों में चरम सीमा पर थी। कोई वर्ग या इंसानों की कोई क़िस्म इससे अलग न थी, हां, कुछ मर्द और कुछ औरतें ऐसी ज़रूर थीं, जिन्हें अपनी बड़ाई का एहसास इस बुराई के कीचड़ में लथपथ होने से रोके रखता था। फिर आज़ाद औरतों का हाल लौंडियों के मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छा था। असल मुसीबत लौंडियां ही थीं। ऐसा लगता है कि जाहिलियत वालों की भारी तायदाद इस बुराई से जुड़ने में कोई शर्म भी महसूस नहीं करती थी। चुनांचे सुनने अबू दाऊद वग़ैरह में रिवायत है कि एक बार एक आदमी ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! फ़लां आदमी मेरा बेटा है। मैंने अज्ञानता युग में इसकी मां से ज़िना किया था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'इस्लाम में ऐसे दावे की कोई गुंजाइश नहीं। अज्ञानता की बात गई। अब तो लड़का उसी का होगा, जिसकी बीवी या लौंडी हो और ज़ानी (व्याभिचारी) के लिए पत्थर है।' और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० और अब्द बिन ज़मआ़ के बीच ज़मआ़ की लौंडी के बेटे——अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़मआ़——के बारे में जो झगड़ा पेश आया था, वह भी मालूम और मशहूर है।[3]

अज्ञानता काल में बाप-बेटे का ताल्लुक़ भी विभिन्न प्रकार का था, कुछ तो ऐसे थे जो कहते थे——

إِنَّمَا أَوْلَادُنَا بَيْنَنَا أَكْبَادُنَا تَمْشِي عَلَى الْأَرْضِ

---

2) अबू दाऊद नुसख़ुल-मुरा[illegible]-अति बादत-तलीक़ाति-सलासा

3) बुख़ारी 2/999, 1065 तथा अबू दाऊद : अल-वलदु लिल-फ़राशि

'हमारी औलाद हमारे कलेजे हैं जो धरती पर चलते-फिरते हैं।'

लेकिन दूसरी ओर कुछ ऐसे भी थे, जो लड़कियों को रूस्वाई और ख़र्च के डर से ज़िंदा दफ़न कर देते थे और बच्चों को भूख और उपवास के डर से मार डालते थे।[4] लेकिन यह कहना कठिन है कि यह पत्थरदिली (कठोरपन) बड़े पैमाने पर चल रही थी, क्योंकि अ़रब अपने दुश्मन से अपनी हिफ़ाज़त के लिए दूसरों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा औलाद के मुहताज थे और इसका एहसास भी रखते थे।

जहां तक सगे भाईयों, चचेरे भाईयों और कुंबे-क़बीले के लोगों के आपसी ताल्लुक़ात का मामला है तो ये अच्छे भले पक्के और मज़बूत थे, क्योंकि अ़रब के लोग क़बीला गत पक्षपात ही के सहारे जीते और उसी के लिए मरते थे। क़बीले के अंदर आपसी सहयोग और सामूहिकता की आत्मा पूरी तरह काम कर रही होती थी, जिसे पक्षपात का जोश और अधिक भड़काता था। जबकि सच यह है कि जातीय पक्षपात और रिश्तेदारी का ताल्लुक़ ही उनकी सामूहिक व्यवस्था की बुनियाद थे। वे लोग इस कहावत पर शाब्दिक अर्थ के अनुसार ही अमल कर रहे थे कि 'उन्सुर अख़ा-क ज़ालिमन अव मज़्लूमन' (अपने भाई की मदद करो चाहे ज़ालिम हो या मज़्लूम) इस कहावत के मतलब में अभी वह सुधार नहीं हुआ था जो बाद में इस्लाम के ज़रिए किया गया। यानी ज़ालिम की मदद यह है कि उसे ज़ुल्म न करने दिया जाए, अलबत्ता सरदारी में एक दूसरे से आगे निकल जाने की भावना बहुत बार एक ही व्यक्ति से वजूद में आने वाले क़बीलों के बीच लड़ाई की वजह बन जाया करता था, जैसा कि औस व ख़ज़रज, अब्स व ज़ुबियान और बक्र व तग़लब आदि की घटनाओं में देखा जा सकता है।

---

4) क़ुरआन 6:101, 16:58,59, 17:31, 18:8

जहां तक अलग-अलग क़बीलों के एक दूसरे से ताल्लुक़ात का मामला है तो यह पूरी तरह बिखरता हुआ है। क़बीलों की सारी ताक़त एक दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ाई में फ़ना हो रही थी, अलबत्ता दीन और ख़ुराफ़ात (बेकार की बातों) की मिलावट से तैयार की गई कुछ रस्मों और आदतों की वजह से कभी-कभी लड़ाई की तेज़ी में कमी आ जाती थी और कुछ स्थिति में दोस्ती, समझौते और ताबेदारी के नियमों पर अलग-अलग क़बीले इकट्ठा हो जाते थे। इसके अलावा हराम महीने उनकी ज़िंदगी और रोज़ी हासिल करने के लिए पूरी तरह रहमत और मदद थे।

सार यह कि सामूहिक स्थिति कमज़ोरी और अनदेखेपन की पस्ती में गिरी हुई थी। अज्ञान अपना ज़ोर लगाए हुए था और बेकार की बातों का आम चलन था। लोग जानवरों जैसी ज़िंदगी बिता रहे थे, औरत ख़रीदी और बेची जाती थी और कभी कभी उससे मिट्टी और पत्थर जैसा व्यवहार किया जाता था। क़ौम के आपसी ताल्लुक़ात कमज़ोर, बल्कि टूटे हुए थे और राज्यों की सारी योजनाएं अपनी जनता से ख़ज़ाने भरने या विरोधियों पर सैनिक आक्रमण करने तक सीमित थीं।

आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति सामाजिक स्थिति के अधीन थी। इसका अंदाज़ा अरब के आर्थिक साधनों पर नज़र डालने से हो सकता है कि व्यापार ही उनके नज़दीक जीवन-आवश्यकता प्राप्त करने का सब से महत्वपूर्ण साधन था और मालूम है कि व्यापारिक आना-जाना सुख-शान्ति के वातावरण के बग़ैर आसान नहीं और अ़रब प्रायद्वीप का हाल यह था कि सिवाए हराम महीनों के सुख-शान्ति का कहीं अस्तित्व न था। यही वजह है कि सिर्फ़ हराम महीनों ही में अ़रब के मशहूर बाज़ार उकाज़, ज़िल्-मजाज़ और मजिन्ना आदि लगते थे।

जहां तक उद्योगों का मामला है तो अ़रब इस मैदान में सारी दुनिया से पीछे थे। कपड़े की बुनाई और चमड़े की सफ़ाई आदि की

शक्ल में जो कुछ उद्योग पाये भी जाते थे, वे ज़्यादातर यमन, हियरा और सीरिया से मिले हुऐ क्षेत्रों में थे, अलबत्ता अरब के भीतरी भाग में खेती-बाड़ी और जानवर पालने का किसी क़दर रिवाज था। सारी अरब औरतें सूत कातती थीं लेकिन परेशानी यह थी कि सारी धन-दौलत हमेशा लड़ाइयों के निशाने पर रहती थी, भूख और उपवास आम था और लोग ज़रूरी कपड़ों से भी बड़ी हद तक महरूम रहते थे।

चरित्र-आचरण

यह तो अपनी जगह तय है ही कि अज्ञानता युग में गिरी हुई घटिया आदतें, सोच विचार और सद्बुद्धि के विरोध की बातें पाई जाती थीं, लेकिन इनमें ऐसे पसन्दीदा चरित्रवान भी थे जिन्हें देख कर लोग दंग रह जाते और हैरत में पड़ जाते थे जैसे--------

1. दया और दानशीलता

यह अज्ञानता युग वालों का ऐसा गुण था जिसमें वे एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते थे और इस पर इस तरह गर्व करते थे कि अरब का आधा काव्य उसी की भेंट चढ़ गया है इस गुण के आधार पर किसी ने ख़ुद अपनी प्रशंसा की है तो किसी ने किसी और की। हालत यह थी कि कड़े जाड़े और भूख के ज़माने में किसी के घर में कोई मेहमान आ जाता और उसके पास अपनी इस एक ऊंटनी के सिवा कुछ न होता, जो उसकी और उसके कुंबे की ज़िंदगी का एक ही साधन होता, तो भी----ऐसी संगीन हालत के बावजूद----उस पर दानशीलता का जोश छा जाता और वह उठकर अपने मेहमान के लिए अपनी ऊंटनी ज़िब्ह कर देता। उनकी कृपा ही का फल था कि वे बड़ी-बड़ी देनदारी और माली ज़िम्मेदारियां उठा लेते और इस तरह इंसानों को बर्बादी और ख़ून-ख़राबे से बचा कर दूसरे सरदारों और रईसों के मुक़ाबले में गर्व करते थे।

इसी कृपा का फल था कि वे शराब पीने पर गर्व करते थे, इसलिए नहीं कि यह अपने आप में कोई गर्व की बात थी, बल्कि इसलिए कि यह कृपा और दानशीलता को आसान कर देती थी, क्योंकि नशे की हालत में माल लुटाना मानव स्वभाव पर बोझ नहीं होता, इसलिए ये लोग अंगूर के पेड़ को किर्म और अंगूर की शराब को 'बिन्तुल किर्म' कहते थे। अज्ञानता युग के काव्य-दीवानों पर नज़र डालिए तो यह प्रशंसा और गर्व का एक महत्वपूर्ण अध्याय दिखाई पड़ेगा। अ़न्तरा बिन शद्दाद अ़बसी अपने मुअ़ल्लक़ा (काव्य) में कहता है------

ولقد شربت من المدامة بعد ما   ركد الهواجر بالمشوف المعلم
بزجاجة صفراء ذات أسرّة   قرنت بأزهر بالشمال مفدم
فاذا شربت فانني مستهلك   مالي، وعرضي وافر لم يكلم
واذاصحوت فما اقصرعن ندى   وكما علمت شمائلي وتكرمي

'मैंने दोपहर की तेज़ी रुकने के बाद एक पीले रंग के धारीदार जामे बिल्लोरीं से जो बायीं ओर रखी हुई चमकदार और मुंहबंद जाम के साथ था, निशान लगी हुई साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शराब पी और जब मैं पी लेता हूं, तो अपना माल लुटा डालता हूं लेकिन मेरी आबरू भरपूर रहती है, उस पर कोई चोट नहीं आती और जब मैं होश में आता हूं तब भी सख़ावत (दानशीलता) में कोताही नहीं करता और मेरा चरित्र और मेहरबानी जैसा कुछ है, तुम्हें मालूम है।'

उनकी कृपा ही का नतीजा था कि वे जुआ खेलते थे। उनका विचार था कि यह भी सख़ावत (दानशीलता) की एक शक्ल है, क्योंकि उन्हें जो लाभ होता या लाभ प्राप्त करने वालों के हिस्से से जो कुछ बच जाता, उसे दीन-दुखियारों को दे देते थे। इसीलिए क़ुरआन ने शराब और जुए के लाभ का इंकार नहीं किया, बल्कि यह फ़रमाया وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا "इन दोनों का गुनाह इनके लाभ से बढ़ कर है।" 2:219

2. वायदे का पूरा करना

यह भी अज्ञानता युग के श्रेष्ठ गुणों में से है। वायदे को उनके नज़दीक दीन की हैसियत हासिल थी, जिससे वे हर हाल में चिमटे रहते थे और इस राह में अपनी औलाद का ख़ून और अपने घर-बार की तबाही भी तुच्छ समझते थे। इसे समझने के लिए हानी बिन मसऊद शैबानी, समुअल बिन आदिया और हाजिब बिन ज़रारा की घटनाएं काफ़ी हैं।

3. स्वाभिमान

इस पर क़ायम रहना और ज़ुल्म और सब्र सहन न करना भी अज्ञानता युग का जाना-पहचाना आचरण था। इसका नतीजा यह था कि इनकी वीरता और स्वभिमान हद से बढ़ा हुआ था। वे तुरन्त भड़क उठते थे और छोटी से छोटी बात पर, जिससे अनादर व अपमान की गंध आती, तलवारें निकाल लेते और बड़ी ख़ूनी लड़ाई छेड़ देते। उन्हें इस रास्ते में अपनी जान की बिल्कुल परवाह न रहती।

4. निश्चयों की पूर्ति

अज्ञानियों की एक विशेषता यह भी थी कि जब वे किसी काम को बड़कपन का साधन समझ कर अंजाम देने पर तुल जाते, तो फिर कोई रुकावट उन्हें रोक नहीं सकती थी। वे अपनी जान पर खेल कर इस काम को पूरा कर डालते थें।

5. उदारता, सहन-शीलता और गंभीरता

यह भी अज्ञानियों के नज़दीक एक प्रशंसनीय गुण था, पर यह उनकी सीमा से बढ़ी हुई वीरता और लड़ाई के लिए हर वक़्त तैयार रहने की आदत की वजह से कम मिलता था।

6. बदवी सादगी

अर्थात संस्कृति की गन्दगियों और दांव पेंच का न जानना और

दूरी। इसका नतीजा यह था कि इन में सच्चाई और अमानत पाई जाती थी। वे धोखा-धड़ी और वायदा-ख़िलाफ़ी से दूर और घृणा रखने वाले थे।

हम समझते हैं कि अरब प्रायद्वीप का सारी दुनिया से जो भौगोलिक संबंध था, उसके अलावा यही वे मूल्यवान चरित्र थे, जिनकी वजह से अरबों को मानव-जाति के नेतृत्व और अपना पैग़ाम पहुंचाने का बोझ उठाने के लिए चुना गया, क्योंकि ये चरित्र यद्यपि कभी-कभी बिगाड़ की वजह बन जाते थे और इनकी वजह से दुखद-घटनाएं भी हो जाती थीं, लेकिन ये अपने आप में बड़े मूल्यवान चरित्र थे जो थोड़े से सुधार के बाद मानव समाज के लिए बड़े उपयोगी बन सकते थे और यही काम इस्लाम ने अंजाम दिया।

शायद इन चरित्रों में भी वायदों को पूरा करने के बाद मान सम्मान और निश्चय में दृढ़ता सब से क़ीमती और लाभप्रद गुण था, क्योंकि इस शक्ति और दृढ़-निश्चय के बिना दुष्टता और बिगाड़ का अन्त और न्याय व्यवस्था की स्थापना संभव नहीं।

अज्ञानियों के कुछ और भी गुण थे, लेकिन यहां सब पर रोशनी डालना अभिप्रेत नहीं।

नुबूवत का वंश, पैदाइश
और
पाक ज़िंदगी के चालीस साल

नुबूवत का वंश

वंश

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वंश का सिलसिला तीन भागों में बांटा जा सकता है---

○ एक भाग, जिसके सहीह होने पर सारे वंश-विशेषज्ञ सहमत हैं, यह अ़दनान पर ख़तम होता है।

○ दूसरा भाग, जिसमें वंश-विशेषज्ञों के मत अलग अलग हैं, कोई मानता है, कोई नहीं मानता, यह अ़दनान से ऊपर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम तक चलता है।

○ तीसरा भाग, जिसमें यक़ीनी तौर पर कुछ ग़लतियां हैं, यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ऊपर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक जाता है इस ओर इशारा गुज़र चुका है। आगे तीनों भागों का कुछ विस्तार में विवरण दिया जा रहा है।

पहला भागः

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब (शैबा) बिन हाशिम (अम्र) बिन अब्दे मुनाफ़ (मुग़ीरह) बिन कुसई (ज़ैद) बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़हर (इन्हीं की उपाधि कुरैश थी और इन्हीं के नाम से कुरैश क़बीला जुड़ा हुआ है) बिन मालिक बिन नज़्र (क़ैस) बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरिक (आ़मिर) बिन

इलयास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअ़द्द बिन अदनान।[1]

दूसरा भागः

अदनान के ऊपर यानी अदनान बिन उद बिन हमीसअ़ बिन सलमान बिन औस बिन बौज़ बिन क़मवाल बिन अबी बिन अव्वाम बिन नाशिद बिन हज़ा दिन बलदास बिन यदलाफ़ बिन ताबिख़ बिन जाहिम बिन नाहिश बिन माख़ी बिन ऐज़ बिन अबक़र बिन उबैद बिन अद-दुआ बिन हमदान बिन संबर बिन यसरबी बिन यहज़न बिन यलहन बिन अरावा बिन ऐज़ बिन ज़ीशान बिन ऐसर बिन अफ़नाद बिन ऐहाम बिन मक्सर बिन नाहिस बिन ज़ारिह बिन समी बिन मज़ी बिन औज़ा बिन अराम बिन क़ैदार बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम।[2]

तीसरा भागः

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ऊपर--इब्राहीम बिन तारेह (आज़र) बिन नाहूर बिन सारूअ़ (या सारूग़) बिन राऊ बिन फ़ालिख़ बिन आबिर बिन शालिख़ बिन अरफ़ख़शद बिन साम बिन नूह अलैहिस्सलाम बिन लामिक बिन मतूशलख़ बिन अख़नूख़ (कहा जाता है कि यह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का नाम है) बिन यर्द बिन महलाईल बिन क़ैनान बिन आनूशा बिन शीस बिन आदम अलैहिस्सलाम।[3]

---

1) इब्ने हिशाम 1/201, तलक़ीहु फ़ुहूमि अहलिल-असर 605, रहमतुल-लिल-आलमीन 2/11-14,52

2) अल्लामा मन्सूरपुरी ने पूर्ण जांच-पड़ताल के पश्चात इस वंशावली को कलबी और सअ़द के वर्णन से जमा किया है। देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन 2/14-17 इतिहास की किताबों में इस भाग को लेकर बहुत मतभेद है।

3) इब्ने हिशाम 1/2-4, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 6, ख़ुलासतुस-सियर 6, रहमतुल-लिल-आलमीन 2/18 कुछ नामों को लेकर इन किताबों में भी मतभेद है और कुछ नाम कुछ किताबों में नहीं हैं।

परिवार

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिवार अपने दादा हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ के ताल्लुक़ से हाशिमी परिवार के नाम से मशहूर है इसलिए उचित लगता है कि हाशिम और उनके बाद के कुछ लोगों के हालात संक्षेप में पेश कर दिए जाएं।

1. हाशिमः

हम बता चुके हैं कि जब बनू अ़ब्दे मुनाफ़ और बनू अ़ब्दुद्दार के बीच पदों के बंटवारे पर समझौता हो गया, तो अब्दे मुनाफ़ की औलाद में हाशिम ही को हाजियों को पानी पिलाने और उनकी महमानी का पद मिला। हाशिम बड़े प्रतिष्ठित और धनी व्यक्ति थे। यह पहले आदमी हैं जिन्होंने मक्के में हाजियों को सालन रोटी सान कर खिलाने की व्यवस्था की। इनका असल नाम अ़म्र था, लेकिन रोटी तोड़ कर शोरबा में सानने की वजह से इनको हाशिम कहा जाने लगा। क्योंकि हाशिम का मतलब है तोड़ने वाला, फिर यही हाशिम वह पहले आदमी हैं जिन्होंने क़ुरैश के लिए गर्मी और जाड़े के दो वार्षिक व्यापारिक जत्थों के आने जाने की बुनियाद रखी। इनके बारे में कवि कहता है----

عمرو الذى هشم الثريد لقومه قوم بمكة مُسنتين عجاف

سنت اليه الرحلتان كلاهما سفرالشتاء ورحلة الأ صياف

'यह अ़म्र वही हैं जिन्होंने अकाल की मारी हुई अपनी दुबली क़ौम को मक्का में रोटियां तोड़ कर सालन में भिगो-भिगोकर खिलाई और जाड़े और गर्मी की दोनों यात्राओं की नींव रखी।'

इनकी एक महत्वपूर्ण घटना यह है कि वह व्यापार के लिए शाम (सीरिया) देश तशरीफ़ ले गए। रास्ते में मदीना पहुंचे तो वहां क़बीला बनी नज्जार की एक महिला सलमा बिन्त अ़म्र से शादी कर ली और कुछ दिनों तक वहीं ठहरे रहे। फिर बीवी को गर्भ की हालत में मायके

में ही छोड़ कर शाम देश चले गए और वहां जाकर फ़लस्तीन के शहर ग़ज़्ज़ा में मृत्यु पा गए। इधर सलमा के पेट से बच्चा पैदा हुआ। यह सन् 497 ई० की बात है। चूंकि बच्चे के सर के बालों में सफ़ेदी थी इसलिए सलमा ने उसका नाम शैबा रखा[4] और यस्‌रिब में अपने मैके ही के अंदर उसका पालन-पोषण किया। आगे चल कर यही बच्चा 'अब्दुल मुत्तलिब' के नाम से मशहूर हुआ एक समय तक हाशिम परिवार के किसी आदमी को उसके होने का ज्ञान न हो सका। हाशिम के कुल चार बेटे और पांच बेटियां थीं, जिनके नाम ये हैं——

बेटे: असद, अबू सैफ़ी, फ़ुज़ला, अब्दुल मुत्तलिब।

बेटियां: शिफ़ा, ख़ालिदा, ज़ईफ़ा, रुक़ैया और जन्ना।[5]

2. अब्दुल मुत्तलिब:

पिछले पन्नों से मालूम हो चुका है सिक़ाया और रिफ़ादा का पद हाशिम के बाद उनके भाई मुत्तलिब को मिला। यह भी अपनी क़ौम में बड़े गुणों और प्रतिष्ठा के मालिक थे। इनकी बात टाली नहीं जाती थी। इनकी दानशीलता के कारण क़ुरैश ने इनकी उपाधि 'फ़य्याज़' (दानशील) रख छोड़ी थी। जब शैबा यानी अब्दुल मुत्तलिब दस-बारह वर्ष के हो गए तो मुत्तलिब को इनका ज्ञान हुआ और वह इन्हें लेने के लिए रवाना हुए। जब यस्‌रिब के क़रीब पहुंचे और शैबा पर नज़र पड़ी तो आंखें भर आईं, उन्हें सीने से लगा लिया और फिर अपनी सवारी पर पीछे बिठा कर मक्का के लिए रवाना हो गए। मगर शैबा ने मां की इजाज़त के बग़ैर साथ जाने से इंकार कर दिया। इसलिए मुत्तलिब उनकी मां से इजाज़त मांगने लगे, मगर मां ने इजाज़त न दी। आख़िर मुत्तलिब ने कहा कि ये अपने बाप की हुकूमत और अल्लाह के हरम की तरफ़ जा रहे हैं, इस पर मां ने इजाज़त दे दी और मुत्तलिब उन्हें अपने ऊंट पर

4) इब्ने हिशाम 1/137, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/26, 2/24

5) इब्ने हिशाम 1/107

बिठा कर मक्का ले आए। मक्के वालों ने देखा तो कहा, यह अब्दुल मुत्तलिब है यानी मुत्तलिब का गुलाम है। मुत्तलिब ने कहा, नहीं-नहीं, यह मेरा भतीजा यानी मेरे भाई हाशिम का लड़का है। फिर शैबा ने मुत्तलिब के पास परवरिश पायी और जवान हुए। इसके बाद रोमान (यमन) में मुत्तलिब की वफ़ात हो गयी और उनके छोड़े हुए पद अब्दुल मुत्तलिब को हासिल हुए। अब्दुल मुत्तलिब ने अपनी क़ौम में इतनी पद-प्रतिष्ठा प्राप्त की कि उनके बाप-दादा में भी कोई इस पद को न पा सका। क़ौम ने उन्हें दिल से चाहा और उनका बड़ा मान-सम्मान किया।[6]

जब मुत्तलिब की वफ़ात हो गई तो नौफ़ल ने अब्दुल मुत्तलिब के आंगन पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लिया। अब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश के कुछ लोगों से अपने चचा के ख़िलाफ़ मदद चाही, लेकिन उन्होंने यह कह कर विवशता दिखायी कि हम तुम्हारे और तुम्हारे चचा के बीच दख़ल नहीं दे सकते। आख़िर मुत्तलिब ने बनी नज्जार में अपने मामूं को कुछ पद्य लिख भेजे, जिसमें उनसे मदद की दर्ख़्वास्त की थी। जवाब में उनका मामूं अबू साद बिन अ़दी अस्सी सवार लेकर रवाना हुआ और मक्के के क़रीब अबतह में उतरा। अब्दुल मुत्तलिब ने वहीं मुलाक़ात की और कहा मामूं जान! घर तशरीफ़ ले चलें। अबू साद ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! यहां तक कि नौफ़ल से मिल लूं। इसके बाद अबू साद आगे बढ़ा और नौफ़ल के सर पर आ खड़ा हुआ। नौफ़ल हतीम में क़ुरैश के बुज़ुर्गों के संग बैठा था। अबू साद ने तलवार नंगी करते हुए कहा, इस घर के रब की क़सम! अगर तुमने मेरे भांजे की ज़मीन वापस न की, तो यह तलवार तुम्हारे अंदर गाड़ दूंगा। नौफ़ल ने कहा, अच्छा! लो, मैं ने वापस कर दी। इस पर अबू साद ने क़ुरैश के बुज़ुर्गों को गवाह बनाया, फिर अब्दुल मुत्तलिब के घर गया और तीन दिन ठहर कर उमरा करने के बाद मदीना वापस चला गया।

---

6) इब्ने हिशाम 1/137, 138

इस घटना के बाद नौफ़ल ने बनी हाशिम के ख़िलाफ़ बनी अब्दे शम्स से आपसी सहयोग का समझौता किया। उधर बनू ख़ुज़ाआ ने देखा कि बनू नज्जार ने अब्दुल मुत्तलिब की इस तरह मदद की है तो कहने लगे कि अब्दुल मुत्तलिब जिस तरह तुम्हारी औलाद है, हमारी भी औलाद है, इसलिए हम पर उसकी मदद का हक़ ज़्यादा है इसकी वजह यह थी कि अब्दे मुनाफ़ की मां क़बीला ख़ुज़ाआ ही से ताल्लुक़ रखती थी——चुनांचे बनू ख़ुज़ाआ ने दारुन्नदवा में जाकर बनू अब्दे शम्स और बनू नौफ़ल के ख़िलाफ़ बनू हाशिम से सहयोग का वायदा किया। यही वायदा है जो आगे चल कर इस्लामी दौर में मक्का के जीते जाने की वजह बना। विस्तृत विवरण अपनी जगह आ रहा है।[7]

बैतुल्लाह के ताल्लुक़ से अब्दुल मुत्तलिब के साथ दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। एक ज़म-ज़म कुएं की खुदाई की घटना और दूसरी फ़ील (हाथी) की घटना।

ज़म-ज़म के कुएं की खुदाई

पहली घटना का सार यह है कि अब्दुल मुत्तलिब ने ख़्वाब (सपना) देखा कि उन्हें ज़म-ज़म का कुंआं खोदने का हुक्म दिया जा रहा है और सपने ही में उन्हें उसकी जगह भी बताई गई। उन्होंने जागने के बाद खुदाई शुरू की और धीरे-धीरे वे चीज़ें निकलीं जो बनू जुरहुम ने मक्का छोड़ते वक़्त ज़म-ज़म के कुएं में दफ़न की थीं यानी तलवारें, ज़िरहें और सोने के दोनों हिरन। अब्दुल मुत्तलिब ने तलवारों से काबे का दरवाज़ा ढाला, सोने के दोनों हिरन भी दरवाज़े ही में फिट किए और हाजियों को ज़म-ज़म पिलाने का इन्तिज़ाम किया।

खुदाई के दौरान यह घटना भी घटी कि जब ज़म-ज़म का कुंआं ज़ाहिर हो गया, तो क़ुरैश ने अब्दुल मुत्तलिब से झगड़ा शुरु कर दिया

---

7) मुख़्तसर सीरतुर-रसूल 41-42

और मांग की कि हमें भी खुदाई में शरीक कर लो। अब्दुल मुत्तलिब ने कहा, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं इस काम के लिए ख़ास किया गया हूं, लेकिन क़ुरैश के लोग न माने। यहां तक कि फ़ैसले के लिए बनी सअद की एक काहिना औरत के पास जाना तय हुआ और लोग मक्का से रवाना भी हो गए, लेकिन रास्ते में अल्लाह ने उन्हें ऐसी निशानियां दिखाईं कि वे समझ गए कि ज़म-ज़म का काम क़ुदरत की ओर से अब्दुल मुत्तलिब के साथ ख़ास है, इसलिए रास्ते ही से पलट आए। यही मौक़ा था जब अब्दुल मुत्तलिब ने नज़्र (मन्नत) मानी कि अगर अल्लाह ने उन्हें दस लड़के दिए और वे सब के सब इस उम्र को पहुंचे कि उनका बचाव कर सकें तो वे एक लड़के को काबे के पास क़ुरबान कर देंगे।[8]

फ़ील (हाथी) की घटना

दूसरी घटना का सार यह है कि अबरहा सबाह हब्शी ने (जो, हब्श के नज्जाशी बादशाह की तरफ़ से यमन का गवर्नर जनरल था) जब देखा कि अरब के लोग ख़ाना-ए-काबा का हज करते हैं तो सनआ में एक बहुत बड़ा चर्च तैयार किया और चाहा कि अरब का हज उसी की ओर फेर दे, मगर जब उसकी ख़बर बनू कनाना के एक आदमी को हुई तो उसने रात के वक़्त चर्च के भीतर घुस कर उसके क़िबले पर पाख़ाना पोत दिया। अबरहा को पता चला तो बहुत बिगड़ा और साठ हज़ार की एक भारी फ़ौज लेकर काबे को ढाने के लिए निकल खड़ा हुआ। उसने अपने लिए एक ज़बरदस्त हाथी भी चुना। फ़ौज में नौ या तेरह हाथी थे। अबरहा यमन से धावा बोलते हुए मुग़म्मस पहुंचा और वहां अपनी फ़ौज को तर्तीब देकर और हाथी को तैयार करके मक्का में दाख़िले के लिए चल पड़ा। जब मुज़दलिफ़ा और मिना के दर्मियान मुहस्सर घाटी में पहुंचा तो हाथी बैठ गया और काबे की तरफ़ बढ़ने के लिए किसी तरह न उठा। उसका रूख़ उत्तर दक्षिण या पूरब की ओर किया जाता तो उठ

8) इब्ने हिशाम 1/142-143

कर दौड़ने लगता, लेकिन काबे की ओर किया जाता तो बैठ जाता। इसी बीच अल्लाह ने चिड़ियों का एक झुंड भेज दिया, जिसने फ़ौज पर ठीकरी जैसे पत्थर गिराए और अल्लाह ने उसी से उन्हें खाए हुए भूसे की तरह बना दिया। ये चिड़ियां कुमरी और अबाबील जैसी थीं। हर चिड़िया के पास तीन-तीन कंकड़ियां थीं एक चोंच में और दो पंजों में, कंकड़ियां चने जैसी थीं, मगर जिस किसी को लग जाती थीं, उसके अंग कटना शुरू हो जाते थे और वह मर जाता था। ये कंकड़ियां हर आदमी को नहीं लगी थीं, लेकिन सेना में ऐसी भगदड़ मची कि हर आदमी दूसरे को रौंदता-कुचलता, गिरता-पड़ता भाग रहा था, फिर भागने वाले हर राह पर गिर रहे थे और हर सोते पर मर रहे थे। उधर अबरहा पर अल्लाह ने ऐसी आफ़त भेजी कि उसकी उंगलियों के पोर झड़ गए और सनआ़ पहुंचते पहुंचते चूज़े जैसा हो गया, फिर उसका सीना फट गया, दिल बाहर निकल आया और वह मर गया।

अबरहा के इस हमले के मौक़े पर मक्का के निवासी जान के डर से घाटियों में बिखर गए थे और पहाड़ की चोटियों पर जा छिपे थे। जब फ़ौज पर अज़ाब नाज़िल हो गया तो इत्मीनान से अपने घरों को पलट आए।[9]

यह घटना अधिकतर जीवनी-लेखकों के अनुसार--नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म से केवल पचास या पचपन दिन पहले मुहर्रम के महीने में घटित हुई थी, इसलिए यह 571 ई० के फ़रवरी के आख़िर या मार्च के शुरू की घटना है। यह वास्तव में एक आरंभिक निशानी थी, जो अल्लाह ने अपने नबी और अपने काबे के लिए ज़ाहिर फ़रमाई थी क्योंकि आप बैतुल-मक़्दिस को देखिए कि अपने समय में इस्लाम वालों का क़िबला था, और वहां के बाशिन्दे, मुसलमान थे। इस के बावजूद

9) इब्ने हिशाम 1/43-56

उस पर अल्लाह के दुश्मन यानी मुश्रिकीन का क़ब्ज़ा हो गया था जैसा कि बुख़्ते-नस्र के हमले 587 ई० पू० और रूमा वालों के क़ब्ज़े (सन् 70 ई०) से ज़ाहिर है, लेकिन इसके ख़िलाफ़ काबा पर ईसाइयों को क़ब्ज़ा न मिल सका, हालांकि उस वक़्त यही मुसलमान थे और काबा के निवासी मुश्रिक थे।

फिर यह घटना ऐसी परिस्थितियों में घटित हुई कि इसकी ख़बर उस वक़्त के सभ्य जगत के अधिकतर क्षेत्रों (यानी रूम व फ़ारस के अधिकतर क्षेत्रों) में थोड़ी ही देर में पहुंच गयी, क्योंकि हब्शा का रूमियों से बड़ा गहरा ताल्लुक़ था और दूसरी ओर फ़ारसियों की नज़र रूमियों पर बराबर रहती थी और उनके मित्रों के साथ होने वाली घटनाओं का बराबर निरीक्षण करते रहते थे। यही वजह है कि इस घटना के बाद फ़ारस वालों ने बड़ी तेज़ी से यमन पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब चूंकि यही दो राज्य उस वक्त सभ्य जगत के अहम हिस्से का प्रतिनिधित्व करते थे, इसलिए इस घटना की वजह से दुनिया की निगाहें ख़ाना-ए-काबा की ओर मुड़ गयीं। उन्हें बैतुल्लाह की महानता का एक खुला हुआ खुदाई निशान दिखाई पड़ गया और यह बात दिलों में अच्छी तरह बैठ गई कि इस घर को अल्लाह ने अपनी पाकी बयान करने के लिए चुन लिया है, इसलिए आगे यहां की आबादी से किसी इंसान का नुबूवत के दावे के साथ उठना इस घटना के तक़ाज़े के ठीक मुताबिक़ होगा और अल्लाह की उस हिक्मत की तफ़्सीर (व्याख्या) होगा जो ईमान वालों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों की मदद में छिपी हुई थी।

अब्दुल मुत्तलिब के कुल दस बेटे थे, जिनके नाम ये हैं------

1. हारिस, 2. ज़ुबैर, 3. अबू तालिब, 4. अब्दुल्लाह, 5. हमज़ा रज़ि० 6. अबू लहब, 7. ग़ैदाक़, 8. मुक़व्विम, 9. सफ़ार और 10. अब्बास रज़ि०।

कुछ कहते हैं ग्यारह थे एक का नाम क़सम था। और कुछ और लोगों ने कहा है कि 13 थे, एक का नाम अब्दुल काबा था और एक का नाम हजल था, लेकिन दस मानने वाले कहते हैं कि मुक़व्विम ही का दूसरा नाम अब्दुल काबा और ग़ैदाक़ था, दूसरा नाम हजल था और क़सम नाम का कोई आदमी अब्दुल मुत्तलिब की औलाद में न था-----

अब्दुल मुत्तलिब की बेटियां छः थीं। नाम ये हैं:

1. उम्मुल हकीम, इनका नाम बैज़ा है, 2. बर्रा, 3. आतिका, 4. सफ़िय्या, 5. अरवा और 6. उमैमा।[10]

3. अब्दुल्लाह------अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मान्य पिता:

इनकी मां का नाम फ़ातिमा था और वह अम्र बिन आइज़ बिन इम्रान बिन मख़्ज़ूम बिन यक़ज़ा बिन मुर्रा की बेटी थीं। अब्दुल मुत्तलिब की औलाद में अ़ब्दुल्लाह सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत, पाकदामन और चहेते थे और ज़बीह कहलाते थे। ज़बीह कहलाने की वजह यह थी कि जब अब्दुल मुत्तलिब के लड़कों की तायदाद पूरी दस हो गई और बचाव करने के लायक़ हो गए तो अब्दुल मुत्तलिब ने उन्हें अपनी नज़र (मन्नत) की सूचना दी। सब ने बात मान ली।

इसके बाद अब्दुल मुत्तलिब ने क़िस्मत के तीरों पर इन सब के नाम लिखे और हुबल के ज़िम्मेदार के हवाले किया। ज़िम्मेदार ने तीरों को हिला-डुला कर क़ुरआ निकाला तो अ़ब्दुल्लाह का नाम निकला। अब्दुल मुत्तलिब ने अ़ब्दुल्लाह का हाथ पकड़ा, छुरी ली और ज़िब्ह करने के लिए ख़ाना-ए-काबा के पास ले गए, लेकिन क़ुरैश और ख़ास तौर से अ़ब्दुल्लाह के ननिहाल वाले यानी बनू मख़्ज़ूम और अ़ब्दुल्लाह के भाई, अबू तालिब आड़े आए। अब्दुल मुत्तलिब ने कहा, अब मैं अपनी नज़र

10) तलक़ीहुल-फ़ुहूम 8,9 रहमतुल-लिल-आलमीन 2/56,66

का क्या करूं? उन्होंने मश्वरा दिया कि वह किसी अ़र्राफ़ा (जानकार) औरत के पास जाकर हल मालूम करें। अब्दुल मुत्तलिब एक अर्राफ़ा के पास गए। उसने कहा कि अ़ब्दुल्लाह और दस ऊंटों के दर्मियान कुरआ डालें। अगर अ़ब्दुल्लाह के नाम कुरआ निकले तो और दस ऊंट बढ़ा दें। इस तरह दस-दस ऊंट बढ़ाते जाएं और कुरआ डालते जाएं, यहां तक कि अल्लाह राज़ी हो जाए, फिर ऊंटों के नाम कुरआ निकल आए तो उन्हें ज़िब्ह कर दें। अब्दुल मुत्तलिब ने वापस आकर अ़ब्दुल्लाह और दस ऊंटों के दर्मियान कुरआ डाला, मगर कुरआ अ़ब्दुल्लाह के नाम निकला। इसके बाद वह दस-दस ऊंट बढ़ाते गए और कुरआ-अंदाज़ी करते गये मगर कुरआ अ़ब्दुल्लाह के नाम ही निकलता रहा। जब सौ ऊंट पूरे हो गये तो कुरआ ऊंटों के नाम निकला। अब अब्दुल मुत्तलिब ने उन्हें अ़ब्दुल्लाह के बदले ज़िब्ह किया और वहीं छोड़ दिया। किसी इंसान या दरिंदे के लिए कोई रुकावट न थी। इस वाक़िए से पहले कुरैश और अ़रब में ख़ूँबहा (दियत) की तायदाद दस ऊंट थी मगर इस वाक़िए के बाद सौ ऊंट कर दी गयी। इस्लाम ने भी इस तायदाद को बाक़ी रखा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपका यह इर्शाद रिवायत किया गया है कि मैं दो ज़बीह की औलाद हूं—एक हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम और दूसरे आप के वालिद अ़ब्दुल्लाह।[11]

अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बेटे अब्दुल्लाह की शादी के लिए हज़रत आमना को चुना, जो वहब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन ज़ोहरा बिन किलाब की सुपुत्री थीं और वंश और पद की दृष्टि से कुरैश की सबसे महान महिला समझी जाती थीं। उनके पिता वंश और पद दोनों हैसियत से बनू ज़ोहरा के सरदार थे। वह मक्का ही में विदा होकर हज़रत अब्दुल्लाह के पास आईं, पर थोड़े दिनों बाद अब्दुल्लाह को अब्दुल मुत्तलिब ने खजूर लाने के लिए मदीना भेजा और उनका वहीं देहान्त हो गया।

11) इब्ने हिशाम 1/151-155,रहमतुल-लिल-आलमीन 2/89-90, मुख़्तसर सीरतुर-रसूल 12,22-23

कुछ जीवनी लेखकों का कहना है कि वे व्यापार के लिए शाम देश गए थे। कुरैश के एक क़ाफ़िले के साथ वापस आकर बीमार होकर मदीना उतरे और वहीं मृत्यु हो गई। कफ़न दफ़न नाबिग़ा जादी के मकान में हुआ। उस वक़्त उनकी उम्र पच्चीस वर्ष की थी। अधिकतर इतिहासकारों के कहने के मुताबिक़ अभी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा नहीं हुए थे। अलबत्ता कुछ जीवनी-लेखकों का कहना है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म उनकी वफ़ात से दो माह पहले हो चुका था।[12] जब उनकी वफ़ात की ख़बर मक्का पहुंची तो हज़रत आमिना ने बड़ा दर्द भरा शोक गीत लिखा जो यह है---

عفا جانب البطحاء من ابن هاشم وجاور لحدا خارجا في الغماغم
دعته المنايا دعوة فاجابها وما تركت في الناس مثل ابن هاشم
عشية راحوا يحملون سريرهٔ تعاوره اصحابه في التزاحم
فان تک غالته المنايا و ريبها فقد كان معطاء كثير التراحم[13]

"बतहा की गोद हाशिम के बेटे से ख़ाली हो गई। वह शोर-शराबे के दर्मियान एक क़ब्र में सो गया। उसे मौत ने एक पुकार लगाई और उसने जवाब दे दिया। अब मौत ने लोगों में इब्ने हाशिम जैसा कोई इंसान नहीं छोड़ा (कितनी हसरतों भरी थी) वह शाम, जब लोग उन्हें तख़्त पर उठाए ले जा रहे थे। अगर मौत और मौत की घटना ने उन का वजूद ख़त्म कर दिया है (तो उनके चरित्र के चिन्ह नहीं मिटाए जा सकते) वे बड़े समझदार और दयावान थे।"

अब्दुल्लाह का कुल तर्का (छोड़ा हुआ माल) यह था------

पांच ऊंट, बकरियों का एक रेवड़, एक हब्शी लौंडी जिनका नाम बरकत था और उपनाम उम्मे ऐमन। यही उम्मे ऐमन हैं जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद खिलाया था।[14]

12) इब्ने हिशाम 1/156,158, फ़िक़्हुस-सीरः (मु० ग़ज़ाली) 45, रहमतुल-लिल-आलमीन 2/91

13) तबक़ात इब्ने सअद 1/62

14) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 12, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 14, मुस्लिम 2/96

जन्म और पवित्र जीवन के चालीस साल

जन्म

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में शाबे बनी हाशिम के अंदर 9 रबीउल अव्वल सन् 01 आमुल फ़ील में सोमवार को पैदा हुए। उस वक़्त नौ-शेरवां के सिंहासन पर बैठने का चालीसवां साल था और 20 या 22 अप्रैल सन् 571 ई० की तारीख़ थी। अल्लामा मुहम्मद सुलैमान साहब सलमान मंसूरपुरी और महमूद पाशा फ़लकी की तहक़ीक़ यही है।[1]

इब्ने साद की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मां ने फ़रमाया, "जब आप का जन्म हुआ तो मेरे शरीर से एक नूर निकला जिससे शाम देश के महल रोशन हो गए"। इमाम अहमद ने हज़रत इरबाज़ बिन सारिया से भी लगभग इसी विषय की रिवायत नक़्ल फ़रमायी है।[2]

---

1) तारीख़े ख़िज़री 1/62, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/38-39, अप्रैल की तिथि में कलेन्डर की वजह से फ़र्क़ है।

2) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 12, इब्ने सअद 1/63

कुछ रिवायतों में बताया गया है कि जन्म के वक़्त कुछ घटनाएं नुबूवत की शुरुआत के रूप में ज़ाहिर हुईं यानी किसरा के महल के चौदह कंगूरे गिर गए, मजूस का अग्नि-भंडार ठंडा हो गया। सादा समुद्र सूख गया और उसके गिरजे ढह गए। यह बैहक़ी की रिवायत है।[3] लेकिन मुहम्मद ग़ज़ाली ने इसको सही नहीं माना है।[4]

जन्म के बाद आपकी मां ने अ़ब्दुल मुत्तलिब के पास पोते की ख़ुशख़बरी भिजवायी, वह ख़ुशी-ख़ुशी तशरीफ़ लाए और आपको ख़ाना-ए-काबा में ले जाकर अल्लाह से दुआ की, उसका शुक्र अदा किया और नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तज्वीज़ किया। यह नाम अ़रब के चलन में न था। फिर अ़रब रिवाज के मुताबिक़ सातवें दिन ख़त्ना किया।[5]

आपको आपकी मां के बाद सबसे पहले अबू लहब की लौंडी सुवैबा ने दूध पिलाया। उस वक़्त उसकी गोद में जो बच्चा था, उसका नाम मस्रूह था। सुवैबा ने आपसे पहले हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को और आपके बाद अबू सलमा बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी को भी दूध पिलाया था।[6]

बनी साद में

अरब के शहरों के निवासियों का तरीक़ा था कि वे अपने बच्चों को शहरों के रोगों से दूर रखने के लिए दूध पिलाने वाली बदवी औरतों के हवाले कर दिया करते थे ताकि उनके शरीर शक्तिशाली और अंग

---

3) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 12,

4) फ़िक़्हुस-सीरा मु० ग़ज़ाली 46

5) इब्ने हिशाम 1/159-160, तारीख़े ख़िज़री 1/62, एक कथन यह भी है कि आप मख़्तून (ख़तना किए हुए) पैदा हुए थे देखिए (तलक़ीहुल-फ़ुहूम 4) मगर इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि इस विषय में कोई सही हदीस नहीं है (देखिए ज़ादुल-मआद 1/18)

6) तलक़ीहुल-फ़ुहूम 4, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह)13

मज़बूत हों और अपने पालने ही से शुद्ध और ठोस अ़रबी भाषा सीख लें। इसी चलन के मुताबिक़ अब्दुल मुत्तलिब ने दूध पिलाने वाली दाई खोजी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत हलीमा बिन्त अबी जुवैब के हवाले किया। यह क़बीला बनी साद बिन बक्र की एक महिला थीं। इनके पति का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा और कुन्नियत अबू कब्शा थी और वह भी क़बीला बनी साद ही से ताल्लुक़ रखते थे।

हारिस की सन्तान के नाम ये हैं जो दूध पीने के ताल्लुक़ से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भाई बहन थे----- अब्दुल्लाह, उनैसा, हुज़ाफ़ा या जुज़ामा इन्हीं की उपाधि (लक़ब) शैमा थी। और इसी नाम से वे ज़्यादा मशहूर हुई। यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद खिलाया करती थीं। इनके अ़लावा अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई थे, वह भी हज़रत हलीमा रज़ि० के वास्ते से आपके दूध-शरीक भाई थे। आपके चचा हज़रत हमज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ि० भी दूध पिलाने के लिए बनू साद की एक औरत के सुपुर्द किए गए थे। उस औरत ने भी एक दिन जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हलीमा रज़ि० के पास थे, आपको दूध पिला दिया। इस तरह आप और हज़रत हमज़ा रज़ि० दोहरे दूध-शरीक भाई हो गए। एक सुवैबा के ताल्लुक़ से और दूसरे बनू साद की इस औरत के ताल्लुक़ से।[7]

दूध पिलाने के दौरान हज़रत हलीमा रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकत के ऐसे-ऐसे दृश्य देखे कि पूरी तरह अचंभे में पड़ गईं। विस्तृत विवरण उन्हीं के मुख से सुनिए---- इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि हज़रत हलीमा रज़ि० बयान किया करती थीं कि वह अपने

7) ज़ादुल-मआद 1/19

शौहर के साथ अपना एक छोटा सा दूध पीता बच्चा लेकर बनी सअद की कुछ औरतों के क़ाफ़िले में अपने शहर से बाहर दूध पीने वाले बच्चों की तलाश में निकली। यह अकाल के दिन थे और अकाल ने कुछ बाक़ी न छोड़ा था। मैं अपनी एक सफ़ेद गधी पर सवार थी और हमारे पास एक ऊंटनी भी थी, लेकिन क़सम है ख़ुदा की, उससे एक बूंद दूध न निकलता था, इधर भूख से बच्चा इतना बिलखता था कि हम रात भर सो नहीं सकते थे। न मेरे सीने में बच्चे के लिए कुछ था, न ऊंटनी उसका भोजन दे सकती थी, बस हम वर्षा और ख़ुशहाली की आशा किए बैठे थे। मैं अपनी गधी पर सवार होकर चली तो वह कमज़ोर और दुबलेपन की वजह से इतनी सुस्त रफ़्तार निकली कि पूरा क़ाफ़िला तंग आ गया। ख़ैर, हम किसी न किसी तरह दूध पीने वाले बच्चों की खोज में मक्का पहुंच गए। फिर हम में से कोई औरत ऐसी नहीं थीं जिस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेश न किया गया हो, मगर जब उसे बताया जाता कि आप सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम यतीम हैं तो वह आपको लेने के इंकार कर देती, क्योंकि हम बच्चे के बाप से ही कुछ पाने की उम्मीद रखते थे। हम कहते, यह तो यतीम है, भला इसकी विधवा मां और इसके दादा क्या दे सकते हैं, बस यही वजह थी कि हम आपको लेना नहीं चाहते थे।

इधर जितनी औरतें मेरे साथ आयी थीं, सबको कोई न कोई बच्चा मिल गया, सिर्फ़ मुझ ही को न मिल सका। जब वापसी की बारी आयी तो मैंने अपने पति से कहा, ख़ुदा की क़सम! मुझे अच्छा नहीं लगता कि मेरी सारी सहेलियां तो बच्चे ले-ले कर जाएं और अकेली मैं कोई बच्चा लिए बिना वापस जाऊं। मैं जाकर इसी यतीम बच्चे को ले लेती हूं। शौहर ने कहा, कोई हरज नहीं, मुम्किन है अल्लाह इसी में हमारे लिए बरकत दे। इसके बाद मैंने जाकर बच्चा ले लिया और सिर्फ़ इस वजह से ले लिया कि कोई और बच्चा न मिल सका।

हज़रत हलीमा रज़ि० कहती हैं कि जब मैं बच्चों को लेकर अपने डेरे पर वापस आई तो उसे अपनी गोद में रखा, तो उसने जितना चाहा, दोनों सीने दूध के साथ उस पर उमड़ पड़े और उसने पेट भर कर पिया। इसके साथ इसके भाई ने भी पेट भर कर पिया, फिर दोनों सो गए, हालांकि इससे पहले हम अपने बच्चे के साथ सो नहीं सकते थे। इधर मेरे शौहर ऊंटनी दूहने गए तो देखा कि उसका थन दूध से भरा है। उन्होंने इतना दूध दूहा कि हम दोनों ने जी भर कर पिया और बड़े आराम से रात गुज़ारी। उनका बयान है कि सुबह हुई तो मेरे शौहर ने कहा, हलीमा! ख़ुदा की क़सम! तुम ने एक बरकत वाली रूह हासिल की है, मैंने कहा, मुझे भी यही उम्मीद है।

हलीमा रज़ि० कहती हैं कि इसके बाद हमारा क़ाफ़िला रवाना हुआ। मैं अपनी उस कमज़ोर गधी पर सवार हुई और उस बच्चे को भी अपने साथ लिया, लेकिन अब वही गधी ख़ुदा की क़सम! पूरे क़ाफ़िले को काट कर इस तरह आगे निकल गयी कि कोई गधा उसका साथ न पकड़ सका, यहां तक कि मेरी सहेलियां मुझ से कहने लगीं, 'ओ अबू ज़ुवैब की बेटी! अरे! यह क्या है? ज़रा हम पर मेहरबानी कर। आख़िर यह तेरी वही गधी तो है जिस पर तू सवार होकर आई थी? मैं कहती, हां! हां! ख़ुदा की क़सम! यह वही है। वे कहतीं, इसका यक़ीनी तौर पर कोई ख़ास मामला है।

फिर हम बनू साद में अपने घरों को आ गए। मुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की धरती का कोई भाग हमारे इलाक़े से ज़्यादा अकाल-ग्रस्त था, लेकिन हमारी वापसी के बाद मेरी बकरियां चरने जातीं तो पेट भरी और दूध से भरपूर वापस आतीं। हम दूहते और पीते, जबकि किसी और इंसान को दूध की एक बूंद भी न मिलती। इनके जानवरों के थनों में दूध सिरे से रहता ही न था, यहां तक कि हमारी क़ौम के नागरिक अपने चरवाहों से कहते कि कमबख़्तो! जानवर वहीं चराने ले जाया करो, जहां

अबू ज़ुवैब की बेटी का चरवाहा ले जाता है—लेकिन तब भी उनकी बकरियां भूखी वापस आतीं, उनके अंदर एक बूंद दूध न रहता, जबकि मेरी बकरियां पेट भर खा कर और दूध से भरपूर पलटतीं। इस तरह हम अल्लाह की ओर से बराबर बढ़ौतरी और ख़ैर को देखते रहे, यहां तक कि उस बच्चे के दो साल पूरे हो गए और मैंने दूध छुड़ा दिया। यह बच्चा दूसरे बच्चों के मुक़ाबले में इस तरह बढ़ रहा था कि दो साल पूरे होते-होते वह कड़ा और गठीला हो गया। इसके बाद हम उस बच्चे को उसकी मां के पास ले गए, लेकिन हम जो उसकी बरकत देखते आए थे, उसकी वजह से हमारी बड़ी ख़्वाहिश यही थी कि वह हमारे पास रहे। चुनांचे हमने उसकी मां से बात की। मैंने कहा, क्यों न आप अपने बच्चे को मेरे पास ही रहने दें कि ज़रा मज़बूत हो जाए, क्योंकि मुझे उसके बारे में मक्का की वबा का ख़तरा है। ग़रज़ हमारे बराबर कहने पर उन्होंने हमें वापस दे दिया।[8]

सीने के चाक होने की घटना

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दूध पीने की मुद्दत ख़त्म होने के बाद भी बनू साद ही में रहे, यहां तक कि जन्म के चौथे या पांचवें साल[9] सीने के चाक किए जाने की घटना घटी। इसका पूरा विवरण हज़रत अनस की सहीह मुस्लिम में रिवायत किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। आप बच्चों के साथ खेल रहे थे। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने आपको पकड़ कर लिटाया और सीना चाक करके दिल निकाला, फिर दिल से एक लोथड़ा निकाल कर फ़रमाया, यह तुम से शैतान का हिस्सा है, फिर दिल को एक तश्त (प्लेट) में ज़मज़म

---

8) इब्ने हिशाम 1/162-164

9) अधिकतर सीरत लिखने वालों का यही कथन है लेकिन इब्ने इसहाक़ की रिवायत से पता चलता है कि यह घटना तीसरे साल की है देखिए इब्ने हिशाम 1/164-165

के पानी से धोया और फिर उसे जोड़ कर उसकी जगह लौटा दिया, इधर बच्चे दौड़ कर आपकी मां यानी दाई हलीमा के पास पहुंचे और कहने लगे मुहम्मद को क़त्ल कर दिया गया, उनके घर के लोग तुरंत पहुंचे, देखा तो आपका रंग उतरा हुआ था।[10]

मां की मुहब्बत भरी गोद में

इस घटना के बाद हलीमा को ख़तरा महसूस हुआ और उन्होंने आपको आपकी मां के हवाले कर दिया, चुनांचे आप छः साल की उम्र तक मां ही की मुहब्बत भरी गोद में रहे।[11]

उधर हज़रत आमना का इरादा हुआ कि मृत (मरे हुए) पति की याद में यसरिब जाकर उनकी क़ब्र की ज़ियारत करें। चुनांचे वह अपने यतीम बच्चे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अपनी सेविका उम्मे ऐमन और अपने अभिभावक अब्दुल मुत्तलिब के साथ कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी तय करके मदीना तशरीफ़ ले गयीं और वहां एक महीने तक क़ियाम करके वापस हुईं, लेकिन अभी शुरू रास्ते ही में थीं कि बीमारी ने आ लिया। फिर यह बीमारी तेज़ी पकड़ती गयी, यहां तक कि मक्का और मदीना के बीच अब्वा नामी जगह पर पहुंच कर इस दुनिया से चली गयीं।[12]

दादा की मुहब्बत की छाया तले

बूढ़े अब्दुल मुत्तलिब अपने पोते को लेकर मक्का पहुंचे। उनका दिल अपने इस यतीम पोते की मुहब्बत में तप रहा था, क्योंकि अब उसे एक नया चरका लगा था जिसने पुराने धाव कुरेद दिए थे। अब्दुल मुत्तलिब की भावनाओं में पोते के लिए ऐसी नम्रता थी कि उनकी ख़ास अपनी संतानों में से भी किसी के लिए ऐसी नम्रता न थी। चुनांचे भाग्य

10) मुस्लिम बाबुल-इसरा 1/92

11) तलक़ीहुल-फ़ुहूम 7, इब्ने हिशाम 1/168

12) इब्ने हिशाम 1/168, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 7, तारीख़े ख़िज़री 1/63, फ़िक़्हुस-सीरा ग़ज़ाली 50

ने आप को अकेलेपन के जिस वीराने में ला खड़ा किया था, अब्दुल मुत्तलिब उसमें आपको अकेले छोड़ने के लिए तैयार न थे, बल्कि आपको अपनी औलाद से भी बढ़कर चाहते और बड़ों की तरह उनका आदर करते थे। इब्ने हिशाम का बयान है कि अब्दुल मुत्तलिब के लिए ख़ाना-ए-काबा के साए में फ़र्श बिछाया जाता, उनके सारे लड़के फ़र्श के चारों ओर बैठ जाते अब्दुल मुत्तलिब तशरीफ़ लाते तो फ़र्श पर बैठते। उनके बड़कपन को देखते हुए उनका कोई लड़का फ़र्श पर न बैठता, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाते तो फ़र्श ही पर बैठ जाते। अभी आप कम उम्र बच्चे थे। आपके चचा लोग आप को पकड़ कर उतार देते, लेकिन जब अब्दुल मुत्तलिब उन्हें ऐसा करते देखते, तो फ़रमाते, मेरे इस बेटे को छोड़ दो, ख़ुदा की क़सम! इसकी शान निराली है, फिर उन्हें अपने साथ अपने फ़र्श पर बिठा लेते, अपने हाथ से पीठ सहलाते और उनके चलने-फिरने को देख कर ख़ुश होते।[13]

आपकी उम्र अभी 8 साल दो महीने दस दिन की हुई थी कि दादा अब्दुल मुत्तलिब की मुहब्बत का साया उठ गया। उनका इंतिक़ाल मक्का में हुआ और वह वफ़ात से पहले आपके चचा अबू तालिब को----जो आपके वालिद अब्दुल्लाह के सगे भाई थे, आप को पालने और देख-रेख करने की वसीयत कर गये थे।[14]

मेहरबान चाचा की देख-रेख में

अबू तालिब ने अपने भतीजे को पालने-पोसने का हक़ बड़ी ख़ूबी से अदा किया। आपको अपनी औलाद में शामिल किया, बल्कि उनसे भी बढ़ कर माना। और ज़्यादा मान-सम्मान दिया। चालीस साल से ज़्यादा मुद्दत तक ताक़त पहुंचाई, अपनी हिमायत का साया फैलाए रखा

---

13) इब्ने हिशाम 1/168

14) तलक़ीहुल-फ़ुहूम 7, इब्ने हिशाम 1/149

और आप ही की बुनियाद पर दोस्ती और दुश्मनी की। अधिक व्याख्या अपनी जगह आ रही है।

मुबारक चेहरे से वर्षा की तलब

इब्ने असाकिर ने जलहमा बिन अरफ़ता से रिवायत किया है कि मैं मक्का आया। लोग अकाल के शिकार थे। कुरैश ने कहा। अबू तालिब! घाटी अकाल का शिकार है, बाल-बच्चे अकाल के निशाने पर हैं, चलिए वर्षा की दुआ कीजिए। अबू तालिब एक बच्चा साथ लेकर निकले। बच्चा बादलों से ढका हुआ सूरज मालूम होता था, जिससे घना बादल अभी-अभी छटा हो। इसके आस-पास और भी बच्चे थे। अबू तालिब ने उस बच्चे का हाथ पकड़ कर उसकी पीठ काबा की दीवार से टेक दी। बच्चे ने उनकी उंगली पकड़ रखी थी। उस वक़्त आसमान पर बादल का एक टुकड़ा न था, लेकिन (देखते-देखते) इधर-उधर से बादल आना शुरू हुए और ऐसी धुआं-धाड़ वर्षा हुई कि घाटी में बाढ़ आ गई और शहर व वीराने हरे-भरे हो गए। बाद में अबू तालिब ने इसी घटना की ओर संकेत करते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुणगान करते हुए कहा था---

وابيض يُسْتَسْقَى الغمامُ بوجهه ثِمَالُ اليَتامىٰ عِصْمَةٌ للا رامِلِ[15]

"वह सुन्दर हैं, उनके चेहरे से वर्षा की कृपा तलब की जाती है, यतीमों की पनाहगाह और विधवाओं के रक्षक हैं"

बुहैरा राहिब (सन्यासी)

कुछ रिवायतों के मुताबिक़------जिनकी सनद (प्रमाणिकता) में सन्देह है---जब आप की उम्र बारह वर्ष और एक कथन के अनुसार बारह वर्ष दो महीने दस दिन[16] की हो गयी तो अबू तालिब आप को

15) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 15-16

16) यह बात इब्ने जोज़ी ने तलक़ीहुल-फ़ुहूम 7 कही है

साथ लेकर व्यापार के लिए शाम देश की यात्रा पर निकले और बसरा पहुंचे। बसरा शाम की एक जगह और हूरान का केन्द्रीय नगर है। उस वक्त यह अरब प्रायद्वीप के रूमी कब्ज़े वाले इलाकों की राजधानी थी। इस शहर में जिर्जीस नामक एक पादरी रहता था जो बुहैरा की उपाधि (लक़ब) से जाना जाता था। जब क़ाफ़िले ने वहां पड़ाव डाला तो यह सन्यासी अपने गिरजा से निकल कर क़ाफ़िले के भीतर आया, और उसे मेहमान बनाया, हालांकि इससे पहले वह कभी नहीं निकलता था। उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपके गुणों की बुनियाद पर पहचान लिया और आप का हाथ पकड़ कर कहा—— 'यह सैयदुल आलमीन (पूरी दुनिया के सरदार) हैं अल्लाह इन्हें रहमतुल-लिल-आलमीन (दुनिया के लिए रहमत) बना कर भेजेगा।' अबू तालिब ने कहा, आप को यह कैसे मालूम हुआ? उसने कहा, "तुम लोग जब घाटी के इस ओर ज़ाहिर हुए तो कोई भी पेड़ या पत्थर ऐसा नहीं था, जो सज्दा के लिए झुक न गया हो और ये चीज़ें नबी के अलावा किसी और को सज्दा नहीं करतीं। फिर मैं उन्हें नुबूवत की मोहर से पहचानता हूं जो कंधे के नीचे कुर्री (नर्म हड्डी) के पास सेब की तरह है और हम इन्हें अपनी किताबों में भी पाते हैं।———"

इसके बाद बुहैरा पादरी ने अबू तालिब से कहा कि इन्हें वापस कर दो, शाम देश न ले जाओ, क्योंकि यहूदियों से ख़तरा है। इस पर अबू तालिब ने कुछ गुलामों (दासों) के साथ आप को मक्का मुकर्रमा वापस भेज दिया।[17]

---

17) मुख़्तसरुस-सीरा (शैख़ अब्दुल्लाह)19, इब्ने हिशाम 1/180-183, तिरमिज़ी आदि की रिवायत में है कि आप को हज़रत बिलाल के साथ रवाना किया गया लेकिन यह ग़लत है क्योंकि उस वक़्त बिलाल शायद पैदा भी नहीं हुए थे और अगर पैदा थे भी तो अबू तालिब या अबू बक्र के साथ न थे ज़ादुल-मआद 1/17 ——

फ़ुज्जार की लड़ाई

आप की उम्र 15 वर्ष की हुई तो फ़ुज्जार की लड़ाई हुई। इस लड़ाई में एक ओर कुरैश और उनके साथ बनू कनाना थे और दूसरी ओर क़ैस ऐलान थे। कुरैश और कनाना का कमांडर हर्ब बिन उमैया था, क्योंकि वह अपनी उम्र और बुज़ुर्गी की वजह से कुरैश व कनाना के नज़दीक बड़ा दर्जा रखता था। पहले पहर कनाना पर क़ैस का पल्ला भारी था, लेकिन दोपहर होते-होते क़ैस पर कनाना का पल्ला भारी हो गया। इसे हर्बे फ़ुज्जार इसलिए कहते हैं कि इसमें हरम और हराम महीने दोनों की हुर्मत (मान-सम्मान) ख़त्म की गई। इस लड़ाई में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तशरीफ़ ले गए थे और अपने चचाओं को तीर थमाते थे।[18]

हिलफ़ुल फ़ुज़ूल

इस लड़ाई के बाद एक हुर्मत वाले महीने ज़ीक़ादः में हिलफ़ुल फ़ुज़ूल की लड़ाई हुई। कुरैश के कुछ क़बीले यानी बनी हाशिम, बनी मुत्तलिब, बनी असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा, बनी ज़ोहरा बिन किलाब और बनी तैम बिन मुर्रा ने इसका एहतिमाम किया।

ये लोग अब्दुल्लाह बिन जुदआन तैमी के मकान पर जमा हुए। क्योंकि वह उम्र और बुज़ुर्गी में आगे था——और आपस में समझौता किया कि मक्का में जो भी मज़लूम नज़र आएगा, चाहे मक्के का रहने वाला हो या कहीं और का, ये सब उसकी मदद और हिमायत में उठ खड़े होंगे और उसका हक़ दिला कर रहेंगें। इस मीटिंग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तशरीफ़ रखते थे और रसूल होने के बाद फ़रमाया करते थे, मैं अब्दुल्लाह बिन जुदआन के मकान पर एक ऐसे समझौते में शरीक था कि मुझे उसके बदले में लाल ऊंट भी लेना

18) इब्ने हिशाम 1/184-185, क़लबु जज़ीरतिल-अरब 360, तारीख़े ख़िज़री 1/63

पसंद नहीं और अगर इस्लाम (के ज़माने में) इस समझौते के लिए बुलाया जाता तो मैं लपक कर जाता।[19]

इस समझौते की आत्मा पक्षपात की तह से उठने वाली अज्ञानता भरी हिमायत के विपरीत थी। इस समझौते की वजह यह बतायी जाती है कि ज़ुबैद का एक आदमी सामान लेकर मक्का आया और आ़स बिन वाइल ने उससे सामान ख़रीदा, लेकिन उसका हक़ रोक लिया। उसने मित्र क़बीलों अब्दुद्दार, मख़्ज़ूम, जम्ह, सहम और अ़दी से मदद का निवेदन किया, लेकिन किसी ने तवज्जोह न दी। इसके बाद उसने जबले अबू क़ुबैस पर चढ़ कर ऊंची आवाज़ से कुछ पद्य पढ़े, जिनमें उसने अपने ऊपर किये जा रहे ज़ुल्म की दास्तान बयान की थी। इस पर ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने दौड़-धूप की और कहा कि यह आदमी बे-यार व मददगार क्यों है? इनकी कोशिश से ऊपर बताए गए क़बीले जमा हो गये, पहले समझौता हुआ और फिर आ़स बिन वाइल से उस ज़ुबैदी का हक़ दिलाया।[20]

मेहनत की ज़िंदगी

जवानी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई निश्चित काम न था, अलबत्ता यह ख़बर सहीह है कि आप बकरियां चराते थे। आपने बनी साद की बकरियां चरायीं[21] और मक्का में भी मक्का वालों की बकरियां कुछ क़ीरात के बदले चराते थे।[22] पच्चीस साल की उम्र हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० का माल लेकर व्यापार के लिए शाम देश तशरीफ़ ले गए।

---

19) इब्ने हिशाम 1/133, 135, मुख़्तसरुस्-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 30, 31

20) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 30/31

21) इब्ने हिशाम 1/166

22) बुख़ारी-अल-इजारात बाबु रअल-ग़नम अला क़रारीत 1/301

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद एक प्रतिष्ठित, मालदार और व्यापारी महिला थीं। लोगों को अपना माल व्यापार के लिए देती थीं और शिकरत के उसूल पर एक हिस्सा तय कर लेती थीं कुरैश का पूरा क़बीला ही व्यापार करता था। जब उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई, अमानतदारी और अच्छे चरित्र का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने एक संदेश द्वारा पेशकश (प्रस्ताव) की कि आप उनका माल लेकर व्यापार के लिए उनके दास मैसरा के साथ शाम देश तशरीफ़ ले जाएं। वह दूसरे व्यापारियों को जो कुछ देती हैं, इससे बेहतर और ज़्यादा मुआवज़ा आपको देंगी। आपने मान लिया और उनका माल लेकर उनके दास मैसरा के साथ शाम देश तशरीफ़ ले गए।[23]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० से शादी

जब आप वापस मक्का तशरीफ़ लाए और हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने अपने माल में ऐसी अमानत और बरकत देखी जो इससे पहले कभी न देखी थी और इधर उनके दास मैसरा ने आपके मीठे अख़्लाक़, ऊंचे किरदार, मुनासिब सोच, सच्चाई और अमानतदारी के तौर-तरीक़ों के बारे में अपनी देखी हुई बातें बयान कीं तो हज़रत ख़दीजा को अपना खोया हुआ मतलूब (वांछित) मोती मिल गया---उससे पहले बड़े-बड़े सरदार और रईस उनसे शादी करना चाहते थे, लेकिन उन्होंने किसी का पैग़ाम मंज़ूर न किया था। उन्होंने अपने दिल की बात अपनी सहेली नफ़ीसा बिन्त मुनब्बह से कही और नफ़ीसा ने जाकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात की। आप राज़ी हो गए और अपने चचाओं से इस मामले में बात की। उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ि० के चचा से बात की और शादी का पैग़ाम दिया। इसके बाद शादी हो गई। निकाह में बनी हाशिम और मुज़र के सरदार शरीक हुए------

23) इब्ने हिशाम 1/187-188

यह शाम देश से वापसी के दो महीने बाद की बात है। आपने मह्र में बीस ऊंट दिए। उस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ि० की उम्र चालीस साल थी और वह वंश और धन और सूझ-बूझ की दृष्टि से अपनी क़ौम की सब से ज़्यादा प्रतिष्ठित और महान महिला थीं। यह पहली महिला थीं जिनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शादी की और उनके देहान्त तक किसी दूसरी महिला से शादी नहीं की।[24]

इब्राहीम के अलावा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बाक़ी तमाम औलाद उन ही के पेट से थीं। सब से पहले क़ासिम पैदा हुए और उन्ही के नाम पर आप का उपनाम अबुल क़ासिम पड़ा फिर ज़ैनब, रूक़ैया, उम्मे कुलसूम, फ़ातिमा और अब्दुल्लाह रज़ि० पैदा हुए। अब्दुल्लाह का उपनाम तैयब और ताहिर था। आपके सब बच्चों की बचपन ही में मृत्यु हो गयी, अलबत्ता बच्चियों में से हर एक ने इस्लाम का ज़माना पाया, मुसलमान हुईं और हिजरत फ़रमायी, लेकिन हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के सिवा बाक़ी सबका इंतिक़ाल आपकी ज़िंदगी ही में हो गया। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की मृत्यु आपके देहावसान के छः महीने बाद हुई।[25]

कअ्बे का निर्माण और हजरे अस्वद के झगड़े का फ़ैसला

आपकी उम्र का पैंतीसवां साल था। क़ुरैश ने नये सिरे से ख़ा-न-ए काबा को बनवाया। वजह यह थी कि काबा सिर्फ़ क़द से कुछ ऊंची चहार दीवारी की शक्ल में था। हज़रत इस्माईल अलैहि० के समय ही से उसकी ऊंचाई नौ हाथ की थी और उस पर छत न थी। इस स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए कुछ चोरों ने उसके अंदर रखा हुआ ख़ज़ाना चुरा लिया——इसके अलावा उसको बने हुए एक लम्बा समय बीत चुका

24) इब्ने हिशाम 1/189-190, फ़िक़्हुस-सीरा 59, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 7

25) इब्ने हिशाम 1/190-191, फ़िक़्हुस-सीरा 60, फ़तहुल-बारी7/105 इतिहास की किताबों में मतभेद है मुझे जो सही लगा वही मैंने लिखा है

था। इमारत टूट-फूट का शिकार थी और दीवारें फट गई थीं। इधर उसी साल एक ज़ोरदार बाढ़ आई, जिसके बहाव का रुख़ ख़ा-न-ए काबा की ओर था। इसके नतीजे में ख़ा-न-ए काबा किसी भी क्षण ढह सकता था। इसलिए कुरैश मजबूर हो गये कि उसका दर्जा और पोज़ीशन बाक़ी रखने के लिए उसे नए सिरे से बनाएं।

इस मरहले पर कुरैश ने मिल कर फ़ैसला किया कि ख़ा-न-ए काबा के बनाने में सिर्फ़ हलाल रक़म ही इस्तेमाल करेंगे। उसमें रंडी की उजरत (मुआवज़ा), सूद की दौलत और किसी का नाहक़ लिया हुआ माल इस्तेमाल नहीं होने देंगे।

नए निर्माण के लिए पुरानी इमारत को ढाना ज़रूरी था, लेकिन किसी को ढाने की हिम्मत नहीं होती थी, आख़िर में वलीद बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी ने शुरूआत की। जब लोगों ने देखा कि उस पर कोई आफ़त नहीं टूटी तो बाक़ी लोगों ने भी ढाना शुरू किया जब इब्राहीम की बुनियादों तक ढा चुके तो बनाने की शुरूआत की। बनाने के लिए अलग-अलग क़बीले का हिस्सा मुक़र्रर था और हर क़बीले ने अलग अलग पत्थरों के ढेर लगा रखे थे। निर्माण-कार्य शुरू हुआ! बाक़ूम नामी एक रूमी निर्माण करने वाला निगराँ था, जब इमारत हजरे अस्वद (काले पत्थर) तक उठ चुकी तो यह झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि हजरे अस्वद को इस की जगह रखने का सोभाग्य किसे प्राप्त हो। यह झगड़ा चार पांच दिन तक जारी रहा और धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि लगता था कि हरम भू-भाग में ज़बरदस्त ख़ून-ख़राबा हो जाएगा, लेकिन अबू उमैया मख़्ज़ूमी ने यह कह कर फ़ैसले की एक शक्ल पैदा कर दी कि मस्जिदे हराम के दरवाज़े से दूसरे दिन जो आदमी सब से पहले दाख़िल हो, उसे अपने झगड़े का सरपंच मान लें। लोगों ने यह प्रस्ताव मान लिया। अल्लाह की मर्ज़ी कि इसके बाद सब से पहले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए। लोगों ने आप को देखा, तो चीख पड़े:

هذا الامين رضيناه هذا محمد (صلى الله عليه وسلم)

"यह अमीन हैं हम इनसे राज़ी हैं यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं" फिर जब आप उनके क़रीब पहुंचे और उन्होंने आपको मामले की तफ़सील बताई तो, आप ने एक चादर तलब की। बीच में हजरे अस्वद रखा और आपस में लड़ रहे कबीलें के सरदारों से कहा कि आप सब लोग चादर का किनारा पकड़ कर ऊपर उठाएं। उन्होंने ऐसा ही किया। जब चादर हजरे अस्वद की जगह तक पहुंच गयी तो आपने अपने मुबारक हाथ से हजरे अस्वद को उसकी मुक़र्रर की हुई जगह पर रख दिया। यह बड़ा ही समझ वाला फ़ैसला था, इस पर सारी क़ौम राज़ी हो गयी।

उधर क़ुरैश के पास हलाल माल की कमी पड़ गयी, इसलिए उन्होंने उत्तर की ओर से काबा की लम्बाई लगभग छः हाथ कम कर दी। यही टुकड़ा हिजर और हतीम कहलाता है। इस बार क़ुरैश ने काबे का दरवाज़ा ज़मीन से अच्छा भला ऊपर कर दिया, ताकि उसमें वही आदमी दाख़िल हो सके, जिसे वे इजाज़त दें।

जब दीवारें पन्द्रह हाथ ऊंची हो गई तो अन्दर छः सुतून खड़े करके ऊपर से छत डाल दी गई और काबा पूरा होने के बाद क़रीब क़रीब चौकोर शक्ल का हो गया। अब ख़ा-न-ए काबा की ऊंचाई पन्द्रह मीटर है। हजरे अस्वद वाली दीवार और उसके सामने दीवार यानी दक्षिणी और उत्तरी दीवारें दस मीटर हैं।

हजरे अस्वद मताफ़ की ज़मीन से डेढ़ मीटर की ऊंचाई पर है। दरवाज़े वाली दीवार और उसके सामने की दीवार यानी पूरब और पश्चिम की दीवारें 12-12 मीटर हैं। दरवाज़ा ज़मीन से दो मीटर बुलन्द है। दीवार के चारों ओर एक बढ़ी हुई कुर्सी नुमा दीवार का घेरा है जिसकी औसत ऊंचाई 25 सेंटीमीटर और औसत चौड़ाई 30 सेंटीमीटर है। इसे शाज़िरवान कहते हैं। यह भी असल में बैतुल्लाह का हिस्सा है,

लेकिन कुरैश ने इसे भी छोड़ दिया था।[26]

नुबूवत से पहले के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हालातः

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन तमाम ख़ूबियों और कमालों का योग थे जो अलग-अलग तरीक़ों से लोगों के अलग-अलग वर्गों में पाए जाते हैं। आप उच्च विचार, दूर तक देखने और सत्य पसंद करने की ऊंची मिसाल थे। आप बेहतरीन समझ, दृढ़ विचार, साधनों की बेहतरी जैसे गुणों वाले। अपनी लम्बी ख़ामोशी से बराबर सोच-विचार और गम्भीर मुद्रा में रह कर सत्य पाने की कोशिश करते थे। आपने अपने उच्च चिन्तन, श्रेष्ठ स्वभाव से जीवन ग्रन्थ, लोगों के मामले और जमाअतों के हालात का अध्ययन किया और जिन व्यर्थ (बेकार) की बातों में ये सब सने हुए थे उनके प्रति बड़ी उदासीनता महसूस की। चुनांचे आप ने इन सब से हट कर रहते हुए पूरी सूझ-बूझ के साथ लोगों के बीच ज़िंदगी का सफ़र पूरा किया। यानी लोगों का जो काम अच्छा होता उस में शरीक होते, वरना आप अपनी मुक़र्रर की हुई तंहाई की ओर पलट जाते। चुनांचे आपने शराब को कभी मुंह न लगाया आस्तानों का ज़ीबहा (वध किए हुए जानवर) न खाया और मूर्तियों के लिए मनाए जाने वाले त्यौहार और मेलों-ठेलों में कभी शरीक न हुए।

आप को शुरू ही से इन झूठे उपासितों (माबूदों) से इतनी घिन थी कि उनसे बढ़ कर आपकी नज़र में कोई और चीज़ घिन खाने वाली न थी, यहां तक कि लात व उज़्ज़ा की क़सम सुनना भी आपको गवारा न था।[27]

---

26) विस्तृत जानकारी के लिए देखें इब्ने हिशाम 1/192-197,फ़िक़हुस-सीरा 62-63,बुख़ारी बाब फ़ज़्लु मक्का व बुन्यानुहा 1/215, तारीख़े ख़िज़री ख़ेज़री 1/64-65

27) बुहैरा की घटना में इसका सबूत है देखिए इब्ने हिशाम 1/128

इसमें शक नहीं कि भाग्य ने आप पर हिफ़ाज़त का साया डाल रखा था, चुनांचे जब कुछ दुन्यिावी फ़ायदों के हासिल करने के लिए मन की भावनाएं हरकत में आईं या कुछ ना-पसंदीदा रस्म व रिवाज की पैरवी पर तबियत तैयार हुई तो रब की मेहरबानी बीच में आकर रुकावट बन गई। इब्ने असीर की एक रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अज्ञानता युग के लोग जो काम करते थे, मुझे दो बार के अलावा कभी उनका ख़्याल नहीं गुज़रा, लेकिन इन दोनों में से भी हर बार अल्लाह ने मेरे और इस काम के बीच रुकावट डाल दी। इसके बाद फिर कभी मुझे इसका विचार न आया, यहां तक कि अल्लाह ने मुझे अपनी पैग़म्बरी का शर्फ़ दे दिया। हुआ यह कि जो लड़का ऊपरी मक्का में मेरे साथ बकरियां चराया करता था, उससे एक रात मैंने कहा क्यों न तुम मेरी बकरियां देखो और मैं मक्का जाकर दूसरे जवानों की तरह वहां रात किस्सा कहने की महफ़िल में शिरकत कर लूं, उसने कहा, ठीक है। इसके बाद मैं निकला और अभी मक्का के पहले ही घर के पास पहुंचा था कि बाजे की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैंने मालूम किया कि क्या है? लोगों ने बताया, फ़्लां की फ़्लां से शादी है। मैं सुनने बैठ गया और अल्लाह ने मेरा कान बंद कर दिया और मैं सो गया। फिर सूरज की गर्मी ही से मेरी आंख खुली और मैं अपने साथी के पास वापस चला गया। इसके पूछने पर मैंने विस्तार से बातें बतायीं। इसके बाद एक रात फिर मैंने यही बात कही और मक्का पहुंचा तो फिर उसी रात की तरह की घटना घटी और इसके बाद फिर कभी ग़लत इरादा न हुआ।[28]

सहीह बुख़ारी में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि जब काबा तामीर किया गया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और

---

28) इस हदीस को हाकिम ज़हबी ने सही कहा है लेकिन इब्ने कसीर ने अल-बिदाया वन-निहाया 2/287 में इसको कमज़ोर कहा है

हज़रत अब्बास रज़ि० पत्थर ढो रहे थे। हज़रत अब्बास रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, अपना तहबंद अपने कंधे पर रख लो, पत्थर से हिफ़ाज़त रहेगी, लेकिन ज्यों ही आपने ऐसा किया, आप ज़मीन पर गिर पड़े। निगाहें आसमान की ओर उठ गईं। संभलते ही आवाज़ लगायी, मेरा तहबंद, मेरा तहबंद। आप का तहबंद आपको बांध दिया गया। एक रिवायत के शब्द यह हैं कि इसके बाद आपकी शर्मगाह कभी नहीं देखी गई।[29]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ौम में मीठे बोल, उच्च चरित्र और श्रेष्ठ आचरण की दृष्टि से सब से अलग थे। चुनांचे आप सबसे ज़्यादा सद्‌भावना रखने वाले और अच्छी आदतों वाले, सब से ज़्यादा प्रतिष्ठित पड़ोसी, सब से बढ़ कर दूर तक देखने वाले, सबसे ज़्यादा सच्चे, सब से नर्म-पहलू, सब से ज़्यादा पाक नफ़्स, भलाई में सबसे ज़्यादा नेक, सब से बढ़कर वायदे के पाबंद और सबसे बड़े अमानतदार थे, यहां तक कि आप की क़ौम ने आपका नाम ही अमीन (अमानतदार) रख दिया था, क्योंकि आप नेक अमल और अच्छे गुणों के मालिक थे और जैसा कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की गवाही है, आप दीन-दुखियों का बोझ उठाते थे, तंग हाल, ग़रीबों का इन्तिज़ाम फ़रमाते थे, मेहमानों का सत्कार करते थे और सत्य की राह में आयी मुसीबतों में सहायता करते थे।[30]

29) बुख़ारी बाब बुन्यानुल-कअबा 1/540
30) बुख़ारी 1/3

नुबूवत का युग
और
मक्का की पाक ज़िन्दगी

दावत के दौर और मरहले

हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बरी के समय को दो हिस्सों में बांट सकते हैं, जो एक दूसरे से पूरी तरह साफ़ और अलग थे। वे दोनों हिस्से ये हैं------

1. **मक्की ज़िंदगी:** लगभग 13 साल,

2. **मदनी ज़िंदगी:** दस साल,

फिर इनमें से हर हिस्से में कई कई मरहले हैं। ये मरहले भी अपनी विशेषताओं की दृष्टि से एक दूसरे से अलग और नुमायां हैं। इसका अंदाज़ा आपकी पैग़म्बरी की ज़िंदगी के दोनों हिस्सों में आने वाले अलग-अलग हालात का गहराई से जायज़ा लेने के बाद हो सकता है।

मक्की ज़िंदगी के तीन मरहले

1. छिप-छिप कर दावत का मरहला------तीन वर्ष,

2. मक्का वालों में खुल्लम-खुल्ला दावत व तब्लीग़ का मरहला—चौथे साल नुबूवत के शुरू से दसवें साल के आख़िर तक,

3. मक्का के बाहर इस्लाम की दावत (संदेश) की लोकप्रियता और फैलाव का मरहला—-नुबूवत के दसवें साल के अन्त से मदीना की हिजरत तक,

मदनी ज़िंदगी के मरहलों की तफ़्सील अपनी जगह आ रही है।

नुबूवत और रिसालत की छांव में

हिरा नामी गुफा के भीतर

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र जब चालीस वर्ष के करीब पहुंची------और इस बीच आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अब तक के सोच विचार ने क़ौम से आपकी मानसिक और चिन्तनात्मक दूरी बढ़ा दी थी------तो आप को अकेले रहना प्रिय हो गया, चुनांचे आप सत्तू और पानी लेकर मक्का से कोई दो मील दूर हिरा पर्वत की एक खोह में जा रहते------यह एक छोटी सी खोह है, जिसकी लम्बाई चार गज़ और चौड़ाई पौने दो गज़ है। यह नीचे की ओर गहरी नहीं है, बल्कि एक छोटे से रास्ते के बग़ल में ऊपर की चट्टानों के आपस में मिलने से एक बोतल की शक्ल अपनाए हुए है------आप जब वहां तशरीफ़ ले जाते तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० आपके साथ जातीं और क़रीब ही किसी जगह मौजूद रहतीं, आप रमज़ान भर उस खोह में ठहरे रहते, आने जाने वाले मिस्कीनों को खाना खिलाते और बाक़ी वक़्त अल्लाह की इबादत में गुज़ार देते, सृष्टि की चीज़ों पर विचार करते और उसके पीछे काम कर रही अनोखी प्रकृति पर विचार करते। आप को अपनी क़ौम के लचर-पोच शिर्क भरे अक़ीदों और बेकार के विचारों पर बिल्कुल इत्मीनान न था, लेकिन आप के सामने कोई स्पष्ट रास्ता, तय तरीक़ा और सीमाओं की अति से हटी हुई कोई ऐसी राह न थी, जिस पर आप

विश्वास और खुले दिल के साथ आगे बढ़ सकते।[1]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तंहाई पसंद करना भी हक़ीक़त में अल्लाह के उपायों का एक हिस्सा था इस तरह अल्लाह आपको आने वाले बड़े काम के लिए तैयार कर रहा था। वास्तव में जिस आत्मा के यह भाग्य में हो कि मानव-जीवन की सच्चाइयों पर असर डाल कर उनकी दिशा बदल डाले, उस के लिए ज़रूरी है कि धरती की व्यस्तता जीवन के शोर और लोगों के छोटे-छोटे दुख शोक की दुनिया से कट कर कुछ दिनों के लिए अलग-थलग और अकेले रहे।

ठीक इसी सुन्नत के मुताबिक़ जब अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ी अमानत का बोझ उठाने, धरती पट को बदलने और इतिहास की धारा को मोड़ने के लिए तैयार करना चाहा, तो रिसालत की ज़िम्मेदारी डालने से तीन साल पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एकान्तवास (अकेलापन) भाग्य में कर दिया। आप इस अकेलेपन में एक महीने तक सृष्टि की स्वतंत्र आत्मा के साथ यात्रा करते और इस वजूद के पीछे छुपे हुए ग़ैब (अनदेखी) के अंदर सोच-विचार करते, ताकि जब अल्लाह का हुक्म हुआ हो तो उस ग़ैब के साथ अमल के लिए तैयार रहें।[2]

जिब्रील वह्य लाते हैं

जब आप की उम्र चालीस वर्ष हो गई——और यही पूर्णता की उम्र है और कहा जाता है कि यही पैग़म्बरों के पैग़म्बर बनाए जाने की उम्र है तो ज़िंदगी के क्षितिज (उफ़ुक़) के पार से नबी की निशानियों का चमकना और जगमगाना शुरू हुआ, ये सपनों की निशानियां थीं। आप जो भी सपना देखते वह सुबह की सफ़ेदी की तरह ज़ाहिर होता, इस

1) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/47, इब्ने हिशाम 1/235-236, फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन पारा 29/166

2) फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन पारा 29/166-167

हालत पर छः माह बीत गए, जो नुबूवत की मुद्दत का छियालीसवां हिस्सा है और नुबूवत की कुल मुद्दत तेईस वर्ष है——इसके बाद जब हिरा में एकान्तवास का तीसरा साल आया तो अल्लाह ने चाहा कि धरती के वासियों पर उसकी रहमत का फ़ैज़ान ज़्यादा हो। चुनांचे उसने आप को नुबूवत का पद दिया और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम कुरआन मजीद की कुछ आयतें लेकर आपके पास तशरीफ़ लाए।[3]

दलीलों पर एक नज़र डाल कर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के आने की इस घटना की तिथि तय की जा सकती है। हमारी खोज के मुताबिक़ यह घटना रमज़ानुल मुबारक की 21 तारीख़ को सोमवार के दिन घटित हुयी। उस दिन अगस्त की 10 तारीख थी और सन् 610 ई० था। चांद के हिसाब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र चालीस साल छः महीने बारह दिन और सूरज के हिसाब से 39 साल तीन महीने 22 दिन थी।[4]

---

3) हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं कि बैहक़ी ने यह कथा कही है कि सपने की अवधि 6 महीने थी इसलिए सपने के द्वारा नुबूवत का आरंभ 40 साल की आयु पूरी होने पर रबीउल-अव्वल में हुआ जो आपकी पैदाईश का महीना है। लेकिन जागने की हालत में आपके पास वह्य रमज़ान में आई (फ़तहुल-बारी 1/27)

4) **वह्य आरंभ होने का महीना, दिन तथा तारीख़।** इतिहास कारों में इस बात पर बड़ा मतभेद है कि नबी(सल्ल०) को नुबूवत कब मिली और पहली वह्य कब उतरी। कुछ कहते है कि यह रबीउल-अव्वल का महीना था लेकिन कुछ कहते हैं कि यह रमज़ान का महीना था जबकी कुछ का कहना है कि रजब का महीना था (देखिए मुख़्तसरुस्सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह 75) हमारे मतानुसार दूसरा कथन ज़्यादा सही है कि यह रमज़ान का महीना था क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है شهر رمضان الذي نزل فيه القرآن "रमज़ान का महीना ही वह (मुबारक) महीना है जिसमें कुरआने करीम उतारा गया।" 2/185 एक जगह अल्लाह फ़रमाता है انا انزلناه في ليلة القدر "हमने कुरआन को लैलतुल-क़द्र में उतारा" 97/1 जबकि सब जानते हैं कि लैलतुल-क़द्र रमज़ान में है। यही लैलतुल-क़द्र अल्लाह के इस इर्शाद में भी है انا انزلناه في ليلة مباركة انا كنا منذرين "हम ने कुरआन को एक बरकत वाली रात में उतारा हम लोगों को अज़ाब की सूचना देने वाले हैं।" 44/3

आइए, अब तनिक हज़रत आइशा रज़ि० की ज़ुबानी इस घटना का विवरण सुनें। यह खुदाई रोशनी का एक ऐसा शोला था, जिससे कुफ़र और गुमराही के अंधेरे छंटते चले गए यहां तक कि ज़िंदगी की रफ़्तार और इतिहास की दिशा बदल गई। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य की शुरुआत नींद में अच्छे सपने से हुई। आप जो भी सपना देखते थे, वह सुबह की सफ़ेदी की तरह ज़ाहिर होता था, फिर आप को तंहाई

दूसरे कथन के ज़्यादा सही होने की एक वजह यह भी है कि रसूलुल्लाह (सल्लु०) रमज़ान में ही हिरा की पहाड़ी में रहते थे तथा यह सब जानते हैं कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस सलाम हिरा में ही आये थे।

जो इतिहासकार यह मानते हैं कि वह्य रमज़ान में उतरनी शुरु हुई इनमें भी इस बात पर मतभेद है कि उस दिन रमज़ान की कौन सी तारीख़ थी। कुछ 7 कहते हैं, कुछ 17 और कुछ 18 (देखिए मुख़्तसरुस-सीरा 75, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/49) अल्लामा ख़िज़री ने 17 तारीख़ पर ज़ोर दिया है (देखिए तारीख़े ख़िज़री 1/69 तथा तारीखुत-तशरीइल-इस्लाम 5-7)

मैंने 21 तारीख़ को इसलिए अपनाया है—जबकि कोई और इतिहासकार इसको नहीं मानता—क्योंकि अधिकतर सीरत लिखने वालों का मत है कि आप (सल्ल०) को अवतरण (नुबुव्वत) पीर के दिन मिला था इस बात का समर्थन अबू क़तादा (रज़ि०) की इस हदीस से भी होता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पीर के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह वह दिन है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मुझे अवतरण मिला या मुझ पर वह्य उतारी गई (मुस्लिम1/368, मुस्नद अहमद 5/297-299, बेहक़ी 4/286,300, हाकिम 2/2,6) और उस साल रमज़ान में पीर का दिन 7,14,21 और 28 तारीख़ों को था। दूसरी तरफ़ सही हदीसों से यह बात सिद्ध और निश्चित है कि लैलतुल-क़दर रमज़ान की आख़िरी दहाई की ताक़ (विषम) रातों में होती है और इन्हीं रातों में घूमती रहती है। अब हम एक तरफ अल्लाह का यह इरशाद देखते हैं कि हमने क़ुरआन को लैलतुल-क़दर में उतारा दूसरी तरफ़ अबू क़तादा की हदीस कि रसूल (सल्ल०) को पीर के दिन ही अवतरण मिला, तीसरी तरफ़ कैलेन्डर का हिसाब देखते हैं कि उस साल रमज़ान में पीर का दिन किन-किन तारीख़ों में था तो यह बात सिद्ध हो जाती है कि रसूल (सल्ल०) को अवतरण 21 वीं रमज़ान की रात में मिला इसलिए वह्य उतरने की यही पहली तारीख़ है।

(अकेलापन) प्रिय हो गई। चुनांचे आप हिरा की गुफा में चले जाते और कई-कई रात घर तश्रीफ़ लाए बिना इबादत में लगे रहते। इसके लिए आप खाने-पीने का सामान ले जाते। (फिर सामान ख़त्म होने पर) हज़रत ख़दीजा रज़ि० के पास वापस आते और लगभग उतने ही दिनों के लिए फिर सामान ले जाते, यहां तक कि आपके पास हक़ (वह्य) आया और आप गुफ़ा में थे, यानी आपके पास फ़रिश्ता आया और उसने कहा, पढ़ो, आपने फ़रमाया, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। आप फ़रमाते हैं कि इस पर उसने मुझे पकड़ कर इस ज़ोर से दबाया कि मेरी ताक़त निचोड़ दी, फिर छोड़ कर कहा, पढ़ो, मैंने कहा, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने दोबारा पकड़ कर दबोचा, फिर छोड़ कर कहा, पढ़ो। मैंने फिर कहा, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने तीसरी बार पकड़ कर दबोचा, फिर छोड़ कर कहा——

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ [5]

"पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया इंसान को लोथड़े से. पढ़ो और तुम्हारा रब बड़े करम वाला है।"

इन आयतों के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पलटे। आपका दिल धक-धक कर रहा था, हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद रज़ि० के पास तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चादर ओढ़ा दी, यहां तक कि डर जाता रहा।

इसके बाद आपने हज़रत ख़दीजा रज़ि० को घटना की सूचना देते हुए फ़रमाया, यह मुझे क्या हो गया है? मुझे तो अपनी जान का डर लगता है। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, क़तई तौर पर नहीं, ख़ुदा की क़सम! अल्लाह आपको रुसवा न करेगा। आप रिश्तों को जोड़ते हैं,

---

5) आयतें عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ तक उतरीं

कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं, मेहमान की आव-भगत करते हैं और सत्य के लिए मुसीबतें झेलने वालों की मदद करते हैं।

इसके बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० आप को अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा के पास ले गयीं। वरक़ा अज्ञानता-युग में ईसाई हो गए थे और इब्रानी में लिखना जानते थे। चुनांचे इब्रानी भाषा में अल्लाह की तौफ़ीक़ से इंजील लिखते थे। उस वक़्त बहुत बूढ़े और अंधे हो चुके थे। उनसे हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, भाई जान! आप अपने भतीजे की बात सुनें। वरक़ा ने कहा, भतीजे! तुम क्या देखते हो? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ देखा था, बयान फ़रमा दिया। इस पर वरक़ा ने आप से कहा, यह तो वही नामूस है जिसे अल्लाह ने मूसा पर उतारा था। काश मैं इस वक़्त तवाना होता। काश मैं उस वक़्त ज़िंदा होता, जब आप की क़ौम आपको निकाल देगी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा तो क्या ये लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा, हां। जब भी कोई आदमी इस तरह का पैग़ाम लाया, जैसा तुम लाए हो, तो उससे ज़रूर दुश्मनी की गई और अगर मैंने तुम्हारा ज़माना पा लिया तो तुम्हारी ज़बर्दस्त मदद करूंगा। इसके बाद वरक़ा की जल्द ही मृत्यु हो गयी और वह्य रुक गयी।[6]

तबरी और इब्ने हिशाम की रिवायत से मालूम होता है कि आप अचानक वह्य आने के बाद हिरा की खोह से निकले, तो फिर वापस आकर अपने ठहरने की बाक़ी मुद्दत पूरी की। इसके बाद मक्का तशरीफ़ लाए। तबरी की रिवायत से आपके निकलने की वजह पर भी रोशनी पड़ती है। रिवायत यह है——

---

6) बुख़ारी बाब कैफ़: बदउल-वह्य 1/2-3, शब्दों के थोड़े से फ़र्क़ के साथ यह हदीस बुख़ारी किताबुत-तफ़सीर और तअबीरु-रौया में भी है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह्य आने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया, अल्लाह के पैदा किए हुए जीवों में कवि और पागल से बढ़ कर मेरे नज़दीक कोई घृणा योग्य न था (मैं बहुत नफ़रत की वजह से) उनकी ओर देखने की ताक़त न रखता था। (अब जो वह्य आयी तो) मैंने (अपने मन में) कहा कि यह नाकारा----यानी ख़ुद आप-----कवि या पागल है! मेरे बारे में कुरैश ऐसी बात कभी न कह सकेंगे। मैं पहाड़ की चोटी पर जा रहा हूं वहां से अपने आपको नीचे लुढ़का दूंगा और अपना ख़ात्मा कर लूंगा और हमेशा के लिए राहत पा जाऊंगा। आप फ़रमाते हैं कि मैं यही सोच कर निकला। जब बीच पहाड़ पर पहुंचा तो, आसमान से एक आवाज़ सुनायी दी, ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम अल्लाह के रसूल हो और मैं जिब्रील हूं। आप कहते हैं कि मैं ने आसमान की तरफ़ अपना सर उठाया, देखा तो जिब्रील एक आदमी की शक्ल में क्षितिज (उफ़ुक़) के अंदर पांव जमाए खड़े हैं और कह रहे हैं कि ऐ मुहम्मद! तुम अल्लाह के रसूल हो और मैं जिब्रील हूं। आप फ़रमाते हैं कि मैं वहीं ठहर कर जिब्रील को देखने लगा और इस काम ने मुझे मेरे इरादे से ग़ाफ़िल कर दिया। अब मैं न आगे जा रहा था, न पीछे, अलबत्ता अपना चेहरा आसमान के क्षितिज में घुमा रहा था और उसके जिस कोने पर भी मेरी नज़र पड़ती थी, जिब्रील उसी तरह दिखाई देते थे। मैं बराबर खड़ा रहा, न आगे बढ़ रहा था, न पीछे, यहां तक कि ख़दीजा (रज़ि०) ने मेरी खोज में अपने दूत भेजे। और वे मक्का तक जाकर पलट आए, लेकिन मैं अपनी जगह खड़ा रहा। फिर जिब्रील चले गए और मैं भी अपने घर वालों की तरफ़ पलट आया और ख़दीजा के पास पहुंच कर उनकी रान के पास उन्हीं पर टेक लगा कर बैठ गया।

उन्होंने कहा, अबुलक़ासिम! आप कहां थे? मैंने आपकी खोज में आदमी भेजे और वे मक्का तक जाकर वापस आ गए। (इसके जवाब

में) मैंने जो कुछ देखा था, उन्हें बता दिया। उन्होंने कहा, चचा के बेटे: आप खुश हो जाइए और आप जमे (साबित क़दम) रहिए। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं उम्मीद करती हूं कि आप इस उम्मत के नबी होंगे। इसके बाद वह वरक़ा बिन नौफ़ल के पास गयीं। उन्हें क़िस्सा सुनाया, उन्होंने कहा, क़ुद्दूस! क़ुद्दूस! उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में वरक़ा की जान है, उनके पास वही नामूसे अकबर आया जो मूसा के पास आया करता था। यह इस उम्मत के नबी हैं, इनसे कहो, जमे रहें। इसके बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने वापस आकर आपको वरक़ा की बात बतायी। फिर जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिरा में अपना क़ियाम पूरा कर लिया और (मक्का) तशरीफ़ लाए, तो आप से वरक़ा ने मुलाक़ात की और आप की ज़ुबान से पूरा विवरण सुन कर कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, आप इस उम्मत के नबी हैं, आपके पास वही नामूसे अकबर आया है जो मूसा के पास आया था।[7]

वह्य रुकी रही

रही यह बात कि वह्य कितने दिनों तक बन्द रही तो इस सिलसिले में इब्ने साद ने इब्ने अब्बास रज़ि० से एक रिवायत नक़ल की है जिसका मतलब यह है कि यह बंद होना कुछ दिनों के लिए था और सारे पहलुओं पर नज़र डालने के बाद यही बात तर्जीह देने की, बल्कि यक़ीनी मालूम होती है और यह जो मश्हूर है कि वह्य की बंदिश तीन साल या ढाई साल तक रही, तो क़तई तौर पर सहीह नहीं, अलबत्ता यहां दलीलों पर बहस की गुंजाइश नहीं।[8]

---

7) तबरी 2/207, इब्ने हिशाम 1/237-238, आख़िर का थोड़ा सा भाग संक्षिप्त कर दिया गया है क्योंकि हमें इस हदीस की तफ़सील में कुछ संकोच है। बुख़ारी की हदीस के लेख और दूसरी हदीसों का मुक़ाबला करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि आप(सल्ल०) की मक्का वापसी और हज़रत वरक़ा से मुलाक़ात वह्य उतरने के बाद उसी दिन हो गई थी और फिर हिरा का बाक़ी निवास आप (सल्ल०) ने मक्का से पलट कर किया।
8) थोड़ी तफ़सील हाशिया न० 11 में आरही है

वह्य के इस बन्द होने की मुद्दत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत दुखी और परेशान रहे, चुनांचे सहीह बुख़ारी किताबुत्ताबीर की रिवायत है कि———

'वह्य बन्द हो गयी, जिससे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतने दुखी हुए कि कई बार ऊंची पहाड़ियों की चोटियों पर तशरीफ़ ले गए कि वहां से लुढ़क जाएं, लेकिन जब किसी पहाड़ की चोटी पर पहुंचते कि अपने आपको लुढ़का लें तो हज़रत जिब्रील ज़ाहिर होते और फ़रमाते, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, इसकी वजह से आप की बेचैनी छुप जाती, दिल को सुकून मिल जाता और आप वापस आ जाते फिर जब आप पर वह्य की बन्दिश लम्बी हो जाती तो फिर उसी जैसे काम के लिए निकलते, लेकिन जब पहाड़ की चोटी पर पहुंचते तो हज़रत जिब्रील ज़ाहिर होकर फिर वही बात दोहराते।[9]

जिब्रील दोबारा वह्य लाते हैं

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि यह (यानी वह्य का कुछ दिनों के लिए बंद हो जाना) इसलिए था, ताकि आप पर जो डर छा गया था, वह ख़त्म हो जाए और दोबारा वह्य के आने का शौक़ व इन्तिज़ार पैदा हो जाए![10] चुनांचे जब हैरत के साए सिकुड़ गए, हक़ीक़त के चिन्ह मज़बूत हो गए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यक़ीनी तौर पर मालूम हो गया कि आप अल्लाह तआला के नबी हो चुके हैं और आप के पास जो आदमी आया था, वह वह्य का दूत और आसमानी ख़बर का नक़ल करने वाला है और इस तरह वह्य के लिए आप का शौक़ व इन्तिज़ार इस बात की ज़मानत हो गया कि आगे वह्य के आने पर आप साबित क़दमों वाले होंगे और इस बोझ को उठा लेंगे, तो

9) बुख़ारी किताबुत-तअबीर 2/1034

10) फ़त्हुल-बारी 1/27

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम दोबारा तशरीफ़ लाए, सहीह बुख़ारी में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वह्य की ज़ुबानी बन्दिश की घटना सुनी, आप फ़रमा रहे थे।

"मैं चला जा रहा था कि मुझे अचानक आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, मैंने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई, तो क्या देखता हूं कि वही फ़रिश्ता जो मेरे पास हिरा में आया था, आसमान व ज़मीन के बीच एक कुर्सी पर बैठा है। मैं उससे डर कर धरती की ओर जा छिपा, फिर मैंने घर वालों के पास आकर कहा, मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उन्होंने मुझे चादर ओढ़ा दी। इसके बाद अल्लाह ने يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ से وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ तक नाज़िल फ़रमाई। वह्य (उतरने) में गर्मी (तेज़ी) आ गई और वह लगातार उतरने लगी।[11]

वह्य की क़िस्में

अब हम वाणी क्रम से तनिक हट कर, यानी रसूल व नबी की मुबारक ज़िंदगी के विस्तार में जाने से पहले वह्य की क़िस्मों को बयान कर देना चाहते हैं, क्योंकि यह रिसालत की बुनियाद और दावत का सहायक है। अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने वह्य के नीचे लिखे दर्जों का उल्लेख किया है-----

---

11) बुख़ारी किताबुत-तफ़सीर बाब وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ, 2/733

इस हदीस के कुछ वर्णनों के शुरु में आप का यह कथन भी है कि मैंने हिरा में एतिकाफ़ किया और जब अपना पूरा एतिकाफ़ कर चुका तो नीचे उतरा। फिर जब मैं घाटी के बीच में पहुंचा तो मुझे पुकारा गया मैंने चारों तरफ़ देखा कुछ नज़र न आया जब ऊपर देखा तो वही फ़रिश्ता ....सीरत लिखने वालों के सारे वर्णनों से पता चलता है कि आप (सल्ल०) ने तीन साल हिरा में रमज़ान के महीने का एतिकाफ़ किया था और वह्य उतरने वाला आख़री रमज़ान था और आप (सल्ल०) की आदत यह थी कि आप (सल्ल०) रमज़ान का एतिकाफ़ पूरा कर के पहली शव्वाल की सुबह मक्का आ जाते थे उपरोक्त हदीस के साथ इस बात को जोड़ने से यह नतीजा निकलता है कि يا أيها المدثر वाली वह्य पहली वह्य के दस दिन बाद पहली शव्वाल को उतरी अर्थात वह्य दस दिन तक नहीं उतरी।

1. सच्चा सपना इसी से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्य की शुरुआत हुई।

2. फ़रिश्ता आप को दिखाई दिए बिना आप के मन में बात डाल देता था, जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है:

إنَّ رُوْحَ الْقُدُسِ نَفَثَ فِيْ رُوْعِي أَنَّهُ لَنْ تَمُوْتَ نَفْسٌ حَتّٰى تَسْتَكْمِلَ رِزْقَهَا فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَجْمِلُوْا فِي الطَّلَبِ، وَلَا يَحْمِلَنَّكُمُ اسْتِبْطَاءُ الرِّزْقِ عَلٰى أَنْ تَطْلُبُوْهُ بِمَعْصِيَةِ اللّٰهِ فَإِنَّ مَا عِنْدَ اللّٰهِ لَا يُنَالُ إِلَّا بِطَاعَتِهِ

'रूहुल कुद्स ने मेरे दिल में यह बात फूंकी कि कोई नफ़्स (जान) मर नहीं सकता, यहां तक कि अपनी रोज़ी पूरी-पूरी हासिल कर ले। बस अल्लाह से डरो और तलब में अच्छाई अपनाओ और रोज़ी की देर तुम्हें इस बात पर तैयार न करे कि तुम उसे अल्लाह की नाफ़रमानी के ज़रिए खोजो, क्योंकि अल्लाह के पास जो कुछ है, वह उसके आज्ञापालन के बिना हासिल नहीं किया जा सकता।

3. फ़रिश्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए आदमी का रूप अपना कर आप को सम्बोधित करता, फिर जो कुछ वह कहता, उसे आप याद कर लेते। इस शक्ल में कभी-कभी सहाबा भी फ़रिश्ते को देखते थे।

4. आप के पास वह्य घंटी टनटनाने की तरह आती थी। वह्य की यह सब से सख़्त शक्ल होती थी। इस शक्ल में फ़रिश्ता आप से मिलता था और वह्य आती थी तो कड़े जाड़े के ज़माने में भी आपके माथे से पसीना फूट पड़ता था और आप ऊंटनी पर सवार होते तो वह ज़मीन पर बैठ जाती थी। एक बार इस तरह वह्य आई कि आपकी रान हज़रत ज़ैद बिन साबित की रान पर थी तो उन पर इतनी बोझल हुई कि जान पड़ता था रान कुचल जाएगी।

5. आप फ़रिश्ते को उसकी असली और पैदाइशी शक्ल में देखते थे और इसी हालत में वह अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ आप की तरफ़ वह्य करता था। यह शक्ल आपके साथ दो बार पेश आयी, जिसका ज़िक्र अल्लाह ने सूरः नजम में फ़रमाया है।

6. वह वह्य जो आप पर मेराज की रात नमाज़ के फ़र्ज़ किए जाने के सिलसिले में अल्लाह ने उस वक़्त फ़रमाई, जब आप आसमानों के ऊपर थे।

7. फ़रिश्ते के वास्ते के बग़ैर अल्लाह की आप से सीधे-सीधे बातचीत जैसे अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम से बातें की थीं। वह्य की यह शक्ल मूसा अलैहिस्सलाम के लिए क़ुरआन से क़तई तौर पर साबित है, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए इसका सबूत (क़ुरआन के बजाए) मेराज की हदीस में है।

कुछ लोगों ने एक आठवीं शक्ल को भी बढ़ाया है, यानी अल्लाह आमने-सामने बिना परदे के बात करे, लेकिन यह ऐसी शक्ल है जिसके बारे में पहलों (सल्फ़) से लेकर आज तक मतभेद चला आ रहा है।[12]

---

12) ज़ादुल-मआद 1/18 पहली और आठवीं सूरत के ब्यान में असली लेख के अन्दर संक्षेपण से काम लिया गया है।

तब्लीग़ का हुक्म और उससे मुताल्लिक़ बातें

सूरः मुद्दस्सिर की शुरु की आयतों----- يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ से وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ, तक---में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कई हुक्म दिए गए हैं जो ज़ाहिर में तो हैं बहुत थोड़े और सादा, लेकिन हक़ीक़त में हैं बड़े दूरगामी, जिनके बड़े गहरे प्रभाव पड़ते हैं। चुनांचे----

1. डरावे की आख़िरी मंज़िल यह है कि मौजूद दुनिया (आलमे वजूद) में अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जो भी चल रहा हो, उसे उसके ख़तरे भरे अंजाम से ख़बरदार कर दिया जाए और वह भी इस तरह कि अल्लाह के अज़ाब के डर से उसके दिल व दिमाग़ में हलचल और उथल-पुथल मच जाए।

2. रब की बड़ाई और किब्रियाई की आख़िरी मंज़िल यह है कि धरती पर किसी और की किब्रियाई बाक़ी न रहने दी जाए, बल्कि उसकी शौकत तोड़ दी जाए और उसे उलट कर रख दिया जाए, यहां तक कि धरती पर सिर्फ़ अल्लाह की बड़ाई बाक़ी रहे।

3. कपड़े की पाकी और गन्दगी से दूरी की आख़िरी मंज़िल यह है कि अंदर बाहर की पाकी और इच्छाओं और कामनाओं से मन की सफ़ाई के सिलसिले में उस सीमा तक पहुंच जाएं जो अल्लाह की रहमत की घनी छाया में उसकी हिफ़ाज़त व निगरानी और हिदायत व नूर के

तहत संभव है, यहां तक कि इंसानी समाज का ऐसा ऊंचा नमूना बन जाएं कि आप की ओर तमाम भले दिल खिंचते चले जाएं और आपके रोब और बड़कपन का एहसास टेढ़ी समझ वालों को हो जाए और इस तरह सारी दुनिया सहमति या विरोध में आपके चारों ओर जमा हो जाए।

4. एहसान करके उस पर ज़्यादा न चाहने की आख़िरी मंज़िल यह है कि अपनी कोशिशों और कारनामों को बड़ाई और अहमियत न दें, बल्कि एक के बाद दूसरे अमल के लिए कोशिश करते जाएं और बड़े पैमाने पर कुर्बानी और मेहनत करके उसे इस अर्थ में भूलते जाएं कि यह हमारा कोई कारनामा है, यानी अल्लाह की याद और उसके सामने जवाबदेही का एहसास और अपनी कोशिश और मेहनत पर ग़ालिब रहे।

5. आख़िरी आयत में इशारा है कि अल्लाह की तरफ़ बुलाने (दावत) का काम शुरू करने के बाद शत्रुओं की ओर से विरोध, उपहास, हंसी और ठट्ठे की शक्लों में कष्ट पहुंचाने से लेकर आपको और आपके साथियों को क़त्ल करने और आपके चारों ओर जमा होने वाले ईमान वालों को ख़त्म करने तक की भरपूर कोशिशें होंगी और आप को इन सब का वास्ता पड़ेगा। ऐसी स्थिति में आपको बड़ी हिम्मत और जमाव के साथ सब्र करना होगा, वह भी इसलिए नहीं कि इस सब्र के बदले किसी इच्छा और स्वाद के मिलने की उम्मीद हो, बल्कि सिर्फ़ अपने पालनहार की मर्ज़ी और उसके दीन को ऊंचा करने के लिए। وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ

अल्लाहु अकबर! ये हुक्म अपनी ज़ाहिरी शक्ल में कितने सादा और थोड़े हैं और इनके शब्दों का जोड़ कितना शान्तिमय और आकर्षक संगीतमय स्वर लिए हुए है, लेकिन अमल और मक़सद की दृष्टि से ये हुक्म कितने भारी, कितने महान और कितने सख़्त हैं और इनके नतीजे में कितनी तेज़ चौमुखी आंधी उठेगी जो सारी दुनिया के कोने-कोने को

हिला कर और एक को दूसरे से गुत्थम-गुत्था करके-रख देगी।

इन्ही ज़िक्र की गयी आयतों में दावत व तब्लीग़ (बुलाने और प्रचार करने) का निचोड़ भी मौजूद है। डराने का मतलब ही यह है कि मनुष्यों के कुछ कर्म ऐसे हैं जिनका अंजाम बुरा है और यह सब को मालूम है कि इस दुनिया में लोगों को न तो उनके सारे कार्यों का बदला का दिया जाता है और न दिया जा सकता है। इसलिए डरावे का एक तक़ाज़ा यह भी है कि दुनिया के दिनों के अ़लावा एक दिन ऐसा भी होना चाहिए जिसमें हर अ़मल का पूरा-पूरा और ठीक-ठीक बदला दिया जा सके। यही क़ियामत का दिन यानी बदले के दिन है। फिर उस दिन बदला दिए जाने का ज़रूरी तक़ाज़ा है कि हम दुनिया में जो ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं उसके अलावा भी एक ज़िंदगी हो।

बाक़ी आयतों में बन्दों से यह मांग की गयी है कि वे ख़ालिस तौहीद अपनाएं, अपने सारे मामले अल्लाह को सौंपने और अल्लाह की मर्ज़ी पर मन की इच्छा और लोगों की मर्ज़ी को तज दें। इस तरह दावत व तब्लीग़ के मैटर का सार यह हुआ——

(क) तौहीद (एकेश्वरवाद),

(ख) आख़िरत के दिन पर ईमान,

(ग) मन की पाकी की व्यवस्था, यानी बुरे अंजाम तक ले जाने वाले गंदे और बेहयाई के कामों से परहेज़ और फ़ज़ीलतों, कमालों और भले कामों पर अमल करने की कोशिश

(घ) अपने सारे मामलों को सिर्फ़ अल्लाह के सुपुर्द और हवाले करना।

(ङ) फिर इस सिलसिले की आख़िरी कड़ी यह है कि यह सब कुछ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत पर ईमान लाकर आप के महान नेतृत्व और हिदायत से भरे फ़रमानों की रोशनी में अंजाम दिया जाए।

फिर इन आयतों की शुरूआत अल्लाह की आवाज़ में एक आसमानी आवाज़ होती है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बड़े काम के लिए उठने और नींद की चादर और बिस्तर की गर्मी से निकल कर जिहाद और मेहनत व मशक़्क़त के मैदान में आने के लिए कहा गया है —— يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنذِرْ (74:1-2) (ऐ चादर ओढ़े हुए उठ और डरा) मानो यह कहा जा रहा है कि जिसे अपने लिए जीना है, वह तो आराम की ज़िंदगी गुज़ार सकता है, लेकिन आप, जो इस ज़बरदस्त बोझ को उठा रहे हैं, तो आप का नींद से क्या ताल्लुक़? आप को राहत से क्या सरोकार? आप को गर्म बिस्तर से क्या मतलब? शान्तिमय जीवन से क्या संबंध? आरामदायक सामग्री से क्या ताल्लुक? आप उठ जाइए, इस बड़े काम के लिए जो आप के इन्तिज़ार में है, उस भारी बोझ के लिए जो आप के लिए तैयार है। उठ जाइए मेहनत-मशक़्क़त के लिए, थकन और परिश्रम के लिए उठ जाइए कि अब नींद और आराम का वक़्त बीत चुका। अब आज से बराबर बेदार रहना है और लम्बा मशक़्क़त भरा जिहाद है, उठ जाइए और इस काम के लिए मुस्तैद और तैयार हो जाइए——

यह बड़ी भारी और रौबदार बात है। इसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शान्तिमय घर, गहरी नींद और नर्म बिस्तर से खींच कर भारी तूफ़ानों और तेज़ झक्कड़ों के बीच अथाह समुद्र में फेंक दिया और लोगों की अन्तरात्मा और जीवन की वास्तविकताओं की खींच-तान के बीच ला खड़ा किया।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ गए और बीस साल से ज़्यादा मुद्दत तक उठे रहे, आराम और सुकून तज दिया। ज़िंदगी अपने लिए और बाल-बच्चों के लिए न रही। आप उठे तो उठे ही रहे। काम अल्लाह की तरफ़ बुलाना था। आपने यह कमर तोड़ बोझ अपने कंधे पर किसी दबाव के बिना उठा लिया, यह बोझ था, इस

धरती पर सब से बड़ी अमानत का बोझ, सारी मानवता का बोझ, सारे विश्वासों का बोझ और अलग-अलग मैदानों में जिहाद और बचाव का बोझ। आपने बीस साल से अधिक समय तक लगातार और सर्वव्यापी उपद्रवों (मअ़रकों) में ज़िंदगी गुज़ार दी और इस पूरी मुद्दत में यानी जब से आप ने यह आसमानी ज़ोरदार आवाज़ सुनी और यह भारी भरकम ज़िम्मेदारी पायी, आपको कोई एक हालत किसी दूसरी हालत से ग़ाफ़िल न कर सकी। अल्लाह आपको हमारी और सारी मानवता की तरफ़ से बेहतरीन बदला दे।[13] आमीन!

अगले पन्ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इसी लम्बे और मशक़्क़त भरे जिहाद का एक छोटा सा ख़ाका हैं।

13) फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन सूरःमुज़्ज़म्मिल तथा मुद्दस्सिर पारा 29/168-171,182

तब्लीग़ (प्रचार) की कोशिशें

ख़ुफ़िया दावत के तीन साल

यह मालूम है कि मक्का अरब के दीन धर्म का सेंटर था। यहां काबा के रखवाले भी थे और इन बुतों की निगरानी करने वाले भी, जिन्हें पूरा अरब पवित्रता की दृष्टि से देखता था, इसलिए किसी दूर-दूर की जगह के मुक़ाबले में मक्का में सुधार के मक़्सद तक पहुंचना ज़रा ज़्यादा कठिन थी। यहां ऐसा निश्चय चाहिए था जिसे मुसीबतों और कठिनाइयों के झटके अपनी जगह से न हिला सकें। इस स्थिति को देखते हुए हिक्मत का तक़ाज़ा था कि पहले-पहले दावत व तब्लीग़ का काम परदे के पीछे अंजाम दिया जाए, ताकि मक्का वालों के सामने अचानक एक हड़बड़ी वाली स्थिति न आ जाए।

इस्लाम के शुरू के लोग

यह बिल्कुल स्वाभाविक बात थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे पहले उन लोगों पर इस्लाम पेश करते, जिनसे आपका सबसे गहरा ताल्लुक़ था यानी अपने घर के लोगों और दोस्तों पर। चुनांचे आपने सबसे पहले उन्हीं को दावत दी। इस तरह आपने शुरू में अपनी जान-पहचान के उन लोगों को सत्य की ओर बुलाया जिनके चेहरों पर आप चमक की निशानियों को देख चुके थे और यह जान चुके थे कि वह सत्य और भलाई को पसंद करते हैं, आपकी सच्चाई और ख़ूबी को जानते हैं। फिर आपने जिन्हें इस्लाम की दावत

दी उनमें से एक ऐसी जमाअत ने, जिसे कभी भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता, बड़कपन और सच्चाई पर संदेह न हुआ था, आपकी दावत क़बूल कर ली। ये इस्लामी इतिहास में 'पहले के लोग' समझे जाते हैं। इस पंक्ति में सबसे ऊपर आपकी बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद रज़ि०, आप के आज़ाद किये हुए दास हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० बिन शुरहबील कल्बी,[1] आप के चचेरे भाई हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब, जो आप की निगरानी में थे और बच्चा थे और आपके ग़ार (ख़ोह) के साथी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं। ये सब के सब पहले ही दिन मुसलमान हो गए थे।[2] इसके बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० इस्लाम के प्रचार में लग गए। वह बड़े लोकप्रिय, नम्र स्वभाव और प्रिय चरित्र और दरिया दिल थे। इनके पास इनकी शीलता, अग्रसोची (दूरन्देशी), व्यापार और अच्छी संगति की वजह से लोगों का आना-जाना लगा रहता था। चुनांचे उन्होंने अपने पास आने-जाने वालों और उठने बैठने वालों में से जिसको भी भरोसे के क़ाबिल पाया, उसे अब इस्लाम की दावत देनी शुरू कर दी। इनकी कोशिश से हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०, और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० मुसलमान हुए। ये बुज़ुर्ग इस्लाम के शुरू के लोग थे।

---

1) यह जंग में गुलाम (दास) बना लिए गए थे। बाद में हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) इनकी मालिक हुई और इन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) को भेंट कर दिया। इसके बाद इनके पिता तथा चाचा इन्हें घर ले जाने के लिए आए लेकिन इन्होंने पिता और चाचा को छोड़ कर रसूलुल्लाह के साथ रहना पसन्द किया। इसके बाद अरब के रिवाजानुसार आप (सल्ल०) ने इनको अपना ले-पालक बेटा बना लिया और इन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा यहां तक कि इसलाम ने इस रिवाज को तोड़ दिया।

2) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/50

शुरू-शुरू में जो लोग इस्लाम लाए, उन्हीं में हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० भी हैं, उनके बाद उम्मत के अमीन हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन जर्राह, अबू सलमा बिन अब्दुल असद, अरक़म बिन अबिल अरक़म, उस्मान बिन मज़ऊन और उनके दोनों भाई कुदामा और अब्दुल्लाह और उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़, सईद बिन ज़ैद और उनकी बीवी यानी हज़रत उमर रज़ि० की बहन फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब और ख़ब्बाब बिन अरत्त, अब्दुल्लाह बिन मसूऊद और कई दूसरे लोग मुसलमान हुए। ये लोग कुल मिला कर कुरैश की तमाम शाखाओं से ताल्लुक़ रखते थे। इब्ने हिशाम ने इनकी तायदाद चालीस से ज़्यादा बताई है। देखिए (245/1--262) लेकिन इन में से कुछ को बिलकुल शुरू के लोगों में समझना विचारणीय है।

इब्ने इसहाक़ का बयान है कि इसके बाद मर्द और औरतें इस्लाम में जत्थे के जत्थे दाख़िल हुए यहां तक कि मक्का में इस्लाम का ज़िक्र फैल गया और लोगों में इसकी चर्चा होने लगी।[3]

ये लोग छिप-छिपा कर मुसलमान हुए थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी छिप-छिपा कर ही इन की रहनुमाई और दीनी तालीम के लिए इनके साथ जमा होते थे, क्योंकि तब्लीग़ का काम अभी तक व्यक्तिगत रूप से परदे के पीछे ही चल रहा था। इधर सूरः मुद्दस्सिर की शुरू की आयतों के बाद वह्य का आना पाबन्दी से और पूरी गरम रफ़्तारी के साथ जारी था। इस दौर में छोटी-छोटी आयतें उतर रही थीं। इन आयतों का अन्त समान रूप से बड़े ही आक्रषक शब्दों में होता था और उसमें बड़ा शान्तिपूर्ण और आकर्षक संगीत होता था जो उस शांत और पिघलते वातावरण के अनुकूल होता था। फिर इन आयतों में मन के पवित्र करने के वे गुण और दुनिया की गंदगियों में

3) इब्ने हिशाम 1/262

लथ-पथ होने के अवगुण बयान किए जाते थे और जन्नत व जहन्नम का नक़्शा इस तरह खींचा जाता था कि मानो वे आंखों के सामने हैं। ये आयतें ईमान वालों को उस समय के इंसानी समाज से बिल्कुल अलग एक दूसरे ही वातावरण की सैर कराती थीं।

नमाज़

शुरू में जो कुछ उतरा, उसी में नमाज़ का हुक्म भी था। मुक़ातिल बिन सुलैमान कहते हैं कि अल्लाह ने शुरू इस्लाम में दो रक्अत सुबह और दो रक्अत शाम की नमाज़ फ़र्ज़ की, क्योंकि अल्लाह का इर्शाद है——

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ

'सुबह और शाम अपने रब की हम्द के साथ उसका गुण-गान करो।' (4:55)

इब्ने हजर कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इसी तरह आप के सहाबा किराम रज़ि० मेराज की घटना से पहले क़तई तौर पर नमाज़ पढ़ते थे, अलबत्ता इसमें मतभेद है कि पांचों वक़्त की नमाज़ से पहले कोई फ़र्ज़ थी या नहीं? कुछ लोग कहते हैं कि सूरज के निकलने और डूबने से पहले एक-एक नमाज़ फ़र्ज़ थी।

हारिस बिन उसामा रज़ि० ने इब्ने लहीआ के वास्ते से हज़रत ज़ैद बिन हारिसः रज़ि० से यह हदीस रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर शुरू में जब वह्य आई तो आपके पास हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप को वुज़ू का तरीक़ा सिखाया। जब वुज़ू से फ़ारिग़ हुए तो एक चुल्लू पानी लेकर शर्मगाह पर छींटा मारा। इब्ने माजा ने भी इस अर्थ की हदीस रिवायत की है। बरा बिन आज़िब रज़ि० और इब्ने अब्बास रज़ि० से भी इसी तरह की हदीस रिवायत की गई है।

इब्ने अब्बास रज़ि० की हदीस में भी इसका ज़िक्र किया गया है कि यह (नमाज़) बुनियादी फ़र्ज़ों में से थी।[4]

इब्ने हिशाम का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० नमाज़ के वक़्त घाटियों में चले जाते थे और अपनी क़ौम से छिप कर नमाज़ पढ़ते थे। एक बार अबू तालिब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली रज़ि० को नमाज़ पढ़ते देख लिया। पूछा और सच्चाई मालूम हुई तो कहा कि इस पर जमे रहें।[5]

क़ुरैश को मामूली ख़बर

अलग-अलग घटनाओं से ज़ाहिर है कि इस मरहले में तब्लीग़ का काम यद्यपि व्यक्तिगत रूप से छिप-छिपा कर किया जा रहा था, लेकिन क़ुरैश को उसकी सुन-गुन लग चुकी थी, अलबत्ता उन्होंने इसे ध्यान देने योग्य न समझा।

मुहम्मद ग़ज़ाली रह० लिखते हैं कि ये ख़बरें क़ुरैश को पहुंच चुकी थीं, लेकिन क़ुरैश ने इन्हें कोई महत्व न दिया, शायद उन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी उसी तरह का कोई धार्मिक व्यक्ति समझा जो अल्लाह और अल्लाह के हक़ के विषय पर बातचीत करते हैं, जैसा कि उमैया बिन अबिस्सलत, क़ुस बिन साइदा और अम्र बिन नुफ़ैल वग़ैरह ने किया था। अलबत्ता क़ुरैश ने आप की ख़बर के फैलाव और असर के बढ़ाव से कुछ अंदेशे ज़रूर महसूस किए थे और उनकी निगाहें ज़माने की चाल के साथ आपके अंजाम और आप की तब्लीग़ पर रहने लगी थी।[6]

तीन साल तक तबलीग़ का काम ख़ुफ़िया और व्यक्तिगत रहा और इस बीच ईमान वालों की एक जमाअत तैयार हो गयी जो भाई-चारा

4) मुख़्तसरुस्सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 38

5) इब्ने हिशाम 1/47

6) फ़िक़्हुस-सीरा 76

और एक दूसरे की मदद पर क़ायम थी। अल्लाह का संदेश पहुंचा रही थी और इस संदेश को उसका स्थान दिलाने के लिए कोशिश कर रही थी। इसके बाद अल्लाह की वह्य उतरी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़िम्मेदार बनाया गया कि अपनी क़ौम को खुल्लम-खुला दीन की दावत दें। अनके झूठ (बातिल) से टकराएं और उनके बुतों की हक़ीक़त खोलें।

खुली तब्लीग़

खुल कर दावत देने का पहला हुक्मः

इस बारे में सबसे पहले अल्लाह का यह क़ौल (कथन) नाज़िल हुआ, وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ, "आप अपने सबसे नज़दीकी रिश्तेदारों को (अल्लाह के अज़ाब से) डराइए"। यह सूरः शुअ़रा की आयत है और इस सूरः में सबसे पहले हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की घटना बयान की गई है, यानी यह बताया गया है कि किस तरह मूसा अ़लैहिस्सलाम के नबी होने की शुरूआत हुई, फिर आख़िर में उन्होंने बनी इस्राईल समेत हिजरत करके फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम से निजात पाई और फ़िरऔ़न और आले फ़िरऔ़न (साथी-संगी) को डुबो दिया गया। दूसरे शब्दों में इस ज़िक्र में वे तमाम मरहले आ गये हैं जिनसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम को अल्लाह के दीन की दावत देते हुए गुज़रे थे।

मेरा विचार है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपनी क़ौम के अंदर खुल कर प्रचार करने का हुक्म दिया गया तो इस मौक़े पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की घटना का यह विवरण इसलिए दिया गया कि खुल्लम-खुल्ला दावत देने के बाद जिस तरह झुठलाने और ज़ुल्म व ज़्यादती से वास्ता पड़ने वाला था, उसका एक नमूना आप और सहाबा किराम रज़ि० के सामने मौजूद रहे।

दूसरी ओर इस सूरः में पैग़म्बरों को झुठलाने वाली क़ौमों, जैसे

फ़िरऔन और उसकी क़ौम के अलावा नूह की क़ौम, आद व समूद की क़ौमों, इब्राहीम की क़ौम, लूत की क़ौम और अस्हाबुल-एका के अंजाम का भी ज़िक्र है। इसका मक़सद शायद यह है कि जो लोग आप को झुठलाएं, उन्हें मालूम हो जाए कि झुठलाने पर आग्रह करने की स्थिति में उसका अंजाम क्या होने वाला है और वह अल्लाह की तरफ़ से किस क़िस्म की पकड़ से दो चार होंगे, साथ ही ईमान वालों को मालूम हो जाए कि अच्छा अंजाम उन्हीं का होगा,.झुठलाने वालों का नहीं।

रिश्तेदारों में तब्लीग़

बहरहाल इस आयत के उतरने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहला काम यह किया कि बनी हाशिम को जमा किया, उनके साथ बनी मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ की भी एक जमाअत थी। कुल पैंतालिस आदमी थे, लेकिन अबू लहब ने बात लपक ली और बोलाः देखो यह तुम्हारे चचा और चचेरे भाई हैं, बात करो। लेकिन नादानी छोड़ो और यह समझ लो कि तुम्हारा ख़ानदान सारे अरब से मुक़ाबले की ताक़त नहीं रखता और मैं सब से ज़्यादा हक़दार हूं कि तुम्हें पकड़ लूं। पस तुम्हारे लिए तुम्हारे बाप का ख़ानदान ही काफ़ी है। और अगर तुम अपनी बात पर क़ायम रहे तो यह बहुत आसान होगा कि कुरैश के सारे क़बीले तुम पर टूट पड़ें और अरब के बाक़ी लोग भी उनकी मदद करें। फिर मैं नहीं जानता कि कोई व्यक्ति अपने बाप के ख़ानदान के लिए तुम से बढ़ कर शर (दुष्टता और तबाही) की वजह होगा। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ामोशी अपना ली और इस मज्लिस में कोई बात न की।

इसके बाद आपने उन्हें दोबारा जमा किया और इर्शाद फ़रमाया, "सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है। मैं उसकी तारीफ़ करता हूं और उससे मदद चाहता हूं, उस पर ईमान रखता हूं, उसी पर भरोसा करता हूं और यह गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। फिर आपने फ़रमाया, "रहनुमा अपने घर के लोगों से झूठ नहीं बोल सकता। उस ख़ुदा की क़सम! जिसके सिवा कोई माबूद (उपासा) नहीं, मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ास तौर से और दूसरे लोगों की तरफ़ आम तौर से अल्लाह का रसूल हूं। ख़ुदा की क़सम! तुम लोग इसी तरह मौत से दो चार होगे जैसे सो जाते हो और उसी तरह उठाए जाओगे जैसे सो कर जागते हो। फिर जो कुछ तुम करते हो, उसका तुमसे हिसाब लिया जाएगा। इसके बाद या तो हमेशा के लिए जन्नत है या हमेशा के लिए जहन्नम।"

इस पर अबू तालिब ने कहा, (न पूछो) हमें तुम्हारी मदद कितनी पसंद है। तुम्हारी नसीहत किस हद तक अपनाने लायक़ है और हम तुम्हारी बात कितनी सच्ची जानते मानते हैं। और यह तुम्हारे बाप के ख़ानदान का परिवार जमा है और मैं भी उनका एक व्यक्ति हूं। अंतर इतना है कि मैं तुम्हारी पसंद को पूरा करने के लिए इन सबसे आगे हूं, इसलिए तुम्हें जिस बात का हुक्म हुआ है, उसे अंजाम दो। ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारी बराबर मदद और हिफ़ाज़त करता रहूंगा। अलबत्ता मेरी तबियत अब्दुल मुत्तलिब का दीन छोड़ने पर तैयार नहीं।

अबू लहब ने कहा, ख़ुदा की क़सम! यह बुराई है। इसके हाथ दूसरों से पहले तुम लोग ख़ुद ही पकड़ लो। इस पर अबू तालिब ने कहा, ख़ुदा की क़सम! जब तक जान में जान है, हम इनकी हिफ़ाज़त करते रहेंगे।[1]

सफ़ा पर्वत पर

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अच्छी तरह इत्मीनान कर लिया कि अल्लाह के दीन की तब्लीग़ के समय अबू तालिब उन का समर्थन करेंगे, तो फिर एक दिन आप ने सफ़ा पर्वत पर चढ़ कर यह

---

1) फ़िक़्हुस-सीरा 77,88 इब्नुल-असीर की

आवाज़ लगाई या सबाहाह[2] (हाय सुबह!) यह पुकार सुन कर क़ुरैश के क़बीले आपके पास जमा हो गए। और आपने उन्हें अल्लाह के एक होने, अपने रसूल होने और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने की दावत दी। इस घटना का एक टुकड़ा सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ि० से इस तरह रिवायत किया गया है कि-------

जब وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़ा पहाड़ पर चढ़ कर क़ुरैश के क़बीलों को आवाज़ लगानी शुरू की, ऐ बनी फ़िहर! ऐ बनी अ़दी! यहां तक कि सब के सब इकट्ठा हो गए, अगर कोई आदमी ख़ुद न जा सकता था, तो अपने दूत भेज देता था ताकि देखे, मामला क्या है। तात्पर्य यह कि क़ुरैश आ गए अबू लहब भी आ गया। इसके बाद आपने फ़रमाया, तुम लोग यह बताओ, अगर मैं यह ख़बर दूं कि उधर घाटी में घुड़सवारों की एक जमाअ़त है जो तुम पर छापा मारना चाहती है तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? लोगों ने कहा, हां, हम ने आप पर सच का ही तजुर्बा किया है आपने फ़रमाया, अच्छा तो मैं तुम्हें एक सख़्त अज़ाब से पहले ख़बरदार करने के लिए भेजा गया हूं। इस पर अबू लहब ने कहा, तू सारे दिन ग़ारत हो, तूने हमें क्या इसी लिए जमा किया था। इस पर सूरः تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ उतरी। "अबू लहब के दोनों हाथ ग़ारत हों और वह ख़ुद ग़ारत हो"[3]

इस घटना का एक और टुकड़ा इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत किया है। वह कहते हैं कि जब आयत وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ उतरी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पुकार लगाई। यह पुकार आम भी थी और ख़ास

---

2) अरब में रिवाज था कि दुश्मन के आक्रमण की सूचना देने के लिए किसी ऊंची जगह पर चढ़ कर इन्हीं शब्दों से पुकारते थे

3) बुख़ारी 2/702,734 तथा मुस्लिम 1/114

भी। आपने कहा, ऐ कुरैश के लोगों! अपने आप को जहन्नम से बचाओ। ऐ बनी काब! अपने आप को जहन्नम से बचाओ, ऐ मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा! अपने आप को जहन्नम से बचाओ क्योंकि मैं तुम लोगों को अल्लाह (की पकड़) से (बचाने का) कुछ भी अधिकार नहीं रखता, अलबत्ता तुम लोगों से वंश और रिश्तेदारी के ताल्लुक़ात हैं, जिन्हें मैं बाक़ी और तर व ताज़ा रखने की कोशिश करूंगा।[4]

यह आवाज़ ज़बरदस्त तब्लीग़ थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सबसे क़रीब के लोगों पर स्पष्ट कर दिया था कि अब रिसालत की तस्दीक़ पर ही ताल्लुक़ात बन बिगड़ सकते हैं और जिस नस्ली और क़बीलेवार पक्षपात पर अरब क़ायम है वह अल्लाह के इस डरावे की गर्मी में पिघलकर ख़त्म हो चुकी है।

हक़ का खुले आम एलान और मुश्रिकों की प्रतिक्रिया

इस आवाज़ की गूंज अभी मक्के ही के आस-पास सुनाई दे रही थी कि अल्लाह का एक और हुक्म आया----

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

"आपको जो हुक्म मिला है उसे खोल कर बयान कर दीजिए और मुश्रिकों से रूख फेर लीजिए।" (15:94)

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शिरक की व्यर्थ की बातों का परदा चाक करना और बुतों की सच्चाई और उनके मूल्य को स्पष्ट करना शुरू कर दिया। आप मिसालें दे-देकर समझाते कि ये कितने विवश और अक्षम हैं और दलीलों से स्पष्ट करते कि जो आदमी इन्हें पूजता है और उनको अपने और अल्लाह के बीच वसीला बनाता है, वह कितनी खुली हुई गुमराही में है।

---

4) मुस्लिम 1/114 तथा बुख़ारी 1/385

मक्का, एक ऐसी आवाज़ सुन कर जिसमें मुश्रिकों और बुतपरस्तों को गुमराह कहा गया था, गुस्से से फट पड़ा और भारी ग़म व गुस्सा दिखाने लगा, मानो बिजली की कड़क थी जिसने शान्तिमय वातावरण को हिला कर रख दिया था, इसीलिए कुरैश इस अचानक फट पड़ने वाली क्रान्ति की जड़ काटने के लिए उठ खड़े हुए कि इससे पुश्तैनी रस्म व रिवाज का सफ़ाया हुआ चाहता था।

कुरैश उठ पड़े, क्योंकि वह जानते थे कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के अल्लाह मानने से इंकार और रिसालत और आख़िरत पर ईमान का मतलब यह है कि अपने आप को पूरे तौर पर इस रिसालत के हवाले कर दिया जाए और उसकी पूरी तौर पर इताअत की जाए, यानी इस तरह कि दूसरे तो दूर की बात, खुद अपनी जान और अपने माल तक के बारे में कोई इख़्तियार न रहे और इसका मतलब यह था कि मक्का वालों को दीनी रंग में अरबों पर जो बड़ाई और सरदारी प्राप्त थी, उसका सफ़ाया हो जाएगा और अल्लाह और उसके रसूल की मर्ज़ी के मुक़ाबले में उन्हें अपनी मर्ज़ी पर अमल करने का इख़्तियार न रहेगा। यानी निचले वर्ग पर उन्होंने जो जुल्म ढाये थे और सुबह-शाम जिन बुराईयों में लत-पथ रहते थे उससे हाथ खींचना ही पड़ेगा। कुरैश इस मतलब को अच्छी तरह समझ रहे थे, इसलिए उनकी तबियत उस "रूसवाई भरी" हालत को कुबूल करने के लिए तैयार न थी, लेकिन किसी बड़ाई और भलाई को दृष्टि में रख कर नहीं। بَلْ يُرِيدُ الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ "बल्कि इसलिए कि इंसान चाहता है कि आगे भी बुराई करता रहे।" (75:5)

कुरैश यह सब कुछ समझ रहे थे, लेकिन मुश्किल यह थी कि उनके सामने एक ऐसा आदमी था जो सादिक़ (सच्चा) और अमीन (अमानतदार) था, इंसानी मूल्यों और चरित्र-आचरण का ऊंचा नमूना था। और एक लम्बे अर्से से उन्होंने बाप-दादा के इतिहास में इसकी

मिसाल न देखी थी और न सुनी थी आखिर उसके मुक़ाबले में करें तो क्या करें। कुरैश हैरान थे और उन्हें सच में हैरान होना ही चाहिए था।

बड़े सोच-विचार के बाद एक रास्ता समझ में आया कि आपके चचा अबू तालिब के पास जाएं और मांग करें कि वह आप को आपके काम से रोक दें। फिर उन्होंने इस मांग को सच मान कर अमली जामा पहनाने के लिए यह दलील तैयार की कि उनके उपास्यों को छोड़ने के लिए कहना और यह कहना कि ये उपास्य फ़ायदा या नुक़सान पहुंचाने या कुछ करने की ताक़त नहीं रखते, हक़ीक़त में इन उपास्यों की बड़ी तौहीन और बहुत बुरी गाली है और यह हमारे उन बाप-दादों के मूर्ख और गुमराह क़रार देने के भी जैसा है जो इसी दीन पर गुज़र चुके हैं। कुरैश को यही रास्ता समझ में आया और उन्होंने बड़ी तेज़ी से इस पर चलना शुरू कर दिया।

कुरैश का प्रतिनिधि-मण्डल अबू तालिब की सेवा में

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि कुरैशी सरदारों में से कुछ आदमी अबू तालिब के पास गए और बोले, ऐ अबू तालिब! आपके भतीजे ने हमारे आप के खुदाओं को बुरा भला कहा है, हमारे दीन में ऐब निकाले है, हमारी अक़्लों को मूर्खतापूर्ण कहा है और हमारे बाप-दादा को गुमराह क़रार दिया है, इसलिए या तो आप इन्हें इससे रोक दें या हमारे और इनके बीच से हट जाएं, क्योंकि आप भी हमारी ही तरह इनसे अलग दीन (धर्म) पर हैं। हम इनके मामले में आपके लिए भी काफ़ी रहेंगे।

इसके जवाब में अबू तालिब ने नर्म बात कही और रहस्यपूर्ण ढंग अपनाया, चुनांचे वे वापस चले गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने पुराने तरीक़े पर चलते हुए अल्लाह का दीन फैलाने और उसकी तबलीग़ में लगे रहे।[5]

---

5) इब्ने हिशाम 1/265

हाजियों को रोकने के लिए मज्लिसे शूरा

इन्हीं दिनों कुरैश के सामने एक और मुश्किल आ खड़ी हुई। यानी अभी खुल्लम-खुल्ला तब्लीग़ पर कुछ ही महीने बीते थे कि हज का मौसम क़रीब आ गया। कुरैश को मालूम था कि अब अरब के प्रतिनिधि-मंडलों का आना शुरू होगा। इसलिए वह ज़रूरी समझते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कोई ऐसी बात कहें कि जिसकी वजह से अरब वालों के दिलों पर आप की तब्लीग़ का असर न हो। चुनांचे वह इस मामले पर बातचीत के लिए वलीद बिन मुग़ीरह के पास इकट्ठा हुए। वलीद ने कहा, इस बारे में तुम सब लोग एक राय अपना लो कि तुम में आपस में कोई मतभेद नहीं होना चाहिए कि ख़ुद तुम्हारा ही एक आदमी दूसरे आदमी को झुठला दे और एक की बात दूसरे की बात को काट दे। लोगों ने कहा, आप ही कहिए। उसने कहा, नहीं तुम लोग कहो, मैं सुनूंगा। इस पर कुछ लोगों ने कहा, हम कहेंगे, वह काहिन (भविष्य बताने वाला) है। वलीद ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! वह काहिन नहीं है। हमने काहिनों को देखा है। उस आदमी के भीतर न काहिनों जैसी गुनगुनाहट है, न उनके जैसे पद्य और तुकबन्दी।

इस पर लोगों ने कहा, तब हम कहेंगे कि वह पागल है। वलीद ने कहा, वह पागल भी नहीं, हमने पागल भी देखे हैं और उनकी दशा भी। उस व्यक्ति के अंदर न पागलों जैसी दम घुटने की कैफ़ियत (स्थिति) है और न उलटी-सीधी हरकतें हैं और न उन के जैसी बहकी-बहकी बातें।

लोगों ने कहा तब हम कहेंगे कि वह कवि हैं। वलीद ने कहा वह कवि भी नहीं हैं। हमें रजज़, हजज़, क़ुरैज़, मक़्बूज़, मबसूत सारी ही काव्य की क़िस्में मालूम हैं, उसकी बात बहरहाल कविता नहीं है।

लोगों ने कहा, तब हम कहेंगे कि वह जादूगर है वलीद ने कहा, यह आदमी जादूगर भी नहीं। हमने जादूगर और उनका जादू भी देखा है। यह आदमी न तो इनकी तरह झाड़ फूंक करता है, न गिरह लगाता है।

लोगों ने कहा, तब हम क्या कहेंगे? वलीद ने कहा, ख़ुदा की क़सम! इस की बात बड़ी मीठी है, इसकी जड़ मज़बूत है और इसकी शाखा फलदार। तुम जो बात भी कहोगे, लोग उसे झूठ समझेंगे, अलबत्ता उसके बारे में सबसे मुनासिब बात यह कह सकते हो कि वह जादूगर है। उसने ऐसा कलाम पेश किया, जो जादू है। उससे बाप-बेटे, भाई-भाई, शौहर-बीवी और कुंबे-कबीले में फूट पड़ जाती है। आख़िर में लोग इसी तज्वीज़ पर एकमत होकर वहां से विदा हुए।[6]

कुछ रिवायतों में यह तफ़्सील भी आयी है कि जब वलीद ने लोगों के सारे प्रस्ताव को रद्द कर दिया, तो लोगों ने कहा, कि फिर आप ही अपनी बेदाग़ राय पेश कीजिए। इस पर वलीद ने कहा, तनिक सोच लेने दो। इसके बाद वह सोचता रहा, सोचता रहा, यहां तक कि ऊपर ज़िक्र की गयी राय ज़ाहिर की।[7]

इसी मामले में वलीद के बारे में सूरः मुद्दस्सिर की सोलह आयतें (11 से 26 तक) उतरीं, जिनमें से कुछ आयतों के अंदर उसके सोचने का तरीक़ा भी बताा गया है चुनांचे इर्शाद हुआ------

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ نَظَرَ ۝ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝
ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝ فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝ إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝

"उसने सोचा और अंदाज़ा लगाया, वह ग़ारत हो, उसने कैसा अंदाज़ा लगाया, फिर ग़ारत हो उसने कैसा अंदाज़ा लगाया, फिर नज़र दौड़ायी, फिर माथा सुकेड़ा और मुंह बिसोरा, फिर पलटा और घमंड किया, आख़िरकार कहा कि यह निराला जादू है जो पहले से नक़्ल होता आ रहा है। यह सिर्फ़ इंसान का कलाम है।" (74:18-25)

---

6) इब्ने हिशाम 1/271

7) फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन पारा 29/188

बाहर हाल यह बात तय पा चुकी तो इसे अमली जामा पहनाने की कार्यवाही शुरू हुई। मक्का के कुछ कुफ़्फ़ार हज के लिए आने वालों के अलग-अलग रास्तों पर बैठ गए और वहां से हर गुज़रने वाले को आपके ख़तरे से आगाह करते हुए आप के बारे में बहुत सी बातें बताने लगे।[8]

इस काम में सबसे आगे-आगे अबू लहब था। वह हज के दिनों में लोगों के डेरों और उकाज़, मुजन्ना और ज़ुल् मजाज़ के बाज़ारों में आप के पीछे-पीछे लगा रहता। आप अल्लाह के दीन की तब्लीग़ करते और अबू लहब पीछे-पीछे यह कहता कि इसकी बात न मानना, यह झूठा बद-दीन है।[9]

इस दौड़-धूप का नतीजा यह हुआ कि लोग इस हज से अपने घरों को वापस हुए तो उन्हें यह बात मालूम हो चुकी थी कि आपने नबी होने का दावा किया है और यों उनके द्वारा पूरे अ़रब में आपकी चर्चा फैल गयी।

मोर्चा-बन्दी के अलग-अलग तरीक़े

जब क़ुरैश ने देखा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दीन के प्रचार से रोकने की कोशिश सफल नहीं हो रही है, तो एक बार उन्होंने विचार किया और आप की दावत के तोड़ के लिए अलग-अलग तरीक़े अपनाए।, जिनका सार यह है-----

1. हंसी-ठट्ठा, तुच्छ समझना और मज़ाक़ उड़ानाः

इसका मक़सद यह था कि मुसलमानों को बद-दिल करके उनके हौसले तोड़ दिए जाएं। इसके लिए मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ना-मुनासिब तोहमतों और बेहूदा गालियों का निशाना बनाया।

---

8) इब्ने हिशाम 1/271

9) तिरमिज़ी,मुसनद अहमद 3/492 तथा 4/341

चुनांचे वह कभी आपको पागल कहते, जैसे कि इर्शाद है- -

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِىْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ

"उन काफ़िरों ने कहा कि ऐ वह आदमी, जिस पर कुरआन उतरा, तू यक़ीनी तौर पर पागल है।" (15:6)

और कभी आप पर जादूगर और झूठे होने का आरोप लगाते, चुनांचे इर्शाद है---

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ

"उन्हें हैरत है कि खुद उन्ही में से एक डराने वाला आया, और काफ़िर है कि यह जादूगर है झूठा हैं" (38:4)

यह कुफ़्फ़ार आपके आगे पीछे गुस्से में, बदले की भावना लिए हुए और भड़कते हुए मनोभाव से चलते थे। इर्शाद है:

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ

"और जब कुफ़्फ़ार इस कुरआन को सुनते हैं तो आपको ऐसी निगाहों से देखते हैं मानो आपके क़दम उखाड़ देंगे। और कहते हैं कि वह निश्चय ही पागल है।" (68:51)

और जब आप किसी जगह बैठे होते और आप के आस-पास कमज़ोर और मज़्लूम सहाबा किराम रज़ि० मौजूद होते तो उन्हें देख कर मुश्रिक मज़ाक करते हुए कहते— اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا "अच्छा, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने हमारे दर्मियान से एहसान फ़रमाया है?" (6:53)

जवाब में अल्लाह का इर्शाद है----- اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ "क्या अल्लाह शुक्र-गुज़ारों को सब से ज़्यादा नहीं जानता?" (6:53)

आम तौर पर मुश्रिकों की स्थिति वही थी जिसका चित्र नीचे की आयतों में खींचा गया है।

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ○ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ○
وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ○ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ○
وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ○

"जो मुजिरम थे वह ईमान लाने वालों का मज़ाक (हंसी) उड़ाते थे। और जब उन के पास से गुज़रते थे तो आंखें मारते थे और जब अपने घरों को पलटते तो मज़ा लेते हुए पलटते थे और जब उन्हें देखते तो कहते कि यही गुमराह हैं, हालांकि वे उन पर निगरां बना कर नहीं भेजे गये थे।" (83:29:33)

2. मोर्चा-बन्दी की दूसरी शक्ल

आपकी शिक्षाओं को बिगाड़ना शक व संदेह पैदा करना, झूठा प्रचार करना, शिक्षाओं से लेकर व्यक्ति तक को व्यर्थ की आपत्तियों का निशाना बनाना और यह सब इस ज़्यादती के साथ करना कि जनता को आप की दावत व तब्लीग़ पर विचार करने का अवसर ही न मिल सके। चुनांचे ये मुश्रिक कुरआन के बारे में कहते थे---

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا

"ये पहलों की कहानियां है, जिन्हें आपने लिखवा लिया है अब यह आप पर सुबह व शाम तिलावत किये जाते हैं।" (25:5)

إِنْ هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ

"यह सिर्फ़ झूठ है। जिसे इसने गढ़ लिया है और कुछ दूसरे लोगों ने इस पर इसकी मदद की है।" (25:4)

मुश्रिक यह भी कहते थे कि---- إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ

"यह (कुरआन) तो आप को एक इंसान सिखाता है।" (16:103)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उनकी आपत्ति यह थी----

مَالِهٰذَا الرَّسُوْلِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِىْ فِى الْاَسْوَاقِ

"यह कैसा रसूल है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है।" (25:7)

कुरआन की बहुत सी आयतों में मुश्रिकों का जवाब भी दिया गया है, कहीं एतराज़ नक़ल करके और कहीं नक़ल के बग़ैर।

3. मोर्चा-बन्दी की तीसरी शक्ल

पहलों की घटनाओं और कहानियों से कुरआन का मुक़ाबला करना और लोगों को उसी में उलझाए रखना और फंसाए रखना। चुनांचे नज़्र बिन हारिस की घटना है कि उसने एक बार कुरैश से कहा, 'कुरैश के लोगो! खुदा की क़सम, तुम पर मुसीबत आ पड़ी है और तुम लोग अब तक उसका कोई तोड़ नहीं ला सके। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम में जवान थे, तो तुम्हारे सबसे पसंदीदा आदमी थे, सबसे ज़्यादा सच्चे और सब से बढ़कर अमानतदार थे। अब जबकि उनकी कनपटियों पर सफ़ेदी दिखाई पड़ने को है (यानी अधेड़ हो चले हैं) और वह तुम्हारे पास कुछ बातें लेकर आए हैं तो तुम कहते हो कि वह जादूगर हैं। खुदा की क़सम! वह जादूगर नहीं हैं। हमने जादूगर देखे है। उनकी झाड़-फूंक और गिरहबंदी भी देखी है और तुम लोग कहते हो, ये काहिन हैं, नहीं, खुदा की क़सम! वह काहिन भी नहीं हैं। हमने काहिन भी देखे हैं, उनकी उलटी-सीधी हरकतें भी देखी हैं और उनकी जुम्ले-बाज़ियां भी सुनी हैं। तुम लोग कहते हो, वह कवि है, नहीं, खुदा की क़सम! वह कवि भी नहीं है हमने पद्य भी सुने हैं और उसकी सारी क़िस्में हजज़, रजज़ आदि सुने हैं, तुम लोग कहते हो, वह पागल हैं, नहीं

ख़ुदा की क़सम! वह पागल भी नहीं हैं। हमने पागलपन भी देखा है यहां न इस तरह की घुटन है न ऐसी बहकी-बहकी बातें हैं, न उनके जैसी उलटी-सीधी बातें। क़ुरैश के लोगो! सोचो, ख़ुदा की क़सम! तुम पर ज़बरदस्त आफ़त आ गयी है।

इसके बाद नज़्र बिन हारिस हियरा गया। वहां बादशाहों की घटनाएं और रूस्तम और इस्फ़ंदयार के क़िस्से सीखे। फिर वापस आया तो जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी जगह बैठ कर अल्लाह की बातें करते और उसकी पकड़ से लोगों को डराते तो आप के बाद यह आदमी वहां पहुंच जाता और कहता कि ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद की बातें मुझ से बेहतर नहीं हैं। इसके बाद वह फ़ारस के बादशाहों और रुस्तम व इस्फ़न्दयार के क़िस्से सुनाता, फिर कहता कि आख़िर किस बुनियाद पर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बात मुझ से बेहतर है?[10]

इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से यह भी मालूम होता है कि नज़्र ने कुछ लौंडियां ख़रीद रखी थीं। और जब वह किसी आदमी के बारे में सुनता कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर झुकाव रखता है तो उस पर एक लौंडी छोड़ देता, जो उसे खिलाती-पिलाती और गाने सुनाती, यहां तक कि इस्लाम की तरफ़ उसका झुकाव बाक़ी न रह जाता। इसी सिलसिले में अल्लाह का यह इर्शाद आया।[11]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

"कुछ लोग ऐसे हैं जो खेल की बात ख़रीदते हैं ताकि अल्लाह की राह से भटका दें।" (31:6)

10) इब्ने हिशाम 1/299-300,358 तथा मुख़्तसरुस्सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 117-118

11) फ़तहुल-क़दीर लिश-शौकानी 4/236 तथा अन्य तफ़सीर की किताबें

4. मोचा-बन्दी की चौथी शक्ल

सौदे-बाज़ियां, जिनके ज़रिए मुश्रिकों की यह कोशिश थी कि इस्लाम और जाहिलियत दोनों बीच रास्ते में एक दूसरे से जा मिलें। यानी कुछ लो और कुछ दो के सिद्धान्त पर अपनी कुछ बातें मुश्रिक छोड़ दें और कुछ बातें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छोड़ दें। क़ुरआन में इसी के बारे में आया है----

وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ

"वे चाहते हैं कि आप ढीले पड़ जाएं, तो वे भी ढीले पड़ जाएं।"

चुनांचे इब्ने जरीर और तबरानी की एक रिवायत है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह तजवीज़ पेश की कि एक साल आप इन माबूदों (उपास्यों) की पूजा किया करें और एक साल वह आपके पालनहार की इबादत किया करेंगे। अ़ब्द बिन हुमैद की एक रिवायत इस तरह है कि मुश्रिकों ने कहा, अगर आप हमारे उपास्यों को अपना लें तो हम भी आपके ख़ुदा की इबादत करेंगे।[12]

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ा-न-ए काबा का तवाफ़ कर रहे थे कि अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा, वलीद बिन मुग़ीरह, उमैया बिन ख़ल्फ़ और आ़स बिन वाइल सहमी आप के सामने आए। ये सब अपनी क़ौम के बड़े लोग थे। बोले, ऐ मुहम्मद! जिसे तुम पूजते हो, उसे हम भी पूजें और जिसे हम पूजते हैं उसे तुम भी पूजो। इस तरह हम और तुम इस काम में शरीक हो जाएं। अब अगर तुम्हारा माबूद हमारे माबूद से बेहतर हुआ तो तुम उससे अपना हिस्सा हासिल कर चुके होगे। और अगर हमारा माबूद तुम्हारे माबूद से बेहतर हुआ तो तुम इस से अपना हिस्सा

---

12) फ़त्हुल-क़दीर लिश-शौकानी 5/508

हासिल कर चुके होगे। इस पर अल्लाह ने पूरी सूरः قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ नाज़िल फ़रमाई जिसमें एलान किया गया कि जिसे तुम लोग पूजते हो, उसे मैं नहीं पूज सकता।[13] और इस फ़ैसला कर देने वाले जवाब के ज़रिए उनकी हंसी मज़ाक़ वाली बातों की जड़ काट दी गयी। रिवायतों में मतभेद शायद इसलिए है कि इस सौदे-बाज़ी की कोशिश बार बार की गई।

ज़ुल्म और ज़्यादती

सन् 04 नबूवत में जब पहली बार इस्लामी दावत सबके सामने आई तो मुश्रिकों ने उसे दबाने के लिए वे कार्यवहियां कीं जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। ये कार्यवहियां थोड़ी-थोड़ी और एक-एक करके अमल में लाई गई और सप्ताहों, बल्कि महीनों मुश्रिकों ने इससे आगे क़दम नहीं बढ़ाया और ज़ुल्म व ज़्यादती शुरू नहीं की, लेकिन जब देखा कि ये कार्यवहियां इस्लामी दावत की राह रोकने में असरदार साबित नहीं हो रही हैं तो एक बार फिर जमा हुए और क़ुरैश के 25 सरदारों की एक कमेटी बनाई जिसका सरदार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चचा अबू लहब था। इस कमेटी ने आपसी सोच-विचार और सलाह के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० के ख़िलाफ़ एक निर्णायक प्रस्ताव पास किया यानी यह तय किया कि इस्लाम के विरोध, इस्लाम के पैग़म्बर को कष्ट पहुंचाने और इस्लाम लाने वालों को तरह-तरह के ज़ुल्म व सितम और मार-पीट का निशाना बनाने में कोई कसर न उठा रखी जाए।[14]

मुश्रिकों ने यह प्रस्ताव पास करके उसे अमली जामा पहनाने का पक्का इरादा किया। मुसलमानों और ख़ास कर कमज़ोर मुसलमानों की

13) इब्ने हिशाम 1/362

14) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/59-60

दृष्टि से तो यह काम बहुत आसान था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दृष्टि से बड़ी मुश्किलें थीं। आप निजी तौर पर रौब और दबदबे वाले और अद्वितीय व्यक्तित्व के मालिक थे। दोस्त-दुश्मन भी आप को आदर की दृष्टि से देखते थे। आप जैसे व्यक्तित्व का सामना बड़े आदर सम्मान ही से किया जा सकता था और आपके विरूद्ध किसी नीच और गिरी हुई हरकत की जुर्रत कोई ज़लील और मूर्ख ही कर सकता था। इस ज़ाती बड़ाई के अलावा आप को अबू तालिब की सहायता व सुरक्षा भी हासिल थी और अबू तालिब मक्के के उन गिने-चुने लोगों में से थे जो अपनी निजी और सामूहिक दोनों हैसियतों से इतने महान थे कि कोई व्यक्ति उनका वचन तोड़ने और उनके परिवार पर हाथ डालने का साहस नहीं कर सकता था। इस स्थिति ने कुरैश को बड़े दुख, परेशानी और संघर्ष से दोचार कर रखा था, पर प्रश्न यह है कि जो दावत उनकी धार्मिक अगुवाई और सांसरिक सरदारी की जड़ काट देना चाहती थी, आखिर उस पर इतना लम्बा सब्र कब तक, आख़िर में मुश्रिकों ने अबू लहब की सरदारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर अन्याय करना और अत्याचार करना शुरू कर दिया। सच तो यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में अबू लहब का दृष्टिकोण पहले दिन से ही यही था, जबकि अभी कुरैश ने इस तरह की बात अभी सोची ही नहीं थी। उसने बनू हाशिम की मज्लिस में जो कुछ किया फिर सफ़ा पर्वत पर जो हरकत की, उसका ज़िक्र पिछले पृष्ठों में आ चुका है। कुछ रिवायतों में इसका भी ज़िक्र है कि उसने सफ़ा पर्वत पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिए एक पत्थर भी उठाया था।[15]

नबी बनाए जाने से पहले अबू लहब ने अपने दो बेटों उत्बा और उतैबा की शादी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियों रुकैया

15) तिरमिज़ी

और उम्मे कुलसूम रज़ि० से की थी, लेकिन नबी बनाए जाने के बाद उसने बड़ी सख़्ती और कड़ुवेपन के साथ इन दोनों को तलाक़ दिला दी।[16]

इसी तरह जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दूसरे बेटे अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल हुआ तो अबू लहब को इतनी ख़ुशी हुई कि वह दौड़ता हुआ अपने साथियों के पास पहुंचा और उन्हें यह 'ख़ुशख़बरी' सुनाई कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबतर (नस्ल कटे हुए) हो गए हैं।[17]

हम यह भी ज़िक्र कर चुके हैं कि हज के दिनों में अबू लहब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाने के लिए बाज़ारों और मीटिंगों में आपके पीछे-पीछे लगा रहता था। तारिक़ बिन अब्दुल्लाह मुहारबी की रिवायत से मालूम होता है कि यह आदमी झुठलाने पर ही बस नहीं करता था, बल्कि पत्थर भी मारता रहता था, जिससे आप की एड़ियां ख़ून में सन जाती थीं।[18]

अबू लहब की बीवी उम्मे जमील, जिसका नाम अरवा था और जो हर्ब बिन उमैया की बेटी और अबू सुफ़ियान की बहन थी, वह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुश्मनी में अपने शौहर से पीछे न थी, चुनांचे वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते में और दरवाज़े पर रात को कांटे डाल दिया करती थी, अच्छी-भली बद-ज़ुबान और फ़सादी (झगड़ालू) भी थी। चुनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरूद्ध बद-ज़ुबानी करना, लम्बी-चौड़ी झूठी बातों और आरोपों से काम लेना, फ़ित्ने की आग भड़काना और भयानक लड़ाई को छेड़े रखना

16) फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन 30/282, तफ़हीमुल-क़ुरआन 6/522

17) तफ़हीमुल-क़ुरआन 6/490

18) तिरमिज़ी

उसकी आदत थी, इसलिए कुरआन ने इसको حَمَّالَةَ الْحَطَبِ (लकड़ी ढोने वाली) की उपाधि (लक़ब) दी।

जब उसे मालूम हुआ कि उसकी और उसके पति की निन्दा में कुरआन उतरा है तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खोजती हुई आयी। आप ख़ा-न-ए काबा के पास मस्जिदे हराम में तश्रीफ़ रखते थे। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० भी साथ थे। यह मुट्ठी भर पत्थर लिए हुए थी। सामने खड़ी हुई तो अल्लाह ने उसकी निगाह पकड़ ली और वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न देख सकी, सिर्फ़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को देख रही थी। उसने सामने पहुंचते ही सवाल किया, अबू बक्र! तुम्हारा साथी कहां है? मुझे मालूम हुआ है कि वह मेरी बुराई करता है। खुदा की क़सम! अगर मैं उसे पा गई तो उसके मुंह पर यह पत्थर दे मारूंगी। देखो, खुदा की क़सम! मैं भी शायरा (कवियित्री) हूं, फिर उसने यह पद्य सुनाया—

مُذَمَّمًا عَصَيْنَا[19] وَأَمْرَهُ أَبَيْنَا وَدِينَهُ قَلَيْنَا

हमने निन्दा करने वालों की बात न मानी, उसकी बात को न अपनाया और उसके दीन को घृणा से छोड़ दिया।

इसके बाद वापस चली गयी। अबू बक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या उसने आपको देखा नहीं? आपने फ़रमाया, नहीं। उसने मुझे नहीं देखा, अल्लाह ने उसकी निगाह पकड़ ली थी।[20]

अबू बक्र बज़्ज़ार ने भी यह घटना बयान की है और इसमें इतनी बढ़ौत्तरी है कि जब वह अबू बक्र रज़ि० के पास खड़ी हुई थी तो उसने

19) मुश्रिकीन जल कर नबी (सल्ल०) को मुहम्मद के बजाय मुज़म्मम कहते थे जिस का अर्थ मुहम्मद के अर्थ का उलटा है। मुहम्मद: वह व्यक्ति जिसकी प्रशंसा की जाए। मुज़म्मम: वह व्यक्ति जिसकी बुराई की जाए

20) इब्ने हिशाम 1/335-336

यह भी कहा, अबू बक्र! तुम्हारे साथी ने हमारी बुराई की है। अबू बक्र रज़ि० ने कहा, नहीं, इस इमारत के रब की क़सम! न वह पद्य कहते हैं, न उसे मुख पर लाते हैं। उसने कहा, तुम सच कहते हो।

अबू लहब इसके बावजूद ये सारी हरकतें कर रहा था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चचा और पड़ोसी था। उसका घर आपके घर से मिला हुआ था। इसी तरह आप के दूसरे पड़ोसी भी आपको घर के अंदर सताते थे।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जो गिरोह घर के भीतर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट दिया करता था, वह यह था, अबू लहब, हकम बिन अबिल-आ़स बिन उमैया, उक़्बा बिन अबी मुईत, अ़दी बिन हमरा सक़्फ़ी, इब्नुल-अस्दा हुज़ली, यह सब के सब आप के पड़ोसी थे और इनमें से हकम बिन अबिल-आ़स[21] के अ़लावा कोई भी मुसलमान न हुआ। इनके सताने का तरीक़ा यह था कि जब आप नमाज़ पढ़ते तो कोई आदमी बकरी की बच्चादानी इस तरह टिका कर फेंकता कि वह ठीक आप के ऊपर गिरती। चूल्हे पर हांडी चढ़ाई जाती तो बच्चादानी इस तरह फेंकते कि सीधे हांडी में जा गिरती। आपने मजबूर होकर एक घरौंदा बना लिया ताकि नमाज़ पढ़ते हुए इनसे बच सकें।

बहरहाल जब आप पर यह गन्दगी फेंकी जाती तो आप उसे लकड़ी पर लेकर निकलते और दरवाज़े पर खड़े होकर फ़रमाते, ऐ बनी अ़ब्दे मुनाफ़! यह कैसा पड़ोस है? फिर उसे रास्ते में डाल देते।[22]

उक़्बा बिन अबी मुईत अपने दुर्भाग्यता और दुष्टता में और बढ़ा हुआ था। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूअद रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैतुल्लाह के पास

21) यह उमवी ख़लीफ़ा मरवान बिन हकम के पिता हैं।

22) इब्ने हिशाम1/416

नमाज़ पढ़ रहे थे और अबू जहल और उसके कुछ साथी बैठे हुए थे कि इतने में किसी ने, किसी से कहा, कौन है जो बनी फ़्लां के ऊंट की ओझड़ी लाए और जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दा करें तो उनकी पीठ पर डाल दे। इस पर क़ौम का सबसे बदबख़्त आदमी—उक़बा बिन अबी मुईत[23]——उठा और ओझ लाकर इन्तिज़ार करने लगा। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में तशरीफ़ ले गए तो उसे आप की पीठ पर दोनों कंधों के दर्मियान डाल दिया। मैं सारा माजरा देख रहा था। मगर कुछ कर नहीं सकता था काश, मेरे अंदर बचाने की ताक़त होती।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि इसके बाद वह हंसी के मारे एक दूसरे पर गिरने लगे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में ही पड़े रहे। सर न उठाया, यहां तक कि फ़ातिमा रज़ि० आईं और आप की पीठ से ओझ हटा कर फेंकी, तब आपने सर उठाया, फिर तीन बार फ़रमाया, اَللّٰهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ "ऐ अल्लाह! तू क़ुरैश को पकड़ ले।" जब आपने बद-दुआ की तो उन पर बहुत बोझ हुआ, क्योंकि उनका अक़ीदा था कि इस शहर में दुआएँ क़ुबूल की जाती हैं। इसके बाद आप ने नाम ले-लेकर बद-दुआ की, ऐ अल्लाह! अबू जहल को पकड़ ले और उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, उमैया बिन ख़ल्फ़ और उक़्बा बिन अबी मुईत को पकड़ ले—

उन्होंने सातवें का नाम भी गिनाया, लेकिन रिवायत करने वाले को याद न रहा—— इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, मैंने देखा कि जिन लोगों के नाम अल्लाह

---

23) बुख़ारी ही की एक दूसरी हदीस में इसकी तफ़सील आ गई है। देखिए 1/543

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गिन-गिन कर लिए थे सब के सब बद्र के कुएं में क़त्ल किए हुए पड़े हुए थे।[24]

उमैया बिन ख़ल्फ़ का तरीक़ा था कि वह जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखता तो लान-तान (भर्त्सना) करता, उसी के बारे में यह आयत उतरी---وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ (104:1) "हर लान-तान और बुराइयां करने वाले के लिए तबाही है।" इब्ने हिशाम कहते है, कि हुमज़ा वह व्यक्ति है जो खुल्लम-खुल्ला गालियां बके और आंखें टेढ़ी करके इशारे करे। और लुमज़ा वह आदमी है जो पीठ पीछे लोगों की बुराइयां करे और उन्हें कष्ट दे।[25]

उमैया का भाई उबई बिन ख़ल्फ़, उक़्बा बिन अबी मुईत का गहरा दोस्त था। एक बार उक़्बा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठ कर कुछ सुना। उबई को मालूम हुआ तो उसने उक़्बा को सख़्त-सुस्त कहा, गुस्सा किया और उससे मांग की कि वह जाकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह पर थूक आए, आख़िर उक़्बा ने ऐसा ही किया। ख़ुद उबई बिन ख़ल्फ़ ने एक बार एक पुरानी हड्डी लाकर तोड़ी और हवा में फूंक कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ उड़ा दी।[26]

अख़नस बिन शुरैक़ सक़्फ़ी भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सताने वालों में से था। कुरआन में उसकी नौ विशेषताएं (बुरी आदतें) बयान की गई हैं जिससे उसके चरित्र का अंदाज़ा होता है। इर्शाद है----

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيمٍ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ

24) बुख़ारी किताबुल-वुज़ू 1/37
25) इब्ने हिशाम 1/356-357
26) इब्ने हिशाम 1/361

"तुम बात न मानो किसी क़सम खाने वाले ज़लील की, जो लान-तान करता है, चुग़लियां खाता है, भलाई से रोकता है, हद दर्जा ज़ालिम है, बुरे काम करने वाला और अन्यायी है और इसके बाद बद-असल भी है।" (68:10-13)

अबू जहल कभी-कभी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर कुरआन सुनता था, लेकिन बस सुनता ही था। ईमान व इताअत और अदब व डर नहीं अपनाता था। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी बात से कष्ट पहुंचाता और अल्लाह की राह से रोकता था। फिर अपनी इस हरकत और बुराई पर नाज़ और गर्व करता हुआ जाता था। मानो उसने बड़ाई लायक़ कोई कारनामा अंजाम दिया है। कुरआन की ये आयतें उसी के बारे में उतरीं।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ... "न उसने सदक़ा दिया, न नमाज़ पढ़ी बल्कि झुठलाया और पीठ फेरी। फिर वह अकड़ता हुआ अपने घर वालों के पास गया, तेरे ख़ूब लायक़ है, ख़ूब लायक़ है।"[27] (75:31)

उस आदमी ने पहले दिन जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, तो उसी दिन से आपको नमाज़ से रोकता रहा। एक बार नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि उसका गुज़र हुआ। देखते ही बोला, मुहम्मद! क्या मैंने तुझे इससे मना नहीं किया था? साथ ही धमकी भी दी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी डांट कर सख़्ती से जवाब दिया, इस पर वह कहने लगा, 'ऐ मुहम्मद! मुझे काहे की धमकी दे रहे हो, देखो, अल्लाह की क़सम! इस घाटी (मक्का) में मेरी महफ़िल सब

27) फ़ी ज़िलालिल-कुरआन 29/312

से बड़ी है।' इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ[28] "अच्छा, तो वह बुलाए अपनी महिफ़ल को हम भी सज़ा के फ़रिश्तों को बुलाए देते हैं।"

एक रिवायत में ज़िक्र है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसका गिरेबान गले के पास से पकड़ लिया और झिंझोड़ते हुए फ़रमाया--- أَوْلَى لَكَ فَأَوْلَى ثُمَّ أَوْلَى لَكَ فَأَوْلَى "तेरे लिए बहुत ही मुनासिब है, तेरे लिए बहुत ही मुनासिब है।" (75:34-35)

इस पर अल्लाह का यह दुश्मन कहने लगा, ऐ मुहम्मद: मुझे धमकी दे रहे हो। ख़ुदा की क़सम! तुम और तुम्हारा पालनहार मेरा कुछ नहीं कर सकते। मैं मक्का की दोनों पहाड़ियों के दर्मियान चलने-फिरने वालों में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित हूं।'[29]

बहरहाल इस डांट के बावजूद अबू जहल अपनी मूर्खता से रूकने वाला न था, बल्कि उसकी भाग्यहीनता में कुछ और वृद्धि ही हो गई। चुनांचे सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार क़ुरैश के सरदारों से) अबू जहल ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप लोगों के सामने अपने चेहरे पर धूल मल लेता है? जवाब दिया गया, हां। उसने कहा लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम! अगर मैंने (इस हालत में) उसे देख लिया तो उसकी गरदन रौंद दूंगा और उसका चेहरा मिट्टी पर रगड़ दूंगा। इसके बाद उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया और इस गर्व के साथ चला कि आप की गरदन रौंद देगा, लेकिन लोगों ने अचानक क्या देखा कि वह एड़ी के बल पलट रहा है और दोनों हाथ से बचाव कर रहा है। लोगों ने कहा, अबुल हकम! तुम्हें क्या हुआ?

---

28) फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन 30/208
29) फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन 29/312

उसने कहा, मेरे और उसके बीच आग की एक खाई है, हौलनाकियां (दहशत) हैं और पर हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उसका एक-एक अंग उचक लेते।[30]

ज़ुल्म व सितम की यह कार्यवाहियां नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हो रही थीं और आम और ख़ास लोगों के दिलों में आप के अद्वितीय व्यक्तित्व का जो आदर और प्रतिष्ठा थी और आप को मक्का के सबसे आदरणीय और महान इंसान अबू तालिब का समर्थन और सुरक्षा प्राप्त थी इस के बावजूद हो रही थी। बाक़ी रहीं वह कार्यवाहियां जो मुसलमानों और ख़ास तौर से उनमें से भी कमज़ोर लोगों को कष्ट पहुंचाने के लिए की जा रही थीं, तो वे कुछ ज़्यादा ही संगीन और कटु थीं। हर क़बीला अपने मुसलमान होने वाले लोगों को तरह-तरह की सज़ाएं दे रहा था और जिस आदमी का कोई क़बीला न था, उस पर गुंडों और सरदारों ने ऐसे-ऐसे ज़ुल्म व सितम शुरू कर दिए थे जिन्हें सुनकर मज़बूत इंसान का दिल भी बेचैनी से तड़पने लगता है।

अबू जहल जब किसी प्रतिष्ठित और सशक्त व्यक्ति के मुसलमान होने की ख़बर सुनता, तो उसे बुरा भला कहता, ज़लील व रुसवा करता और माल व वैभव को सख़्त घाटे से दोचार करने की धमकियां देता और अगर कोई कमज़ोर आदमी मुसलमान होता तो उसे मारता और दूसरों को भी भड़काता।[31]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० का चचा उन्हें खजूर की चटाई में लपेट कर नीचे से धुआं देता।[32]

---

30) मुस्लिम
31) इब्ने हिशाम 1/32
32) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/57

हज़रत मुसअ़ब बिन उ़मैर रज़ि० की मां को उनके इस्लाम लाने की जानकारी हुई तो उनका दाना-पानी बंद कर दिया और उन्हें घर से निकाल दिया। यह बड़े नाज़ व नेमत में पले थे। हालात जब ज़्यादा ख़राब हुए तो खाल इस तरह उधड़ गई जैसे सांप केंचुली छोड़ देता है।[33]

हज़रत बिलाल रज़ि० उमैया बिन ख़लफ़ जुम्ही के दास थे। उमैया उनकी गरदन में रस्सी डाल कर लड़कों को दे देता था और वह मक्का के पहाड़ों में घुमाते फिरते थे, यहां तक कि गर्दन पर रस्सी का निशान पड़ जाता था। खुद उमैया भी उन्हें बांध कर डंडे से मारता था और चिलचिलाती धूप में ज़बरदस्ती बिठाए रखता था, खाना पानी भी न देता, बल्कि भूखा-प्यासा रखता था और इससे कहीं बढ़कर यह ज़ुल्म करता था कि जब दोपहर की गर्मी तेज़ी पर होती तो मक्का के पथरीले कंकड़ों पर लिटा कर सीने पर भारी पत्थर रखवा देता, फिर कहता, ख़ुदा की क़सम! तू इसी तरह पड़ा रहेगा, यहां तक कि मर जाए या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ़्र करे। हज़रत बिलाल रज़ि० इस हालत में भी फ़रमाते: أَحَدٌ أَحَدٌ (अल्लाह एक है) एक दिन यही कार्यवाही की जा रही थी कि अबू बक्र रज़ि० का गुज़र हुआ। उन्होंने हज़रत बिलाल रज़ि० को एक काले गुलाम के बदले और कहा जाता है कि दो सौ दिरहम (735 ग्राम चांदी) या 280 दिरहम (एक किलो से ज़्यादा चांदी) के बदले ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।[34]

हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि० बनू मख़्ज़ूम के दास थे। उन्होंने और उनके मां बाप ने इस्लाम क़ुबूल किया, तो उन पर क़ियामत टूट पड़ी। मुश्रिकों में अबू जहल पेश-पेश था। कड़ी धूप के वक़्त उन्हें पथरीली ज़मीन पर ले जाकर उसकी तपन से सज़ा देते। एक बार उन्हें इसी तरह सज़ा दी जा रही थी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

---

33) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/58, तलक़ीहु फ़ुहूमि अहलिल-असर

34) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/57, तलक़ीहु फ़ुहूम 61, इब्ने हिशाम 1/317-318

गुज़र हुआ। आपने फ़रमाया, 'आले यासिर! सब्र करना, तुम्हारा ठिकाना जन्नत है।' आखिर यासिर ज़ुल्म की ताब न लाकर वफ़ात पा गए और सुमैया रज़ि० जो हज़रत अम्मार रज़ि० की मां थीं, उनकी शर्मगाह में अबू जहल ने नेज़ा मारा और वह दम तोड़ गयीं। यह इस्लाम में पहली शहीद (औरत) हैं। हज़रत अम्मार रज़ि० पर सख़्ती का सिलसिला जारी रहा उन्हें कभी धूप में तपाया जाता, तो कभी उनके सीने पर लाल पत्थर रख दिया जाता और कभी पानी में डुबोया जाता। उनसे मुश्रिक कहते थे कि जब तक तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली न दोगे या लात व उज़्ज़ा के बारे में ख़ैर (भलाई) का कलिमा (बात) न कहोगे, हम तुम्हें छोड़ नहीं सकते। हज़रत अम्मार रज़ि० ने मजबूरी में उनकी बात मान ली। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास रोते और उज़्र (विवशता) पेश करते हुए तशरीफ़ लाए, इस पर यह आयत उतरी।

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ إِيْمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيْمَانِ

"जिसने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया (उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और बड़ा अज़ाब है) लेकिन जिसे मजबूर किया जाए और उसका दिल ईमान से सन्तुष्ट हो, (उसकी कोई पकड़ नहीं)।"[35] (16:106)

हज़रत फकीहा जिन का नाम अफलह था बनी अबदुद्दार के दास थे इन के मालिक इन का पाँव रस्सी से बांध कर उन्हें जमीन पर घसीटते थे।[36]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त, क़बीला ख़ुज़ाआ की एक औरत उम्मे अंमार के दास थे, मुश्रिक उन्हें तरह-तरह की सज़ाएं देते थे, उनके सर के बाल नोचते थे और सख़्ती से गरदन मरोड़ते थे। उन्हें कई बार

35) इब्ने हिशाम 1/319-320, फ़िक़हुस्सीरा मु० ग़ज़ाली 82, औफ़ी ने इब्ने अब्बास से इसका कुछ भाग नक़ल किया हैं देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर उपरोक्त आयत के अन्तरगत
36) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/57, एजाजुत-तन्ज़ील 53 के हवाले से

दहकते हुए अंगारों पर लिटा कर ऊपर से पत्थर रख दिया कि वह उठ न सकें।[37]

ज़िन्नीरा[38] और नहदिया और उनकी बेटी और उम्मे अबीस रज़ि० ये सब लौंडियां थीं, इन्होंने इस्लाम कुबूल किया और मुश्रिकों के हाथों इसी तरह की संगीन सज़ाओं से दो चार हुईं, जिनके कुछ नमूने ज़िक्र किए जा चुके हैं। क़बीला बनी अदी के एक ख़ानदान बनी मोमिल की एक लौंडी मुसलमान हुई तो उन्हें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब------जो बनी अदी से ताल्लुक़ रखते थे और अभी मुसलमान नहीं हुए थे------इतना मारते थे कि मारते-मारते खुद थक जाते थे और इसके बाद कहते थे कि मैंने तुझे (किसी मुरव्वत की वजह से नहीं बल्कि सिर्फ़) थक जाने की वजह से छोड़ा है।[39]

आख़िरकार हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने हज़रत बिलाल रज़ि० और हज़रत आमिर बिन फुहैरः रज़ि० की तरह इन लौंडियों को भी ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।[40]

मुश्रिकों ने सज़ा की एक शक्ल यह भी अपना रखी थी कि किसी सहाबी को ऊंट और गाय की कच्ची खाल में लपेट कर धूप में डाल देते थे और किसी को लोहे की ज़िरह पहना कर जलते हुए पत्थर पर लिटा देते थे।[41] हक़ीक़त में अल्लाह की राह में ज़ुल्म और ज़्यादती का निशाना बनने वालों की सूची बड़ी लम्बी है और बड़ी कष्टप्रद भी। हालत यह थी कि जिस किसी के मुसलमान होने का पता चल जाता था, मुश्रिक उसके पीछे पड़ जाते और ज़ुल्म की इंतिहा कर देते।

37) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/57, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 60

38) ज़िन्नीरा

39) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/57, इब्ने हिशाम 1/319

40) इबने हिशाम 1/318-319

41) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/58

दारे अरक़म

ज़ुल्म की इन ज़्यादतियों के मुक़ाबले हिक्मत का तक़ाज़ा यह था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुसलमानों को कथन और कर्म दोनों तरह इस्लाम ज़ाहिर करने से रोक दें और उनके साथ ख़ुफ़िया तरीक़े पर इकट्ठे हों, क्योंकि अगर आप उनके साथ खुल्लम-खुल्ला इकट्ठा होते तो मुश्रिक आपके नफ़्स की सफ़ाई और किताब व हिक्मत के कार्य में हर तरह से रुकावट डालते, और इस के नतीजे में दोनों फ़रीक़ के बीच टकराव हो सकता था, बल्कि ऐसा वर्ष 4 नबवी में हो भी चुका था जिसका विवरण यह है कि सहाबा किराम घाटियों में इकट्ठे होकर नमाज़ पढ़ा करते थे। एक बार क़ुरैशी कुफ़्फ़ार ने कुछ लोगों को देख लिया तो गाली-गलौच और लड़ाई-झगड़े पर उतर आए, जवाब में हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने एक आदमी को ऐसी चोट मारी कि उसका ख़ून बह पड़ा और यह पहला ख़ून था जो इस्लाम में बहाया गया।[12]

यह बात साफ़ है कि अगर इस तरह का टकराव बार-बार होता और मामला गम्भीर हो जाता तो मुसलमानों के ख़ात्मे की नौबत आ सकती थी, इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यही था कि काम परदे के पीछे से किया जाए। चुनांचे आम सहाबा किराम रज़ि० अपना इस्लाम, अपनी इबादत, अपना प्रचार और अपनी आपस की मीटिंग सब कुछ परदे के पीछे करते थे। अलबत्ता अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तब्लीग़ का काम भी मुश्रिकों के सामने खुल्लम-खुल्ला करते थे और इबादत का काम भी। कोई चीज़ आप को इससे रोक नहीं सकती थी, फिर भी आप मुसलमानों के साथ खुद उनकी मस्लहत (हित) को नज़र में रखते हुए ख़ुफ़िया तौर से जमा होते थे, इधर अरक़म बिन अबिल अरक़म मख़्ज़ूमी का मकान सफ़ा पहाड़ी पर सरकशों की निगाहें

12. इब्ने हिशाम 1/263 मुख़्तसरुस-सीरा (मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब) 60

और उनकी मज्लिसों से दूर अलग-थलग था, इसलिए आप ने नुबूवत के पांचवें साल से उसी मकान को अपनी दावत और मुसलामानों के साथ अपनी मीटिंगों का केन्द्र बना लिया।[48]

हब्शा की पहली हिजरत

जुल्म व सितम का यह सिलसिला नुबूवत के चौथे साल के बीच या आख़िर में शुरू हुआ था और शुरू में मामूली था, मगर हर दिन और हर महीना यह सिलसिला बढ़ता ही गया। यहां तक कि नुबूवत के पांचवें साल का बीच आते-आते अपनी चोटी पर पहुंच गया, यहां तक कि मुसलमानों के लिए मक्का में रहना दूभर हो गया और उन्हें इन बराबर होने वाले जुल्मों से निजात की तदबीर सोचने के लिए मजबूर होना पड़ा। इन्हीं संगीन और तारीक हालात में सूरः कहफ़ उतरी। यह असल में तो मुश्रिकों के पेश किए हुए सवाल के जवाब में थी, लेकिन इसमें जो तीन घटनाएं बयान की गई हैं इन बातों की रोशनी में अल्लाह की ओर से अपने मोमिन बन्दों के लिए भविष्य के बारे में बड़े ख़ूबसूरत इशारे किए थे, चुनांचे कहफ़ वालों की घटनाओं में यह सबक़ मौजूद है कि जब दीन व ईमान ख़तरे में हो तो कुफ़्र व जुल्म से हिजरत के लिए तक़्दीर के भरोसे निकल पड़ना चाहिए। इर्शाद है——

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مِرْفَقًا

"और जब तुम उनसे और अल्लाह के सिवा दूसरे माबूदों से अलग हो गए, तो खोह में शरण ले लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम के लिए तुम्हारी आसानी की चीज़ तुम्हें जुटा देगा।" (18:16)

---

48) मुख़्तसरुस-सीरा (मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब) 60

मूसा और ख़िज़र अलैहि० की घटना से यह बात साबित होती है कि नतीजे हमेशा ज़ाहिरी हालात के मुताबिक़ नहीं होते, बल्कि कभी-कभी ज़ाहिरी हालात के बिल्कुल उलटे होते हैं, इसलिए इस घटना में इस बात की ओर हल्का सा इशारा है कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस वक़्त जो ज़ुल्म व ज़्यादती हो रही है, इसके नतीजे बिल्कुल उलटे-पुलटे निकलेंगे। और अगर ये सरकश मुश्रिक ईमान न लाए तो आगे इन्ही मजबूर, दबाए और कुचले गए मुसलमानों के सामने सर टेक कर अपनी क़िस्मत के फ़ैसले के लिये पेश होंगे।

ज़ुलक़रनैन की घटना में कुछ ख़ास बातों की तरफ़ इशारा है—

1. यह कि ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है,

2. यह कि भलाई और सफलता ईमान ही की राह में है, कुफ़्र की राह में नहीं।

3. यह कि अल्लाह रह-रह कर अपने बंदों में से ऐसे लोगों को खड़ा करता रहता है जो इंतिहाई मजबूर इंसानों को उस दौर के याजूज-माजूज से निजात दिलाते हैं।

4. यह कि अल्लाह के नेक बंदे ही ज़मीन की विरासत के सब से ज़्यादा हक़दार हैं।

फिर सूरः कहफ़ के बाद सूरः ज़ुमर उतरी और उसमें हिजरत की ओर इशारा किया गया और बताया गया कि अल्लाह की ज़मीन तंग नहीं है।—

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ

"जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छाई की उनके लिए अच्छाई है और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है। सब्र करने वालों को उनका बदला बे हिसाब दिया जाएगा।"

(39:10)

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम था कि अस्हमा नज्जाशी हब्श का बादशाह न्यायप्रिय है वहां किसी पर जुल्म नहीं होता। इसलिए आपने मुसलमानों को हुक्म दिया कि वे फ़ित्नों से अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए हब्शा हिजरत कर जाएं। इसके बाद एक तय किए गए प्रोग्राम के मुताबिक़ रजब सन् 05 नबवी में सहाबा किराम के पहले गिरोह ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की। इस गिरोह में बारह मर्द और चार औरतें थीं। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० उनके अमीर थे और उनके साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत रुक़ैया (रज़ि०) भी थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत लूत अलैहि० के बाद यह पहला घराना है जिसने अल्लाह की राह में हिजरत की।[44]

ये लोग रात के अंधेरे में चुपके से निकल कर अपनी नयी मंज़िल की ओर रवाना हुए। चुपके से निकलने का मक़सद यह था कि क़ुरैश को इसका इल्म न हो सके। रुख़ लाल सागर की बन्दरगाह शुऐबा की ओर था। भाग्यवश वहां दो व्यापारिक नावें मौजूद थीं जो उन्हें सकुशल लेकर समुद्र पार हब्शा चली गईं। क़ुरैश को किसी क़दर बाद में उनका जाना मालूम हुआ, फिर भी उन्होंने पीछा किया और तट तक पहुंचे लेकिन सहाबा किराम रज़ि० आगे जा चुके थे, इसलिए नामुराद वापस आए। इधर मुसलमानों ने हब्शा पहुंच कर बड़े चैन का सांस लिया।[45] लेकिन इसी साल रमज़ान शरीफ़ में यह घटना घटी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार हरम शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए, वहां क़ुरैश की बहुत बड़ी भीड़ थी। उनके सरदार और बड़े बड़े लोग जमा थे। आपने

44) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 92-93 ज़ादुल-मआद 1/24, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/61

45) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/61,ज़ादुल-मआद 1/24

एक दम अचानक खड़े होकर सूरः नजम की तिलावत शुरू कर दी। उन कुफ़्फ़ार ने इससे पहले आम तौर से कुरआन सुना न था, क्योंकि कुरआन के शब्दों में उनका हमेशा का तरीक़ा यह था-----

لَا تَسْمَعُوا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ

"इस कुरआन को मत सुनो और इसमें बाधा डालो (उधम मचाओ) ताकि तुम ग़ालिब रहो।" (41:26)

लेकिन जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अचानक इस सूरः की तिलावत शुरू और उनके कानों में एक बयान न हो सकने वाली सुन्दरता, रोचकता और महानता लिए हुए कलामे इलाही की आवाज़ पड़ी तो उन्हें कुछ होश न रहा। सब के कान सुनने को तैयार हो गए, किसी के दिल में और कोई विचार ही न आया, यहां तक कि जब आप ने सूरः के अंत में दिल हिला देने वाली आयतें तिलावत फ़रमा कर अल्लाह का यह हुक्म सुनाया कि-----

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا

"अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसकी इबादत करो।"

(53:62)

और इसके साथ ही सज्दा फ़रमाया तो किसी को अपने आप पर क़ाबू न रहा और सब के सब सज्दे में गिर पड़े। सच तो यह है कि इस मौक़े पर सत्य के रौब व दबदबे ने घमंड करने वालों और मज़ाक उड़ाने वालों की हठधर्मी का परदा चाक कर दिया था, इसलिए उन्हें अपने आप पर क़ाबू न रह गया था और वे बे-इख़्तियार सज्दे में गिर पड़े थे।[46]

---

46) बुख़ारी में इस सजदे की घटना इब्ने मसूद और इब्ने अब्बास (रज़ि०) से संक्षेप में रिवायत किया गया है। देखिए बाबु सजदतिन-नजम, बाबु सुजूदिल-मुस्लिमीन वलमुश्रिकीन 1/146

लेकिन बाद में जब उन्हें एहसास हुआ कि अल्लाह के कलाम के जलाल ने उनकी लगाम मोड़ दी है और वे ठीक वही काम कर बैठे जिसे मिटाने और ख़त्म करने के लिए उन्होंने एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रखा था और उसके साथ ही इस घटना में ग़ैर मौजूद मुश्रिकों ने उन पर हर ओर से निन्दा और मलामत की बौछार शुरू कर दी तो उनके हाथों के तोते उड़ गए और उन्होंने अपनी जान छुड़ाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह झूठ गढ़ा कि आप ने उनके बुतों का ज़िक्र इज़्ज़त व एहतराम से करते हुए यह कहा था कि--

تِلْكَ الْغَرَانِيقُ الْعُلیٰ ، وَإِنَّ شَفَاعَتَهُنَّ لَتُرْتَجٰی

"ये ऊंची किस्म की देवियां हैं और इनकी शफ़ाअत की उम्मीद की जाती है।"

हालांकि यह खुला झूठ था, जो सिर्फ़ इसलिए गढ़ लिया गया था, ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सज्दा करने की जो 'ग़लती' हो गई है, इसके लिए एक 'उचित' विवशता सामने लाई जा सके और ज़ाहिर है कि जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमेशा झूठ गढ़ते थे और आप के ख़िलाफ़ हमेशा मक्कारी और धोखेबाज़ी करते रहे थे, वह अपना दामन बचाने के लिए इस तरह का झूठ क्यों न गढ़ते।[47]

बहरहाल मुश्रिकों के सज्दा करने की इस घटना की ख़बर हब्शा के मुहाजिरों को भी हुई, लेकिन अपनी असल शक्ल से बिल्कुल हट कर यानी उन्हें यह मालूम हुआ कि कुरैश मुसलमान हो गए हैं चुनांचे उन्होंने शव्वाल के महीने में मक्का वापसी की राह ली, लेकिन जब इतने करीब आ गए कि मक्का एक दिन से भी कम दूरी पर रह गया तो हक़ीक़त मालूम हुई। इसके बाद कुछ लोग तो सीधे हब्शा पलट गए। और कुछ

47) जाँच पड़ताल करने वालों ने इस हदीस की जाँच करने के बाद यही नतीजा निकाला है

लोग छिप-छिपा कर या क़ुरैश के किसी आदमी की पनाह लेकर मक्का में दाखिल हुए।[48]

हब्शा की दूसरी हिजरत

इसके बाद इन मुहाजिरों पर ख़ास तौर से और मुसलमानों पर आम तौर से क़ुरैश का ज़ुल्म व सितम और बढ़ गया और उनके ख़ानदान ने उन्हें खूब सताया, क्योंकि क़ुरैश को उनके साथ नज्जाशी के सद्व्यवहार की जो ख़बर मिली थी। उस पर वे बहुत गुस्से में थे। मजबूर होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को फिर हब्शा की हिजरत का मशिवरा दिया, लेकिन यह दूसरी हिजरत पहली हिजरत के मुक़ाबले में अपने दामन में भारी कठिनाइयां लिए हुए थी, क्योंकि अब की बार क़ुरैश पहले ही से चौकन्ना थे और ऐसी कोशिश को नाकाम बनाने का निश्चय किए हुए थे, लेकिन मुसलमान उनसे कहीं ज़्यादा मुस्तैद साबित हुए और अल्लाह ने उनके लिए सफ़र आसान बना दिया। चुनांचे वह क़ुरैश की पकड़ में आने से पहले ही हब्श के बादशाह के पास पहुंच गए।

इस बार कुल 82 या 83 मर्दों ने हिजरत की (हज़रत अ़म्मार की हिजरत में मतभेद है) और अठारह या उन्नीस औरतों ने[49]। अल्लामा मंसूरपुरी ने यक़ीन के साथ औरतों की तायदाद अठारह लिखी है।[50]

हबशा के मुहाजिरों के ख़िलाफ़ क़ुरैश की साज़िश

मुश्रिकों को बड़ा दुख था कि मुसलमान अपनी जान और अपना दीन बचा कर एक शान्ति वाली जगह भाग गए हैं, इसलिए उन्होंने अ़म्र बिन आ़स रज़ि० और अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ को जो गहरी सूझ-बूझ के मालिक थे और अभी मुसलमान नहीं हुए थे दूत बना कर एक अहम

---

48) ज़ादुल-मआद 1/24, 2/44 तथा इब्ने हिशाम 1/364

49) ज़ादुल-मआद 1/24, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/61

50) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/61

सिफ़ारती काम के लिए चुना और इन दोनों को नज्जाशी और बितरीक़ों की ख़िदमत में पेश करने के लिए बेहतरीन तोहफ़े और हदिए देकर हब्श रवाना किया। इन दोनों ने पहले हब्श पहुंच कर बितरीक़ों को तोहफ़े दिए, फिर उन्हें अपनी ये दलीलें बतायीं जिनकी बुनियाद पर वे मुसलमानों को हब्श से निकलवाना चाहते थे। जब बितरीक़ों ने इस बात को मान लिया कि वे नज्जाशी को मुसलमानों के निकाल देने का मश्विरा देंगे तो ये दोनों नज्जाशी के हुज़ूर हाज़िर हुए और तोहफ़े तहायफ़ पेश करके अपना उद्देश्य यों रखा।

"ऐ बादशाह! आप के देश में हमारे कुछ नासमझ नवजवान भाग आए हैं। उन्होंने अपनी क़ौम का दीन छोड़ दिया है, लेकिन आप के दीन (धर्म) में भी दाख़िल नहीं हुए हैं, बल्कि एक नया दीन ईजाद किया है, जिसे न हम जानते हैं न आप। हमें आपकी सेवा में उन्हीं के बारे में, उनके मां बाप, चचाओं और कुंबे-क़बीले के बड़ों ने भेजा है। मक़सद यह है कि आप इन्हें उनके पास वापस भेज दें, क्योंकि वे लोग उन पर कड़ी निगाह रखते हैं और उनकी कमज़ोरी और सज़ा की वजहों को अच्छी तरह समझते हैं। जब ये दोनों अपनी बात कह चुके, तो बितरीक़ों ने कहा: 'बादशाह सलामत! ये दोनों ठीक ही कह रहे हैं आप उन जवानों को इन दोनों के हवाले कर दें। ये दोनों इन्हें इनकी क़ौम और इनके देश में वापस पहुंचा देंगे।'

लेकिन नज्जाशी ने सोचा कि इस झगड़े को गहराई से खंगालना और इसके तमाम पहलुओं को सुनना ज़रूरी है। चुनांचे उसने मुसलमानों को बुला भेजा। मुसलमान यह तय करके उसके दरबार में आए कि हम सच ही बोलेगें, चाहे नतीजा कुछ भी हो। जब मुसलमान आ गए तो नज्जाशी ने पूछा, यह कौन सा दीन है जिसकी बुनियाद पर तुम ने अपनी क़ौम से अलगाव अपना लिया है, लेकिन मेरे दीन में भी दाख़िल नहीं हुए और न इन मिल्लतों ही में से किसी के दीन में दाख़िल हुए हो?'

मुसलमानों के नुमाइन्दे हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० ने कहा, ऐ बादशाह! हम ऐसी क़ौम थे, जो अज्ञानता में पड़े हुए थे, हम मूर्ति पूजते थे, मुरदार खाते थे, बदकारियां करते थे, रिश्तेदारों से ताल्लुक़ तोड़ते थे, पड़ोसियों से दुर्व्यवहार करते थे और हम में ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा था। हम इसी हाल में थे कि अल्लाह ने हम ही में से एक रसूल भेजा, उसका ऊंचा वंश, उसकी सच्चाई, अमानतदारी पाकदामनी हमें पहले से मालूम थी। उसने हमें अल्लाह की तरफ़ बुलाया और समझाया कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह को मानें और उसी की इबादत करें और उसके सिवा जिन पत्थरों और बुतों को हमारे बाप-दादा पूजते थे, उन्हें छोड़ दें। उसने हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्ते जोड़ने, पड़ोसी से अच्छा व्यवहार करने और हरामकारी और ख़ून ख़राबा से बचने का हुक्म दिया और बेहयाई के कामों में पड़ने, झूठ बोलने, यतीम का माल खाने और पाकदामन औरतों पर झूठी तोहमत लगाने से मना किया। उसने हमें यह भी हुक्म दिया कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें, उसके साथ किसी को शरीक न करें। उसने हमें नमाज़, रोज़ा और ज़कात का हुक्म दिया------ इसी तरह हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के काम गिनाए, फिर कहा, हमने उस पैग़म्बर को सच्चा माना, उस पर ईमान लाए और उसके लाए हुए अल्लाह के दीन में उसकी पैरवी की, चुनांचे हम ने सिर्फ़ अल्लाह की इबादत की, उसके साथ किसी को शरीक नहीं किया और जिन बातों को उस पैग़म्बर ने हराम बताया उन्हें हराम माना और जिनको हलाल बताया, उन्हें हलाल जाना। इस पर हमारी क़ौम हम से बिगड़ गयी। उसने हम पर जुल्म व सितम किया और हमें हमारे दीन से फेरने के लिए फ़ित्ने पैदा किए, सज़ाएं दीं, ताकि हम अल्लाह की इबादत छोड़ कर मूर्ति-पूजा की ओर पलट जाएं और जिन गंदी चीज़ों को हराम समझते थे, उन्हें फिर हलाल समझने लगें। जब उन्होंने हम पर बहुत क़हर व ज़ुल्म किया, ज़मीन तंग कर दी और हमारे बीच और हमारे दीन के बीच रोक बन कर खड़े हो गए तो हमने आपके

मुल्क की राह ली और दूसरों पर आप को प्रमुखता देते हुए आप की पनाह में रहना पसंद किया और यह उम्मीद की कि ऐ बादशाह! आप के पास हम पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

नज्जाशी ने कहा,'वह पैग़म्बर जो कुछ लाए हैं, उसमें से कुछ तुम्हारे पास है?

हज़रत जाफ़र ने कहा, 'हां'।

नज्जाशी ने कहा, तनिक मुझे भी पढ़ कर सुनाओ।

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने सूरः मरयम की शुरू की आयतें तिलावत फ़रमाईं। नज्जाशी इतना रोया कि उसकी दाढ़ी तर हो गई। नज्जाशी के तमाम असक़फ़ (दरबारी) भी इतना रोए कि उनके ग्रन्थ भीग गए। फिर नज्जाशी ने कहा कि यह कलाम (वाणी) और वह कलाम जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम लेकर आए थे, दोनों एक ही शमादान से निकले हुए हैं। इसके बाद नज्जाशी ने अ़म्र बिन आस और अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ से कहा, 'कि तुम दोनों चले जाओ। मैं इन लोगों को तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता, और न यहां इनके ख़िलाफ़ कोई चाल चली जा सकती है, इस हुक्म पर दोनों वहां से निकल गये। लेकिन फिर अ़म्र बिन आ़स ने अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ से कहा "ख़ुदा की क़सम! कल उनके बारे में ऐसी बात लाऊंगा कि उनकी हरियाली की जड़ काट कर रख दूंगा। अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ ने कहा, 'नहीं ऐसा न करना। इन लोगों ने अगरचे हमारे ख़िलाफ़ किया है, लेकिन हैं बहरहाल अपने ही कुंबे-क़बीले के लोग। मगर अ़म्र बिन आ़स अपनी राय पर अड़े रहे।

अगला दिन आया तो अ़म्र बिन आ़स ने नज्जाशी से कहा, ऐ बादशाह! ये लोग ईसा बिन मरयम के बारे में एक बड़ी बात कहते हैं।' इस पर नज्जाशी ने मुसलमानों को फिर बुला भेजा, वह पूछना चाहता था कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में मुसलमान क्या कहते हैं।

इस बार मुसलमानों को घबराहट हुई, लेकिन उन्होंनें तय किया कि सच ही बोलेंगे, नतीजा चाहे जो निकले। चुनांचे जब मुसलमान नज्जाशी के दरबार में हाज़िर हुए और उसने सवाल किया तो हज़रत जाफ़र रज़ि० ने फ़रमाया—

'हम ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में वही बात कहते हैं जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए हैं, यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे, उसके रसूल, उसकी रूह और उसका वह कलिमा हैं, जिसे अल्लाह ने कुंवारी, पाकदामन हज़रत मरयम अ़लैहस्सलाम की तरफ़ भेजा था।'

इस पर नज्जाशी ने ज़मीन से एक तिनका उठाया और बोला, खुदा की क़सम! जो कुछ तुम ने कहा है, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उससे इस तिनके के बराबर भी बढ़ कर न थे।' इस पर बितरीक़ों ने 'हुंह' की आवाज़ लगाई, नज्जाशी ने कहा, चाहे तुम लोग हुंह कहो। इसके बाद नज्जाशी ने मुसलमानों से कहा, 'जाओ तुम लोग मेरे राज्य में सुख-शान्ति से रहो। जो तुम्हें गाली देगा, उस पर जुर्माना लगाया जाएगा। मुझे पसंद नहीं कि तुम में से मैं किसी आदमी को सताऊं और मुझे उसके बदले में सोने का पहाड़ मिल जाए।'

इसके बाद उसने अपने उत्तराधिकारियों (जानशीनों) से ख़ास तौर से कहा—— 'इन दोनों को इन के हदिए (भेंट) वापस कर दो, मुझे इनकी कोई ज़रूरत नहीं। खुदा की क़सम! अल्लाह ने जब मुझे मेरा मुल्क वापस किया था तो मुझ से कोई रिश्वत नहीं ली थी कि मैं उसकी राह में रिश्वत लूं। साथ ही अल्लाह ने मेरे बारे में लोगों की बात कुबूल न की थी, कि मैं अल्लाह के बारे में लोगों की बात मानूं।'

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि०, जिन्होंने इस घटना का वर्णन किया है, कहती हैं कि इसके बाद वे दोनों अपने हदिए-तोहफ़े लिए बे-आबरू

होकर चले गए और हम नज्जाशी के पास एक अच्छे देश में एक अच्छे पड़ोसी की छत्र-छाया में ठहरे रहे।[51]

यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। दूसरे जीवनी-लेखकों का बयान है कि नज्जाशी के दरबार में हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० की हाज़िरी बद्र की लड़ाई के बाद हुई थी। कुछ लोगों ने इनमें मेल इस तरह पैदा किया है कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० नज्जाशी के दरबार में मुसलमानों की वापसी के लिए दो बार गए थे, लेकिन बद्र की लड़ाई के बाद की हाज़िरी के बारे में हज़रत जाफ़र रज़ि० और नज्जाशी के बीच सवाल व जवाब की जो तफ़्सील बयान की जाती है, वह लगभग वही है जो इब्ने इसहाक़ ने हब्श की हिजरत के बाद की हाज़िरी के सिलसिले में बयान की है, फिर इन सवालों के विषय से स्पष्ट होता है कि नज्जाशी के पास यह मामला अभी पहली बार पेश हुआ था, इस लिए प्रमुखता इस बात को हासिल है कि मुसलमानों को वापस लाने की कोशिश सिर्फ़ एक बार हुई थी। और वह हब्शा की हिजरत के बाद थी।

बहरहाल मुश्रिकों की चाल नाकाम हो गई और उनकी समझ में आ गया कि वे अपने वैर भाव को अपने क्षेत्र में ही रह कर पूरा कर सकतें है, लेकिन इसके नतीजे में उन्होंने एक भयानक बात सोचना शुरू कर दी। वास्तव में उन्हें अच्छी तरह एहसास हो गया कि इस 'मुसीबत' से निमटने के लिए अब उन के सामने दो ही रास्ते हैं, या तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तब्लीग़ से ताक़त के बल पर रोक दें, या आप के वजूद का ही सफ़ाया कर दें, लेकिन दूसरी शक्ल बेहद कठिन थी, क्योंकि अबू तालिब आप के संरक्षक थे और मुश्रिकों के निश्चयों के सामने लोहे की दीवार बने हुए थे। इसलिए यही लाभप्रद समझा गया कि अबू तालिब से दो-दो बातें हो जाएं।

51) इब्ने हिशाम से संक्षिप्त किया हुआ 1/334-338

अबू तालिब को कुरैश की धमकी

इस प्रस्ताव के बाद कुरैश के सरदार अबू तालिब के पास हाज़िर हुए और बोले—"अबू तालिब! आप हम में बड़े और पद-प्रतिष्ठा के मालिक हैं। हमने आप से निवेदन किया कि अपने भतीजे को रोकिए, लेकिन आपने नहीं रोका। आप याद रखें हम इसे सहन नहीं कर सकते कि हमारे बाप दादा को गालियां दी जाएं, हमारी बुद्धि और समझ को मूर्खतापूर्ण कहा जाए और हमारे ख़ुदाओं में ऐब निकाला जाए। आप रोक दीजिए वरना हम आप से और उनसे ऐसी लड़ाई छेड़ देंगे कि एक फ़रीक़ का सफ़ाया होकर रहेगा।'

अबू तालिब पर इस ज़ोरदार धमकी का बहुत ज़्यादा असर हुआ और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुला कर कहा, भतीजे! तुम्हारी क़ौम के लोग मेरे पास आए थे और ऐसी-ऐसी बातें कह गए हैं। अब मुझ पर और स्वंय अपने आप पर दया करो और इस मामले में मुझ पर इतना बोझ न डालो जो मेरे बस से बाहर हो।

यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समझा कि अब आप के चचा भी आप का साथ छोड़ देंगे और वह भी आप की मदद से कमज़ोर पड़ गए हैं इसलिए फ़रमाया, चचा जान! ख़ुदा की क़सम! अगर ये लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चांद रख दें कि मैं इस काम को इस हद तक पहुंचाए बिना छोड़ दूं कि या तो अल्लाह उसे ग़ालिब कर दे या मैं इसी राह में फ़ना हो जाऊं, तो नहीं छोड़ सकता।'

इसके बाद आप की आंखें भीग गयीं, आप रो पड़े और उठ गए। जब वापस होने लगे तो अबू ताबिल ने पुकारा और समाने तशरीफ़ लाए, तो कहा भतीजे! जाओ जो चाहो कहो। ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हें कभी भी किसी भी वजह से नहीं छोड़ सकता।[52]" और यह पद्य कहे----

---

52) इब्ने हेशाम 1/265-266

وَاللّٰهِ لَنْ يَّصِلُوْا اِلَيْكَ بِجَمْعِهِمْ حَتّٰى اُوَسَّدَ فِى التُّرَابِ دَفِيْنًا[53]

فَاصْدَعْ بِاَمْرِكَ مَا عَلَيْكَ غَضَاضَةٌ وَابْشِرْ وَقَرِّبْذَاكَ مِنْكَ عُيُوْنًا

"अल्लाह की क़सम, वे लोग तुम्हारे पास अपने जत्थे के साथ भी हरगिज़ नहीं पहुंच सकते, यहां तक कि मैं किसी मिट्टी में दफ़न कर दिया जाऊं। तुम अपनी बात खुल्लम-खुल्ला करो, तुम पर कोई पाबंदी नहीं। तुम खुश हो जाओ और तुम्हारी आंखें इससे ठंडी हो जाएं।"

क़ुरैश एक बार फिर अबू तालिब के सामने

पिछली धमकी के बाद भी जब क़ुरैश ने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना काम किए जा रहे हैं तो उनकी समझ में आ गया कि अबू तालिब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ नहीं सकते, बल्कि इस बारे में क़ुरैश से जुदा होने और उनकी दुश्मनी मोल लेने को तैयार हैं। चुनांचे वे लोग वलीद बिन मुग़ीरह के लड़के उमारा को साथ लेकर अबू तालिब के पास पहुंचे और उनसे यूँ अर्ज़ किया—

'ऐ अबू तालिब! यह क़ुरैश का सब से बांका और ख़ूबसूरत नवजवान है, आप इसे ले लें। उसकी दियत और मदद करने के आप हक़दार होंगे, आप इसे अपना लड़का बना लें, यह आप का होगा और अपने भतीजे को हमारे हवाले कर दें जिसने आपके बाप-दादा के दीन का विरोध किया है, आप की क़ौम के जमाव को बिखेर रखा है और इनकी अक़्लों को मूर्खता वाली बताया है। हम इसे क़त्ल करेंगे बस यह एक आदमी के बदले एक आदमी का हिसाब है।'

अबू तालिब ने कहा, 'ख़ुदा की क़सम! कितना बुरा सौदा है जो तुम लोग मुझ से कर रहे हो। तुम अपना बेटा मुझे देते हो कि मैं इसे

53) मुख़तसरुस-सीरा (मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब) 68

खिलाऊं-पिलाऊं, पालूं-पोसूं और मेरा बेटा मुझ से तलब करते हो कि उसे क़त्ल कर दो। ख़ुदा की क़सम! यह नहीं हो सकता।'

इस पर नौफ़ल बिन अब्दे मुनाफ़ का पोता मुत्इम बिन अ़दी बोला, 'ख़ुदा की क़सम! ऐ अबू तालिब! तुम से तुम्हारी क़ौम ने इंसाफ़ की बात कही है और जो शक्ल तुम्हें नापसंद है उससे बचने की कोशिश की है, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम उनकी किसी बात को क़ुबूल नहीं करना चाहते।'

जवाब में अबू तालिब ने कहा, ख़ुदा की क़सम! तुम लोगों ने मुझ से इंसाफ़ की बात नहीं की है, बल्कि तुम भी मेरा साथ छोड़ कर मेरे मुख़ालिफ़ लोगों की मदद पर तुले बैठे हो तो ठीक है जो चाहो करो।'[54]

सीरत (हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जीवनी) में पिछली दोनों बातों के स्रोतों का पता नहीं चलता, लेकिन आगे-पीछे की बातों से ज़ाहिर होता है कि ये दोनों बातें सन् 06 नबवी के बीच में हुई थीं और दोनों के बीच दूरी बहुत थोड़ी थी।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हत्या का प्रस्ताव

इन दोनों वार्ताओं के विफल होने के बाद क़ुरैश के ज़ुल्म व सितम की भावना और भी बढ़ गयी, और कष्ट पहुंचाने का सिलसिला पहले से बहुत ज़्यादा हो गया। इन्हीं दिनों क़ुरैश के उद्दंडियों के दिमाग़ में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को समाप्त करने का एक प्रस्ताव उछला, लेकिन यही प्रस्ताव और यही सख़्तियाँ मक्का के योद्धाओं में से दो प्रसिद्ध वीरों यानी हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के इस्लाम लाने और उनके द्वारा इस्लाम को शक्ति पहुंचाने का कारण बन गई।

ज़ुल्म और ज़्यादती के लम्बे सिलसिले के एक दो नमूने ये हैं कि एक दिन अबू लहब का बेटा उतैबा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि

54) इब्ने हिशाम 1/266-267

व सल्लम के पास आया और बोला, मैं وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ और ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ के साथ कुफ़्र करता हूं।' इसके बाद वह आपको कष्ट पहुंचाने पर उतर आया। आप का कुरता फाड़ दिया और आप के चेहरे पर थूक दिया, यद्यपि आप पर न पड़ा। इस मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस पर अपने कुत्तों में से कोई कुत्ता मुसल्लत कर दे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बद-दुआ क़ुबूल हुई। चुनांचे उतैबा एक बार क़ुरैश के कुछ लोगों के साथ सफ़र में गया। जब उन्होंने शाम देश के स्थान ज़रक़ा में पड़ाव डाला, तो रात के वक़्त शेर ने उनका चक्कर लगाया। उतैबा ने देखते ही कहा, 'हाय मेरी तबाही! यह ख़ुदा की क़सम मुझे खा जाएगा जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ पर बद-दुआ की है। देखो, मैं शाम में हूं, लेकिन इसने मक्का में रहते हुए मुझे मार डाला।' एहतियात के तौर पर लोगों ने उतैबा को अपने और जानवरों के घेरे के बीचों बीच सुलाया, लेकिन रात को शेर सबको फलांगता हुआ सीधा उतैबा के पास पहुंचा और सर पकड़ कर ज़िब्ह कर डाला।[55]

एक बार उक़बा बिन अबी मुईत ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गरदन सज्दे की हालत में इस ज़ोर से रौंदी कि मालूम होता था दोनों आंखें निकल आएंगी।[56]

इब्ने इस्हाक़ की लम्बी रिवायत से भी क़ुरैश के उद्दंडियों के इस इरादे पर रोशनी पड़ती है, वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को समाप्त करने के चक्कर में थे, चुनांचे इस रिवायत में बयान किया गया है कि एक बार अबू जहल ने कहा——

---

55) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़अब्दुल्लाह) 135, इस्तीआब, इसाबा, दलाईलुन-नुबुवत, अर्रौज़ुल-उनफ़

56) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़अब्दुल्लाह) 113

'कुरैशी भाइयों! आप देखते हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हमारे दीन (धर्म), हमारे बाप-दादा में ऐब निकालने, हमारी अक़्लों को कम समझने और हमारे माबूदों (उपास्यों) का अनादर करने से रूक नहीं रहे हैं, इसलिए मैं अल्लाह को वचन देता हूं कि एक बहुत भारी और मुश्किल से उठने वाला पत्थर लेकर बैठूंगा और जब वह सज्दा करेगा तो उसी पत्थर से उनका सर कुचल दूंगा। अब इसके बाद चाहे तुम लोग मुझे बे-यार व मददगार छोड़ दो, चाहे मेरी रक्षा करो और बनू अब्दे मुनाफ़ भी इसके बाद जो जी चाहे करें।' लोगों ने कहा, ''नहीं अल्लाह की क़सम! हम तुम्हें कभी किसी मामले में बे-यार व मददगार नहीं छोड़ सकते। तुम जो करना चाहते हो, कर गुज़रो।''

सुबह हुई तो अबू जहल वैसा ही एक पत्थर लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन्तिज़ार में बैठ गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ़दत के मुताबिक़ तशरीफ़ लाए और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। कुरैश भी अपनी-अपनी मज्लिसों में आ चुके थे और अबू जहल की कार्यवाही देखने का इन्तिज़ार करने लगे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में तशरीफ़ ले गए तो अबू जहल ने पत्थर उठाया। फिर आप की ओर बढ़ा, लेकिन जब क़रीब पहुंचा तो हारे हुए की तरह वापस भागा। उसका रंग उड़ गया था और वह इतना रौब के दबाव में था कि उसके दोनों हाथ पत्थर पर चिपक कर रह गए थे। वह मुश्किल से ही हाथ से पत्थर फेंक सका। उधर कुरैश के कुछ लोग उठकर उसके पास आए और कहने लगे, 'अबुल हकम! तुम्हें क्या हो गया है? उस ने कहा, मैंने रात जो बात कही थी, वही करने जा रहा था, लेकिन जब उसके क़रीब पहुंचा तो एक ऊंट आड़े आ गया। खुदा की क़सम! मैंने कभी किसी ऊंट की वैसी खोपड़ी, वैसी गरदन और वैसे दांत देखे ही नहीं। वह मुझे खा जाना चाहता था।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं, "मुझे बताया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। अगर अबू जहल क़रीब आता तो उसको धर पकड़ते।[57]

इसके बाद अबू जहल ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ एक ऐसी हरकत की जो हज़रत हमज़ा रज़ि० के इस्लाम लाने की वजह बन गई। विवरण आगे आ रहा है।

जहां तक क़ुरैश के दूसरे उद्दंडियों का ताल्लुक़ है तो उनके दिलों में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की समाप्ति का विचार निरंतर पक रहा था। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से इब्ने इस्हाक़ ने उनका यह बयान नक़ल किया है कि एक बार मुश्रिक हतीम में जमा थे। मैं भी मौजूद था। मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र छेड़ा और कहने लगे, इस आदमी के बारे में हमने जैसा सब्र किया है, उसकी मिसाल नहीं। सच तो यह है कि हमने इसके मामले में बहुत ही बड़ी बात पर सब्र किया है, ये बातें चल ही रही थीं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समाने दिखाई दे गए। आपने तशरीफ़ लाकर पहले हजरे अस्वद को चूमा, फिर तवाफ़ करते हुए मुश्रिकों के पास से गुज़रे। उन्होंने कुछ कह कर ताने दिए जिसका असर मैंने आपके चेहरे पर देखा। इसके बाद जब दोबारा आप का गुज़र हुआ तो मश्रिकों ने फिर उसी तरह ताने दिए और बुरा भला कहा। मैंने उसका भी असर आपके चेहरे पर देखा। इसके बाद आप तीसरी बार गुज़रे तो मुश्रिकों ने फिर आपको ताने दिए और बुरा भला कहा। अब की बार आप ठहर गए और फ़रमाया----

"क़ुरैश के लोगों! सुन रहे हो, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है। मैं तुम्हारे पास (तुम्हारे) ज़िब्ह (का हुक्म) लेकर आया हूं।"

---

57) इब्ने हिशाम 1/298-299

आप के इस इर्शाद ने लोगों को पकड़ लिया, (उन पर ऐसी कपकपी छायी कि) जैसे कि हर आदमी के सर पर चिड़िया है यहां तक कि जो आप पर ज़्यादा सख़्त था, वह भी बेहतर से बेहतर शब्द जो पा सकता था, उसके माध्यम से दया की मांग करते हुए कहने लगा कि अबुल क़ासिम! वापस जाइए, ख़ुदा की क़सम! आप कभी भी नासमझ नहीं थे।

दूसरे दिन क़ुरैश फिर इसी तरह जमा होकर आप का ज़िक्र कर रहे थे कि आप ज़ाहिर हुए देखते ही सब (एक जान होकर) एक आदमी की तरह आप पर पिल पड़े और आप को घेर लिया। फिर मैंने एक आदमी को देखा कि उसने गले के पास से आपकी चादर पकड़ ली (और बल देने लगा) अबू बक्र रज़ि० आपके बचाव में लग गए, वह रोते जाते थे और कहते जाते थे أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ क्या तुम लोग एक आदमी को इस लिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है मेरा रब (पालनहार) अल्लाह है। इसके बाद वे लोग आपको छोड़ कर पलट गए। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते है कि यह सबसे कठिन कष्ट दिया जा रहा था, जो मैंने क़ुरैश को कभी देते हुए देखा।[59]

सहीह बुख़ारी में हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० से उनका बयान रिवायत किया गया है कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से सवाल किया कि मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जो सब से बुरा व्यवहार किया था, आप मुझे उसका विवरण दीजिए——उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काबा के पास हतीम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुईत आ गया। उसने आते ही अपना कपड़ा आप की गरदन में डाल कर बड़ी सख़्ती के साथ आप का गला घोंटा। इतने में अबू बक्र रज़ि० आ पहुंचे और

59) इब्न हिशाम 1/289-290

उन्होंने उसके दोनों कंधों को पकड़ कर धक्का दिया और उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूर करते हुए फ़रमाया; أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلاً أَنْ يَقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ "तुम लोग एक आदमी को इस लिए कत्ल करना चाहते हो कि वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है!"[59]

हज़रत अस्मा रज़ि० की रिवायत में यह भी है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास यह चीख पहुंची कि अपने साथी को बचाओ। वह झट हमारे पास से निकले। उनके सर पर चार चोटियां थीं। वह यह कहते हुए गए कि أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلاً أَنْ يَقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ "तुम लोग एक आदमी को सिर्फ़ इसलिए कत्ल करना चाहते हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है।" मुश्रिक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ कर अबू बक्र रज़ि० पर पिल पड़े। वह वापस आए तो हालत यह थी कि हम उनकी चोटियों का जो बाल भी छूते थे वह हमारी (चुटकी) के साथ चला आता था।[60]

हज़रत हमज़ा रज़ि० का इस्लाम कुबूल करना

मक्का का वातावरण अन्याय और अत्याचार के इन काले बादलों से घिरा हुआ था कि अचानक एक बिजली चमकी और परेशानी में घिरे लोगों का रास्ता रोशन हो गया, यानी हज़रत हमज़ा रज़ि० मुसलमान हो गए। उनके इस्लाम लाने की घटना सन् 06 नबवी के आख़िर की है और अंदाज़ा यह है कि वह ज़िलहिज्जा के महीने में मुसलमान हुए थे।

उनके इस्लाम लाने की वजह यह है कि एक दिन अबू जहल सफ़ा पर्वत के नज़दीक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़रा तो आपको कष्ट पहुंचाया और खरी-खोटी बातें सुनायीं। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे और कुछ

---

59) बुख़ारी 1/544

60) मुख़्तसरुस-सीरः (शेखअब्दुल्लाह) 113

भी न कहा, लेकिन इसके बाद उसने आप के सर पर एक पत्थर दे मारा, जिससे ऐसी चोट आई कि ख़ून बह निकला। फिर वह ख़ा-न-ए-काबा के पास क़ुरैश की मज्लिस में जा बैठा। अब्दुल्लाह बिन जुदआन की एक लौंडी सफ़ा पर्वत पर बने अपने मकान से यह सारा दृश्य देख रही थी हज़रत हमज़ा रज़ि० कमान लिए हुए शिकार से वापस तश्रीफ़ लाए तो उसने अबू जहल की सारी हरकत सुनायी। हज़रत हमज़ा रज़ि० गुस्से से भड़क उठे। यह क़ुरैश के सब से मज़बूत और ताक़तवर जवान थे। माजरा सुन कर कहीं एक क्षण रूके बिना दौड़ते हुए और यह तहैया किए हुए आए कि ज्यों ही अबू जहल का सामना होगा, उसकी मरम्मत कर देंगे। चुनांचे मस्जिदे हराम में दाख़िल होकर सीधे उसके सर पर जा खड़े हुए और बोले, ओ अपने सुरीन से पाद निकालने वाले डरपोक! तू मेरे भतीजे को गाली देता है, हालांकि मैं भी उसी के दीन पर हूं। इसके बाद कमान से इस ज़ोर की मार मारी कि उसके सर पर बहुत बुरे क़िस्म का घाव आ गया। इस पर अबू जहल के क़बीले बनू मख़्ज़ूम और हज़रत हमज़ा रज़ि० के क़बीले बनू हाशिम के लोग एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़क उठे, लेकिन अबू जहल ने यह कह कर उन्हें ख़ामोश कर दिया कि अबू अम्मारा को जाने दो। मैंने वाक़ई उसके भतीजे को बहुत बुरी गाली दी थी।[61]

शुरू में हज़रत हमज़ा रज़ि० का इस्लाम सिर्फ़ इस भावना के रूप में था कि उनके नातेदार की तौहीन क्यों की गई, लेकिन फिर अल्लाह ने उनका सीना खोल दिया और उन्होंने इस्लाम का कड़ा मज़बूती से थाम लिया।[62] और मुसलमानों ने इनकी वजह से बड़ी इज़्ज़त और ताक़त महसूस की!

---

61) मुख़्तसरुस सीरा (मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब) 66, रह्मतुल-लिल-आलमीन 1/68, इब्ने हिशाम 1/291-292

62) इसका अन्दाज़ा मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) में दी गई एक हदीस से होता है देखिए पृ० 101

हज़रत उमर रज़ि० का इस्लाम कुबूल करना

जुल्म व ज़्यादती के घने बादलों के इस गंभीर वातावरण में एक बार चमकीली बिजली उभरी, जिसकी चमक पहले से ज़्यादा तेज़ थी यानी हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हो गए। उनके इस्लाम लाने की घटना 06 नबवी की है[63] वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के सिर्फ़ तीन दिन बाद मुसलमान हुए थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके इस्लाम लाने की दुआ की थी। चुनांचे इमाम तिर्मिज़ी रह० ने इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत किया है और इसे सहीह भी क़रार दिया है। इसी तरह तबरानी ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० और हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया——

اَللّٰهُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِاَحَبِّ الرَّجُلَيْنِ اِلَيْکَ، بعمر بن الخطاب اَوْ بِاَبِیْ جهل بن هِشَامٍ

"ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो आदमी तेरे नज़दीक अधिक प्रिय है, उसके द्वारा इस्लाम को ताक़त पहुंचा।"

(अल्लाह ने यह दुआ कुबूल फ़रमाई और हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हो गए) अल्लाह के नज़दीक इन दोनों में अधिक प्रिय हज़रत उमर रज़ि० थे।[64]

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने के बारे में तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से यह बात साफ़ हो जाती है कि उनके दिल में इस्लाम धीरे-धीरे उतरता रहा। मुनासिब मालूम होता है कि इन रिवायतों का ख़ुलासा पेश करने से पहले हज़रत उमर रज़ि० के स्वभाव और उनकी भावनाओं की ओर भी थोड़ा सा इशारा कर दिया जाए।

---

63) तारीख़ उमर बिन अल-ख़त्ताब (इब्ने जौज़ी)।।

64) तिरमिज़ी अब्वाबुल-मनाक़िब। मनाक़िबे अबी हफ़्स उमर बिन अल-ख़त्ताब 2/209

हज़रत उमर रज़ि० अपनी तेज़ी और सख़्ती के लिए मशहूर थे। मुसलमानों ने एक लम्बे समय तक उनके हाथों तरह-तरह की सख़्तियां झेली थीं। ऐसा मालूम हाता है कि उनमें अलग-अलग प्रकार की भावनांऐ आपस में टकरा रही थीं। चुनांचे एक ओर तो वह बाप-दादा की रस्मों का बड़ा आदर करते थे और बुरी तरह शराब पीने और खेल तमाशे के आशिक़ थे, लेकिन दूसरी ओर वह ईमान और अक़ीदे की राह में मुसलमानों की दृढ़ता और मुसीबतों के सिलसिले में उनकी सहन शक्ति को प्रिय और अच्छी निगाह से देखते थे। फिर उनके अंदर किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति की तरह संदेहों का एक सिलसिला था जो रह-रह कर उभरा करता था कि इस्लाम जिस बात की दावत दे रहा है, शायद वही ज़्यादा बरतर और पाकीज़ा है। इसी लिए उन की स्थिति (अभी माशा, अभी तोला जैसी) थी कि अभी भड़के और अभी ढीले पड़ गए।[65]

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने के बारे में तमाम रिवायतों (कथनों) को जमा करने और मिलाने का सार——यह है कि एक बार उन्हें घर से बाहर रात बितानी पड़ी। वह हरम तशरीफ़ लाए और ख़ा-न-ए काबा के परदे में घुस गए। उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे और सूरः अल-हाक़्क़ः की तिलावत कर रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० कुरआन सुनने लगे और उसके लेखों पर हैरान रह गए। उनका बयान है कि मैंने अपने जी में कहा, "यह तो कवि है, जैसा कि कुरैश कहते हैं" लेकिन इतने में आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई——

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ

"यह एक बुज़ुर्ग रसूल का क़ौल (कथन) है, यह किसी कवि का कथन नहीं है। तुम लोग कम ही ईमान लाते हो।"

---

65) हज़रत उमर (रज़ि०) के हालात पर यह टिप्पणी शेख़ मुहम्मद ग़ज़ाली ने की है। फ़िक़हुस-सीरा 92-93

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने ------अपने जी में------कहा, (ओहो) यह तो काहिन (भविष्य वक्ता) है, लेकिन इतने में आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई------

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ

"यह किसी काहिन का कथन भी नहीं, तुम लोग कम ही नसीहत कुबूल करते है। यह सारी दुनिया के पालनहार अल्लाह की ओर से उतारा गया है।" (सूरः के अन्त तक)

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि उस वक़्त मेरे दिल में इस्लाम ने जगह बना ली।[66] यह पहला मौक़ा था कि हज़रत उमर रज़ि० के दिल में इस्लाम का बीज पड़ा, लेकिन अभी उनके अंदर अज्ञानता पूर्ण भावनाएं, पक्षपात और बाप-दादों के दीन की महानता के एहसास का छिलका इतना मजबूत था कि मन के भीतर मचलने वाली हक़ीक़त पर बराबर छाया रहा, इसलिए वे छिलके की तह में छिपी हुई चेतना की परवाह किए बिना अपने इस्लाम विरोधी काम में लगे रहे।

उनकी तबियत की सख़्ती और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भारी दुश्मनी का यह हाल था कि एक दिन खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अन्त कर देने की नीयत से तलवार लेकर निकल पड़े, लेकिन अभी रास्तें में ही थे कि नुऐम बिन अब्दुल्लाह अन-नहाम अ़दवी [67] से या बनी ज़ोहरा [68] या बनी मख़्ज़ूम[69]

66) इब्ने जोज़ी की तारीखे़ उमर बिन अल-ख़त्ताब प्र० 61 इब्ने इसहाक़ ने अता और मुजाहिद से भी लगभग यही बात नक़ल की है परन्तु इसका आख़री टुकड़ा इस से अलग है। देखिए इब्ने हिशाम 1/346-348 खुद इब्ने जोज़ी ने भी हज़रत जाबिर (रज़ि०) से इसी के क़रीब क़रीब हदीस नकल की है लेकिन इसका आख़री हिस्सा भी इस हदीस से अलग है। देखिए तारीखे़ उमर बिन अल-ख़त्ताब 9-10

67) यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है देखिए इब्ने हिशाम 1/344

68) यह हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत की गई है देखिए इब्ने जोज़ी की तारीखे़ उमर 10, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 103

69) यह इब्ने अब्बास से रिवायत की गई है देखिए मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 102

के किसी आदमी से मुलाक़ात हो गई। उसने तेवर देख कर पूछा, 'उमर! कहां का इरादा है? उन्होंने कहा "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने जा रहा हूं।" उसने कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करके बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा से कैसे बच सकोगे?" हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, 'मालूम होता है, तुम भी अपना पिछला दीन (धर्म) छोड़ कर बेदीन हो चुके हो।' उसने कहा, उमर ! एक अनोखी बात न बता दूं। तुम्हारी बहन और बहनोई भी तुम्हारा दीन छोड़ कर बे-दीन हो चुके हैं। यह सुनकर उमर गुस्से से बे-क़ाबू हो गये और सीधे बहन बहनोई का रूख़ किया। वहां उन्हें हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० सूरः ताहा पर आधारित एक सहीफ़ा पढ़ा रहे थे और क़ुरआन पढ़ाने के लिए वहां आना-जाना हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० का मामूल (नियम) था। जब हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की आहट सुनी तो घर के अंदर छुप गए। उधर हज़रत उमर रज़ि० की बहन फ़ातिमा रज़ि० ने सहीफ़ा छिपा दिया, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० घर के क़रीब पहुंच कर हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० की तिलावत (पढ़ाई) सुन चुके हो, चुनांचे पूछा कि यह कैसी धीमी-धीमी सी आवाज़ थी जो तुम लोगों के पास मैं ने सुनी थी? उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं, बस हम आपस में बातें कर रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, शायद तुम दोनों बे-दीन हो चुके हो? बहनोई ने कहा! अच्छा उमर! यह बताओ अगर हक़ तुम्हारे दीन के बजाए किसी और दीन में हो तो, हज़रत उमर रज़ि० का इतना सुनना था कि अपने बहनोई पर चढ़ बैठे और उन्हें बुरी तरह कुचल दिया। उनकी बहन ने लपक कर उन्हें अपने शौहर से अलग किया तो बहन को ऐसा चांटा मारा कि चेहरा ख़ून से भर गया। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि उनके सर में चोट आयी। बहन ने गुस्से में कहा, उमर! अगर तेरे दीन के बजाए दूसरा ही दीन हक़ पर हो तो? اشهد ان لااله الا الله واشهد ان محمدا رسول الله "मैं गवाही देती हूं कि

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देती हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।'' यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० पर निराशा के बादल छा गए और उन्हें अपनी बहन के चेहरे पर ख़ून देख कर बड़ी शर्म महसूस हुई, कहने लगे, अच्छा, यह किताब जो तुम्हारे पास है, तनिक मुझे भी पढ़ने को दो। बहन ने कहा, तुम नापाक हो। इस किताब को सिर्फ़ पाक लोग ही पढ़ सकते हैं, उठो, नहाओ। हज़रत उमर रज़ि० उठ कर नहाए, फिर किताब ली और बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ी। कहने लगे, 'ये तो बड़े पाक नाम हैं। इसके बाद ताहा से إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي (20:14) तक पढ़ा, कहने लगे, यह तो बड़ी अच्छी और बड़ी माननीय वाणी है मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पता बताओ।'

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० के ये वाक्य सुन कर अंदर से बाहर आ गए, कहने लगे उमर रज़ि०! ख़ुश हो जाओ। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुमेरात (बृहस्पतिवार) की रात तुम्हारे बारे में जो दुआ की थी (कि ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब या अबू जहल बिन हिशाम के ज़रिए इस्लाम को ताक़त पहुंचा) यह वही है और इस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ा पर्वत के पास वाले मकान में तशरीफ़ रखते हैं।''

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी तलवार उठाई और उस घर के पास आकर दरवाज़े पर दस्तक दी। एक आदमी ने उठ कर दरवाज़े की दराड़ से झाकां, तो देखा कि उमर तलवार उठाए मौजूद हैं। लपक कर अल्लाह के रसलू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी और सारे लोग सिमट कर इकट्ठा हो गए। हज़रत हमज़ा रज़ि० ने पूछा, क्या बात है? लोगों ने कहा, उमर हैं। हज़रत हमज़ा रज़ि० ने कहा, 'बस उमर है दरवाज़ा खोल दो। अगर वह अच्छी नीयत से आया है तो उसे हम भलाई देंगे और अगर कोई बुरा इरादा लेकर आया है तो हम उसी

की तलवार से उस का काम तमाम कर देंगे।' इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंदर तश्रीफ़ रखते थे, आप पर वह्य उतर रही थी। वह्य उतर चुकी तो हज़रत उमर रज़ि० के पास तश्रीफ़ लाए। बैठक में उनसे मुलाक़ात हुई। आप ने उनके कपड़े और तलवार का परतला समेट कर पकड़ा और सख़्ती से झटकते हुए फ़रमाया, 'उमर! क्या तुम उस वक़्त तक नहीं मानोगे, जब तक कि अल्लाह तुम पर भी वैसी ही ज़िल्लत व रूसवाई और दर्दनाक सज़ा न दे दे, जैसी वलीद बिन मुग़ीरह पर उतर चुकी है? ऐ अल्लाह यह उमर बिन ख़त्ताब है! ऐ अल्लाह! इस्लाम को उमर बिन ख़त्ताब के ज़रिए ताक़त और इज़्ज़त दे। आप के इस इर्शाद के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम अपनाते हुए कहा, اشهد ان لا اله الا الله وانک رسول الله "मैं गवाही देता हूं कि यक़ीनी तौर पर अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और यक़ीनी तौर पर आप अल्लाह के रसूल हैं"। यह सुन कर घर के अंदर मौजूद सहाबा रज़ि० ने इस ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहा कि मस्जिदे हराम वालों को सुनाई पड़ा।[70]

मालूम रहे कि हज़रत उमर रज़ि० की ताक़त का हाल यह था कि कोई उनसे मुक़ाबले की हिम्मत न करता था, इसलिए उनके मुसलमान हो जाने से मुश्रिकों में कोहराम मच गया और उन्हें बड़ी ज़िल्लत व रूसवाई महसूस हुई। दूसरी ओर उनके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बड़ी इज़्ज़त व ताक़त, मान-जान और हर्ष और प्रसन्नता प्राप्त हुई। चुनांचे इब्ने इस्हाक़ ने अपनी सनद (प्रमाणों) से हज़रत उमर रज़ि० का बयान रिवायत किया है कि जब मैं मुसलमान हुआ तो मैंने सोचा कि मक्के का कौन सा आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

---

70) तारीख़े उमर बिन अल-ख़त्ताब 10, 11, मुख़्तसरुस- सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 102-103, इब्ने हिशाम 1/343-346

का सब से बड़ा और कट्टर शुत्र है? फिर मैंने मन ही मन में कहा, यह अबू जहल है। इसके बाद मैंने उसके घर जाकर उसका दरवाज़ा खटखटाया, वह बाहर आया और देख कर बोला, 'स्वागतम, स्वागतम! कैसे आना हुआ?' मैंने कहा, मैं तुम्हें यह बताने आया हूं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ला चुका हूं और जो कुछ वह लेकर आए हैं उसकी पुष्टि कर चुका हूं।' हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि (यह सुनते ही) उसने मेरे रूख पर दरवाज़ा बंद कर लिया और बोला, 'अल्लाह तेरा बुरा करे? और जो कुछ तू लेकर आया है, उसका भी बुरा करे।'[71]

इमाम इब्ने जौज़ी ने हज़रत उमर रज़ि० से यह रिवायत नक़ल की है कि जब कोई आदमी मुसलमान हो जाता, तो लोग उसके पीछे पड़ जाते, उसे मारते पीटते और वह भी उन्हें मारता, इसलिए जब मैं मुसलमान हुआ तो अपने मामूं आसी बिन हाशिम के पास गया और उसे ख़बर दी। वह घर के अंदर घुस गया, फिर क़ुरैश के एक बड़े आदमी के पास गया-----शायद अबू जहल की ओर इशारा है-----और उसे ख़बर दी, वह भी घर के अंदर घुस गया।[72]

इब्ने हिशाम और इब्ने जौज़ी का बयान है कि जब हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो जमील बिन मामर जम्ही के पास गए। यह आदमी किसी बात का ढोल पीटने में पूरे क़ुरैश के अंदर सबसे ज़्यादा मशहूर था। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे बातया कि वह मुसलमान हो गए हैं। उसने सुनते ही बड़ी ऊंची आवाज़ में चीख कर कहा कि ख़त्ताब का बेटा बे-दीन हो गया है। हज़रत उमर रज़ि० उस के पीछे ही थे। बोले, यह झूठ कहता है, मैं मुसलमान हो गया हूं। बहरहाल ये लोग हज़रत उमर रज़ि० पर टूट पड़े और मार-पीट शुरू हो गई। लोग हज़रत उमर

71) इब्ने हिशाम 1/349-350

72) तारीख़े उमर बिन अल-ख़त्ताब 8

रज़ि० को मार रहे थे और हज़रत उमर रज़ि० लोगों को मार रहे थे, यहां तक कि सूरज सर पर आ गया और हज़रत उमर रज़ि० थक कर बैठ गए। लोग सर पर सवार थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जो बन पड़े कर लो। ख़ुदा की क़सम! अगर हम लोग तीन सौ की तायदाद में होते, तो फिर मक्के में या तो तुम ही रहते या हम ही रहते।[73]

इसके बाद मुश्रिकों ने इस इरादे से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर हल्ला बोल दिया, कि उन्हें जान से मार डालें। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि० डर की हालत में घर में थ, कि इस बीच अबू अम्र आस बिन वाइल सहमी आ गया। वह धारीदार यमनी चादर का जोड़ा और रेशमी गोटे से सजा हुआ कुर्ता पहने हुए था। उसका ताल्लुक क़बीला सहम से था और यह क़बीला अज्ञानता-युग में हमारे साथ था। उसने पूछा, क्या बात है? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं मुसलमान हो गया हूं, इसलिए आप की क़ौम मुझे क़त्ल करना चाहती है। आस ने कहा, 'यह तो संभव नहीं' आस की यह बात सुन कर मुझे संतोष हो गया। इसके बाद आस वहां से निकला और लोगों से मिला। उस वक़्त हालत यह थी कि लोगों की भीड़ से घाटी खचाखच भरी हुई थी। आस ने पूछा, कहां का इरादा है? लोगों ने कहा, 'यही ख़त्ताब का बेटा चाहिए जो बेदीन हो गया है।' उसने कहा, उसकी ओर कोई रास्ता नहीं। यह सुनते ही लोग वापस पलट गए।[74] इब्ने इसहाक़ की एक रिवायत में है कि अल्लाह की क़सम! ऐसा लगता था, मानो वे लोग एक कपड़ा थे जिसे उसके ऊपर से झटक कर फेंक दिया गया।[75]

---

73) तारीख़े उमर बिन अल-ख़त्ताब 8 तथा इब्ने हिशाम 1/348-349

74) बुख़ारी बाबु इस्लामि उमर बिन अल-ख़त्ताब 1/545

75) इब्ने हिशाम 1/349

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने पर यह दशा तो मुश्रिकों की हुई थी, बाक़ी रहे मुसलमान तो उनकी हालत का अंदाज़ा इससे हो सकता है कि मुजाहिद ने इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि मैंने हमज़ा बिन ख़त्ताब रज़ि० से मालूम किया कि किस वजह से आप की उपाधि 'फ़ारूक़' पड़ गयी तो उन्होंने कहा, मुझ से तीन दिन पहले हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उनके इस्लाम लाने की घटना का उल्लेख करके आख़िर में कहा कि फिर जब मैं मुसलमान हुआ तो-----मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या हम हक़ पर नहीं हैं? चाहे ज़िंदा रहें, चाहे मरें? आपने फ़रमाया, क्यों नहीं, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग हक़ पर हो चाहे ज़िंदा रहो चाहे मौत से दो चार हो---हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि तब मैंने कहा कि फिर छिपना कैसा? उस ज़ात की क़सम! जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है, हम ज़रूर बाहर निकलेंगे, चुनांचे हम दो पंक्तियों में आप को साथ लेकर बाहर आए। एक पंक्ति में हमज़ा थे और एक में मैं था। हमारे चलने से चक्की के आटे की तरह हल्की-हल्की धूल उड़ रही थी, यहां तक कि हम मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए। हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि कुरैश ने मुझे और हमज़ा को देखा तो उनके दिलों पर ऐसी चोट लगी कि अब तक न लगी थी। उसी दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी उपाधि फ़ारूक़ रख दी।[76]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० का इर्शाद है कि हम ख़ा-न-ए काबा के पास नमाज़ पढ़ने की शक्ति न रखते थे, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम अपना लिया।[77]

---

76) तारीख़ उमर बिन अल-ख़त्ताब (इब्ने जौज़ी) 6-7

77) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 103

हज़रत सुहैब बिन सिनान रूमी रज़ि० का बयान है कि हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो इस्लाम परदे से बाहर आया, इसकी खुल्लम-खुल्ला दावत दी गई। हम घेरा बना कर बैतुल्लाह के चारों ओर बैठे। बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और जिसने हम पर सख़्ती की, उससे बदला लिया और उसकी कुछ ज़्यादतियों का जवाब दिया।[78]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० का बयान है कि जब से हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम कुबूल किया तब से हम बराबर ताक़तवर और इज़्ज़त वाले रहे।[79]

क़ुरैश का प्रतिनिधि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुज़ूर में

इन दोनों बड़ों यानी हज़रत हमज़ा बिन मुत्तलिब और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के मुसलमान हो जाने के बाद ज़ुल्म व ज़्यादती के बादल छटना शुरू हुए और मुसलमानों को ज़ुल्म व ज़्यादती का निशाना बनाने के लिए मुश्रिकों पर जो बद-मस्ती छाई थी, उसकी जगह सूझबूझ ने लेनी शुरू की। चुनांचे मुश्रिकों ने यह कोशिश की कि इस दावत से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जो मंशा और इरादा हो सकता है, उसे बड़ी मात्रा में जुटाने की बात कह कर आपको आकी दावत व तब्लीग़ से रोकने के लिए सौदे-बाज़ी की जाए, लेकिन इन बेचारों को पता न था कि वह पूरी सृष्टि, जिस पर सूरज उगता है आप की दावत के मुक़ाबले में बाल बराबर भी अहमियत नहीं रखती, इसलिए उन्हें अपनी इस योजना में असफल होना पड़ा।

इब्ने इसहाक़ ने यज़ीद बिन ज़ियाद के माध्यम से मुहम्मद बिन काब क़रज़ी का यह बयान नक़ल किया है कि मुझे बताया गया है कि उत्बा बिन रबीआ ने जो क़ौम का सरदार था, एक दिन क़ुरैश की सभा

78) तारीख़ उमर बिन अल-ख़त्ताब (इब्ने जोज़ी) 13

79) बुख़ारीः बाबु इस्लामि उमर बिन अल- ख़त्ताब 1/545

में कहा-----और उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में एक जगह अकेले तशरीफ़ रखते थे---कि कुरैश के लोगो! क्यों न मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास जाकर उनसे बातचीत करूँ और उनके सामने कुछ बातें रखूं। हो सकता है, वह कोई चीज़ कुबूल कर लें, जो कुछ कुबूल कर लें उसे देकर हम अपने आप को रोके रखेंगे?---यह उस वक़्त की बात है जब हज़रत हमज़ा रज़ि० मुसलमान हो चुके थे और मुश्रिकों ने यह देख लिया था कि मुसलमानों की तायदाद बराबर बढ़ती ही जा रही है।

मुश्रिकों ने कहा, अबुल-वलीद! आप जाइए और उनसे बात कीजिए। इसके बाद उत्बा उठा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर बैठ गया फिर बोला, भतीजे! हमारी क़ौम में तुम्हारा जो दर्जा और स्थान है और जो ऊंचा वंश है, वह तुम्हें मालूम ही है और अब तुम अपनी क़ौम में एक बड़ा मामला लेकर आए हो जिसकी वजह से तुमने उनकी जमाअत में मतभेद पैदा कर दिया, उनकी बुद्धि को मूर्खता कह दिया। उनके उपासकों और उनके दीन में दोष निकाले और उनके जो बाप-दादा गुज़र चुके हैं, उन्हें काफ़िर ठहराया, इस लिए मेरी बात सुनो। मैं तुम पर कुछ बातें पेश कर रहा हूं, उन पर विचार करो, हो सकता है कोई बात कुबूल कर लो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अबुल वलीद! कहो, मैं सुनूंगा।

अबुल-वलीद ने कहा, भतीजे! यह मामला जिसे तुम लेकर आए हो, अगर इससे तुम यह चाहते हो कि माल हासिल करो, तो हम तुम्हारे लिए इतना माल जमा किए देते हैं कि तुम हममें सबसे ज़्यादा मालदार हो जाओ और अगर तुम यह चाहते हो कि पद प्रतिष्ठा प्राप्त करो तो हम तुम्हें अपना सरदार बनाए लेते हैं, यहां तक कि तुम्हारे बिना किसी मामले का फ़ैसला न करेंगे। और अगर तुम चाहते हो कि बादशाह बन जाओ तो हम तुम्हें अपना बादशाह बनाए लेते हैं और अगर यह जो

तुम्हारे पास आता है, कोई जिन्न-भूत है जिसे तुम देखते हो, लेकिन अपने आप से दूर नहीं कर सकते, तो हम तुम्हारे लिए उसका इलाज खोज देते हैं और इस सिलसिले में हम अपना इतना माल ख़र्च करने को तैयार हैं कि तुम स्वस्थ हो जाओ, क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन्न-भूत इंसान पर ग़ालिब आ जाता है और उसका इलाज करवाना पड़ता है।'

उत्बा ये बातें कहता रहा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनते रहे। जब फ़ारिग़ हो चुका तो आपने फ़रमाया! 'अबुल-वलीद! तुम फ़ारिग़ हो गए?' उसने कहा, हां। आपने फ़रमाया, 'अच्छा, अब मेरी बात सुनो।' उसने कहा, ठीक है सुनूंगा। आपने फ़रमाया—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

"हामीम, यह रहमान व रहीम की तरफ़ से उतारी हुई ऐसी किताब है, जिसकी आयतें खोल-खोलकर बयान कर दी गई हैं, अरबी क़ुरआन उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला है, लेकिन अक्सर लोगों ने मुख मोड़ा, वे सुनते नहीं, कहते हैं कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, उसके लिए हमारे दिलों पर परदा पड़ा हुआ है।"

(41:1-5)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे पढ़ते जा रहे थे और उत्बा अपने दोनों हाथ पीछे ज़मीन पर टेके चुपचाप सुनता जा रहा था। जब आप सज्दे की आयत पर पहुंचे तो आपने सज्दा किया,

फिर फ़रमाया, अबुल-वलीद! तुम्हें जो कुछ सुनना था, सुन चुके, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

उत्बा उठा और सीधा अपने साथियों के पास आया। उसे आता देखकर मुश्रिकों ने आपस में एक दूसरे से कहा, खुदा की क़सम! अबुल-वलीद तुम्हारे पास वह चेहरा लेकर नहीं आ रहा है जो चेहरा लेकर गया था। फिर जब अबुल-वलीद आकर बैठ गया तो लोगों ने पूछा, अबुल-वलीद! पीछे की क्या ख़बर है? उसने कहा, पीछे की ख़बर यह है कि मैंने एक ऐसा कलाम (वाणी) सुना है कि वैसा कलाम, अल्लाह की क़सम! मैंने कभी नहीं सुना। ख़ुदा की क़सम! वह न पद्य है, न जादू, न भविष्य वक्ताओं (काहिनों) की वाणी, क़ुरैश के लोगो! मेरी बात मानो, और इस मामले को मुझ पर छोड़ दो। (मेरी राय यह है कि) उस आदमी को उसके हाल पर छोड़ कर अलग-थलग बैठ जाओ। ख़ुदा की क़सम! मैंने उसकी जो बात सुनी है, उससे कोई ज़बरदस्त घटना होकर रहेगी, फिर अगर उस आदमी को अ़रब ने मार डाला तो तुम्हारा काम दूसरों के ज़रिए पूरा हो जाएगा, और अगर यह आदमी अरब पर ग़ालिब आ गया तो इसकी बादशाही तुम्हारी बादशाही और इसकी इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त होगी और इसका अस्तित्व तुम्हारे लिए सबसे ज़्यादा शुभ होगा। लोगों ने कहा, 'अबुल-वलीद! ख़ुदा की क़सम! तुम पर भी उसका जादू चल गया।' उत्बा ने कहा, उस आदमी के बारे में मेरी राय यही है, अब तुम्हें जो ठीक मालूम हो करो।'[80]

एक दूसरी रिवायत में इसका ज़िक्र है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब तिलावत शुरू की तो उत्बा चुपचाप सुनता रहा। जब अल्लाह के इस कथन पर पहुंचे----

80) इब्ने हिशाम 1/293-294

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ

"पस अगर वे मुंह मोड़ें तो कह दो कि मैं तुम्हें आद व समूद की कड़क जैसी एक कड़क के ख़तरे से सूचित कर रहा हूं।"

तो उत्बा थर्रा कर खड़ा हो गया और यह कहते हुए अपना हाथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह पर रख दिया कि मैं आपको अल्लाह का और रिश्तेदारों का वास्ता देता हूं (कि ऐसा न करें) उसे ख़तरा था कि कहीं यह डरावा आ न पड़े। उसके बाद वह क़ौम के पास गया और ऊपर कही गई बात चीत हुई।[81]

अबू तालिब बनी हाशिम और बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब को जमा करते हैं!

परिस्थितियां बदल चुकी थीं। आस-पास के वातावरण में अंतर आ चुका था, लेकिन अबू तालिब की आशंका बाक़ी थी। उन्हें मुश्रिकों की तरफ़ से अपने भतीजे के बारे में बराबर ख़तरा महसूस हो रहा था। वह पिछली घटनाओं पर बराबर ग़ौर कर रहे थे, मुश्रिकों ने उन्हें मुक़ाबले की धमकी दी थी फिर उनके भतीजे को अ़म्मारा बिन वलीद के बदले हासिल करके क़त्ल करने के लिए सौदे बाज़ी की कोशिश की थी। अबू जहल एक भारी पत्थर लेकर उनके भतीजे का सर कुचलने उठा था। उत्बा बिन अबी मुईत ने चादर लपेट कर गला घोंटने और मार डालने की कोशिश की थी। ख़त्ताब का बेटा तलवार लेकर उनका काम तमाम करने निकला था। अबू तालिब इन घटनाओं पर विचार करते तो उन्हें एक ऐसे संगीन ख़तरे की गंध महसूस होती जिससे उनका दिल कांप उठता। उन्हें यक़ीन हो चुका था कि मुश्रिक उनका वचन तोड़ने और उनके भतीजे को क़त्ल करने का इरादा कर चुके हैं और इन हालात में ख़ुदा न करे अगर कोई मुश्रिक यकायक आप पर टूट पड़ा तो हम्ज़ा रज़ि० या उमर रज़ि० या कोई और व्यक्ति क्या काम दे सकेगा?

81) तफ़सीर इब्ने कसीर 6/159-161

अबू तालिब के नज़दीक यह बात तय थी और बहरहाल सही भी थी, क्योंकि मुश्रिक खुले तौर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल का फ़ैसला कर चुके थे और उनके इसी फ़ैसले की ओर अल्लाह के इस कथन में संकेत है---- أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ "अगर उन्होंने एक बात का तहैया (इरादा) कर रखा है तो हम भी तहैया किए हुए हैं।" (43:79)

अब सवाल यह था कि इन हालात में अबू तालिब को क्या करना चाहिए। उन्होंने जब देखा कि कुरैश हर ओर से उनके भतीजे के विरोध पर तुल पड़े हैं तो उन्होंने दादा अ़ब्दे मुनाफ़ के दो बेटों हाशिम और मुत्तलिब से वजूद में आने वाले परिवारों को जमा किया और उन्हें दावत दी कि अब तक वह अपने भतीजे की हिफ़ाज़त और समर्थन का जो काम अकेले अंजाम देते रहे हैं, अब उसे सब मिलकर अंजाम दें। अबू तालिब की यह बात अ़रब पक्षपात को देखते हुए इन दोनों ख़ानदानों के सारे मुस्लिम और काफ़िर लोगों ने क़ुबूल की। अलबत्ता सिर्फ़ अबू तालिब का भाई अबू लहब एक ऐसा आदमी था जिसने उसे मंज़ूर न किया और सारे परिवार से अलग होकर कुरैशी मुश्रिकों से जा मिला और उनका साथ दिया।[82]

82) इब्ने हिशाम 1/269,मुख़्तसरुस-सीरः (शेख़ अब्दुल्लाह) 106

पूर्ण बहिष्कार

केवल चार सप्ताह या इससे भी कम समय में मुश्रिकों को चार बड़े धचके लग चुके थे, यानी हज़रत हमज़ा रज़ि० ने इस्लाम अपना लिया, फिर हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए, फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी सौदेबाज़ी रद्द की, फिर क़बीला बनी हाशिम व बनी अब्दुल मुत्तलिब के सारे ही काफ़िर और मुस्लिम लोगों ने एक होकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त का वचन दिया। इससे मुश्रिक चकरा गए और उन्हें चकराना ही चाहिए था, क्योंकि उनकी समझ में आ गया कि अगर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल का क़दम उठाया तो आप की हिफ़ाज़त में मक्का की घाटी मुश्रिकों के ख़ून से लाल हो जाएगी। बल्कि संभव है कि उनका बिल्कुल सफ़ाया ही हो जाए, इसलिए उन्होंने क़त्ल की योजना छोड़ कर ज़ुल्म की एक और राह अपनाई जो उनकी अब तक की तमाम ज़ुल्म भरी कार्यवाहियों से ज़्यादा संगीन थी।

ज़ुल्म व सितम का वचन

इस प्रस्ताव के अनुसार मुश्रिक मुहस्सब की घाटी में ख़ीफ़ बनी कनाना के अंदर जमा हुए और आपस में बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब के ख़िलाफ़ यह निश्चय किया कि न उन से शादी-ब्याह करेंगे, न क्रय-विक्रय करेंगे, न उनके साथ उठें-बैठेंगे, न उनसे मेल-जोल रखेंगे, न उनके घरों में जाएंगे, न उनसे बातचीत करेंगे, जब तक कि वह अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए उनके हवाले न कर दें। मुश्रिकों ने इस बहिष्कार पर एक काग़ज़ तैयार किया जिसमें इस बात का वचन दिया गया था कि वे बनी हाशिम की ओर से कभी भी किसी समझौते के प्रस्ताव को स्वीकार न करेंगे, न उनके साथ किसी तरह की नर्मी दिखाएंगे जब तक कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए मुश्रिकों के हवाले न कर दें।

इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि कहा जाता है कि यह लेख मंसूर बिन इक्रमा बिन आमिर बिन हाशिम ने लिखा था और कुछ के नज़दीक नज़्र बिन हारिस ने लिखा था, लेकिन सही बात यह है कि लिखने वाला बग़ीज़ बिन आमिर बिन हाशिम था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर बद-दुआ की और उसका हाथ बेकार हो गया।[1]

बहरहाल यह बात तय हो गई और काग़ज़ ख़ा-न-ए क़ाबा के भीतर लटका दिया गया। इसके नतीजे में अबू लहब के सिवा बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के सारे लोग, चाहे मुसलमान रहे हों या काफ़िर, सिमट-सिमटा कर अबू तालिब की घाटी में क़ैद कर दिए गए। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल बनाये जाने के सातवें साल मुहर्रम की चांद रात की घटना है।

तीन साल घाटी अबू तालिब में

इस बहिष्कार के नतीजे में हालात बड़े संगीन हो गए, अनाज और खाने पीने के सामान का आना बंद हो गया, क्योंकि मक्का में जो अनाज या बेचने का सामान आता था, उसे मुश्रिक लपक कर ख़रीद लेते थे, इसलिए घिरे हुए लोगों की हालत बड़ी पतली हो गई। उन्हें पत्ते

1) ज़ादुल-मआद 2/46

और चमड़े खाने पड़े। भुखमरी का हाल यह था कि भूख से बिलखते हुए बच्चों और औरतों की आवाज़ें घाटी के बाहर सुनाई पड़ती थीं। उनके पास मुश्किल ही से कोई चीज़ पहुंच पाती थी, वह भी छुप-छुपा कर। वे लोग हराम महीनों के अलावा बाक़ी दिनों में ज़रूरत की चीज़ों की ख़रीद के लिए घाटी से बाहर निकलते भी न थे। वे यद्यपि उन क़ाफ़िलों से सामान ख़रीद सकते थे जो बाहर से मक्का आते थे, लेकिन उनके सामान के दाम भी मक्का वाले इतना बढ़ा कर ख़रीदने के लिए तैयार हो जाते थे कि घिरे हुए लोगों के लिए कुछ ख़रीदना कठिन हो जाता था।

हकीम बिन हिज़ाम जो हज़रत ख़दीजा रज़ि० का भतीजा था, कभी-कभी अपनी फूफी के लिए गेहूं भिजवा देता था। एक बार अबू जहल से वास्ता पड़ गया, वह अनाज रोकने पर अड़ गया, लेकिन अबुल बुख़्तरी ने हस्तक्षेप किया और उसे अपनी फूफी के पास गेहूं भिजवाने दिया।

इधर अबू तालिब को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बराबर ख़तरा लगा रहता था, इसलिए जब लोग अपने-अपने बिस्तरों पर जाते तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि तुम अपने बिस्तर पर सो रहो। मक़्सद यह होता कि अगर कोई आदमी आपको क़त्ल करने की नीयत रखता हो, तो देख ले कि आप कहां सो रहे हैं फिर जब लोग सो जाते तो अबू तालिब आप की जगह बदल देते यानी अपने बेटों, भाइयों या भतीजों में से किसी को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सुला देते और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि तुम उसके बिस्तर पर चले जाओ।

इस घेराव के बाद भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे मुसलमान हज के दिनों में बाहर निकलते थे और हज

के लिए आने वालों से मिल कर उन्हें इस्लाम की दावत देते थे। इस मौक़े पर अबू लहब की जो हरकत हुआ करती थी, उसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में हो चुका है।

लेख फाड़ दिया जाता है

इन हालात पर पूरे तीन साल बीत जाते हैं। इसके बाद मुहर्रम 10 नब्वी[2] में लेख फाड़ दिए जाने और इस जुल्म भरी बातों को ख़त्म किए जाने की घटना घटी। इसकी वजह यह थी कि शुरू ही से क़ुरैश के कुछ लोग अगर इससे राज़ी थे तो कुछ नाराज़ भी थे और इन्ही नाराज़ लोगों ने इस लेख को फाड़ने की कोशिश की।

उसका मूल प्रेरक क़बीला बनू आमिर बिन लुई का हिशाम बिन अम्र नामी एक आदमी था। यह रात के अंधेरे में चुपके-चुपके अबू तालिब घाटी के अंदर अनाज भेज कर बनू हाशिम की मदद भी किया करता था------ यह ज़ुहैर बिन अबी उमैया मख़ज़ूमी के पास पहुंचा-------(ज़ुहैर की मां आतिका, अब्दुल मुत्तलिब की बेटी यानी अबू तालिब की बहन थीं) और उससे कहा, 'ज़ुहैर! क्या तुम्हें यह पसंद है कि तुम तो मज़े से खाओ पियो और तुम्हारे मामूं का वह हाल है जिसे तुम जानते हो?'' ज़ुहैर ने कहा, अफ़सोस! मैं अकेला क्या कर सकता हूं? हां, अगर मेरे साथ कोई और आदमी होता तो मैं इस सहीफ़े को फाड़ने के लिए यक़ीनी तौर पर उठ पड़ता। उसने कहा, अच्छा तो एक आदमी और मौजूद है। पूछा कौन है? कहा मैं हूं। ज़ुहैर ने कहा, अच्छा तो अब तीसरा आदमी खोजो।

---

2) इसका सुबूत यह है कि अबू तालिब की मौत सहीफ़ा फाड़े जाने के 6 महीने बाद हुई और सही बात यह है कि उनकी मौत रजब के महीने में हुई थी। जो लोग यह कहते हैं कि उनकी मौत रमज़ान में हुई थी तो वह यह भी कहते हैं कि उनकी मौत सहीफ़ा फाड़े जाने के 6 महीने बाद नहीं बलकि 8 महीने और कुछ दिन बाद हुई थी दोनों सूरतों में वह महीना जिसमें सहीफ़ा फाड़ा गया मुहर्रम साबित होता है।

इस पर हिशाम, मुत-इम बिन अदी के पास गया और बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब से, जो कि अ़ब्दे मुनाफ़ की औलाद थे, मुत-इम के क़रीबी वंश के ताल्लुक़ का उल्लेख करके उसकी निन्दा की कि उसने उस ज़ुल्म पर क़ुरैश का साथ क्यों दिया?——याद रहे कि मुत-इम भी अ़ब्दे मुनाफ़ ही की नस्ल से था। मुत-इम ने कहा, अफ़सोस, मैं अकेला क्या कर सकता हूं। हिशाम ने कहा, एक आदमी और मौजूद है। मुत-इम ने पूछा, कौन है? हिशाम ने क़हा, मैं। हिशाम ने कहा, अच्छा एक तीसरा आदमी खोजो हिशाम ने कहा, यह भी कर चुका हूं। पूछा, वह कौन है? कहा, ज़ुहैर बिन अबी उमैया। मुत-इम ने कहा, अच्छा, तो अब चौथा आदमी खोजो। इस पर हिशाम बिन अ़म्र, अबुल-बख़्तरी बिन हिशाम के पास गया और उससे भी इसी तरह की बातें की जैसी मुत-इम से की थी। उसने कहा, भला कोई इसकी ताईद भी करने वाला है? हिशाम ने कहा, हां। पूछा कौन? कहा, ज़ुबैर बिन अबी उमैया, मुत-इम बिन अदी और मैं। उसने कहा, अब पांचवां आदमी ढूंढो। इसके लिए हिशाम, ज़मआ़ बिन अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद के पास गया और उससे बातें करते हुए बनू हाशिम से नातेदारी और उनके हक़ याद दिलाए। उसने कहा, भला जिस काम के लिए मुझे बुला रहे हो, उससे कोई और भी सहमत है? हिशाम ने हां में जवाब दिया और सबके नाम बताए। इसके बाद उन लोगों ने जहून के पास जमा होकर आपस में यह वायदा लिया कि ग्रन्थ को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए। ज़ुहैर ने कहाः मैं आरंभ करूँगा, यानी सब से पहले ज़ुबान मैं ही खोलूंगा।

सुबह हुई तो सब लोग आदत के मुताबिक़ महफ़िल में जमा हुए ज़ुहैर भी एक जोड़ा पहने हुए वहां पहुंचा। पहले ख़ा-न-ए काबा के सात चक्कर लगाए, फिर लोगों से मुख़ातब होकर बोला "मक्के वालो! क्या हम खाना खायें, कपड़े पहनें और बनू हाशिम बर्बाद हों, न उन के हाथ

कुछ बेचा जाए और न उन से कुछ ख़रीदा जाये।" अल्लाह की क़सम मैं बैट नहीं सकता यहां तक कि इस जुल्म भरे और रिश्ते तोड़ने वाले लेख को फाड़ न दिया जाए

अबू जहल----जो मस्जिदे हराम के एक कोने में मौजूद था, बोला, "तुम ग़लत कहते हो, ख़ुदा की क़सम! उसे फ़ाड़ा नहीं जा सकता।"

इस पर ज़मआ बिन अस्वद ने कहा, 'ख़ुदा की क़सम! तुम ज़्यादा ग़लत कहते हो। जब यह ग्रन्थ लिखा गया था; तब भी हम उससे राज़ी न थे।'

इस पर अबुल-बुख़तरी ने गिरह लगाई, ज़मआ ठीक कह रहा है, इसमें जो कुछ लिखा गया है उससे न हम राज़ी हैं न इसे मानने को तैयार हैं। इसके बाद मुत-इम बिन अदी ने कहा, तुम दोनों टीक कहते हो और जो इसके ख़िलाफ़ कहता है, ग़लत कहता है। हम इस ग्रन्थ में और इस में जो कुछ लिखा हुआ है, उससे अल्लाह के हुज़ूर अलग होने का एलान करते हैं।

फिर हिशाम बिन अम्र ने इसी तरह से बात कही।

यह सब देख कर अबू जहल ने कहा, हुहं! "यह बात रात में तय की गयी है और इसका मश्विरा यहां के बजाए कहीं और किया गया है।"

इस बीच अबू तालिब भी पाक हरम के एक कोने में मौजूद थे। उनके आने की वजह यह थी कि अल्लाह ने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस ग्रन्थ के बारे में यह ख़बर दी थी कि उस पर अल्लाह ने कीड़े भेज दिए हैं, जिन्होंने जुल्म व सितम और क़रीबी रिश्तेदार होने की सारी बातें चट कर दी हैं और सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र बाक़ी छोड़ा है। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा को यह बात बताई, तो वह क़ुरैश से यह कहने आए थे कि 'उनके भतीजे

ने उन्हें यह ख़बर दी है। अगर वह झूठा साबित हुआ तो हम तुम्हारे और उसके बीच से हट जाएंगे और तुम जो चाहे करना, लेकिन अगर वह सच्चा साबित हुआ तो तुम्हें हमारे बाइकाट और ज़ुल्म से रूक जाना पड़ेगा। जब कुरैश को यह बताया गया तो उन्होंने कहा, आप इंसाफ़ की बात कह रहे हैं।'

उधर अबू जहल और बाक़ी लोगों की नोंक-झोंक ख़त्म हुई तो मुत-इम बिन अदी सहीफ़ा फाड़ देने के लिए उठा। क्या देखता है कि वाक़ई कीड़ों ने उसका सफ़ाया कर दिया है, सिर्फ़ 'बिस्मिकल्लाहुम्मा, बाक़ी रह गया है और जहां-जहां अल्लाह का नाम था वह बचा है, कीड़ों ने उसे नहीं खाया था।

इसके बाद सहीफ़ा फाड़ दिया गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और बाक़ी तमाम लोग घाटी अबू तालिब से निकल आए और मुश्रिकों ने आपकी नुबुवत की एक ज़ोरदार निशानी देखी, लेकिन उनका रवैया वही रहा, जिस का ज़िक्र इस आयत में है।

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُسْتَمِرٌّ

"अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो रूख़ फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह तो चलता फिरता जादू है।" (2:54)

चुनांचे मुश्रिकों ने इस निशानी से भी रुख़ फेर लिया और अपने कुफ़्र की राह में कुछ क़दम और आगे बढ़ गए।[3]

---

3) बाईकाट की यह तफ़सील निम्न लिखित किताबों से तैयार की गई है। बुख़ारी बाबु नुज़ूलिन-नबी (सल्ल०) बि-मक्का 1/216, बाबु तक़ासुमिल-मुश्रिकीन अलन-नबी (सल्ल०) 1/548, ज़ादुल-मआद 2/46, इब्ने हिशाम 1/350-351 तथा 374-377, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/69-70, मुख़्तसरुस-सीरा (शैख़ अब्दुल्लाह) 106-110, मुख़्तसरुस-सीरा (शैख़ मु० बिन अब्दुल-वहाब) 68-73, इन किताबों में कुछ मतभेद भी हैं हमने क़राईन (क्रमानुसार) की रोशनी में यह बात कही है।

अबू तालिब की सेवा में कुरैश का आख़िरी प्रतिनिधि मंडल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने घाटी अबू तालिब से निकलने के बाद फिर पहले ही की तरह दावत व तब्लीग़ का काम शुरु कर दिया और अब मुश्रिकों ने अगरचे बाइकाट ख़त्म कर दिया था, लेकिन वह भी पहले ही की तरह मुसलमानों पर दबाव डालने और अल्लाह की राह से रोकने का सिलसिला जारी रखे हुए थे और जहां तक अबू तालिब का ताल्लुक़ है, तो वह भी अपनी पुरानी रिवायत के मुताबिक़ पूरी जान लगा कर अपने भतीजे की हिफ़ाज़त व हिमायत में लगे हुए थे, लेकिन अब उनकी उम्र अस्सी साल से अधिक हो चुकी थी। कई साल से बराबर संगीन दुख और परेशानियों ने और ख़ास तौर से घाटी में घिरे होने की वजह से वह टूट कर रह गए थे। उनके अंग ढीले पड़ चुके थे और कमर टूट चुकी थी। चुनांचे घाटी से निकलने के बाद कुछ ही महीने बीते थे कि उन्हें भारी बीमारी ने आ पकड़ा। इस मौक़े पर मुश्रिकों ने सोचा कि अगर अबू तालिब का देहान्त हो गया और इसके बाद हम ने उनके भतीजे पर कोई ज़्यादती की तो बड़ी बदनामी होगी, इसलिए अबू तालिब के सामने ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई मामला तय कर लेना चाहिए। इस सिलसिले में वे कुछ ऐसी रियायतें भी देने को तैयार हो गए जिस पर अब तक राज़ी न थे,

चुनांचे उनका एक प्रतिनिधि मंडल अबू तालिब की सेवा में आया और यह उनका अन्तिम प्रतिनिधि मंडल था।

इब्ने इस्हाक़ आदि का बयान है कि जब अबू तालिब बीमार पड़ गए और क़ुरैश को मालूम हुआ कि उनकी हालत ख़राब होती जा रही है तो उन्होंने आपस में कहा कि देखो हमज़ा रज़ि० और उमर रज़ि० मुसलमान हो चुके हैं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का दीन क़ुरैश के हर क़बीले में फैल चुका है, इसलिए चलो अबू तालिब के पास चलें कि वह अपने भतीजे को किसी बात का पाबंद करें और हमसे भी उनके बारे में वायदा ले लें, क्योंकि अल्लाह की क़सम! हमें डर है (लोग उनकी वफ़ात के बाद हमारे) काबू में न रहेंगे। एक रिवायत यह है कि हमें डर है कि यह बूढ़ा मर गया और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कोई गड़बड़ हो गई तो अरब हमें ताना देंगे, कहेंगे कि उन्होंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के छोड़े रखा और (उसके ख़िलाफ़ कुछ करने की हिम्मत न की) लेकिन उसका चचा मर गया तो उस पर चढ़ दौड़े।

बहरहाल क़ुरैश का यह प्रतिनिधि मंडल अबू तालिब के पास पहुंचा और उनसे बात की। प्रतिनिधि मंडल में क़ुरैश के सब से ज़्यादा प्रतिष्ठित लोग थे, यानी उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, अबू जहल बिन हिशाम, उमैया बिन ख़ल्फ़, अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और क़ुरैश के दूसरे नेता लोग, जिनकी कुल तायदाद लगभग 25 थी।

उन्होंने कहा:---

'ऐ अबू तालिब! हमारे बीच आप का जो दर्जा और जो स्थान है, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं और अब आप जिस हालत से गुज़र रहे हैं, वह भी आप के सामने है। हमें डर है कि ये आप के अंतिम दिन हैं। इधर हमारे और आप के भतीजे के बीच जो मामला चल रहा है उसे भी आप जानते हैं। हम चाहते हैं कि आप उन्हें बुलाएं और उनके बारे में हम से वायदे लें यानी वह हम से अलग-थलग रहें और हम उनसे

अलग-थलग रहें। वह हम को हमारे दीन पर छोड़ दें और हम उन को उनके दीन पर छोड़ दें।'

इस पर अबू तालिब ने आपको बुलवाया और आप तशरीफ़ लाए तो कहा, भतीजे! ये तुम्हारी क़ौम के प्रतिष्ठित लोग हैं। तुम्हारे ही लिए जमा हुए हैं। ये चाहते हैं कि तुम्हें कुछ वायदे दे दें और तुम भी इन्हें कुछ वायदे दे दो। इसके बाद अबू तालिब ने उनकी बात कही कि कोई भी फ़रीक़ दूसरे से छेड़-छाड़ न करे।

जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रतिनिधि मंडल को सम्बोधित करके फ़रमाया, आप लोग यह बताएं कि अगर मैं एक ऐसी बात पेश करूं, जिसके अगर आप क़ायल हो जाएं तो अ़रब के बादशाह बन जाएं और अ़जम आप के क़दमों में आ जाए, तो आप की राय क्या होगी? कुछ रिवायतों में यह भी कहा गया कि आप ने अबू तालिब को सम्बोधित करके फ़रमाया, मैं इनसे एक ऐसी बात चाहता हूं जिसके ये क़ायल हो जाएं तो अ़रब इनके अधीन हो जाएं और अजम (ग़ैर अ़रब) इन्हें जिज़्या दें। एक और रिवायत में यह ज़िक्र है कि आपने फ़रमाया, 'चचा जान! आप क्यों न इन्हें एक ऐसी बात की ओर बुलाएं जो इनके हक़ में बेहतर है!' उन्होंने कहा, तुम इन्हें किस बात की ओर बुलाना चाहते हो? आपने फ़रमाया, मैं एक ऐसी बात की ओर बुलाना चाहता हूं जिस के ये क़ायल हो जाएं तो अ़रब इनके आधीन हो जाएं और ग़ैर-अ़रब पर इनकी बादशाही क़ायम हो जाए.. ...... इब्ने इसहाक़ की एक रिवायत यह है कि आपने फ़रमाया, 'आप लोग सिर्फ़ एक बात मान लें जिसकी वजह से आप अ़रब के बादशाह बन जाएंगे और अजम (ग़ैर-अ़रब) आप के अधीन हो जाएगा।'

बहरहाल जब यह बात आपने कही तो वे लोग सोच में पड़ गए और सटपटा से गए। वे हैरान थे कि सिर्फ़ एक बात जो इतनी फ़ायदेमंद है उसे रद्द कैसे कर दें? अन्ततः अबू जहल ने कहा, 'अच्छा बताओ तो वह बात है क्या? तुम्हारे बाप की क़सम! एक ऐसी बात क्या दस बातें

पेश करो तो हम मानने को तैयार है।' आप ने फ़रमाया, 'आप लोग ला इला-ह इल्लल्लाह कहें और अल्लाह के सिवा जो कुछ पूजते हैं उसे छोड़ दें।' इस पर उन्होंने हाथ पीट-पीट कर और तालियां बजा-बजा कर कहा, 'मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम यह चाहते हो कि सारे ख़ुदाओं की जगह बस एक ही ख़ुदा बना डालो, वास्तव में तुम्हारा मामला बड़ा अजीब है।'

फिर आपस में एक दूसरे से बोले, 'ख़ुदा की क़सम! यह आदमी तुम्हारी कोई बात मानने को तैयार नहीं, इसलिए चलो अपने बाप-दादा के दीन पर डट जाओ, यहां तक कि अल्लाह हमारे और इस आदमी के बीच फ़ैसला फ़रमा दे।' इसके बाद उन्होंने अपनी-अपनी राह ली। इस घटना के बाद इन्हीं लोगों के बारे में ये आयतें उतरीं------

صٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ۝ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ۝ وَعَجِبُوْا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ ۝ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ يُّرَادُ ۝ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِى الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝

'स्वाद! क़सम है नसीहत भरे क़ुरआन की, बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया, हेकड़ी और ज़िद में हैं। हम ने कितनी ही क़ौमें इनसे पहले हलाक कर दीं और वे चीख़े चिल्लाए (लेकिन इस वक़्त) जबकि बचने का वक़्त न था, उन्हें ताज्जुब है कि उसके पास ख़ुद उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया, काफ़िर कहते हैं कि यह जादूगर है, बड़ा झूठा है। क्या इसने सारे माबूदों की जगह एक ही माबूद (उपास्य) बना डाला, यह तो बड़ी अजीब बात है। और इनके बड़े यह कहते हुए निकले कि चलो और अपने माबूदों पर डटे रहो। यह एक सोची-समझी चाल है। हमने किसी और मिल्लत में ये बात नहीं सुनी, ये सिर्फ़ गढ़ी हुई बातें हैं।'[1]

1) इब्ने हिशाम 1/417-419, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 93

ग़म का साल

अबू ताबिल की वफ़ातः

अबू तालिब का मरज़ बढ़ता गया, यहां तक कि उनकी वफ़ात (देहान्त) हो गई। उनकी वफ़ात अबू तालिब घाटी के घेराव की समाप्ति के छः महीने बाद रजब सन् 10 नब्वी में हुई[1]। एक कथन यह भी है कि उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ि० की मृत्यु से तीन दिन पहले रमज़ान के महीने में वफ़ात पायी।

सहीह बुख़ारी में हज़रत मुसय्यिब रज़ि० से रिवायत है कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त आया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गए। वहां अबू जहल भी मौजूद था। आप ने फ़रमाया, 'चचा जान! आप 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कह दीजिए, बस एक कलिमा, जिसके ज़रिए मैं अल्लाह के पास हुज्जत पेश कर सकूंगा।' अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन उमैया ने कहा, अबू तालिब! क्या अब्दुल मुत्तलिब की मिल्लत से रुख़ फेर लोगे? फिर ये दोनों उनसे निरन्तर बात करते रहे, यहां तक कि आख़िरी बात जो अबू तालिब ने

---

1) सीरत की किताबों में इस बात को लेकर मतभेद है कि अबू तालिब की मौत किस महीने में हुई। हमने रजब को इसलिए तर्जीह दी है क्योंकि ज़्यादातर किताबों का यही मत है कि उनकी वफ़ात शअब अबी तालिब से निकलने के 6 महीने बाद हुई और घेरा बन्दी मुहर्रम 7 नबवी की चाँद रात से शुरु हुई थी इस हिसाब से इनकी मौत का वक़्त रजब 10 नबवी ही होता है।

लोगों से कही, यह थी कि 'अब्दुल मुत्तलिब की मिल्लत पर।' नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं जब तक आप से रोक न दिया जाऊं, आप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करता रहूंगा' इस पर यह आयत उतरी----

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

"नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों के लिए दुरुस्त नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें, भले ही वे क़रीबी रिश्तेदार हों, जबकि उन पर साफ़ हो चुका है कि वे लोग जहन्नमी हैं।" (9:113)

और यह आयत भी उतरी:---إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ

"आप जिसे पसंद करें, हिदायत नहीं दे सकते।"[2] (28:56)

यहां यह बताने की ज़रूरत नहीं कि अबू तालिब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कितना समर्थन और कितनी सुरक्षा की थी। वह वास्तव में मक्का के बड़ों और मूर्खों के हमलों से इस्लामी दावत के बचाव के लिए एक क़िला थे, लेकिन वह ख़ुद अपने बाप-दादा की मिल्लत पर क़ायम रहे। इसलिए पूरी सफलता न पा सके, चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया, आप अपने चचा के क्या काम आ सके? क्योंकि वह आपकी हिफ़ाज़त करते थे और आप के लिए (दूसरों पर) बिगड़ते (और उनसे लड़ाई मोल लेते) थे। आपने फ़रमाया, वह जहन्नम की एक छिछली जगह में हैं और अगर मैं न होता तो वह जहन्नम के सब से गहरे खड्ड में होते।[3]

2) बुख़ारी बाब क़िस्सतु अबी तालिब 1/548
3) बुख़ारी बाब क़िस्सतु अबी तालिब 1/548

अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० का बयान है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आप के चचा का ज़िक्र हुआ तो आप ने फ़रमाया, मुम्किन है क़ियामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअ़त फ़ायदा पहुंचा दे और उन्हें जहन्नम की एक उथली जगह में रख दिया जाए कि आग सिर्फ़ उनके दोनों टख़नों तक पहुंच सके।[4]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० मौत की गोद में

जनाब अबू तालिब की वफ़ात के दो महीने बाद या सिर्फ़ तीन दिन बाद--- कथनों में मतभेद होने के कारण------हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा भी इस दुनिया से सिधार गईं। उनकी वफ़ात नुबूवत के दसवें साल रमज़ान के महीने में हुई। उस वक़्त वह 65 वर्ष की थीं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्र की पचासवीं मंज़िल में थे।[5]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए बड़ी क़ीमती नेमत थीं। वह एक चौथाई सदी आप के साथ रहीं और इस दौरान दुख, तकलीफ़ का वक़्त आया तो आप के लिए तड़प उठतीं और सब से कठिन घड़ियों में भी आप को शक्ति पहुंचातीं, दावत व तब्लीग़ में आप की मदद करतीं और इस सबसे कठोर जिहाद में आप के कामों में शरीक रहतीं और अपने जान व माल से आप का भला चाहतीं और आप का ग़म दूर करतीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है, जिस वक़्त लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया वह मुझ पर ईमान लायीं। जिस समय लोगों ने मुझे झुठलाया उन्होंने मेरी तस्दीक़ की, जिस वक़्त लोगों ने मुझे महरूम

4) बुख़ारी बाब क़िस्सतु अबी तालिब 1/548

5) रमज़ान में मौत का विवरण इब्ने जोज़ी ने तलक़ीहुल-फ़ुहूम प्र० 7 में और अल्लामा मन्सूरपुरी ने रहमतुल-लिल-आलमीन 2/164 में दिया है।

किया, उन्होंने मुझे अपने माल में शरीक किया और अल्लाह ने मुझे उनसे औलाद दी और दूसरी बीवियों से कोई औलाद न दी।[6]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत जिब्रील अलैहि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह ख़दीजा रज़ि० तशरीफ़ ला रही हैं। इनके पास एक बरतन है, जिस में सालन या खाना या कोई पीने की चीज़ है। जब वह आप के पास आ पहुंचे तो आप उन्हें उनके रब की ओर से सलाम कहें और जन्नत में मोती के एक महल की ख़ुशख़बरी सुना दें, जिसमें न शोर व हंगामा होगा न परेशानी और थकन।[7]

दुख ही दुख

ये दोनों दुखद घटनाएं सिर्फ़ कुछ दिनों ही में घटित हुईं, जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मन दुख और ग़म से भर उठा और इसके बाद क़ौम की ओर से मुसीबतों की बाढ़ आ गयी, क्योंकि अबू तालिब की मौत के बाद उनकी हिम्मत बढ़ गयी और वे खुल कर आप को कष्ट और पीड़ा पहुंचाने लगे। इस स्थिति ने आप के दुख और पीड़ा में और बढ़ौतरी कर दी। आप ने इनसे निराश होकर तायफ़ का रास्ता लिया कि संभव है वहां लोग आप की दावत अपना लें, आप को पनाह दे दें और आप की क़ौम के ख़िलाफ़ आप की मदद करें, लेकिन वहां न कोई पनाह देने वाला मिला, न मदद करने वाला, बल्कि उलटे उन्हें भारी पीड़ा पहुंचाई और ऐसा दुर्व्यवहार किया कि ख़ुद आप की क़ौम ने वैसा दुर्व्यवहार न किया था। (सविस्तार विवरण आगे आ रहा है)

यहां इस बात को दोहराना अनावश्यक न होगा कि मक्का वालों ने जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ ज़ुल्म व

---

6) मुसनद अहमद 6/118

7) बुख़ारी बाब तज़वीजुन-नबी (सल्ल०) ख़दीजा व फ़ज़लिहा 1/539

सितम का बाज़ार गर्म कर रखा था, उसी तरह आप के साथियों के ख़िलाफ़ भी ज़ुल्म करने का सिलसिला जारी रखे हुए थे। चुनांचे आप के हर वक़्त के साथी और गहरे दोस्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० मक्का छोड़ने पर मजबूर हो गए और हब्शा के इरादे से अकेले ही निकल पड़े। लेकिन बरके ग़माद पहुंचे तो इब्ने दुग़न्ना से भेंट हो गयी और वह अपनी पनाह में आपको ले आया।[8]

इब्ने इसहाक़ का बयान है कि जब अबू तालिब इंतिकाल कर गये तो क़ुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी पीड़ा पहुंचाई कि अबू तालिब की ज़िंदगी में कभी इस की आरज़ू भी न कर सकते थे, यहां तक कि क़ुरैश के एक मूर्ख ने सामने आकर आपके सर पर मिट्टी डाल दी। आप इसी हालत में घर तशरीफ़ लाए। मिट्टी आप के सिर पर पड़ी हुई थी। आप की एक बेटी ने उठ कर मिट्टी धोयी। वह धोते हुए रोती जा रही थी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें तसल्ली देते हुये फ़रमाते जा रहे थे कि बेटी! रोओ नहीं अल्लाह तुम्हारे अब्बा की हिफ़ाज़त करेगा। इस बीच आप यह भी फ़रमाते जा रहे थे कि क़ुरैश ने मेरे साथ कोई ऐसा दुर्व्यवहार न किया जो मुझे नापसंद हुआ हो, यहां तक कि अबू तालिब का इंतिकाल हो गया।[9]

इसी तरह लगातार आने वाली परेशानियों और कष्टों के कारण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस साल का नाम 'आमुल हुज़्न' यानी ग़म (दुख) का वर्ष रख दिया और यह साल इसी नाम से इतिहास में मशहूर हो गया।

---

8) अकबर शाह नजीबाबादी ने साबित किया है कि यह घटना इसी साल हुई थी। देखिए तारीख़ इस्लाम 1/120, असली घटना पूरी तफ़सील के साथ इब्ने हिशाम 1/372-374 तथा बुख़ारी 1/552-553 में है।

9) इब्ने हिशाम 1/416

हज़रत सौदा रज़ि० से शादी

इसी साल------ शव्वाल 10 नब्वी------ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ि० से शादी की। यह शुरू के दौर में मुसलमान हो गयी थीं। और हब्शा की दूसरी हिजरत के मौक़े पर हिजरत भी की थी। इनके शौहर का नाम सकरान बिन अ़म्र था। वह भी पुराने मुसलमान थे और हज़रत सौदा रज़ि० ने उन्हीं के साथ हब्शा की ओर हिजरत की थी, लेकिन वह हब्शा ही में------और कहा जाता है कि मक्का वापस आकर मौत की गोद में सो गए। इसके बाद जब हज़रत सौदा रज़ि० की इद्दत (शोक-अवधि) ख़त्म हो गई तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको शादी का संदेश दिया और फिर शादी हो गयी। यह हज़रत ख़दीजा रज़ि० के बाद पहली बीवी हैं जिन से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने शादी की। कुछ वर्ष बाद उन्होंने अपनी बारी हज़रत आइशा रज़ि० को दे दी थी।[10]

---

10) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/165, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 6

शुरू के मुसलमानों का सब्र व जमाव और उसकी वजहें

यहां पहुंच कर गहरी सूझ-बूझ और मज़बूत दिल व दिमाग़ का आदमी भी चकित रह जाता है और बड़ी-बड़ी बुद्धि वाले भी सोच में पड़ जाते हैं कि आख़िर वे क्या वजहें थीं जिन्होंने मुसलमानों को नर्मी के साथ और पूरे जमाव के साथ लगाए रखा? आखिर मुसलमानों ने किस तरह इन असीम ज़ुल्मों को सहन किया, जिन्हें सुन कर रौंगटे खड़े हो जाते हैं और मन कांप जाता है बार-बार खटकने और दिल की गहराईयो से उभरने वाले इस सवाल को देखते हुए मुनासिब मालूम होता है कि इन वजहों पर एक सरसरी नज़र डाल ली जाए।

1. इनमें सब से पहली और महत्वपूर्ण वजह एक अल्लाह पर ईमान और उसका ठीक-ठीक ज्ञान है, क्योंकि जब ईमान दिलों में बैठ जाता है, तो वह पहाड़ों से टकरा जाता है और उसी का पलड़ा भारी रहता है। और जो आदमी ऐसे मज़बूत ईमान और भरपूर यक़ीन से भरा-पुरा हो वह दुनिया की कठिनाइयों को—भले ही वे कितनी भी ज़्यादा भारी-भरकम, ख़तरनाक और कठोर हों----अपने ईमान के मुक़ाबले में उस काई से अधिक महत्व नहीं देता जो बंद-तोड़ और किला-नाश बाढ़ के ऊपरी सतह पर जम जाती है, इसलिए मोमिन अपने यक़ीन और एतेक़ाद की बशाशत (ताज़ा पन) के सामने उन मुश्किलों

की कोई परवाह नहीं करता, क्योंकि-----

فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ

"जो झाग है वह तो बेकार होकर उड़ जाता है और जो फ़ायदा देने वाली चीज़ है, वह ज़मीन में बाक़ी रहती है।" (13:17)

फिर इसी एक वजह से ऐसी वजहें वजूद में आती हैं जो इस जमाव को ताक़त देती हैं, जैसे---

2. आकर्षित करने वाला नेतृत्व

मालूम है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो मुस्लिम उम्मत ही नहीं, बल्कि सारी मानवता के उच्चतम मार्ग-दर्शक और रहनुमा थे, ऐसे शारीरिक सौन्दर्य, सुन्दर आचरण, उच्च चरित्र, शरीफ़ाना (सज्जन-पूर्ण) आदतों और तौर तरीक़ों वाले थे कि दिल अपने आप, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर खिंचे जाते थे और तबीयतें अपने आप, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर निछावर होती थीं। क्योंकि जिन गुणों पर लोग जान छिड़कते हैं, उनसे आप को इतना भरपूर हिस्सा मिला था कि इतना किसी और इंसान को दिया ही नहीं गया। आप महानता और पूर्णता की सब से बड़ी चोटी पर थे, पाकदामनी, अमानतदारी, सच्चाई व सफ़ाई और तमाम भले कामों में आप का वह उच्च स्थान है कि साथी तो साथी, आप के दुश्मनों को भी आप के अलग दिखाई देने पर कभी संदेह न हुआ। आप के मुख से जो बात निकल गई, दुश्मनों को भी यक़ीन हो गया कि वह सच्ची है और होकर रहेगी। घटनाएं इसकी गवाही देती हैं। एक बार क़ुरैश के ऐसे तीन आदमी इकट्ठा हुए जिनमें से हर एक ने अपने बाक़ी दो साथियों से छुप छुप कर अकेले क़ुरआन मजीद सुना था, लेकिन बाद में हर एक का भेद दूसरे पर खुल गया था। इन्हीं तीनों में से अबू जहल भी था, तीनों इकट्ठे हुए तो एक ने अबू जहल से मालूम किया कि बताओ तुम

ने जो कुछ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है उसके बारे में तुम्हारी राय क्या है? अबू जहल ने कहा, मैं ने क्या सुना है? बात असल में यह है कि हमने और बनू अब्दे मुनाफ़ ने बड़कपन और महान होने में एक दूसरे का मुक़ाबला किया। उन्होंने (ग़रीबों और मिस्कीनों को) खिलाया तो हमने भी खिलाया, उन्होंने सफ़र के लिए सवारियां दीं, तो हमने भी दीं, उन्होंने लोगों को भेंट दिए, तो हमने भी ऐसा किया, यहां तक कि जब हम और वह घुटनों-घुटनों एक दूसरे के बराबर हो गए और हमारी और उनकी हैसियत रेस के मुक़ाबले में शामिल घोड़े की हो गयी, तो अब बनू अब्दे मुनाफ़ कहते हैं कि हमारे अंदर एक नबी है जिस के पास आसमान से वह्य आती है, भला बताइए हम इसे कब पा सकते हैं? ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा की क़सम! हम उस आदमी पर ईमान न लाएंगे और उसकी हरगिज़ पुष्टि न करेंगे?[1] चुनाचें अबू जहल कहा करता था! 'ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हम तुम्हें झूठा नहीं कहते, लेकिन तुम जो कुछ लेकर आए हो उसे झुठलाते हैं।' इसी बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी----

فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ

"ये लोग आप को नहीं झुठलाते, बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं।"[2] (6:23)

इस घटना का विवरण पीछे बीत चुका है कि एक दिन कुफ़्फ़ार ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन बार लानत-मलामत की तीसरी दफ़ा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ क़ुरैश की जमाअत! मैं तुम्हारे पास ज़िब्ह (का हुक्म) लेकर आया हूं तो यह बात उन पर इस तरह असर कर गई कि जो आदमी दुश्मनी में सब से बढ़ कर था, वह भी बेहतर से बेहतर जो वाक्य पा सकता था, उसके

1) इब्ने हिशाम 1/316
2) तिरमिज़ी तफ़सीर सूरःअल-अनआम 2/132

ज़रिए आप को राज़ी करने की कोशिश में लग गया। इसी तरह इसका भी विवरण बीत चुका है कि जब सज्दे की हालत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ओझड़ी डाली गयी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सर उठाने के बाद इस हरकत के करने वालों पर बद-दुआ की, तो उनकी हंसी हवा हो गयी और उनके भीतर दुख और रंज की लहर दौड़ गयी। उन्हें विश्वास हो गया कि अब हम बच नहीं सकते।

यह घटना भी बयान की जा चुकी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू लहब के बेटे उतैबा पर बद-दुआ की तो उसे यक़ीन हो गया कि वह आप की बद-दुआ की पकड़ से बच नहीं सकता। चुनांचे उसने शाम देश के सफ़र में शेर को देखते ही कहा, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का में रहते हुए मुझे क़त्ल कर दिया।

उबई बिन ख़ल्फ़ की घटना है कि वह बार-बार आप को क़त्ल की धमकियां दिया करता था, एक बार आप ने जवाब के तौर पर फ़रमाया कि (तुम नहीं) बल्कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा, इनशाअल्लाह। इसके बाद जब आप ने उहुद की लड़ाई के दिन उबई की गरदन पर नेज़ा मारा, तो अगरचे उससे मामूली खरौंच आयी थी, लेकिन उबई बराबर यही कहे जा रहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुझ से मक्का में कहा था कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा, इसलिए अगर वह मुझ पर थूक ही देता, तो भी मेरी जान निकल जाती।[3] (तफ़्सील आगे आ रही है)

इसी तरह एक बार हज़रत साद बिन मुआज़ ने मक्का में उमैया बिन ख़लफ़ से कह दिया कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मुसलमान तुम्हें क़त्ल करेंगे, तो उससे उमैया पर बड़ी घबड़ाहट छा गई जो बराबर क़ायम रही।

3) इब्ने हिशाम 2/84

चुनांचे उसने निश्चय कर लिया कि वह मक्का से बाहर ही न निकलेगा और जब बद्र की लड़ाई के मौक़े पर अबू जहल के आग्रह से मजबूर होकर निकलना पड़ा, तो उसने मक्का का सबसे तेज चलने वाला ऊंट ख़रीदा ताकि ख़तरों की निशानियों के ज़ाहिर होते ही चम्पत हो जाए। इधर लड़ाई में जाने पर तैयार देख कर उसकी बीवी ने भी टोका कि अबू सफ़वान! आपके यसरबी भाई ने जो कुछ कहा था, उसे आप भूल गए? अबू सफ़वान ने जवाब दिया कि नहीं, मैं ख़ुदा की क़सम! उनके साथ थोड़ी ही दूर जाऊंगा।[4]

यह तो आपके दुश्मनों का हाल था। बाक़ी रहे आपके सहाबा और साथी तो आप तो उन के लिए, आंख, दिल, जान और रूह की हैसियत रखते थे। उनके दिल की गहराइयों से आप को सच्ची मुहब्बत वाली भावनाएं इस तरह उबलती थीं जैसे नीचे की ओर पानी बहता है और जान व दिल इस तरह आप की ओर खिंचते थे, जैसे लोहा चुम्बक की तरफ़ खिंचता है———

فصورته هيولى كل جسم ومغناطيس افئدة الرجال

"आप की शक्ल हर जिस्म का रूप थी और आप का वजूद हर दिल के लिए चुम्बक।"

इस मुहब्बत और फ़िदा होने और जान तक निछावर कर देने की भावना का फल यह था कि सहाबा किराम रज़ि० को यह पंसद न था कि आप के नाख़ून में खरोंच तक आए, या आप के पावों में कांटा ही चुभ जाए भले ही इसके लिए उनकी गरदनें ही क्यों न कूट दी जाएं।

एक दिन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को बुरी तरह कुचल दिया गया और उन्हें कड़ी मार मारी गयी। उत्बा बिन रबीआ़ उनके क़रीब आकर उन्हें दो पैवन्द लगे हुए जूतों से मारने लगा। चेहरे को ख़ासतौर से

4) बुख़ारी 2/563

निशाना बनाया। फिर पेट पर चढ़ गया। हालत यह थी कि चेहरे और नाक का पता नहीं चल रहा था। फिर उनके क़बीले बनू तैम के लोग उन्हें एक कपड़े में लपेट कर घर ले गए। उन्हें यक़ीन था कि अब यह ज़िंदा न बचेंगे, लेकिन दिन ख़त्म होते-होते उनकी ज़ुबान खुल गई (और ज़ुबान खुली तो यह) बोले कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) क्या हुए? इस पर बनू तैम ने उन्हें सख़्त-सुस्त कहा, निन्दा की और उनकी मां उम्मुल ख़ैर से यह कह कर उठ खड़े हुए कि उन्हें कुछ खिला-पिला देना। जब वह अकेली रह गयीं, तो उन्होंने अबू बक्र रज़ि० से खाने पीने के लिए आग्रह किया, लेकिन अबू बक्र रज़ि० यही कहते रहे कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का क्या हुआ? आख़िर में उम्मुल ख़ैर ने कहा, "मुझे तुम्हारे साथी का हाल मालूम नहीं। अबू बक्र रज़ि० ने कहा, उम्मे जमील बिन्त ख़त्ताब के पास जाओ और उससे मालूम करो। वह उम्मे जमील के पास गईं और बोलीं, "अबू बक्र रज़ि० तुम से मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के बारे में मालूम कर रहे हैं।" उम्मे जमील ने कहा, मैं न अबू बक्र रज़ि० को जानती हूं न मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को, अलबत्ता अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बेटे के पास चल सकती हूं। उम्मुल ख़ैर ने कहा, बेहतर है। इसके बाद उम्मे जमील उनके साथ आईं, देखा तो अबू बक्र बड़े बुरे हाल में पड़े थे। फिर क़रीब हुईं तो चीख़ पड़ी और कहने लगी, "जिस क़ौम ने यह दुर्गत बनाई है, वह यक़ीनी तौर पर दुष्ट और काफ़िर क़ौम है, मुझे उम्मीद है कि अल्लाह आप का बदला इससे लेकर रहेगा।" अबू बक्र रज़ि० ने पूछा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क्या हुए? उन्होंने कहा, यह आप की मां सुन रही हैं। कहा कोई बात नहीं। बोली, आप सही सालिम हैं। पूछा, कहां हैं? कहा, इब्ने अरक़म के घर में हैं। अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा तो फिर अल्लाह के लिए मुझ पर वायदा है कि मैं न

कोई खाना खाऊंगा, न पानी पियूंगा, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो जाऊं। इसके बाद उम्मुल ख़ैर और उम्मे जमील रुकी रहीं। जब आना-जाना बंद हो गया और सन्नाटा छा गया तो ये दोनों अबू बक्र रज़ि० को लेकर निकलीं वह उन पर टेक लगाए हुए थे और इस तरह उन्होंने अबू बक्र रज़ि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचा दिया।[5]

मुहब्बत और जान निछावर करने की कुछ और भी अनोखी घटनाएं हम अपनी इस किताब में मौक़े-मौक़े से नक़ल करेंगे। ख़ास तौर से उहद की लड़ाई की घटनाएं और जो हज़रत ख़ुबैब रज़ि० के हालात के सिलसिले में हैं।

3. ज़िम्मेदारी का एहसास

सहाबा किराम रज़ि० जानते थे कि यह मुट्ठी भर मिट्टी, जिसे इंसान कहा जाता है, इस पर कितनी भारी भरकम और ज़बरदस्त ज़िम्मेदारियां हैं और यह कि इन ज़िम्मेदारियों से किसी रूप में नहीं बचा जा सकता और न किनारा किया जा सकता है, क्योंकि इस बचने के जो नतीजे होंगे वे मौजूदा ज़ुल्म व सितम से ज़्यादा भयानक और विनाशक होंगे और इस बचने के बाद ख़ुद उनको और सारी मानवता को जो घाटा होगा, वह इतना ज़्यादा होगा कि इस ज़िम्मेदारी के नतीजे में सामने आने वाली कठिनाइयां इस घाटे के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखतीं।

4. आख़िरत पर ईमान

जो ज़िक्र की गयी ज़िम्मेदारी के एहसास को ताक़त पहुंचाने की वजह थी, सहाबा किराम रज़ि० इस बात पर अडिग विश्वास रखते थे कि उन्हें दुनियाओं के पालनहार के सामने खड़े होना है, फिर उनके

5) अल-बिदाया वन-निहाया 3/30

छोटे-बड़े और मामूली हर प्रकार के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा। इसके बाद या तो नेमतों भरी हमेशा की जन्नत होगी या अ़ज़ाब से भड़कती हुई जहन्नम। इस यक़ीन का नतीजा यह था कि सहाबा किराम रज़ि० अपना जीवन उम्मीद और शक की हालत में गुज़ारते थे यानी अपने पालनहार की रहमत की उम्मीद रखते थे और उसके अ़ज़ाब का डर भी। और इनकी स्थिति वही रहती थी जो इस आयत में बयान की गई है कि-----

يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ

"वे जो कुछ करते हैं, दिल के इस डर के साथ करते हैं कि उन्हें अपने पालनहार के पास पलट कर जाना है।" (22:60)

उन्हें इसका भी यक़ीन था कि दुनिया अपनी सारी नेमतों और मुसीबतों समेत आख़िरत के मुक़ाबले में मच्छर के एक पर के बराबर भी नहीं और यह यक़ीन इतना पक्का था कि उससे दुनिया की मुश्किलें, मशक़्क़तें और कड़ुवाहटें तुच्छ थीं। इसलिए वह इन मुश्किलों और कड़ुवाहटों को कोई अहमियत नहीं देते थे।

5. इन्हीं ख़तरों भरे और अंधेरों भरे हालात में ऐसी सूरतें और आयतें भी उतर रही थीं, जिनमें बड़े ठोस और आकर्षक शैली में इस्लाम के तमाम बुनियादी उसूलों पर दलीलें और तर्क क़ायम किए गए थे और उस वक़्त इस्लाम की दावत इन्ही नियमों के चारों ओर घूम रही थी। इन आयतों में अहले इस्लाम को ऐसे प्रारंभिक उसूल बतलाए जा रहे थे, जिन पर अल्लाह तआ़ला ने पूरी इंसानी दुनिया के सब से अच्छे और सुंदर समाज यानी इस्लामी समाज के निर्माण व बनावट का आध ार रखा था। और इन आयतों में मुसलमानों की भावनाओं को जमाव और अंथक जद्दोजहद पर उभारा जा रहा था, इसके लिए मिसालें दी जा रही थीं और इसके लिए हिक्मतें बयान की जा रही थीं।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ
الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ
أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ

"तुम समझते हो कि जन्नत में चले जाओगे, हालांकि अभी तुम पर उन लोगों जैसी हालत नहीं आयी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं। वे सख़्तियों और बद-हालियों से दो चार हुए और झिंझोड़ दिये गये, यहां तक कि रसूल और जो लोग उन पर ईमान लाए थे, वे बोल उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। सुनो! अल्लाह की मदद क़रीब ही है।" (2:214)

الٓمٓ ۝ أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ۝

"अलिफ़-लाम-मीम! क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन्हें यह कहने पर छोड़ दिया जाएगा कि हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश नहीं की जाएगी, हालांकि इनसे पहले जो लोग थे, हमने उनकी आज़माइश की, इसलिए (उनके बारे में भी) अल्लाह यह ज़रूर मालूम करेगा कि किन लोगों ने सच कहा और यह भी ज़रूर मालूम करेगा कि कौन लोग झूठे हैं।" (29:1-3)

और इन्ही के साथ-साथ ऐसी आयतें भी उतर रहीं थीं, जिनमें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की आपत्तियों के मुहं-तोड़ जवाब दिए गए थे। उनके लिए कोई बहाना नहीं छोड़ा गया था और उन्हें साफ़-साफ़ और दो टूक शब्दों में बता दिया गया था कि अगर वे अपनी गुमराही पर अड़े रहे तो इस के नतीजे कितने कठोर होंगे। इस के सबूत मे गुज़री क़ौमों की एसी घटनायें और तारीख़ी गवाहियां पेश की गई थीं, जिन से स्पष्ट होता है कि अल्लाह की सुन्नत अपने समर्थकों और शत्रुओं के बारे में क्या है। फिर इस डरावे के साथ-साथ दया कृपा की बातें भी की जा रही थीं और समझने-समझाने, रास्ता दिखाने और रहनुमाई करने का हक़ भी

अदा किया जा रहा था, ताकि रुक जाने वाले अपनी खुली गुमराही से रुक सकें।

हक़ीक़त में क़ुरआन मुसलमानों को एक दूसरी ही दुनिया की सैर कराता था और उन्हें सृष्टि के दृश्य, रब होने का जमाल, इलाह होने के कमाल, दया व नम्रता की निशानियां और पसंद व रिज़ा के ऐसे-ऐसे जलवे दिखाता था कि उनके खिंचाव और शौक़ के आगे कोई रुकावट बाक़ी रह न सकती थी।

फिर इन्हीं आयतों में मुसलमानों से ऐसे-ऐसे सम्बोधन होते थे, जिनमें पालनहार की ओर से रहमत व रिज़्वान और हमेशा रहने वाली नेमतों से भरी हुई जन्नत की ख़ुशख़बरी होती थी और ज़ालिम व सरकश दुश्मनों और काफ़िरों की उन हालतों का चित्रण होता था कि वे दुनिया के पालनहार की अदालत में फ़ैसले के लिए खड़े किए जाएंगे। इनकी भलाइयां और नेकियां ज़ब्त कर ली जाएंगी और उन्हें चेहरों के बल घसीट कर यह कहते हुए जहन्नम में फेंक दिया जाएगा कि, लो जहन्नम का मज़ा लो।

6. सफलता की शुभ सूचनाएं

इन सारी बातों के अलावा मुसलमानों को अपना मज़्लूम होना पहले ही दिन से——बल्कि इसके भी पहले से——मालूम था कि इस्लाम अपनाने का मतलब यह नहीं है कि हमेशा की मुसीबतें और तबाहियां मोल ले ली गईं, बल्कि इस्लामी दावत पहले ही दिन से जाहिलियत (अज्ञानता) अज्ञानियों और उसकी ज़ुल्म भरी व्यवस्था की समाप्ति का निश्चय रखती है और इस दावत का अहम निशाना यह भी है कि वह धरती पर अपना प्रभाव फैलाए पर दुनिया के राजनीतिक दृष्टिकोण पर इस तरह छा जाए कि मानव समाज और दुनिया की क़ौमों को अल्लाह की मर्ज़ी की ओर ले जा सके और उन्हें बंदों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बंदगी में दाख़िल कर सके।

कुरआन मजीद में ये शुभ सूचनाएं---कभी इशारे में और कभी खुल कर उतरती थीं, चुनांचे एक ओर परिस्थितियां यह थीं कि मुसलमानों पर यह पूरी धरती अपने सारे फैलाव के बावजूद तंग बनी हुई थी और ऐसा लगता था कि अब वे पनप न सकेंगे, बल्कि उनका पूरा सफ़ाया कर दिया जाएगा, मगर दूसरी ओर इन्हीं निरुत्साहित करने वाली परिस्थितियों में ऐसी आयतें भी उतरती रहती थीं, जिनमें पिछले नबियों की घटनाएं और उनकी क़ौम के झुठलाने और इंकार करने का विवरण मिलता था। और इन आयतों में उनका जो चित्र खींचा जाता था, वह ठीक वही होता था जो मक्का के मुसलमानों और क़ाफ़िरों के बीच मौजूद था इसके बाद यह भी बताया जाता था कि इन हालात के नतीजे में किस तरह काफ़िरों और ज़ालिमों को हलाक किया गया और अल्लाह के नेक बंदों को धरती का वारिस बनाया गया। इस तरह इन आयतों में स्पष्ट संकेत होता था कि आगे चल कर मक्का वाले नाकाम व नामुराद रहेंगे और मुसलमान और उनकी इस्लामी दावत को सफलता मिलेगी। फिर इन्हीं हालतों और दिनों में कुछ ऐसी भी आयतें उतर जाती थीं जिनमें स्पष्ट रूप से ईमान वालों के ग़ालिब होने की शुभ सूचना होती थी, जैसे अल्लाह का इर्शाद है------

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ○ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ○ وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ○ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّى حِينٍ ○ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ○ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ○ فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ○

"अपने भेजे हुए बन्दों के लिए हमारा पहले ही यह फ़ैसला हो चुका है कि उनकी ज़रूर मदद की जाएगी, और यक़ीनी तौर पर हमारी ही सेना ग़ालिब रहेगी। पस ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! एक समय तक के लिए तुम उनसे रुख़ फेर लो, और उन्हें देखते रहो, बहुत जल्द ये ख़ुद भी देख लेंगे। क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं? तो जब वह उसके आंगन में उतर पड़ेगा, तो डराए गए लोगों की सुबह बुरी हो जाएगी।"

(37:171-177)

और यह भी फ़रमाया—

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ

"बहुत जल्द उस गुट को पराजय का मुख देखना पड़ेगा और ये लोग पीठ फेर कर भागेंगे।" (54-45)

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ

"यह जथों में से एक मामूली सा जथा है, जिसे यही पराजय मिलेगी" (38-11)

हब्शा के मुहाजिरों के बारे में इर्शाद हुआ—

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

"जिन लोगों ने ज़ुल्म का शिकार बनने के बाद अल्लाह की राह में हिजरत की, हम उन्हें यक़ीनी तौर पर दुनिया में बेहतरीन ठिकाना देंगे और आख़िरत का बदला बहुत ही बड़ा बदला है, अगर लोग जानें।" (16:41)

इसी तरह कुफ़्फ़ार ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की घटना पूछी तो जवाब में गौण रूप से (ज़िमनी तौर पर) यह आयत भी उतरी—

لَّقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِّلسَّائِلِينَ

"यूसुफ़ और उनके भाइयों (की घटना) में पूछने वालों के लिए निशानियां हैं।" (12:7)

यानी मक्का वाले जो आज हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की घटना पूछ रहे हैं। ये ख़ुद भी उसी तरह असफल होंगे, जिस तरह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई असफल हुए थे और इनके विफल होने का हाल वही होगा जो उनके भाइयों का हुआ था। इन्हें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उनके भाइयों से शिक्षा लेनी चाहिए कि ज़ालिम का क्या अंजाम

होता है। एक जगह पैग़म्बरों का ज़िक्र करते हुए इर्शाद हुआ—

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝

"कुफ़्फ़ार ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुम्हें अपनी ज़मीन से ज़रूर निकाल देंगे या यह कि तुम हमारी मिल्लत में ज़रूर वापस आ जाओ। इस पर उन के रब ने उनके पास वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को यक़ीनी तौर पर हलाक कर देंगे। यह (वायदा) है उस आदमी के लिए जो मेरे पास खड़े होने से डरे और मेरे डरावों से भय खाए।' (14:13-14)

इसी तरह जिस वक़्त फ़ारस और रूम में आग के शोले भड़क रहे थे और काफ़िर चाहते थे कि फ़ारस के लोग ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि फ़ारसी मुश्रिक थे और मुसलमान चाहते थे कि रूमी ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि बहरहाल रूमी अल्लाह पर, पैग़म्बरों पर, वह्य पर, आसमानी किताबों और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने के दावेदार थे, लेकिन ग़लबा फ़ारसियों को हासिल होता जा रहा था, तो उस वक़्त अल्लाह ने यह ख़ुशख़बरी नाज़िल फ़रमायी कि कुछ साल बाद रूमी ग़ालिब आ जाएंगे लेकिन इसी एक ख़ुशख़बरी को काफ़ी न समझा, बल्कि इस सिलसिले में यह ख़ुशख़बरी भी उतारी कि रूमियों के ग़लबे के वक़्त अल्लाह ईमान वालों की भी ख़ास मदद फ़रमाएगा, जिससे वे ख़ुश हो जाएंगे। चुनांचे इर्शाद है कि—

وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ بِنَصْرِ اللّٰهِ

"उस दिन ईमान वाले भी अल्लाह की (एक ख़ास) मदद से ख़ुश हो जाएंगे।" (30:4-5)

(और आगे चल कर अल्लाह की यह मदद बद्र की लड़ाई में हासिल होने वाली बड़ी सफलता और विजय की शक्ल में ज़ाहिर हुई।)

कुरआन के अलावा ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी मुसलमानों को कभी-कभी इस तरह की ख़ुशख़बरी सुनाया करते थे, चुनांचे हज के मौसम में आप उकाज़, मिजन्ना और ज़ुल-मजाज़ के बाज़ारों में लोगों के अंदर इस्लाम की तब्लीग़ के लिए तशरीफ़ ले जाते तो सिर्फ़ जन्नत ही की ख़ुशख़बरी नहीं देते थे, बल्कि स्पष्ट शब्दों में इसका भी एलान फ़रमाते थे:

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا وَ تَمْلِكُوْا بِهَا الْعَرَبَ وَ تَدِيْنُ لَكُمْ بِهَا الْعَجَمُ فَاِذَا مُتُّمْ كُنْتُمْ مُلُوْكًا فِي الْجَنَّةِ[6]

"लोगों! ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो, सफल रहोगे और इसकी वजह से अ़रब के बादशाह बन जाओगे और इसकी वजह से अ़जम भी तुम्हारे अधीन आ जाएगा। फिर जब तुम वफ़ात पाओगे तो जन्नत के अंदर बादशाह रहोगे।"

यह घटना पिछले पृष्ठों में बीत चुकी है जब उत्बा बिन रबीआ़ ने आप को दुनिया का क़ीमती माल देने की बात कह कर सौदेबाज़ी करनी चाही और आप ने जवाब में हामीम तंज़ील अस्सज्दा की आयतें पढ़ कर सुनायीं तो उत्बा को यह आशा हो चली कि आप ग़ालिब होकर ही रहेंगे।

इसी तरह अबू तालिब के पास आने वाले क़ुरैश के अन्तिम प्रतिनिधि मंडल की आप से जो बातें हुई थीं, उसका भी सविस्तार वर्णन बीत चुका है। इस अवसर पर भी आप ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया था कि आप उनसे सिर्फ़ एक बात चाहते हैं जिसे वे मान लें तो अ़रब उनका अधीन हो जाए और अ़जम पर उनकी बादशाहत क़ायम हो जाए।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त का इर्शाद है कि एक बार मैं नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ। आप काबा के

6) तिरमिज़ी

साए में एक चादर को तकिया बनाए तशरीफ़ रखते थे। उस वक़्त हम मुश्रिकों के हाथों सख़्ती से दोचार थे। मैंने कहा, "क्यों न आप अल्लाह से दुआ फ़रमाएं।" यह सुन कर आप उठ बैठे। आप का चेहरा लाल हो गया और आपने फ़रमाया, जो लोग तुम से पहले थे, उनकी हड्डियों तक मांस और अंगों में लोहे की कंघियां कर दी जाती थीं, लेकिन यह सख़्ती भी उन्हें दीन से रोक न पाती थी। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह इस मामले को यानी दीन को पूरा करके रहेगा, यहां तक कि घुड़-सवार सनआ से हज़र-मौत जाएगा और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा अल्बत्ता बकरी पर भेड़िए का डर होगा।"[7] एक रिवायत में इतना और भी है कि——लेकिन तुम लोग जल्दी कर रहे हो।[8] याद रहे ये ख़ुशख़बरी कुछ ढकी-छिपी न थी, बल्कि जानी-पहचानी और मशहूर थी और मुसलमानों ही की तरह कुफ़्फ़ार भी इन्हें जानते थे, चुनांचे जब अस्वद बिन मुत्तलिब और उसके साथी, सहाबा किराम (रज़ि०)को देखते तो ताना देते हुए आपस में कहते कि लीजिए, आप के पास धरती के बादशाह आ गए हैं। यह जल्द ही क़ैसर व किसरा के बादशाहों को हरा देंगे। इसके बाद वे सीटियां और तालियां बजाते।[9]

बहरहाल सहाबा किराम के ख़िलाफ़ उस वक़्त ज़ुल्म व सितम और मुसीबतों और परेशानियों का जो हर ओर तूफ़ान मचा हुआ था, उसकी हैसियत जन्नत हासिल करने की इन यक़ीनी उम्मीदों और चमकते हुए और आदर वाले भविष्य की उन शुभ सूचनाओं के मुक़ाबलों में उस बादल से अधिक न थी जो हवा के एक ही झटके से बिखर कर रह जाता है।

---

7) बुख़ारी 1/543
8) बुख़ारी 1/510
9) फ़िक़्हुस-सीरा 84

इसके अलावा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईमान वालों को ईमानी प्रलोभनों के ज़रिए बराबर आध्यात्मिक भोजन जुटा रहे थे, किताब और हिक्मत की शिक्षा के माध्यमों से उनके मन पाक कर रहे थे। बड़ी मज़बूत और गहरी ट्रेनिंग दे रहे थे और आत्मा की उच्चता, हृदय की सफ़ाई, चरित्र के पवित्रता, नैतिकता के छा जाने से बचाव, वासना से अलगाव और आसमानों और ज़मीन के पालनहार के खिंचाव की जगहों की जानिब उनके पाक नफ़्सों की रहनुमाई (मार्ग-दर्शन) कर रहे थे। आप उनके दिलों की बुझती हुई चिंगारी को भड़कते हुए शोलों में बदल देते थे और उन्हें अंधेरों से निकाल कर हिदायत की रोशनी में पहुंचा रहे थे, उन्हें कष्टों पर सब्र की नसीहत फ़रमाते थे और शरीफ़ों की तरह माफ़ी और सहन-शीलता की हिदायत देते थे। इसका नतीजा यह था कि उनकी दीनी दृढ़ता बराबर बढ़ती गयी और वे मन के उलझावों में फंसने के बजाए अल्लाह की रिज़ा (ख़ुशी) हासिल करने के लिए और जन्नत पाने के शौक़, ज्ञान पाने का लोभ, दीन की समझ, नफ़्स का हिसाब किताब रखने, भावनाओं को दबाने, रुझानों को मोड़ने, उलझनों पर क़ाबू पाने और सब्र व सुकून और मान-सम्मान का हक़दार बनाने में पूरी दुनिया के लिए एक अनमोल आदर्श बन गए।

मक्का के बाहर इस्लाम की दावत

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तायफ़ में

शव्वाल[1] सन् 10 नुबूवत (मई के आख़िर या जून के शुरू में सन् 619 ई०) में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तायफ़ तशरीफ़ ले गए। यह मक्का से लगभग साठ मील दूर है। आप ने यह दूरी आते-जाते पैदल तय फ़रमाई थी। आपके साथ आप के आज़ाद किए हुए दास हज़रत ज़ैद बिन हारिसा थे। रास्ते में जिस क़बीले से गुज़र होता, उसे इस्लाम की दावत देते, लेकिन किसी ने यह दावत क़ुबूल न की। जब तायफ़ पहुंचे तो क़बीला सक़ीफ़ के तीन सरदारों के पास तशरीफ़ ले गए, जो आपस में भाई थे और जिन के नाम ये थे-----अब्द या लैल, मसूऊद और हबीब। इन तीनों के पिता का नाम अ़म्र बिन उमैर सक़फ़ी था। आप ने उनके पास बैठने के बाद उन्हें अल्लाह की इताअ़त (आज्ञापालन) और इस्लाम की मदद की दावत दी। जवाब में एक ने कहा कि वह काबे का पर्दा फाड़े, अगर अल्लाह ने तुम्हें रसूल बनाया हो।[2] दूसरे ने कहा,

---

1) मौलवी नजीबाबादी ने तारीख़े इस्लाम 1/22 में इसकी व्याख्या की है और मेरे नज़दीक भी यही सही है।

2) यह उर्दू की उस कहावत से मिलता जुलता है कि " अगर तुम पैग़म्बर हो तो अल्लाह मुझे ग़ारत करे" जिस से वह बताना है कि तुम्हारा पैग़म्बर होना उसी तरह असंभव है जिस तरह कअ़बे के परदे पर दस्तदराज़ी (हस्ताहस्ती) करना असंभव है।

"क्या अल्लाह को तुम्हारे अलावा कोई और न मिला?" तीसरे ने कहा, "मैं तुम से हर्गिज़ बात न करूंगा। अगर तुम वाक़ई पैग़म्बर हो तो तुम्हारी बात रद्द करना मेरे लिए इंतिहाई ख़तरनाक है और अगर तुमने अल्लाह पर झूठ गढ़ रखा है तो फिर मुझे तुमसे बात करनी ही नहीं चाहिए।" यह जवाब सुनकर आप वहां से उठ खड़े हुए और सिर्फ़ इतना फ़रमाया, "तुम लोगों ने जो कुछ किया, किया, बहरहाल इसे परदे में ही रखना।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ में दस दिन ठहरे। इस बीच आप उनके एक-एक सरदार के पास तशरीफ़ ले गए और हर एक से बातें की, लेकिन सब का एक ही जवाब था कि तुम हमारे शहर से निकल जाओ, बल्कि उन्होंने अपने गुंडों को शह दे दी। चुनांचे जब आप ने वापसी का इरादा फ़रमाया तो ये बदमाश गालियां देते, तालियां पीटते और शोर मचाते आप के पीछे लग गए और देखते-देखते इतनी भीड़ जमा हो गई कि आपके रास्ते के दोनों तरफ़ लाइन लग गयी फिर गालियों और गन्दी बातों के साथ-साथ पत्थर भी चलने लगे, जिससे आपकी एड़ी पर इतने घाव आए कि दोनों जूते ख़ून से भर गए। इधर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ढाल बन कर चलते हुए पत्थरों को रोक रहे थे जिस से उनके सर में कई जगह चोट आई। बदमाशों ने यह सिलसिला बराबर जारी रखा, यहां तक कि आप को रबीआ के बेटों उत्बा और शैबा के एक बाग़ में श्रण लेने पर मजबूर कर दिया। यह बाग़ ताइफ़ से तीन मील की दूरी पर स्थित था। जब आप ने यहां पनाह ली तो भीड़ वापस चली गई और आप एक दीवार से टेक लगा कर अंगूर की बेल की छाया में बैठ गए, कुछ इत्मीनान हुआ तो दुआ फ़रमाई जो दुआ-ए-मुस्तज़अफ़ीन (कमज़ोरों की दुआ) के नाम से मशहूर है। इस दुआ के एक-एक वाक्य से अंदाज़ा किया जा सकता है कि तायफ़ में इस दुर्व्यवहार का सामना करने के बाद और किसी एक भी आदमी के

ईमान न लाने की वजह से आप के दिल पर कितना असर था और आप की भावनाओं पर दुख, रंज, ग़म और अफ़सोस का कितना ग़लबा था, आप ने फ़रमाया---

اللهم اليک اشکو ضُعْفَ قوتی وقلةَ حيلتی وهَوَانی علی الناس يا ارحم
الراحمين، انت رَبُّ المستضعفين وانت ربی، الیٰ من تَكِلُنی؟ الیٰ بعيد
يَتَجَهَّمُنی ام الیٰ عَدُوٍّ ملكته امری؟ ان لم يكن بک علیَّ غَضَبٌ فلا اُبالی،
ولكن عافيتک هی اوسَعُ لی،اعوذ بنور وجهک الّذی اشرقَت له الظلمات
وصلح عليه، امرُ الدنيا والآخرة من ان تنزل بی غضبک او يحل علیَّ
سخطُکَ لک العتبی حتی ترضی، ولا حول ولا قوة الا بک

"ऐ अल्लाह! मैं तुम ही से अपनी कमज़ोरी, विवशता और लोगों के नज़दीक अपनी बे-क़द्री का शिकवा करता हूं। ऐ रहम करने वालों में सब से बढ़ कर रहम करने वाले! तू कमज़ोरों का रब है और तू ही मेरा भी रब है! तू मुझे किस के हवाले कर रहा है? क्या किसी बेगाने के, जो मेरे साथ सख़्ती से पेश आए? या किसी दुश्मन के जिस को तूने मेरे मामले का मालिक बना दिया है? अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं है, तो मुझे कोई परवाह नहीं लेकिन तेरी आफ़ियत (बेहतरी) मेरे लिए ज़्यादा फैली हुई है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर की पनाह चाहता हूं, जिस से अंधियारे छट गए और जिस पर दुनिया और आख़िरत के मामले सही हुए कि तू मुझ पर अपना ग़ज़ब उतारे या तेरा ग़ुस्सा मुझ पर उतरे। तेरी ही रिज़ा चाहिए, यहां तक कि तू ख़ुश हो जाए और तेरे बिना कोई ज़ोर और ताक़त नहीं।"

इधर आप को रबीआ के बेटों ने इस स्थिति में देखा तो उनके रिश्ते की भावना जाग उठी और उन्होंने अपने एक ईसाई दास को, जिस का नाम अद्दास था, बुला कर कहा कि इस अंगूर से एक गुच्छा लो और उस आदमी को दे आओ। जब उसने अंगूर आप की सेवा में

पेश किया तो आपने "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" कह कर हाथ बढ़ाया और खाना शुरू किया।

अ़दास ने कहा, "यह वाक्य तो इस इलाक़े के लोग नहीं बोलते।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "तुम कहां के रहने वाले हो? और तुम्हारा दीन क्या है?" उसने कहा, मैं ईसाई हूं और नैनवा का निवासी हूं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अच्छा, तुम भले व्यक्ति यूनुस बिन मत्ता की बस्ती के रहने वाले हो?" उसने कहा, "आप यूनुस बिन मत्ता को कैसे जानते हैं?" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "वह मेरे भाई थे, वह नबी थे और मैं भी नबी हूं।" यह सुन कर अ़दास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झुक पड़ा और आप के सर और हाथ पांव को बोसा दिया।

यह देख कर रबीआ़ के दोनों बेटों ने आपस में कहा, लो, अब इस आदमी ने हमारे दास को बिगाड़ दिया। इसके बाद जब अ़दास वापस आ गया, तो दोनों ने उससे कहा, "अजी! यह क्या मामला था?" उसने कहा, "मेरे मालिक! इस धरती पर इस आदमी से बेहतर कोई और नहीं। इसने मुझे एक ऐसी बात बताई है, जिसे नबी के सिवा कोई नहीं जानता।" उन दोनों ने कहा, "देखो अ़दास! कहीं यह आदमी तुम्हें तुम्हारे दीन (धर्म) से फेर न दे, क्योंकि तुम्हारा दीन इसके दीन से बेहतर है।"

थोड़ी देर ठहर कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाग़ से निकले तो मक्का के रास्ते पर चल पड़े। बहुत दुख और शोक होने के कारण तबीयत निढाल और दिल टुकड़े-टुकड़े था। कर्न-मनाज़िल पहुंचे तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। उनके साथ पहाड़ों का फ़रिश्ता भी था। वह आपसे यह कहने आया था कि आप हुक्म दें तो वह मक्का वालों को दो पहाड़ों के बीच पीस डाले।

इस घटना का विस्तृत विवरण सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से बयान किया गया है, उनका बयान है कि उन्होंने एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया कि क्या आप (यानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कोई ऐसा दिन भी आया है जो उहद के दिन से भी संगीन रहा हो। आप ने फ़रमाया, "हां" तुम्हारी क़ौम से मुझे जिन-जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा। उनमें सब से संगीन मुसीबत वह थी जिससे मैं घाटी के दिन दोचार हुआ, जब मैंने अपने आप को अ़ब्द या लैल बिन अ़ब्दे कुलाल के बेटे पर पेश किया, मगर उसने मेरी बात मंज़ूर न की तो मैं दुख और शोक से निढाल अपने रुख़ पर चल पड़ा और क़र्ने-सआलिब पहुंच कर ही कुछ ठीक हुआ। वहां मैंने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर साया किए हुए है। मैंने ध्यान से देखा तो उसमें हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम थे। उन्होंने मुझे पुकार कर कहा, आप की क़ौम ने आप से जो बात कही, अल्लाह ने उसे सुन लिया है अब उसने आप के पास पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है, ताकि आप उनके बारे में उसे जो चाहें हुक्म दें। इसके बाद पहाड़ों के फ़रिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और सलाम करने के बाद कहा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! बात यही है। अब आप जो चाहें-----अगर चाहें कि मैं इन्हें दो पहाड़ों[3] के बीच कुचल दूं---तो ऐसा ही होगा------नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, (नहीं) बल्कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह उनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करेगा जो सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करेगी और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएगी।[4]

---

3) इस मौके पर बुख़ारी में अख़्शबैन शब्द प्रयोग किया गया है जो मक्का के दो मशहूर पहाड़ों अबू क़ुबैस और क़ैक़आन को कहा जाता है यह दोनों पहाड़ हरम के दक्षिण और उत्तर में आमने सामने हैं। उस वक़्त मक्के की ज़्यादा आबादी इन्हीं दो पहाड़ों के बीच में थी

4) बुख़ारी किताब बद-उल-ख़ल्क़ 1/458, मुस्लिम बाबु मा लकियन-नबी (सल्ल०) मिन अज़ल-मुश्रिकिन वल-मुनाफ़िक़ीन 2/109

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस जवाब में आप की महानता और अपार गहराई रखने वाले महान चरित्र के जलवे देखे जा सकते हैं।

बहरहाल अब सात आसमानों के ऊपर से आने वाली अनदेखी मदद की वजह से आप का दिल सन्तुष्ट हो गया और दुख व पीड़ा के बादल छट गए। चुनांचे आप मक्का की राह पर और आगे बढ़े और नख़ला घाटी में जा ठहरे। यहां दो जगहें निवास के अनुकूल हैं-----एक अस्सैलुल-कबीर और दूसरे ज़ैमा, क्योंकि दोनों ही जगह पानी और हरियाली मौजूद है, लेकिन किसी तरह यह पता नहीं चल सका कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन में से किस जगह निवास किया था।

नख़ला घाटी में आप का निवास कुछ दिन रहा। इस बीच अल्लाह ने आप के पास जिन्नों की एक जमाअ़त भेजी जिस का उल्लेख क़ुरआन मजीद में दो जगह हुआ है----एक सूरः अहक़ाफ़ में, दूसरे सूरः जिन्न में, सूरः अहक़ाफ़ की आयतें इस तरह हैं----

وَإِذْ صَرَفْنَا------------------------------مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ

"और जब कि हम ने आप की ओर जिन्नों के एक गिरोह को फेरा कि वे क़ुरआन सुनें तो जब वे क़ुरआन (की तिलावत) की जगह पहुंचे तो उन्होंने आपस में कहा कि चुप हो जाओ। फिर जब उसकी तिलावत पूरी की जा चुकी तो वे अपनी क़ौम की तरफ़ अल्लाह के अज़ाब से डरने वाले बन कर पलटे। उन्होंने कहा, ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी है जो मूसा अलैहिस्सलाम के बाद उतारी गई है, अपने से पहले की पुष्टि करने वाली है, सत्य और सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई करती है। ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मान लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा।" (46:29-31)

सूरः जिन्न की आयतें ये हैं-----

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّہُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا یَّھْدِیْٓ اِلَی الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِہٖ وَلَنْ نُّشْرِکَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا

"आप कह दें, मेरी तरफ़ यह वह्य की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने क़ुरआन सुना और आपस में कहा कि हम ने एक अनोखा क़ुरआन सुना है जो सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई करता है। हम उस पर ईमान लाए हैं और हम अपने रब के साथ किसी को हर्गिज़ शरीक नहीं कर सकते।" (72:1-2) (पंद्रहवीं आयत तक)

ये आयतें जो इस घटना के सिलसिले में बयान हुईं, उनका आगा-पीछा देखने से मालूम होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शुरू में जिन्नों के इस गिरोह का आना मालूम न हो सका था, बल्कि जब इन आयतों के ज़रिए अल्लाह की ओर से आप को बताया गया, तब आप जान सके, यह भी मालूम होता है कि जिन्नों का यह आना पहली बार हुआ था और हदीसों से पता चलता है कि इसके बाद इनका आना-जाना होता रहा।

जिन्नों का आना और इस्लाम क़ुबूल करने की घटना हक़ीक़त में अल्लाह की ओर से दूसरी मदद थी जो उसने अपने ग़ैबी ख़ज़ाने से अपनी इस टुकड़ी के ज़रिए फ़रमाई थी जिसका ज्ञान अल्लाह के सिवा किसी को नहीं, फिर इस घटना के ताल्लुक़ से जो आयतें उतरीं उनके बीच में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत की सफलता की शुभ-सूचनाएं भी हैं और इस बात को भी स्पष्ट किया गया है कि सृष्टि की कोई भी शक्ति इस दावत की सफलता के रास्ते में रोक नहीं बन सकती, चुनांचे कहा गया-----

وَمَنْ لَّا یُجِبْ دَاعِیَ اللّٰہِ فَلَیْسَ بِمُعْجِزٍ فِی الْاَرْضِ وَلَیْسَ لَہٗ مِنْ دُوْنِہٖٓ اَوْلِیَآءُ اُولٰٓئِکَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ

"जो अल्लाह के दीन की दावत न अपनाए, वह ज़मीन में (अल्लाह को) बे-बस नहीं कर सकता, और अल्लाह के सिवा कोई उसका कर्ता-धर्ता है भी नहीं और ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं।"

46:32

وَاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا

"हमारी समझ में आ गया है कि हम अल्लाह को ज़मीन में बे-बस नहीं कर सकते और न हम भाग कर ही उसे (पकड़ने से) मजबूर कर सकते हैं।" (72:12)

इस मदद और शुभ-सूचनाओं के सामने दुख-कष्ट और ग़म व मायूसी (निराशा) के वे सारे बादल छट गए जो ताइफ़ से निकलते समय गालियां और तालियां सुनने और पत्थर खाने की वजह से आप पर छाए थे, आप ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब मक्का पलटना है और नये सिरे से इस्लाम की दावत और रिसालत की तबलीग़ के काम में चुस्ती और गर्मजोशी के साथ लग जाना है।

यही मौक़ा था जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ने आप से अ़र्ज़ किया कि आप मक्का कैसे जाएंगे जबकि वहां के निवासियों यानी क़ुरैश ने आप को निकाल दिया है? और जवाब में आपने फ़रमाया, "ऐ ज़ैद! तुम जो हालत देख रहे हो, अल्लाह उससे रिहाई और बचाव की कोई राह ज़रूर बनाएगा। अल्लाह यक़ीनी तौर पर अपने दीन की मदद करेगा और अपने नबी को ग़ालिब फ़रमाएगा।"

आख़िर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां से रवाना हुए और मक्का के क़रीब पहुंच कर हिरा पर्वत के दामन में ठहर गए, फिर ख़ुज़ाआ के एक आदमी के द्वारा अख़नस बिन शुरैक़ को यह संदेश भेजा कि वह आप को पनाह दे दे, मगर अख़नस ने यह कह कर विवशता दिखाई कि मैं हलीफ़ (संधि से जुड़े लोग) हूं और पनाह देने

का अधिकार नहीं रखता। इसके बाद आप ने सुहैल बिन अम्र के पास यही संदेश भेजा, पर उसने भी यह कह कर विवशता दिखाई कि बनू आमिर की दी हुई पनाह बनू काब पर लागू नहीं होती। इसके बाद आप ने मुत-इम बिन अदी के पास संदेश भेजा, मुत-इम ने कहा, हां और फिर हथियार पहन कर अपने बेटों और क़ौम के लोगों को बुलाया और कहा कि तुम लोग हथियार बांध कर ख़ाना काबा के किनारों पर जमा हो जाओ, क्योंकि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पनाह दे दी है। इसके बाद मुत-इम ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पैग़ाम भेजा कि मक्का के भीतर आ जाएं। आप पैग़ाम पाने के बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को साथ लेकर मक्का तशरीफ़ लाए और मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए। इसके बाद मुत-इम बिन अदी ने अपनी सवारी पर खड़े होकर एलान किया कि क़ुरैश के लोगों! मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पनाह दे दी है। अब उसे कोई न छेड़े। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सीधे हजरे अस्वद के पास पहुंचे, उसे चूमा, फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अपने घर को पलट आए। इस बीच मुत-इम बिन अदी और उनके लड़कों ने हथियारबंद होकर आपके चारों ओर घेरा बनाए रखा, यहां तक कि आप अपने मकान के भीतर तशरीफ़ ले गए।

कहा जाता है कि इस मौक़े पर अबू जहल ने मुत-इम से पूछा था कि तुमने पनाह दी है या पैरवी करने वाले—मुसलमान—बन गए हो? और मुत-इम ने जवाब दिया था कि पनाह दी है और इस जवाब को सुनकर अबू जहल ने कहा था कि जिसे तुम ने पनाह दी, उसे हम ने भी पनाह दी।[5]

---

5) ताईफ़ के सफ़र का यह ब्योरा इब्ने हिशाम 1/419-422 ज़ादुल-मआद 2/46-47, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 141-143, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/71-74, तारीख़े इस्लाम नजीबाबादी 1/123-124 और दूसरी तफ़्सीर की मशहूर किताबों से लिया गया है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुत-इम बिन अदी के इस सद्व्यवहार को कभी न भुलाया। चुनांचे बद्र में जब मक्का के काफ़िरों की एक बड़ी तायदाद क़ैद होकर आई और कुछ क़ैदियों की रिहाई के लिए हज़रत जुबैर बिन मुत-इम आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में आए तो आप ने फ़रमाया--

لو كان المطعم بن عدى حيا ثم كلمنى فى هولاء النتنى لتركتهم له

"अगर मुत-इम बिन अदी ज़िंदा होता, फिर मुझसे इन बदबूदार लोगों के बारे में बातें करता, तो मैं उसके लिए इन सब को छोड़ देता।"[6]

6) बुख़ारी 2/573

क़बीलों और व्यक्तियों को इस्लाम की दावत

ज़ीक़ादा सन् 10 नबवी (जून के आख़िर या जुलाई सन् 619 ई० के शुरू) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ से मक्का तशरीफ़ लाए और यहां लोगों और क़बीलों को फिर से इस्लाम की दावत देनी शुरू की, चूंकि हज का मौसम क़रीब था, इसलिए हज का फ़रीज़ा अदा करने के लिए दूर व नज़दीक हर जगह से पैदल और सवारों का आना शुरू हो चुका था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा और एक-एक क़बीले के पास जा कर उसे इस्लाम की दावत दी जैसा कि नुबुवत के चौथे साल से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल चला आ रहा था।

वे क़बीले, जिन्हें इस्लाम की दावत दी गयी

इमाम ज़ोहरी रह० फ़रमाते हैं कि जिन क़बीलों के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गये और उन्हें इस्लाम की दावत देते हुए अपने आप को उन पर पेश किया, उन में नीचे लिखे क़बीलों के नाम हमें बताये गए हैं——

बनू आमिर बिन सअसआ, मुहारिब बिन ख़सफ़ा, फ़ज़ारा, ग़स्सान मुर्रा, हनीफ़ा, सुलैम, अब्स, बनू नस्र, बनुल-बुका, कल्ब, हारिस बिन काब, अज़रा, हज़ारिमा——लेकिन इन में से किसी ने भी इस्लाम क़ुबूल न किया।[1]

---

1) तिरमिज़ी, मुख़्तसरुस-सीरा 149

स्पष्ट रहे कि इमाम ज़ोहरी के ज़िक्र किए गए इन सारे क़बीलों पर एक ही साल या हज के एक ही मौसम में इस्लाम पेश नहीं किया गया था, बल्कि नुबुवत के चौथे साल से हिजरत से पहले के आख़िरी मौसम तक दस साल के दौरान पेश किया गया था।[2]

इब्ने इसहाक़ ने कुछ क़बीलों पर इस्लाम की पेशी और उनके जवाब की स्थिति का भी उल्लेख किया है। नीचे संक्षिप्त में उनका बयान नक़्ल किया जा रहा है——

1. बनू कल्ब

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस क़बीले की एक शाखा बनू अब्दुल्लाह के पास तशरीफ़ ले गए, उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और अपने आप को उन पर पेश किया। बातों-बातों में ये भी फ़रमाया कि ऐ बनू अब्दुल्लाह! अल्लाह ने तुम्हारे दादा का नाम बहुत अच्छा रखा था, लेकिन इस क़बीले ने आप की दावत क़ुबूल न की।

2. बनू हनीफ़ा

आप इनके डेरे पर तशरीफ़ ले गए। उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और अपने आप को उन पर पेश किया, लेकिन इन जैसा बुरा जवाब अरबों में से किसी ने भी न दिया।

3. आमिर बिन सअसआ

इन्हें भी आप ने अल्लाह की तरफ़ दावत दी और अपने आप को उन पर पेश किया। जवाब में इनके एक आदमी बुहैरा बिन फ़रास ने कहा, "अल्लाह की क़सम! अगर मैं क़ुरैश के इस नवजवान को ले लूं तो इसके ज़रिए पूरे अरब को खा जाऊंगा।" फिर उसने मालूम किया कि अच्छा, यह बताइए, "अगर हम आप से आप के इस दीन पर बैअत कर लें, फिर अल्लाह आप को मुख़ालिफ़ों पर ग़लबा दे दे तो क्या आप

---

2) देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन 1/74

के बाद बाग-डोर हमारे हाथ में होगी?" आप ने इर्शाद फ़रमाया, "बागडोर तो अल्लाह के हाथ में है" वह जहां चाहेगा रखेगा। इस पर उस आदमी ने कहा, "ख़ूब! आप की हिफ़ाज़त में तो हमारा सीना अरबों के निशाने पर रहे, लेकिन जब अल्लाह आप को ग़लबा अ़ता फ़रमाए, तो बाग-डोर किसी और के हाथ में हो? हमें आप के दीन की ज़रूरत नहीं।" ग़रज़ उन्होंने इंकार कर दिया।

इसके बाद जब क़बीला बनू आ़मिर अपने इलाक़े में वापस गया तो अपने एक बूढ़े आदमी को----जो ज़्यादा उम्र की वजह से हज में शरीक न हो सका था, सारी बात बताई और बताया कि हमारे पास क़बीला क़ुरैश के ख़ानदान बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब का एक जवान आया था, जिसका ख़्याल था कि वह नबी है। उसने हमें दावत दी है कि हम उसकी हिफ़ाज़त करें, उसका साथ दें और अपने इलाक़े में ले आएं। यह सुन कर उस बूढ़े ने दोनों हाथ से सर थाम लिया। और बोला, "ऐ बूनु आ़मिर! क्या अब हमारे पास इसकी क्षतिपूर्ति (दूर करने) का कोई रास्ता है? और क्या इस बीते हाथ को ढूंढा जा सकता है? उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में फ़्लां की जान है किसी इस्माईली ने कभी इस (नुबुवत) का झूठा दावा नहीं किया, यह यक़ीनी तौर पर हक़ है। आख़िर तुम्हारी बुद्धि कहां चली गयी थी?"[3]

ईमान की किरणें मक्का से बाहर

जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीलों और प्रतिनिधि मंडलों पर इस्लाम पेश किया, उसी तरह व्यक्तिगत तौर से भी इस्लाम की दावत दी और कुछ ने अच्छा जवाब भी दिया। फिर हज के इस मौसम के कुछ ही दिनों बाद कई लोगों ने इस्लाम अपना लिया। नीचे एक छोटी सी रिपोर्ट दी जा रही है।

---

3) इब्ने हिशाम 1/424-425

1. सुवैद बिन सामित

यह कवि थे, गहरी सूझ-बूझ वाले और यसरिब के निवासी थे। इनकी दृढ़ता, कवि होना, वंश और परिवार की वजह से इनकी क़ौम ने इन्हें 'कामिल' की पदवी दे रखी थी। यह हज या उमरा के लिए मक्का तश्रीफ़ लाए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इस्लाम की दावत दी, कहने लगे, "शायद आपके पास जो कुछ है, वह वैसा ही है, जैसा मेरे पास है।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "तुम्हारे पास क्या है?" सुवैद ने कहा, "लुक़मान की हिक्मत" आप ने फ़रमाया "पेश करो"। उन्होंने पेश किया। आप ने फ़रमाया, "यह कलाम यक़ीनी तौर पर बहुत अच्छा है, लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह इससे भी अच्छा है। वह क़ुरआन है जो अल्लाह ने मुझ पर उतारा है, वह हिदायत और नूर है।" इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाया और इस्लाम की दावत दी उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और बोले, "यह तो बहुत अच्छा कलाम है।" इसके बाद वह मदीना पलट कर आए ही थे कि बुआस की लड़ाई छिड़ गयी और इसी में क़त्ल कर दिए गए।[4] उन्होंने सन 11 नबवी के आरम्भ में इस्लाम अपनाया था।[5]

2. इयास बिन मुआज़

यह भी यस्रिब के निवासी और नव युवक थे, सन 11 नबवी में बुआस की लड़ाई से कुछ पहले औस का प्रतिनिधिमंडल ख़ज़रज के ख़िलाफ़ क़ुरैश से सहायता की खोज में मक्का आया था। आप भी इसी के साथ तश्रीफ़ लाए थे। उस वक़्त यस्रिब में इन दोनों क़बीलों के दर्मियान दुश्मनी की आग भड़क रही थी और औस की तायदाद ख़ज़रज से कम थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रतिनिधि

4) इब्ने हिशाम 1/425-427, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/74

5) तारीख़े इस्लाम अकबर शाह नजीबाबादी 1/125

मंडल के आने का ज्ञान हुआ तो आप उनके पास तशरीफ़ ले गए और उनके दर्मियान बैठकर यह ख़िताब फ़रमाया, "आप लोग जिस मक़सद के लिए तश्रीफ़ लाए हैं, क्या उससे बेहतर चीज़ क़ुबूल कर सकते हैं?" उन सबने कहा, वह क्या चीज़ है? आप ने फ़रमाया, "मैं अल्लाह का रसूल हूं, अल्लाह ने मुझे अपने बंदों के पास इस बात की दावत देने के लिए भेजा है कि वे अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करें। अल्लाह ने मुझ पर किताब भी उतारी है," फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस्लाम का ज़िक्र किया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई।

इयास बिन मुआ़ज़ बोले, ऐ क़ौम! यह अल्लाह की क़सम! उस से बेहतर है जिसके लिए आप लोग यहां तशरीफ़ लाए हैं, लेकिन प्रतिनिधि मंडल का एक सदस्य अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ़ ने एक मुट्ठी कंकड़ी उठा कर इयास के मुख पर दे मारी और बोला, "यह बात छोड़ो, मेरी उम्र की क़सम! यहां हम इसके बजाए दूसरे ही मक़सद से आए हैं।" इयास ने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी उठ गए। प्रतिनिधि मंडल क़ुरैश के साथ मिल-जुल कर एक दूसरे की मदद करने में सफल न हो सका। और यूं ही नाकाम मदीना वापस हो गया।

मदीना पलटने के थोड़े ही दिन बाद इयास इन्तिक़ाल कर गए, वह अपने इंतिक़ाल के वक़्त "ला इला-ह इल्लल्लाह" "अल्लाहु अकबर" अलहम्दुलिल्लाह और सुब्हानल्लाह" कह रहे थे। इसलिए लोगों को यक़ीन है कि उनकी वफ़ात इस्लाम पर हुई।[6]

3. अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु

ये यस्रिब के किनारे निवास थे। जब सुवैद बिन सामित रज़ि० और इयास बिन मुआ़ज़ के ज़रिए यस्रिब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

6) इब्ने हिशाम 1/427-428

अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने की ख़बर पहुंची तो यह ख़बर अबू ज़र रज़ि० के कान से भी टकरायी और यही उनके इस्लाम लाने की वजह बनी।[7]

इनके इस्लाम लाने की घटना सहीह बुख़ारी में सविस्तार मिलती है। इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० ने फ़रमाया, "मैं क़बीला ग़िफ़ार का एक आदमी था। मुझे मालूम हुआ कि मक्का में एक आदमी प्रकट हुआ है जो अपने आप को नबी कहता है। मैंने अपने भाई से कहा, तुम उस आदमी के पास जाओ, उससे बात करो और मेरे पास उस की ख़बर लाओ। वह गया, मुलाक़ात की और वापस आया। मैंने पूछा, क्या ख़बर लाए हो? बोला, अल्लाह की क़सम! मैंने एक ऐसा आदमी देखा है जो भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है। मैंने कहा, तुम ने संतुष्ट कर देने वाली ख़बर नहीं दी। आख़िर मैंने ख़ुद तोशादान और डंडा उठाया और मक्का के लिए चल पड़ा। (वहां पहुंच तो गया) लेकिन आप को पहचानता नहीं था और यह भी गवारा न था कि आप के बारे में किसी से पूछूं। चुनांचे मैं ज़मज़म का पानी पीता और मस्जिदे हराम में पड़ा रहता। आख़िर मेरे पास से अली रज़ि० का गुज़र हुआ, कहने लगे, आदमी अजनबी मालूम होते हो? मैंने कहा, जी हां। उन्होंने कहा, अच्छा तो घर चलो। मैं उनके साथ चल पड़ा। न वह मुझ से कुछ पूछ रहे थे, न मैं उनसे कुछ पूछ रहा था और न उन्हें कुछ बता ही रहा था।

सुबह हुई तो मैं इस इरादे से फिर मस्जिदे हराम गया कि आप के बारे में मालूम करूं। लेकिन कोई न था जो मुझे आप के बारे में कुछ बताता। आख़िर मेरे पास से फिर हज़रत अली रज़ि० गुज़रे। (देख कर) बोले, इस आदमी को अभी अपना ठिकाना न मालूम हो सका? मैंने कहा, नहीं। उन्होंने कहा, अच्छा, तो मेरे साथ चलो। इसके बाद उन्होंने

7) यह बात अकबर शाह नजीबाबादी ने लिखी है। देखिए इनकी तारीख़े इस्लाम 1/128

कहा, अच्छा तुम्हारा मामला क्या है? और तुम इस शहर में क्यों आये हो? मैंने कहा, आप रहस्य समझें तो बताऊं। उन्होंने कहा, ठीक है। मैं ऐसा ही करूंगा। मैंने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि यहां एक आदमी ज़ाहिर हुआ है जो अपने आप को अल्लाह का नबी बताता है। मैंने अपने भाई को भेजा कि वह बात करके आए मगर उसने पलट कर कोई तसल्ली भरी बात न बताई। इसलिए मैंने सोचा कि ख़ुद ही मुलाक़ात कर लूं। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, "भई तुम सही जगह पहुंचे, देखो मेरा रुख़ उन्हीं की ओर है। जहां मैं घुसूं वहां तुम भी घुस जाना और हां, अगर मैं किसी ऐसे आदमी को देखूंगा, जिससे तुम्हारे लिए ख़तरा है तो दीवार की तरफ़ इस तरह जा रहूंगा मानो अपना जूता ठीक कर रहा हूं, लेकिन तुम रास्ता चलते रहना।" इसके बाद हज़रत अली रज़ि० रवाना हुए और मैं भी साथ-साथ चल पड़ा यहां तक कि वह अंदर दाख़िल हुए और मैं भी उनके साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जा दाख़िल हुआ और अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ पर इस्लाम पेश करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम पेश फ़रमाया और मैं वहीं मुसलमान हो गया। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया, ऐ अबू ज़र! इस मामले को अभी छिपाए रखो और अपने इलाक़े में वापस चले जाओ। जब हमारे ज़ाहिर होने की ख़बर मिले तो आ जाना मैंने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है, मैं तो इनके बीच खुल कर एलान करूंगा। इसके बाद मैं मस्जिदे हराम आया। क़ुरैश मौजूद थे। मैंने कहा, क़ुरैश के लोगो!

اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله

"मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।"

लोगों ने कहा, "उठो इस बेदीन की ख़बर लो, लोग उठ पड़े और मुझे इतना मारा गया कि मर जाऊं, लेकिन हज़रत अब्बास रज़ि० ने मुझे आ कर बचाया। उन्होंने मुझे झुक कर देखा, फिर कुरैश की तरफ़ पलट कर बोले, तुम्हारी बर्बादी हो। तुम लोग गिफ़ार क़बीला के एक आदमी को मारे दे रहे हो, हालांकि तुम्हारी तिजारत की जगह और गुज़रने की जगह गिफ़ार से ही हो कर जाती है। इस पर लोग मुझे छोड़ कर हट गए। दूसरे दिन सुबह हुई तो फिर मैं वहीं गया और जो कुछ कल कहा था, आज फिर कहा और लोगों ने फिर कहा कि उठो इस बेदीन की ख़बर लो। इसके बाद फिर मेरे साथ वही हुआ जो कल हो चुका था और आज भी हज़रत अब्बास रज़ि० ही ने मुझे आ कर बचाया वह मुझ पर झुके, फिर वैसी ही बात कही जैसी कल कही थी।"[8]

4. तुफ़ैल बिन अम्र दौसी

यह सज्जन पुरूष, कवि, सूझ-बूझ के मालिक और क़बीला दौस के सरदार थे। इनके क़बीले को यमन के क़रीबी इलाक़ों में सरदारी हासिल थी। वह नुबुवत के ग्यारहवें साल मक्का तशरीफ़ लाए तो वहां पहुंचने से पहले ही मक्का वालों ने उनका स्वागत किया और बड़ा मान-सम्मान किया, फिर कहा कि ऐ तुफ़ैल: आप हमारे शहर तशरीफ़ लाए हैं और यह आदमी जो हमारे बीच में है इसने हमें कठिनाई में फंसा रखा है, हमारी एकता बिखेर दी है, हमें टुकड़े-टुकड़े कर दिया है, इसकी बात जादू जैसा असर रखती है कि आदमी और उसके बाप के बीच, आदमी और उसके भाई के बीच और आदमी और उसकी बीवी के बीच बिखराव पैदा कर देती है। हमें डर लगता है कि जिस परेशानी से हम दोचार हैं, कहीं वह आप पर और आपकी क़ौम पर भी न आ पड़े, इसलिए आप उससे न बातें करें और न उसकी कोई चीज़ सुनें।

---

8) बुख़ारी बाब क़िस्सतु ज़म ज़म 1/499 तथा बाब इस्लामु अबी ज़र 1/544- 545

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० का इर्शाद है कि ये लोग मुझे बराबर इसी तरह की बातें समझाते रहे, यहां तक कि मैं ने निश्चय कर लिया कि न आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई चीज़ सुनूंगा, न आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात-चीत करूंगा, यहां तक कि जब मैं सुबह को मस्जिदे हराम गया तो कान में रूई ठूंस रखी थी कि कहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई बात मेरे कान में न पड़ जाए, लेकिन अल्लाह को मंज़ूर था कि आपकी कुछ बातें मुझे सुना ही दे। चुनांचे मैंने बहुत अच्छा कलाम सुना। फिर मैंने अपने जी में कहा, हाय मुझ पर मेरी मां की आह-व पुकार! मैं तो अल्लाह की क़सम! एक सूझ-बूझ रखने वाला कवि हूं। मुझ पर भला-बुरा छिपा नहीं रह सकता। फिर क्यों न मैं उस आदमी की बात सुनूं? अगर अच्छी हुई तो क़ुबूल कर लूंगा, बुरी हुई तो छोड़ दूंगा।

यह सोच कर मैं रुक गया और जब आप घर पलटे, तो मैं भी पीछे हो लिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंदर दाख़िल हुए तो मैं भी दाख़िल हो गया और आप को अपने आने की घटना और लोगों के भय दिलाने की स्थिति, फिर कान में रूई ठूंसने और इसके बावजूद आप की कुछ बातें सुन लेने का विवरण दिया, फिर अर्ज़ किया कि आप अपनी बात पेश कीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ पर इस्लाम पेश किया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई। अल्लाह गवाह है मैंने इस से अधिक भारी वचन और इस से ज़्यादा न्याय की बात कभी न सुनी थी, चुनांचे मैंने वहीं इस्लाम अपना लिया और सत्य की गवाही दी। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, मेरी क़ौम में मेरी बात मानी जाती है। मैं उनके पास पलट कर जाऊंगा और उन्हें इस्लाम की दावत दूंगा, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह से दुआ फ़रमाएं कि वह मुझे कोई निशानी दे दे, आप ने दुआ फ़रमाई।

हज़रत तुफ़ैल को जो निशानी मिली, वह यह थी कि जब वह अपनी क़ौम के क़रीब पहुंचे तो अल्लाह ने उनके चेहरे पर चिराग़ जैसी रोशनी पैदा कर दी। उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह! चेहरे के बजाए किसी और जगह। मुझे डर है कि लोग उसे मुस्ला (चेहरे का बिगाड़) कहेंगे।" चुनांचे यह रोशनी उनके डंडे में पलट गई। फिर उन्होंने अपनी मां और अपनी बीवी को इस्लाम की दावत दी और वे दोनों मुसलमान हो गये, लेकिन क़ौम ने इस्लाम अपनाने में देर की, लेकिन हज़रत तुफ़ैल भी बराबर लगे रहे, यहां तक कि ख़न्दक़ की लड़ाई के बाद[9] जब उन्होंने हिजरत फ़रमाई तो उनके साथ उनकी क़ौम के सत्तर या अस्सी परिवार थे। हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने इस्लाम में बड़े महत्वपूर्ण कारनामे अंजाम देने के बाद यमामा की लड़ाई में शहीद हो गए।[10]

5. ज़िमाद अज़्दी रज़ि०

यह यमन के निवासी और क़बीला अज़्दशनूआ के एक व्यक्ति थे। झाड़-फूंक करना और आसेब उतारना उनका काम था। मक्का आए तो वहां के मूर्खों से सुना कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पागल हैं, सोचा क्यों न उस आदमी के पास चलूं, हो सकता है अल्लाह मेरे ही हाथों से उसे शिफ़ा दे दे। चुनांचे आप से मुलाक़ात की और कहा, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं आसेब उतारने के लिए झाड़-फूंक किया करता हूं, क्या आप को भी इसकी ज़रूरत है? आप ने जवाब में फ़रमाया—

ان الحمدللہ نحمدہ ونستعینہ من یھدہ اللہ فلا مضل لہ ومن یضللہ
فلا ھادی لہ ، واشھدان لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ واشھد ان
محمدا عبدہ ورسولہ، اما بعد

---

9) बल्कि सुलह हुदैबिया के बाद क्योंकि जब वह मदीना तशरीफ़ लाए तो रसूल (सल्ल०) ख़ैबर में थे देखिए इब्ने हिशाम 1/385

10) इब्ने हिशाम 1/182,185, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/81 82, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 144

"यक़ीनी तौर पर सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है। हम उसी की तारीफ़ करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अल्लाह भटका दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।"

ज़िमाद ने कहा, तनिक अपने ये कलिमे मुझे फिर सुना दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार दोहराया। इसके बाद ज़िमाद ने कहा, मैं काहिनों, जादूगरों और कवियों की बात सुन चुका हूं, लेकिन मैंने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन जैसे कलिमे कहीं नहीं सुने। ये तो समुन्दर की अथाह गहराई को पहुंचे हुए हैं, लाइए, अपना हाथ बढ़ाइए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम पर बैअत कर लूं और इसके बाद उन्होंने बैअत कर ली।[1]

यस्रिब की छः भाग्यवान आत्माएं

ग्यारहवीं नब्वी के हज के मौसम (जुलाई 620 ई०) में इस्लामी दावत को कुछ काम के बीज मिले, जो देखते-देखते भारी भरकम पेड़ों में बदल गए और उनकी ठंडी और घनी छावों में बैठकर मुसलमानों ने वर्षों ज़ुल्म और सितम की तपन से राहत और निजात पाई।

मक्का वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाने और लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जो बेड़ा उठा रखा था, उसके प्रति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कार्यनीति यह थी कि आप रात के अंधेरे में क़बीलों के पास तशरीफ़ ले जाते, ताकि मक्का का कोई मुश्रिक रुकावट न डाल सके।

---

1) मुस्लिम, मिश्कातुल-मसाबीह बाब अलामातुन-नुबुवत 2/525

इसी कार्यनीति के अनुसार एक रात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० को साथ लेकर बाहर निकले, बनू ज़ुहल और बनू शैबान बिन सालबा के डेरों से गुज़रे तो उन से इस्लाम के बारे में बात चीत की। उन्होंने जवाब बहुत आशाओं भरा दिया, लेकिन इस्लाम अपनाने के बारे में निश्चित निर्णय न लिया इस मौक़े पर हज़रत अबू बक्र रज़ि० और बनू ज़ुहल के एक आदमी के बीच वंश के बारे में बड़ा रोचक प्रश्न-उत्तर भी हुआ। दोनों ही वंश विशेषज्ञ थे।[12]

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिना की घाटी से गुज़रे तो कुछ लोगों को आपस में बातें करते सुना।[13] आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सीधे उनका रुख़ किया और उनके पास जा पहुंचे। ये यस्रिब के छः नवजवान थे और सब के सब क़बीला ख़ज़रज से ताल्लुक़ रखते थे नाम ये हैं———

1. असअ़द बिन ज़ुरारः
(क़बीला बनी अनज्जार)
2. औफ़ बिन हारिस बिन रिफ़ाआ़ (इब्ने अ़फ़रा)
(क़बीला बनी अनज्जार)
3. राफ़ेअ़ बिन मालिक बिन अ़जलान
(क़बीला बनी ज़ुरैक़)
4. क़ुत्बा बिन आ़मिर बिन हदीदा
(कबीला बनी सलमा)
5. उक़बा बिन आ़मिर बिन नाबी
(क़बीला बनी हराम बिन काब)

---

12) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 150-152
13) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/84

6. हारिस बिन अब्दुल्लाह बिन रिआब
(क़बीला बनी उबैद बिन ग़नम)

यह यस्रिब वालों का सौभाग्य था कि वे अपने मित्र मदीना के यहूदियों से सुना करते थे कि इस ज़माने में एक नबी भेजा जाने वाला है और अब जल्द ही वह ज़ाहिर होगा। हम उसकी पैरवी करके उसके साथ तुम्हें आदे इरम की तरह क़त्ल कर डालेंगे।[14]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व.सल्लम ने उनके पास पहुंच कर मालूम किया कि आप कौन लोग हैं? उन्होंने कहा, हम क़बीला ख़ज़रज से ताल्लुक़ रखते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "यानी यहूदियों के मित्र?" बोले, "हां"। फ़रमाया "फिर क्यों न आप लोग बैठें, कुछ बातचीत की जाए।" वे लोग बैठ गए। आप ने उन के सामने इस्लाम की हक़ीक़त बयान फ़रमाई, उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और कुरआन पढ़ा। उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा, भई, देखो, यह तो वही नबी मालूम होते हैं, जिन का हवाला देकर यहूद तुम्हें धमकियां दिया करते हैं, इसलिए यहूदी तुम से आगे न जाने पाएं। इसके बाद उन्होंने तुरन्त आप की दावत अपना ली और मुसलमान हो गए।

ये यस्रिब के बुद्धिजीवी थे। हाल ही में जो लड़ाई बीत चुकी थी और जिसके धुएं ने अब तक के वातावरण को अधंकारमय (तारीक) किया हुआ था, इस लड़ाई ने उन्हें चूर-चूर कर दिया था, इसलिए उन्होंने सहीह तौर पर यह आशा की कि आप की दावत, लड़ाई के अंत का कारण बनेगी, चुनांचे उन्होंने कहा, "हम अपनी क़ौम को इस हालत में छोड़ कर आए हैं कि किसी और क़ौम में उनके जैसी अदावत और दुश्मनी नहीं पायी जाती। उम्मीद है कि अल्लाह आप के ज़रिए उन्हें इकट्ठा कर देगा, हम वहां जाकर लोगों को आप के मक़सद की ओर बुलाएंगे। और यह दीन जो हम ने खुद कुबूल कर लिया है, उन पर भी

14) ज़ादुल-मआद 3/50,इब्ने हिशाम 1/429 तथा 541

पेश करेंगे। अगर अल्लाह ने आप पर उनको इकट्ठा कर दिया तो फिर आप से बढ़ कर कोई और प्रतिष्ठित न होगा।"

इसके बाद जब ये लोग मदीना वापस हुए तो अपने साथ इस्लाम का संदेश भी ले गए, चुनांचे वहां घर-घर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चर्चा फैल गया।[15]

हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह

इसी साल शव्वाल सन् 11 नब्वी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह फ़रमाया, उस वक़्त उन की उम्र छः वर्ष थी। फिर हिजरत के पहले साल शव्वाल ही के महीने में मदीना के अंदर उनकी रुख़्सती हुई। उस वक़्त उनकी उम्र नौ साल थी।[16]

15) इब्ने हिशाम 1/428,430

16) तलक़ीहुल फ़ुहूम 10,बुख़ारी 1/550

इसरा और मेराज

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत व तब्लीग़ अभी सफलता और अन्याय व अत्याचार के उस बीच के मरहले से गुज़र रही थी और क्षितिज (उफ़ुक़) की दूर-दूर फैली सीमाओं में धुंधले तारों की झलक दिखाई पड़ना शुरू हो चुकी थी कि इसरा और मेराज की घटना घटी। यह मेराज कब हुई? इसके बारे में जीवनी-लेखकों की राय अलग-अलग है जो ये हैं:

1. जिस साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबूवत दी गई, उसी साल मेराज भी हुई। (यह तबरी का कथन है)

2. नुबुवत के पांच साल बाद मेराज हुई। (इसे इमाम नववी और इमाम कुरतुबी ने तर्जीह दी है।)

3. नुबुवत के दसवें साल 27 रजब को हुई।
(इसे अल्लामा मंसूरपुरी ने अपनाया है)

4. हिजरत से सोलह महीने पहले यानी नुबुवत के बारहवें साल रमज़ान के महीने में हुई।

5. हिजरत से एक साल दो माह पहले यानी नुबुवत के तेरहवें साल मुहर्रम में हुई।

6. हिजरत से एक साल पहले यानी नुबुवत के तेरहवें साल रबीउल अव्वल के महीने में हुई।

इन में से पहले तीन कथन इसलिए सही नहीं माने जा सकते कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात हर दिन पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ (अनिवार्य) होने से पहले हुई थी और इस पर सब एक राय हैं कि हर दिन पांच वक़्त की नमाज़ मेराज में फ़र्ज़ हुई। इसका मतलब यह है कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात (मृत्यु) मेराज से पहले हुई थी और मालूम है कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात नुबुवत के दसवें साल रमज़ान के महीने में हुई थी इसलिए मेराज का ज़माना इस के बाद का होगा, इससे पहले का नहीं। बाक़ी रहे आख़िर के तीन कथन तो इन में से किसी को किसी पर तर्जीह (प्रमुखता) देने के लिए कोई दलील न मिल सकी, अलबत्ता सूरः इसरा की पृष्ठभूमि से अन्दाज़ा होता है कि यह घटना मक्की ज़िंदगी के बिल्कुल आख़िरी दौर की है।[1]

हदीस के इमामों ने इस घटना के विस्तार में जो वर्णन किया है, हम अगली लाइनों में उनका सार दे रहे हैं।

इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सही कथन के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आप के मुबारक देह सहित बुराक़ पर सवार करके हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ मस्जिदे हराम से बैतुल मक़्दिस तक सैर कराई गई फिर आप वहां उतरे और नबियों की इमामत फ़रमाते हुए नमाज़ पढ़ाई और बुराक़ को मस्जिद के दरवाज़े के हल्के से बांध दिया था।

इस के बाद उसी रात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बैतुल मक़्दिस से आसमाने दुनिया तक ले जाया गया। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दरवाज़ा खुलवाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए दरवाज़ा खोला गया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां इंसानों के बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम

1) इन कथनों की तफ़सील के लिए देखें ज़ादुल-मआद 2/49, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 148-149, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/76

किया। उन्होंने आप को मरहबा कहा, सलाम का जवाब दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुवत का इक़रार किया। अल्लाह ने आप को उनके दाहिनी तरफ़ नेकों की रूहें और बाईं तरफ़ बुरों की रूहें दिखलायीं।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूसरे आसमान पर ले जाया गया और दरवाज़ा खुलवाया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत यह्या बिन ज़करिया अलैहिमस्सलाम और हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिमस्सलाम को देखा। दोनों से मुलाक़ात की और सलाम किया। दोनों ने सलाम का जवाब दिया, मुबारकबाद दी, और आप की नुबुवत का इक़रार किया।

फिर तीसरे आसमान पर ले जाया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा और सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आप की नुबुवत का इक़रार किया।

फिर चौथे आसमान पर ले जाया गया। वहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मरहबा कहा और आप की नुबुवत का इक़रार किया।

फिर पांचवें आसमान पर ले जाया गया। वहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हारून बिन इमरान अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और नुबुवत का इक़रार किया।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छठे आसमान पर ले जाया गया। वहां आप की मुलाक़ात हज़रत मूसा बिन इमरान (अलैहिस्सलाम) से हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलाम

किया, उन्हों ने मरहबा कहा और नुबुवत का इक़रार किया, अलबत्ता जब आप वहां से आगे बढ़े तो वह रोने लगे। उन से कहा गया, आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने कहा, मैं इसलिए रो रहा हूं कि एक नवजवान जो मेरे बाद भेजा गया, उसकी उम्मत के लोग मेरी उम्मत के लोगों से बहुत ज़्यादा तायदाद में जन्नत के अंदर दाख़िल होंगे।

इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सातवें आसमान पर ले जाया गया। वहां आप की मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई आप ने उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने का इक़रार किया।

इस के बाद आप को सिदरतुल मुन्तहा तक ले जाया गया। फिर आप के लिए बैते मामूर को ज़ाहिर किया गया।

फिर अल्लाह के दरबार में पहुंचाया गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के इतने क़रीब हुए कि दो कमानों के बराबर या इस से भी कम दूरी रह गयी। उस वक़्त अल्लाह ने अपने बंदे पर वह्य फ़रमाई जो कुछ कि वह्य फ़रमाई और पचास वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ कीं। इस के बाद वापस हुए, यहां तक कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रे तो उन्होंने पूछा कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किस चीज़ का हुक्म दिया है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, पचास नमाज़ों का। उन्होंने कहा, "आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत इस की ताक़त नहीं रखती, अपने पालनहार के पास वापस जाइए और अपनी उम्मत के लिए कमी का सवाल कीजिए।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिब्रील अलैहिस्सलाम की ओर देखा, मानो उन से मश्वरा ले रहे हैं। उन्होंने इशारा किया कि हां, अगर आप चाहें। इस के बाद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आप को अल्लाह के हुज़ूर ले गए और वह अपनी जगह था। कुछ हिस्सों में सहीह बुख़ारी का लफ़्ज़ यही है-----उसने दस नमाज़ें कम कर दीं और

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नीचे लाए गए। जब मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़र हुआ, तो उन्हें ख़बर दी। उन्होंने कहा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब के पास वापस जाइए और कम करने की बात कहिए।" इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और अल्लाह के दर्मियान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आना-जाना बराबर जारी रहा, यहां तक कि अल्लाह ने सिर्फ़ पांच नमाज़ें बाक़ी रखीं, इस के बाद भी मूसा अलैहि० ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वापसी और कम कराने का मश्वरा दिया, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अब मुझे अपने रब से शर्म महसूस हो रही है, मैं इसी पर राज़ी हूं और इसी को कुबूल करता हूं।" फिर जब आप और कुछ दूर तशरीफ़ ले गए तो आवाज़ आई कि मैंने अपना काम पूरा कर दिया और अपने बंदों से कमी कर दी।[2]

इस के बाद इब्ने क़य्यिम ने इस बारे में मतभेद का उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पालनहार को देखा या नहीं? फिर इमाम इब्ने तैमिया की एक खोज का उल्लेख किया है जिसका सार यह है कि आंख से देखने का सिरे से कोई सुबूत नहीं और न कोई सहाबी इसे मानता है, और इब्ने अब्बास रज़ि० से आम देखने और दिल से देखने के जो दो कथन नक़्ल किए गए हैं, उन में से पहला दूसरे के उलटा नहीं। इसके बाद इमाम इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सूरः नज्म में अल्लाह का जो यह इर्शाद है——

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى

"(फिर वह नज़दीक आया और ज़्यादा क़रीब हो गया)"

तो यह उस कुर्बत के अलावा है जो मेराज में हासिल हुई थी, क्योंकि सूरः नज्म में जिस क़रीब होने का ज़िक्र है, उस से मुराद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की कुर्बत व नज़दीकी है, जैसा कि हज़रत

2) ज़ादुल-मआद 2/47-48

आइशा रज़ि० और इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया है और आगे-पीछे की बातें भी इसी की दलील हैं, इस के ख़िलाफ़ मेराज की हदीस में जिस क़रीब होने और नज़दीकी का उल्लेख है उस के बारे में स्पष्ट है कि यह पालनहार से क़रीबी और नज़दीकी थी, और सूरः नज्म में इस को सिरे से छेड़ा ही नहीं गया, बल्कि इस में यह कहा गया है कि आप ने उन्हें दूसरी बार सिदरतुल मुंतहा के पास देखा और यह हज़रत जिब्रील थे। उन्हें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की अपनी शक्ल में दो बार देखा था, एक बार ज़मीन पर एक बार सिदरतुल मुंतहा के पास (अल्लाह बेहतर जानता है)[3]

इस बार भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सीना चाक किए जाने की घटना घटी और आप को इस यात्रा के दौरान कई चीज़ें दिखलाई गईं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दूध और शराब पेश किए गए। आप ने दूध इख़्तियार फ़रमाया। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रकृति का रास्ता बताया गया या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रकृति पा ली और याद रखिए कि अगर आप ने शराब ली होती तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नत में चार नहरें देखीं दो ज़ाहिर होने वाली और दो अंदर की। ज़ाहिर होने वाली नहरें नील व फ़ुरात थीं (इस का मतलब शायद यह है कि आप की रिसालत नील और फ़ुरात की हरी-भरी घाटियों को अपना वतन बनाएगी, यानी यहां के निवासी एक नस्ल के बाद एक नस्ल मुसलमान होंगे। यह नहीं कि इन दोनों नहरों के पानी का स्त्रोत जन्नत में है। (अल्लाह बेहतर जानता है।)

---

3) ज़ादुल-मआद 2/47-48, बुख़ारी 1/50, 1/455-481, मुस्लिम 1/91-96

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालिक, जहन्नम के दारोग़ा को भी देखा, वह हंसता न था और न उस के चेहरे पर ख़ुशी और चमक थी। आप ने जन्नत व जहन्नम भी देखी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों को भी देखा जो यतीमों का माल ज़ुल्म के साथ खा जाते हैं। उन के होंठ ऊंट के होंठों की तरह थे और वे अपने मुंह में पत्थर के टुकड़ों जैसे अंगारे ठूंस रहे थे, जो दूसरी ओर उन के पाख़ाने के रास्ते से निकल रहे थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ब्याज खाने वालों को भी देखा, उन के पेट इतने बड़े-बड़े थे कि वे अपनी जगह से इधर उधर नहीं हो सकते थे और जब आले-फ़िरऔन को आग पर पेश करने के लिए ले जाया जाता तो उन के पास से गुज़रते वक़्त उन्हें रौंदते हुए जाते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़िना करने वालों को भी देखा। उन के सामने ताज़ा और अच्छा मांस था और उसी के साथ-साथ सड़ा हुआ छीछड़ा भी था। ये लोग ताज़ा और अच्छा मांस छोड़ कर सड़ा हुआ छीछड़ा खा रहे थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन औरतों को देखा जो अपने पतियों पर दूसरों की औलाद दाख़िल कर देती हैं। (यानी दूसरों से ज़िना के ज़रिए गर्भवती होती हैं लेकिन जानकारी न होने की वजह से बच्चा उन के शौहर का समझा जाता है। आप ने उन्हें देखा कि उन के सीनों में बड़े-बड़े टेढ़े कांटे चुभा कर उन्हें आसमान और ज़मीन के बीच लटका दिया गया है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आते जाते हुए मक्का वालों का एक क़ाफ़िला भी देखा और उन्हें उन का एक ऊंट भी बताया जो भड़क कर भाग गया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन का पानी भी पिया जो एक ढके हुए बरतन में रखा था। उस वक़्त क़ाफ़िला

सो रहा था, फिर आप ने उसी तरह बरतन ढक कर छोड़ दिया और यह बात मेराज की सुबह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावे की सच्चाई की एक दलील साबित हुई।[4]

अल्लामा इब्ने क़य्यिम फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह के रसलू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की और अपनी क़ौम को इन बड़ी-बड़ी निशानियों की ख़बर दी जो अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिखाई थीं, तो क़ौम के झुठलाने, कष्ट पहुंचाने और सताने में और तेज़ी आ गई। उन्होंने आप से सवाल किया कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बयान करें, इस पर अल्लाह ने आप के लिए बैतुल मक़्दिस को ज़ाहिर कर दिया और वह आप की निगाहों के सामने आ गया, चुनांचे आप ने क़ौम को उस की निशनियां बतानी शुरू कीं। और उन से किसी बात का खंडन न बन पड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जाते और आते हुए उन के क़ाफ़िले से मिलने का भी ज़िक्र फ़रमाया और बतलाया कि उस के आने का वक़्त क्या है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस ऊंट की भी निशानदेही की जो क़ाफ़िले के आगे-आगे आ रहा था, फिर जैसा कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया था वैसा ही साबित हुआ। लेकिन इन सब के बावजूद उन की घृणा में बढ़ौतरी ही हुई और इन ज़ालिमों ने कुफ़्र करते हुए कुछ भी मानने से इंकार कर दिया।[5]

कहा जाता है कि अबू बक्र रज़ि० को इसी मौक़े पर सिद्दीक़ की उपाधि दी गई, क्योंकि आप ने इस घटना की उस समय पुष्टि की, जब कि और लोगों ने झुठलाया था।[6]

---

4) उपरोक्त हवाले तथा इब्ने हिशाम 1/397,402-406 तथा तफ़सीर की किताबों में सूरः इसरा की तफ़सीर

5) ज़ादुल-मआद 1/48 तथा बुख़ारी 2/684, मुस्लिम 1/96 और इब्ने हिशाम 1/402-403 तफ़सीर

6) इब्ने हिशाम 1/299

मेराज का लाभ बताते हुए जो सब से संक्षिप्त और महान बात कही गयी वह यह है:

لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا

"ताकि हम (अल्लाह) आप को अपनी कुछ निशानियां दिखाएं।"(17:1)

और नबियों के बारे में यही अल्लाह की सुन्नत है। इर्शाद है---

وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ

"और इसी तरह हम ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आसमान व ज़मीन की व्यवस्था दिखायी और ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो।" (6:75)

और मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया-----

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَىٰ

"ताकि हम तुम्हें कुछ बड़ी निशानियां दिखाएं।" (20:23)

फिर इन निशानियों के दिखाने का जो उद्देश्य था, उसे भी अल्लाह ने अपने इर्शाद وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ "(ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो)" के ज़रिए स्पष्ट कर दिया। चुनांचे जब नबियों के ज्ञान को इस तरह की दिखने वाली चीज़ों की गवाही मिल जाती थी, तो उन्हें 'ऐनुल-यकीन'' का वह पद मिल जाता था, जिसका अंदाज़ा लगाना संभव नहीं कि "देखी हुई के मुकाबले में सुनी हुई का क्या अर्थ" और यही वजह है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम अल्लाह की राह में ऐसी-ऐसी परेशनियां झेल लेते थे, जिन्हें कोई और झेल ही नहीं सकता। हक़ीक़त में उन की निगाहों में दुनिया की सारी ताक़तें मिल कर भी मच्छर के पर के बराबर हैसियत नहीं रखती थीं, इसी लिए वे इन ताक़तों की ओर से मिलने वाली सख़्तियों और कष्टों की कोई परवाह नहीं करते थे।

मेराज की इस घटना के पूरे मामले के पीछे जो रहस्य और तत्वदर्शिता काम कर रही थी, उन पर सोच-विचार और वार्ता का मूल

स्थान शरीअत के रहस्यों की किताबें हैं, अलबत्ता कुछ मोटी-मोटी सच्चाइयां ऐसी हैं जो इस शुभ यात्रा के स्रोतों से फूट कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (आचरण) के बाग़ीचे की तरफ़ चल पड़े हैं, इसलिए यहां संक्षेप में उन्हें लिखा जा रहा है।

आप देखेंगे कि अल्लाह ने सूरः इसरा में इसरा (सैर) की घटना केवल एक आयत में बता कर वाणी का रुख़ यहूदियों के काले कारनामों और अपराधों के बयान की ओर मोड़ दिया है, फिर उन्हें सचेत किया है कि यह क़ुरआन उस राह की हिदायत देता है जो सब से सीधी और सही राह है। क़ुरआन पढ़ने वाले को कभी-कभी संदेह होता है कि दोनों बातें बेजोड़ हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, बल्कि अल्लाह इस शैली द्वारा यह संकेत दे रहा है कि अब यहूदियों को मानव-जाति के नेतृत्व से हटा दिया जाने वाला है क्योंकि उन्होंने ऐसे-ऐसे अपराध किए हैं जिन के करने के बाद उन्हें इस पद पर बाक़ी नहीं रखा जा सकता, इस लिए अब यह पद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सौंपा जाएगा और इब्राहीमी दावत के दोनों केन्द्र इनके अधीन कर दिए जाएंगे। दूसरे शब्दों में अब समय आ गया है कि आध्यात्मिक नेतृत्व एक उम्मत (समुदाय) से दूसरी उम्मत को सौंप दी जाए: यानी एक एसी उम्मत से जिसका इतिहास लड़ाई-झगड़े व बेईमानी ओर ज़ुल्म व गुनाहो से भरा हुआ था, यह नेतृत्व छीन कर एक एसी उम्मत के हवाले कर दिया जाए—अर्थात एक एसी उम्मत से जिसका इतिहास लड़ाई-झगड़े, बेईमानी और ज़ुल्म व गुनाहों से भरा हुआ था, यह नेतृत्व छीन कर एक एसी उम्मत के हवाले कर दिया जाए जिस से भलाइयों और नेकियों के सोते फूटेंगे और जिसका पैग़म्बर सब से ज़्यादा ठीक रास्ता बताने वाले क़ुरआन की वह्य से परिपूर्ण है।

लेकिन यह नेतृत्व कैसे हस्तान्तरित हो सकता है जब कि इस उम्मत का रसूल, मक्का के पहाड़ों में लोगों के दर्मियान ठोकरें खाता फिर रहा है? उस वक़्त यह एक सवाल था जो एक दूसरी सच्चाई पर से परदा उठा रहा था और वह सच्चाई यह थी कि इस्लामी दावत का एक दौर

अपने अन्त और अपनी पूर्णता के क़रीब आ गया है और अब एक दूसरा दौर शुरू होने वाला है जिस की धारा पहले से अलग होगी, इसी लिए हम देखते हैं कि कुछ आयतों में मुश्रिकों को खुली चुनौती और खुली धमकी दी गई है, इर्शाद है!

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا

"और जब हम किसी बस्ती को नष्ट करना चाहते हैं तो वहां के धनिकों को हुक्म देते हैं, पर वे खुला विरोध करते हैं, पस उस बस्ती पर (विनाश का) कथन सत्य हो जाता है और हम उसे कुचल कर रख देते हैं।"

(17:16)

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

"और हम ने नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर दिया और तुम्हारा पालनहार अपने बंदों के अपराधों की ख़बर रखने और देखने के लिए काफ़ी है।"

(17:17)

फिर इन आयतों के साथ-साथ कुछ ऐसी आयतें भी हैं, जिन में मुसलमानों को ऐसे सांस्कृतिक नियम-उपनियम, विधान और मूल धाराएं बताई गई हैं जिन पर आगे इस्लामी समाज का निर्माण होना था, मानो अब वह किसी ऐसी धरती पर अपना ठिकाना बना चुके हैं, जहां हर पहलू से उनके मामले उनके अपने हाथ में हैं और उन्होंने एक ऐसी ज़ोरदार एकता बना ली है जिस पर समाज की चक्की घूमा करती है, इसलिए इन आयतों में इशारा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत जल्द ऐसी शरण-स्थली और शान्ति-स्थली पा लेंगे, जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन को स्थायित्व मिल जाएगा।

यह इसरा और मेराज की बरकतों वाली घटना की तह में छिपी

हिक्मतों और बंधे भेदों में से एक ऐसा भेद और एक ऐसी हिक्मत है जिस का हमारे विषय से सीधा-सीधा सम्बन्ध है इसलिए हम ने उचित समझा कि इसे बयान कर दें। इसी तरह की दो बड़ी हिक्मतों पर नज़र डालने के बाद हम ने यह राय बनायी है कि इसरा की यह घटना या तो अक़बा की पहली बैअत से कुछ ही पहले की है या अक़बा की दोनों बैअतों के बीच की है। (अल्लाह बेहतर जाने)

अक़बा[1] की पहली बैअ़त

हम बता चुके हैं कि नुबुवत के ग्यारहवें साल हज के मौसम में यस्रिब के छः आदमियों ने इस्लाम कुबूल कर लिया था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वायदा किया था कि अपनी क़ौम में जा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का प्रचार करेंगे।

इस का नतीजा यह हुआ कि अगले साल जब हज का मौसम आया (यानी ज़िलहिज्जा 12 नबवी, मुताबिक़ जुलाई सन् 621 ई०) तो बारह आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इन में हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन रिआब को छोड़ कर बाक़ी पांच वही थे जो पिछले साल भी आ चुके थे और इनके अलावा सात आदमी नये थे, जिन के नाम ये हैं।

---

1) अक़बा पहाड़ की घाटी अर्थात पहाड़ी के पतले रास्ते को कहते हैं मक्का से मिना आते जाते मिना के पश्चिमी किनारे पर एक पतले से पहाड़ी रास्ते से गुज़रना पड़ता था वही अक़बा के नाम से मशहूर है। ज़िल-हज्जा की 10 तारीख को जिस एक जमरे (शैतान) को कन्करी मारी जाती है वह इसी रास्ते के सिरे पर है। इसलिए इसे जमरा-ए अक़बा कहते हैं इसका दूसरा नाम जमरा-ए-कुबरा भी है। बाक़ी दो जमरे इस से पूरब में कुछ दूरी पर हैं चूंकि मिना का पूरा मैदान जहाँ हाजी ठहरते हैं इन तीनों जमरों के पूरब में है इसलिए सारी चहल पहल इधर ही रहती थी। और कन्करियाँ मारने के बाद इस तरफ़ लोगों का आना जाना ख़तम हो जाता था इसी लिए नबी (सल्ल०) ने 'बैअ़त' लेने के लिए इस घाटी को चुना और इसी वजह से इसको "बैअते अक़बा" कहते हैं। अब पहाड़ काट कर यहाँ चौड़ी सड़कें निकाल ली गई हैं।

1. मुआज़ बिन अल हारिस बिन अफ़रा	क़बीला बनू नज्जार (ख़ज़रज)
2. ज़कवान बिन अब्दुल क़ैस	क़बीला बनू ज़ुरैक़ (ख़ज़रज)
3. उबादा बिन सामित	क़बीला बनू ग़नम (ख़ज़रज)
4. यज़ीद बिन सालबा	क़बीला बनू ग़नम के हलीफ़ (ख़ज़रज)
5. अब्बास रज़ि० बिन उबादा बिन नज़ला	क़बीला बनू सालिम (ख़ज़रज)
6. अबुल हैसम बिन अत-तय्यिहान	क़बीला बनू अब्दुल-अशहल (औस)
7. उवैम बिन साइदा	क़बीला बनू अम्र बिन औफ़ (औस)

इन में से सिर्फ़ आख़िर के दो आदमी औस क़बीले से थे, बाक़ी सब के सब क़बीला ख़ज़रज से थे।[2] इन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिना में अक़बा के पास मुलाक़ात की और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ बातों पर बैअत की। ये बातें वहीं थीं जिन पर हुदैबिया समझौते के बाद और मक्का विजय के वक़्त औरतों से बैअत ली गई।

अक़बा की इस बैअत का विवरण सहीह बुख़ारी में हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत किया गया है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "आओ, मुझ से इस बात पर बैअत करो कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करोगे, चोरी न करोगे, ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, अपने हाथ पांव के दर्मियान से गढ़ कर कोई बुहतान न लाओगे, और किसी भली बात में मेरी नाफ़रमानी न करोगे। जो आदमी ये सारी बातें पूरी करेगा, उस का बदला अल्लाह पर है और जो आदमी इन में से किसी चीज़ को कर बैठेगा, फिर उसे दुनिया ही में उस की सज़ा दे दी जाएगी, तो यह उसके लिए कफ़्फ़ारा होगी और जो आदमी इन में से किसी चीज़ को कर बैठेगा, फिर अल्लाह उस पर परदा डाल देगा तो

2) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/85, इब्ने हिशाम 1/431-433

उस का मामला अल्लाह के हवाले है, चाहेगा तो सज़ा देगा और चाहेगा तो माफ़ कर देगा।" हज़रत उबादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम ने इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की।[3]

मदीना में इस्लाम का दूत

बैअत पूरी हो गई और हज ख़त्म हो गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों के साथ यस्रिब में अपना पहला दूत भेजा ताकि वह मुसलमानों को इस्लामी शिक्षा दे और उन्हें दीन के तमाम पहलुओं से सूचित करे और जो लोग अब तक शिरक पर चले आ रहे हैं, उन में इस्लाम फैलाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस के लिए बिल्कुल शुरू युग के मुसलमानों में से एक युवक को चुना, जिसका नाम मुसअ़ब बिन उमैर अ़ब्दरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु है।

महान सफलता

हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर रज़ि० मदीना पहुंचे तो हज़रत अस्अ़द बिन ज़ुरारः रज़ि० के घर निवास किया, फिर दोनों ने मिल कर यस्रिब वालों में ज़ोर-शोर से इस्लाम का प्रचार शुरू कर दिया। हज़रत मुस्अ़ब "मुक़री" की उपाधि से मशहूर हुए। (मुक़री का अर्थ है पढ़ाने वाला। उस वक़्त टीचर और उस्ताद को मुक़री कहते थे।)

प्रचार के सिलसिले में उन की सफलता की एक ज़ोरदार घटना यह है कि एक दिन हज़रत अस्अ़द बिन ज़ुरारः रज़ि० उन्हें साथ लेकर बनू अ़ब्दुल अशहल और बनू ज़फ़र के मुहल्ले में तशरीफ़ ले गए और वहां बनू ज़फ़र के एक बाग़ में मरिक़ नामी एक कुएं पर बैठ गए। उन के पास कुछ मुसलमान भी जमा हो गए। उस वक़्त तक बनू अबुल अशहल के दोनों सरदार यानी हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० हज़रत

---

3) बुख़ारी बाब हलावतुल-ईमान 1/7, बाब वुफ़ूदुल-अनसार 1/550-551 (शब्द इसी बाब का है) बाब क़ौलुहु तआला اذا جاءك المؤمنات 2/727 तथा बाबुल-हुदूद कफ़्फ़ारा 2/1003

उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० मुसलमान नहीं हुए थे, बल्कि शिरक पर ही थे। उन्हें जब ख़बर हुई तो हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत उसैद रज़ि० से कहा कि तनिक जाओ और इन दोनों को, जो हमारे कमज़ोरों को मूर्ख बनाने आए हैं, डांट दो और हमारे मुहल्ले में आने से मना कर दो। चूंकि असअ़द बिन ज़ुरारः मेरी ख़ाला का लड़का है, (इसलिए तुम्हें भेज रहा हूं) वरना यह काम मैं ख़ुद करता।

उसैद रज़ि० ने अपना हथियार उठाया और उन दोनों के पास पहुंचे। हज़रत असअ़द ने उन्हें आता देख कर हज़रत मुसअ़ब रज़ि० से कहा, "यह अपनी क़ौम का सरदार तुम्हारे पास आ रहा है। इस के बारे में अल्लाह से सच्चाई इख़्तियार करना।" हज़रत मुसअ़ब रज़ि० ने कहा, "अगर यह बैठा तो इस से बात करूंगा।" उसैद रज़ि० पहुंचे तो इन के पास खड़े होकर सख़्त-सुस्त कहने लगे। बोले, "तुम दोनों हमारे यहां क्यों आए हो? हमारे कमज़ोरों को मूर्ख बनाते हो? याद रखो! अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रूरत है, तो हम से अलग ही रहो।" हज़रत मुसअ़ब रज़ि० ने कहा, "क्यों न आप बैठें और कुछ सुनें। अगर कोई बात पसंद आ जाए तो क़ुबूल कर लें। पसंद न आए तो छोड़ दें।" हज़रत उसैद रज़ि० ने कहा, "बात इंसाफ़ की कह रहे हो। इसके बाद अपना हथियार गाड़ कर बैठ गए।" अब हज़रत मुसअ़ब रज़ि० ने इस्लाम की बात शुरू की और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई। उन का बयान है कि अल्लाह की क़सम! हम ने हज़रत उसैद रज़ि० के बोलने से पहले ही, उनके चेहरे की चमक-दमक से उन के इस्लाम का पता लगा लिया। इस के बाद उन्होंने ज़ुबान खोली, तो फ़रमाया, "यह तो बड़ा ही अच्छा और बहुत ही ख़ूब है। तुम लोग किसी को इस दीन में दाख़िल करना चाहते हो तो क्या करते हो? उन्होंने कहा, "आप नहा लें, कपड़े पाक कर लें, फिर हक़ (सत्य) की गवाही दें, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें।" उन्होंने, "उठ कर नहाया, कपड़े पाक किए, शहादत का कलिमा अदा किया और दो

रकअत नमाज़ पढ़ी फिर बोले---"मेरे पीछे एक और आदमी है, अगर वह तुम्हारी पैरवी करने वाला बन जाए तो उस की क़ौम का कोई आदमी पीछे न रहेगा और मैं उस को अभी तुम्हारे पास भेज रहा हूं।" (इशारा हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० की ओर था।)

इस के बाद हज़रत उसैद रज़ि० ने अपना हथियार उठाया और पलट कर हज़रत साद रज़ि० के पास पहुंचे। वह अपनी क़ौम के साथ महफ़िल में बैठे हुए थे। (हज़रत उसैद रज़ि० को देख कर) बोले, "मैं, अल्लाह की क़सम! कह रहा हूं कि यह आदमी तुम्हारे पास जो चेहरा लेकर आ रहा है, यह वह चेहरा नहीं है, जिसे लेकर गया था।" फिर जब हज़रत उसैद रज़ि० महफ़िल के पास आ खड़े हुए तो हज़रत साद रज़ि० ने उन से मालूम किया कि तुम ने क्या किया? उन्होंने कहा, "मैंने उन दोनों से बात की, तो अल्लाह की क़सम! मुझे कोई हरज तो नज़र नहीं आया, वैसे मैंने उन्हें मना कर दिया है और उन्होंने कहा है कि हम वही करेंगे जो आप चाहेंगे।

और मुझे मालूम हुआ है कि बनू हारिसः के लोग अस्अ़द बिन ज़ुरारः को क़त्ल करने गए हैं और इस की वजह यह है कि वे जानते हैं कि अस्अ़द आप की ख़ाला का लड़का है, इसलिए वे चाहते हैं कि आप का वचन तोड़ दें।" यह सुन कर साद गुस्से से भड़क उठे और अपना नेज़ा लेकर सीधे उन दोनों के पास पहुंचे, देखा तो दोनों इत्मीनान से बैठे हैं। समझ गए कि उसैद रज़ि० का मंशा यह था कि आप भी उन की बातें सुनें, लेकिन ये उन के पास पहुंचे तो खड़े होकर सख़्त-सुस्त कहने लगे, फिर अस्अ़द बिन ज़ुरारः को सम्बोधित करते हुए कहा, "अल्लाह की क़सम! ऐ अबू उमामा! अगर मेरे और तेरे बीच रिश्तेदारी का मामला न होता तो तुम मुझ से इस की उम्मीद न रख सकते थे। हमारे मुहल्ले में आकर ऐसी हरकतें करते हो जो हमें पसंद नहीं।"

उधर हज़रत अस्अ़द रज़ि० ने हज़रत मुस्अ़ब से पहले ही से कह

दिया था कि अल्लाह की क़सम! तुम्हारे पास एक ऐसा सरदार आ रहा है, जिस के पीछे उसकी पूरी क़ौम है। अगर उस ने तुम्हारी बात मान ली, तो फिर इन में से कोई भी न पिछड़ेगा, इसलिए हज़रत मुस्अ़ब रज़ि० ने हज़रत साद रज़ि० से कहा, "क्यों न आप तश्रीफ़ रखें और सुनें। अगर कोई बात पसंद आ गई तो क़ुबूल कर लें और अगर पसंद न आई तो हम आप की अप्रिय बात को आप से दूर ही रखेंगे।" हज़रत साद ने कहा, "इंसाफ़ की बात कहते हो।" इस के बाद अपना नेज़ा गाड़ कर बैठ गए। हज़रत मुस्अ़ब रज़ि० ने उन पर इस्लाम पेश किया और क़ुरआन की तिलावत की। उन का बयान है कि हमें साद के बोलने से पहले ही उनके चेहरे की चमक-दमक से उन के इस्लाम का पता लग गया। इस के बाद उन्होंने ज़ुबान खोली और फ़रमाया, "तुम लोग इस्लाम लाते हो तो क्या करते हो?" उन्होंने कहा, आप स्नान कर लें, कपड़े पाक कर लें, फिर हक़ की गवाही दें, फिर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ें।" हज़रत साद रज़ि० ने ऐसा ही किया।

इस के बाद अपना नेज़ा उठाया और अपनी क़ौम की मज्लिस में तश्रीफ़ लाए। लोगों ने देखते ही कहा, "हम, क़सम अल्लाह की, कह रहे हैं कि हज़रत साद रज़ि० जो चेहरा लेकर गए थे, उस के बजाए दूसरा चेहरा लेकर पलटे हैं।" फिर जब हज़रत साद रज़ि० मज्लिस वालों के पास आ कर रुके तो बोले, "ऐ बनू अ़ब्दुल अशहल! "तुम लोग अपने भीतर मेरा मामला कैसा जानते हो?" उन्होंने कहा, आप हमारे सरदार हैं, सब से अच्छी सूझ-बूझ के मालिक हैं और हमारे सब से ज़्यादा बरकत वाले निगरां हैं। उन्होंने कहा, "अच्छा, तो सुनो! अब तुम्हारे मर्दों और औरतों से मेरी बातचीत हराम है जब तक कि तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान न लाओ।"

उन की इस बात का यह असर हुआ कि शाम होते-होते इस

क़बीले का कोई भी मर्द और कोई भी औरत ऐसी न बची जो मुसलमान न हो गई हो। सिर्फ़ एक आदमी जिस का नाम उसैरम था, उसका इस्लाम उहद तक टला रहा फिर उहद के दिन उस ने इस्लाम अपनाया और लड़ाई में लड़ता हुआ काम आ गया। उस ने अभी अल्लाह के लिए एक सज्दा भी न किया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस ने थोड़ा अमल किया और ज़्यादा बदला पाया।

हज़रत मुस्अ़ब रज़ि०, हज़रत अस्अ़द बिन ज़ुरारः ही के घर ठहरे रह कर इस्लाम का प्रचार करते रहे, यहां तक कि अंसार का कोई घराना बाक़ी न बचा, जिस में कुछ मर्द, औरतें मुसलमान न हो चुकी हों। सिर्फ़ बनी उमैया बिन ज़ैद और ख़तमा और वाइल के मकान बाक़ी रह गए थे। प्रसिद्ध कवि क़ैस बिन अस्लत इन्हीं का आदमी था और ये लोग उसी की बात मानते थे। इस कवि ने इन्हें खाई की लड़ाई (सन् 05 हिजरी) तक इस्लाम से रोके रखा। बहरहाल हज के अगले मौसम यानी नुबुवत के तेरहवें साल का हज का मौसम आने से पहले हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर रज़ि० कामियाबी की ख़ुशख़बरियां लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में मक्का आए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यस्रिब के क़बीलों के हालात, उनकी जंगी और रक्षात्मक क्षमताओं और भलाई की योग्यताओं का विस्तृत विवरण दिया।[4]

---

4) इब्ने हिशाम 1/435-438,2/90, ज़ादुल-मआद 2/51

अक़बा की दूसरी बैअ़त

नुबुवत के तरहवें साल हज के मौसम जून 622 ई०------में यस्रिब के सत्तर से ज़्यादा मुसलमान हज अदा करने के लिए मक्का तश्रीफ़ लाए। ये अपनी क़ौम के मुश्रिक हाजियों में शामिल हो कर आए थे और अभी यस्रिब ही में थे या मक्के के रास्ते ही में थे कि आपस में एक दूसरे से पूछने लगे कि हम कब तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यूं ही मक्का के पहाड़ों में चक्कर काटते, ठोकरें खाते और भयभीत किए जाते छोड़े रखेंगे?

फिर जब ये मुसलमान मक्का पहुंच गए तो परदे के पीछे से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सम्पर्क शुरू किया और अन्त में इस बात पर सहमत हो गए कि दोनों फ़रीक़ तश्रीक़ के दिनों[1] के बीच के दिन----- 12 ज़िल हिज्जा को-----मिना में जमरा-ए-ऊला यानी जमरा-ए-अ़कबा के पास जो घाटी है, उसी में जमा हों और यह मिलन रात के अंधेरे में बिल्कुल ख़ुफ़िया तरीक़े पर हो।

आइए, अब इस एतिहासिक मिलन के हालात, अंसार के एक मार्ग दर्शक के मुख से सुनें कि यही वह मिलन है, जिस ने इस्लाम और मूर्ति के पुजारियों की लड़ाई में समय की धारा मोड़ दी।

हज़रत क़ाब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं-----

1) ज़िल-हिज्जा महीने की 11, 12 और 13 तारीख़ों को अय्यामे तश्रीक़ कहते हैं।

"हम लोग हज के लिए निकले। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तश्रीक़ के दिनों के बीच के दिन अक़बा में मुलाक़ात तय हुई और आख़िरकार वह रात आ गई जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात तय थी। हमारे साथ हमारे एक माने हुए सरदार अब्दुल्लाह बिन हिराम भी थे, (जो अभी इस्लाम न लाए थे) हम ने उन को साथ ले लिया था, वरना हमारे साथ हमारी क़ौम के जो मुश्रिक थे, हम उन से अपना सारा मामला ख़ुफ़िया रखते थे—मगर हम ने अब्दुल्लाह बिन हिराम से बात चीत की और कहा कि ऐ अबू जाबिर! आप हमारे एक प्रतिष्ठित और सज्जन नेता हैं और हम आप को आप की मौजूदा हालत से निकालना चाहते हैं ताकि आप क़ियामत में आग का ईंधन न बन जाएं। इस के बाद हम ने उन्हें इस्लाम की दावत दी और बताया कि आज अक़बा में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारी मुलाक़ात तय है। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हमारे साथ अक़बा में तशरीफ़ ले गए और नक़ीब (चोबदार) भी मुक़र्रर हुए।"

हज़रत काब रज़ि० घटना का विवरण बताते हुए फ़रमाते हैं----

"हम लोग पहले की तरह उस रात अपनी क़ौम के साथ अपने डेरों में सोए, लेकिन जब तिहाई रात बीत गई तो अपने डेरों से निकल-निकल कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तय किए हुए स्थान पर जा पहुंचे। हम इस तरह चुपके-चुपके दुबक कर निकलते थे जैसे चिड़िया घोंसले से सिकुड़ कर निकलती है, यहां तक कि हम सब अक़बा में जमा हो गए। हमारी कुल संख्या पचहत्तर थी, तिहत्तर मर्द और दो औरतें, एक उम्मे अ़म्मारा नसीबा बिन्ते काब थीं जो क़बीला बनू माज़िन बिन नज्जार से ताल्लुक़ रखती थीं और दूसरी उम्मे मनीअ़ अस्मा बिन्त अ़म्र थीं जिनका ताल्लुक़ क़बीला बनू सलमा से था।

हम सब घाटी में जमा होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम का इन्तिज़ार करने लगे और अन्त में वह क्षण भी आ गया जब आप तशरीफ़ लाए। आप के साथ आप के चचा हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब भी थे। वह यद्यपि अभी तक अपनी क़ौम के दीन पर थे, मगर चाहते थे कि अपने भतीजे के मामले में मौजूद रहें और उन के लिए पक्का इत्मीनान हासिल कर लें। सब से पहले बात भी उन्होंने ही शुरू की।[2]

बातचीत की शुरूआ़त और हज़रत अ़ब्बास रज़ि० की ओर से मामले की बारीकी की व्याख्या

मीटिंग पूरी हो गयी तो धार्मिक और सैनिक सहायता के वचन को क़तई और आख़िरी शक्ल देने के लिए बातचीत शुरू हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा हज़रत अ़ब्बास ने सब से पहले ज़बान खोली। वह चाहते थे कि वह पूरा विवरण इस ज़िम्मेदारी की नज़ाकत के साथ रखें जो इस वचन और वायदे के नतीजे में इन के सर पड़ने वाली थी चुनांचे उन्होंने कहा——

ख़ज़रज के लोगो! अ़रब की जनता अंसार के दोनों ही क़बीले यानी ख़ज़रज और औस को ख़ज़रज ही कहते थे—हमारे अंदर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जो हैसियत है, वह तुम्हें मालूम है। हमारी क़ौम के जो लोग धार्मिक दृष्टि से हमारी ही जैसी राय रखते हैं, हम ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को उन से बचा रखा है। वह अपनी क़ौम और अपने शहर में ताक़त, इज़्ज़त और शक्ति व सुरक्षा के अंदर हैं, मगर अब वह तुम्हारे यहां जाने और तुम्हारे साथ रहने का आग्रह कर रहे हैं, इसलिए अगर तुम्हारा यह विचार है कि तुम उन्हें जिस चीज़ की ओर बुला रहे हो, उसे निभा लोगे और उन्हें उनके विरोधियों से बचा लोगे, तब तो ठीक है। तुम ने जो ज़िम्मेदारी उठायी है, उसे तुम जानो, लेकिन अगर तुम्हारा यह अंदाज़ा है कि तुम उन्हें अपने पास ले

2) इब्ने हिशाम 1/440-441

जाने के बाद उन का साथ छोड़ कर अलग हो जाओगे, तो फिर अभी से इन्हें छोड़ दो, क्योंकि वह अपनी क़ौम और अपने शहर में बहरहाल इज़्ज़त और हिफ़ाज़त से हैं।''

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि हम ने अब्बास रज़ि० से कहा कि आप की बात हम ने सुन ली। अब ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप बातचीत कर लीजिए और अपने लिए और अपने पालनहार के लिए जो वचन लेना पसंद करें, लीजिए।[3]

इस जवाब से पता चलता है कि इस भारी ज़िम्मेदारी को उठाने और उस के ख़तरे भरे नतीजों को झेलने के सिलसिले में अंसार के दृढ़ निश्चय, साहस, ईमान और उत्साह और निष्ठा का क्या हाल था, इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बातें कीं। आप ने पहले क़ुरआन की तिलावत की, अल्लाह की ओर बुलाया और इस्लाम पर उभारा। इस के बाद बैअ़त हुई।

बैअ़त की धाराएं

बैअ़त की घटना इमाम अहमद ने हज़रत जाबिर रज़ि० से सविस्तार रिवायत की है। हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि हम ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम आप से किस बात पर बैअ़त करें? आप ने फ़रमाया, ''इस बात पर कि—

(1) चुस्ती और सुस्ती, हर हाल में बात सुनोगे और मानोगे।

(2) तंगी और ख़ुशहाली, हर हाल में माल ख़र्च करोगे।

(3) भलाई का हुक्म दोगे और बुराई से रोकोगे,

(4) अल्लाह की राह में उठ खड़े होगे और अल्लाह के मामले में किसी निंदा करने वाले की निंदा की परवाह न करोगे।

3) इब्ने हिशाम 1/441-442

(5) और जब मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा तो मेरी मदद करोगे और जिस चीज़ से अपनी जान और अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो, उस से मेरी भी हिफ़ाज़त करोगे।

और तुम्हारे लिए जन्नत है।''[4]

हज़रत काब रज़ि० की रिवायत में-----जिसका इब्ने इसहाक़ ने उल्लेख किया है-----सिर्फ़ अन्तिम धारा (5) का उल्लेख है, चुनांचे उस में कहा गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरआन की तिलावत, अल्लाह की तरफ़ दावत और इस्लाम का प्रलोभन देने के बाद फ़रमाया, "मैं तुम से इस बात पर बैअत करता हूं कि तुम उस चीज़ से मेरी हिफ़ाज़त करोगे जिससे अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो।" इस पर हज़रत बरा बिन मारूर रज़ि० ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ा और कहा, हां! उस ज़ात की क़सम! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा है, हम यक़ीनन उस चीज़ से आप की हिफ़ाज़त करेंगे, जिससे अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हैं, इसलिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप हम से बैअत लीजिए। हम अल्लाह की क़सम! लड़ाई के बेटे हैं और हथियार हमारा खिलौना है। हमारी यही रीति बाप-दादा से चली आ रही है।

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत बरा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात कर ही रहे थे कि अबुल हैसम बिन तैहान ने बात काटते हुए कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

---

4) इसे इमाम अहमद बिन हंबल ने हसन सनद से रिवायत किया है और इमाम हाकिम और इब्ने हिब्बान ने सही कहा है। देखिए मुख़तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) पृ० 155 इब्ने इस्हाक़ ने लगभग यही चीज़ हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत की है। लेकिन इस में एक धारा ज़्यादा है जो यह है कि हम शासकों से शासन के लिए झगड़ा नहीं करेंगे। देखिए इब्ने हिशाम 1/454

व सल्लम! हमारे और कुछ लोगों (यानी यहूदियों) के दर्मियान वचन-बद्धता की रस्सियां हैं और अब हम इन रस्सियों को काटने वाले हैं तो कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि हम ऐसा कर डालें, फिर अल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़लबा दे तो आप हमें छोड़ कर अपनी क़ौम की ओर पलट आएं।"

यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कुराए, फिर फ़रमाया, "(नहीं) बल्कि आप लोगों का ख़ून मेरा ख़ून और आप लोगों की बर्बादी मेरी बर्बादी है। मैं आप से हूं और आप मुझ से हैं जिस से आप लड़ेंगे, उस से मैं लड़ूंगा और जिस से आप समझौता करेंगे, उस से मैं समझौता करूंगा।[5]"

बैअ़त की ख़तरनाकी की दोबारा याद दिहानी

बैअ़त (आज्ञाकारिता का वचन देना) की शर्तों के बारे में बातें पूरी हो चुकीं और लोगों ने बैअ़त शुरू करने का इरादा किया तो पहली पंक्ति के दो मुसलमान, जो सन् 11 नबवी और सन् 12 नबवी के हज के दिनों में मुसलमान हुए थे, एक के बाद एक करके उठे, ताकि लोगों के सामने उन की ज़िम्मेदारी की बारीकी और ख़तरनाकी को अच्छी तरह स्पष्ट कर दें और ये लोग मामले के सारे पहलुओं को अच्छी तरह समझ लेने के बाद ही बैअ़त करें। इस से यह भी पता लगाना मक़्सद था कि क़ौम किस हद तक क़ुर्बानी देने के लिए तैयार है।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि जब लोग बैअ़त के लिए जमा हो गए तो हज़रत अ़ब्बास बिन उबादा बिन नुज़ला रज़ि० ने कहा, "तुम लोग जानते हो कि इन से (इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ था) किस बात पर बैअ़त कर रहे हो?" जी हां की आवाज़ों पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, "तुम उन से लाल और काले लोगों से लड़ने पर

5) इब्ने हिशाम 1/442

बैअ़त कर रहे हो। अगर तुम्हारा यह विचार हो कि जब तुम्हारे मालों का सफ़ाया कर दिया जाएगा और तुम्हारे भले लोग क़त्ल कर दिए जाएंगे, तो तुम, इनका साथ छोड़ दोगे तो अभी से छोड़ दो, क्योंकि अगर तुम ने इन्हें ले जाने के बाद छोड़ दिया तो यह दुनिया और आख़िरत की रुसवाई होगी और अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि तुम माल की तबाही और भले लोगों के क़त्ल के बावजूद वह वायदा निभाओगे जिस की ओर तुम ने इन्हें बुलाया है, तो फिर बेशक तुम इन्हें ले लो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! यह दुनिया और आख़िरत की भलाई है।"

इस पर सब ने एक आवाज़ हो कर कहा, हम माल की तबाही और भलों के क़त्ल का ख़तरा मोल लेकर इन्हें क़ुबूल करते हैं। हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम ने यह वायदा पूरा किया, तो हमें इस के बदले क्या मिलेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जन्नत! लोगों ने अ़र्ज़ किया, अपना हाथ फैलाइए! आप ने हाथ फैलाया और लोगों ने बैअ़त की।[6]

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि जिस वक़्त हम बैअ़त करने उठे तो हज़रत असअ़द बिन ज़ुरारः रज़ि० ने——जो उन सत्तर आदमियों में सब से कम उम्र थे——आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लिया और बोले, "यस्रिब वालो! तनिक ठहर जाओ। हम आप की सेवा में ऊंटों के कलेजे मार कर (यानी लम्बा चौड़ा सफ़र कर के) इस यक़ीन के साथ हाज़िर हुए हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। आज आप को यहां से ले जाने का मतलब है सारे अ़रब से दुश्मनी, तुम्हारे बड़े-बड़े सरदारों की हत्या और तलवारों की मार। इसलिए अगर यह सब कुछ सहन कर सकते हो, तब तो इन्हें ले चलो और तुम्हारा बदला अल्लाह पर है और अगर तुम्हें अपनी जान

6) इब्ने हिशाम 1/446

प्यारी है तो इन्हें अभी से छोड़ दो। यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा कुबूल कर लिया जाने वाला उज़्र (विवशता) होगा।"[7]

बैअ़त पूरी हुई

बैअ़त की धाराएं पहले ही तय हो चुकी थीं। एक बार बारीकियों को भी स्पष्ट किया जा चुका था। अब यह ताकीद और हुई तो लोगों ने एक आवाज़ होकर कहा असुअ़द बिन ज़ुरारः! अपना हाथ हटाओ। अल्लाह की क़सम! हम इस बैअ़त को न छोड़ सकते हैं और न तोड़ सकते हैं।[8]

इस जवाब से हज़रत असुअ़द को अच्छी तरह मालूम हो गया कि क़ौम किस हद तक इस राह में जान देने के लिए तैयार है——असल में हज़रत असुअ़द बिन ज़ुरारा, हज़रत मुसुअ़ब बिन उमैर रज़ि० के साथ मिल कर मदीने में इस्लाम के सब से बड़े प्रचारक थे, इसलिए प्राकृतिक रूप से वही इन बैअ़त करने वालों के धार्मिक नेता भी थे, और इसी लिए सब से पहले उन्होंने बैअ़त भी की। चुनांचे इब्ने इसहाक़ की रिवायत है कि बनू नज्जार कहते हैं कि अबू उमामा असुअ़द बिन ज़ुरारः सब से पहले आदमी हैं जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हाथ मिलाया।[9] और इस के बाद आम बैअ़त हुई। हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि हम लोग एक-एक आदमी कर के उठे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से बैअ़त ली और इस के बदले जन्नत की ख़ुशख़बरी दी।[10]

---

7) मुसनद अहमद

8) मुसनद अहमद

9) इब्ने इस्हाक़ का यह भी ब्यान है कि बनू अब्दुल-अशहल कहते हैं कि सबसे पहले-पहले अबुल-हैसम बिन तैहान ने बैअ़त की और हज़रत कअ़ब बिन मालिक कहते हैं कि बरा बिन मअरूर ने की (इब्ने हिशाम1/447) मेरा ख़्याल है कि मुमकिन है कि बैअत से पहले नबी (सल्ल०) से हज़रत अबुल-हैसम और बरा की जो बातचीत हुई थी लोगों ने इसी को बैअत समझ लिया हो वरना इस वक़्त आगे बढ़ाए जाने के सब से ज़्यादा हक़दार हज़रत असअ़द बिन ज़ुरारः ही थे। [illegible]

10) मुसनद अहमद

बाक़ी रहीं दो औरतें जो इस मौक़े पर हाज़िर थीं, तो उन की बैअ़त सिर्फ़ ज़ुबानी हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी परायी औरत से हाथ नहीं मिलाया।[1]

बारह नक़ीब (चोबदार)

बैअ़त पूरी हो चुकी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह प्रस्ताव रखा कि बारह नेता चुन लिए जाएं जो अपनी-अपनी क़ौम के नक़ीब (चोबदार) हों और इस बैअ़त की धाराओं को अ़मली जामा पहनाने के लिए अपनी क़ौम की तरफ़ से वही नुमाइन्दे और ज़िम्मेदार हों। आप का इर्शाद था कि आप लोग अपने अंदर से बारह नक़ीब पेश कीजिए, ताकि वही लोग अपनी-अपनी क़ौम के मामलों के ज़िम्मेदार हों। आप के इस इर्शाद पर तुरन्त ही नक़ीबों का चुनाव हुआ। नौ ख़ज़रज से चुने गए और तीन औस से। नाम इस तरह हैं—

ख़ज़रज के नक़ीब

1. अस्अ़द बिन ज़ुरारः बिन अ़दस
2. साद बिन रबीअ़ बिन अ़म्र
3. अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा बिन सालबा
4. राफ़ेअ़ बिन मालिक बिन अ़जलान
5. बरा बिन मारूर बिन सख़्र
6. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिराम
7. उबादा बिन सामित बिन क़ैस
8. साद बिन उबादा बिन दुलैम
9. मुंज़िर बिन अ़म्र बिन ख़ुनैस

[1] देखिए मुस्लिम बाब कैफ़िय्यतु बैअतिन-निसा 2/131

औस के नक़ीब

1. उसैद बिन हुज़ैर बिन सिमाक
2. साद बिन ख़ैसमा बिन हारिस,
3. रिफ़ाआ बिन अब्दुल मुन्ज़िर बिन ज़ुबैर[12]

जब इन नक़ीबों का चुनाव हो चुका तो उन से सरदार और ज़िम्मेदार होने की हैसियत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और वचन लिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "आप लोग अपनी क़ौम के तमाम मामलों के ज़िम्मेदार हैं, जैसे हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर से ज़िम्मेदार हुए थे और मैं अपनी क़ौम यानी मुसलमानों का ज़िम्मेदार हूं।" इन सब ने कहा, "जी हां।"[13]

शैतान समझौता खोल देता है

समझौता पूरा हो चुका था और अब लोग बिखरने ही वाले थे कि एक शैतान को उस का पता लग गया। चूंकि यह बिल्कुल अन्तिम क्षणों में हुआ था और इतना मौक़ा न था कि यह ख़बर चुपके से क़ुरैश को पहुंचा दी जाए और वे यकायक इस में शरीक होने वालों पर टूट पड़ें और उन्हें घाटी ही में जा लें, इसलिए शैतान ने झट एक ऊंची जगह खड़े होकर, बड़ी ऊंची आवाज़ से, जो शायद ही कभी सुनी गई हो, यह पुकार लगाई, "ख़ेमे वालो"! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को देखो, इस वक़्त बद-दीन उस के साथ हैं और तुम से लड़ने के लिए जमा हैं।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "यह इस घाटी का शैतान है। ओ अल्लाह के दुश्मन! सुन, अब मैं तेरे लिए

12) ज़ुबैर को कुछ लोगों ने ज़ुनैर कहा है कुछ सीरत की किताबों में रिफ़ाआ के बदले अबुल-हैसम बिन तैहान का नाम लिखा है।

13) इब्ने हिशाम 1/443-444,446

जल्द ही फ़ारिग़ हो रहा हूं।" इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से फ़रमाया कि वे अपने डेरों पर चले जाएं।[14]

कुरैश पर चोट लगाने के लिए अंसार की मुस्तैदी

इस शैतान की आवाज़ सुन कर हज़रत अब्बास रज़ि० बिन उबादा बिन नुज़ला ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम! जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है, आप चाहें तो हम कल मिना वालों पर अपनी तलवारों के साथ टूट पड़ें।" आप ने फ़रमाया, "हमें इस का हुक्म नहीं दिया गया है, बस आप लोग अपने डेरों में चले जाएं।" इस के बाद लोग वापस जाकर सो गए, यहां तक कि सुबह हो गई।[15]

यस्रिब के सरदारों से कुरैश का विरोध

यह ख़बर कुरैश के कानों तक पहुंची तो दुख-शोक की अधिकता से उन के अंदर कोहराम मच गया, क्योंकि इस जैसी बैअत के जो नतीजे उन की जान व माल के लिए निकल सकते थे, इस का उन्हें अच्छी तरह अंदाज़ा था, चुनांचे सुबह होते ही उनके सरदारों और बड़े-बड़े मुजरिमों के भारी भरकम प्रतिनिधि मंडल ने इस समझौते के ख़िलाफ़ कड़ा विरोध करने के लिए यस्रिब वालों के ख़ेमों का रुख़ किया और यूं बोला;

"ख़ज़रज के लोगो! हमें मालूम हुआ है कि आप लोग हमारे इस साहब को हमारे बीच से निकाल ले जाने के लिए आए हैं और हम से लड़ने के लिए इस के हाथ पर बैअत कर रहे हैं, हालांकि कोई अरब क़बीला, ऐसा नहीं जिस से लड़ाई करना हमारे लिए इतना ज़्यादा नागवार हो, जितना आप लोगों से है।"[16]

---

14) ज़ादुल-मआद 1/51
15) इब्ने हिशाम 1/448
16) इब्ने हिशाम 1/448

लेकिन चूंकि ख़ज़रज के मुश्रिक इस बैअ़त के बारे में सिरे से कुछ जानते ही न थे, क्योंकि यह पूरे रहस्यमय तरीक़े से रात के अंधेरे में हुई थी, इसलिए इन मुश्रिकों ने अल्लाह की क़सम खा-खा कर यक़ीन दिलाया कि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं है, हम इस तरह की कोई बात सिरे से जानते ही नहीं। अन्त में यह मंडली अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन ससूल के पास पहुंची। वह भी कहने लगा, "यह झूठ है, ऐसा नहीं हुआ है और यह तो हो ही नहीं सकता कि मेरी क़ौम मुझे छोड़ कर इस तरह का काम कर डाले, अगर मैं यस्रिब में होता तो भी मुझ से मश्वरा किए बिना मेरी क़ौम ऐसा न करती।"

बाक़ी रहे मुसलमान तो उन्होंने कनखियों से एक दूसरे को देखा और चुप साध ली। उन में से किसी ने हां या नहीं के साथ ज़ुबान ही नहीं खोली। आख़िर क़ुरैशी सरदारों में रुझान यह रहा कि मुश्रिकों की बात सच है, इस प्रकार वह विफल हो कर वापस चले गए।

ख़बर का यक़ीन और बैअ़त करने वालों का पीछा

मक्का के सरदार लगभग इस यक़ीन के साथ पलटे थे कि यह ख़बर ग़लत है, लेकिन इस की कुरेद में वे बराबर लगे रहे। आख़िर उन्हें यक़ीनी तौर पर मालूम हो गया कि ख़बर सही है और बैअ़त हो चुकी है। लेकिन यह पता उस वक़्त चला, जब हाजी लोग अपने-अपने घरों के लिए रवाना हो चुके थे। इस लिए उन के सवारों ने तेज़ रफ़्तारी से यस्रिब वालों का पीछा किया, लेकिन मौक़ा निकल चुका था, अलबत्ता उन्होंने साद बिन उबादा रज़ि० और मुंज़िर बिन अ़म्र रज़ि० को देख लिया और उन्हें जा खदेड़ा, लेकिन मुंज़िर ज़्यादा तेज़ रफ़्तार साबित हुए और निकल भागे, अलबत्ता साद बिन उबादा रज़ि० पकड़ लिए गए और उन का हाथ गरदन के पीछे उन्हीं के कजावे की रस्सी से बांध दिया गया, फिर उन्हें मारते-पीटते बाल नोचते मक्का ले जाया गया, लेकिन वहां मुत-इम बिन अ़दी और हारिस बिन हर्ब बिन उमैया ने आकर छुड़ा

दिया, क्योंकि उन दोनों के जो क़ाफ़िले मदीना से गुज़रते थे, वे हज़रत साद रज़ि० ही की पनाह में गुज़रते थे, इधर अंसार उन की गिरफ़्तारी के बाद आपस में मश्वरा कर रहे थे कि क्यों न धावा बोल दिया जाए, मगर इतने में वे दिखायी पड़ गए। इस के बाद तमाम लोग सकुशल मदीना पहुंच गए।[17]

यही अक़बा की दूसरी बैअत है जिसे "बैअ़ते अक़बा कुबरा" कहा जाता है। यह बैअ़त एक ऐसे माहौल में हुई कि जिस पर मुहब्बत व वफ़ादारी, बिखरे हुए ईमान वालों के बीच सहयोग और सहायता, आपसी विश्वास और जान निछावर करने वाली भावनाएं छायी हुई थीं। चुनांचे यस्रिब वालों के दिल अपने कमज़ोर मक्की भाइयों की मुहब्बत से भरे हुए थे। उन के भीतर इन भाइयों के समर्थन का उत्साह था और उन पर ज़ुल्म करने वालों के ख़िलाफ़ ग़म व गुस्सा था उन के सीने अपने उस भाई के प्रेम से भरे हुए थे, जिसे देखे बिना सिर्फ़ अल्लाह के लिए और उसी के मामले में अपना भाई बना लिया था।

और ये भावनाएं केवल किसी सामयिक खिंचाव का नतीजा न थे, जो दिन बीतने के साथ-साथ ख़त्म हो जाती है, बल्कि इस का स्रोत अल्लाह पर, रसूल पर और किताब पर ईमान था, यानी वह ईमान जो ज़ुल्म व ज़्यादती की किसी बड़ी से बड़ी ताक़त के सामने झुकता नहीं, वह ईमान कि जब उस से सुगन्धित हवाएं चलती हैं तो विश्वास और कर्म में अनोखी बातें सामने आती हैं, इसी ईमान की बदौलत मुसलमानों ने समय के पन्नों पर ऐसे-ऐसे कारनामे लिखाये और ऐसी-ऐसी निशानियां छोड़ीं कि उन की मिसाल से भूतकाल और वर्तमान-काल ख़ाली हैं और शायद भविष्य-काल भी ख़ाली ही रहेगा।

17) ज़ादुल-मआद 1/51-52, इब्ने हिशाम 1/448-450

हिजरत के हरावल दस्ते (टुकड़ियां)

जब दूसरी अक़बा की बैअत पूरी हो गयी, इस्लाम, कुफ़्र और अज्ञानता के लम्बे-चौड़े मरूस्थल में अपने एक वतन की बुनियाद रखने में सफ़ल हो गया---और यह सब से महत्वपूर्ण सफलता थी जो इस्लाम ने अपनी दावत की शुरूआत से अब तक हासिल की थी——तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इजाज़त दी कि वे अपने इस नये वतन की ओर हिजरत कर जाएं।

हिजरत का अर्थ यह था कि सारे फ़ायदों को छोड़ कर और माल की क़ुर्बानी देकर सिर्फ़ जान बचा ली जाए और वह भी यह समझते हुए कि यह जान भी ख़तरे के निशाने पर है, शुरू रास्ते से लेकर रास्ते के आख़िर तक कहीं भी हलाक की जा सकती है, फिर सफ़र भी एक अस्पष्ट भविष्य की ओर है। न जाने आगे चल कर अभी कौन-कौन सी मुसीबतों, दुखों और कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

मुसलमानों ने यह सब कुछ जानते हुए हिजरत की शुरूआत कर दी। इधर मुश्रिकों ने भी उन के जाने में रुकावटें खड़ी करनी शुरू कीं, क्योंकि वे समझ रहे थे कि इस में बहुत से ख़तरे छिपे हुए हैं। आगे हिजरत के कुछ नमूने दिए जा रहे हैं-----

1. सब से पहले मुहाजिर हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उन्होंने, इब्ने इसहाक़ की राय के मुताबिक़ अक़बा-ए-कुबरा की बैअत से एक साल पहले हिजरत की थी, इन के साथ इन के बीवी-बच्चे भी

थे। जब उन्होंने रवाना होना चाहा तो उनके ससुराल वालों ने कहा कि यह रही आप की जान। इसके बारे में तो आप हम पर ग़ालिब आ गए, लेकिन यह बताइए कि यह हमारे घर की लड़की, आख़िर किस बुनियाद पर हम आप को छोड़ दें कि आप इसे शहर-शहर घुमाते फिरें? चुनांचे उन्होंने उन से उन की बीवी छीन ली। इस पर अबू सलमा रज़ि० के घर वालों को ताव आ गया और उन्होंने कहा कि जब तुम लोगों ने इस औरत को हमारे आदमी से छीन लिया तो हम अपना बेटा इस औरत के पास नहीं रहने दे सकते। चुनांचे दोनों फ़रीक़ ने उस बच्चे को अपनी-अपनी ओर खींचा, जिस से उसका हाथ उखड़ गया और अबू सलमा रज़ि० के घर वाले उस को अपने पास ले गए। सार यह कि अबू सलमा रज़ि० ने अकेले मदीना का सफ़र किया।

इस के बाद हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० का हाल यह था कि वह अपने शौहर की रवानगी और अपने बच्चे से महरूमी के बाद हर दिन सुबह-सुबह अबतह पहुंच जाती (जहां यह घटना हुई थी) और शाम तक रोती रहतीं। इसी हालत में एक साल बीत गया।

आख़िर में उन के घराने के किसी आदमी को तरस आ गया और उस ने कहा कि इस बेचारी को जाने क्यों नहीं देते? इसे ख़ामख़ाह इस के शौहर और बेटे से जुदा कर रखा है। इस पर उम्मे सलमा रज़ि० से उन के घर वालों ने कहा कि अगर तुम चाहो तो अपने शौहर के पास चली जाओ। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने बेटे को उस के दधियाल वालों से वापस लिया और मदीना चल पड़ीं।

अल्लाहु अकबर! कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी का सफ़र और साथ में अल्लाह की कोई मख़्लूक़ (पैदा किए हुए जीव) नहीं। जब तनईम पहुंचीं तो उस्मान बिन अबी तलहा मिल गया। उसे हालात मालूम हुए तो साथ देते हुए मदीना पहुंचाने ले गया और जब कुबा की आबादी नज़र आयी, तो बोला, "तुम्हारा शौहर इसी बस्ती में है, इसी

में चली जाओ। अल्लाह बरकत दे।" इस के बाद वह मक्का पलट आया।[1]

2. हज़रत सुहैब रज़ि० ने जब हिजरत का इरादा किया, तो उन से कुरैश के लोगों ने कहा, "तुम हमारे पास आए थे, तो हक़ीर व फ़क़ीर थे, लेकिन यहां आकर तुम्हारा माल बहुत ज़्यादा हो गया और तुम बहुत आगे पहुंच गए। अब तुम चाहते हो कि अपनी जान और अपना माल दोनों लेकर चल दो तो अल्लाह की क़सम! ऐसा नहीं हो सकता।" हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, "अच्छा यह बताओ कि अगर मैं अपना माल छोड़ दूं तो तुम मेरी राह छोड़ दोगे?" उन्हों ने कहा, "हां" हज़रत सुहैब ने कहा, "अच्छा तो फिर ठीक है, चलो मेरा माल तुम्हारे हवाले—अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की जानकारी हुई, तो आप ने फ़रमाया, "सुहैब रज़ि० ने नफ़ा उठाया, सुहैब रज़ि० ने नफ़ा उठाया।"[2]

3. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०, अय्याश बिन अबी रबीआ, और हिशाम बिन आस बिन वाइल ने आपस में तय किया कि फ़्लां जगह सुबह-सुबह इकट्ठे होकर वहीं से मदीना को हिजरत की जाएगी। हज़रत उमर रज़ि० और अय्याश रज़ि० तो निश्चित वक़्त पर आ गए, लेकिन हिशाम को क़ैद कर लिया गया।

फिर जब ये दोनों मदीना पहुंच कर कुबा में उतर चुके तो अय्याश के पास अबू जहल और उस का भाई हारिस पहुंचे। तीनों की मां एक थी। इन दोनों ने अय्याश से कहा, "तुम्हारी मां ने मनौती मानी है कि जब तक वह तुम्हें देख न लेगी, सिर में कंघी न करेगी और धूप छोड़ कर साए में न आएगी।" यह सुन कर अय्याश रज़ि० को अपनी मां पर तरस आ गया। हज़रत उमर रज़ि० ने यह दशा देख कर अय्याश से

1) इब्ने हिशाम 1/468- 470
2) इब्ने हिशाम 1/477

कहा, "अय्याश! देखो, अल्लाह की क़सम! ये लोग तुम को सिर्फ़ तुम्हारे दीन से फ़ित्ने में डालना चाहते हैं, इसलिए इन से होशियार रहो, अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारी मां को जुओं ने कष्ट पहुंचाया, तो वह कंघी कर लेगी और उसे मक्का की थोड़ी कड़ी धूप लगी तो वह साए में चली जाएगी।" मगर अय्याश न माने, उन्होंने अपनी मां की क़सम पूरी करने के लिए इन दोनों के साथ निकलने का फ़ैसला कर लिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, "अच्छा, जब यही करने पर उतर आए हो तो मेरी यह ऊंटनी ले लो। यह बड़ी अच्छी और तेज़ चलने वाली है इस की पीठ न छोड़ना और लोगों की तरफ़ से कोई शक वाली हरकत हो तो निकल भागना।"

अय्याश ऊंटनी पर सवार इन दोनों के साथ निकल पड़े। रास्ते में एक जगह अबू जहल ने कहा, भई! मेरा यह ऊंट तो बड़ा सख़्त निकला, क्यों न तुम मुझे अपनी इस ऊंटनी पर पीछे बिठा लो।" अय्याश ने कहा, ठीक है और इस के बाद ऊंटनी बिठा दी। इन दोनों ने भी अपनी अपनी सवारियां बिठाईं ताकि अबू जहल अय्याश की ऊंटनी पर पलट आए, लेकिन जब तीनों ज़मीन पर आ गए तो ये दोनो अय्याश पर टूट पड़े और उन्हें रस्सी से जकड़ कर बांध दिया और इसी बंधी हुई हालत में दिन के वक़्त मक्का लाए और कहा कि ऐ मक्का वालो! अपने मूर्खों के साथ ऐसा ही करो, जैसा हम ने अपने इस मूर्ख के साथ किया है।[3]

---

3) हिशाम और अय्याश काफ़िरों की क़ैद में पड़े रहे। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) हिजरत कर चुके तो आपने एक दिन कहा कौन है जो मेरे लिए हिशाम और अय्याश को छुड़ा लाए। वलीद बिन वलीद ने कहा, मैं आप के लिए इनको लाने के ज़िम्मेदार हूँ फिर वलीद गुप्त रुप से मक्का गए और एक औरत (जो इन दोनों के पास खाना ले जा रही थी) के पीछे जाकर इनका ठिकाना मालूम किया। यह दोंनो बग़ैर छत के मकान में क़ैद थे। रात हुई तो हज़रत वलीद दीवार फान्द कर इन दोनों के पास पहुंचे और बेड़ियाँ काट कर अपने ऊंट पर बिठाया और मदीना भाग आए (इब्ने हिशाम 1/474-76) हज़रत उमर (रज़ि०) ने बीस सहाबा के एक गुट के साथ हिजरत की थी। बुख़ारी 1/558

हिजरत का इरादा रखने वाले का पता हो जाने की शक्ल में उन के साथ मुश्रिक जो व्यवहार करते थे उसके ये तीन नमूने हैं, लेकिन इन सब के बावजूद लोग आगे पीछे बराबर निकलते ही रहे, चुनांचे अ़क़बा-ए-कुबरा की बैअ़त के सिर्फ़ दो महीने कुछ दिन बाद मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत अ़ली रज़ि० के अ़लावा एक भी मुसलमान बाक़ी न रहा.. .. ये दोनों हज़रात अल्लाह के रसूल सल्लललहु-अलैहि व सल्लम के इर्शाद की वजह से रुके हुए थे जबकि कुछ एसे मुसलमान ज़रुर रह गए थे जिन्हें मुश्रिकों ने ज़बरदस्ती रोक रखा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी अपना पूरा सामान तैयार करके रवाना होने के लिए अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहे थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि० के सफ़र का सामान भी बंधा हुआ था।[4]

सहीह बुख़ारी में हज़रत आ़इशा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुसलमानों से फ़रमाया, "मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह दिखायी गयी है। यह लावे की दो पहाड़ियों के बीच स्थित एक नख़्लिस्तानी क्षेत्र है" इस के बाद लोगों ने मदीना की तरफ़ हिजरत की।

हब्शा के आ़म मुहाजिर (हिजरत करने वाले) भी मदीना ही आ गए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने भी मदीना के सफ़र के लिए पूरा सामान तैयार कर लिया, (लेकिन) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन से फ़रमाया, तनिक रुके रहो, क्योंकि उम्मीद है मुझे भी इजाज़त दे दी जाएगी।" अबू बक्र रज़ि० ने कहा, "मेरे बाप आप पर फ़िदा, क्या आप को इसकी आशा है?" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "हां"।

---

4) ज़ादुल-मआद 2/52

इस के बाद अबू बक्र रज़ि० रुके रहे, ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र करें। इन के पास दो ऊंटनियां थीं, उन्हें भी चार महीने तक बबूल के पत्तों का ख़ूब चारा खिलाया।[5]

5) बुख़ारी बाब हिजरतुन-नबी (सल्ल०) व अस्हाबुहू 1/553

कुरैश की पार्लियामेंट "दारुन्नदवा" में

जब मुश्रिकों ने देखा कि सहाबा किराम रज़ि० तैयार हो-हो कर निकल गए और बाल-बच्चों और माल व दौलत को लाद-फांद कर औस व ख़ज़रज के इलाक़े में जा पहुंचे, तो उन में बड़ा कोहराम मचा, दुख-दर्द के लावे फूट पड़े और उन्हें ऐसा रंज व ग़म हुआ कि इस से पहले कभी ऐसा न हुआ था। अब उन के सामने एक सच्चा और भारी ख़तरा ऐसा रूप लेकर आ गया था जो उन की मूर्ति पूजा और आर्थिक सामूहिकता के लिए भारी चुनौती था।

मुश्रिकों को मालूम था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में नेतृत्व और रहनुमाई की भारी विशेषता के साथ-साथ कितनी भारी प्रभावशीलता मौजूद है और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबा किराम में कितना निश्चय और जमाव और फ़िदा होने की कैसी भावना पाई जाती है, फिर औस व ख़ज़रज के क़बीलों में कितनी ताक़त और जंगी महारत है। और इन दोनों क़बीलों के लोगों में सुलह व सफ़ाई की कैसी भावनाएं हैं और वे कई वर्ष गृह युद्ध की कड़ुवाहटों को चखने के बाद आपसी रंज और दुश्मनी को ख़त्म करने पर कितने तैयार हैं।

इन्हें इस का भी एहसास था कि यमन से शाम (सीरिया) तक लाल सागर के तह से उन का जो व्यापारिक मार्ग गुज़रता है, उस मार्ग के

हिसाब से मदीना सैनिक महत्व की कितनी भावुक और नाज़ुक जगह पर स्थित है, जबकि शाम देश से सिर्फ़ मक्का वालों का वार्षिक व्यापार ढाई लाख दीनार सोने के हिसाब से हुआ करता था। ताइफ़ आदि का व्यापार इस के अलावा था और मालूम है कि इस व्यापार का पूरा आश्रय इम पर था कि यह रास्ता शान्तिमय रहे।

इस विवरण से अच्छी तरह अंदाज़ा किया जा सकता है कि यस्रिब में इस्लामी दावत के जड़ पकड़ने और मक्का वालों के ख़िलाफ़ यस्रिब वालों के पंक्तिबद्ध होने की स्थिति में मक्का वालों के लिए कितने ख़तरे थे। चूंकि मुश्रिकों को इस गंभीर ख़तरे का पूरा-पूरा एहसास था, जो उन के अस्तित्व के लिए चुनौती बन रहा था, इसलिए उन्होंने इस ख़तरे का सब से कामियाब इलाज सोचना शुरू कर दिया। और मालूम है कि इस ख़तरे की असल बुनियाद इस्लाम की दावत का झंडा उठाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे।

मुश्रिकों ने इस मक़सद के लिए अक़बा-ए-कुबरा की बैअत के लगभग ढाई महीने बाद 26 सफ़र सन् 14 नबवी मुताबिक़ 12 सितंबर सन् 622 ई०, बृहस्पतिवार[1] को दिन के पहले पहर[2] मक्का की पर्लियामेंट दारुन्नदवा में इतिहास की सब से ख़तरनाक मीटिंग की और उस में कुरैश के तमाम कबीलों के प्रतिनिधि शरीक हुए। वार्त्ता का विषय एक एसी निश्चित योजना की तैयारी था जिस के मुताबिक

---

1) यह तारीख़ अल्लामा मन्सूरपुरी दूरा दी गई जानकारी के आधार पर निश्चित की गई है, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/95,97,102 तथा 2/471

2) पहले पहर इस सम्मेलन के आयोजित होने का सुबूत इब्ने इस्हाक़ की वह हदीस है जिसमें कहा गया है कि हज़रत जिबरईल नबी (सल्ल०) के पास इस सम्मेलन की सूचना ले कर आए और आप (सल्ल०) को हिजरत की इजाज़त दी। इसके साथ बुख़ारी में दी गई हज़रत आयशा की इस हदीस को मिला लीजिए कि नबी (सल्ल०) ठीक दोपहर के वक़्त हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के पास आए और फ़रमाया कि "मुझे प्रस्थान की इजाज़त मिल गई है" पूरी हदीस आगे आ रही है।

इस्लामी दावत के अलमबरदार (झंडा वाहक) का क़िस्सा जल्द से जल्द पाक कर दिया जाए और इस दावत की रोशनी पूरे तौर पर मिटा दी जाए।

इस ख़तरनाक मीटिंग में कुरैश के क़बीलों के नुमायां (स्पष्ट) चेहरे ये थे।

1. अबू जहल बिन हिशाम
क़बीला बनी मख़्ज़ूम से
2. जुबैर बिन मुतइम, तोऐमा बिन अ़दी और हारिस बिन आ़मिर
बनी नौफ़ल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ से
3. शैबा बिन रबीआ़, उत्बा बिन रबीआ़ और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब
बनी अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मुनाफ़ से
4. नज़्र बिन हारिस
बनी अ़ब्दुद्दार से
5. अबुल बुख़्तरी बिन हिशाम, ज़मआ़ बिन अस्वद और हकीम बिन हिज़ाम
बनी असद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से
6. नुबैह बिन हज्जाज और मुनब्बेह बिन हज्जाज
बनी सहम से
7. उमैया बिन ख़ल्फ़
बनी जम्ह से

निशाचित वक़्त पर ये प्रतिनिधि दारुन्नदवा पहुंचे तो इबलीस भी एक रोबदार बुज़ुर्ग के रूप में अबा ओढ़े, रास्ता रोके दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। लोगों ने कहा, यह कौन से बुज़ुर्ग हैं? इबलीस ने कहा "यह नज्दियों का एक शैख़ है आप लोगों का प्रोग्रम सुन कर हाज़िर हो गया है, बातें सुनना चाहता है और कुछ असंभव नहीं कि आप लोगों को अच्छे मश्वरों से भी महरूम न रखे।" लोगों ने कहा, बेहतर है, आप भी आ जाइए। चुनांचे इबलीस भी उन के साथ अंदर चला गया।

पारलीमानी वार्ता और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़त्ल के अन्याय पूर्ण प्रस्ताव पर एक मत होना

मीटिंग पूरी हो गयी, तो प्रस्ताव और समाधान आने शुरू हुए और देर तक वार्ता चलती रही। पहले अबुल अस्वद ने यह रखा कि हम उस आदमी को अपने बीच से निकाल दें और अपने शहर से देश निकाला दे दें। फिर हम से कोई मतलब नहीं कि वह कहां जाता है और कहां

रहता है, बस हमारा मामला ठीक हो जाएगा और हमारे बीच पहले जैसा एका हो जाएगा।

मगर शैख़ नज्दी ने कहा, "नहीं" अल्लाह की क़सम! यह उचित राय नहीं है। तुम देखते नहीं कि उस आदमी की बात कितनी अच्छी और बोल कितने मीठे हैं और जो कुछ लाता है, उस के ज़रिए किस तरह लोगों का मन जीत लेता है अल्लाह की क़सम! अगर तुम ने ऐसा किया तो कुछ नहीं कहा जा सकता कि वह अरब के किस क़बीले में पहुंच जाए और तुम्हें अपना अधीन बना लेने के बाद तुम पर धावा बोल दे और तुम्हें तुम्हारे शहर के अंदर रौंद कर तुम से जैसा व्यवहार चाहे, करे। तुम इस के बजाए कोई और प्रस्ताव सोचो।"

अबुल बुख़्तरी ने कहा, "उसे लोहे की बेड़ियों में जकड़ कर क़ैद कर दो और बाहर से दरवाज़ा बंद कर दो, फिर उसी अंजाम (मौत) का इन्तिज़ार करो जो इस से पहले दूसरे कवियों, जैसे ज़ुहैर और नाबिग़ा आदि का हो चुका है।"

शैख़ नज्दी ने कहा, "अल्लाह की क़सम! यह भी उचित राय नहीं है अल्लाह की क़सम! अगर तुम लोगों ने इसे क़ैद कर दिया, जैसा कि तुम कह रहे हो तो इस की ख़बर बंद दरवाज़े से बाहर निकल कर उस के साथियों तक ज़रूर पहुंच जाएगी। फिर कुछ असंभव नहीं कि वे लोग तुम पर धावा बोल कर उस आदमी को तुम्हारे क़ब्ज़े से निकाल ले जाएं, फिर उस की मदद से अपनी तायदाद बढ़ा कर तुम पर ग़ालिब हो जाएं------इसलिए यह भी राय उचित नहीं, कोई और प्रस्ताव सोचो।"

ये दोनों प्रस्ताव पार्लियामेंट ने रद्द कर दिए तो तीसरा घातक प्रस्ताव लाया गया, जिस से तमाम लोगों ने सहमति जताई। इस प्रस्ताव का रखने वाला मक्का का सब से बड़ा अपराधी अबू जहल था। उस ने कहा, "इस आदमी के बारे में मेरी एक राय है, मैं देखता हूं कि अब तक तुम लोग उस पर नहीं पहुंचे।" लोगों ने कहा, अबुल हकम! वह

क्या है? अबू जहल ने कहा, "मेरी राय यह है कि हम हर-हर क़बीले से एक ताक़तवर, अच्छे वंश का और बांका जवान चुन लें, फिर हर एक को एक तेज़ तलवार दें, इस के बाद सब के सब उस आदमी का रुख़ करें और इस तरह यकायक तलवार मार कर क़त्ल कर दें, जैसे एक ही आदमी ने तलवार मारी हो। यूं हमें उस आदमी से राहत मिल जाएगी और इस तरह क़त्ल करने का नतीजा यह होगा कि उस आदमी का ख़ून सारे क़बीलों में बिखर जाएगा और बनू अ़ब्दे मुनाफ़ सारे क़बीलों से लड़ न सकेंगे, इसलिए ख़ून बहा लेने पर राज़ी हो जाएंगे। और हम ख़ून बहा अदा कर देंगे।"[3]

शैख़ नज्दी ने कहा, "बात यह रही जो इस जवान ने कही। अगर कोई राय और प्रस्ताव हो सकता है तो यही है, बाक़ी सब बेकार है।"

इस के बाद मीटिंग में हाज़िर तमाम लोगों ने इस अपराधपूर्ण प्रस्ताव को मान लिया और लोग इस पक्के इरादे के साथ अपने घरों को वापस गए कि इस प्रस्ताव को तत्काल अ़मली जामा पहनाना है।

3) इब्ने हिशाम 1/480-482

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिजरत

जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क़त्ल करने का अपराध पूर्ण प्रस्ताव पास हो गया तो हज़रत जिब्रील अ़लैहि० अपने रब की वह्य लेकर आप की सेवा में आए और आप को क़ुरैश के षड़यंत्र की सूचना देते हुए बताया कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यहां से रवाना होने की इजाज़त दे दी है और यह कहते हुए हिजरत का समय भी तय फ़रमा दिया कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह रात अपने उस बिस्तर पर न गुज़ारें, जिस पर अब तक गुज़ारा करते थे।[1]

इस ख़बर के मिलने के बाद नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ठीक दोपहर के वक़्त अबू बक्र रज़ि० के घर तशरीफ़ ले गए, ताकि उन के साथ हिजरत के सारे प्रोग्राम और मरहले तय फ़रमा लें। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि ठीक दोपहर के वक़्त हम लोग अबू बक्र रज़ि० के मकान में बैठे थे कि किसी कहने वाले ने अबू बक्र रज़ि० से कहा, यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सर ढांके तशरीफ़ ला रहे हैं। यह ऐसा वक़्त था जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ नहीं लाया करते थे। अबू बक्र रज़ि० ने कहा, मेरे मां-बाप आप

1) इब्ने हिशाम 1/482,ज़ादुल-मआद 2/52

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कुर्बान! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस वक़्त किसी अहम मामले ही की वजह से तश्रीफ़ लाए हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए, इजाज़त तलब की। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इजाज़त दी गई और आप अंदर दाख़िल हुए, फिर अबू बक्र रज़ि० से फ़रमाया, "तुम्हारे पास जो लोग हैं, उन्हें हटा दो।" अबू बक्र रज़ि० ने कहा, "बस आप की घर वाली ही है। आप पर मेरे बाप फ़िदा हों, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)!" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अच्छा तो मुझे रवाना होने की इजाज़त मिल चुकी है।" अबू बक्र रज़ि० ने कहा, साथ----ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे बाप आप पर फ़िदा हों। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "हां।"[2]

इस के बाद हिजरत का प्रोग्राम तय कर के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर वापस तश्रीफ़ लाए, और रात के आने का इन्तिज़ार करने लगे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मकान का घेराव

इधर कुरैश के बड़े अपराधियों ने अपना सारा दिन दारून्नदवा (मक्का की पार्लियामेंट) की पहले पहर के प्रस्ताव को लागू करने की तैयारी में गुज़ारा और इस काम के लिए इन बड़े अपराधियों में से ग्यारह सरदार चुने गये जिन के नाम ये हैं-------

1. अबू जहल बिन हिशाम 2. हकम बिन आ़स

3. उक़्बा बिन अबी मुईत 4. नज़्र बिन हारिस

---

2) बुख़ारी बाब हिजरतुन-नबी (सल्ल०) 1/553

5. उमैया बिन ख़ल्फ़ 6. ज़मआ बिन अल-अस्वद
7. तुऐमा बिन अ़दी 8. अबू लहब
9. उबई बिन ख़ल्फ़ 10. नुबैह बिन अल-हज्जाज और
11. उसका भाई मुनब्बेह बिन अल-हज्जाज।[3]

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जब रात थोड़ी अंधेरी हो गयी, तो ये लोग घात लगा कर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरवाज़े पर बैठ गए कि आप सो जाएं तो ये लोग आप पर टूट पड़ें।[4]

इन लोगों को पूरा भरोसा और पक्का यकीन था कि उन का यह नापाक षड़यंत्र सफल हो कर रहेगा, यहां तक कि अबू जहल ने बड़े ही गर्वीले ढंग से हंसी मज़ाक़ करते हुए अपने घेरा डालने वाले साथियों से कहा, "मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहता है कि अगर तुम लोग उसके दीन में दाख़िल हो कर उस का पालन करोगे तो अ़रब व अ़जम के बादशाह बन जाओगे, फिर मरने के बाद उठाए जाओगे तो तुम्हारे लिए उर्दुन के बाग़ों जैसी जन्नतें होंगी और अगर तुम ने ऐसा न किया तो उन की तरफ़ से तुम्हारे अंदर ज़िब्ह जैसी घटनाएं होंगी, फिर तुम मरने के बाद उठाए जाओगे और तुम्हारे लिए आग होगी जिस में जलाए जाओगे।"[5]

बहरहाल इस षड़यंत्र को लागू करने के लिए आधी रात के बाद का वक़्त तय था, इसलिए ये लोग जाग कर रात गुज़ार रहे थे और तय शुदा वक़्त के इंतिज़ार में थे, लेकिन अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, उसी के हाथ में आसमानों और ज़मीन की बादशाहत है वह जो चाहता है, करता है, जिसे बचाना चाहे, कोई उसे एक बाल बराबर भी नुक़सान

---

3) ज़ादुल-मआद 2/52
4) इब्ने हिशाम 1/482
5) इब्ने हिशाम 1/483

नहीं पहुंचा सकता और जिसे पकड़ना चाहे, कोई उसको बचा नहीं सकता, चुनांचे अल्लाह ने इस मौक़े पर वह काम किया जिसे नीचे दी गई आयत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़िताब करते हुए बयान फ़रमाया है कि------

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ
وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ

"वह मौक़ा याद करो जब कुफ़्फ़ार तुम्हारे ख़िलाफ़ साज़िश कर रहे थे, ताकि तुम्हें क़ैद कर दें या क़त्ल कर दें या निकाल बाहर करें और वे लोग दांव चल रहे थे और अल्लाह भी दांव चल रहा था और अल्लाह सब से बेहतर दांव वाला है।" (8:30)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपना घर छोड़ते हैं

बहरहाल क़ुरैश अपनी योजना को लागू करने की इंतिहाई तैयारी के बावजूद पूरी तरह विफल हुए, चुनांचे इस सब से नाज़ुक क्षण में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ि० से फ़रमाया, "तुम मेरे बिस्तर पर लेट जाओ और मेरी यह हरी हज़रमी[6] चादर ओढ़ कर सो रहो, तुम्हें इन के हाथों कोई चोट नहीं पहुंचेगी।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यही चादर ओढ़ कर सोया करते थे।[7]

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए, मुश्रिकों की सफ़ें चीरीं और एक मुट्ठी कंकड़ियों वाली मिट्टी लेकर उन के सरों पर डाली, लेकिन अल्लाह ने उन की निगाहें

---

6) हज़र-मौत (दक्षिणी यमन) की बनी हुई चादर हज़रमी कहलाती है।

7) इब्ने हिशाम 1/482-483

पकड़ लीं और वे आप को देख न सके। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह आयत तिलावत फ़रमा रहे थे।

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

"हम ने उन के आगे रूकावट खड़ी कर दी और उन के पीछे रुकावट खड़ी कर दी, पस हम ने उन्हें ढांक लिया है और वे देख नहीं रहे हैं।" (36:9)

इस मौके पर कोई भी मुश्रिक बाक़ी न बचा, जिस के सर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिट्टी न डाली हो। इस के बाद आप अबू बक्र रज़ि० के घर तशरीफ़ ले गए और फिर उन के मकान की एक खिड़की से निकल कर दोनों हज़रात ने रात ही रात यमन का रुख़ किया और कुछ मील पर स्थित सौर नामक पहाड़ की एक खोह में जा पहुंचे।[8]

इधर घेरा डाले हुए लोग अपने निश्चित समय पर इन्तिज़ार कर रहे थे, लेकिन इस से थोड़ा पहले उन्हें अपनी विफलता का ज्ञान हो गया। हुआ यह कि उन के पास एक असम्बद्ध आदमी आया, और उन्हें आप के दरवाज़े पर देख कर पूछा कि आप लोग किस का इन्तिज़ार कर रहे हैं? उन्होंने कहा, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का। उस ने कहा, आप लोग नाकाम व नामुराद हुए। अल्लाह की क़सम! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो आप लोगों के पास से गुज़रे और आप के सिरों पर मिट्टी डालते हुए अपने काम को गए। उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! हम ने तो उन्हें नहीं देखा और इस के बाद अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुए उठ खड़े हुए।

लेकिन फिर दरवाज़े की दराड़ से झांक कर देखा तो हज़रत अली रज़ि० नज़र आए, कहने लगे, अल्लाह की क़सम! यह तो मुहम्मद

8) इब्ने हिशाम 1/483, ज़ादुल-मआद 2/52

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सोये पड़े हैं। उन के ऊपर उनकी चादर मौजूद है, चुनांचे ये लोग सुबह तक वहीं डटे रहे। इधर सुबह हुई और हज़रत अ़ली रज़ि० बिस्तर से उठे तो मुश्रिकों के हाथों के तोते उड़ गए। उन्होंने हज़रत अ़ली रज़ि० से पूछा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहां हैं? हज़रत अ़ली रज़ि० ने कहा, मुझे मालूम नहीं।[9]

घर से गुफ़ा तक

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 27 सफ़र सन् 14 नबवी, (मुताबिक़ 12-13 सितम्बर 622 ई०[10] के बीच की रात) को अपने मकान से निकल कर जान व माल के सिलसिले में अपने सब से भरोसे के साथी अबू बक्र रज़ि० के घर तशरीफ़ लाए थे और वहां से पिछवाड़े की एक खिड़की से निकल कर दोनों हज़रात ने बाहर की राह ली थी, ताकि मक्का से जल्द से जल्द यानी फ़ज्र होने से पहले-पहले बाहर निकल जाएं।

चूंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम था कि क़ुरैश पूरी जान लगा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खोज में लग जाएंगे और जिस रास्ते पर पहले उन की नज़र उठेगी वह मदीने का क़ाफ़िले वाला रास्ता होगा जो उत्तर दिशा में जाता है, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह रास्ता अपनाया जो इस के बिल्कुल उलट था यानी यमन जाने वाला रास्ता जो मक्का के दक्षिण में स्थित

---

9) इब्ने हिशाम 1/483, ज़ादुल-मआद 2/52

10) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/95 सफ़र का यह महीना नुबुवत के चौदहवें साल का इस वक़्त होगा जब साल की शुरुआत मुहर्रम के महीने से मानी जाए और अगर साल की शुरुआत उस महीने से करें जिस में आप (सल्ल०) को नुबुवत मिली थी तो सफ़र का यह महीना निश्चित ही नुबुवत के तेरहवें साल का होगा। कुछ सीरत लिखने वालों ने पहला हिसाब लिया है और कुछ ने दूसरा जिसकी वजह से वह घटनाओं के क्रम में ग़लती कर गए हैं। हमने साल का प्रारम्भ मुहर्रम से माना।

है। आप ने इस रास्ते पर कोई पांच मील की दूरी तय की और उस पहाड़ के दामन में पहुंचे जो सौर के नाम से जाना जाता है। यह बहुत ऊंचा, पेचदार और मुश्किल चढ़ाई वाला पहाड़ है, यहां पत्थर भी ज़्यादा से ज़्यादा हैं, जिन से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों पांव घायल हो गए और कहा जाता है कि आप क़दमों के निशान छिपाने के लिए पंजों के बल चल रहे थे, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पांव घायल हो गए, बहरहाल वजह जो भी रही हो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने पहाड़ के दामन में पहुंच कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उठा लिया और दौड़ते हुए पहाड़ की चोटी पर एक गुफ़ा के पास जा पहुंचे जो इतिहास में सौर की गुफ़ा के नाम से जानी जाती है।[11]

गुफा में

गुफा के पास पहुंच कर अबू बक्र रज़ि० ने कहा, "अल्लाह के लिए अभी आप इस में दाख़िल न हों, पहले मैं दाख़िल होकर देख लेता हूं, अगर इस में कोई चीज़ हुई तो आप के बजाए मुझे उस का सामना करना पड़ेगा।" चुनांचे हज़रत अबू बक्र रज़ि० अंदर गए और गुफा को साफ़ किया। एक तरफ़ कुछ सूराख़ थे, जिन्हें अपना तहबंद फाड़ कर बंद कर दिया, लेकिन दो सूराख़ (छेद) बाक़ी बच गए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उन दोनों में अपने पांव डाल दिए, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि अंदर तशरीफ़ ले आएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंदर तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबू बक्र रज़ि० की गोद में सर रख कर सो गए। उधर अबू बक्र रज़ि० के पांव में किसी चीज़ ने डस लिया, मगर इस डर से हिले भी नहीं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जाग न जाएं, लेकिन उन के आंसू अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे पर टपक

11) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/95, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 167

गए (और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आंख खुल गई) आप ने फ़रमाया, "अबू बक्र! तुम्हें क्या हुआ?" अर्ज़ किया, मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! मुझे किसी चीज़ ने डस लिया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर होंठ का लुआब (रस) लगा दिया और तक्लीफ़ जाती रही।[12]

यहां दोनों लोगों ने तीन रातें यानी जुमा, सनीचर और इतवार की रातें खोह में छुप कर गुज़ारीं।[13] इस बीच हज़रत अबू बक्र रज़ि० के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह भी यहीं रात गुज़ारते थे। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि वह गहरी सूझ-बूझ के मालिक और बात समझने वाले नवजवान थे। सुबह के अंधेरे में इन दोनों लोगों के पास से चले जाते और मक्का में कुरैश के साथ यूं सुबह करते मानो उन्होंने यहीं रात गुज़ारी है। फिर आप दोनों के ख़िलाफ़ साज़िश की जो कोई बात सुनते, उसे अच्छी तरह याद कर लेते और जब अंधेरा गहरा हो जाता तो उस की ख़बर लेकर गुफ़ा में पहुंच जाते।

इधर हज़रत अबू बक्र रज़ि० के दास आमिर बिन फुहैरा रज़ि० बकरियां चराते रहते और जब रात का एक हिस्सा बीत जाता तो बकरियां लेकर उन के पास पहुंच जाते। इस तरह दोनों पेट भर कर दूध पी लेते फिर सुबह तड़के ही आमिर बिन फुहैरा रज़ि० बकरियां हांक कर चल देते। तीनों रात उन्होंने यही किया[14] (साथ ही यह भी कि) आमिर बिन फुहैरा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र रज़ि० के मक्का जाने के बाद उन्हीं के क़दम के निशानों पर बकरियां हांकते थे, ताकि निशान मिट जाएं।[15]

12) यह बात रज़ीन ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से ब्यान की है । इस हदीस में यह भी है कि फिर यह ज़हर फूट पड़ा (अर्थात मौत के वक़्त इसका असर पलट आया) और यही मौत की वजह बनी। देखिए मिशकात 2/556 बाब मनाक़िबे अबू बक्र (रज़ि०)

13) फ़तहुल-बारी 7/336

14) बुख़ारी 1/553-554

15) इब्ने हिशाम 1/486

क़ुरैश की दौड़-भाग

उधर क़ुरैश का हाल यह था कि जब हत्या-योजना की रात बीत गयी और सुबह को निश्चित रूप से मालूम हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के हाथ से निकल चुके हैं तो उन पर मानो जुनून (पागलपन) छा गया। उन्होंने सब से पहले अपना गुस्सा हज़रत अली रज़ि० पर उतारा, आप को घसीट कर ख़ा-न-ए काबा की तरफ़ ले गए और एक घड़ी क़ैद में रखा कि संभव है इन दोनों की ख़बर लग जाए।[16] लेकिन जब हज़रत अली रज़ि० से कुछ हासिल न हुआ तो अबू बक्र रज़ि० के घर आए और दरवाज़ा खटखटाया। हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र रज़ि० मिलीं। उन से पूछा, तुम्हारे अब्बा (पिता) कहां हैं? उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे मालूम नहीं कि मेरे अब्बा कहां हैं। इस पर कमबख़्त ख़बीस अबू जहल ने हाथ उठा कर उन के गाल पर इस ज़ोर का थप्पड़ मारा कि उन के कान की बाली गिर गयी।[17]

इस के बाद क़ुरैश ने एक हंगामी मीटिंग बुला कर यह तय किया कि इन दोनों को गिरफ़्तार करने के लिए तमाम संभव साधन काम में लाए जाएं, चुनांचे मक्का से निकलने वाले तमाम रास्तों पर, चाहे वह जिस राह पर जा रहा हो। बड़ा ही कड़ा सशस्त्र पहरा बिठा दिया गया। इसी तरह यह आम एलान भी किया गया कि जो कोई अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबू बक्र रज़ि० को या इन में से किसी एक को ज़िंदा या मुर्दा हाज़िर करेगा, उसे हर एक के बदले सौ ऊंटों का मूल्यवान पुरस्कार दिया जाएगा।[18] इस एलान के नतीजे में सवार और पैदल और क़दम के निशानों के माहिर खोजी बड़ी सरगर्मी

---

16) रहमतुल-लिल-आलमीन

17) इब्ने हिशाम 1/487

18) बुख़ारी 1/554

से खोज में लग गए और पहाड़ों, घाटियों और ऊंची-नीची जगहों पर हर ओर बिखर गए, लेकिन नतीजा और हासिल कुछ न रहा।

खोजने वाले गुफ़ा के मुंह तक भी पहुंचे, लेकिन अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया, "मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गुफ़ा में था, सर उठाया तो क्या देखता हूं कि लोगों के पांव नज़र आ रहे हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर इनमें से कोई आदमी सिर्फ़ अपनी निगाह नीचे कर दे, तो हमें देख लेगा।" आप ने फ़रमाया, "अबू बक्र रज़ि०! चुप रहो, (हम) दो हैं जिनका तीसरा अल्लाह है।" एक रिवायत के शब्द ये हैं----

"अबू बक्र (रज़ि०) ऐसे दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है।"[19]

सच तो यह है कि यह एक मोजिज़ा (चमत्कार) था, जिससे अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पद को बढ़ाया था, चुनांचे खोजने वाले उस वक़्त वापस चले गए, जब आपके बीच और उन के बीच कुछ क़दम से ज़्यादा दूरी बाक़ी न रह गयी थी।

मदीना के रास्ते में

जब खोज करने की आग बुझ गई, तलाश की दौड़-भाग रुक गयी और तीन दिन की लगातार और बे-नतीजा दौड़-भाग के बाद क़ुरैश का

19) बुख़ारी 1/516,558 यहां यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अबू बक्र (रज़ि०) की बेचैनी अपनी जान जाने के डर से नहीं थी बल्कि इसकी वजह वही थी जो इस हदीस में ब्यान की गई है कि अबू बक्र (रज़ि०) ने जब सामुद्रकों (क़ियाफ़ा शनासों) को देखा तो आप रसूलल्लाह (सल्ल०) के बारे में सोचने लगे और कहा कि अगर मैं मारा गया तो मैं अकेला आदमी हूं लेकिन अगर आप (सल्ल०) क़त्ल कर दिए गए तो पूरी उम्मत ही जाएगी। और इसी वक़्त आप (सल्ल०) ने इनसे फ़रमाया था कि ग़म न करो यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है। देखिए मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 168

उत्साह और भावनाएं ठंडी पड़ गयीं, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने मदीना के लिए निकलने का इरादा किया। अब्दुल्लाह बिन अरीक़त लैसी से, जो जंगलों और मरूस्थलों के रास्तों का माहिर था, पहले ही मुआवज़े पर मदीना पहुंचाने का मामला तय हो चुका था, यह आदमी अभी क़ुरैश ही के दीन पर था, लेकिन विश्वसनीय था, इस लिए सवारियां उस के हवाले कर दी गई थीं और तय हुआ था कि तीन रातें बीत जाने के बाद वह दोनों सवारियां लेकर सौर गुफा पर पहुंच जाएगा। चुनांचे जब सोमवार की रात आई जो रबीउल अव्वल सन् 01 हि० की चांद रात थी (मुताबिक़ 16 सितंबर 622 ई०) तो अब्दुल्लाह बिन अरीक़त सवारियां लेकर आ गया और इसी मौक़े पर अबू बक्र रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में सब से अच्छी ऊंटनी पेश करते हुए निवेदन किया कि आप मेरी इन दो सवारियों में से एक अपना लें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "क़ीमत देकर लूंगा।"

इधर अस्मा बिन्त अबू बक्र रज़ि० भी रास्ते का खाना-पानी लेकर आई, लेकिन इस में लटकाने वाला बंधन लगाना भूल गईं। जब रवानगी का वक़्त आया और हज़रत अस्मा ने तोशा लटकाना चाहा तो देखा इस में बंधन ही नहीं है। उन्होंने अपना पटका (कमरबंद) खोला और दो हिस्सों में टुकड़े कर के एक में तोशा लटका दिया और दूसरा कमर में बांध लिया। इसी वजह से उन की उपाधि ज़ातुन्निताक़ैन पड़ गयी।[20]

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबू बक्र रज़ि० ने कूच फ़रमाया। आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि० भी साथ थे। मार्ग दर्शक अब्दुल्लाह बिन अरीक़त ने तट का मार्ग अपनाया।

---

20) बुख़ारी 1/553, 555 तथा इब्ने हिशाम 1/486

गुफ़ा से चल कर उस ने सब से पहले यमन की दिशा में चलाया और दक्षिण दिशा में ख़ूब दूर तक ले गया, फिर पश्चिम की ओर मुड़ा और समुद्र-तट की दिशा अपनायी, फिर एक ऐसे रास्ते पर पहुंच कर, जिसे आम लोग जानते न थे, उत्तर की ओर मुड़ गया। यह रास्ता लाल सागर के तट के क़रीब ही था और उस पर शायद ही कोई चलता था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस रास्ते में जिन स्थानों से गुज़रे, इब्ने इस्हाक़ ने उन का ज़िक्र किया है। वह कहते हैं कि जब मार्ग-दर्शक आप दोनों को साथ लेकर निकला तो निचले मक्का से ले चला, फिर तट के साथ-साथ चलता हुआ निचले अ़स्फ़ान से रास्ता काटा, फिर निचले इमेज से गुज़रता हुआ आगे बढ़ा और क़दीद पार करने के बाद फिर रास्ता काटा और वहीं से आगे बढ़ता हुआ ख़रार से गुज़रा फिर सनीयतुल मुर्रा से, फिर लक़्फ़ से, फिर लक़्फ़ के निर्जन-स्थानों से गुज़ारा, फिर हज्जाज के मैदान में पहुंचा और वहां से होकर फिर मजाह के मोड़ से गुज़रा, फिर ज़ुल-ग़ज़वैन के मोड़ के निचले हिस्से में चला, फिर ज़ी कशर की घाटी में दाख़िल हुआ, फिर जदाजद का रुख़ किया, फिर अजरद पहुंचा और उस के बाद तअ़हर के निर्जन-स्थान के क़रीब ज़ू सलम घाटी से गुज़रा। वहां से अबाबेद और उस के बाद फ़ाजा का रुख़ किया, फिर अ़रज में उतरा, फिर रकूबा के दाहिने हाथ सनीयतुल आ़इर में चला, यहां तक कि रइम घाटी में उतरा और उस के बाद क़ुबा पहुंच गया।[21]

आइए! अब रास्ते की कुछ घटनाएं भी सुनते चलें—

1. सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया, "हम लोग (गुफ़ा से निकल कर) रात भर और दिन में दोपहर तक चलते रहे। जब ठीक दोपहर का वक़्त हो गया,

---

21) इब्ने हिशाम 1/491-492

रास्ता ख़ाली हो गया और कोई गुज़रने वाला न रहा, तो हमें एक लम्बी चट्टान दिखाई दी, जिस के साए पर धूप नहीं आई थी, हम वहीं उतर पड़े। मैंने अपने हाथ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोने के लिए एक जगह बराबर की और उस पर एक पोस्तीन बिछा कर गुज़ारिश की कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सो जाएं और मैं आप के आप-पास देखभाल किए लेता हूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सो गए और मैं आपके आस-पास की देख भाल के लिए निकला। अचानक क्या देखता हूं कि एक चरवाहा अपनी बकरियां लिए चट्टान की तरफ़ चला आ रहा है। वह भी इस चट्टान से वही चाहता था जो हम ने चाहा था। मैंने उस से कहा, ऐ जवान! तुम किस के आदमी हो? उस ने मक्का या मदीना के किसी आदमी का ज़िक्र किया। मैं ने कहा, तुम्हारी बकरियों में कुछ दूध है? उस ने कहा, हां। मैंने कहा, दूह सकता हूं। उस ने कहा, हां, और एक बकरी पकड़ी। मैंने कहा, तनिक थन को मिट्टी, बाल और तिनके वग़ैरह से साफ़ कर लो। फिर उस ने एक बरतन में थोड़ा सा दूध-दूहा और मेरे पास एक चमड़े का लोटा था, जो मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीने और वुज़ू करने के लिए रख लिया था। मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, लेकिन गवारा न हुआ कि आप को जगाऊं। चुनांचे जब आप जागे तो मैं आप के पास आया और दूध पर पानी उंडेला, यहां तक कि उस का निचला हिस्सा ठंडा हो गया। इसके बाद मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! पी लीजिए। आप ने पिया, यहां तक कि मैं ख़ुश हो गया। फिर आप ने फ़रमाया, क्या अभी कूच का वक़्त नहीं हुआ? मैंने कहा, क्यों नहीं?" इसके बाद हम लोग चल पड़े।[22]

---

22) बुख़ारी 1/510

2. इस सफ़र में अबू बक्र रज़ि० का तरीक़ा यह था कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रदीफ़ रहा करते थे, यानी सवारी पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे बैठा करते थे, चूंकि उन पर बुढ़ापे की निशानियां उभर रही थीं, इसलिए लोगों की तवज्जोह उन्हीं की तरफ़ जाती थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अभी जवानी के निशान ग़ालिब थे, इसलिए आपकी ओर तवज्जोह कम जाती थी। इसका नतीजा यह था कि किसी आदमी का सामना पड़ता तो वह अबू बक्र रज़ि० से पूछता कि यह आपके आगे कौन सा आदमी है? (हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस का बड़ा लतीफ़ जवाब देते) फ़रमाते, "यह आदमी मुझे रास्ता बताता है।" इससे समझने वाला समझता कि वह यही रास्ता मुराद ले रहे हैं, हालांकि वह ख़ैर (भलाई) का रास्ता मुराद लेते थे।[23]

3. इसी सफ़र में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र उम्मे माबद ख़ुज़ाइया के ख़ेमे से हुआ। यह एक नुमायां और मज़बूत औरत थीं। हाथों में घुटने डाले ख़ेमे के आंगन में बैठी रहतीं और आने-जाने वालों को खिलाती-पिलाती रहतीं। आपने उनसे पूछा कि पास में कुछ है? बोलीं, "अल्लाह की क़सम! हमारे पास कुछ होता तो आप लोगों की मेज़बानी में तंगी न होती, बकरियां भी बहुत दूर हैं।" यह अकाल का समय था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि ख़ेमे के एक कोने में एक बकरी है। फ़रमाया, "उम्मे माबद! यह कैसी बकरी है?" बोलीं, "इसे कमज़ोरी ने रेवड़ से पीछे छोड़ रखा है।" आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मालूम किया कि इस में कुछ दूध है? बोलीं, "वह इससे कहीं ज़्यादा कमज़ोर है।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "इजाज़त है कि इसे दूह लूं?" बोलीं, "हां" "मेरे

23) बुख़ारी अनस (रज़ि०) की हदीस (1/556)

मां बाप तुम पर कुर्बान। अगर तुम्हे इस में दूध दिखाई दे रहा है तो ज़रूर दूह लो।" इन बातों के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस बकरी के थन पर हाथ फेरा, अल्लाह का नाम लिया और दुआ की। बकरी ने पांव फैला दिए। थन में भरपूर दूध उतर आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मे माबद रज़ि० का एक बड़ा सा बरतन लिया जो एक जमाअत (समूह) का पेट भर सकता था और उसमें इतना दूहा की झाग उपर आ गया, फिर उम्मे माबद रज़ि० को पिलाया। उन्होंने पेट भर कर पिया तो अपने साथियों को पिलाया, उनका भी पेट भर गया, तो खुद पिया, फिर उसी बरतन में दोबारा इतना दूध दूहा कि बरतन भर गया और उसे उम्मे माबद रज़ि० के पास छोड़ कर आगे चल पड़े।

थोड़ी ही देर गुज़री थी कि उन के शौहर अबू माबद रज़ि० अपनी कमज़ोर बक़रियों को, जो दुबलेपन की वजह से मरयल चाल चल रही थीं, हांकते हुए आ पहुंचे। दूध देखा तो चकित रह गए। पूछा, यह तुम्हारे पास कहां से आया? जबकि बकरियां दूर-दूर थीं और घर में दूध देने वाली बकरी न थी। बोलीं, "अल्लाह की क़सम! कोई बात नहीं अलावा इसके कि हमारे पास से एक बरकत वाला आदमी गुज़रा जिस की ऐसी और ऐसी बात थी और यह और यह हाल था।" अबू माबद रज़ि० ने कहा, यह तो वही कुरैश वाला मालूम होता है जिसे कुरैश खोज रहे हैं। अच्छा तनिक उसकी हालत तो बयान करो। इस पर उम्मे माबद रज़ि० ने बड़े ही लुभावने ढंग से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ूबियों और गुणों का ऐसा चित्र ख़ींचा कि मानो सुनने वाला आप को अपने सामने देख रहा है---- किताब के अंत में गुणों का विवरण दिया जाएगा-----ये गुण सुन कर अबू माबद रज़ि० ने कहा, "अल्लाह की क़सम! यह तो वही कुरैशी है जिस के बारे में लोगों ने क़िस्म-क़िस्म की बातें बयान की हैं मेरा इरादा है कि आप का साथ पकड़ूँ और कोई रास्ता मिला तो ऐसा ज़रूर करूंगा।"

इधर मक्का में एक आवाज़ उभरी, जिसे लोग सुन रहे थे, मगर उस का बोलने वाला दिखाई नहीं पड़ रहा था। आवाज़ यह थी---

جزى الله رب العرش خير جزائه ‌ ‌ رفيقين حلا خيمتي ام معبد
هما نزلا بالبر و ارتحلا به ‌ ‌ وافلح من امسى رفيق محمد
فيا لقصي مازوى الله عنكم ‌ ‌ به من فعال لا يجازى وسودد
ليهن بني كعب مكان فتاتهم ‌ ‌ ومقعدها للمومنين بمرصد
سلوا اختكم عن شاتها وانائها ‌ ‌ فانكم ان تسألوا الشاة تشهد

"अल्लाह अ़र्श का रब उन दो साथियों को बेहतरीन बदला दे, जो उम्मे माबद रज़ि० के ख़ेमे में आए। वे दोनों ख़ैर (भलाई) के साथ उतरे और ख़ैर के साथ रवाना हुए और जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथी हुआ, वह कामियाब हुआ। हाय कुसई! अल्लाह ने उस के साथ कितने अपूर्व कारनामे और सरदारियां तुम से समेट लीं। बनू काब को उन की औरतों के ठहरने की जगह और ईमान वालों की देख रेख का पड़ाव मुबारक हो। तुम अपनी औरत से उस की बकरी और बरतन के बारे में पूछो। तुम अगर खुद बकरी से पूछोगे तो वह भी गवाही देगी।"

हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं, हमें मालूम न था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किधर का रुख़ फ़रमाया है कि एक जिन्न निचले मक्का से ये पढ़ता हुआ आया। लोग उस के पीछे-पीछे चल रहे थे, उस की आवाज़ सुन रहे थे, लेकिन खुद उसे देख नहीं रहे थे, यहां तक कि वह ऊपरी मक्का से निकल गया। वह कहती हैं कि जब हम ने उस की बात सुनी, तो हमें मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किधर का रुख़ फ़रमाया है, यानी आप का रुख़ मदीने की ओर है।[24]

24) ज़ादुल-मआद 2/53-54 बनू ख़ज़ाआ की आबादी के भू-भाग को देखते हुए अनदाज़ा यह है कि यह घटना ग़ार (पहाड़ की खोह) से निकलने के बाद दूसरे दिन घटी होगी।

4. रास्ते में सुराक़ा बिन मालिक ने पीछा किया और इस घटना को खुद सुराक़ा ने बयान किया है, वह कहते हैं, "मैं अपनी क़ौम बनी मुदलिज की एक मज्लिस में बैठा था कि इतने में एक आदमी आ कर हमारे पास खड़ा हुआ और हम बैठे थे। उसने कहा, ऐ सुराक़ा! मैंने अभी तट के पास कुछ लोगों को देखा है, मेरा ख़्याल है कि ये मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उन के साथी हैं। सुराक़ा कहते हैं कि मैं समझ गया, कि वही लोग हैं लेकिन मैंने उस आदमी से कहा कि ये वे लोग नहीं हैं, बल्कि तुम ने फ़्लां और फ़्लां को देखा है जो हमारी आंखों के सामने गुज़र कर गए हैं। फिर मैं मज्लिस में कुछ देर तक ठहरा रहा। इसके बाद उठ कर अंदर गया और अपनी लौंडी को हुक्म दिया कि वह मेरा घोड़ा निकाले और टीले के पीछे रोक कर मेरा इंतिज़ार करे। इधर मैं ने अपना नेज़ा लिया और घर के पिछवाड़े से बाहर निकला। लाठी का एक सिरा ज़मीन पर घसीट रहा था और दूसरा ऊपरी सिरा नीचे कर रखा था। इस तरह मैं अपने घोड़े के पास पहुंचा और उस पर सवार हो गया। मैंने देखा कि वह पहले की तरह ही मुझे ले कर दौड़ रहा है, यहां तक कि मैं उन के क़रीब आ गया। इस के बाद घोड़ा मुझ समेत फिसला और मैं उस से गिर गया। मैंने उठ कर तरकश (जिस में तीर रखे जाते हैं) की ओर हाथ बढ़ाया और पांसे के तीर निकाल कर यह जानना चाहा, कि मैं इन्हें नुक़्सान पहुंचा सकूंगा या नहीं, तो वह तीर निकला जो मुझे नापसंद था, लकिन मैंने तीर की नाफ़रमानी की और घोड़े पर सवार हो गया। वह मुझे लेकर दौड़ने लगा, यहां तक कि जब मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किरात (क़ुरआन पढ़ने की आवाज़) सुन रहा था——और आप तवज्जोह नहीं फ़रमाते थे, जब कि अबू बक्र रज़ि० बार-बार मुड़ कर देख रहे थे——तो मेरे घोड़े के अगले दोनो पांव ज़मीन में धंस गए, यहां तक कि घुटनों तक जा पहुंचे और मैं उस से गिर गया। फिर मैंने उसे डांटा तो उसने उठना चाहा, लेकिन वह अपने पांव मुश्किल से निकाल सका।

बहरहाल जब वह सीधा खड़ा हुआ तो उस के पांव के निशान से आसमान की ओर धुएं जैसी धूल उड़ रही थी। मैंने फिर पांसे के तीर से भाग्य मालूम किया और फिर वही तीर निकला जो मुझे नापसंद था। इस के बाद मैंने अमान (पनाह) के साथ उन्हें पुकारा, तो वे लोग ठहर गए और मैं अपने घोड़े पर सवार हो कर उन के पास पहुंचा। जिस वक़्त मैं उन से रोक दिया गया था, उसी वक़्त मेरे दिल में यह बात बैठ गयी थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामला ग़ालिब आ कर रहेगा, चुनांचे मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ौम ने आप के बदले दियत (का इनाम) रखा है और साथ ही मैंने लोगों के निश्चयों से आप को अवगत कराया और तोशा और साज़ व सामान की भी पेशकश की, मगर उन्होंने मेरा कोई सामान नहीं लिया और न मुझ से कोई सवाल किया, केवल इतना कहा कि हमारे बारे में राज़दारी बरतना। मैंने आप से निवेदन किया कि आप मुझे अम्न का परवाना लिख दें। आप ने आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि० को हुक्म दिया और उन्होंने चमड़े के एक टुकड़े पर लिख कर मेरे हवाले कर दिया, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ गए।[25]

इस घटना के बारे में स्वयं अबू बक्र रज़ि० की भी एक रिवायत है, उन का बयान है कि हम लोग रवाना हुए तो क़ौम हमारी खोज में थी, मगर सुराक़ा बिन मालिक बिन जोशम के सिवा, जो अपने घोड़े पर आया था और कोई हमें न पा सका। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह पीछा करने वाला हमें आ लेना चाहता

25) बुख़ारी 1/554 बनी मुदलज राबिग़ के क़रीब आबाद थे और सुराक़ा ने आप (सल्ल०) का पीछा उस वक़्त किया था जब आप (सल्ल०) क़दीद से ऊपर आ रहे थे (ज़ादुल-मआद) इसलिए अनदाज़ा यह है कि ग़ार से निकलने के बाद तीसरे दिन पीछा करने की यह घटना घटी थी।

है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا

"ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है।"[26]

बहरहाल सुराक़ा वापस हुआ तो देखा कि लोग खोज करने में परेशान हैं। कहने लगा, इधर की खोज-ख़बर ले चुका हूं। यहां तुम्हारा जो काम था वह किया जा चुका है। (इस तरह लोगों को वापस ले गया) यानी दिन के शुरू में तो चढ़ा आ रहा था और आख़िर में पासबान (पहरेदार) बन गया।[27]

5. रास्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरैदा अस्लमी रज़ि० मिले। यह अपनी क़ौम के सरदार थे और क़ुरैश ने जिस ज़बरदस्त इनाम का एलान कर रखा था, उसी के लालच में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबू बक्र रज़ि० की खोज में निकले थे, लेकिन जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सामना हुआ और बातचीत हुई तो दिल दे बैठे और अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों के साथ वहीं मुसलमान हो गए, फिर अपनी पगड़ी उतार कर नेज़े से बांध ली, जिसका सफ़ेद फरेरा हवा में लहराता और ख़ुशख़बरी सुनाता था कि शान्ति का बादशाह, सन्धि का समर्थक, दुनिया को अदालत और न्याय से भरपूर करने वाला तशरीफ़ ला रहा है।[28]

6. रास्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० मिले। यह मुसलमानों की एक व्यापारी टोली के साथ शाम देश से वापस आ रहे थे। हज़रत ज़ुबैर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबू बक्र रज़ि० को सफ़ेद कपड़े पेश किए।[29]

---

26) बुख़ारी 1/516

27) ज़ादुल मआद 2/53

28) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/101

29) बुख़ारी उरवा बिन अज़-ज़ुबैर की हदीस 1/554

क़ुबा में तशरीफ़ लाए

सोमवार 8 रबी-उल-अव्वल सन् 14 नबवी यानी सन् 01 हिजरी मुताबिक़ 23 सितम्बर सन् 622 ई० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में तशरीफ़ लाए।[30]

हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि मदीना के मुसलमानों ने मक्का से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रवाना होने की ख़बर सुन ली थी, इसलिए लोग हर दिन सुबह ही सुबह हर्रा की ओर निकल जाते और आप की राह तकते रहते। जब दोपहर को धूप तेज़ हो जाती, तो वे वापस पलट आते। एक दिन लम्बे इन्तिज़ार के बाद लोग अपने-अपने घरों को पहुंच चुके थे कि एक यहूदी अपने किसी टीले पर कुछ देखने के लिए चढ़ा। क्या देखता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथी सफ़ेद कपड़े पहने हुए----जिन से चांदनी छिटक रही थी----तशरीफ़ ला रहे हैं। उसने मस्ती में आकर ऊंची आवाज़ में कहा, "अरब के लोगो! यह रहा तुम्हारा नसीब (भाग्य) जिसका तुम इन्तिज़ार कर रहे थे।" यह सुनते ही मुसलमान हथियारों की तरफ़ दौड़ पड़े।[31] (और हथियार से सज-धज कर स्वागत के लिए उमड़ पड़े।)

इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि उसके साथ ही बनी अम्र बिन औफ़ (क़ुबा के निवासी) में शोर उभरा और तकबीर सुनी गई। मुसलमान आपके आने की ख़ुशी में तकबीर कहते हुए स्वागत के लिए निकल पड़े,

---

30) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/102 इस दिन नबी (सल्ल०) की उम्र पूरे 53 साल हुई थी और जो लोग आप (सल्ल०) की नुबुवत की शुरुआत 9 रबीउल-अव्वल 41 आमुल-फ़ील से मानते उन के अनुसार आप (सल्ल०) की नुबुवत के ठीक 13 साल पूरे हुए थे। परन्तु जो लोग आप (सल्ल० की नुबुवत की शुरुआत रमज़ान 41 आमुल-फ़ील से मानते हैं उनके अनुसार बारह साल पांच महीने 18 दिन या 22 दिन हुए थे।

31) बुख़ारी 1/555

फिर आपसे मिल कर नुबुवत की मुबारकबाद दी और आस-पास परवानों की तरह जमा हो गए। उस वक़्त आप पर शान्ति छायी हुई थी और यह वह्य उतर रही थी।

فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰهُ وَ جِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمَلٰئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ

"अल्लाह आप का मौला है और जिब्रील अलैहिस्सलाम और अच्छे-भले ईमान वाले भी, और उस के बाद फ़रिश्ते आप के मददगार हैं।[32]"

हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि लोगों से मिलने के बाद आप उन के साथ दाहिनी ओर मुड़े और बनी अम्र बिन औफ़ में तशरीफ़ लाए। यह सोमवार का दिन था और रबीउल अव्वल का महीना था। अबू बक्र रज़ि० आने वालों के स्वागत के लिए खड़े थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुपचाप बैठे थे। अंसार के जो लोग आते, जिन्होने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा न था, वे सीधे हज़रत अबू बक्र रज़ि० को सलाम करते, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर धूप आ गई और अबू बक्र रज़ि० ने चादर तान कर आप पर साया किया, तब लोगों ने पहचाना कि ये अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।[33]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वागत और दर्शन के लिए सारा मदीना उमड़ पड़ा था। यह एक एतिहासिक दिन था जिसकी मिसाल मदीना की धरती ने कभी नहीं देखी थी। आज यहूदियों ने भी हबक़ूक़ नबी की इस ख़ुशख़बरी का मतलब देख लिया था कि "अल्लाह दक्खिन से और वह जो क़ुद्दूस (पाक-साफ़) है, फ़ारान (की पहाड़ी) से आया।[34]"

---

32) ज़ादुल-मआद 2/54

33) बुख़ारी 1/555

34) बाईबल सहीफ़ा हबक़ूक़ 303

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुबा में कुलसूम बिन हदम------और कहा जाता है कि साद बिन ख़ैसमा रज़ि० के मकान में निवास किया------पहला कथन ज़्यादा मज़बूत है।

इधर हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने मक्का में तीन दिन ठहर कर और लोगों की जो अमानतें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थीं, उन्हें अदा करके पैदल ही मदीना का रुख़ किया और कुबा में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आ मिले और कुलसूम बिन हदम के यहां निवास किया।[35]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुबा में कुल चार दिन[36] (सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार) या दस से ज़्यादा दिन, या पहुंचने और रवाना होने के अलावा 24 दिन निवास किया और इसी बीच मस्जिदे कुबा की बुनियाद रखी और उस में नमाज़ भी पढ़ी। यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के बाद पहली मस्जिद है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गयी। पांचवें दिन (या बारहवें दिन या छब्बीसवें दिन) जुमा को------आप अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सवार हुए। अबू बक्र रज़ि० आप के पीछे थे। आप ने बनू अन-नज्जार को-----जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामुओं का क़बीला

---

35) ज़ादुल-मआद 2/54, इब्ने हिशाम 1/493, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/102

36) यह इब्ने इसहाक़ की हदीस है देखिए इब्ने हिशाम 1/494 इसी को अल्लामा मन्सूरपुरी ने सही माना है देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन 1/102 लेकिन बुख़ारी की एक रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने कुबा में 24 रातें गुज़ारीं (1/61) दूसरी रिवायत में दस रात से कुछ दिन ज़्यादा (1/555) और एक तीसरी रिवायत में 14 रात (1/560) बताया गया है। इब्ने क़य्यिम ने इसी आख़िरी रिवायत को लिया है मगर इब्ने क़य्यिम ने ख़ुद व्याख्या की है कि आप कुबा में पीर के दिन पहुंचे थे और जुमा को वहां से चल दिए थे (ज़ादुल-मआद 2/54-55) अगर पीर और जुमा दो अलग अलग हफ़्तों का लें तो पहुंचने और निकलने का दिन छोड़ कर दस दिन होते हैं और अगर इन दोनों को भी जोड़ लें तो बारह दिन होते हैं इसलिए यह वक़्त 14 दिन कैसे हो सकता है।

था——ख़बर भेज दी थी, चुनांचे वे तलवारें लटकाए हाज़िर थे। आप ने (उन के साथ) मदीना का रुख़ किया। बनू सालिम बिन औफ़ की आबादी में पहुंचे तो जुमा का वक़्त आ गया। आप ने "बत्ने वादी" में उस जगह जुमा पढ़ा, जहां अब मस्जिद है, कुल एक सौ आदमी थे।[37]

मदीना में दाख़िला

जुमा के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तश्रीफ़ ले गए और उसी दिन से इस शहर का नाम यस्रिब के बजाए "मदीनतुर्रसूल" (यानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शहर) पड़ गया जिसे अल्प में "मदीना" कहा जाता है। यह अत्यंत चमकदार एतिहासिक दिन था। गली कूचे "अल-हम्दुलिल्लाह" "सुबहानल्लाह" की आवाज़ों से गूंज रहे थे और अंसार की बच्चियां हर्ष और प्रसन्नता से इन पद्यों के गीत बिखेर रही थीं।[38]

اَشْرَقَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ

"इन पहाड़ों से, जो हैं दक्षिण की ओर चौदहवीं का चांद है हम पर चढ़ा"

وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعٍ

---

37) बुख़ारी 1/555-560, ज़ादुल-मआद 2/55, इब्ने हिशाम 1/494 रहमतुल-लिल आलमीन 1/102

38) पद्य (शेरों) का यह अनुवाद(तर्जुमा) अल्लामा मन्सूरपुरी ने किया है। इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि यह पद्य तबूक से नबी (सल्ल०) की वापसी पर पढ़े गए थे और जो यह कहता है कि मदीना में आप (सल्ल०) के दाखले के वक़्त पढ़े गए थे उसे वहम हुआ है(ज़ादुल-मआद 3/10) लेकिन इब्ने क़य्यिम ने इसके वहम होने का कोई ठोस सबूत नहीं दिया। जबकि अल्लामा मन्सूरपुरी ने इस बात को पसन्द किया है कि यह पद्य मदीने में दाख़िले के वक़्त पढ़े गए थे और उनके पास इस बात के ठोस सबूत भी हैं। देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन 1/106)

"कैसा अच्छा दीन और (उस की) शिक्षा है, शुक्र वाजिब है हमें अल्लाह का।"

أَيُّهَا الْمَبْعُوثُ فِينَا جِئْتَ بِالْأَمْرِ الْمُطَاعِ

"तेरे हुक्म की इताअत फ़र्ज़ है, तेरा भेजने वाला है किब्रिया (महान)।"

अंसार अगर्चे बड़े धनी न थे, लेकिन हर एक की यही आरज़ू थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के यहां ठहरें, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंसार के जिस मुहल्ले या मकान से गुज़रते, वहां के लोग आप की ऊंटनी की नकेल पकड़ लेते और कहते कि तायदाद व सामान और हथियार व हिफ़ाज़त आप के लिए ही हैं, तशरीफ़ लाइए। मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते कि ऊंटनी की राह छोड़ दो। यह अल्लाह की ओर से भेजी गयी है, चुनांचे ऊंटनी बराबर चलती रही और वहां पहुंच कर बैठी जहां आज मस्जिदे नबवी है, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नीचे नहीं उतरे, यहां तक कि वह उठ कर थोड़ी दूर गयी फिर मुड़ कर देखने के बाद पलट आयी और अपनी पहली जगह बैठ गयी। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नीचे तशरीफ़ लाए। यह आप के ननिहाल वालों यानी बनू नज्जार का मुहल्ला था और यह ऊंटनी के लिए सिर्फ़ अल्लाह की तौफ़ीक़ थी, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ननिहाल में क़ियाम फ़रमा कर उन का मान-सम्मान बढ़ाना चाहते थे। अब बनू नज्जार के लोगों ने अपने-अपने घर ले जाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से विनम्रता से कहा, लेकिन अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने लपक कर कजावा उठा लिया और अपने घर लेकर चले गए, इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाने लगे, आदमी अपने कजावे के साथ है। इधर हज़रत अस्अद

बिन ज़ुरारः रज़ि० ने आ कर ऊंटनी की नकेल पकड़ ली। चुनांचे यह ऊंटनी उन्हीं के पास रही।[39]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "हमारे किस आदमी का घर ज़्यादा क़रीब है?" हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने कहा, मेरा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह रहा मेरा मकान और यह रहा मेरा दरवाज़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "जाओ! और हमारे लिए क़ैलूला (दोपहर के खाने के बाद आराम) की जगह तैयार कर दो।" उन्होंने अर्ज़ की, आप दोनों तशरीफ़ ले चलें, अल्लाह बरकत दे।[40]

कुछ दिनों बाद आप की मोहतरमा बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ि० और आप की दोनों बेटियां हज़रत फ़ातिमा रज़ि० और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० और उम्मे ऐमन रज़ि० भी आ गईं। इन सब को हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र रज़ि० अबू बक्र के बाल-बच्चों के साथ, जिन में हज़रत आइशा रज़ि० भी थीं, लेकर आए थे, अलबत्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि०, हज़रत अबुल आस रज़ि० के पास बाक़ी रह गईं, उन्होंने आने नहीं दिया और वह बद्र की लड़ाई के बाद तशरीफ़ ला सकीं।[41]

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत बिलाल रज़ि० को बुख़ार आ गया। मैंने उन की सेवा में जाकर पूछा कि, अब्बा जान! आप का क्या हाल है? और ऐ बिलाल! आप का

39) ज़ादुल-मआद 2/54, रहमतुल लिल-आलमीन 1/106

40) बुख़ारी 1/556

41) ज़ादुल-मआद 2/55

क्या हाल है? वह फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबू बक्र रज़ि० को बुख़ार आता तो ये पद्य पढ़ते, जिस का अनुवाद है----

كُلُّ امْرِىءٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ وَالْمَوْتُ أَدْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

"हर आदमी से उस के घर के अंदर सुबह बख़ैर (सुबह बेहतर हो)। कहा जाता है हालांकि मौत उस के जूते के फ़ीते से भी ज़्यादा क़रीब है" और हज़रत बिलाल रज़ि० की हालत कुछ संभलती तो वह दर्द भरी आवाज़ बुलन्द करते और कहते-----

الا ليت شعرى هل ابيتن ليلة بواد و حولى اذخر و جليل

وهل اردن يوما مياه مجنة وهل يبدون لى شامة وطفيل

"काश, मैं जानता कि कोई रात (मक्का की) घाटी में बिता सकूंगा और मेरे आस पास इज़ख़िर और जलील (घास) होंगी और क्या किसी दिन मिजन्ना के सोते पर आ सकूंगा और मुझे शामा और तुफ़ैल (पहाड़) दिखाई पड़ेंगे।"

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर इस की ख़बर दी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह हमारे नज़दीक मदीना उसी तरह प्रिय कर दे जैसे मक्का प्रिय था या इससे भी ज़्यादा और मदीना का वातावरण स्वास्थ्य-वर्धक बना दे और इस के साअ़ और मुद्द (अनाज के पैमानों) में बरकत दे और इस का बुख़ार यहां से जोहफ़ा पहुंचा दे।[42]" अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ सुन ली और हालात बदल गए।

यहां तक पाक जीवनी की एक किस्म और इस्लामी दावत का एक दौर (यानी मक्की दौर) पूरा हो जाता है।

---

42) बुख़ारी 1/588-589

मदीना हिजरत के वक़्त

पाक जीवन का
मदनी दौर (युग)

मदनी ज़िंदगी

मदनी दौर को तीन मरहलों में बांटा जा सकता है----

1. **पहला मरहलाः** जिसमें फ़िल्ने और परेशानियां लाई गईं। अन्दर से रुकावटें खड़ी की गईं और बाहर से दुश्मनों ने मदीना को धरती से मिटा देने के लिए चढ़ाइयां कीं। यह मरहला हुदैबिया समझौते (ज़ीक़ादा सन् 06 हि०) पर समाप्त हो जाता है।

2. **दूसरा मरहलाः** जिस में मूर्ति पूजक नेतृत्व के साथ समझौता हुआ। यह मक्का विजय रमज़ान सन् 08 हि० पर समाप्त हो जाता है, यही मरहला दुनिया के बादशाहों को दीन की दावत पेश करने का भी मरहला है।

3. **तीसरा मरहलाः** जिस में लोग अल्लाह के दीन में भीड़ की भीड़ दाख़िल हुए। यही मरहला मदीना में क़ौमों और क़बीलों के प्रतिनिधि मंडलों के आने का भी मरहला है। यह मरहला अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक ज़िंदगी के आख़िर यानी रबीउल अव्वल सन् 11 हि० तक पहुंचता है।

हिजरत के वक़्त मदीना के हालात

हिजरत का मतलब सिर्फ़ इतना ही नहीं था कि फ़ित्नों और हंसी मज़ाक़ का निशाना बनने से निजात पा ली जाए, बल्कि इस में यह अर्थ भी शामिल था कि एक शान्तिपूर्ण क्षेत्र के अंदर एक नये समाज के ढालने में सहायता की जाए, इसीलिए हर समर्थ मुसलमान के लिए अनिवार्य था कि इस नये वतन के निर्माण में भाग ले और उस की दृढ़ता, सुरक्षा और उन्नति में अपनी सी कोशिश करे।

यह बात तो निश्चित रूप से मालूम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही समाज के गठन के इमाम, नेता और मार्ग-दर्शक थे और किसी मतभेद के बिना सारे मामलों की बागडोर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के हाथ में थी।

मदीना में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन तरह की क़ौमों से वास्ता पड़ता था जिनमें से हर एक के हालात दूसरे से बिल्कुल अलग थे और हर एक क़ौम के ताल्लुक़ से कुछ ख़ास मसअले थे जो दूसरी क़ौमों के मसअलों से बिल्कुल अलग थे। ये तीनों क़ौमें नीचे लिखी जा रही हैं।

1. आप के पाकबाज़ सहाबा किराम रज़ि० की चुनिंदा और सब से अलग जमाअत

2. मदीने के पुराने और असली क़बीलों से ताल्लुक़ रखने वाले मुश्रिक, जो अब तक ईमान नहीं लाए थे, और

3. यहूदी।

(क) सहाबा किराम रज़ि० के ताल्लुक़ से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिन मस्अलों का सामना था, उनकी व्याख्या यह है कि उनके लिए मदीना के हालात मक्का के हालात से पूरी तरह अलग थे। मक्के में यद्यपि उन का कलिमा एक था और उन का मक़सद भी एक था, मगर वे ख़ुद अलग-अलग घरानों में बिखरे हुए थे और मजबूर, परेशान, और कमज़ोर थे। उनके हाथ में किसी तरह का कोई अधिकार न था। सारे अधिकार दीन के दुश्मनों के हाथों में थे और दुनिया का कोई भी इंसानी समाज, जिन चीज़ों और अनिवार्य बातों से क़ायम होता है, मक्का के मुसलमानों के पास वे बातें सिरे से थीं ही नहीं कि उनकी बुनियाद पर किसी नये इस्लामी समाज का गठन कर सकें। इसलिए हम देखते हैं कि मक्की सूरतों में सिर्फ़ इस्लाम की बुनियादी बातों का विवरण दिया गया है और सिर्फ़ ऐसे आदेश दिए गए हैं जिन पर हर आदमी अकेले अ़मल कर सकता है। इसके अ़लावा नेकी, भलाई और अच्छे चरित्र का प्रलोभन दिया गया और घटिया व नीच कामों से बचने की ताकीद की गई है।

इस के ख़िलाफ़ मदीने में मुसलमानों की लगाम पहले ही दिन से ख़ुद उन के अपने हाथ में थी, उन पर किसी दूसरे का क़ब्ज़ा न था, इसलिए अब वह वक़्त आ गया था कि मुसलमान संस्कृति और सभ्यता, अर्थ-व्यवस्था, राजनीति और प्रशासन, संधि और युद्ध की समस्याओं का सामना करें और उनके लिए हलाल व हराम और इबादत व बंदगी, चरित्र आचरण आदि जीवन की समस्याओं का भरपूर जायज़ा लिया जाए।

समय आ गया था कि मुसलमान एक नया समाज मानो इस्लामी समाज गठित करें जो जीवन के तमाम मरहलों में जाहिली समाज से अलग और मानव जगत में मौजूद किसी भी दूसरे समाज से ज़्यादा

नुमायाँ हो और उस इस्लामी दावत का प्रतिनिधि हो, जिसकी राह में मुसलमानों ने तेरह साल तक तरह-तरह की मुसीबतें और परेशनियां सहन की थीं।

ज़ाहिर है इस तरह के किसी समाज का गठन एक दिन, एक महीना या एक साल में नहीं हो सकता, बल्कि उस के लिए एक लम्बा समय चाहिए होता है ताकि उस में धीरे-धीरे और थोड़े-थोड़े हुक्म दिए जाएं और क़ानून बनाने का काम अभ्यास, प्रशिक्षण और व्यवहारिक तौर पर लागू करने के साथ-साथ पूरा किया जाए। अब जहां तक हुक्म और क़ानून लागू करने और जुटाने का मामला है तो अल्लाह खुद उसका ज़िम्मेदार था और जहां तक इन हुक्मों के लागू करने और मुसलमानों की शिक्षा-दीक्षा और मार्ग-दर्शन का मामला है, तो इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तैनात किए गए थे, चुनांचे इर्शाद है-----

هُوَالَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَیُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ

"वही है, जिस ने उम्मियों (अंपढ़ों) में खुद उन्हीं के अंदर से एक रसूल भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करता है और उन्हें पाक व साफ़ करता है और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है और ये लोग यक़ीनी तौर पर पहले खुली गुमराही में थे।" (62:2)

इधर सहाबा किराम रज़ियाल्लाहु अन्हुम का यह हाल था कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह रहते और जो हुक्म होता उस से अपने आप को सुसज्जित करके खुशी महसूस करते, जैसा कि इर्शाद है-----

وَاِذَا تُلِیَتْ عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا

"जब उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं तो उन के ईमान को बढ़ा देती हैं।" (8:2)

चूंकि इन सारी समस्याओं का विवेचन हमारे विषय से बाहर है, इसलिए हम ज़रूरत भर बात करेंगे----

बहरहाल यही सब से बड़ा मस्अला था जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुसलमानों के ताल्लुक़ से सामने था और बड़े पैमाने पर यही इस्लामी दावत और प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का मक़सूद भी था, लेकिन यह कोई हंगामी मस्अला न था, बल्कि स्थायी और हमेशा का था अलबत्ता इस के अलावा कुछ दूसरे मस्अले भी थे जो तत्काल ध्यान दिलाना चाहते थे, जिन की संक्षेप में स्थिति यह है----

मुसलमानों की जमाअत में दो तरह के लोग थे---

एक वे जो खुद अपनी ज़मीन, अपने मकान और अपने माल के अंदर रह रहे थे और इस बारे में उनको इससे अधिक चिन्ता न थी, जितनी किसी आदमी को अपने बाल-बच्चों में सुख-शान्ति के साथ रहते हुए करनी पड़ती है। यह अंसार का गिरोह था और इन में पीढ़ी दर पीढ़ी आपस में बड़ी मज़बूत दुश्मनियां और घृणाएं चली आ रही थीं। इनके साथ-साथ दूसरा गिरोह मुहाजिरों का था जो इन सारी सुविधाओं से महरूम था और लुट-पिट कर किसी न किसी तरह भाग्य के भरोसे मदीना पहुंच गया था। इनके पास न तो रहने के लिए कोई ठिकाना था, न पेट पालने के लिए कोई काम-----और न सिरे से किसी तरह का कोई माल, जिस पर उन का कोई आर्थिक ढांचा खड़ा हो सके, फिर पनाह चाहने वाले मुहाजिरों की तायदाद कोई मामूली भी न थी और इन में दिन ब दिन बढ़ौतरी ही हो रही थी, क्योंकि एलान कर दिया गया था कि जो कोई अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता है, वह हिजरत करके मदीना आ जाए और मालूम है कि

मदीना में न कोई बड़ी दौलत थी, न आमदनी के साधन। चुनाचें मदीने का आर्थिक संतुलन बिगड़ गया और इसी तंगी-तुर्शी में इस्लाम विरोधी ताक़तों ने भी मदीने का लगभग आर्थिक बहिष्कार कर दिया, जिस से आयात बंद हो गयी और हालात बड़े संगीन हो गए।

(ख) दूसरी क़ौमः- यानी मदीना के असल मुश्रिक निवासियों का हाल यह था कि उन्हें मुसलमानों पर कोई बरतरी हासिल न थी, कुछ मुश्रिक संदेहों में पड़े हुए थे और अपने बाप-दादा के देश को छोड़ने में झिझक महसूस कर रहे थे, लेकिन इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ अपने दिल में कोई दुश्मनी और दाव-घात नहीं रख रहे थे, इस तरह के लोग थोड़े ही दिनों बाद मुसलमान हो गए और सच्चे और पक्के मुसलमान हुए।

इसके विपरीत कुछ मुश्रिक ऐसे थे, जो अपने सीने में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ कीना और दुश्मनी छिपाए हुए थे, लेकिन उन्हें सामने आने की हिम्मत न थी, बल्कि परिस्थिति को देखते हुए प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम और निष्ठा प्रकट करने पर विवश थे। इस लिस्ट में सब से ऊपर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था। यह वह आदमी है जिसको बुआ़स की लड़ाई के बाद अपना "नेता" बनाने पर औस व ख़ज़रज एक राय हो गय थे, हालांकि इससे पहले दोनों फ़रीक़ किसी के नेतृत्व पर एक राय नहीं हुए थे, लेकिन अब इसके लिए मूँगों का ताज तैयार किया जा रहा था, ताकि उस के सर पर शाही ताज रख कर उस की बाक़ायदा बादशाहत का एलान कर दिया जाए यानी यह आदमी मदीने का बादशाह होने की वाला था कि अचानक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आना हो गया और लोगों का रुख़ उस के बजाए आप की ओर हो गया, इसलिए उसे एहसास था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ही उसकी बादशाहत छीनी है, इसलिए वह अपने

दिल के कोने में आप के ख़िलाफ़ भारी दुश्मनी छिपाये हुए था। इस के बावजूद जब उसने बद्र की लड़ाई के बाद देखा कि हालात उस के मुताबिक़ नहीं हैं और वे शिर्क पर क़ायम रह कर अब दुनिया के फ़ायदों से भी महरूम हुआ चाहता है, तो उसने ऊपर-ऊपर इस्लाम क़ुबूल करने का एलान कर दिया, लेकिन वह अब भी परदे के पीछे काफ़िर ही था इसी लिए जब भी उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी शरारत का मौक़ा मिलता वह हरगिज़ न चूकता। उसके साथी आम तौर से वे रईस थे जो उस की बादशाहत के तहत बड़े-बड़े पदों की प्राप्ति की आशा बांधे बैठे थे, मगर अब उन्हें इस से महरूम हो जाना पड़ा था। ये लोग उस आदमी के कामों में शरीक थे और उसकी योजनाओं को पूरा करने में उसकी मदद करते थे और इस काम के लिए कभी-कभी नवजवानों और भोले-भाले मुसलमानों को भी अपनी चालबाज़ियों से अपना निशाना बना लेते थे।

(ग) तीसरी क़ौमः- यहूदी थे। जैसा कि गुज़र चुका है, ये लोग अशूरी और रूमी ज़ुल्म और ज़्यादती से भाग कर हिजाज़ में श्रण लिए हुए थे यह वास्तव में इबरानी थे, लेकिन हिजाज़ में श्रण लेने के बाद इनकी वेश-भूषा, भाषा और सभ्यता आदि बिल्कुल अ़रबी रंग में रंग गयी थी, यहां तक कि इनके क़बीलों और व्यक्तियों के नाम भी अ़रबी हो गये थे और यहाँ तक कि इन्में और अ़रबों में आपस के शादी-ब्याह के रिश्ते भी क़ायम हो गये थे, लेकिन इन सब के बावजूद इनका नस्ली पक्षपात बाक़ी था और वे अ़रबों में मुदग़म न हुए थे, बल्कि अपनी इसराईली—यहूदी—क़ौमियत पर गर्व करते थे और अ़रबों को बहुत ही तुच्छ समझते थे, यहां तक कि उन्हें "उम्मी" कहते थे, जिस का मतलब उनके नज़दीक यह थाः बुद्धू, जंगली, नीच, पिछड़े हुए और अछूत। इनका विश्वास था कि अ़रबों का माल ले लेना हर पहलू से सहीह है, जैसे चाहें खाएं, चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है--

قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّيْنَ سَبِيْلٌ

"उन्होंने कहा हम पर उम्मियों के मामले में कोई राह नहीं।" (3:75)

यानी उम्मियों का माल खाने में हमारी कोई पकड़ नहीं। इन यहूदियों में अपने दीन के प्रचार के लिए कोई सरगर्मी नहीं पायी जाती थी। ले-देकर उनके पास दीन की जो पूंजी रह गयी थी, वह थी, शकुन निकालना, जादू और झाड़-फूंक वग़ैरह। इन्ही चीज़ों की वजह से वे अपने आप को इल्म और फ़ज़्ल का मालिक और रूहानी (आध्यात्मिक) नेता और पेशवा समझते थे।

यहूदियों को दौलत कमाने की कला में बड़ी दक्षता (महारत) प्राप्त थी। अन्न, खजूर, शराब और कपड़े का व्यापार उन्हीं के हाथ में था। ये लोग अनाज, कपड़े और शराब आयात करते थे और खजूर का निर्यात। इसके अ़लावा भी इन के अलग-अलग काम थे, जिन में वे सरगर्म रहते थे। वे अपने व्यापार के सामानों में अ़रबों से दोगुना और तीन गुना मुनाफ़ा लेते थे और इसी पर बस न करते थे, बल्कि वे ब्याज भी खाते थे, इसलिए वे अरब शैख़ों (बुज़ुर्गों) और सरदारों के सूदी ऋण के तौर पर बड़ी-बड़ी रक़में देते थे, जिन्हें ये सरदार प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए, अपना गुण-गान करने वाले कवियों आदि पर बिल्कुल बेकार फ़ालतू तौर पर ख़र्च कर देते थे। इधर यहूदी इन रक़मों के बदले इन सरदारों से इनकी ज़मीनें खेतियां और बाग़ वग़ैरह गिरवी रखवा लेते थे और कुछ साल गुज़रते-गुज़रते उन के मालिक बन बैठते थे।

ये लोग आपसी फूट, षड़यंत्रों और लड़ाई दंगे की आग भड़काने में भी बड़े माहिर थे। ऐसी बारीकी से पड़ोसी क़बीलों में दुश्मनी के बीज बोते और एक को दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काते कि इन क़बीलों को एहसास तक न होता। इस के बाद इन क़बीलों में आपसी लड़ाई चलती रहती और अगर (अल्लाह न करे) लड़ाई की यह आग ठंडी पड़ती दिखाई देती

तो यहूदियों की ख़ुफ़िया उंगलियां फिर हरकत में आ जातीं और लड़ाई फिर भड़क उठती। कमाल यह था कि ये लोग क़बीलों को लड़ा-भिड़ा कर चुपचाप किनारे बैठे रहते और अ़रबों की तबाही का तमाशा देखते। अलबत्ता भारी-भरकम ब्याज वाला क़र्ज़ देते रहते ताकि पूंजी की कमी की वजह से लड़ाई न बन्द होने पाए और इस तरह वे दोहरा लाभ कमाते रहते। एक ओर अपनी यहूदी सामूहिकता को सुरिक्षत रखते और दूसरी ओर ब्याज का बाज़ार ठंडा न पड़ने देते, बल्कि ब्याज दर ब्याज के द्वारा बड़ा-बड़ा धन कमाते।

यस्रिब में इन यहूदियों के तीन प्रसिद्ध क़बीले थे।

1. बनू कैनुक़ाअ़ः ये ख़ज़रज के साथ थे और इन की आबादी मदीने के अंदर ही थी।

2. बनू नज़ीरः

3. बनू कुरैज़ाः ये दोनों क़बीले औस के साथ थे और इन दोनों की आबादी मदीने के किनारों पर थी।

एक मुद्दत से यही क़बीले औस व ख़ज़रज के बीच लड़ाई के शोले भड़का रहे थे और बुआ़स की लड़ाई में अपने-अपने मित्रों के साथ ख़ुद भी शरीक हुए थे।

स्वाभाविक है कि इन यहूदियों से इस के सिवा कोई और उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि ये इस्लाम को द्वेष (कीना) और बैर-भाव की दृष्टि से देखें, क्योंकि पैग़म्बर उन की नस्ल से न थे कि उन के नस्ली पक्षपात को, जो उनके मनोविज्ञान और मानसिकता का अभिन्न भाग बनी हुई थी, शान्ति मिलती। फिर इस्लाम की दावत एक भली और बुराइयों से पाक दावत थी, जो टूटे दिलों को जोड़ती थी, द्वेष और बैर-भाव की आग बुझाती थी। तमाम मामलों में अमानतदारी बरतने और पाक और हलाल माल खाने की पाबंद बनाती थी। इसका मतलब

यह था कि अब यस्रिब के क़बीले आपस में जुड़ जाएंगे और ऐसी शक्ल में ज़रूरी है कि वे यहूदियों के पंजों से आज़ाद हो जाएंगे, इसलिए उन की व्यापारिक गतिविधियां ठंडी पड़ जाएंगी और उस ब्याज सहित पूंजी से महरूम हो जाएंगे। जिस पर उनकी मालदारी की चक्की घूम रही थी, बल्कि यह भी डर था कि कहीं ये क़बीले जाग कर अपने हिसाब में वह ब्याज वाले धन भी दाख़िल न कर लें। जिन्हें यहूदियों ने उन से बे बदला हासिल किया था और इस तरह वे उन ज़मीनों और बाग़ों को वापस न ले लें जिन्हें ब्याज के तौर पर यहूदियों ने हथिया लिया था।

जब से यहूदियों को मालूम हुआ था कि इस्लामी दावत यस्रिब में अपनी जगह बनाना चाहती है, तभी से उन्होंने इन सारी बातों को अपने हिसाब में दाख़िल कर लिया था। इसी लिए यस्रिब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आने के वक़्त से ही यहूदियों को इस्लाम और मुसलमानों से सख़्त दुश्मनी हो गयी थी, अगरचे वे उस के प्रदर्शन का साहस बड़ी मुद्दत के बाद कर सके। इस स्थिति का बहुत साफ़-साफ़ पता इब्ने इस्हाक़ की बयान की हुई एक घटना से लगता है।

इन का इर्शाद है कि मुझे उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सफ़िय्या बिन्ते हुयई बिन अख़्तब रज़ि० से यह रिवायत मिली है कि उन्होंने फ़रमाया, "मैं अपने बाप और चचा अबू यासिर की निगाह में अपने बाप की सब से चहेती औलाद थी। मैं चचा और बाप से जब कभी उन की किसी भी औलाद के साथ मिलती, तो वह इस के बजाए मुझे ही उठाते। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए और क़ुबा में बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के यहां आए तो मेरे बाप हुयई बिन अख़्तब और मेरे चचा अबू यासिर आप की सेवा में सुबह तड़के हाज़िर हुए और सूरज डूबने के वक़्त वापस आए, बिल्कुल थके-मांदे, गिरते-पड़ते, लड़खड़ाती चाल चलते हुए। मैंने आ़दत के पर तौर चहक कर उनकी ओर दौड़ लगाई, लेकिन उन्हें इतना ग़म था कि अल्लाह की क़सम,

दोनों में से किसी ने भी मेरी ओर ध्यान न दिया और मैंने अपने चचा को सुना, वह मेरे बाप हुयई बिन अख़्तब से कह रहे थे------

क्या यह वही है?

उन्होंने कहा हां! अल्लाह की क़सम!

चचा ने कहा, आप उन्हें ठीक-ठीक पहचान रहे हैं?

बाप ने कहा, हां!

चचा ने कहा, तो अब आप के दिल में उनके बारे में क्या इरादे हैं?

पिता ने कहा, "दुश्मनी-----अल्लाह की क़सम!----जब तक ज़िंदा रहूंगा।"[1]

इसी की गवाही सहीह बुख़ारी की इस रिवायत से भी मिलती है जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० के मुसलमान होने की घटना बयान की गयी है। आप एक श्रेष्ठ यहूदी विद्वान थे। आप को जब बनू अन-नज्जार में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की ख़बर मिली तो वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में बड़ी तेज़ी से हाज़िर हुए और कुछ सवाल रखे, जिन्हें सिर्फ़ नबी ही जानता है और जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से उन के जवाब सुने तो वहीं उसी वक़्त मुसलमान हो गए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि यहूदी एक बोहतान लगाने वाली क़ौम है। अगर उन्हें इस से पहले कि आप कुछ मालूम करें, मेरे इस्लाम लाने का पता लग गया तो वह आप के पास मुझ पर बोहतान तराशेंगे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों को बुला भेजा। वे आए-----और इधर अब्दुल्लाह बिन सलाम घर के भीतर छिप गये थे-----तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि अब्दुल्लाह बिन सलाम तुम्हारे अंदर कैसे

1) इब्ने हिशाम 1/518-519

आदमी हैं? उन्होंने कहा, "हमारे सब से बड़े आलिम (विद्वान) हैं और सब से बड़े आलिम के बेटे हैं। हमारे सब से अच्छे आदमी हैं और सब से अच्छे आदमी के बेटे हैं"--------एक रिवायत के शब्द ये हैं कि हमारे सरदार हैं और हमारे सरदार के बेटे हैं। और एक दूसरी रिवायत के शब्द ये हैं कि हमारे सब से अच्छे आदमी हैं और सबसे अच्छे आदमी के बेटे हैं, और हम सब से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं और सब से अफ़ज़ल आदमी के बेटे हैं"----अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अच्छा यह बताओ अगर अब्दुल्लाह मुसलमान हो जाएं तो?" यहूदियों ने दो या तीन बार कहा, अल्लाह उन को इस से बचाए रखे। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० निकले और फ़रमाया,

اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمداً رسول الله

"मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।"

इतना सुनना था कि यहूद बोल पड़े,

شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا

"यह हमारा सब से बुरा आदमी है और सब से बुरे आदमी का बेटा है।" और (उसी वक़्त) उन की बुराइयां शुरू कर दीं। एक रिवायत में है कि इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० ने फ़रमाया, "ऐ यहूदियों की जमाअत! अल्लाह से डरो। उस अल्लाह की क़सम! जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम लोग जानते हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं और आप हक़ लेकर तशरीफ़ लाए हैं।" लेकिन यहूदियों ने कहा कि तुम झूठ कहते हो।[2]

---

2) बुख़ारी 1/459, 556, 561

यह पहला अनुभव था जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यहूदियों के बारे में हासिल हुआ और मदीने में दाख़िले के पहले ही दिन हासिल हुआ।

यहां तक जो कुछ ज़िक्र किया गया, यह मदीना के अंदर के हालात से मुतल्लिक़ था। मदीना के बाहर मुसलमानों के सब से कड़े दुश्मन क़ुरैश थे और तेरह साल तक जबकि मुसलमान उन के तहत थे, आतंक फैलाने, धमकी देने और तंग करने के तमाम हथकंडे इस्तेमाल कर चुके थे। तरह-तरह की सख़्तियां और ज़ुल्म व ज़्यादतियां कर चुके थे। योजना के अनुसार बड़े प्रोपेगंडे और बड़े ही सब्र का इम्तिहान लेने वाले मनोवैज्ञानिक हथियार इस्तेमाल में ला चुके थे। फिर जब मुसलमानों ने मदीना हिजरत की तो क़ुरैश ने उन की ज़मीनें, मकान और माल व दौलत सब कुछ ज़ब्त कर लिया और मुसलमानों और उन के बाल-बच्चों के बीच रुकावट बन कर खड़े हो गए, बल्कि जिसको पा सके क़ैद कर के तरह-तरह के कष्ट दिए। फिर इसी पर बस न किया, बल्कि दावत के संचालक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए डरावने षड़यंत्र किए और उसे लागू करने के लिए अपनी सारी योग्यताऐं लगा दीं। इस के बाद भी जब मुसलमान किसी तरह बच-बचा कर कोई पांच सौ किलोमीटर दूर मदीना की भूमि पर जा पहुंचे तो क़ुरैश ने अपनी साख का फ़ायदा उठाते हुए घिनौना राजनीतिक क़दम उठाया यानी ये चूंकि हरम के निवासी और बैतुल्लाह के पड़ोसी थे और इस की वजह से इन्हें अ़रबों के दर्मियान धार्मिक नेतृत्व और संसारिक राज्य का पद प्राप्त था, इसलिए उन्होंने अ़रब प्रायद्वीप के दूसरे मुश्रिकों को भड़का और बहका कर मदीने का लगभग पूरा बाइकाट करा दिया, जिस की वजह से मदीना की आयात बहुत कम रह गयीं, जब कि वहां मुहाजिर शर्णार्थियों की तायदाद बराबर बढ़ती जा रही थी। सच तो

यह है कि मक्का के इन सरकशों और मुसलमानों के इस नये वतन के बीच लड़ाई की हालत पैदा हो चुकी थी और यह बड़ी मूर्खता की बात है कि इस झगड़े के लिए मुसलमानों को आरोपित किया जाए।

मुसलमानों को हक़ पहुंचता था कि जिस तरह उन के माल ज़ब्त किए गए थे, इसी तरह वे भी इन बदमाशों के माल ज़ब्त करें। जिस तरह उन्हें सताया गया था, इसी तरह वे भी इन बदमाशों को सताएं और जिस तरह मुसलमानों की ज़िंदगियों में रुकावटें खड़ी की गई थीं उसी तरह मुसलमान भी इन बदमाशों की ज़िंदगियों के आगे रुकावटें खड़ी करें और उन सरकशों को "जैसे को तैसा" वाला बदला दें, ताकि उन्हें मुसलमानों को तबाह करने और जड़ से उखाड़ने का मौक़ा न मिल सके।

ये थे वे मस्अले और झगड़े, जिन से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना तशरीफ़ लाने के बाद रसूल और इमाम व रहबर की हैसियत से मुक़ाबला करना था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन तमाम मस्अलों के सिलसिले में मदीना में पैग़म्बरी आचरण और नेतृत्व वाली भूमिका निभाई और जो क़ौम नर्मी व मुहब्बत या सख़्ती और खुरदुरेपन में से जिस व्यवहार की हक़दार थी, उस के साथ वही व्यवहार किया और इस में कोई संदेह नहीं कि रहमत व मुहब्बत का पहलू सख़्ती और खुरदुरेपन पर छाया हुआ था, यहां तक कि कुछ वर्षों में बागडोर इस्लाम और मुसलमानों के हाथ आ गयी। अगले पन्नों में इन्ही बातों का विवरण पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

नये समाज का गठन

हम बता चुके हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने में बनू अन-नज्जार के यहां जुमा 12 रबीउल अव्वल सन् 01 हि० मुताबिक़ 27 सितम्बर 622 ई० को हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के मकान के समाने सवारी से उतरे और उसी वक़्त फ़रमाया था कि अगर अल्लाह ने चाहा तो मंज़िल यहीं होगी। फिर आप हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के घर चले गए थे।

मस्जिदे नबवी का निर्माण

इस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला क़दम यह था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे नबवी को बनवाना शुरू किया। और इस के लिए वही जगह चुनी जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी बैठी थी। उस ज़मीन के मालिक दो यतीम बच्चे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से यह ज़मीन क़ीमत देकर ख़रीदी और ख़ुद भी मस्जिद बनाने में शरीक हो गए। आप ईंट और पत्थर ढोते थे और साथ ही फ़रमाते जाते थे।

اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ إِلَّا عَيْشُ الْآخِرَة فَاغْفِرْ لِلْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَة

"ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस अंसार और मुहाजिरों को बख़्श दे।"

यह भी फ़रमाते------

هذا الحمال لا حمال خيبر   هذا أبر ربنا و أطهر

"यह बोझ ख़ैबर का बोझ नहीं है, यह हमारे पालनहार की क़सम ज़्यादा नेक और पाक है।"

आप के इस तरीक़े से सहाबा किराम के जोश-उत्साह और गतिविधियों में बड़ी बढ़ोतरी हो जाती थी, चुनांचे सहाबा किराम रज़ि० कहते थे-----

لَئِنْ قَعَدْنَا وَالنَّبِيُّ يَعْمَلُ   لَذَاكَ مِنَّا الْعَمَلُ الْمُضَلَّلُ

"अगर हम बैठे रहें और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काम करें, तो हमारा यह काम गुमराही का काम होगा।"

इस ज़मीन में मुश्रिकों की कुछ क़ब्रें थीं, कुछ वीराना भी था। खजूर और ग़रक़द के कुछ पेड़ भी थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों की क़ब्रें उखड़वा दीं और वीराना बराबर करा दिया और खजूरें और पेड़ों को काट कर क़िब्ले की ओर लगा दिया---- उस वक़्त क़िब्ला बैतुल मक़्दिस था------दरवाज़े के बाज़ू के दोनों पाए पत्थर के बनाए गए, दीवारें कच्ची ईंट और गारे से बनायी गयीं, छत पर खजूर की शाखाएं और पत्ते डलवा दिए गए और खजूर के तनों के खम्बे बना दिए गए। ज़मीन पर बालू और छोटी छोटी कंकड़ियां (छर्रियां) बिछा दी गयीं। तीन दरवाज़े लगाए गए। क़िब्ले की दीवार से पिछली दीवार तक एक सौ हाथ लम्बाई थी, चौड़ाई भी उतनी या उस से कुछ कम थी। नींव लगभग तीन हाथ गहरी थी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद के बाज़ू में कुछ मकान भी बनवाए। जिन की दीवारें कच्ची ईंट की थीं और छतें खजूर के तनों की कड़ियां देकर खजूर की शाखा और पत्तों से बनाई गई थी।

यही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के हुजरे (कमरे) थे, इन हुजरों के बन जाने के बाद आप हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के मकान से यहीं चले आए।[1]

मस्जिद सिर्फ़ नमाज़ अदा करने के लिए ही न थी, बल्कि यह एक यूनिवर्सिटी थी, जिसमें मुसलमान इस्लामी शिक्षाओं और हिदायतों का पाठ लिया करते थे और एक महफ़िल थी जिस में मुद्दतों अज्ञानता पूर्ण खींच-तान, घृणा और आपसी लड़ाइयों से दोचार रहने वाले क़बीले के लोग अब मेल-मुहब्बत से मिल-जुल कर रह रहे थे, साथ ही यह एक केन्द्र था जहां से इस छोटे से राज्य की सारी व्यवस्था चलायी जाती थी और विभिन्न प्रकार की मुहिमें भेजी जाती थीं। इस के अलावा इस की हैसियत एक पार्लियामेंट की भी थी जिस में मज्लिसे शूरा (मंत्रणा परिषद) और प्रबन्ध समिति की मीटिंगें भी हुआ करती थीं।

इन सब के साथ-साथ यह मस्जिद ही इन ग़रीब मुहाजिरों की एक अच्छी-भली तायदाद की एक निवास-स्थली थी, जिन का वहां पर न कोई मकान था, न माल और न बाल-बच्चे।

फिर हिजरत के शुरू में ही अज़ान भी शुरू हुई। यह एक लाहूती नग़मा (शाश्वत गीत) था जो हर दिन पांच बार क्षितिज (उफ़क़) में गूंजता था और जिस से पूरी दुनिया कांप उठती थी। इस सिलसिले में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अब्दु रब्बिही रज़ि० के सपने की घटना मशहूर है।(तफ़्सील जामे तिर्मिज़ी, सुनने अबी दाउद, मुस्नद अहमद और सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा में देखी जा सकती है।)

मुसलमानों में भाई-चारा

जिस तरह प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे नबवी का निर्माण कर के आपस में मिल बैठने और मेल-मुहब्बत के एक

---

1) बुख़ारी 1/71, 550, 550, 560 तथा ज़ादुल-मआद 2/56

केन्द्र को अस्तित्व दिया, उसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मानव-इतिहास का एक और बहुत चमकता हुआ कारनामा अंजाम दिया, जिसे मुहाजिरों और अंसार के बीच "मुवाख़ात" और भाई-चारे के अमल का नाम दिया जाता है। इब्ने क़य्यिम लिखते हैं------

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० के मकान में मुहाजिरों और अंसार के दर्मियान भाई-चारा कराया। कुल नव्वे आदमी थे, आधे मुहाजिर और आधे अंसार। भाई-चारे की बुनियाद यह थी कि एक दूसरे के दुख-दर्द के साथी थे और मौत के बाद क़रीब के रिश्तेदार के बजाए यही एक दूसरे के वारिस होंगे। वारिस होने का यह हुक्म बद्र की लड़ाई तक क़ायम रहा, फिर यह आयत उतरी कि-------

وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ

"वंश के ताल्लुक़ वाले रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं।" (यानी विरासत में) (33:6)

तो अंसार व मुहाजिरों में आपसी विरासत का हुक्म ख़त्म कर दिया गया, लेकिन भाई-चारे का वचन बाक़ी रहा। कहा जाता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और भाइ-चारा कराया था जो खुद आपस में मुहाजिरों के बीच था, लेकिन पहली बात ही साबित है। यूं भी मुहाजिर अपने आपसी इस्लामी भाई-चारा, वतन का भाई-चारा और रिश्तेदारी के भाई-चारे की बुनियाद पर आपस में अब आगे किसी भाई-चारे के मुहताज न थे, जब कि मुहाजिरों और अंसार का मामला इस से अलग था।[2]

इस भाई-चारे का उद्देश्य---जैसा कि मुहम्मद ग़ज़ाली ने लिखा है-----यह था कि अज्ञानता पूर्ण पक्षपात समाप्त हो जाए, ग़ैरत और

---

2) ज़ादुल-मआद 2/56

स्वाभिमान जो कुछ हो, वह इस्लाम के लिए हो, नस्ल, रंग और वतन के भेद-भाव मिट जाएं, बुलन्दी और पस्ती की कसौटी मानवता और संयम के अलावा कुछ और न हो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस भाई-चारे को केवल खोखले शब्दों का जामा नहीं पहनाया था, बल्कि उसे एक ऐसा लागू होने वाला वचन क़रार दिया था जो ख़ून और माल से जुड़ा हुआ था। यह ख़ाली-ख़ूली सलामी और धन्यवाद न था कि मुख पर रवानी के साथ जारी रहे, पर नतीजा कुछ न हो, बल्कि इस भाई-चारे के साथ त्याग-भाव, एक दूसरे के दुख-दर्द में शरीक होना और आपस के प्रेम-भाव से भी जुड़े हुए थे और इसीलिए उसने इस नए समाज को बड़े अनोखे और चमकते कारनामों से भर दिया था।[3]

चुनांचे सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि मुहाजिर जब मदीना तशरीफ़ लाए तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और साद बिन रबीअ़ के बीच भाई-चारा कराया, इस के बाद हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० से कहा, "अंसार में मैं सब से ज़्यादा मालदार हूं। आप मेरा माल दो हिस्सों में बांट कर आधा ले लें। और मेरी दो बीवियां हैं। आप देख लें जो ज़्यादा पसंद हो, मुझे बता दें। मैं उसे तलाक़ दे दूं और इद्दत बीतने के बाद आप उससे शादी कर लें।" हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, अल्लाह आपके परिवार और माल में बरकत दे। आप लोगों का बाज़ार कहां है? लोगों ने उन्हें बनू कैनुक़ाअ़ का बाज़ार बता दिया। वह वापस आए तो उन के पास कुछ ज़्यादा ही पनीर और घी था। इसके बाद वह हर दिन जाते रहे, फिर एक दिन आए तो उन पर पीले रंग का असर था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया, यह क्या है? उन्होंने कहा, मैंने शादी की है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

3) फ़िक्हुस-सीरा 140-141

फ़रमाया, औरत को महर कितना दिया है? बोले, एक नवात (गुठली) के वज़न के बराबर (यानी कोई सवा तोला) सोना।[4]

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से एक रिवायत आई है कि अंसार ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अनुरोध किया, आप हमारे बीच और हमारे भाइयों के बीच हमारे खजूर के बाग़ बांट दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं। अंसार ने कहा, तब आप लोग यानी मुहाजिर लोग हमारा काम कर दिया करें और हम फल में आप लोगों को शरीक रखेंगे। उन्होंने कहा, ठीक है, हमने बात सुनी और मानी।[5]

इस से अंदाज़ा किया जा सकता है कि अंसार ने किस तरह बढ़-चढ़ कर अपने मुहाजिर भाइयों का मान-सम्मान किया था और कितनी मुहब्बत और ख़ुलूस, ईसार और कुर्बानी से काम लिया था और मुहाजिर उन की दया व मेहरबानी को कितना महत्व देते थे। चुनांचे उन्होंने इस का कोई ग़लत फ़ायदा नहीं उठाया, बल्कि उन से सिर्फ़ उतना ही हासिल किया जिससे वे अपनी टूटी हुई अर्थ-व्यवस्था की कमर सीधी कर सकते थे।

और सच तो यह है कि यह भाई-चारा एक अनोखी हिक्मत, हिक्मत भरी राजनीति और मुसलमानों में पाए जाने वाले बहुत सारे मसूअलों का एक बेहतरीन हल था।

इस्लामी सहयोग का वचन

वर्णन किए गए भाई-चारे की तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और वचन लिया, जिसके ज़रिए सारा अज्ञानता-पूर्ण संघर्ष और क़बीलों की आपसी संघर्ष की बुनियाद ढा दी

---

4) बुख़ारी बाब इख़ाउन-नबी (सल्ल०) बैनल-मुहाजिरीन वल-अनसार 1/553

5) बुख़ारी बाब इज़ा क़ाल: इकफ़िनी मुनतुन-नख़लि 1/312

और अज्ञानता-युग के रस्म व रिवाज के लिए कोई गुंजाइश न छोड़ी। नीचे उस वचन को उस की धाराओं सहित संक्षेप में दिया जा रहा है।

यह लेख है मुहम्मद नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर से कुरैशी, यस्रिबी और उनके अधीन होकर उन के साथ मिल जाने और जिहाद करने वाले मोमिनों (ईमान वालों) और मुसलमानों के बीच कि——

(1) ये सब अपनों को छोड़ कर इंसानों से अलग एक उम्मत हैं,

(2) कुरैश मुहाजिर अपनी पिछली हालत के मुताबिक़ आपसी लेन-देन की अदाएगी करेंगे। और ईमान वालों के बीच जाने पहचाने तरीक़े और इंसाफ़ के साथ अपने क़ैदी का फ़िदया देंगे और अंसार के तमाम क़बीले अपनी पिछली हालत के मुताबिक़ आपस में दियत (क़त्ल के बदले दी जाने वाली रक़म) की अदाएगी करेंगे और उन का हर गिरोह भले तरीक़े पर और ईमान वालों के दर्मियान इंसाफ़ के साथ अपने क़ैदी का फ़िदया अदा करेगा।

(3) और ईमान वाले अपने बीच किसी मजबूर को फ़िदया या दियत के मामले में भले तरीक़े के मुताबिक़ देने और मेहरबानी करने से महरूम न रखेंगे।

(4) और सारे सच्चे ईमान वाले उस आदमी के ख़िलाफ़ होंगे जो उन पर ज़्यादती करेगा, या ईमान वालों के दर्मियान ज़ुल्म, गुनाह, ज़्यादती और फ़साद की राह की खोज करने वाला होगा।

(5) इन सब के हाथ उस आदमी के ख़िलाफ़ होंगे चाहे वह उन में किसी का लड़का ही क्यों न हो।

(6) कोई मोमिन किसी मोमिन को काफ़िर के बदले क़त्ल नहीं करेगा

(7) ना ही किसी मोमिन के ख़िलाफ़ किसी काफ़िर की मदद करेगा।

(8) और अल्लाह का ज़िम्मा (वचन) एक होगा, एक मामूली आदमी का दिया हुआ ज़िम्मा भी सारे मुसलमानों पर लागू होगा।

(9) जो यहूदी हमारी पैरवी करने वाले हो जाएं, उन की मदद की जाएगी और वे दूसरे मुसलमानों जैसे होंगे, न उन पर ज़ुल्म किया जाएगा और न उन के ख़िलाफ़ मदद की जाएगी।

(10) मुसलमानों की संधि (सुलह-समझौता) एक होगी, कोई मुसलमान किसी मुसलमान को छोड़ कर अल्लाह के रास्ते की लड़ाई के सिलसिले में समझौता नहीं करेगा, बल्कि सब के सब बराबरी और न्याय की बुनियाद पर कोई वायदा (समझौता) करेंगे।

(11) मुसलमान उस ख़ून में एक दूसरे के बराबर होंगे, जिसे कोई अल्लाह के रास्ते में बहाएगा।

(12) कोई मुश्रिक क़ुरैश की किसी जान या माल को पनाह नहीं दे सकता और न किसी मोमिन के आगे उस की हिफ़ाज़त के लिए रुकावट बन सकता है।

(13) जो आदमी किसी मोमिन को क़त्ल करेगा और सुबूत मौजूद होगा, उस से क़िसास लिया जाएगा अ़लावा इस शक्ल के कि मक़्तूल (जिसे क़त्ल किया गया हो) का वली राज़ी हो जाए।

(14) यह कि सारे मोमिन उस के ख़िलाफ़ होंगे। उन के लिए इस के सिवा कुछ हलाल न होगा कि उस के ख़िलाफ़ उठ खड़े हों।

(15) किसी मोमिन के लिए हलाल न होगा कि किसी हंगामा करने वाले (या बिदअ़ती) की मदद करे और उसे पनाह दे और जो उसकी मदद करेगा या पनाह देगा, उस पर क़ियामत के दिन अल्लाह की लानत और उसका ग़ज़ब होगा और उसका फ़र्ज़ व नफ़िल कुछ भी क़ुबूल न किया जाएगा।

(16) तुम्हारे बीच जो भी मतभेद पैदा होगा उसे अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ पलटाया जाएगा।[6]

समाज पर इन चीज़ों का असर

इस ज़ोरदार हिक्मत और दूरदर्शिता की नीति के ज़रिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक नये समाज की बुनियादें रखीं। लेकिन समाज का ऊपरी चेहरा, वास्तव में उन अर्थपूर्ण उत्कर्षों की छाया थी, जिस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगति और साथ उठने-बैठने की वजह से ये बुज़ुर्ग हस्तियां समाने आ चुकी थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, इनकी शिक्षा-दीक्षा, मन की शुद्धता और आचरण की मावनता और श्रेष्ठता की ओर लुभाने में लगातार कोशिशें करते रहते थे और इन्हें मुहब्बत व भाई-चारा, श्रेष्ठता व बड़कपन और इबादत व इताअ़त के तौर तरीक़े बराबर सिखाते और बताते रहते थे।

एक सहाबी रज़ि० ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया कि कौन सा इस्लाम बेहतर है? (यानी इस्लाम में कौन सा अ़मल बेहतर है?) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "तुम खाना खिलाओ और पहचान वाले और बिना पहचान वाले सभी को सलाम करो।[7]"

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० का बयान है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, तो मैं आप की सेवा में आया। जब मैंने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा देखा तो अच्छी तरह समझ गया कि यह किसी झूठे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली बात जो इर्शाद फ़रमाई, वह यह थी, "ऐ लोगो! सलाम फैलाओ, खाना

---

6) इब्ने हिशाम 1/502-503

7) बुख़ारी 1/906

खिलाओ, रिश्तों का ख़्याल रखो और रात में जब लोग सो रहे हों, नमाज़ पढ़ो, जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे।[8]"

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे। "वह आदमी जन्नत में दाख़िल न होगा, जिस का पड़ोसी, उस की शरारतों और उस की फैलाई तबाहियों से हिफ़ाज़त में न रहे।[9]"

और फ़रमाते थे, "मुसलमान वह है, जिस की ज़ुबान और हाथ से मुसलमान हिफ़ाज़त में रहे।[10]"

और फ़रमाते थे, "तुम में से कोई आदमी ईमान वाला नहीं हो सकता, यहां तक कि अपने भाई के लिए वही चीज़ पसंद करे जो ख़ुद अपने लिए पसंद करता है।[11]"

और फ़रमाते थे, "सारे मोमिन (ईमान वाले) एक आदमी की तरह हैं कि अगर उस की आंख में तक्लीफ़ हो तो सारे जिस्म को तक्लीफ़ महसूस होती है और अगर सर में तक्लीफ़ हो तो सारे जिस्म को तक्लीफ़ महसूस होती है।[12]"

और फ़रमाते, "मोमिन, मोमिन के लिए इमारत की तरह है जिस का एक भाग दूसरे भाग को ताक़त पहुंचाता है।[13]"

और फ़रमाते, "आपस में द्वेष-भाव न रखो, आपस में जलन न करो, एक दूसरे से पीठ न फेरो और अल्लाह के बन्दे और भाइ-भाई बन कर रहो। किसी मुसलमान के लिए हलाल नहीं कि अपने भाई को तीन दिन से ऊपर छोड़े रहे।"[14]

8) तिरमिज़ी, इब्ने माजा, दारिमी, मिश्कात 1/168
9) मुस्लिम, मिश्कात 2/422
10/11) बुख़ारी 1/6
12) मुस्लिम, मिश्कात 2/422
13) मुत्तफ़क़ अलैहि, मिश्कात 2/422, बुख़ारी 2/890
14) बुख़ारी 2/896

और फ़रमाते, "मुसलमान, मुसलमान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करे और न उसे दुश्मन के सुपुर्द करे, और जो आदमी अपने भाई की ज़रूरत (पूरी करने) में कोशिश करेगा, अल्लाह उस की ज़रूरतें पूरी करेगा और जो आदमी किसी मुसलमान से कोई ग़म और दुख दूर करेगा, अल्लाह उस आदमी से क़ियामत के दिन के दुखों में से कोई दुख दूर कर देगा और जो आदमी किसी मुसलमान के ऐबों को ढांकेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उस के ऐबों पर परदा डालेगा।[15]"

और फ़रमाते, "तुम लोग ज़मीन वालों पर मेहरबानी करो, तुम पर आसमान वाला मेहरबानी करेगा।[16]"

और फ़रमाते, "वह आदमी मोमिन (ईमान वाला) नहीं जो ख़ुद पेट भर कर खा ले और उसके बग़ल में रहने वाला पड़ोसी भूखा रहे।[17]"

और फ़रमाते, "मुसलमान से गाली-गलौच करना फ़िस्क़ (अल्लाह की नाफ़रमानी) है और उस से मार काट करना कुफ़्र है।[18]"

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रास्ते से कष्ट देने वाली चीज़ हटाने को सदक़ा क़रार देते थे और उसे ईमान की शाखाओं में से एक शाखा गिना करते थे।[19]

साथ ही आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सदक़े और ख़ैरात पर उभारा करते थे और इस की ऐसी-ऐसी बड़ाइयां बयान फ़रमाते थे कि उस की ओर दिल अपने आप खिंचते चले जाएं, चुनांचे आप फ़रमाते कि सदक़ा गुनाहों को ऐसे ही बुझा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है।[20]

---

15) मुत्तफ़क़ अ़लैहि, मिश्कात 2/422

16) सुनन अबू दाऊद 2/335, तिरमिज़ी 2/14

17) शअ़बुल-ईमान लिल-बैहक़ी, मिश्कात 2/424

18) बुख़ारी 2/893

19) इस विषय (मज़मून) की हदीस सहीहैन (बुख़ारी तथा मुस्लिम) में है, मिश्कात 1/12,167

20) अहमद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, मिश्कात 1/14

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते कि "जो मुसलमान किसी नंगे मुसलमान को कपड़ा पहना दे, अल्लाह उसे जन्नत का हरा कपड़ा पहनाएगा और जो मुसलमान किसी भूखे मुसलमान को खाना खिला दे, अल्लाह उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिला दे, अल्लाह उसे जन्नत की मुहर लगी हुई पाक शराब पिलाएगा।[21]"

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते! "आग से बचो, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही सदक़ा करके, और अगर वह भी न पाओ तो पाक बोल ही के ज़रिए।[22]"

और इसी के साथ-साथ दूसरी ओर आप मांगने से परहेज़ की भी बहुत ज़्यादा ताकीद फ़रमाते, सब्र और अल्लाह पर भरोसा रखने की फ़ज़ीलत सुनाते और सवाल करने को मांगने वाले के चेहरे के लिए नोच, खरौंच और घाव क़रार देते।[23] अलबत्ता इस से उस आदमी को अलग कर दिया जो बहुत ज़्यादा मजबूर हो कर सवाल करे।

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी यह बयान फ़रमाते कि किन इबादतों की क्या फ़ज़ीलतें हैं और अल्लाह के नज़दीक उन का क्या बदला और सवाब है? फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आसमान से जो वह्य आती आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस से मुसलमानों को बड़े मज़बूती के साथ जोड़े रखते। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह वह्य मुसलमानों को पढ़ कर सुनाते और मुसलमान आप को पढ़ कर सुनाते, ताकि इस अ़मल से उनके भीतर सूझ-बूझ के अ़लावा दावत के हक़ और पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारियों की चेतना भी जागे।

---

21) अबू दाऊद, तिरमिज़ी, मिश्कात 1/169

22) बुख़ारी 1/190, 2/890

23) अबूदाऊद, तिरमिज़ी, निसाई, इब्ने माजा, दारिमी, मिश्कात 1/163

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के चरित्र श्रेष्ठ किए, उन की अल्लाह की दी हुई क्षमताओं को ऊपर उठाया और उन्हें सर्वोच्च मूल्यों और आचरण का मालिक बनाया, यहां तक कि वे मानव-इतिहास में नबियों के बाद श्रेष्ठता की सब से ऊंची चोटी पर पहुंच गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस आदमी को तरीक़ा अपनाना हो वह बीते हुए लोगों का तरीक़ा अपनाए, क्योंकि ज़िंदा के बारे में फ़िले का डर है। वे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी थे। इस उम्मत में सब से श्रेष्ठ, सब से नेक दिल, सब से गहरे ज्ञान के मालिक और सब से ज़्यादा बे-तकल्लुफ़। अल्लाह ने इन्हें अपने नबी का साथ देने और अपने दीन के क़ायम करने के लिए चुना, इसलिए इन का बड़कपन पहचानो और उन के पद-चिन्हों का पालन करो और जितना संभव हो, उन के चरित्र-आचरण से चिमटे रहो, क्योंकि वे लोग हिदायत के सीधे रास्ते पर थे।[24]

फिर हमारे पैग़म्बर एक बड़े रहनुमा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद भी ऐसे आन्तरिक गुणों और दिखने वाली ख़ूबियों के मालिक और चरित्र व आचरण के श्रेष्ठ पदों पर आसीन थे कि मन अपने आप आपकी तरफ़ खिंचे जाते थे और जानें क़ुर्बान हुआ चाहती थीं, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख से ज्यों ही कोई बात निकलती, सहाबा किराम उसे पूरा करने के लिए दौड़ पड़ते और हिदायत व रहनुमाई की बात आप इर्शाद फ़रमा देते, उसे मन में बिठा लेने के लिए मानो एक दूसरे से आगे निकलने की बाज़ी लग जाती।

इस तरह की कोशिशों के कारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना के अंदर एक ऐसा समाज गठित करने में सफल हो गए जो इतिहास का सब से बड़ा कमाल वाला और बड़कपन से भरपूर समाज

24) रज़ीन, मिश्कात 1/32

था और उस समाज की समस्याओं का एक ऐसा पसंदीदा हल निकाला कि मानवता ने एक लम्बे समय तक ज़माने की चक्की में पिस कर और अथाह अंधेरों में हाथ पावं मार कर थक जाने के बाद पहली बार चैन का सांस लिया।

इस नये समाज के तत्त्व ऐसी उच्च और श्रेष्ठ शिक्षाओं के ज़रिए पूरे हुए जिस ने पूरी वीरता के साथ ज़माने के हर झटके का मुक़ाबला कर के उस का रुख़ फेर दिया और इतिहास की धारा बदल दी।

यहूदियों के साथ समझौता

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद जब मुसलमानों के बीच अक़ीदे, राजनीति और व्यवस्था के गठजोड़ द्वारा एक नए इस्लामी समाज की बुनियादें मज़बूत कर लीं तो ग़ैर-मुस्लिमों के साथ अपने संबंधों को मज़बूत बनाने की ओर तवज्जोह फ़रमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाहते थे कि पूरी मानवता सुख-शान्ति की सआदतों और बरकतों का फ़ायदा उठाए और इस के साथ ही मदीना और उस के आस-पास का इलाक़ा एक संधीय इकाई में व्यवस्थित हो जाए। चुनांचे आप ने उदारता और विशाल हृदयता के ऐसे क़ानून बनाए, जिनका इस तास्सुब और अतिप्रिभता से भरी हुई दुनिया में कोई विचार ही न था।

जैसा कि हम बता चुके हैं मदीना के सब से क़रीबी पड़ोसी यहूदी थे। ये लोग अगरचे परदे के पीछे से मुसलमानों से दुश्मनी रखते थे, लेकिन उन्होंने अब तक किसी मोर्चाबन्दी और झगड़े को ज़ाहिर नहीं किया था, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके साथ एक समझौता किया जिसमें उन्हें दीन-धर्म और जान माल की पूरी आज़ादी दी गयी थी और देश निकाला, जायदाद की ज़ब्ती या झगड़े की राजनीति का कोई रुख़ नहीं अपनाया गया था।

यह समझौता उसी समझौते के तहत हुआ था जो मुसलमानों के बीच आपस में तय पाया था और जिस का ज़िक्र क़रीब ही गुज़र चुका है। आगे इस समझौते की महत्वपूर्ण धाराएं प्रस्तुत की जा रही हैं।

समझौते की धाराएं

1. बनू औफ़ के यहूदी मुसलमानों के साथ मिल कर एक ही उम्मत होंगे। यहूदी अपने दीन पर अमल करेंगे और मुसलमान अपने दीन पर। ख़ुद उन का भी यही हक़ होगा और उनके गुलामों (दासों) और मुतअल्लिक़ लोगों का भी और बनू औफ़ के अलावा दूसरे यहूदियों के भी यही हक़ होंगे।

2. यहूदी अपने ख़र्चे के ज़िम्मेदार होंगे और मुसलमान अपने ख़र्चों के।

3. और जो ताक़त इस समझौते के किसी फ़रीक़ से लड़ेगी, सब उस के ख़िलाफ़ आपस में मदद करेंगे।

4. और इस समझौते में शरीक लोगों के आपसी ताल्लुक़ एक दूसरे की भलाई, हित और फ़ायदा पहुंचाने की बुनियाद पर होंगे, गुनाह पर नहीं।

5. कोई आदमी अपने हलीफ़ की वजह से अपराधी न ठहरेगा,

6. मज़लूम की मदद की जाएगी।

7. जब तक लड़ाई जारी रहेगी, यहूदी भी मुसलमानों के साथ ख़र्च सहन करेंगे।

8. इस समझौते में शरीक सारे लोगों पर मदीना में हंगामा बरपा करना और ख़ून-ख़राबा करना हराम होगा।

9. इस समझौते के फ़रीक़ों में कोई नयी बात या झगड़ा पैदा हो जाए जिस में बिगाड़ का डर हो तो उस का फ़ैसला अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाएंगे।

10. कुरैश और उसके मददगारों को पनाह नहीं दी जाएगी।

11. जो कोई यसरिब (मदीना) पर धावा बोल दे, उस से लड़ने के लिए सब आपस में एक दूसरे की मदद करेंगे और हर फ़रीक़ अपने-अपने पास-पड़ोस की रक्षा करेगा।

12. यह समझौता किसी ज़ालिम या अपराधी के लिए आड़ नहीं बनेगा।[25]

इस समझौते के तय हो जाने से मदीना और उस के चारों तरफ़ एक संधीय राज्य बन गया, जिस की राजधानी मदीना थी और जिस के मुख्य व्यक्ति अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे और जिस में जारी कलिमा और ग़ालिब शासन मुसलमानों का था और इस तरह मदीना सच-मुच इस्लाम की राजधानी बन गया।

सुख-शन्ति की सीमाओं को और आगे बढ़ाने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आगे दूसरे क़बीलों से भी हालात के मुताबिक़ इसी तरह के समझौते किए, जिनमें से कुछ का उल्लेख आगे आएगा।

25) इब्ने हिशाम 1/503-504

सशस्त्र संघर्ष

हिजरत के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुरैश की चालें और अब्दुल्लाह बिन उबई के पास संदेशों का आना-जाना

पिछले पन्नों में बताया जा चुका है कि मक्का के कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों पर कैसे कैसे ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े थे और जब मुसलमानों ने हिजरत शुरू की, तो उन के ख़िलाफ़ कैसी-कैसी कार्रवाईयां की थीं, जिन की बुनियाद पर वे इस के हक़दार हो चुके थे कि उन के माल ज़ब्त कर लिए जाएं, और उन पर हल्ला बोल दिया जाए, पर अब भी उन की मूर्खता का सिलसिला बंद न हुआ और अपनी ज़ुल्म भरी कार्यवाहियों से बाज़ न आए, बल्कि यह देख कर उन का ग़ुस्सा और भड़क उठा कि मुसलमान उन की पकड़ से छूट निकले हैं और उन्हें मदीने में ठहरने की एक शान्तिमय जगह मिल गयी है चुनांचे उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबई को——जो अभी तक खुल्लम-खुल्ला मुश्रिक था—— इस की इस हैसियत की बुनियाद पर एक धमकी भरा पत्र लिखा कि वह अंसार का सरदार है, क्योंकि अंसार उस की सरदारी से सहमत हो चुके थे और अगर इसी बीच अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ न लाए होते तो उस को अपना बादशाह भी बना लिए होता——। मुश्रिकों ने अपने उस पत्र में अब्दुल्लाह बिन उबई और उस के मुश्रिक साथियों को सम्बोधित करते हुए दो टोक शब्दों में लिखा——

"आप लोगों ने हमारे साहब को पनाह दे रखी है, इसलिए हम अल्लाह की क़सम खा कर कहते हैं कि या तो आप लोग उस से लड़ाई कीजिए या उसे निकाल दीजिए या फिर हम अपने पूरे जत्थे के साथ आप लोगों पर धावा बोल कर आप के सारे जवानों को (जो लड़ सकें) क़त्ल कर देंगे और आप की औरतों की आबरू पैरों तले रौंद डालेंगे।"

इस पत्र के पहुंचते ही अब्दुल्लाह बिन उबई मक्का के अपने इन मुश्रिक भाइयों के हुक्म को पूरा करने के लिए उठ पड़ा, इसलिए कि वह पहले ही से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ रंज और कीना लिए बैठा था, क्योंकि उस के मन में यह बात बैठी हुई थी कि आप ने ही उस से बादशाहत छीनी है, चुनांचे जब यह पत्र अब्दुल्लाह बिन उबई और उस के बुत परस्त साथियों को प्राप्त हुआ, तो वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लड़ाई के लिए जमा हो गए। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की ख़बर हुई, तो आप उन के पास तश्रीफ़ ले गए और फ़रमाया, "कुरैश की धमकी तुम लोगों पर बहुत गहरा असर कर गई है, तुम ख़ुद अपने आप को जितना नुक़्सान पहुंचाना चाहते हो, कुरैश इस से ज़्यादा तुम को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते थे, तुम अपने भाइयों और बेटों से ख़ुद ही लड़ना चाहते हो?" नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बात सुन कर लोग बिखर गए।[2]

उस समय तो अब्दुल्लाह बिन उबई लड़ाई के इरादे से बाज़ आ गया, क्योंकि उस के साथी ढीले पड़ गए थे या बात उन की समझ में आ गयी थी, लेकिन ऐसा लगता है कि कुरैश के साथ उस के संबंध परदे के पीछे से बने रहें, क्योंकि मुसलमान और मुश्रिकों के बीच दुष्टता और बिगाड़ का कोई मौक़ा वे हाथ से जाने न देना चाहता था, फिर उस ने अपने साथ यहूदियों को भी मिला रखा था, ताकि इस मामले में उन से

1) अबू दाऊद बाब ख़बरुन नज़ीर
2) अबू दाऊद बाब ख़बरुन-नज़ीर

भी मदद ले सके, लेकिन यह तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिक्मत थी, जो रह-रह कर दुष्टता और दंगे भड़कने वाली आग को बुझा दिया करती थी।[3]

मुसलमानों पर मस्जिदे हराम का दरवाज़ा बंद किए जाने का एलान

इस के बाद हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० उमरा के लिए मक्का गए और उमैया बिन ख़ल्फ़ के मेहमान हुए। उन्होंने उमैया से कहा, "मेरे लिए कोई ख़लवत (एकांत) का वक़्त देखो, तनिक मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ (परिक्रमा) कर लूं।" उमैया दोपहर के क़रीब उन्हें लेकर निकला तो अबू जहल से मुलाक़ात हो गई। उस ने (उमैया को ख़िताब कर के) कहा, अबू सफ़वान! तुम्हारे साथ यह कौन है? उमैया ने कहा, यह साद हैं। अबू जहल ने साद को संबोधित कर के कहा, "अच्छा, मैं देख रहा हूं कि तुम बड़े सुकून और इत्मीनान से परिक्रमा कर रहे हो, हालांकि तुम लोगों ने बे-दीनों को पनाह दे रखी है और यह आशा भी करते हो कि उन की सहायता भी करोगे। सुनो! अल्लाह की क़सम, अगर तुम अबू सफ़वान के साथ न होते, तो अपने घर सलामत पलट कर न जा सकते थे।" इस पर हज़रत साद रज़ि० ने ऊंची आवाज़ में कहा, "सुन! अल्लाह की क़सम, अगर तू ने मुझ को इस से रोका तो मैं तुझे ऐसी चीज़ से रोक दूंगा जो तुझ पर इस से भी ज़्यादा भारी होगी।" यानी मदीना वालों के पास से गुज़रने वाला तेरा (व्यापारिक) रास्ता।[4]

मुहाजिरों को क़ुरैश की धमकी

फिर क़ुरैश ने मुसलमानों को कहला भेजा, "तुम गर्व न करना कि मक्का से साफ़ बच कर निकल आए। हम यस्रिब ही पहुंच कर तुम्हारा सत्यानास कर देते हैं।[5]"

---

3) इस के लिए देखिए बुख़ारी 2. 655-656, 916, 924

4) बुख़ारी किताबुल-मग़ाज़ी 2/563

5) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/116

और यह सिर्फ़ धमकी ही न थी, बल्कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतने ताकीदी तरीक़े पर क़ुरैश की चालों और बुरे इरादों का ज्ञान हो गया था कि आप या तो जाग कर रात बिताते थे, या सहाबा किराम के पहरे में सोते थे। चुनांचे सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि मदीना आने के बाद एक रात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जाग रहे थे कि फ़रमाया, "काश आज रात मेरे सहाबा रज़ि० में से कोई नेक आदमी मेरे यहां पहरा देता।" अभी हम इसी हालत में थे कि हमें हथियार की झंकार सुनाई पड़ी। आप ने फ़रमाया, "कौन है?" जवाब आया, "साद बिन अबी वक़्क़ास!" फ़रमाया, "कैसे आना हुआ?" बोले, "मेरे दिल में आप के मुताल्लिक़ ख़तरे का डर हुआ तो मैं आप के यहां पहरा देने आ गया।" इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें दुआ दी, फिर सो गये।[6]

यह भी याद रहे कि पहरे कि यह व्यवस्था कुछ रातों के लिए ख़ास न थी, बल्कि बराबर और हमेशा के लिए था, चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० ही से रिवायत है कि रात को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए पहरा दिया जाता था, यहां तक कि यह आयत उतरी—

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ

"(अल्लाह आप को लोगों से बचाए रखेगा।)"

तब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुब्बे से सर निकाला और फ़रमाया, "लोगो वापस जाओ अल्लाह ने मुझे सुरक्षित कर दिया है।"[7]

6) मुस्लिम बाब फ़ज़्लु सअद बिन अबी वक़्क़ास 2/280 बुख़ारी बाबुल हिरासति फ़िल-ग़ज़्वि फ़ी सबीलिल्लाह 1/404

7) तिरमिज़ी अब्वाबुत-तफ़सीर 2/130

फिर यह ख़तरा सिर्फ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ात तक सीमित न था, बल्कि सारे ही मुसलमानों के लिए था। चुनांचे हज़रत उबई बिन काब रज़ि० से रिवायत है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथी मदीना तशरीफ़ लाए और अंसार ने उन्हें अपने यहां पनाह दी तो सारा अ़रब उन के ख़िलाफ़ एक हो गया। चुनांचे ये लोग न हथियार के बिना रात गुज़ारते थे और न हथियार के बिना सुबह करते थे।

लड़ाई की इजाज़त

इन ख़तरों से भरे हालात में जो मदीना में मुसलमानों के अस्तित्व के लिए चुनौती बने हुए थे और जिन से साफ़ था कि कुरैश किसी तरह होश के नाख़ुन लेने और अपनी सरकशी से बाज़ आने के लिए तैयार नहीं। अल्लाह ने मुसलमानों को लड़ाई की इजाज़त दे दी, लेकिन उसे फ़र्ज़ (अनिवार्य) नहीं किया। इस मौक़े पर अल्लाह का जो इर्शाद आया, वह यह था कि—

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ

"जिन लोगों से लड़ाई लड़ी जा रही है, उन्हें भी लड़ाई की इजाज़त दी गई, क्योंकि वे मज़लूम हैं और यक़ीनी तौर पर अल्लाह उनकी मदद पर कुदरत रखता है।"

फिर इस आयत के ताल्लुक़ से कुछ और आयतें उतरीं जिन में बताया गया कि यह इजाज़त सिर्फ़ लड़ाई बराए लड़ाई के तौर पर नहीं है बल्कि इस का उद्देश्य बातिल (असत्य) का अंत और अल्लाह की निशानियों को क़ायम कर देना है। चुनांचे आगे चल कर इर्शाद हुआ—

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ
وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ

"जिन्हें हम अगर धरती की सत्ता सौंप दें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात अदा करेंगे, भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे।" (22:41)

सही बात जिसे मान लेने के अ़लावा कोई रास्ता नहीं है, यही है कि यह इजाज़त हिजरत के बाद मदीना में उतरी थी, मक्का में नहीं उतरी थी, अलबत्ता उतरने का समय क़तई तौर पर निश्चित करना कठिन है।

युद्ध की इजाज़त तो आ गई, लेकिन जिन हालात में उतरी, वह चूंकि सिर्फ़ क़ुरैश की ताक़त और सरकशी का नतीजा थे, इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यह था कि मुसलमान अपने क़ब्ज़े की सीमा क़ुरैश के उस व्यापारिक राजमार्ग तक फैला दें जो मक्के से शाम (सीरिया) तक आता जाता है, इसीलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्ज़े के इस फैलाव के लिए दो योजनाएं तैयार कीं।

1. **पहली योजनाः** जो क़बीले इस राजमार्ग के आस-पास या इस राजमार्ग से मदीना तक के बीच वाले इलाक़े में आबाद थे, उन के साथ दोस्ती, सहयोग और लड़ाई न करने का समझौता।

2. **दूसरी योजनाः** इस राजमार्ग पर गश्ती दस्ते भेजना।

पहली योजना के तहत यह घटना उल्लेखनीय है कि पिछले पन्नों में यहूदियों के साथ किए गए जिस समझौते का विवरण बीत चुका है, आप ने फ़ौजी मुहिम शुरू करने से पहले इसी तरह की दोस्ती, सहयोग और युद्ध ना करने का एक समझौता क़बीला जुहैना के साथ भी किया। उन की आबादी मदीने से तीन मरहले पर——45 या 50 मील की दूरी पर----- स्थित थी। इस के अ़लावा रास्ते के पहरे के दौरान भी आप ने कई समझौते किए, जिन का उल्लेख आगे किया जाएगा।

दूसरी योजना झगड़ों और लड़ाइयों से ताल्लुक़ रखती है जिस का विवरण अपनी-अपनी जगह पर आता रहेगा।

सराया और ग़ज़वात[8] (झगड़े और लड़ाइयां)

लड़ाई की इजाज़त आने के बाद इन दोनों योजनाओं को लागू करने के लिए मुसलमानों की फ़ौजी मुहिमों का सिलसिला अमली तौर पर शुरू हो गया। परेड की शक्ल में सैनिक टुकड़ियां गश्त करने लगीं। इसका अभिप्राय (उद्देश्य) वही था, जिस की ओर इशारा किया जा चुका है कि मदीना के आस-पास के रास्तों पर आम-तौर से और मक्के के रास्ते पर ख़ास तौर से नज़र रखी जाए और उसके हालात का पता लगाया जाता रहे और साथ ही इन रास्तों पर पाए जाने वाले क़बीलों से समझौते किए जाएं और यस्रिब के मुश्रिकों, यहूदियों और आस-पास के बद्दुओं को यह एहसास दिलाया जाए कि मुसलमान ताक़तवर हैं और अब उन्हें अपनी पुरानी कमज़ोरी से निजात मिल चुकी है, साथ ही क़ुरैश को उनके अनुचित गुस्से और दबदबे के ख़तरनाक नतीजे से डराया जाए ताकि जिस मूर्खता के दलदल में वे अब तक धंसते चले जा रहे हैं। उस से निकल कर होश के नाख़ुन लें और अपने आर्थिक साधनों को ख़तरे में देखकर समझौते की ओर झुक जाएं और मुसलमानों के घरों में घुस कर उन की समाप्ति के जो इरादे रखते हैं और अल्लाह की राह में जो रुकावटें खड़ी कर रहे हैं और मक्के के कमज़ोर मुसलमानों पर जो ज़ुल्म व सितम ढा रहे हैं इन सब से रुक जाएं और मुसलमान अरब प्रायद्वीप में अल्लाह का संदेश पहुंचाने के लिए आज़ाद हो जाएं।

इन सराया और ग़ज़वात (झगड़ों और लड़ाइयों) के हालात नीचे संक्षेप में लिखे जा रहे हैं—

---

8) सीरत लिखने वालों की परिभाषा में 'ग़ज़वा' उस जंग को कहते हैं जिसमें नबी (सल्ल०) ने ख़ुद भाग लिया हो चाहे जंग हुई हो या न हुई हो और 'सरिय्या' वह जंग है जिसमें नबी (सल्ल०) ने ख़ुद भाग न लिया हो सरिय्या की जमा (बहुवचन) सराया और ग़ज़वा की ग़ज़वात है।

1. **सरिय्या-ए-सीफुल बहर**[9] (रमज़ान सन् 01 हि० मुताबिक़ मार्च 623 ई०)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० को इस सरिय्या (झड़प) का अमीर बनाया और तीस मुहाजिरों को उनके तहत भेज कर शाम (सीरिया) से आने वाले एक क़ुरैशी क़ाफ़िले का पता लगाने के लिए रवाना फ़रमाया। इस क़ाफ़िले में तीन सौ आदमी थे, जिन में अबू जहल भी था। मुसलमान ईस[10] के पास समुद्र तट पर पहुंचे तो क़ाफ़िले का सामना हो गया और दोनों फ़रीक़ लड़ाई के लिए पंक्तिबद्ध हो गए, लेकिन क़बीला जुहैना के सरदार मज्दी बिन अम्र ने जो दोनों फ़रीक़ों का मित्र था दौड़-धूप कर के लड़ाई न होने दी।

हज़रत हमज़ा रज़ि० का यह झंडा पहला झंडा था जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथों से बांधा था, उस का रंग सफ़ेद था और उसके उठाने वाले हज़रत अबू मरसद कनाज़ बिन हुसैन ग़नवी रज़ि० थे।

2. **सरिय्या-ए-राबिग़** (शव्वाल सन् 01 हि० अप्रैल 623 ई०)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब को मुहाजिरों के साठ सवारों की टुकड़ी देकर रवाना फ़रमाया। राबिग़ की घाटी में अबू सुफ़ियान से सामना हुआ, उस के साथ दो सौ आदमी थे। दोनों फ़रीक़ों ने एक दूसरे पर तीर चलाए, लेकिन इससे आगे कोई लड़ाई न हुई।

इस सरिय्ये में मक्की फ़ौज के दो आदमी मुसलमानों से आ मिले। एक हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र बहरानी और दूसरे उत्बा बिन ग़ज़वान अल-माज़नी रज़ि०। ये दोनों मुसलमान थे और कुफ़्फ़ार के साथ निकले ही इस मक़सद से थे कि इस तरह मुसलमानों से जा मिलेंगे।

9) सीफुल-बहर अर्थात समुन्दर का किनारा

10) ईस-----यन्बूअ तथा मरवा बीच एक जगह का नाम है ।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० का झंडा सफ़ेद था और झंडा उठाने वाले हज़रत मिस्तह बिन असासा बिन मुत्तलिब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ थे।

3. सरिय्या-ए-ख़र्रार[11] (ज़ीक़ादा सन् 01 हि०, मई 623 ई०)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस लड़ाई का अमीर (सेनापति) हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को मुक़र्रर फ़रमाया और उन्हें बीस आदमियों की कमान देकर क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का पता लगाने के लिए रवाना फ़रमाया और यह ताकीद फ़रमा दी कि ख़र्रार से आगे न बढ़ें। ये लोग पैदल रवाना हुए। रात को सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे। पांचवें दिन सुबह ख़र्रार पहुंचे तो मालूम हुआ कि क़ाफ़िला एक दिन पहले जा चुका है

इस सरिय्ये का झंडा सफ़ेद था और झंडा-बरदार हज़रत मिक़्दाद बिन अ़म्र रज़ि० थे।

4. ग़ज़्वा-ए-अबवा या वद्दान[12]: (सफ़र सन् 02 हि०, अगस्त 623 ई०)

इस मुहिम में सत्तर मुहाजिरों के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद तशरीफ़ ले गए थे और मदीने में हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० को अपनी जगह पर मुक़र्रर फ़रमा दिया था। मुहिम का मक़सद क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का रास्ता रोकना था। आप वद्दान तक पहुंचे लेकिन कोई मामला पेश न आया।

इसी ग़ज़्वे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू-ज़ुमरा के उस वक़्त के सरदार अ़म्र बिन मख़्शी अज़-ज़ुमरी से दोस्ती का समझौता किया। समझौते का लेख इस तरह था---

---

11) ख़र्रार—जहफ़ा के निकट एक जगह का नाम है

12) वद्दान मक्का और मदीने के बीच एक जगह का नाम है। यह राबिग़ से मदीना जाते हुए 29 मील की दूरी पर है। अबवा—वद्दान के क़रीब एक जगह का नाम है।

"यह बनू जुमरा के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लेख है। ये लोग अपनी जान और माल के बारे में सुरक्षित रहेंगे और जो इन पर धावा बोलेगा, उसके ख़िलाफ़ इन की मदद की जाएगी, अलावा इसके कि ये खुद अल्लाह के दीन के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ें। (यह समझौता उस वक़्त तक के लिए है) जब तक समुद्र उन को तर करे (यानी हमेशा के लिए है) और जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी मदद के लिए उन्हें आवाज़ देंगे तो उन्हें आना होगा।[13]"

यह पहली सैनिक मुहिम थी जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद भी तश्रीफ़ ले गए थे और पंद्रह दिन मदीने से बाहर रह कर वापस आए। इस मुहिम के झंडे का रंग सफ़ेद था और हज़रत हमज़ा रज़ि० झंडा-बरदार थे।

5. ग़ज़वा-ए-बुवात (रबीउल अव्वल सन् 02 हि०, सितम्बर 623 ई०)

इस मुहिम में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो सौ सहाबा को साथ लेकर रवाना हुए, मक़सूद कुरैश का एक क़ाफ़िला था, जिस में उमैया बिन ख़ल्फ़ सहित कुरैश के एक सौ आदमी और ढाई हज़ार ऊंट थे। आप रज़वा के पास बसे "बुवात"[14] तक तश्रीफ़ ले गए, लेकिन कोई मामला पेश न आया।

इस ग़ज़वे में हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि० को मदीना का अमीर बनाया गया था। झंडा सफ़ेद था और झंडा-बरदार हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० थे।

---

13) अल-मवाहिबुल-लदुन्निया 1/75 तथा शरह ज़रक़ानी

14) बुवात और रुज़वा—जुहैना पहाड़ी क्षेत्र में दो पहाड़ हैं जो हक़ीक़त में एक ही पहाड़ की दो शाखाऐं हैं यह मक्का से शाम जाने वाली सड़क पर है और मदीना से 48 मील की दूरी पर है।

6. ग़ज़्वा-ए-सफ़वान (रबीउल अव्वल सन् 02 हि०, सितम्बर 623 ई०)

इस ग़ज़्वे की वजह यह थी कि कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी ने मुश्रिकों की एक छोटी सी सेना के साथ मदीने की चरागाह पर छापा मारा और कुछ मवेशी लूट लिए, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सत्तर सहाबा के साथ उस का पीछा किया और बद्र के पास स्थित सफ़वान घाटी तक तशरीफ़ ले गए लेकिन कुर्ज़ और उस के साथियों को न पा सके और बिना किसी टकराव के वापस आ गए। इस ग़ज़्वे को कुछ लोग बद्र का पहला ग़ज़्वा भी कहते हैं।

इस ग़ज़्वे के दौरान मदीने की ज़िम्मेदारी ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को सौंपी गयी थी। झंडा सफ़ेद था और झंडा-बरदार हज़रत अली रज़ि० थे।

7. ग़ज़्वा-ए-ज़ुल उशैरा (जुमादिल ऊला व जुमादिल उख़रा सन् 02 हि०, नवम्बर व दिसम्बर 623 ई०)

इस मुहिम में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ डेढ़ या दो सौ मुहाजिर थे, लेकिन आप ने किसी को रवाना होने पर मजबूर नहीं किया था। सवारी के लिए सिर्फ़ तीस ऊंट थे, इसलिए लोग बारी-बारी सवार होते थे। उद्देश्य कुरैश का एक क़ाफ़िला था जो शाम देश जा रहा था और मालूम हुआ था कि यह मक्का से चल चुका है, इस क़ाफ़िले में कुरैश का ख़ासा माल था। आप उस की तलब में ज़ुल उशैरा[15] तक पहुंचे, लेकिन आप के पहुंचने से कई दिन पहले ही क़ाफ़िला जा चुका था। यह वही क़ाफ़िला है जिसे सीरिया से वापसी पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गिरफ़्तार करना चाहा, तो यह क़ाफ़िला तो बच निकला, लेकिन बद्र की लड़ाई पेश आ गई।

15) उशैरा या उसैरा यन्बूअ के करीब एक जगह का नाम है ।

इस मुहिम पर इब्ने इसहाक़ के कहने के मुताबिक़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमदिल ऊला के आख़िर में रवाना हुए——और जुमदिल उख़रा में वापस हुए, शायद यही वजह है कि इस ग़ज़्वे का महीने के तय करने में जीवनी लेखकों का मतभेद है।

इस ग़ज़्वे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू मुद्लिज और उन के साथी बनू ज़ुमरा से लड़ाई न लड़ने का समझौता किया।

सफ़र के दिनों में मदीना की ज़िम्मेदारी का काम हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी रज़ि० ने अंजाम दिया। इस बार भी झंडा सफ़ेद था और झंडा-बरदारी हज़रत हमज़ा रज़ि० फ़रमा रहे थे।

8. सरिय्या-ए-नख़्ला (रजब सन् 02 हि०, जनवरी 624 ई०)

इस मुहिम पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० के नेतृत्व में बारह मुहाजिरों की एक टुकड़ी भेजी। हर दो आदमियों के लिए एक ऊंट था, जिस पर बारी-बारी दोनों सवार होते थे। टुकड़ी के अमीर को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लेख लिख कर दिया था और हिदायत फ़रमाई थी कि दो दिन सफ़र कर लेने के बाद ही इसे देखेंगे। चुनांचे दो दिन के बाद हज़रत अब्दुल्लाह ने लेख देखा, तो उस में यह लिखा था, "जब तुम मेरा यह लेख देखो, तो आगे बढ़ते जाओ, यहां तक कि मक्का और ताइफ़ के बीच नख़्ला में उतरो और वहां कुरैश के एक क़ाफ़िले की घात में लग जाओ और हमारे लिए उस की ख़बरों का पता लगाओ।" उन्होंने कहा सुना और माना और अपने साथियों को इस की ख़बर देते हुए फ़रमाया कि मैं किसी पर ज़बरदस्ती नहीं करता, जिसे शहीद होना प्रिय हो, वह उठ खड़ा हो और जिसे मौत नापसंद हो, वह वापस चला जाए। बाक़ी रहा मैं! तो मैं बहरहाल आगे जाऊंगा। इस पर सारे साथी

उठ खड़े हुए और वांछित मंज़िल के लिए चल पड़े, अलबत्ता रास्ते में सअद बिन अबी वक़्क़ास और उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ि० का ऊंट ग़ायब हो गया, जिस पर ये दोनों बुज़ुर्ग बारी-बारी सफ़र कर रहे थे, इसलिए ये दोनों पीछे रह गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० लम्बी दूरी तय कर के नख़्ला आए। वहां से क़ुरैश का एक क़ाफ़िला गुज़रा, जो किशमिश, चमड़ा और व्यापार का सामान लिए हुए था। क़ाफ़िले में अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरह के दो बेटे उस्मान और नौफ़ल और अम्र बिन हज़्र-मी और हकीम बिन कैसान, (मुग़ीरह के दास) थे। मुसलमानों ने आपस में मश्वरा किया कि आख़िर क्या करें। आज हराम महीने रजब का आख़िरी दिन है। अगर हम लड़ाई करते हैं तो इस हराम महीने का अनादर होता है और रात भर रुक जाते हैं तो ये लोग हरम की सीमाओं में दाख़िल हो जाएंगे, इस के बाद सब की यही राय हुई कि हमला कर देना चाहिए, चुनांचे एक आदमी ने अम्र बिन हज़्र-मी को तीर मारा और उसे ख़त्म कर दिया। बाक़ी लोगों ने उस्मान और हकीम को गिरफ़्तार कर लिया, अलबत्ता नौफ़ल भाग निकला। इस के बाद ये लोग दोनों क़ैदियों और क़ाफ़िले के सामान को लिए हुए मदीना पहुंचे। उन्होंने ग़नीमत के माल में से ख़ुमुस (ख़ुमुस) भी निकाल लिया था[16] और यह इस्लामी इतिहास का पहला ख़ुमुस, पहले मक़्तूल और पहले क़ैदी थे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की इस हरकत पर पूछताछ की और फ़रमाया कि मैंने तुम्हें हराम महीने में लड़ाई का हुक्म नहीं दिया था और क़ाफ़िले के सामान और क़ैदियों के सिलसिले में किसी भी तरह के इस्तेमाल से हाथ रोक लिया।

---

16) सीरत लिखने वालों का यही ब्यान है मगर इसमें उलझाव यह है कि खुमुस (पाँचवाँ भाग) निकालने का हुक्म जंगे बद्र के वक़्त हुआ था और इस हुक्म के उतरने की जो वजह तफ़्सीर की किताबों में दी गई है उनसे पता चलता है कि उस से पहले तक मुसलमान ख़ुमुस के बारे में नहीं जानते थे।

इधर इस दुर्घटना से मुश्रिकों को इस प्रचार का मौक़ा मिल गया कि मुसलमानों ने अल्लाह के हराम किए हुए महीने को हलाल कर लिया, चुनांचे बड़ी कानाफूसियां हुईं, यहां तक कि अल्लाह ने वह्य के ज़रिए इस प्रचार की क़लई खोली और बताया कि मुश्रिक जो कुछ कर रहे हैं, वह मुसलमानों की हरकत से कहीं ज़्यादा बड़ा अपराध है। इर्शाद हुआ—

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۝

"लोग तुम से हराम महीने में ख़ूरेज़ी के बारे में पूछते हैं। कह दो, इस में लड़ना बड़ा गुनाह है और अल्लाह की राह से रोकना और अल्लाह के साथ कुफ़्र करना, मस्जिदे हराम से रोकना और उस के निवासियों को वहां से निकालना, यह सब अल्लाह के नज़दीक और अधिक बड़े अपराध हैं और फ़िला क़त्ल से बढ़ कर है।" (2:217)

इस वह्य ने स्पष्ट कर दिया कि लड़ने वाले मुसलमानों के आचरण के बारे में मुश्रिकों ने जो शोर मचा रखा है उसकी कोई गुंजाइश नहीं, क्योंकि क़ुरैश इस्लाम के ख़िलाफ़ लड़ाई में और मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम करने में सारी हदें तोड़ चुके हैं, क्या जब हिजरत करने वाले मुसलमानों का माल छीना गया और पैग़म्बर को क़त्ल करने का फ़ैसला किया गया तो यह घटना हराम शहर (मक्का) से बाहर कहीं और की थी? फिर क्या वजह है कि अब इन मोहतरम चीज़ों का बड़कपन पलट आया और उन को नुक़्सान पहुंचाना शर्म और ग़ैरत की बात हो गयी। यक़ीनी तौर पर मुश्रिकों ने प्रचार का जो तूफ़ान मचा रखा है, वह खुली हुई बेहयाई और खुली बेशर्मी पर आधारित है।

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों क़ैदियों को आज़ाद कर दिया और क़त्ल किए गए आदमी के वारिसों को उस का दियत (ख़ून बहा) अदा किया।[17]

ये हैं बद्र की लड़ाई से पहले के सरिय्ये और ग़ज़वे। इन में से किसी में भी लूट-मार और क़त्ल व लूट-पाट की नौबत नहीं आयी, जब तक कि मुश्रिकों ने कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी के नेतृत्व में ऐसा नहीं किया, इसलिए इस की शुरूआत भी मुश्रिकों ही की ओर से हुई, जब कि इस से पहले भी वे तरह-तरह के ज़ुल्म व सितम ढाया करते थे।

इधर सरिय्या-ए-अब्दुल्लाह बिन जहश की घटनाओं के बाद मुश्रिकों का भय सच्चाई बन गया और इन के सामने एक हक़ीक़ी ख़तरा आ कर खड़ा हो गया। उन्हें जिस फंदे में फंसने का डर था, उस में अब वे सच में फंस चुके थे। उन्हें मालूम हो गया कि मदीने का नेतृत्व पूरी तरह जाग रहा है और उन की एक-एक व्यापारिक गतिविधि पर नज़र रखती है। मुसलमान चाहें तो तीन सौ मील का रास्ता तय कर के उन के क्षेत्र के अंदर उन्हें मार काट सकते हैं, क़ैद कर सकते हैं, माल लूट सकते हैं और इन सब के बाद सही-सालिम वापस भी जा सकते हैं। मुश्रिकों की समझ में आ गया कि उन का शामी व्यापार अब स्थायी रूप से ख़तरे में है, लेकिन इन सब के बावजूद वह अपनी मूर्खता से रुकने और जुहैना और बनू ज़ुमरा की तरह सुलह व सफ़ाई का रास्ता अपनाने के बजाए अपने क्रोध, भड़काऊपन और द्वेष (हसद) व शत्रुता की

---

17) इन सराया और ग़ज़वात का ब्यौरा इन किताबों से लिया गया है ज़ादुल-मआद 2/83-85, इबने हिशाम 1/591-605, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/115-116, 2/215-216, 468-470 इन किताबों में इन सराया और ग़ज़वात के क्रम (तरतीब) और इनमें शामिल होने वालों की गिनती में मतभेद है। हम ने अल्लामा इबने क़य्यिम और अल्लामा मन्सूरपुरी की तहक़ीक़ पर भरोसा किया है

भावनाओं में कुछ और आगे बढ़ गए और उन के बड़ों ने अपनी इस धमकी को व्यवहारिक रूप देने का फ़ैसला कर लिया कि मुसलमानों के घरों में घुस कर उन का सफ़ाया कर दिया जाएगा। चुनांचे यही ग़ुस्सा था जो उन्हें बद्र के मैदान तक ले आया।

बाक़ी रहे मुसलमान तो अल्लाह तआला ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश के सरिय्ये के बाद शअ़बान सन् 02 हि० में उन पर लड़ाई फ़र्ज़ क़रार दे दी और इस सिलसिले में कई स्पष्ट आयतें उतारीं।

इर्शाद हुआः-----

وَقَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَکُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ○ وَاقْتُلُوْهُمْ حَیْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِنْ حَیْثُ اَخْرَجُوْکُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تُقَاتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰی یُقَاتِلُوْکُمْ فِیْهِ فَاِنْ قَاتَلُوْکُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ کَذٰلِکَ جَزَآءُ الْکَافِرِیْنَ○ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ○ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰی لَا تَکُوْنَ فِتْنَةٌ وَّیَکُوْنَ الدِّیْنُ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَی الظّٰلِمِیْنَ○

"अल्लाह की राह में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और सीमा से आगे न बढ़ो। यक़ीनी बात है कि अल्लाह सीमा से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता और उन्हें जहां पाओ, क़त्ल करो, और जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है, वहां से तुम भी उन्हें निकाल दो और फ़ित्ना क़त्ल से ज़्यादा सख़्त है, और इन से मस्जिदे हराम के पास लड़ाई न करो, यहां तक कि वे तुम से मस्जिदे हराम में लड़ाई करें। पस अगर वे (वहां) लड़ें तो तुम (वहां भी) उन्हें क़त्ल करो। काफ़िरों का बदला ऐसा ही है, पस अगर वे बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, दया करने वाला है। और उन से लड़ाई करो, यहां तक कि फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वे रुक जाएं तो कोई ज़्यादती नहीं है, मगर ज़ालिमों ही पर।" (2:190-193)

इस के जल्द ही बाद दूसरी क़िस्म की आयतें उतरीं, जिन में लड़ाई का तरीक़ा बताया गया है और उस पर उभारा गया है और कुछ हुक्म भी दिए गए हैं चुनांचे इर्शाद है----

فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ○ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ○ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ○ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ○

"पस जब तुम लोग कुफ़्र करने वालों से टकराओ तो गरदनें मारो, यहां तक कि जब इन्हें अच्छी तरह कुचल लो तो जकड़ कर बांधो। इस के बाद या तो एहसान करो या फ़िदया लो, यहां तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे। यह है (तुम्हारा काम) और अगर अल्लाह चाहता तो खुद ही उन से बदला ले लेता, लेकिन (वह चाहता है कि) तुम में से किस को किस के ज़रिए आज़माए और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाएं, अल्लाह उन के कामों को हरगिज़ बर्बाद न करेगा। अल्लाह उन की रहनुमाई करेगा और उन का हाल ठीक करेगा और उन को जन्नत में दाख़िल करेगा जिस की जानकारी उन को दे चुका है। ऐ ईमान वालो! अगर तुम ने अल्लाह की मदद की तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमाए रखेगा।" (47:4-7)

इस के बाद अल्लाह ने उन लोगों की निन्दा की जिन के दिल लड़ाई का हुक्म सुन कर कांपने और धड़कने लगे थे। फ़रमाया----

فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ........

"तो जब कोई मज़बूत सूरः उतारी जाती है और उस में क़िताल (लड़ाई) का ज़िक्र होता है तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में बीमारी है, वे तुम्हारी ओर इस तरह देखते हैं, जैसे वह आदमी देखता है, जिस पर मौत की ग़शी छा रही हो——" (47:20)

सच तो यह है कि लड़ाई के फ़र्ज़ होने, उस पर उभारने और उस की तैयारी का हुक्म हालात के तक़ाज़े के ठीक मुताबिक़ था, यहां तक कि अगर हालात पर गहरी नज़र रखने वाला कोई कमांडर होता तो वह भी अपनी सेना को हर तरह के हंगामी हालात का फ़ौरी मुक़ाबला करने के लिए तैयार रहने का हुक्म देता, इसलिए वह बहुत बड़ा पालनहार क्यों न ऐसा हुक्म देता जो हर खुली और ढकी बात को जानता है। सच तो यह है कि हालात सत्य और असत्य के बीच एक ख़ूनी और फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई का तक़ाज़ा कर रहे थे, ख़ास तौर से सरिय्या-ए-अ़दुल्लाह बिन जहश रज़ि० के बाद जो कि मुश्रिकों की ग़ैरत और हमीयत पर एक संगीन चोट थी और जिसने उन्हें सीख़ का कबाब बना रखा था।

लड़ाई के हुक्मों की आयतों के आगे-पीछे देखने से अंदाज़ा होता था कि ख़ूनी लड़ाई का वक़्त क़रीब ही है। और इस में आख़िरी जीत और मदद मुसलमानों ही को नसीब होगी। आप इस बात पर नज़र डालिए कि अल्लाह तआ़ला ने किस तरह मुसलमानों को हुक्म दिया है कि जहां से मुश्रिकों ने तुम्हें निकाला है, अब तुम भी वहां से उन्हें निकाल दो। फिर किस तरह उस ने क़ैदियों के बांधने और विरोधियों को कुचल कर लड़ाई के सिलसिले को अंत तक पहुंचाने की हिदायत दी है जो एक ग़ालिब और विजयी सेना से ताल्लुक़ रखती है। यह इशारा था कि आख़िरी ग़लबा मुसलमानों ही को मिलेगा, लेकिन यह बात परदों और इशारों में बताई गयी ताकि जो आदमी अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए जितनी गर्मजोशी रखता है, उस का व्यवहारिक प्रदर्शन भी कर सके।

फिर इन्ही दिनों------शअबान 02 हि० (फ़रवरी 624 ई०) में----अल्लाह ने हुक्म दिया कि क़िब्ला बैतुल मक़्दिस के बजाए ख़ा-न-ए काबा को बनाया जाए और ननाज़ में उसी तरफ़ रुख़ फेरा जाए, इस का फ़ायदा यह हुआ कि कमज़ोर और मुनाफ़िक़ यहूदी जो मुसलमानों की पंक्ति में केवल परेशानी और बेचैनी फैलाने के लिए दाख़िल हो गए थे, खुल कर सामने आ गए और मुसलमानों से अलग होकर अपनी असल हालत पर वापस चले गए और इस तरह मुसलमानों की पंक्तियां बहुत से द्रोहियों और धोखे-बाज़ों से पाक हो गईं।

क़िब्ला-परिवर्तन में इस ओर भी एक सूक्ष्म (हल्का सा) संकेत था कि अब एक नया दौर शुरू हो रहा है जो इस क़िब्ले पर मुसलमानों के क़ब्ज़े से पहले ख़त्म न होगा, क्योंकि यह बड़ी अनोखी बात होगी कि किसी क़ौम का क़िब्ला उस के दुश्मनों के क़ब्ज़े में हो, और अगर है तो फिर ज़रूरी है कि किसी न किसी दिन उसे आज़ाद कराया जाए।

इन आदेशों और संकेतों के बाद मुसलमानों की प्रसन्नता में अधिक वृद्धि हो गयी और उनकी अल्लाह के रास्ते में जिहाद की भावनाएं और शत्रु से निर्णायक टक्कर लेने की आरज़ू कुछ और बढ़ गयी।

बद्र का महान ग़ज़्वा
इस्लाम की पहली निर्णायक जंग

ग़ज़्वे की वजह

ग़ज़्वा-ए-उशैरा के ज़िक्र में हम बता चुके हैं कि कुरैश का एक क़ाफ़िला मक्का से शाम (सीरिया) जाते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पकड़ से बच निकला था। यही क़ाफ़िला जब शाम से पलट कर मक्का वापस आने वाला था, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० और सईद बिन ज़ैद रज़ि० को उस के हालात का पता लगाने के लिए उत्तर की ओर भेजा। ये दोनों सहाबी हौरा तक तशरीफ़ ले गए और वहीं ठहरे रहे। जब अबू सुफ़ियान क़ाफ़िला लेकर वहां से गुज़रा, तो ये बड़ी तेज़ रफ़्तारी से मदीना पलटे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की सूचना दी।

इस क़ाफ़िले में मक्का वालों का बड़ा धन था यानी एक हज़ार ऊंट थे, जिन पर कम से कम पचास हज़ार दीनार (दो सौ साढ़े बासठ किलो सोने) की क़ीमत का साज़ व सामान लदा हुआ था, जब कि उस की हिफ़ाज़त के लिए सिर्फ़ चालीस आदमी थे।

मदीना वालों के लिए यह बड़ा सुनहरा मौक़ा था, जब कि मक्का वालों के लिए इस भारी माल से महरूमी बड़ी ज़बरदस्त सैनिक, राजनीतिक और आर्थिक मार की हैसियत रखती थी, इसलिए अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के अंदर एलान फ़रमाया कि यह क़ुरैश का क़ाफ़िला माल व दौलत लिए चला आ रहा है, इस के लिए निकल पड़ो, हो सकता है अल्लाह इसे ग़नीमत के तौर पर तुम्हारे हवाले कर दे।

लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी पर जाना ज़रूरी नहीं क़रार दिया, बल्कि इसे सिर्फ़ लोगों के चाव पर छोड़ दिया, क्योंकि इस एलान के वक़्त यह उम्मीद नहीं थी कि क़ाफ़िले के बजाए क़ुरैश की सेना के साथ बद्र के मैदान में एक बड़ी ज़ोरदार टक्कर हो जाएगी और यही वजह है कि बहुत से सहाबा किराम मदीना ही में रह गए। उन का ख़्याल था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह सफ़र आप की पिछली आम फ़ौजी मुहिमों से अलग न होगा और इसीलिए इस ग़ज़्वे में शरीक न होने वालों से कोई पूछताछ नहीं की गई।

इस्लामी सेना की संख्या और कमान का बटवारा

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलने के लिए तैयार हुए तो आप के साथ तीन सौ से कुछ ज़्यादा लोग थे। (यानी 313, या 314 या 317) जिन में से 82 या 83 या 86 मुहाजिर थे और बाक़ी अंसार। फिर अंसार में से 61 क़बीला औस से थे और 170 क़बीला ख़ज़रज से। इस टुकड़ी ने लड़ाई की न कोई ख़ास व्यवस्था की थी, न पूरी तैयारी। चुनांचे पूरी सेना में सिर्फ़ दो घोड़े थे। (एक हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० का और दूसरा हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद किन्दी रज़ि० का) और सत्तर ऊंट, जिन में से हर ऊंट पर दो या तीन आदमी बारी-बारी सवार होते थे। एक ऊंट अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत मर्सद बिन अबी मर्सद रज़ि० ग़नवी के हिस्से में आया था, जिन पर तीनों बारी-बारी सवार होते थे।

मदीना का प्रबन्ध और नमाज़ की इमामत पहले-पहल हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को सौंपी गयी, लेकिन जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम रौहा नामी जगह तक पहुंचे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ि० को मदीना का व्यवस्थापक बना कर वापस भेज दिया। सेना इस तरह गठित की गई कि एक टुकड़ी मुहाजिरों की बनायी गयी और एक अंसार की। मुहाजिरों का झंडा हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को दिया गया और अंसार का झंडा हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि० को और जनरल कमान का झंडा, जिस का रंग सफ़ेद था, हज़रत मुस्अब बिन उमैर अब्दरी रज़ि० को दिया गया। मैमना के अफ़सर, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० मुक़र्रर किए गए और मैसरा के अफ़सर हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि०---और जैसा कि हम बता चुके हैं, पूरी फ़ौज में सिर्फ़ यही दोनों बुज़ुर्ग घुड़सवार थे। साक़ा की कमान हज़रत क़ैस बिन अबी सअ्सआ रज़ि० के हवाले की गयी और चीफ़ कमांडर की हैसियत से जनरल कमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद संभाली।

बद्र की ओर इस्लामी सेना का कूच

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस अधूरी टुकड़ी को लेकर रवाना हुए तो मदीना के दहाने से निकल कर मक्का जाने वाले राजमार्ग पर चलते हुए बीरे रौहा तक तश्रीफ़ ले गए, फिर वहां से आगे बढ़े तो मक्का का रास्ता बाईं ओर छोड़ दिया और दाहिनी ओर कतरा कर चलते हुए नाज़िया पहुंचे (निश्चित मंज़िल बद्र थी) फिर नाज़िया के एक कोने से गुज़र कर रहक़ान घाटी पार की। यह नाज़िया और सफ़रा दर्रे के दर्मियान एक घाटी है। इस घाटी के बाद सफ़रा दर्रे से गुज़रे, फिर दर्रे से उतर कर सफ़रा घाटी के क़रीब जा पहुंचे और वहां से जुहैना क़बीला के दो आदमियों यानी बसीस बिन उमर और अदी बिन अबिज़्ज़ग़्बा को क़ाफ़िले के हालात का पता लगाने के लिए बद्र रवाना फ़रमाया।

मक्का में ख़तरे का एलान

दूसरी ओर क़ाफ़िले की स्थिति यह थी कि अबू सुफ़ियान जो इस का निगरां था, ज़रूरत से ज़्यादा सावधान था। उसे मालूम था कि मक्के का रास्ता ख़तरों से भरा हुआ है, इसलिए वह हालात का बराबर पता लगाता रहता था, और जिन क़ाफ़िलों से मुलाक़ात होती थी उनसे स्थिति मालूम करता रहता था, चुनांचे उसे जल्द ही मालूम हो गया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को, क़ाफ़िले पर हमले की दावत दे दी है, इसलिए उसने तुरन्त ज़मज़म बिन अम्र ग़िफ़ारी को मुआवज़ा देकर मक्का भेजा कि वहां जा कर क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के लिए क़ुरैश में आ़म एलान कर दे। ज़मज़म बड़ी तेज़ रफ़्तारी से मक्का आया और अ़रब रिवाज के मुताबिक़ अपने ऊंट की नाक चपड़ी, कजावा उलटा, कुर्ता फाड़ा और मक्का की घाटी में उसी ऊंट पर खड़े होकर आवाज़ लगाई, "ऐ क़ुरैश की जमाअ़त! क़ाफ़िला-----क़ाफ़िला------तुम्हारा माल जो अबू सुफ़ियान के साथ है, उस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उस के साथी धावा बोलने जा रहे हैं। मुझे यक़ीन नहीं कि तुम उसे पा सकोगे। मदद------मदद।"

लड़ाई के लिए मक्का वासियों की तैयारी

यह आवाज़ सुन कर लोग हर ओर से दौड़ पड़े। कहने लगे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उस के साथी समझते हैं कि यह क़ाफ़िला भी इब्ने हज़रमी के क़ाफ़िले जैसा है? जी नहीं, हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! इन्हें पता चल जाएगा कि हमारा मामला कुछ और है। चुनांचे सारे मक्का में दो ही तरह के लोग थे, या तो आदमी ख़ुद लड़ाई के लिए निकल रहा था या अपनी जगह किसी और को भेज रहा था और इस तरह, मानो सभी निकल पड़े। ख़ासतौर से मक्का के प्रतिष्ठित लोगों में से कोई भी पीछे न रहा, सिर्फ़ अबू लहब ने अपनी

जगह अपने एक क़र्ज़दार को भेजा। पास-पड़ोस के अरब क़बीलों को भी क़ुरैश ने भर्ती किया और ख़ुद क़ुरैशी क़बीलों में से बनू अदी के अलावा कोई भी पीछे न रहा, अलबत्ता बनू अदी के किसी भी आदमी ने इस लड़ाई में शिरकत न की।

मक्की सेना की तायदाद

शुरू में मक्की सेना की तायदाद तेरह सौ थी, जिन के पास एक सौ घोड़े और छः सौ ज़िरहें (कवच) थीं, ऊंट ज़्यादा थे, जिनकी ठीक तायदाद मालूम न हो सकी। सेना का सेनापति अबू जहल बिन हिशाम था। क़ुरैश के नौ प्रतिष्ठित व्यक्ति उसके खाने के ज़िम्मेदार थे। एक दिन नौ और एक दिन दस ऊंट ज़िब्ह किए जाते थे।

बनू बक्र के क़बीलों का मसअला

जब मक्की सेना चलने के लिए तैयार हो गयी तो क़ुरैश को याद आया कि बनू बक्र के क़बीलों से उन की दुश्मनी और लड़ाई चल रही है, इस लिए उन्हें ख़तरा महसूस हुआ कि कहीं ये क़बीले पीछे से हमला न कर दें और इस तरह वे दो दुश्मनों के बीच में न घिर जाएं। क़रीब था कि यह विचार क़ुरैश को उन के लड़ाई के इरादे से रोक दे लेकिन ठीक उसी वक़्त इब्लीस लईन बनू कनाना के सरदार सुराक़ा बिन मालिक बिन जोशम मुद्लिजी के रूप में प्रकट हुआ और बोला, "मैं भी तुम्हारा साथी हूं और इस बात की गारंटी देता हूं कि बनू कनाना तुम्हारे पीछे कोई ना पसंदीदा काम न करेंगे।"

मक्की सेना का कूच

इस गारंटी के बाद मक्का के लोग अपने घरों से निकल पड़े और जैसा कि अल्लाह का इर्शाद है, "इतराते हुए, लोगों को अपनी शान दिखाते हुए और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए" मदीना की ओर चल पड़े। जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, "अपनी धार और हथियार लेकर, अल्लाह से ख़ार खाते हुए, और

उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ार खाते हुए, बदले की भावना से चूर, गुस्से से चूर, इस पर किचकिचाए हुए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के सहाबा ने मक्का वालों के क़ाफ़िलों पर आंख उठाने की हिम्मत कैसे की?" बहरहाल ये लोग बड़ी तेज़ी से उत्तर की दिशा में बद्र की ओर चले जा रहे थे कि उस्फ़ान और कुदैद की घाटी से गुज़र कर जोहफ़ा पहुंचे तो अबू सुफ़ियान का एक नया संदेश मिला, जिस में कहा गया था कि आप लोग अपने क़ाफ़िले, अपने आदमियों और अपने मालों की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से निकले हैं और चूंकि अल्लाह ने इन सब को बचा लिया है, इस लिए अब वापस चले जाइए।

क़ाफ़िला बच निकला

अबू सुफ़ियान के बच निकलने का विवरण यह है कि वह शाम (सीरिया) से बड़े रास्ते पर चला तो आ रहा था, लेकिन बराबर चौकन्ना और जागरुक था। उस ने ख़बरों को जुटाने की अपनी कोशिशें भी दोगुनी कर रखी थीं। जब वह बद्र के क़रीब पहुंचा तो ख़ुद क़ाफ़िले से आगे जाकर मज्दी बिन अम्र से मुलाक़ात की और उस से मदीना की सेना के बारे में मालूम किया। मज्दी ने कहा, "मैंने कोई असाधारण आदमी तो नहीं देखा, अलबत्ता दो सवार देखे हैं जिन्होंने टीले के पास पहुंच कर अपने जानवर बिठाए, फिर अपने मशकीज़े में पानी भर कर चले गए।" अबू सुफ़ियान लपक कर वहां पहुंचा और उन के ऊंट की मेंगनियां उठा कर तोड़ीं, तो उसमें खजूर की गुठली बरामद हुई। अबू सुफ़ियान ने कहा, अल्लाह की क़सम! यह यस्रिब का चारा है। इसके बाद वह तेज़ी से क़ाफ़िले की तरफ़ पलटा और उसे पश्चिम की तरफ़ मोड़ कर उस की दिशा तट की ओर कर दी और बद्र से गुज़रने वाले बड़े रास्ते को बाईं ओर छोड़ दिया। इस तरह क़ाफ़िले को मदनी सेना के क़ब्ज़े में जाने से बचा लिया। और तुरन्त ही मक्की सेना को अपने

बच निकलने की ख़बर देते हुए उसे वापस जाने का संदेश दिया जो उसे जोहफ़ा में मिला।

मक्की सेना का वापसी का इरादा और आपसी फूट

यह सन्देश सुन कर मक्की सेना ने चाहा कि वापस चला जाए, लेकिन कुरैश का सब से बड़ा सरकश अबू जहल खड़ा हो गया और बड़े गर्व से बोला, "अल्लाह की क़सम! हम वापस न होंगे, यहां तक कि बद्र जा कर वहां तीन दिन ठहरेंगे और इस बीच ऊंट ज़िब्ह करेंगे, लोगों को खाना खिलाएंगे और शराब पिलाएंगे, लौंडियां हमारे लिए गाने गाएंगी और सारा अ़रब हमारा और हमारे सफ़र और मिलन का हाल सुनेगा और इस तरह हमेशा के लिए उन पर हमारी धाक बैठ जाएगी।"

लेकिन अबू जहल के होते हुए अख़्नस बिन शुरैक़ ने यही मश्वरा दिया कि वापस चले चलो, मगर लोगों ने उस की बात न मानी इसलिए वह बनू ज़ोहरा के लोगों को साथ लेकर वापस हो गया, क्योंकि वह बनू ज़ोहरा का मित्र और इस सेना में उन का सरदार था। बनू ज़ोहरा की कुल तायदाद कोई तीन सौ थी। उन का कोई भी आदमी बद्र की लड़ाई में हाज़िर न हुआ। बाद में बनू ज़ोहरा, अख़्नस बिन शुरैक़ की राय पर बहुत ज़्यादा खुश थे और उन के अंदर उस का मान-सम्मान हमेशा बाक़ी रहा।

बनू ज़ोहरा के अ़लावा बनू हाशिम ने भी चाहा कि वापस चले जाएं, लेकिन अबू जहल ने बड़ी सख़्ती की और कहा कि जब तक हम वापस न हों, यह गिरोह हम से अलग न होने पाए।

ग़रज़ फ़ौज ने अपना सफ़र जारी रखा। बनू ज़ोहरा की वापसी के बाद अब उस की तायदाद एक हज़ार रह गयी थी और उस का रुख़ बद्र की ओर था। बद्र के क़रीब पहुंच कर उस ने एक टीले के पीछे पड़ाव डाला। यह टीला बद्र की घाटी की सीमाओं पर दक्षिणी दहाने के पास स्थित है।

इस्लामी सेना के लिए हालात की नज़ाकत

इधर मदीने की ख़बरों के साधनों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को, जब कि अभी आप रास्ते ही में थे और ज़फ़रान घाटी से गुज़र रहे थे, क़ाफ़िले और फ़ौज दोनों के बारे में सूचनाएं जुटाईं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन ख़बरों का गहराई से जायज़ा लेने के बाद यक़ीन कर लिया कि अब एक ख़ूनी टकराव का वक़्त आ गया है और एक ऐसा क़दम उठाना ज़रूरी है जो वीरता और साहस पर आधारित हो, क्योंकि यह बात क़तई थी कि अगर मक्की सेना को उस क्षेत्र में यूं ही दनदनाता हुआ फिरने दिया जाता तो इस से क़ुरैश की सैनिक साख को बड़ी ताक़त पहुंच जाती और उन की राजनीतिक श्रेष्ठता की सीमा दूर-दूर तक फैल जाती, मुसलमानों की आवाज़ दब कर कमज़ोर हो जाती और इस के बाद इस्लामी दावत को एक प्राणहीन ढांचा समझ कर उस क्षेत्र का हर व्यक्ति जो अपने सीने में इस्लाम के ख़िलाफ़ द्वेष (कीना) बैर और दुश्मनी रखता था, दुष्टताई पर उतर आता।

फिर इन सब बातों के अलावा आख़िर इस की क्या गारंटी थी कि मक्की सेना मदीने की ओर आगे नहीं बढ़ेगी और इस लड़ाई को मदीना की चारदीवारी तक पहुंचा कर, मुसलमानों को उन के घरों में घुस कर तबाह करने की हिम्मत और कोशिश नहीं करेगा। जी हां! अगर मदनी सेना की ओर से तनिक भी कोताही होती तो यह सब कुछ संभव था और अगर ऐसा न भी होता तो मुसलमानों के रोब और शोहरत पर तो बहरहाल इसका बहुत बुरा असर पड़ता।

मज्लिसे शूरा का गठन

हालात की इस आचनक और ख़तरनाक तब्दीली को देखते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक उच्च स्तरीय सैनिक मंत्रालय परिषद (मज्लिसे शूरा) गठित की, जिसमें वर्तमान स्थिति

बतायी गयी और कमाडंरों और सामन्य सैनिकों से विचार-विमर्श किया। इस मौक़े पर एक गिरोह ख़ूनी टकराव का नाम सुन कर कांप उठा और उसका दिल कांपने और धड़कने लगा, इसी गिरोह के बारे में अल्लाह का इर्शाद है——

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ ، بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقاً مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكَارِهُوْنَ٥ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ٥

"जैसा कि तुझे तेरे पालनहार ने तेरे घर से हक़ के साथ निकाला और ईमान वालों का एक गिरोह नापसंद समझ रहा था। वे तुझ से सत्य के बारे में उस के स्पष्ट हो चुकने के बाद झगड़ रहे थे, मानो वे आंखों देखते मौत की ओर हांके जा रहे हैं।" (8:5-6)

लेकिन जहां तक सेना के ज़िम्मेदारों का ताल्लुक़ है तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० उठे और बड़ी अच्छी बात कही, फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० उठे और उन्हों ने भी बड़ी अच्छी बात कही, फिर हज़रत मिक़दाद बिन अम्र रज़ि० उठे और बोले, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह ने आप को जो राह दिखायी है, उस पर चलते रहिए हम आप के साथ हैं। अल्लाह की क़सम! हम आप से वह बात नहीं कहेंगे जो बनी इसराईल ने मूसा अलैहिस्सलाम से कही थी कि——

اِذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُوْنَ٥

"तुम और तुम्हारा पालनहार जाओ और लड़ो, हम यहीं बैठे हैं।" (5:24)

बल्कि हम यह कहेंगे कि आप और आप के पालनहार चलें और लड़ें और हम भी आप के साथ-साथ लड़ेंगे। उस ज़ात की क़सम! जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है अगर आप हम को बर्के ग़िमाद तक ले चलें तो हम रास्ते वालों से लड़ते-भिड़ते आप के साथ वहां भी चलेंगे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के हक़ में ख़ैर का कलिमा इर्शाद फ़रमाया और दुआ दी।

ये तीनों कमांडर मुहाजिरों में से थे, जिन की तायदाद, फ़ौज में कम थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश थी कि अंसार की राय मालूम करें क्योंकि उन्हीं का फ़ौज में बहुमत था। और लड़ाई का असल बोझ उन्हीं के कंधों पर पड़ने वाला था, जबकि अ़क़बा की बैअ़त के हिसाब से उन पर ज़रूरी न था कि मदीने से बाहर निकल कर लड़ाई करें, इसलिए आप ने ज़िक्र किए गए तीनों लोगों की बातें सुनने के बाद फिर फ़रमाया, "लोगो" मुझे मश्वरा दो।" कहना अंसार से था और यह बात अंसार के कमांडर और झंडा-बरदार हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि० ने भांप ली, चुनांचे उन्होंने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम ! ऐसा लगता है, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप हम से कह रहे हैं। आप ने फ़रमाया, हां!

उन्होंने कहा, "हम तो आप पर ईमान लाए हैं। आप की पुष्टि की है और यह गवाही दी है कि आप जो कुछ लेकर आए हैं, सब सत्य है और इस पर हम ने आप को अपने "सुनने और मानने" का वचन दिया है। इसलिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप का जो इरादा है उस के लिए क़दम बढ़ाइए। उस ज़ात की क़सम, जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ भेजा है, अगर आप हमें साथ लेकर इस समुद्र में कूदना चाहें तो हम इस में भी आप के साथ कूद पड़ेंगे। हमारा एक आदमी भी पीछे न रहेगा। हमें बिल्कुल ही किसी तरह की कोई झिझक नहीं कि कल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे साथ दुश्मन से टकरा जाएं, हम लड़ाई में जमने वाले और लड़ने में साहसी हैं और संभव है अल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमारा वह जौहर दिखा दे जिस से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आंखें ठंडी हो जाएं। पस आप हमें साथ लेकर चलें, अल्लाह बरकत दे।"

एक रिवायत में यूं है कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि—शायद आप को डर है कि अंसार अपना यह दायित्त्व समझते हैं कि वे आप की मदद सिर्फ़ अपने घर में करें, इसलिए मैं अंसार की ओर से बोल रहा हूं और उन की ओर से जवाब दे रहा हूं, अर्ज़ है कि आप जहां चाहें, तशरीफ़ ले चलें, जिस से चाहें ताल्लुक़ जोड़ें और जिस से चाहें ताल्लुक़ काट लें, हमारे माल में से जो चाहें ले लें और जो चाहें दे दें। और जो आप ले लेंगे, वह हमारे नज़दीक इस से ज़्यादा पसंदीदा होगा जिसे आप छोड़ देंगे और इस मामले में आप का जो भी फ़ैसला होगा, हमारा फ़ैसला, हर हाल में उस के अधीन होगा। अल्लाह की क़सम! आप अगर आगे बढ़ते हुए बर्के गिमाद तक जाएं तो हम भी आप के साथ-साथ चलेंगे और अगर आप हमें लेकर इस समुन्द्र में कूदना चाहें तो हम उस में भी कूद जाएंगे।

हज़रत साद रज़ि० की ये बातें सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ख़ुशी की लहर दौड़ गयी। इंतिहाई ख़ुशी में आप ने फ़रमाया, "चलो और ख़ुशी-ख़ुशी चलो। अल्लाह ने मुझ से दो गिरोहों में से एक का वायदा फ़रमाया है, अल्लाह की क़सम! इस वक़्त मैं मानो क़ौम के क़त्ल की जगहें देख रहा हूं।"

इस्लामी सेना का बाक़ी सफ़र

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़फ़रान से आगे बढ़े और कुछ पहाड़ी मोड़ से गुज़र कर, जिन्हें असाफ़र कहा जाता है, देत नामी एक आबादी में उतरे और हिनान नामी पहाड़ जैसी चट्टान को दाहिने हाथ छोड़ दिया और इस के बाद बद्र के क़रीब उतर गए।

जासूसी का क़दम

यहां पहुंच कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ग़ार के साथी हज़रत अबू बक्र रज़ि० को साथ लिया और ख़ुद

सूचनाओं को जुटाने के लिए निकल पड़े। अभी दूर ही से मक्की फ़ौज के कैम्प का जायज़ा ले रहे थे कि एक बूढ़ा अ़रब मिल गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से कुरैश और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों का हाल मालूम किया----- दोनों फ़ौजों के बारे में पूछने का मक़सद यह था कि आप के व्यक्तित्व पर परदा पड़ा रहे—— लेकिन बूढ़े ने कहा, "जब तक तुम लोग यह नहीं बताओगे कि तुम्हारा ताल्लुक़ किस क़ौम से है, मैं भी कुछ नहीं बताऊंगा।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "जब तुम हमें बता दोगे तो हम भी तुम्हें बता देंगे।" उस ने कहा, "अच्छा तो यह उस के बदले है?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां! उस ने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उन के साथी फ़्लां दिन निकले हैं। अगर मुझे बताने वाले ने सहीह बताया है तो आज वे लोग फ़्लां जगह होंगे और ठीक उस जगह की निशान देही की जहां उस वक़्त मदीने की फ़ौज थी------और मुझे यह भी मालूम हुआ है कि कुरैश फ़्लां दिन निकले हैं। अगर मुझे ख़बर देने वाले ने सहीह ख़बर दी है तो वे आज फ़्लां जगह होंगे--------और ठीक उस जगह का नाम लिया जहां उस वक़्त मक्के की सेना थी।

जब बूढ़ा अपनी बात कह चुका, तो बोला, अच्छा अब यह बताओ कि तुम दोनों किस से हो? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हम लोग पानी से हैं और यह कह कर वापस चल पड़े। बूढ़ा बकता रहा, क्या पानी से हैं? क्या इराक़ के पानी से हैं?

मक्का की फ़ौज के बारे में अहम जानकारी का हासिल होना

उसी दिन शाम को आप ने दुश्मन के हालात का पता लगाने के लिए नये सिरे से एक जासूसी टुकड़ी भेजी। इस कार्रवाई के लिए मुहाजिरों के तीन रहनुमा हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि०, ज़ुबैर

बिन अव्वाम रज़ि० और साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० सहाबा किराम की एक जमाअ़त के साथ रवाना हुए। ये लोग सीधे बद्र के चशमे पर पहुंचे। वहां दो दास मक्की सेना के लिए पानी भर रहे थे, उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया। उस वक़्त आप नमाज़ पढ़ रहे थे। सहाबा किराम ने इन दोनों से हालात मालूम किए। उन्होंने कहा, हम क़ुरैश के सक़्क़े (पानी पिलाने वाले) हैं, उन्होंने हमें पानी भरने के लिए भेजा है। क़ौम को यह जवाब पसंद न आया। उन्हें उम्मीद थी कि ये दोनों अबू सुफ़ियान के आदमी होंगे----क्योंकि उन के दिलों में अब भी बची-खुची आरज़ू रह गयी थी कि क़ाफ़िले पर ग़लबा हासिल हो------चुनांचे सहाबा किराम रज़ि० ने इन दोनों की ज़ोरदार पिटाई कर दी और उन्होंने मजबूर होकर कह दिया कि हां, हम अबू सुफ़ियान के आदमी हैं। इस के बाद मारने वालों ने हाथ रोक लिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो नाराज़ी से फ़रमाया, जब इन दोनों ने सहीह बात बताई तो आप लोगों ने पिटाई कर दी और जब झूठ कहा, तो छोड़ दिया। अल्लाह की क़सम! इन दोनों ने सहीह कहा था कि ये क़ुरैश के आदमी हैं।

इस के बाद आप ने इन दोनों दासों से फ़रमाया, अच्छा, अब मुझे क़ुरैश के बारे में बताओ। उन्होंने कहा, यह टीला जो घाटी के आख़िरी दहाने में दिखाई दे रहा है, क़ुरैश उसी के पीछे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया, लोग कितने हैं? उन्होंने कहा, बहुत हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, तायदाद कितनी है? उन्होंने कहा, हमें नहीं मालूम। आप ने फ़रमाया, हर दिन कितने ऊंट ज़िब्ह करते हैं? उन्होंने कहा, एक दिन नौ और एक दिन दस। आप ने फ़रमाया, तब तो लोगों की तायदाद नौ सौ और एक हज़ार के बीच है। फिर आप ने पूछा, इन के अदंर क़ुरैश के प्रतिष्ठित जनों में से कौन कौन

हैं? उन्होंने कहा, रबीआ के दोनों सुपुत्र उत्बा और शैबा और अबुल बुख़्तरी बिन हिशाम, हकीम बिन हिज़ाम, नौफ़ल बिन ख़ुवैलिद, हारिस बिन आमिर, तुऐमा बिन अदी, नज़्र बिन हारिस, ज़मआ बिन अस्वद, अबू जहल बिन हिशाम, उमैया बिन ख़ल्फ़ और कुछ और लोगों के नाम गिनवाए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, "मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारे पास ला कर डाल दिया है।"

रहमत की वर्षा

अल्लाह ने उसी रात एक वर्षा करा दी, जो मुश्रिकों पर मूसलाधार बरसी और उन के आगे बढ़ने में रुकावट बन गई, लेकिन मुसलमानों पर फुवार बन कर बरसी और उन्हें पाक कर दिया, शैतान की गन्दगी (बुज़दिली) दूर कर दी और ज़मीन को हमवार कर दिया। इस की वजह से रेत में सख़्ती हो गई और क़दम टिकने के लायक़ हो गये। ठहरना ख़ुशगवार हो गया और दिल मज़बूत हो गये।

महत्त्वपूर्ण सैनिक केन्द्रों की ओर इस्लामी सेना आगे बढ़ी

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सेना को हरकत दी, ताकि मुश्रिकों से पहले बद्र के स्रोत पर पहुंच जाएं और उस पर मुश्रिकों का क़ब्ज़ा न होने दें। चुनांचे इशा के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र के सब से क़रीब चश्मे पर पहुंच गए। इस मौक़े पर हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि० ने एक माहिर फ़ौजी की हैसियत से मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या इस जगह आप अल्लाह के हुक्म से आए हैं कि हमारे लिए उस से आगे पीछे हटने की गुंजाइश नहीं, या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे सिर्फ़ लड़ाई की पालिसी के तौर पर अपनाया है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह सिर्फ़ लड़ाई की पालिसी के तौर पर है उन्होंने कहा, "यह मुनासिब जगह नहीं है। आप आगे तशरीफ़

ग़ज़्वा-ए-बदर का नक़्शा
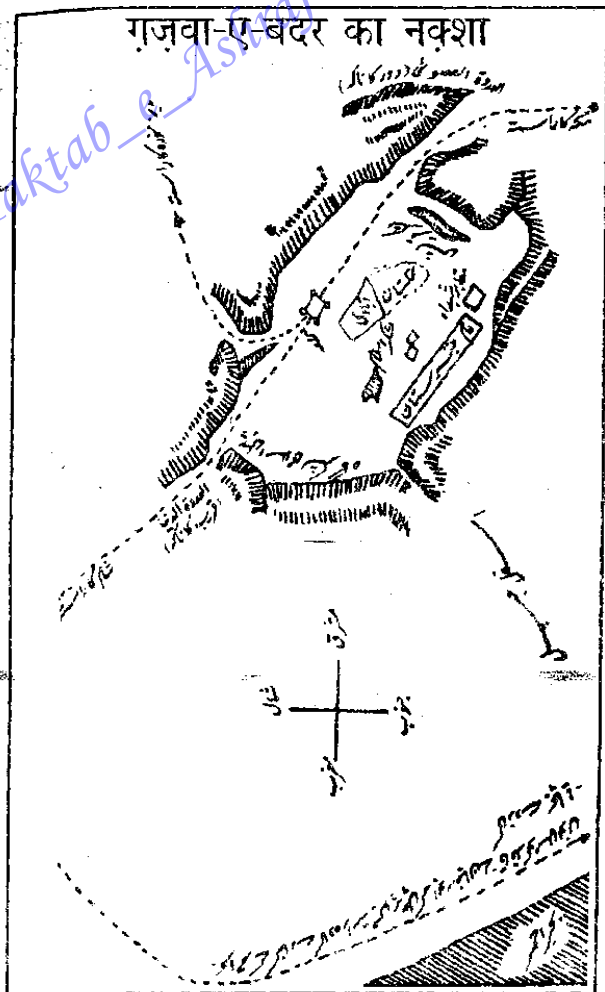
ले चलें और कुरैश के सब से क़रीब जो चश्मा (सोता) हो, उस पर पड़ाव डालें, फिर हम बाक़ी चश्मे पाट देंगे और अपने चश्मे पर हौज़ बना कर पानी भर लेंगे। इस के बाद हम कुरैश से लड़ाई करेंगे तो हम पानी पीते रहेंगे। और उन्हें पानी न मिलेगा।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम ने बहुत ठीक मश्वरा दिया, इस के बाद आप फ़ौज के साथ उठे और कोई आधी रात गए दुश्मन के सब से क़रीब चश्मे पर पहुंच कर पड़ाव डाल दिया," फिर सहाबा किराम रज़ि० ने हौज़ बनाया और बाक़ी तमाम चश्मों को बंद कर दिया।

नेतृत्व का केन्द्र

सहाबा किराम रज़ि० चश्मे पर पड़ाव डाल चुके तो हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने यह प्रस्ताव रखा कि क्यों न मुसलमान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक नेतृत्व-केन्द्र बना दें ताकि अल्लाह न करे जीत के बजाए हार से दो-चार होना पड़े या किसी और हंगामी हालत से वास्ता पड़ जाए तो उस के लिए पहले ही से तैयार रहें, चुनांचे उन्होंने अर्ज़ किया------

"ऐ अल्लाह के नबी! क्यों न हम आप के लिए एक छप्पर बना दें, जिस में आप तशरीफ़ रखेंगे और हम आप के पास आप की सवारियां भी मुहैया रखेंगे, इस के बाद अपने दुश्मन से टक्कर लेंगे। अगर अल्लाह ने हमें इज़्ज़त बख़्शी और दुश्मन पर ग़लबा अता फ़रमाया तो यह वह चीज़ होगी जो हमें पसंद है और अगर दूसरी शक्ल हो गयी तो आप सवार होकर हमारी क़ौम के उन लोगों के पास जा रहेंगे, जो पीछे रह गए हैं। हक़ीक़त में आप के पीछे, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! ऐसे लोग रह गए हैं कि हम आप की मुहब्बत में उन से बढ़ कर नहीं। अगर उन्हें यह अंदाज़ा होता कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लड़ाई से दो-चार होंगे, तो वे हरगिज़ पीछे न रहते। अल्लाह उन

के ज़रिए आप की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा, वह आप की भलाई चाहेंगे और आप के साथ जिहाद करेंगे।"

इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की प्रशंसा की और उन के भले की दुआ की और मुसलमानों ने लड़ाई के मैदान के उत्तर-पूरब में एक ऊंचे टीले पर छप्पर बनाया, जहां से लड़ाई का पूरा मैदान दिखाई पड़ता था। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस नेतृत्व-केन्द्र की निगरानी के लिए हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० की कमान में अंसारी नव-जवानों की एक टुकड़ी चुन ली गयी।

सेना की तर्तीब और रात गुज़ारना

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सेना की तर्तीब फ़रमाई[1] और लड़ाई के मैदान में तश्रीफ़ ले गए। वहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने हाथ से इशारा फ़रमाते जा रहे थे कि यह कल फ़्लां की क़त्ल गाह है इनशाअल्लाह, यह कल फ़्लां की क़त्ल गाह है इनशाअल्लाह,[2] इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहीं एक पेड़ की जड़ के पास रात गुज़ारी और मुसलमानों ने भी सुकून और कामियाबी की ख़ुशी के साथ रात गुज़ारी। उन के दिल विश्वास से भरे थे और उन्होंने राहत व सुकून से अपना हिस्सा हासिल किया। उन्हें यह आशा थी कि सुबह अपनी आंखों से अपने रब की ख़ुशख़बरी देखेंगे-------

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ

"जब अल्लाह तुम पर अपनी तरफ़ से अम्न और बे-ख़ौफ़ी के तौर पर नींद का नशा डाल रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरसा

1) तिरमिज़ी अबवाबुल-जिहाद 1/201

2) मुस्लिम हज़रत अनस की हदीस, मिशकात 2/543

रहा था, ताकि तुम्हें उस के ज़रिए पाक कर दे और तुम से शैतान की गंदगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे और तुम्हारे क़दम जमा दे।" (8:11)

यह रात जुमा 17 रमज़ान सन् 02 हि० की रात थी और आप इस महीने की 8 या 12 तारीख़ को मदीने से रवाना हुए थे।

लड़ाई के मैदान में मक्की सेना का आना और उन का आपसी मतभेद

दूसरी ओर क़ुरैश ने घाटी के दहाने के बाहर अपने कैम्प में रात गुज़ारी और सुबह अपनी तमाम टुकड़ियों समेत टीले से उतर कर बद्र की ओर रवाना हुए। एक गिरोह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हौज़ की ओर बढ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इन्हें छोड़ दो, मगर इन में से जिस ने भी पानी पिया वह इस लड़ाई में मारा गया, सिर्फ़ हकीम बिन हिज़ाम बाक़ी बचा जो बाद में मुसलमान हुआ और बहुत अच्छा मुसलमान हुआ। उस का तरीक़ा था कि जब बहुत पक्की क़सम खानी होती तो कहता;

لَا وَالَّذِیْ نَجَّانِیْ مِنْ یَوْمِ بَدْرٍ

"क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे बद्र के दिन से नजात दी।"

बहरहाल जब क़ुरैश संतुष्ट हो चुके तो उन्होंने मदनी सेना की ताक़त का अंदाज़ा लगाने के लिए उमैर बिन वहब जुमही को रवाना किया उमैर ने घोड़े पर सवार होकर सेना का चक्कर लगाया, फिर वापस जा कर बोला, "कुछ कम या कुछ ज़्यादा तीन सौ आदमी हैं, लेकिन तनिक ठहरो मैं देख लूं उन की कोई कमीन गाह (ठरिने की जगह) तो नहीं?" इस के बाद वह घाटी में घोड़ा दौड़ाता हुआ दूर तक निकल गया, लेकिन उसे कुछ दिखाई न पड़ा, चुनांचे उस ने वापस जा कर कहा, "मैं ने कुछ पाया तो नहीं, लेकिन ऐ क़ुरैश के लोगो! मैंने बलाएं देखी हैं जो मौत को लादे हुए हैं। यस्रिब के ऊंट अपने ऊपर ख़ालिस

मौत सवार किए हुए हैं। ये ऐसे लोग हैं जिन की सारी हिफ़ाज़त और पनाह गाह खुद उन की तलवारें हैं, कोई और चीज़ नहीं। अल्लाह की क़सम! मैं समझता हूं कि इन का कोई आदमी तुम्हारे आदमी को क़त्ल किए बग़ैर क़त्ल न होगा और तुम्हारे ख़ास-ख़ास लोगों को उन्होंने मार लिया तो इस के बाद जीने का मज़ा ही क्या है! इसलिए तनिक अच्छी तरह सोच-समझ लो।"

इस मौक़े पर अबू जहल के ख़िलाफ़——जो झगड़ने पर तुला हुआ था——एक और झगड़ा उठ खड़ा हुआ, जिस में मांग की गयी कि लड़ाई के बिना ही मक्का वापस जाएं। चुनांचे हकीम बिन हिज़ाम ने लोगों के बीच दौड़-धूप शुरू कर दी। वह उत्बा बिन रबीआ के पास आया और बोला, "अबुल वलीद! आप क़ुरैश के बड़े आदमी और जिनकी इताअत की जाए, ऐसे सरदार हैं फिर आप क्यों न एक अच्छा काम कर जाएं जिस की वजह से आप का ज़िक्र हमेशा भलाई से होता रहे।" उत्बा ने कहा, हकीम! वह कौन-सा काम है? उस ने कहा, "आप लोगों को वापस ले जाएं और अपने साथी अम्र बिन हज़रमी का मामला—— जो सरिय्या-ए-नख़ला में मारा गया था——अपने ज़िम्मे ले लें।" उत्बा ने कहा, "मुझे मंज़ूर है तुम मेरी ओर से उस की ज़मानत लो, वह मेरा साथी है, मैं उस की दियत का भी ज़िम्मेदार हूं और उस का जो माल बर्बाद हुआ, उस का भी।"

इस के बाद उत्बा ने हकीम बिन हिज़ाम से कहा, "तुम हंज़लीया के पूत के पास आओ, क्योंकि लोगों के मामलों को बिगाड़ने और भड़काने के सिलसिले में मुझे उस के अलावा किसी और से कोई डर नहीं।" हंज़लीया के पूत से मुराद अबू जहल है। हंज़लीया उस की मां थी

इस के बाद उत्बा बिन रबीआ ने खड़े होकर भाषण दिया और कहा, "क़ुरैश के लोगो! तुम लोग मुहम्मद और उन के साथियों से लड़ कर कोई कारनामा अंजाम न दोगे। अल्लाह की क़सम! अगर तुम ने

इन्हें मार लिया तो सिर्फ़ ऐसे ही चेहरे दिखाई पड़ेंगे, जिन्हें देखना पसंद न होगा, क्योंकि आदमी ने अपने चचेरे भाई को या ख़लेरे भाई को या अपने ही कुंबे-क़बीले के किसी आदमी को क़त्ल किया होगा, इसलिए वापस चले चलो और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सारे अ़रब से अलग हो जाओ। अगर अ़रब ने उन्हें मार लिया, तो यह वही चीज़ होगी जिसे तुम चाहते हो और अगर दूसरी शक्ल हुई तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें इस हालत में पाएंगे कि तुम ने जो सुलूक उन से करना चाहा था, उसे किया न था।''

इधर हकीम बिन हिज़ाम अबू जहल के पास पहुंचा तो अबू जहल अपनी ज़िरह (कवच) ठीक कर रहा था, हकीम ने कहा कि ऐ अबुल हकम! मुझे उत्बा ने तुम्हारे पास यह और यह पैग़ाम देकर भेजा है। अबू जहल ने कहा, ''अल्लाह की क़सम! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उस के साथियों को देख कर उत्बा का सीना सूज आया है, नहीं हरगिज़ नहीं! अल्लाह की क़सम! हम वापस न होंगे, यहां तक कि अल्लाह हमारे और मुहम्मद के दीर्मयान फ़ैसला कर दे। उत्बा ने जो कुछ कहा है सिर्फ़ इसलिए कहा है कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उसके साथियों को ऊंट ख़ोर (खाने वाला) समझता है। और खुद उत्बा का बेटा भी उन्हीं के दर्मियान है, इसलिए वह तुम्हें उन से डराता है''——— उत्बा के साहबज़ादे अबू हुज़ैफ़ा बहुत पहले इस्लाम लाए थे और हिजरत करके मदीना तशरीफ़ ला चुके थे——उत्बा को जब पता चला कि अबू जहल कहता है, ''अल्लाह की क़सम! उत्बा का सीना सूज आया है'' तो बोला ''उस सुरीन से पाद निकालने वाले को (या सुरीन पर खुश्बू लगाने वाले को) बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि किस का सीना सूज आया है, मेरा या उस का?'' इधर अबू जहल ने इस डर से कि कहीं यह झगड़ा ख़तरनाक न हो जाए, इस बात-चीत के बाद झट आ़मिर बिन हज़रमी को——जो सरिय्या अ़ब्दुल्लाह बिन जहश के

मक़तूल अम्र बिन हज़रमी का भाई था-----बुला भेजा और कहा कि यह तुम्हारा दोस्त-----उत्बा-----चाहता है कि लोगों को वापस ले जाए, हालांकि तुम अपना बदला अपनी आंख से देख चुके हो, इसलिए उठो और अपने मज़्लूम होने और अपने भाई के क़त्ल की दुहाई दो। इस पर आमिर उठा और सुरीन खोल कर चीख़ा, हाय अम्र! हाय अम्र! इस पर क़ौम गर्म हो गयी। इन का मामला संगीन और इन की लड़ाई का इरादा पक्का हो गया और उत्बा ने जिस सूझ-बूझ की दावत दी थी, वह बेकार गई। इस तरह होश पर जोश ग़ालिब आ गया और यह टकराव भी बे-नतीजा रहा।

दोनों फ़ौजें आमने-सामने

बहरहाल जब मुश्रिकों की सेना ज़ाहिर हो गयी और दोनों फ़ौजें एक दूसरे को दिखाई देने लगीं तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! ये क़ुरैश हैं जो अपने पूरे गर्व और अभिमान के साथ तेरा विरोध करते हुए और तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाते हुए आ गए हैं, ऐ अल्लाह! तेरी मदद-----जिसका तूने वायदा किया है, ऐ अल्लाह! आज इन्हें ऐंठ कर रख दे।"

साथ ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्बा बिन रबीआ को उस के एक लाल ऊंट पर देख कर फ़रमाया, "अगर क़ौम में से किसी के पास ख़ैर (भलाई) है तो लाल ऊंट वाले के पास है। अगर लोगों ने उस की बात मान ली, तो सहीह राह पाएंगे।"

इस मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की सफ़ें (पंक्तियां) ठीक कीं। सफ़ें ठीक करने के दौरान एक अनोखी घटना घटी। आप के हाथ में एक तीर था जिस के ज़रिए आप सफ़ सीधी कर रहे थे कि सिवाद बिन ग़ज़ीया के पेट पर, जो लाइन से कुछ आगे निकले हुए थे, तीर का दबाव डालते हुए फ़रमाया, सिवाद! बराबर हो जाओ। सिवाद ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने मुझे

तक्लीफ़ पहुंचा दी, बदला दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना पेट खोल दिया और फ़रमाया, बदला ले लो। सिवाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से चिमट गए और आप के पेट का बोसा लेने लगे। आप ने फ़रमाया, सिवाद इस हरकत पर तुम्हें किस बात ने उकसाया? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! जो कुछ सामने है, आप देख ही रहे हैं। मैंने चाहा कि ऐसे मौक़े पर आप से आख़िरी मामला यह हो कि मेरी खाल आप की खाल से छू जाए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई।

फिर जब सफ़ें ठीक की जा चुकीं, तो आप ने सेना को हिदायत फ़रमाई कि जब तक उसे आप का आख़िरी हुक्म न मिल जाए, लड़ाई शुरू न करें। इस के बाद लड़ाई के तरीक़े के बारे में ख़ास रहनुमाई फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि जब मुश्रिक जमघट कर के तुम्हारे क़रीब आ जाएं तो उन पर तीर चलाना और अपने तीर बचाने की कोशिश करना।[3] (यानी पहले ही से बेकार की तीर-अंदाज़ी करके तीरों को बर्बाद न करना।) और वे जब तक तुम पर छा न जाएं तलवार न खींचना।[4] इस के बाद ख़ास आप और अबू बक्र रज़ि० छप्पर की तरफ़ वापस गए और हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० अपनी निगरां टुकड़ी लेकर छप्पर के दरवाज़े पर तैनात हो गए।

दूसरी ओर मुश्रिकों की स्थिति यह थी कि अबू जहल ने अल्लाह से फ़ैसले की दुआ की। उस ने कहा, "ऐ अल्लाह! हम में से जो फ़रीक़ रिश्तेदारियों को ज़्यादा काटने वाला और ग़लत हरकतें ज़्यादा करने वाला है, उसे तू आज तोड़ दे। ऐ अल्लाह! हम में से जो फ़रीक़ तेरे

---

3) बुख़ारी 2/568

4) अबू दाऊद बाब: सल्लुस-सुयूफ़ इन्दल-लिक़ा 2/13

नज़दीक अधिक प्रिय और ज़्यादा पसन्दीदा है, आज उस की मदद फ़रमा" बाद में इसी बात की ओर इशारा करते हुए अल्लाह ने यह आयत उतारी——

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ، وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ

"अगर तुम फ़ैसला चाहते, तो तुम्हारे पास फ़ैसला आ गया और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है, लेकिन अगर तुम (अपनी इस हरकत की ओर) पलटोगे, तो हम भी (तुम्हारी सज़ा की ओर) पलटेंगे और तुम्हारी जमाअत भले ही ज़्यादा क्यों न हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगी, (और याद रखो कि) अल्लाह ईमान वालों के साथ है।" (8:19)

शून्य-बिन्दी और लड़ाई का पहला ईंधन

इस लड़ाई का पहला ईंधन अस्वद बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी था। यह आदमी बड़ा अड़ियल और दुश्चरित्र था। यह कहते हुए मैदान में निकला कि मैं अल्लाह को वचन देता हूं कि उन के हौज़ का पानी पी कर रहूंगा, वरना उसे ढा दूंगा या इस के लिए जान दे दूंगा। जब यह उधर से निकला तो इधर से हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब निकले। दोनों में हौज़ से दूर ही मुठभेड़ हो गई। हज़रत हमज़ा रज़ि० ने ऐसी तलवार मारी कि उस का पांव आधी पिंडुली से कट कर उड़ गया और वह पीठ के बल गिर पड़ा। उस के पांव से ख़ून का फ़व्वारा निकल रहा था, जिस का रुख़ उस के साथियों की ओर था, लेकिन इस के बावजूद वह घुटनों के बल घिसट कर हौज़ की ओर बढ़ा और उस में दाख़िल होना ही चाहता था ताकि अपनी क़सम पूरी कर ले कि इतने में हज़रत हमज़ा रज़ि० ने दूसरी चोट लगायी और वह हौज़ के अंदर ही ढेर हो गया।

आग भड़क उठी

यह उस लड़ाई की पहली हत्या थी और इस से लड़ाई की आग और भड़क उठी। चुनांचे इस के बाद कुरैश के तीन सब से अच्छे घुड़सवार योद्धा निकले, जो सब के सब एक ही परिवार के थे। एक उत्बा और दूसरा उसका भाई शैबा जो दोनों रबीआ के बेटे थे और तीसरा वलीद जो उत्बा का बेटा था। उन्होंने अपनी लाइन से अलग होते ही लड़ने पर उभारा। मुकाबले के लिए अंसार के तीन जवान निकले—एक औफ़ रज़ि० दूसरे मुअव्विज़——ये दोनों हारिस के बेटे थे और इन की मां का नाम अफ़रा था———तीसरे अब्दुल्लाह बिन रवाहा। कुरैशियों ने कहा, तुम कौन लोग हो? उन्होंने कहा, अंसार की एक जमाअत हैं। कुरैशियों ने कहा, आप लोग तो शरीफ़ मद्दे मुकाबिल (सामने आने वाला आदमी) हैं, लेकिन हमें आप से कोई सरोकार नहीं। हम तो अपने चचेरे भाइयों को चाहते हैं। फिर उनके आवाज़ लगाने वाले ने आवाज़ लगायी। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हमारे पास हमारी कौम के बराबर के लोगों को भेजो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उबैदा बिन हारिस रज़ि०! उठो, हमज़ा रज़ि०! उठिए, अली रज़ि० उठो। जब ये लोग उठे और कुरैशियों के करीब पहुंचे तो उन्होंने पूछा, आप कौन लोग हैं? उन्होंने अपना परिचय कराया। कुरैशियों ने कहा, हां आप लोग शरीफ़ मद्दे मुकाबिल हैं। इसके बाद लड़ाई हुई। हज़रत उबैदा रज़ि० ने— जो सब से उम्र में बड़े थे——उत्बा बिन रबीआ से मुकाबला किया। हज़रत हमज़ा रज़ि० ने शैबा से और हज़रत अली रज़ि० ने वलीद से।[5] हज़रत हमज़ा रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० ने तो अपने मुकाबले के योद्धाओं को झट मार गिराया, लेकिन उबैदा रज़ि० और उनके मद्दे मुकाबिल के बीच एक-एक वार का तबादला हुआ और दोनों में से हर एक ने दूसरे

---

5) इब्ने हिशाम, मुसनद अहमद और दाऊद की हदीस इस से अलग है, मिश्कात 2/343

को गहरा घाव लगाया। इतने में हज़रत अली रज़ि० और हज़रत हमज़ा रज़ि० अपने-अपने शिकार से फ़ारिग़ होकर आ गए, आते ही उत्बा पर टूट पड़े, उस का काम तमाम किया और हज़रत उबैदा रज़ि० को उठा लाए। उन का पांव कट गया था और आवाज़ बंद हो गयी थी जो बराबर बंद ही रही, यहां तक कि लड़ाई के चौथे या पांचवे दिन जब मुसलमान मदीना वापस होते हुए सफ़रा घाटी से गुज़र रहे थे, उनका देहान्त हो गया।

हज़रत अली रज़ि० अल्लाह की कसम खा कर फ़रमाया करते थे कि यह आयत हमारे ही बारे में उतरी----

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ

"ये दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अपने पालनहार के बारे में झगड़ा किया है।" (22:19)

भीड़ टूट पड़ी

इस लड़ाई का अंजाम मुश्रिकों के लिए एक बुरी शुरूआत थी। वे एक ही उछाल में अपने तीन बेहतरीन घुड़सवारों और कमांडरो से हाथ धो बैठे थे, इसलिए उन्हों ने गुस्से से बे-क़ाबू होकर एक आदमी की तरह यकायक हमला कर दिया।

दूसरी ओर मुसलमान अपने पालनहार से मदद की दुआ करने और उस के दरबार में ख़ुलूस और गिड़गिड़ाहट अपनाने के बाद अपनी-अपनी जगहों पर जमे और प्रतिरक्षात्मक-नीति अपनाते हुए मुश्रिकों के ताबड़-तोड़ हमलों को रोक रहे थे और उन्हें अच्छा भला नुक़्सान पहुंचा रहे थे। ज़ुबान पर "अहद-अहद" (वह अकेला है, वह अकेला है) के बोल थे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ों को ठीक करके वापस आते ही अपने पाक पालनहार से मदद का वायदा पूरा

करने की दुआ मांगने लगे। आप की दुआ यह थी-------

اَللّٰهُمَّ اَنْجِزْلِیْ مَا وَعَدْتَّنِیْ، اَللّٰهُمَّ اَنْشُدُکَ عَهْدَکَ وَوَعْدَکَ

"ऐ अल्लाह! तूने मुझ से जो वायदा किया है उसे पूरा फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरा अहद और तेरे वायदे का सवाल कर रहा हूं।"

फिर जब घमासान की लड़ाई हो गयी, निहायत ज़ोर का रन पड़ा और लड़ाई जवानी पर आ गई तो आप ने ये दुआ पढ़ीः---

اَللّٰهُمَّ اِنْ تَهْلِکْ هٰذِهِ الْعِصَابَةُ الْيَوْمَ لَا تُعْبَدْ، اَللّٰهُمَّ اِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ اَبَدًا

"ऐ अल्लाह! अगर आज यह गिरोह हलाक हो गया तो तेरी इबादत न की जाएगी। ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो आज के बाद तेरी इबादत कभी न की जाए।"

आप ने ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ की, यहां तक कि दोनों कंधों से चादर गिर गयी। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने चादर ठीक की और कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! बस फ़रमाइए, आप ने अपने पालनहार से बहुत गिड़गिड़ा कर दुआ फ़रमा ली।" इधर अल्लाह ने फ़रिश्तों को वह्य की कि-------

اَنِّیْ مَعَکُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَاُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ کَفَرُوا الرُّعْبَ

"मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम ईमान वालों के क़दम जमाओ। मैं काफ़िरों के दिल में रोब डाल दूंगा।" (8:12)

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्य भेजी कि-------

اَنِّیْ مُمِدُّکُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِکَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝

"मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूंगा, जो आगे पीछे आएंगे।" (8:9)

फ़रिश्तों का आना

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक झपकी आयी, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर उठाया और फ़रमाया, "अबू बक्र ख़ुश हो जाओ, ये जिब्रील अलैहि० हैं धूल में अटे हुए।" इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अबू बक्र ख़ुश हो जाओ, तुम्हारे पास अल्लाह की मदद आ गई यह जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं अपने घोड़े की लगाम थामे और उस के आगे-आगे चलते हुए आ रहे हैं और धूल-धक्कड़ में अटे हुए हैं।"

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छप्पर के दरवाज़े से बाहर तशरीफ़ लाए। आप ने ज़िरह पहन रखी थी। आप पूरे जोश के साथ आगे बढ़ रहे थे और फ़रमाते जा रहे थे--------

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ○

"बहुत जल्द यह जत्था हार जाएगा और पीठ फेर कर भागेगा।" (54:45)

इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुट्ठी कंकड़ीली मिट्टी ली और क़ुरैश की ओर चेहरा कर के फ़रमाया,

شاهت الوجوه

"चेहरे बिगड़ जाएं।" और साथ ही मिट्टी उनके चेहरों की ओर फेंक दी, फिर मुश्रिकों में से कोई भी नहीं था जिस की दोनों आंखें, नथने और मुंह में इस एक मुट्ठी मिट्टी में से कुछ न कुछ गया न हो। इसी के बारे में अल्लाह फ़रमाता है ---

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ

"जब आप ने फेंका तो हक़ीक़त में आप ने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका।" (8:17)

जवाबी हमला

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाबी हमले का हुक्म और लड़ाई पर उभारते हुए फ़रमाया, "शुद्दू" (चढ़ दौड़ो) उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है, इन से जो आदमी भी डट कर, सवाब समझ कर, आगे बढ़ कर और पीछे न हट कर लड़ेगा और मारा जाएगा, अल्लाह उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल करेगा।"

आप ने लड़ाई पर उभारते हुए यह भी फ़रमाया, उस जन्नत की तरफ़ उठो जिस की कुशादगी आसमानों और ज़मीन के बराबर है। (आप की यह बात सुन कर) उमैर बिन हमाम ने कहा, बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब, क्यों कह रहे हो? उन्होंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल! कोई बात नहीं सिवाए इस के कि मुझे उम्मीद है कि मैं भी उसी जन्नत वालों में से हूंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम भी उसी जन्नत वालों में से हो। इस के बाद वह अपने तोशादान से कुछ खजूरें निकाल कर खाने लगे, फिर बोले, अगर मैं इतनी देर तक ज़िंदा रहा कि अपनी ये ख़जूरें खा लूं तो यह तो लंबी ज़िंदगी हो जाएगी, चुनांचे उन के पास जो ख़जूरें थीं, उन्हें फेंक दिया, फिर मुश्रिकों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।[6]

इसी तरह मशहूर महिला अफ़रा के सुपुत्र औफ़ बिन हारिस ने मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! पालनहार अपने बन्दे की किस बात से (ख़ुश होकर) मुस्कुराता है? आप

---

6) मुस्लिम 2/139, मिश्कात 2/331

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "इस बात से कि बंदा ख़ाली जिस्म (बिना सुरक्षा के हथियार पहने) अपना हाथ दुश्मन के अंदर डुबो दे।" यह सुन कर औफ़ ने अपने देह से कवच उतार फेंका और तलवार लेकर दुश्मन पर टूट पड़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

जिस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाबी हमले का हुक्म दिया, दुश्मन के हमलों की तेज़ी जा चुकी थी और उन का जोश ठंडा पड़ रहा था। इसलिए यह हिक्मत भरी योजना मुसलमानों की पोज़ीशन मज़बूत करने में बड़ी असरदार साबित हुई, क्योंकि सहाबा किराम रज़ि० को जब हमलावर होने का हुक्म मिला और अभी जिहाद के लिए जोश बहुत गर्म था, तो उन्होंने बड़ा ही सख़्त तेज़ और सफ़ाया करने वाला हमला किया। वे पंक्तियों की पंक्तियां चीरते-फाड़ते और गरदनें काटते आगे बढ़े। उनके जोश में यह देख कर अधिक तेज़ी आ गई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी कवच पहने, तेज़-तेज़ चलते तशरीफ़ ला रहे हैं और पूरे यक़ीन के साथ स्पष्ट शब्दों में फ़रमा रहे हैं कि "बहुत जल्द यह जत्था हार का मुंह देखेगा और पीठ फेर कर भागेगा।" इसलिए मुसलमानों ने बड़े जोश में भर कर लड़ाई लड़ी और फ़रिश्तों ने भी उन की मदद फ़रमाई। चुनांचे इब्ने साद की रिवायत में हज़रत इक्रिमा से रिवायत है कि उस दिन आदमी का सर कट कर गिरता और यह पता न चलता कि उसे किस ने मारा और आदमी का हाथ कट कर गिरता और यह पता न चलता कि उसे किस ने काटा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मुसलमान एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था कि यकायक उस मुश्रिक के ऊपर कोड़े के मार पड़ने की आवाज़ आई और एक घुड़सवार की आवाज़ सुनाई पड़ी, जो कह रहा था कि हैज़ूम! आगे बढ़! मुसलमान ने मुश्रिक को अपने आगे देखा कि वह चित्त गिरा, लपक कर देखा तो उस की नाक पर चोट का निशान था, चेहरा फटा हुआ था, जैसे कोड़े

से मारा गया हो और यह सब का सब हरा पड़ गया था। उस अंसारी मुसलमान ने आकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह क़िस्सा बयान किया, तो आप ने फ़रमाया, "तुम सच कहते हो, यह तीसरे आसमान की मदद थी।[7]"

अबू दाऊद माज़नी कहते हैं कि मैं एक मुश्रिक को मारने के लिए दौड़ रहा था कि अचानक उस का सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया। मैं समझ गया कि इसे मेरे बजाए किसी और ने क़त्ल किया है।

एक अंसारी हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को क़ैद कर के लाया, तो हज़रत अब्बास रज़ि० कहने लगे, "अल्लाह की क़सम! मुझे इसने क़ैद नहीं किया है, मुझे तो एक बे-बाल के सर वाले आदमी ने क़ैद किया है जो बड़ा ख़ूबसूरत था और चितकबरे घोड़े पर सवार था। अब मैं उसे लोगों में देख नहीं रहा हूं।" अंसारी ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! इन्हें मैंने क़ैद किया है।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ामोश रहो, अल्लाह ने एक बुज़ुर्ग फ़रिश्ते से तुम्हारी मदद फ़रमाई है।

मैदान से इब्लीस का भागना

जैसा कि हम बता चुके हैं लानत किया गया इब्लीस सुराक़ा बिन मालिक बिन जोशम मुदलिजी के रूप में आया था और मुश्रिकों से अब तक जुदा नहीं हुआ था, लेकिन जब उस ने मुश्रिकों के ख़िलाफ़ फ़रिश्तों की कार्रवाहियां देखीं तो उलटे पांव पलट कर भागने लगा, मगर हारिस बिन हिशाम ने उसे पकड़ लिया। वह समझ रहा था, यह वाक़ई सुराक़ा ही है. लेकिन इब्लीस ने हारिस के सीने पर ऐसा घूंसा मारा कि वह गिर गया और इब्लीस निकल भागा। मुश्रिक कहने लगे, सुराक़ा, कहां जा

---

7) मुस्लिम 2/93

रहे हो? क्या तुम ने यह नहीं कहा था कि हमारे तुम मददगार हो, हम से जुदा न होगे? उस ने कहा, मैं वह चीज़ देख रहा हूं जिसे तुम नहीं देखते। मुझे अल्लाह से डर लगता है और अल्लाह बड़ी कड़ी सज़ा देने वाला है, इस के बाद भाग कर समुद्र में जा रहा।

कड़ी हार

थोड़ी देर बाद मुश्रिकों की फ़ौज में नाकामी और बेचैनी की निशानियां दिखाई देने लगीं। उन की पंक्तियां मुसलमानों के कड़े और ताबड़तोड़ हमलों से बिखरने लगीं और लड़ाई अपने अंजाम को जा पहुंची, फिर मुश्रिकों के जत्थे बिखर कर पीछे हटे और उन में भगदड़ मच गयी। मुसलमानों ने मारते-काटते और पकड़ते-बांधते उन का पीछा किया, यहां तक कि उन की भरपूर हार हो गयी।

अबू जहल की अकड़

लेकिन सब से बड़े तागूत अबू जहल ने जब अपनी पंक्तियों में बेचैनी की शुरू की निशानियां देखीं तो चाहा कि इस बाढ़ के सामने डट जाए। चुनांचे वह अपनी फ़ौज को ललकारता हुआ अकड़ और घमंड के साथ कहता जा रहा था कि सुराक़ा के किनारे हो जाने से तुम्हें हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि उस ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ पहले से सांठ-गांठ कर रखी थी। तुम पर उत्बा, शैबा और वलीद की हत्या का हौल भी सवार नहीं होना चाहिए, क्योंकि इन लोगों ने जल्दबाज़ी से काम लिया था, लात व उज़्ज़ा की क़सम! हम वापस न होंगे, यहां तक कि उन्हें रस्सियों में जकड़ लें। देखो! तुम्हारा कोई आदमी उन के किसी आदमी को क़त्ल न करे, बल्कि उन्हें पकड़ो और गिरफ़्तार करो, ताकि हम उन की बुरी हरकत का उन्हें मज़ा चखाएं।

लेकिन उसे इस घमंड की वास्तविकता का बहुत जल्द पता लग गया, क्योंकि कुछ ही क्षणों के बाद मुसलमानों के जवाबी हमले की तेज़ी

के सामने मुश्रिकों की पंक्तियां टूटनी शुरू हो गईं। अलबत्ता अबू जहल अब भी अपने पास मुश्रिकों की एक भीड़ लिए जमा हुआ था। इस भीड़ ने अबू जहल के चारों ओर तलवारों की बाढ़ और नेज़ों का जंगल क़ायम कर रखा था, लेकिन इस्लामी हुजूम की आंधी ने उस बाढ़ को भी बिखेर दिया और उस जंगल को भी उखाड़ दिया। इसके बाद यह बड़ा तागूत दिखाई पड़ा। मुसलमानों ने देखा कि वह एक घोड़े पर चक्कर काट रहा है। इधर उस की मौत दो अंसारी जवानों के हाथों उस का ख़ून चूसने का इंतिज़ार कर रही थी।

अबू जहल का क़त्ल

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का बयान है कि मैं बद्र की लड़ाई के दिन सफ़ (पंक्ति) के अंदर था कि अचानक मुड़ा तो क्या देखता हूं कि दाएं-बाएं दो नव उम्र नवजवान हैं मानो उन के मौजूद रहने से मैं हैरान हो गया कि इतने में एक ने अपने साथी से छिपा कर मुझ से कहा! "चचा जान! मुझे अबू जहल को दिखा दीजिए!" मैंने कहा, भतीजे! तुम उसे क्या करोगे? उसने कहा, "मुझे बताया गया है कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देता है। उस ज़ात की क़सम, जिस के हाथ में मेरी जान है! अगर मैंने उस को देख लिया, तो मेरा वजूद उस के वजूद से अलग न होगा, यहां तक कि हम में जिस की मौत पहले लिखी है, वह मर जाए।" वह कहते हैं कि मुझे इस पर ताज्जुब हुआ। इतने में दूसरे आदमी ने मुझे इशारे से तवज्जोह दिला कर यही बात कही। उन का बयान है कि मैंने कुछ ही क्षणों के बाद देखा कि अबू जहल लोगों के बीच चक्कर काट रहा है। मैंने कहा, "अरे देखते नहीं, यह रहा तुम दोनों का शिकार जिस के बारे में तुम पूछ रहे थे।" उन का बयान है कि यह सुनते ही वे दोनों अपनी तलवारें लिए झपट पड़े और उसे मार कर क़त्ल कर दिया, फिर पलट कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए। आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम में से किस ने क़त्ल किया है? दोनों ने कहा, मैंने क़त्ल किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपनी-अपनी तलवारें पोंछ चुके हो? बोले नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों की तलवारें देखीं और फ़रमाया, तुम दोनों ने क़त्ल किया है, अलबत्ता अबू जहल का सामान मुआज़ बिन अ़म्र बिन जमूह को दिया। दोनों हमला करने वालों का नाम मुआज़ बिन अ़म्र बिन जमूह और मुआज़ बिन अ़फ़रा है।[8]

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि मुआज़ बिन अ़म्र बिन जमूह ने फ़रमाया कि मैंने मुश्रिकों को सुना, वह अबू जहल के बारे में जो घने पेड़ों जैसी----नेज़ों और तलवारों की-------बाढ़ में था, कह रहे थे, अ़बुल हकम तक किसी की पहुंच न हो। मुआज़ बिन अ़म्र रज़ि० कहते हैं कि जब मैं ने यह बात सुनी तो उसे अपने निशाने पर ले लिया और उस की दिशा में जमा रहा। जब गुंजाइश मिली तो मैंने हमला कर दिया और ऐसी चोट लगाई कि उस का पांव आधी पिंडुली से उड़ गया। अल्लाह की क़सम! जिस वक़्त यह पांव उड़ा है तो मैं उस की उपमा सिर्फ़ उस गुठली से दे सकता हूं जो मूसल की मार पड़ने पर झटक कर उड़ जाए। उनका बयान है कि इधर मैंने अबू जहल को मारा और उधर उस के बेटे इक्रिमा ने मेरे कंधे पर तलवार चलाई, जिस से मेरा हाथ कट कर मेरे बाज़ू के चमड़े से लटकने और लड़ाई में बाधा डालने लगा। मैं उसे अपने साथ घसीटते हुए सारा दिन लड़ा, लेकिन जब वह मुझे कष्ट पहुंचाने लगा तो मैंने उस पर अपना पांव रखा और उसे ज़ोर से खींच

---

8) बुख़ारी 1/444, 2/568, मिश्कात 2/352—कुछ दूसरी हदीसों में दूसरा नाम मुअव्वज़ बिन अफ़रा बताया गया है (इब्ने हिशाम 1/635) अबू जहल का सामान केवल एक ही आदमी को इसलिए दिया गया कि बाद मे हज़रत मआज़ (मुअव्वज़) बिन अफ़रा इसी जंग में शहीद हो गए थे (मारे गए थे) जबकि अबू जहल की तलवार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद को दी गई क्योंकि उन्होंने उस (अबू जहल) का सर धड़ से अलग किया था (देखिए अबू दाऊद 2/373)

कर अलग कर दिया।[9] इस के बाद अबू जहल के पास मुअव्वज़ बिन अफ़रा पहुंचे। वह घायल था। उन्होंने उसे ऐसी चोट लगाई कि वह वहीं ढेर हो गया, सिर्फ़ सांस आती-जाती रही। इसके बाद मुअव्वज़ बिन अफ़रा रज़ि० ख़ुद भी लड़ते हुए शहीद हो गए।

जब लड़ाई ख़त्म हुई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "कौन है जो देखे कि अबू जहल का अंजाम क्या हुआ?" इस पर सहाबा किराम रज़ि० उस की खोज में बिखर गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० ने उसे इस हालत में पाया कि अभी सांस आ जा रही थी। उन्होंने उस की गरदन पर पांव रखा और सर काटने के लिए दाढ़ी पकड़ी और फ़रमाया, ओ अल्लाह के दुश्मन! आख़िर अल्लाह ने तुझे रुसवा किया या? उस ने कहा, "मुझे काहे को रुसवा किया? क्या जिस आदमी को तुम लोगों ने क़त्ल किया है उस से भी ऊंचे दर्जे का कोई आदमी है? या जिस को तुम लोगों ने क़त्ल किया, उस से भी ऊपर कोई आदमी है? "फिर बोला, "काश! मुझे किसानों के बजाए किसी और ने क़त्ल किया होता।" इस के बाद कहने लगा, "मुझे बताओ, आज जीत किस की हुई?" हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० ने फ़रमाया अल्लाह और उस के रसूल की। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद से------जो उसकी गरदन पर पावं रख चुके थे-------कहने लगा, ओ बकरी के चरवाहे! तू बड़ी ऊंची और मुश्किल जगह पर चढ़ गया-----स्पष्ट रहे कि अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० मक्के में बकरियां चराया करते थे।

इस बातचीत के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० ने उसका सिर काट लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में लाकर हाज़िर करते हुए अर्ज़ किया-------"ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह रहा अल्लाह के दुश्मन

9) मआज़ बिन अम्र बि जमूह हज़रत उसमान (रज़ि०) की ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे।

अबू जहल का सिर," आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार फ़रमाया, "वाक़ई, उस अल्लाह की क़सम जिस के सिवा कोई माबूद नहीं।" उस के बाद फ़रमाया

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ

"अल्लाहु अकबर! तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपना वायदा सच कर दिखाया, अपने बंदे की मदद फ़रमाई और अकेले सारे गिरोहों को हराया।"

फिर फ़रमाया, चलो मुझे उस की लाश दिखाओ। हम ने आप को ले जाकर लाश दिखाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "यह इस उम्मत का फ़िरऔन है।"

ईमान के चमकते दृश्य

हज़रत उमैर बिन हम्माम और हज़रत औफ़ बिन हारिस बिन अफ़रा के ईमान भरे कारनामों का उल्लेख पिछले पन्नों में हो चुका है सच तो यह है कि इस लड़ाई में क़दम-क़दम पर ऐसे दृश्य देखने को मिले, जिन में अक़ीदे की ताक़त और सिद्धान्त की दृढ़ता अधिक उभरी हुई थी। इस लड़ाई में बाप और बेटे में, भाई और भाई में मुक़ाबला हुआ, सिद्धान्तों के मतभेद ने तलवारें नंगी करा दीं मज़्लूम और सताए गए लोगों ने ज़ालिम व जाबिर से टकरा कर अपने गुस्से की आग बुझाई।

1. इब्ने इस्हाक़ ने इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, "मुझे मालूम है कि बनू हाशिम वग़ैरह के कुछ लोग ज़बरदस्ती लड़ाई के मैदान में लाए गए हैं, उन्हें हमारी लड़ाई से कुछ लेना-देना नहीं है, इसलिए बनू हाशिम का कोई आदमी किसी के निशाने पर आ जाए, तो वह उसे क़त्ल न करे और अबुल बुख़्तरी बिन हिशाम किसी के निशाने पर आ

जाए तो वह उसे क़त्ल न करे और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब किसी के निशाने पर आ जाएं तो वह भी उन्हें क़त्ल न करे, क्योंकि वे ज़बरदस्ती लाए गए हैं।'' इस पर उत्बा के पुत्र हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, ''क्या हम अपने बाप, बेटों, भाइयों और कुंबे-क़बीले के लोगों को क़त्ल करेंगे और अब्बास को छोड़ देंगे। ख़ुदा की क़सम! अगर उस से मेरी भिड़न्त हो गयी, तो मैं तो उसे तलवार की लगाम पहना दूंगा।'' यह ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहुंची तो आप ने उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से फ़रमाया, क्या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा के चेहरे पर तलवार मारी जाएगी? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ''ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे छोड़िए, मैं तलवार से उस आदमी की गरदन उड़ा दूं, क्योंकि अल्लाह की क़सम! यह आदमी मुनाफ़िक़ हो गया है।''

बाद में अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० कहा करते थे, उस दिन मैंने जो बात कह दी थी, उस की वजह से मुझे सन्तोष नहीं है, बराबर डर लगा रहता है, सिर्फ़ यही शक्ल है कि मेरी शहादत इस का कफ़्फ़ारा बन जाए और आख़िर में वह यमामा की लड़ाई में शहीद हो ही गए।

2. अबुल बुख़्तरी को क़त्ल करने से इसलिए मना किया गया था कि मक्का में यह आदमी सब से ज़्यादा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट पहुंचाने से अपना हाथ रोके हुए था, आप को किसी तरह का कष्ट न पहुंचाता था और न उस की ओर से कोई अप्रिय बात सुनने में आती थी और यह उन लोगों में से था जिन्होंने बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के बहिष्कार का कागज़ चाक कर दिया था।

लेकिन इन सब के बावजूद अबुल बख़्तरी क़त्ल कर दिया गया। हुआ यह कि हज़रत मुज्ज़र रज़ि० बिन ज़ियाद बलवी से उस की मुठभेड़ हो गयी। उस के साथ उस का एक और साथी भी था। दोनों साथ-साथ

लड़ रहे थे। हज़रत मज्ज़र रज़ि० ने कहा, "अबुल बख़्तरी! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें आप को क़त्ल करने से मना किया है।" उस ने कहा, और मेरा साथी? हज़रत मज्ज़र ने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! हम आप के साथी को नहीं छोड़ सकते। उस ने कहा, अल्लाह की क़सम! तब मैं और वह दोनों मरेंगे। इस के बाद दोनों ने लड़ाई शुरू कर दी। मज्ज़र रज़ि० ने मजबूर होकर उसे भी क़त्ल कर दिया।

3. मक्के के अंदर अज्ञानता-युग से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और उमैया बिन ख़ल्फ़ में आपस में दोस्ती थी। बद्र की लड़ाई के दिन उमैया अपने लड़के अली का हाथ पकड़े खड़ा था कि इतने में उधर से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का गुज़र हुआ। वह दुश्मन से कुछ ज़िरहें छीन कर लादे लिए जा रहे थे। उमैया ने उन्हें देख कर कहा, "क्या तुम्हें मेरी ज़रूरत है? मैं तुम्हारी इन ज़िरहों से बेहतर हूं। आज जैसा दृश्य तो मैंने देखा ही नहीं, क्या तुम्हें दूध की ज़रूरत नहीं?"---- मतलब यह था कि जो मुझे क़ैद करेगा, मैं उसे फ़िदये में ख़ूब दुधैल ऊंटनियां दूंगा------यह सुन कर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने ज़िरहें फेंक दीं और दोनों को गिरफ़्तार कर के आगे बढ़े।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं कि मैं उमैया और उस के बेटे के दर्मियान चल रहा था कि उमैया ने पूछा, आप लोगों में वह कौन सा आदमी था जो अपने सीने पर शुतुरमुर्ग का पर लगाये हुए था? मैंने कहा, वह हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब थे। उमैया ने कहा, यही आदमी है जिस ने हमारे अंदर तबाही मचा रखी थी।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह की क़सम मैं इन दोनों को लिए जा रहा था कि अचानक हज़रत बिलाल रज़ि० ने उमैया को मेरे साथ देख लिया----याद रहे कि उमैया हज़रत बिलाल रज़ि० को मक्के में सताया करता था------हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, ओहो!

कुफ़्फ़ार का चीफ़ उमैया बिन ख़ल्फ़! अब या तो मैं बचूंगा या यह बचेगा। मैंने कहा, ऐ बिलाल रज़ि०! यह मेरा क़ैदी है। उन्होंने कहा, अब या तो मैं रहूंगा या यह रहेगा, फिर बड़ी ऊंची आवाज़ से पुकारा, "ऐ अल्लाह के अंसारो! यह रहा कुफ़्फ़ार का चीफ़ उमैया बिन ख़ल्फ़, अब या तो मैं रहूंगा या यह रहेगा।" हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं कि इतने में लोगों ने हमें कंगन की तरह घेरे में ले लिया। मैं उन का बचाव कर रहा था, मगर एक आदमी ने तलवार सौंत कर उस के बेटे के पांव पर चोट लगाई और वह चकरा कर गिर गया। उधर उमैया ने इतने ज़ोर की चीख मारी की मैं ने वैसी चीख़ कभी सुनी ही न थी। मैंने कहा, निकल भागो, मगर आज भागने की गुंजाइश नहीं अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० का बयान है कि लोगों ने अपनी तलवारों से इन दोनों को काट कर इन का काम ख़त्म कर दिया। इस के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहा करते थे कि, "अल्लाह बिलाल रज़ि० पर रहम करे, मेरी ज़िरहें भी गयीं और मेरे क़ैदी के बारे में मुझे तड़पा भी दिया।"

ज़ादुल मआद में अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने उमैया बिन ख़ल्फ़ से कहा कि घुटनों के बल बैठ जाओ। वह बैठ गया और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने अपने आप को उस के ऊपर डाल लिया, लेकिन लोगों ने नीचे से तलवार मार कर उमैया को क़त्ल कर दिया। कुछ तलवारों से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का पांव भी घायल हो गया।[10]

4. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने अपने मामूं आस बिन हिशाम बिन मुग़ीरह को क़त्ल किया।

---

10) ज़ादुल-मआद 2/89 बुख़ारी किताबुल-वकाला 1/308 में यह घटना तफ़सील के साथ दी हुई है।

5. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अपने बेटे अब्दुर्रहमान को------जो उस वक़्त मुश्रिकों के साथ थे,------पुकार कर कहा, ओ ख़बीस! मेरा माल कहां है? अब्दुर्रहमान ने कहा,

لم يبق غير شكة ويعبوب وصارم يقتل ضلال الشيب

"हथियार, तेज़ दौड़ने वाले घोड़े और इस तलवार के सिवा कुछ बाक़ी नहीं, जो बुढ़ापे की गुमराही का अंत करती है।"

6. जिस वक़्त मुसलमानों ने मुश्रिकों की गिरफ़्तारी शुरू की, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छप्पर में तश्रीफ़ रखते थे और हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० तलवार लिए दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि हज़रत साद रज़ि० के चेहरे पर लोगों की इस हरकत का नागवार असर पड़ रहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ साद! अल्लाह की क़सम! ऐसा महसूस होता है कि तुम को मुसलमानों का यह काम ना पसंद है।" उन्हों ने कहा, "जी हां! अल्लाह की क़सम, ऐ अल्लाह के रसूल! यह शिरक वालों के साथ पहली लड़ाई है जिस का मौक़ा अल्लाह ने हमें दिया है, इसलिए शिरक वालों को बाक़ी छोड़ने के बजाए मुझे यह बात ज़्यादा पसंद है कि उन्हें ख़ूब क़त्ल किया जाए और अच्छी तरह कुचल दिया जाए।"

7. इस लड़ाई में हज़रत उकाशा बिन मेहसिन असदी रज़ि० की तलवार टूट गयी। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लकड़ी का एक फट्टा उन्हें थमा दिया और फ़रमाया, उकाशा! इसी से लड़ाई करो। उकाशा रज़ि० ने उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लेकर हिलाया, तो वह एक लम्बी, मज़बूत और चमचम करती हुई सफ़ेद तलवार में तब्दील हो गया, फिर उन्होंने उसी से लड़ाई की, यहां तक

कि अल्लाह ने मुसलमानों को जीत दिलाई। इस तलवार का नाम औन------ यानी मदद------रखा गया था। यह तलवार बराबर हज़रत उकाशा रज़ि० के पास रही और वह उसी को लड़ाइयों में इस्तेमाल करते रहे, यहां तक कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के दौर में विधर्मियों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ते हुए शहीद हो गए। उस वक़्त भी यह तलवार उन के पास ही थी।

8. लड़ाई ख़त्म होने के बाद हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर अ़बदरी रज़ि० अपने भाई अबू अ़ज़ीज़ बिन उमैर अ़ब्दरी के पास से गुज़रे। अबू अज़ीज़ ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी थी और उस वक़्त एक अंसारी सहाबी उस का हाथ बांध रहे थे। हज़रत मुस्अ़ब रज़ि० ने उस अंसारी से कहा, "इस आदमी के ज़रिए अपने हाथ मज़बूत करना, इस की मां बड़ी मालदार है वह शायद तुम्हें अच्छा फ़िदया देगी।" इस पर अबू अ़ज़ीज़ ने अपने भाई मुस्अ़ब रज़ि० से कहा, क्या मेरे बारे में तुम्हारी यही वसीयत है? हज़रत मुस्अ़ब रज़ि० ने फ़रमाया, (हां!) तुम्हारे बजाए यह—अंसारी—मेरा भाई है।

9. जब मुश्रिकों की लाशों को कुएं में डालने का हुक्म दिया गया और उत्बा बिन रबीआ़ को कुएं की तरफ़ घसीट कर ले जाया जाने लगा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के सुपुत्र हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० के चेहरे पर नज़र डाली, देखा तो दुखी थे, चेहरा बदला हुआ था। आप ने फ़रमाया, "अबू हुज़ैफ़ा! शायद अपने बाप के सिलसिले में तुम्हारे दिल के अंदर कुछ विचार है?" उन्होंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे भीतर अपने बाप के बारे में और उन के क़त्ल के बारे में तनिक भी कपकपाहट नहीं, अलबत्ता मैं अपने बाप के बारे में जानता था कि इन में सूझ-बूझ है, दूरदर्शिता और दृढ़ता है। इसलिए मैं आशा लगाए बैठा था कि ये ख़ूबियां इन्हें इस्लाम तक पहुंचा देंगी, लेकिन अब उन का

अंजाम देख कर और अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ कुफ़्र पर उनका ख़ात्मा देख कर मुझे अफ़सोस है।" इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० के हक़ में ख़ैर की दुआ फ़रमाई और उन से भली बात कही।

दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग

यह लड़ाई, मुश्रिकों की ज़बरदस्त हार और मुसलमानों की खुली जीत पर ख़त्म हुई और उस में चौदह मुसलमान शहीद हुए, छः मुहाजिरों में से और आठ अंसार में से, लेकिन मुश्रिकों को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। उन के सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर क़ैद किए गए जो आम तौर से रहनुमा, सरदार और बड़े-बड़े चोटी के लोग थे।

लड़ाई का अंत होने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़त्ल किए गए लोगों के पास खड़े हो कर फ़रमाया, "तुम लोग अपने नबी के लिए कितना बुरा कुंबा और क़बीला थे तुम ने मुझे झुठलाया, जबकि औरों ने मेरी तस्दीक़ की। तुम ने मुझ को बे यार व मददगार छोड़ा, जबकि औरों ने मेरा समर्थन किया, तुम ने मुझे निकाला, जब कि औरों ने मुझे पनाह दी।" इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया और उन्हें घसीट कर बद्र के एक कुएं में डाल दिया गया।

हज़रत अबू तलहा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से बद्र के दिन कुरैश के चौबीस बड़े-बड़े सरदारों की लाशें बद्र के एक गंदे ख़बीस कुएं में फेंक दी गयीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि आप जब किसी क़ौम पर विजय प्राप्त करते तो तीन दिन लड़ाई के मैदान में ठहरते। चुनांचे जब बद्र में तीसरा दिन आया, तो आप के हुक्म के मुताबिक़ आप की सवारी पर कजावा कसा गया। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदल चले और पीछे-पीछे सहाबा किराम रज़ि० भी चले, यहां तक कि आप

कुंए की बार (दीवार) पर खड़े हो गए, फिर उन्हें उन का और उन के बाप का नाम ले लेकर पुकारना शुरू किया, ऐ फ़लां बिन फ़लां और ऐ फ़लां बिन फ़लां! क्या तुम्हें यह यह ख़्याल आता है कि तुम ने अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअ़त की होती? क्योंकि हम से हमारे पालनहार ने जो वायदा किया था उसे हम ने सही पाया तो क्या तुम से तुम्हारे रब ने जो वायदा किया था उसे तुम ने सही पाया? हज़रत उमर रज़ि० ने अ़र्ज़ किया, ऐ अ़ल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप ऐसे जिस्मों से क्या बातें कर रहे हैं, जिन में प्राण ही नहीं? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जान है, मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे तुम लोग इन से ज़्यादा नहीं सुन रहे हो और एक रिवायत में है कि तुम लोग इन से ज़्यादा सुनने वाले नहीं, लेकिन ये लोग जवाब नहीं दे सकते।[11]

मक्का में हारने की ख़बर

मुश्रिकों ने बद्र के मैदान से बिखरे तौर पर भागते हुए, तित्तर-बित्तर होकर घबराहट की हालत में मक्का का रुख़ किया। लज्जा और शर्म के कारण उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस तरह मक्का में दाख़िल हों।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि सब से पहले जो आदमी क़ुरैश के हारने की ख़बर लेकर मक्का आया, वह हैसमान बिन अब्दुल्लाह खुज़ाई था। लोगों ने उस से मालूम किया कि पीछे की क्या ख़बर है? उस ने कहा, उत्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, अबुल हकम बिन हिशाम, उमैया बिन ख़ल्फ़-----और कुछ और सरदारों का नाम लेते हुए----ये सब क़त्ल कर दिए गए। जब उस ने क़त्ल किए गए लोगों की सूची में क़ुरैश के बड़ों को गिनाना शुरू किया तो सफ़वान बिन उमैया ने, जो हतीम में

11) मुत्तफ़क़ अलैहि, मिश्कात 2/345

बैठा था, कहा, अल्लाह की क़सम! अगर यह होश में है तो इस से मेरे बारे में पूछो। लोगों ने पूछा, सफ़वान बिन उमैया का क्या हुआ? उस ने कहा, वह तो वह देखो, हतीम में बैठा हुआ है। अल्लाह की क़सम! उस के बाप और उस के भाई को क़त्ल होते हुए मैंने ख़ुद देखा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मौला अबू राफ़ेअ़ का बयान है कि मैं उन दिनों हज़रत अ़ब्बास रज़ि० का दास था। हमारे घर में इस्लाम दाख़िल हो चुका था। हज़रत अब्बास रज़ि० मुसलमान हो चुके थे, उम्मुल फ़ज़्ल रज़ि० मुसलमान हो चुकी थीं, मैं भी मुसलमान हो चुका था, अलबत्ता हज़रत अब्बास रज़ि० ने अपना इस्लाम छिपा रखा था। इधर अबू लहब बद्र की लड़ाई में हाज़िर न हुआ था। जब उसे ख़बर मिली, तो अल्लाह ने उस पर ज़िल्लत और रुस्वाही फैला दी थी और हमें अपने अंदर ताक़त और इज़्ज़त महसूस हुई। मैं कमज़ोर आदमी था, तीर बनाया करता था और ज़मज़म के हुजरे में बैठा तीर के दस्ते छीलता रहता था। अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मैं हुजरे में बैठा अपने तीर छील रहा था। मेरे पास उम्मुल फ़ज़्ल बैठी हुई थीं और जो ख़बर आई थी उस से हम बहुत ख़ुश थे कि इतने में अबू लहब अपने दोनों पांव बुरी तरह घसीटता हुआ आ पहुंचा और हुजरे के किनारे पर बैठ गया। उस की पीठ मेरी पीठ की तरफ़ थी। अभी वह बैठा ही हुआ था कि अचानक शोर हुआ। अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब आ गया। अबू लहब ने उस से कहा, मेरे पास आओ। मेरी उम्र की क़सम! तुम्हारे पास ख़बर है। वह अबू लहब के पास बैठ गया। लोग खड़े थे, अबू लहब ने कहा, भतीजे बताओ, लोगों का क्या हाल रहा? उस ने कहा, कुछ नहीं, बस लोगों से हमारी मुठभेड़ हुई और हम ने अपने कंधे उन के हवाले कर दिए। वह हमें जैसे चाहते थे, क़त्ल करते थे और जैसे चाहते थे, क़ैद करते थे। और अल्लाह की क़सम! मैं इस के बावजूद लोगों की निंदा नहीं कर सकता। हक़ीक़त में हमारी

मुडभेड़ कुछ ऐसे गोरे-चिट्टे लोगों से हुई थी जो आसमान व ज़मीन के बीच चितकबरे घोड़ों पर सवार थे। अल्लाह की क़सम! न वह किसी चीज़ को छोड़ते थे और न कोई चीज़ उन के मुक़ाबले में टिक सकती थी।

अबू राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं कि मैंने अपने हाथ से ख़ेमे का किनारा उठाया, फिर कहा वे, अल्लाह की क़सम! फ़रिश्ते थे? यह सुन कर अबू लहब ने अपना हाथ उठाया और मेरे चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। मैं उस से लड़ पड़ा, लेकिन उस ने मुझे उठा कर ज़मीन पर पटक दिया। फिर मेरे ऊपर घुटने के बल बैठ कर मुझे मारने लगा। मैं कमज़ोर जो ठहरा, लेकिन इतने में उम्मुल फ़ज़्ल ने उठ कर ख़ेमे का एक खम्बा लिया और उसे ऐसी चोट मारी कि सर में बुरी तरह चोट आ गयी और साथ ही बोलीं, इस का मालिक नहीं है, इसलिए इसे कमज़ोर समझ रखा है? अबू लहब रुस्वा हो कर उठा और चला गया। इस के बाद अल्लाह की क़सम! सिर्फ़ सात रातें गुज़ारी थीं कि अल्लाह ने उसे अदसा (एक प्रकार के प्लेग) का शिकार बना दिया और उस का अंत कर दिया। अदसा की गिलटी को अरब बहुत मनहूस समझते थे, चुनांचे (मरने के बाद) उस के बेटों ने भी उसे यूं ही छोड़ दिया और वह तीन दिन कफ़न दफ़न बिना पड़ा रहा। कोई उस के क़रीब न जाता था और न उसे दफ़नाने की कोशिश करता था। जब उस के बेटों को ख़तरा महसूस हुआ, कि इस तरह छोड़ने पर लोग उन की निन्दा करेंगे, तो एक गढ़ा खोद कर उसी में लकड़ी से उसकी लाश ढकेल दी और दूर ही से पत्थर फेंक-फेंक कर छिपा दी।

ग़रज़ इस तरह मक्का वालों को बद्र के मैदान की ज़बरदस्त हार की ख़बर मिली और उन की तबीयत पर उस का बहुत बुरा असर पड़ा, यहां तक कि उन्होंने क़त्ल किए गए लोगों पर नौहः (शोक गीत) करने से रोक दिया, ताकि मुसलमानों को उन के ग़म पर ख़ुश होने का मौक़ा न मिले।

इस सिलसिले की एक रोचक घटना यह है कि ब्रद की लड़ाई में अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब के तीन बेटे मारे गए, इसलिए वह उन पर रोना चाहता था, वह अंधा आदमी था। एक रात उस ने एक नौहा (शोक गीत) करने वाली औरत की आवाज़ सुनी, झट अपने दास को भेजा और कहा, ''तनिक देखो क्या नौहा की इजाज़त मिल गई है? क्या कुरैश अपने क़त्ल किए गए लोगों पर रो रहे हैं, ताकि मैं भी-----अपने बेटे------अबू हकीमा पर रोऊं, क्योंकि मेरा सीना जल रहा है।'' दास ने वापस आकर बताया कि यह औरत तो अपने एक गुमशुदा ऊंट पर रो रही है। अस्वद यह सुन कर अपने आप पर क़ाबू न पा सका और बे-इख़्तियार कह पड़ा।

اتبکی ان یضل لھابعیر ويمنعها من النوم السهود

فلاتبکی علی بکر ولکن علی بدر تقاصرت الجدود

علی بدر سراة بن هصیص ومخزوم ورهط ابی الولید

وبکی ان بکیت علی عقیل وبکی حارثا اسد الاسود

وبکیهم ولا تسمی جمیعا ومالابی حکیمة من ندید

الاقد ساد بعد هم رجال ولو لا یوم بدر لم یسودوا

''क्या वह इस बात पर रोती है कि उसका ऊंट ग़ायब हो गया? और उस पर अनिद्रा ने उस की नींद हराम कर रखी है? तू ऊंट पर न रो, बल्कि ब्द्र पर रो, जहां भाग्य फूट गए। हां, हां, बद्र पर रो जहां बनी हसीस, बनी मख़्ज़ूम और अबुल वलीद के क़बीले के चोटी के लोग हैं। अगर रोना ही है तो अक़ील पर रो और हारिस पर रो, जो शेरों का शेर था, तू उन लोगों पर रो और सब का नाम न ले और अबू हकीमा का तो कोई मुक़ाबिल ही न था। देखो! इन के बाद ऐसे-ऐसे लोग सरदार हो गए कि अगर बद्र का दिन न होता तो वे सरदार न हो सकते थे।''

मदीना में विजय की शुभ सूचना

इधर मुसलमानों की विजय पूरी हो चुकी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना वालों को जल्द से जल्द खुशख़बरी देने के लिए दो दूत भेजे। एक हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि०, जिन्हें ऊपरी मदीना के वासियों के पास भेजा गया था और दूसरे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० जिन्हें निचले मदीना के वासियों के पास भेजा गया था।

इस बीच यहूदियों और मुनाफ़िक़ों ने झूठ प्रचार कर के मदीना में हलचल पैदा कर रखी थी, यहां तक कि यह ख़बर भी उड़ा रखी थी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए हैं, चुनांचे जब एक मुनाफ़िक़ ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी कुसवा पर सवार आते देखा तो बोल पड़ा, "वाक़ई मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए हैं। देखो! यह तो उन्हीं की ऊंटनी है, हम इसे पहचानते हैं और यह ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) है, हार कर भागा है और इतना रोब खाए हुए है कि उसकी समझ में नहीं आता कि क्या कहे।" बहरहाल जब दोनों दूत पहुंचे तो मुसलमानों ने उन्हें घेर लिया और उन से पूरा विवरण सुनने लगे, यहां तक कि उन्हें विश्वास हो गया कि मुसलमान जीते हैं। इस के बाद हर ओर खुशी और प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी और मुसलमानों के घर और कोठे "ला इला-ह इल्लल्लाह" और अल्लाहु अकबर के नारों से गूंज उठे और जो बड़े मुसलमान मदीना में रह गए थे, वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस खुली विजय की बधाई देने के लिए बद्र के रास्ते पर निकल पड़े।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० का बयान है कि हमारे पास उस वक़्त ख़बर पहुंची जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत रुक़ैया रज़ि० को, जो हज़रत उस्मान रज़ि० के निकाह में

थीं, दफ़न कर के क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुके थे। उन की देख भाल के लिए हज़रत उस्मान रज़ि० के साथ मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना ही में छोड़ दिया था।

ग़नीमत के माल का मस्अला

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लड़ाई ख़त्म होने के बाद तीन दिन बद्र में ठहरे रहे और अभी आप लड़ाई के मैदान से चले भी नहीं थे कि ग़नीमत के माल के बारे में सेनां में मतभेद हो गया। और जब यह मतभेद बहुत बढ़ गया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि जिस के पास जो कुछ है वह आप के हवाले कर दे और इस के बाद अल्लाह ने वह्य के ज़रिए इस समस्या का हल उतारा।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० का बयान है कि हम लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदीना से निकले और बद्र में पहुंचे। लोगों से लड़ाई हुई और अल्लाह ने दुश्मन को परास्त कर दिया फिर एक गिरोह उन के पीछे लग गया और उन्हें खदेड़ने और क़त्ल करने लगा। एक गिरोह ग़नीमत के माल पर टूट पड़ा और उसे बटोरने और समेटने लगा और एक गिरोह ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चारों ओर घेरा डाले रखा कि दुश्मन धोखे से आप को कोई कष्ट न पहुंचा दे। जब रात आयी और लोग पलट-पलट कर एक दूसरे के पास पहुंचे तो ग़नीमत का माल जमा करने वालों ने कहा कि हम ने इसे जमा किया है, इसलिए इस में किसी और का कोई हिस्सा नहीं। दुश्मन का पीछा करने वालों ने कहा, तुम लोग हम से बढ़ कर इस के हक़दार नहीं, क्योंकि इस माल से दुश्मन को भगाने और दूर रखने का काम हम ने किया था और जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त फ़रमा रहे थे। उन्होंने कहा, हमें यह ख़तरा था कि दुश्मन आप को ग़फ़लत में पा कर कोई कष्ट न पहुंचा दे, इसलिए

हम आप की हिफ़ाज़त में लगे रहे, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

"लोग आप से ग़नीमत के माल के बारे में पूछते हैं, कह दो, ग़नीमत अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है। पस अल्लाह से डरो और अपने आपसी संबंधों में सुधार कर लो और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फ़रमांबरदारी करो, अगर सच में तुम लोग ईमान वाले हो।" (8:1)

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़नीमत के माल को मुसलमानों के बीच बांट दिया।[12]

इस्लामी सेना मदीना के रास्ते में:

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन दिन बद्र में ठहर कर मदीना के लिए चल पड़े। आप के साथ मुश्रिक क़ैदी भी थे और मुश्रिकों से हासिल किया हुआ ग़नीमत का माल भी। आप ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब रज़ि० को इस की निगरानी सौंपी थी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़रा घाटी में दर्रे से बाहर निकले तो दर्रे और नाज़िया के दर्मियान एक टीले पर पड़ाव डाला और वहीं ख़ुमुस (पांचवां हिस्सा) अलग करके बाक़ी ग़नीमत का माल मुसलमानों में बराबर-बराबर बांट दिया।

और सफ़रा घाटी ही में आप ने हुक्म फ़रमाया कि नज़्र बिन हारिस को क़त्ल कर दिया जाए, उस आदमी ने बद्र की लड़ाई में मुश्रिकों का झंडा उठा रखा था और यह क़ुरैश के बड़े अपराधियों में से था। इस्लाम से दुश्मनी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा

12) मुस्नद अहमद 5/323-324, हाकिम 2/326

पहुंचाने में हद दर्जा आगे बढ़ा हुआ था। आप के हुक्म पर हज़रत अली रज़ि० ने उस की गरदन मार दी।

इस के बाद जब आप अ़र्कुज़्ज़बीया पहुंचे तो उक़्बा बिन अबी मुईत के क़त्ल का हुक्म दे दिया। यह आदमी जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा पहुंचाया करता था, इस का कुछ ज़िक्र पीछे बीत चुका है, यही आदमी है जिस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पीठ पर नमाज़ की हालत में ऊंट की ओझ डाली थी, और उसी आदमी ने आप की गंदन पर चादर लपेट कर आप को क़त्ल करना चाहा था और अगर अबू बक्र रज़ि० वक़्त पर न आ गए होते तो उसने (अपनी समझ से तो) आप का गला घोंट कर मार ही डाला था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के क़त्ल का हुक्म दिया, तो कहने लगा, "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! बच्चों के लिए कौन है?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आग[1]। इस के बाद हज़रत आ़सिम बिन साबित अंसारी रज़ि० ने ----और कहा जाता है कि हज़रत अली रज़ि० ने- --उस की गरदन उड़ा दी।

सामरिक दृष्टि से इन दोनों ताग़ूतों (सब से बुरे सरकश) का क़त्ल किया जाना ज़रूरी था, क्योंकि ये सिर्फ़ जंगी क़ैदी न थे, बल्कि आज के पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से सामरिक (जंगी) अपराधी भी थे।

मुबारकबाद देने वाले प्रतिनिधि मंडल

इस के बाद जब आप रौहा नामी जगह पर पहुंचे तो उन मुसलमान "बड़ों" से मुलाक़ात हुई जो दोनों दूतों से जीत की अच्छी ख़बर सुन कर आप का स्वागत करने और आप को जीत की मुबारकबाद पेश करने के लिए मदीना से निकल पड़े थे। जब उन्होंने मुबारकबाद पेश की, तो हज़रत सलमा बिन सलामा रज़ि० ने कहा, आप लोग हमें काहे की मुबारकबाद दे रहे हैं, हमारा टकराव तो अल्लाह की क़सम! गंजे सर के

---

(1) यह हदीस सिहाहे सित्ता में है देखिए अबू दाऊद तथा शरह औनुल मअबूद ?/12

बूढ़ों से हुआ था जो ऊंट जैसे थे।" इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुस्कुरा कर फ़रमाया, भतीजे! यही लोग क़ौम के बड़े थे।

इस के बाद हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह का शुक्र है कि उस ने आप को कामियाबी दी और आप की आंखों को ठंडक बख़्शी, अल्लाह की क़सम! मैं यह समझते हुए बद्र से पीछे न रहा था कि आप का टकराव दुश्मन से होगा। मैं तो समझ रहा था कि बस क़ाफ़िले का मामला है और अगर मैं यह समझता कि दुश्मन से वास्ता पड़ेगा तो मैं पीछे न रहता।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सच कहते हो।

इस के बाद आप मदीना मुनव्वरा में इस तरह कामियाबी के साथ दाख़िल हुए कि शहर और पास-पड़ोस के सारे दुश्मनों पर आप की धाक बैठ चुकी थी। इस विजय के प्रभाव से मदीना के बहुत से लोग मुसलमान हो गए और इसी मौक़े पर अब्दुल्लाह बिन उबई और उस के साथियों ने भी दिखाने के लिए इस्लाम अपना लिया।

आप के मदीना तशरीफ़ लाने के एक दिन बाद क़ैदियों का आना शुरू हुआ। आप ने उन्हें सहाबा किराम रज़ि० में बांट दिया और उन के साथ सद्-व्यवहार की वसीयत फ़रमाई। इस वसीयत का नतीजा यह था कि सहाबा किराम रज़ि० ख़ुद खजूर खाते थे, लेकिन क़ैदियों को रोटी पेश करते थे। (स्पष्ट रहे कि मदीने में खजूर बेहैसियत चीज़ थी और रोटी ख़ासी महंगी)

क़ैदियों का मामला

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुंच गए तो आप ने सहाबा किराम रज़ि० से क़ैदियों के बारे में मश्वरा किया, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम! ये लोग चचेरे भाई और कुंबे-क़बीले के लोग है मेरी राय है कि आप इन से फ़िदया ले लें। इस तरह जो कुछ हम लेंगे वह कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ हमारी ताक़त का ज़रिया होगा और यह भी संभव हैं, कि अल्लाह इन्हें हिदायत दे दे और वे हमारे बाज़ू बन जाएं।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इब्ने ख़त्ताब! तुम्हारी क्या राय हैं? उन्होंने कहा, "अल्लाह की क़सम! मेरी वह राय नहीं है जो अबू बक्र रज़ि० की है। मेरी राय यह है कि आप फ़लां को——(जो हज़रत उमर रज़ि० का क़रीबी था)——मेरे सुपुर्द कर दें और मैं उस की गर्दन मार दूं। अक़ील बिन अबी तालिब को अली रज़ि० के हवाले करें और वह उस की गर्दन मार दें और फ़लां को जो हमज़ा रज़ि० का भाई है, हमज़ा रज़ि० के हवाले कर दें और वह उस की गर्दन मार दें, यहां तक कि अल्लाह को मालूम हो जाए कि हमारे दिलों में मुश्रिकों के लिए कोई नर्मी नहीं है और ये लोग मुश्रिकों के बड़े इमाम और नेता हैं।"

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बक्र रज़ि० की बात पसंद फ़रमाई और मेरी बात पसंद नहीं फ़रमाई, चुनांचे क़ैदियों से फ़िदया लेना तय कर लिया। इस के बाद जब अगला दिन आया तो मैं सुबह ही सुबह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबू बक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वे दोनों रो रहे थे। मैंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे बताएं आप और आप के साथी क्यों रो रहे है? अगर मुझे भी रोने की वजह मिली तो रोऊंगा। और अगर न मिल सकी तो आप हज़रात के रोने की वजह से रोऊंगा।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "फ़िदया क़ुबूल करने की वजह से तुम्हारे साथियों पर जो चीज़ पेश की गई हैं उसी की वजह से रो रहा हूं।" और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक क़रीबी

पेड़ की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया, मुझ पर उन का अज़ाब इस पेड़ से भी ज़्यादा क़रीब पेश किया गया।[14]

और अल्लाह ने यह आयत उतारी------

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَا اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝

"किसी नबी के लिए दुरुस्त नहीं कि उस के पास क़ैदी हों, यहां तक कि वह ज़मीन में अच्छी तरह ख़ून-बहा कर ले। तुम लोग दुनिया का सामान चाहते हो और अल्लाह आख़िरत चाहता है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। अगर अल्लाह की ओर से लिखा आगे न हो चुका होता तो तुम लोगों ने जो कुछ लिया है, उस पर तुम को कड़ा अज़ाब पकड़ लेता।" (8:67-68)

और अल्लाह की ओर से जो लिखा आगे हो चुका था, वह यह था;

فَاِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً

"मुश्रिकों को लड़ाई में क़ैद करने के बाद या तो एहसान करो या फ़िदया ले लो।" (47:4)

चूंकि इस लेख में क़ैदियों से फ़िदया लेने की इजाज़त दी गयी है, इसलिए सहाबा किराम को फ़िदया क़ुबूल करने पर सज़ा नहीं दी गयी, बल्कि सिर्फ़ धमकी दी गई है और यह भी इसलिए कि उन्होंने कुफ़्फ़ार को अच्छी तरह कुचलने से पहले क़ैदी बना लिया था और इसलिए भी कि उन्होंने ऐसे-ऐसे लड़ाई के अपराधियों से फ़िद्या लेना क़ुबूल कर लिया था जो सिर्फ़ जंगी क़ैदी न थे, बल्कि लड़ाई के ऐसे बड़े अपराधी थे जिन्हें आज का क़ानून भी मुक़दमा चलाए बिना नहीं

---

14) तारीख़ उमर बिन अल-ख़त्ताब इब्ने जौज़ी 36

छोड़ता, और जिन के बारे में मुक़दमे का फ़ैसला आम तौर से मौत की सज़ा या उम्र क़ैद की शक्ल में ज़ाहिर होता है

बहरहाल चूंकि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की राय के मुताबिक़ मामला तय हो चुका था, इसलिए मुश्रिकों से फ़िद्या लिया गया। फ़िद्ये की मात्रा चार हज़ार और तीन हज़ार दिरहम से लेकर एक हज़ार दिरहम तक थी। मक्का के लोग लिखना पढ़ना भी जानते थे, जबकि मदीना वाले लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे, इसलिए यह भी तय किया गया कि जिसके पास फ़िद्या न हो, वह मदीने के दस-दस बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखा दे। जब ये बच्चे अच्छी तरह सीख जाएं तो यही उस का फ़िद्या होगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई क़ैदियों पर एहसान भी फ़रमाया और उन्हें फ़िद्या लिए बिना आज़ाद कर दिया। इस सूची में मुत्तलिब बिन हंतब, सैफ़ी बिन अबी रिफ़ाआ और अबू उज़्ज़ा जुमही के नाम आते हैं। अबू उज़्ज़ा जुमही को बाद में उहद की लड़ाई में क़ैद और क़त्ल किया गया। (सविस्तार विवरण आगे आ रहा है)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दामाद अबुल आस को भी इस शर्त पर बिला फ़िद्या छोड़ दिया कि वह हज़रत ज़ैनब रज़ि० की राह न रोकेंगे। इस की वजह यह हुई कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने अबुल आस के फ़िद्ये में कुछ माल भेजा था जिस में एक हार भी था। यह हार हक़ीक़त में हज़रत ख़दीजा रज़ि० का था और जब उन्होंने हज़रत ज़ैनब रज़ि० को अबुल आस के पास विदाअ किया था, तो यह हार उन्हें दे दिया था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे देखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल भर आया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० से इजाज़त चाही कि अबुल आस को छोड़ दें। सहाबा रज़ि० ने इसे दिल से मान लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल आस

को इस शर्त पर छोड़ दिया कि वह हज़रत ज़ैनब रज़ि० का रास्ता छोड़ देंगे। चुनांचे हज़रत अबुल आस ने उन का रास्ता छोड़ दिया और हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने हिजरत फ़रमायी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० और एक अंसारी सहाबी को भेज दिया कि तुम दोनों बत्ने याजज में रहना। जब ज़ैनब रज़ि० तुम्हारे पास से गुज़रें तो साथ हो लेना। ये दोनों तशरीफ़ ले गए और हज़रत ज़ैनब रज़ि० को साथ लेकर मदीना वापस आए। हज़रत ज़ैनब रज़ि० की हिजरत की घटना बड़ी लम्बी और दुखद है।

क़ैदियों में सुहैल बिन अ़म्र भी था, जो अच्छी भाषा वाला ख़तीब (वक्ता) था। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! सुहैल बिन अ़म्र के अगले दो दांत तोड़वा दीजिए, उस की ज़ुबान लिपट जाया करेगी और वह किसी जगह ख़तीब बन कर आप के ख़िलाफ़ कभी खड़ा न हो सकेगा।" लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन का यह निवेदन ठुकरा दिया, क्योंकि यह मसूला अंग-भंग के तहत आ जाता है, जिस पर क़ियामत के दिन अल्लाह की ओर से पकड़ का ख़तरा था।

हज़रत साद बिन नोमान रज़ि० उमरा करने के लिए निकले तो उन्हें अबू सुफ़ियान ने क़ैद कर लिया। अबू सुफ़ियान का बेटा अ़म्र भी ग़ज़्वा-ए-बद्र के क़ैदियों में था, चुनांचे अ़म्र को अबू सुफ़ियान के सुपुर्द कर दिया गया और उस ने हज़रत साद रज़ि० को छोड़ दिया।

क़ुरआन की समीक्षा

इसी ग़ज़्वे के ताल्लुक़ से सूरः अन्फ़ाल उतरी जो हक़ीक़त में इस ग़ज़्वे पर अल्लाह की ओर से एक समीक्षा है।——अगर यह बात सहीह है (और निश्चित रूप से सहीह है) तो इसे बादशाहों और कमांडरों आदि के विजय-पूर्ण समीक्षाओं से बिल्कुल ही जुदा होना चाहिए। समीक्षा की कुछ बातें संक्षेप में इस प्रकार हैं——–

अल्लाह ने सब से पहले मुसलमानों का ध्यान उन कोताहियों और नैतिक कमज़ोरियों की ओर खींचा जो उनमें पूरी तरह बाक़ी रह गई थीं और जिनमें कुछ इस मौक़े पर ज़ाहिर हो गई थीं। इस ध्यान दिलाने का अभिप्राय (उद्देश्य) यह था कि मुसलमान अपने आप को इन कमज़ोरियों से पाक-साफ़ कर के बिल्कुल पूरे (मुसलमान) बन जाएं।

इसके बाद इस जीत में अल्लाह की जो ताईद और ग़ैबी मदद शामिल थी, उसका ज़िक्र फ़रमाया। इसका मक़सद यह था कि मुसलमान अपनी वीरता और साहस के धोखे में न आ जाएं, जिसके नतीजे में स्वभाव और तबीअतों का गर्व और अभिमान छा जाता है, बल्कि वे अल्लाह पर भरोसा करें और उस के और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञापालन में लगे रहें।

फिर उन श्रेष्ठ उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है जिनके लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस भयानक और ख़ूनी झगड़े में क़दम रखा था और इसी सिलसिले में उन चरित्र और आचरण को बताया गया है जो लड़ाइयों में जीत की वजह बनती हैं।

फिर मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों को और यहूदियों और लड़ाई के क़ैदियों को सम्बोधित करके ज़ोरदार नसीहत फ़रमाई गई है ताकि वे सत्य के सामने झुक जाएं और उस के पाबंद बन जाएं।

इस के बाद मुसलमानों को माले ग़नीमत के मामले में सम्बोधित करते हुए उन्हें इस मामले के तमाम मौलिक नियम और क़ायदे-क़ानून समझाए और बताए गए हैं।

फिर इस मरहले पर इस्लामी दावत को लड़ाई और समझौते के जिन क़ानूनों की ज़रूरत थी, उनको खोल कर बताया गया है ताकि मुसलमानों की लड़ाई और जाहिलियत वालों की लड़ाई में अंतर स्थापित हो जाए और चरित्र व आचरण के मैदान में मुसलमानों को श्रेष्ठता

मिलती रहे, और दुनिया अच्छी तरह जान ले कि इस्लाम सिर्फ़ एक सिद्धान्त नहीं है बल्कि यह जिन नियमों और सिद्धान्तों की दावत देता है, उन के मुताबिक़ अपने मानने वालों की व्यवहारिक दीक्षा (अमली तर्बियत) भी करता है।

फिर इस्लामी राज्य के कानूनों की कई धाराएं बयान की गई हैं जिन से स्पष्ट होता है कि इस्लामी राज्य के क्षेत्र में बसने वाले मुसलमानों और इस क्षेत्र से बाहर रहने वाले मुसलमानों में क्या अंतर है?

विभिन्न घटनाएं

सन् 02 हि० में रमज़ान का रोज़ा और सदक़ा-ए-फ़ित्र (फ़ितरा) फ़र्ज़ किया गया और ज़कात के निसाब की तफ़्सील तय की गई। सदक़ा-ए-फ़ित्र के फ़र्ज़ किए जाने और ज़कात के निसाब (दरों आदि) के निश्चित किए जाने से इस बोझ और मशक़्क़त में बड़ी कमी आ गयी जिस से ग़रीब मुहाजिरों की एक बड़ी जमाअत दो-चार थी, क्योंकि वे रोज़ी हासिल करने के लिए ज़मीन में दौड़-धूप की सम्भावनाओं से वंचित थे।

फिर बड़ा ही अच्छा अवसर और प्रिय संयोग यह था कि मुसलमानों ने अपनी ज़िंदगी में पहली ईद जो मनाई वह शव्वाल सन् 02 हि० की ईद थी जो बद्र की लड़ाई की खुली जीत के बाद पेश आई। कितनी प्रिय थी यह ईद जिस को मुसलमानों ने विजय प्राप्त करने के बाद मनाई और कितना ईमान भरा था उस ईद की नमाज़ का दृश्य जिसे मुसलमानों ने अपने घरों से निकल कर अल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाह वग़ैरह की आवाज़ें बुलन्द करते हुए मैदान में जाकर अदा किया था। उस वक़्त हालत यह थी कि मुसमलानों के दिल अल्लाह की दी हुई नेमतों और उसकी दी हुई ताईद की वजह से उस की रहमत और रिज़ा के शौक़ से भरे हुए और उस की ओर चाव भरी भावनाओं में डूबे हुए थे और उन के माथे उस शुक्र की अदाएगी के लिए झुके हुए थे।

अल्लाह ने इस नेमत का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया है-----

وَاذْكُرُوٓا۟ إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِى ٱلْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ ٱلنَّاسُ فَـَٔاوَىٰكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِۦ وَرَزَقَكُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

"और याद करो जब तुम थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर बना कर रखे गये थे, डरते थे कि लोग तुम्हें उचक ले जाएंगे, पस उस (अल्लाह) ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद के ज़रिए तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाक चीज़ों से रोज़ी दी ताकि तुम लोग उस का शुक्र अदा करो।" (8:26)

बद्र के बाद की जंगी गतिविधियां

बद्र की लड़ाई मुसलमानों और मुश्रिकों का सब से पहला सशस्त्र टकराव और निर्णायक लड़ाई थी, जिस में मुसलमानों को खुली विजय मिली और सारे अ़रब ने उसे देखा। इस लड़ाई के नतीजों से सब से ज़्यादा वही लोग परेशान थे, जिन्हें सीधे-सीधे यह भारी नुक़्सान सहन करना पड़ा था। यानी मुश्रिक, या वे लोग जो मुसलमानों की जीत को अपने धार्मिक और आर्थिक अस्तित्व के लिए ख़तरा महसूस करते थे, यानी यहूदी। चुनांचे जब से मुसलमानों ने बद्र की लड़ाई में विजय प्राप्त की थी ये दोनों गिरोह मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म व गुस्सा और रंज व दुख से जल भुन रहे थे, जैसा कि इर्शाद है---

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا

"तुम ईमान वालों का सब से ज़बरदस्त दुश्मन यहूदियों को पाओगे और मुश्रिकों को।" (5:82)

मदीना में कुछ लोग इन दोनों गिरोहों के साथी-संगी थे, उन्होंने जब देखा कि अपनी प्रतिष्ठा बाक़ी रखने के लिए अब कोई रास्ता बाक़ी नहीं रह गया है तो देखने के लिए इस्लाम में दाख़िल हो गए। यह अब्दुल्लाह बिन उबई और उस के साथियों का गिरोह था। यह भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ यहूदियों और मुश्रिकों से कम ग़म व गुस्सा न रखता था।

इनके अलावा एक चौथा गिरोह भी था, यानी वे बद्दू जो मदीना के पास-पड़ोस में रहते-सहते थे। उन्हें कुफ़्र व इस्लाम से कोई दिलचस्पी न थी, लेकिन ये लुटेरे और डाकू थे, इसलिए बद्र की कामियाबी से इन्हें भी दुख और बेचैनी थी। इन्हें ख़तरा था कि मदीने में एक ताक़तवर राज्य क़ायम हो गया तो उन की लूट-खसोट का रास्ता बंद हो जाएगा, इसलिए इन के दिलों में भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ कीना (द्वेष) जाग उठा और ये भी मुस्लिम-विरोधी हो गए।

इस तरह मुसलमान चारों ओर से ख़तरे में घिर गए, लेकिन मुसलमानों के सिलसिले में हर फ़रीक़ का तरीक़ा दूसरे से अलग था। हर फ़रीक़ ने अपनी स्थिति को देखते हुए ऐसा तरीक़ा अपनाया था कि जो उस के विचार में उस के उद्देश्यों को पूरा कर रहा था, चुनांचे मदीना वालों ने इस्लाम ज़ाहिर करके परदे के पीछे की साज़िशों, बदमाशियों और आपस में लड़ाने-भिड़ाने की राह अपनायी। यहूदियों के एक गिरोह ने खुल्लम खुल्ला दुख व बैर और क्रोध व विद्रोह का प्रदर्शन किया। मक्का वालों ने तो कमर-तोड़ चोटों की धमकियां देनी शुरू कीं और बदला लेने का खुला एलान किया। उनकी लड़ाई की तैयारियां भी खुले आम हो रही थीं, मानो वे अपने आप मुसलमानों को यह संदेश दे रहे थे———

ولا بد من يوم اغرّ محجل يطول استماعی بعده للنوادب

"एक ऐसा रोशन और चमकता दिन ज़रूरी है जिसके बाद लम्बी मुद्दत तक मातम करने वालियों के मातम सुनता रहूं।"

और साल भर के बाद वे अमली तौर पर एक ऐसी लड़ाई के लिए मदीने की चार-दीवारी तक चढ़ आए जो इतिहास में ग़ज़वा-ए-उहद के नाम से मशहूर है और जिस का मुसलमानों की प्रसिद्धि और साख पर बुरा असर पड़ा था।

इन ख़तरों से निबटने के लिए मुसलमानों ने बड़े अहम-क़दम उठाए जिनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समझदार नेतृत्व का पता चलता है और यह स्पष्ट होता है कि मदीने का नेतृत्व आस-पास के इन ख़तरों के सिलसिले में कितना जागरुक था और उन से निबटने के लिए कितनी व्यापक योजना रखती थी, अगले पृष्ठों में इसी की एक संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत की जा रही है।

1. कुद्र नामी स्थान पर ग़ज़्वा-ए-बनी सुलैम

बद्र की लड़ाई के बाद सब से पहली ख़बर जो मदीना के सूचना विभाग ने दी, वह यह थी कि ग़तफ़ान क़बीले की शाखा बनू सुलैम के लोग मदीना पर चढ़ाई के लिए सेना जमा कर रहे हैं, इस के जवाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो-दो सौ सवारों के साथ उन पर ख़ुद उनके अपने इलाक़े में यकायक धावा बोल दिया और कुद्र[1] नामी जगह पर उनकी मंज़िलों तक जा पहुंचे। बनू सुलैम में इस अचानक हमले से भगदड़ मच गई और वे अफ़रा-तफ़री की हालत में घाटी के भीतर पांच सौ ऊंट छोड़ कर भाग गए जिस पर मदीना की फ़ौज ने क़ब्ज़ा कर लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका पांचवा हिस्सा (ख़ुमुस) निकाल कर बाक़ी माले ग़नीमत मुजाहिदों में बांट दिया। हर आदमी के हिस्से में दो-दो ऊंट आए। इस लड़ाई में यसार नामी एक दास हाथ आया, जिसे आप ने आज़ाद कर दिया। इस के बाद आप दयारे बनी सुलैम में तीन दिन ठहर कर मदीना पलट आए।

यह ग़ज़्वा शव्वाल सन् 02 हि० में बद्र से वापसी के सिर्फ़ सात दिन बाद पेश आया। इस ग़ज़्वे के दौरान सिबाअ़ बिन अरफ़ता रज़ि०

---

1) कुद्र हक़ीक़त में मटियाले रंग की एक चिड़िया होती है लेकिन यहाँ बनू सुलैम का एक चशमा (सोता) है जो नज्द में मक्का से शाम जाने वाली सड़क पर है।

को और कहा जाता है कि इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को मदीना का इंतिज़ाम सौंपा गया था।[2]

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हत्या का षड़यंत्र

बद्र की लड़ाई में हार का मुहं देखने की वजह से मुश्रिक गुस्से से बे-क़ाबू थे और पूरा मक्का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ हांडी की तरह खौल रहा था। आख़िर में मक्का के दो बहादुर नव जवानों ने तय किया कि वे------अपनी समझ से ----इस मतभेद और झगड़े की बुनियाद और ज़िल्लत व रुसवाई की जड़ (नऊज़ु बिल्लाह) यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंत कर देंगे।

चुनांचे बद्र की लड़ाई के कुछ ही दिनों के बाद की घटना है कि उमैर बिन वहब जुमही---जो क़ुरैश के शैतानों में से था और मक्का में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० को कष्ट पहुंचाया करता था और अब उस का बेटा वहब बिन उमैर बद्र की लड़ाई में गिरफ़्तार होकर मुसलमानों की क़ैद में था। इस उमैर ने एक दिन सफ़वान बिन उमैया के साथ हतीम में बैठ कर बातें करते हुए बद्र के कुएं में फेंके जाने वाले क़त्ल किए गए लोगों का ज़िक्र किया। इस पर सफ़वान ने कहा, "अल्लाह की क़सम! इन के बाद जीने में कोई मज़ा नहीं।" जवाब में उमैर ने कहा, "अल्लाह की क़सम तुम सच कहते हो। देखो! अल्लाह की क़सम, अगर मेरे ऊपर क़र्ज़ न होता, जिस को अदा करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं और बाल-बच्चे न होते, जिन के बारे में डर है कि मेरे बाद बर्बाद हो जाएंगे, तो मैं सवार होकर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास जाता और उसे क़त्ल कर डालता, क्योंकि मेरे लिए वहां जाने की एक वजह मौजूद है मेरा बेटा उन के यहां क़ैद है।"

---

2) ज़ादुल-मआद 2/90, इब्ने हिशाम 2/43-44, मुख़्तसरुस-सीरः (शेख़ अब्दुल्लाह) 236

सफ़वान ने इस स्थिति को ग़नीमत समझते हुए कहा, "अच्छा, चलो! तुम्हारा कर्ज़ मेरे ज़िम्मे है मैं इसे तुम्हारी ओर से अदा कर दूंगा और तुम्हारे बाल-बच्चे मेरे बाल-बच्चे हैं। जब तक वे मौजूद रहेंगे, मैं उन की देख-भाल करता रहूंगा। ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे पास कोई चीज़ मौजूद हो और उन को न मिले।"

उमैर ने कहा, "अच्छा तो अब मेरे और अपने इस मामले को रहस्य में रखना।" सफ़वान ने कहा, "ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।"

इस के बाद उमैर ने अपनी तलवार पर सान रखाई और उसे विष में डुबो दिया, फिर रवाना हुआ और मदीना पहुंचा, लेकिन अभी वह मस्जिद के दरवाज़े पर अपनी ऊंटनी बिठा ही रहा था कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की निगाह उस पर पड़ गई-----वह मुसलमानों की एक जमाअ़त के बीच बद्र की लड़ाई में अल्लाह की दी हुई नवाज़िशों और करम के बारे में बातें कर रहे थे------उन्होंने देखते ही कहा, "यह कुत्ता, अल्लाह का दुश्मन उमैर, किसी बुरे इरादे से ही आया है।" फिर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आ कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह अल्लाह का दुश्मन उमैर अपनी तलवार गले में लटकाए हुए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसे मेरे पास ले आओ। उमैर आया तो हज़रत उमर रज़ि० ने उस की तलवार के परतले को उस के गले के पास से पकड़ लिया और अंसार के कुछ लोगों से कहा, कि तुम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाओ और वहीं बैठ जाओ और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ इस ख़बीस के ख़तरे से चौकन्ना रहो, क्योंकि यह इत्मीनान करने के लायक़ नहीं है। इस के बाद वह उमैर को अंदर ले गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह स्थिति देखी कि हज़रत उमर रज़ि० उस की गरदन में उस की तलवार का परतला लपेट कर पकड़े हुए हैं तो फ़रमाया,

"उमर! इसे छोड़ दो। और उमैर! तुम क़रीब आ जाओ।" उस ने क़रीब आ कर कहा, आप लोगों की सुबह सकुशल हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने हमें एक ऐसा तहिय्या (अच्छा कलिमा) दिया है जो तुम्हारे उस तहिय्ये से बेहतर है, यानी सलाम से जो जन्नत वालों का तहिय्या है।

इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ उमैर! तुम क्यों आए हो?" उसने कहा, यह क़ैदी जो आप लोगों के क़ब्ज़े में हैं, उसी के लिए आया हूं। आप लोग इस के बारे में एहसान फ़रमा दीजिए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "फिर यह तुम्हारी गरदन में तलवार क्यों है?" उस ने कहा, अल्लाह इन तलवारों का बुरा करे क्या ये हमारे कुछ काम आ सकीं?

आप ने फ़रमाया, सच सच बताओ, क्यों आए हो? उस ने कहा, बस सिर्फ़ इसी क़ैदी के लिए आया हूं।

आप ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि तुम और सफ़वान बिन उमैया हतीम में बैठे और क़ुरैश के जो क़त्ल किए गए लोग कुएं में फेंके गए हैं उन का ज़िक्र किया, फिर तुम ने कहा, अगर मुझ पर क़र्ज़ न होता और मेरे बाल-बच्चे न होते, तो मैं यहां से जाता और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को क़त्ल कर देता। इस पर सफ़वान ने तुमहारे क़र्ज़ और बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारी ली, बशर्ते कि तुम मुझे क़त्ल कर दो, लेकिन याद रखो अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच रुकावट है।

उमैर ने कहा, "मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप हमारे पास आसमान की जो ख़बरें लाते थे और आप पर जो वह्य उतरती थी, उसे हम झुठला दिया करते थे, लेकिन यह तो ऐसा मामला है कि जिस में

मेरे और सफ़वान के सिवा कोई मौजूद ही न था। इसलिए अल्लाह की क़सम! मुझे यक़ीन है कि यह बात अल्लाह के सिवा और किसी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक नहीं पहुंचाई। पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें हैं, जिस ने मुझे इस्लाम की हिदायत दी और इस जगह तक हांक कर पहुंचाया।" फिर उमैर ने हक़ के कलिमे की गवाही दी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को मुख़ातब कर के फ़रमाया, "अपने भाई को दीन समझाओ, क़ुरआन पढ़ाओ और इस के क़ैदी को आज़ाद कर दो।"

इधर सफ़वान लोगों से कहता फिर रहा था कि यह ख़ुशख़बरी सुन लो कि कुछ ही दिनों में एक ऐसी घटना घटेगी, जो बद्र की मुसीबतें भुलवा देगी, साथ ही वह आने-जाने वालों से उमैर के बारे में पूछता भी रहता था। आख़िर में उसे एक सवार ने बताया कि उमैर मुसलमान हो चुका है। यह सुन कर सफ़वान ने क़सम खाई कि उस से कभी बात न करेगा और न कभी उसे लाभ पहुंचाएगा। इधर उमैर रज़ि० ने इस्लाम सीख कर मक्का का रास्ता लिया और वहीं ठहर कर इस्लाम की दावत देनी शुरू की। उन के हाथ पर बहुत से लोग मुसलमान हुए।[3]

3. ग़ज़्वा-ए-बनी क़ैनुक़ाअ़

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना तशरीफ़ लाने के बाद यहूदियों के साथ जो समझौता किया था, उन धाराओं का वर्णन पिछले पन्नों में किया जा चुका है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी कोशिश और ख़्वाहिश थी कि इस समझौते में जो कुछ तय पा गया है, वह लागू रहे, चुनांचे मुसलमानों की ओर से कोई ऐसा क़दम नहीं उठाया गया जो इस समझौते के लेख के एक अक्षर के भी ख़िलाफ़ हो, लेकिन यहूदी जिन का इतिहास द्रोह, बेईमानी और वायदा-ख़िलाफ़ी से भरा हुआ है, वे बहुत जल्द अपने पुराने स्वभाव की

3) इब्ने हिशाम 1/661-663

ओर पलट गए और मुसलमानों की पंक्तियों में दराड़ डालने की कोशिश, षड़यंत्र, लड़ाने-भिड़ाने, दंगों, और अशान्ति पैदा करने की कोशिशें शुरू कर दीं, लगे हाथों एक उदाहरण भी सुनते चलिए------

यहूदियों की मक्कारी का एक नमूना

इब्ने इसहाक़ का बयान है कि एक बूढ़ा यहूदी शाश बिन क़ैस--- जो क़ब्र में पांव लटकाए हुए था, बड़ा ज़बरदस्त काफ़िर था और मुसलामनों से ज़बरदस्त दुश्मनी और जलन रखता था-----एक बार सहाबा किराम की एक मज्लिस के पास से गुज़रा, जिस में औस व ख़ज़रज दोनों ही क़बीले के लोग बैठे आपस में बातें कर रहे थे। उसे यह देख कर कि अब उन के अंदर अज्ञानता-युग के आपसी बैर-भाव की जगह इस्लाम की मुहब्बत और आपसी लगाव ने ले ली है और उन के आपसी मन मुटाव का अंत हो गया है, बड़ा दुख हुआ, कहने लगा, "ओह, इस क्षेत्र में बनू क़ैला के बड़े लोग एक हो गए हैं, अल्लाह की क़सम! इन बड़ों की एकता के बाद तो हमारा यहां गुज़र नहीं।" चुनांचे उस ने एक नव जवान यहूदी को, जो उस के साथ था, हुक्म दिया कि उन की मीटिंगों में जाए और इन के साथ बैठ कर फिर बुआस की लड़ाई और इस के पहले के हालात का ज़िक्र करे और इस सिलसिले में दोनों ओर से जो पद्य कहे गए हैं, कुछ उन में से सुनाए। उस यहूदी ने ऐसा ही किया। इस के नतीजे में औस व ख़ज़रज में तू-तू, मैं-मैं शुरू हो गई। लोग झगड़ने लगे और एक दूसरे पर अपना अभिमान थोपने लगे, यहां तक कि दोनों क़बीलों के एक-एक आदमी ने घुटनों के बल बैठ कर एक दूसरे को उलटा-सीधा कहना शुरू कर दिया। फिर एक ने अपने मुक़ाबले के आदमी से कहा, अगर चाहो तो हम इस लड़ाई को फिर जवान कर के पलटा दें।-----मक़सद यह था कि हम इस आपसी लड़ाई के लिए फिर तैयार हैं जो इस से पहले लड़ी जा चुकी है—इस पर दोनों फ़रीक़ों को ताव आ गया और बोले, चलो हम तैयार हैं। हर्रा में मुक़ाबला

होगा---हथियार!-----हथियार! और लोग हथियार लेकर हर्रा की ओर निकल पड़े। करीब था कि ख़ूनी लड़ाई हो जाती लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की ख़बर हो गयी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मुहाजिर साथियों को साथ लेकर झट उन के पास पहुचें और फ़रमाया, "ऐ मुसलमानों की जमाअत! अल्लाह! अल्लाह! क्या मेरे रहते हुए अज्ञानता की पुकार! और वह भी इस के बाद कि अल्लाह तुम्हें इस्लाम की हिदायत जैसी नेमत दे चुका है और उस के ज़रिए तुम से जाहिलियत (अज्ञानता) का मामला काट कर और तुम्हें कुफ़्र से निजात देकर तुम्हारे दिलों को आपस में जोड़ चुका है।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहत सुन कर सहाबा को एहसास हुआ कि उन की हरकत शैतान का एक झटका और दुश्मन की एक चाल थी, चुनांचे वे रोने लगे और औस व ख़ज़रज के लोग एक दूसरे से गले मिले। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ आज्ञाकारी बन कर इस हालत में वापस आए कि अल्लाह ने उन के दुश्मन शाश बिन क़ैस की मक्कारी की आग बुझा दी थी।[4]

यह है एक नमूना उन हंगामों और बेचैनियों का जिन्हें यहूदी मुसलमानों में पैदा करने की कोशिश करते रहते थे और यह है एक मिसाल उस रोड़े की जिसे ये यहूदी इस्लामी दावत की राह में अटकाते रहते थे। इस काम के लिए उन्होंने अलग-अलग योजनाएं बना रखी थीं। वे झूठे प्रोपेगंडे करते थे। सुबह मुसलमान होकर फिर शाम को काफ़िर हो जाते थे, ताकि कमज़ोर और सादा दिल क़िस्म के लोगों के दिलों में संदेहों के बीज बो सकें। किसी के साथ माली ताल्लुक़ होता और वह मुसलमान हो जाता, तो उस पर आर्थिक राहें तंग कर देते, चुनांचे अगर उस के ज़िम्मे कुछ बाक़ी होता तो सुबह व शाम तक़ाज़े करते और अगर ख़ुद उस मुसलमान का उन पर कुछ बाक़ी होता, तो

4) इब्ने हिशाम 1/555-556

उसे अदा न करते, बल्कि ग़लत तरीक़े पर खा जाते और कहते कि तुम्हारा कर्ज़ तो हमारे ऊपर उस वक़्त था, जब तुम अपने बाप-दादा के धर्म पर थे, लेकिन अब जबकि तुम ने अपना धर्म बदल दिया है तो अब हमारा और तुम्हारा कोई लेन-देन नहीं।[5]

स्पष्ट रहे कि यहूदियों ने ये सारी हरकतें बद्र से पहले ही शुरू कर दी थीं और इस समझौते के होते हुए शुरू कर दी थीं जो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कर रखा था। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० का हाल यह था कि वे इन यहूदियों की हिदायत की उम्मीद में इन सारी बातों पर सब्र करते जा रहे थे। इस के अलावा यह भी मक़सद था कि इस इलाक़े में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहे।

बनू क़ैनुक़ाअ़ का वचन भंग करना

जब यहूदियों ने देखा कि अल्लाह ने बद्र के मैदान में मुसलमानों की ज़बरदस्त मदद फ़रमा कर उन्हें इज़्ज़त व शौकत दे रखी है और उन का रोब व दबदबा, दूर व नज़दीक हर जगह रहने वालों के दिलों पर बैठ गया है तो उन की दुश्मनी और जलन की हांडी फट पड़ी। उन्होंने खुल्लम-खुल्ला दुष्टता और शत्रुता का प्रदर्शन किया और एलानिया विद्रोह और कष्ट पहुंचाने पर उतर आए।

इन में सब से बड़ा द्वेषी, दुष्ट और शत्रु काब बिन अशरफ़ था, जिस का उल्लेख आगे आ रहा है, इसी तरह तीनों यहूदी क़बीलों में सब से ज़्यादा बदमाश बनू क़ैनुक़ाअ़ का क़बीला था। ये लोग मदीने ही के अंदर रहते थे और उन का मुहल्ला उन्हीं के नाम से जाना जाता था। ये लोग पेशे की दृष्टि से सुनार, लोहार और बरतन बनाने वाले थे। इन पेशों की वजह से इन के हर आदमी के पास भारी मात्रा में लड़ाई का

5) तफ़सीर की किताबों में आले इमरान आदि की तफ़सीर में इस तरह की हरकतों के नमूने मिल जाएंगे

सामान मौजूद था। इन के लड़ने वाले योद्धाओं की संख्या सात सौ थी और वे मदीने के सब से बहादुर यहूदी थे। इन्हीं ने सब से पहले समझौते भंग किए। विवरण यह है---

जब अल्लाह ने बद्र के मैदान में मुसलमानों को जीत दिलवाई तो उन की उद्दंडता बहुत बढ़ गयी। उन्होंने अपनी दुष्टता, खबासत और लड़ाने-भिड़ाने की हरकतों में बढ़ौतरी कर ली और अशान्ति पैदा करना शुरू कर दिया चुनांचे जो मुसलमान उन के बाज़ार में जाता, उस से वे हंसी मज़ाक़ करते और उसे कष्ट पहुंचाते, यहां तक कि मुसलमान औरतों से भी छेड़-छाड़ शुरू कर दी।

इस तरह जब स्थिति ज़्यादा बिगड़ गयी और उन की उद्दंडता अधिक बढ़ गयी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें जमा फ़रमा कर उपदेश दिया और सीधा-सच्चा रास्ता बताते हुए ज़ुल्म व बग़ावत के अंजाम से डराया, लेकिन इस से उन की बदमाशी और घमंड में कुछ और ही वृद्धि हो गयी।

चुनांचे इमाम अबू दाऊद वग़ैरह ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश को बद्र के दिन परास्त कर दिया और आप मदीना तशरीफ़ लाए, तो बनू क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में यहूदियों को जमा किया और फ़रमाया, "ऐ यहूदियो! इस से पहले इस्लाम अपना लो कि तुम पर वैसी ही मार पड़े जैसी क़ुरैश पर पड़ चुकी है।" उन्होंने कहा, "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें इस वजह से अपने आप को धोखे में नहीं डालना चाहिए कि तुम्हारा टकराव क़ुरैश के अनाड़ी और लड़ाई से नावाक़िफ़ लोगों से हुई और तुम ने उन्हें मार लिया। अगर तुम्हारी लड़ाई हम से हो गई तो पता चल जाएगा कि हम मर्द हैं और हमारे जैसे लोगों से तुम्हारा पाला न पड़ा था।" इस के जवाब में अल्लाह ने यह आयत उतारी---

---

6) अबू दाऊद तथा औनुल-मअबूद 3/115, इब्ने हिशाम 1/552

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَ تُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ وَ اللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ

"इन काफ़िरों से कह दो कि बहुत जल्द मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की ओर हांके जाओगे और वह बुरा ठिकाना है। जिन दो गिरोहों में टक्कर हुई उन में तुम्हारे लिए निशानी है। एक गिरोह अल्लाह के रास्ते में लड़ रहा था और दूसरा काफ़िर था। ये उन को आंखों देखने में अपने से दोगुना देख रहे थे और अल्लाह अपनी मदद के ज़रिए जिस की ताईद चाहता है, करता है। उस के अंदर यक़ीनी तौर पर नज़र वालों के लिए सबक़ है।" (3:12-13)

बहरहाल बनू क़ैनुक़ाअ़ की हिम्मत और बढ़ गई। चुनांचे थोड़े ही दिन बीते थे कि उन्होंने मदीना में हंगामा और दंगा पैदा कर दिया जिस के नतीजे में उन्होंने अपने ही हाथों अपनी क़ब्र खोद ली और अपने ऊपर ज़िंदगी की राह बंद कर ली।

इब्ने हिशाम ने अबू औ़न से रिवायत किया है कि एक अ़रब औ़रत बनू क़ैनुक़ाअ़ के बाज़ार में दुध लेकर आई और बेच कर (किसी ज़रूरत के लिए) एक सुनार के पास, जो यहूदी था, बैठ गई। यहूदियों ने उसका चेहरा खुलवाना चाहा, मगर उसने इंकार कर दिया। इस पर उस सुनार ने चुपके से उसके कपड़े का निचला किनारा पिछली तरफ़ बांध दिया और उसे कुछ ख़बर न हुई। जब वह उठी तो इस से बे-परदा हो गई तो यहूदियों ने क़हक़हा लगाया। इस पर उस औरत ने चीख़-पुकार मचाई जिसे सुन कर एक मुसलमान ने उस सुनार पर हमला कर दिया और उसे मार डाला। जवाब में यहूदियों ने उस मुसलमान पर हमला करके उसे मार डाला। इस के बाद क़त्ल किए गए मुसलमान के घर वालों ने शोर मचाया और यहूदियों के ख़िलाफ़ मुसलमानों से

फ़रियाद की। नतीजा यह हुआ कि मुसलमान और बनी कैनुक़ाअ़ के यहूदियों में दंगा हो गया।[7]

घेराव, समर्पण और देश-निकाला

इस घटना के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सब्र का पैमाना भर गया। आप ने मदीना का इंतिज़ाम अबू लुबाबा रज़ि० बिन अब्दुल मुंज़िर को सौंपा और ख़ुद हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के हाथ में मुसलमानों का झन्डा देकर अल्लाह के लश्कर के साथ बनू कैनुक़ाअ़ का रुख़ किया। उन्होंने आप को देखा तो गढ़ियों मे क़िला बन्द हो गये। आप ने उनका कठोरता से घेराव किया। यह जुमा का दिन था और शव्वाल सन 2 हि० की 15 तिथि। पन्दरह दिन तक......यानी ज़िल-क़ादा महीने का चाँद दिखाई देने तक......घेराव जारी रहा। फिर अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब को डाल दिया जिस की सुन्नत ही यह है कि जब किसी क़ौम को शिकस्त से दो चार करना चाहता है तो उन के दिलों में रोब डाल देता है, चुनांचे बनू कैनुक़ाअ़ ने इस शर्त पर हथियार डाल दिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी जान व माल, आल व औलाद और औरतों के बारे में जो फैसला करेंगे, उन्हें मंज़ूर होगा। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से इन सब को बांध लिया गया।

लेकिन यही मौक़ा था जब अब्दुल्लाह बिन उबई ने अपना कपटी आचरण अदा किया। उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बड़ा आग्रह किया कि आप उनके बारे में क्षमा का आदेश जारी कर दें। उसने कहा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे समझौते वाले लोगों के बारे में एहसान कीजिए।" स्पष्ट रहे कि बनू कैनुक़ाअ़ ख़ज़रज के साथी थे---लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देर की। इस पर उसने अपनी बात फिर दोहरायी,

7) इब्ने हिशाम 2/47-48

मगर अब की बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे अपना रुख़ फेर लिया, लेकिन उस आदमी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गरेबान में अपना हाथ डाल दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझे छोड़ दो! और ऐसे बिफरे कि लोगों ने गुस्से की परछाइयां आप के चेहरे पर देखीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम पर अफ़सोस, मुझे छोड़, लेकिन यह मुनाफ़िक़ (कपटी) अपने आग्रह पर जमा रहा और बोला, "नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं आप को नहीं छोड़ूंगा, यहां तक कि आप मुझ से समझौता किए लोगों के बारे में एहसान कर दें। चार सौ खुले देह के जवान और तीन सौ कवच-धारी, जिन्होंने मुझे लाल व काले (परेशानियों) से बचाया था, आप उन्हें एक ही सुबह में काट कर रख देंगे? अल्लाह की क़सम! मैं समय की विपत्तियों का ख़तरा महसूस कर रहा हूं।"

आख़िर में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस मुनाफ़िक़ के साथ (जिसके इस्लाम ज़ाहिर करने पर अभी कोई एक ही महीना गुज़रा था) रिआयत का मामला किया और इसके लिए इन सब की जान बख़्शी कर दी, अलबत्ता उन्हें हुक्म दिया कि वे मदीना से निकल जाएं और आपके पड़ोस में न रहें। चुनांचे ये सब रिआयत की वजह से शाम (सीरिया) की ओर चले गए और थोड़े ही दिनों बाद वहां ज़्यादातर लोगों की मौत हो गयी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के माल ज़ब्त कर लिए, जिन में तीन कमान, दो कवच, तीन तलवार और तीन नेज़े अपने लिए चुन लिए और ग़नीमत के माल में से ख़ुमुस (पांचवां हिस्सा) निकाला। ग़नीमत का माल जमा करने का काम मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने अंजाम दिया।[8]

---

8) ज़ादुल-मआद 2/71,91 तथा इब्ने हिशाम 2/47 49

4. ग़ज़्वा-ए-सवीक़

एक ओर सफ़वान बिन उमैया, यहूदी और मुनाफ़िक़ अपने-अपने षड़यंत्रों में लगे हुए थे, तो दूसरी ओर अबू सुफ़ियान भी कोई ऐसी कार्यवाही अंजाम देने की उधेड़बुन में था जिस में बोझ कम से कम पड़े, लेकिन प्रभाव ज़्यादा हो। वे ऐसी कार्यवाही जल्द से जल्द अंजाम देकर अपनी क़ौम की आबरू की हिफ़ाज़त और उनकी ताक़त को ज़ाहिर करना चाहता था। उसने मन्नत मान रखी थी कि जनाबत की वजह से उस के सर को पानी न छू सकेगा, यहां तक कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लड़ाई कर ले। चुनांचे वह अपनी क़सम को पूरा करने के लिए दो सौ सवारों के लेकर रवाना हुआ और क़नात घाटी के सिरे पर स्थित नीब नामी एक पहाड़ी के दामन में पड़ाव डाल दिया। मदीना से उस की दूरी कोई बारह मील है लेकिन चूंकि अबू सुफ़ियान को मदीना पर खुल्लम-खुल्ला हमले की हिम्मत न हुई, इसलिए उसने एक ऐसी कार्यवाही अंजाम दी जिसे डाकाज़नी से मिलती-जुलती कार्यवाही कहा जा सकता है। इसका विवरण यह है कि वह रात के अंधेरे में मदीना के बाहरी हिस्से के अंदर दाख़िल हुआ और हुयई बिन अख़्तब के पास जाकर उस का दरवाज़ा खुलवाया। हुयई ने अंजाम के डर से इंकार कर दिया। अबू सुफ़ियान पलट कर बनू नज़ीर के एक दूसरे सरदार सलाम बिन मुश्कम के पास पहुंचा, जो बनू नज़ीर का ख़ज़ानची भी था। अबू सुफ़ियान ने अंदर आने की इजाज़त चाही। उसने इजाज़त भी दी और मेहमान दारी भी की। ख़ुराक के अलावा शराब भी पिलाई और लोगों के परदे के पीछे के हालात की ख़बर भी दी। रात के पिछले पहर अबू सुफ़ियान वहां से निकल कर अपने साथियों में पहुंचा और उनकी एक टुकड़ी भेज कर मदीने के बाहरी हिस्से में अरीज़ नामी एक जगह पर हमला करा दिया। इस टुकड़ी ने वहां खजूर के कुछ पेड़ काटे और जलाए और एक अंसारी और उसके मित्र को उनके खेत में पाकर क़त्ल कर दिया और तेज़ी से मक्का वापस भाग निकले।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वारदात की ख़बर मिलते ही तेज़ रफ़्तारी से अबू सुफ़ियान और उस के साथियों का पीछा किया, लेकिन वे इस से भी ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से भागे, चुनांचे वे लोग तो न मिले, लेकिन उन्होंने बोझ हल्का करने के लिए सत्तू, तोशे और बहुत सा साज़ व सामान फेंक दिया था जो मुसलमानों के हाथ लगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने करकरतुल-कदर तक पीछा कर के वापसी की राह ली। मुसलमान सत्तू वग़ैरह लाद-फांद कर वापस हुए और इस मुहिम का नाम सवीक़ की लड़ाई रख दिया (सवीक़ अ़रबी भाषा में सत्तू को कहते हैं) यह ग़ज़्वा, ग़ज़्वा-ए-बद्र के सिर्फ़ दो माह बाद ज़िलहिज्जा सन् 02 हि० में हुई। इस लड़ाई के दौरान मदीना का इंतिज़ाम अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ि० को सौंपा गया था।[9]

5. ग़ज़्वा-ए-ज़ी अम्र

बद्र व उहद की लड़ाई के बीच की मुद्दत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नेतृत्व में यह सब से बड़ी फ़ौजी मुहिम थी जो मुहर्रम सन् 03 हि० में पेश आई।

इस की वजह यह थी कि मदीना के सूचना साधनों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना दी कि बनू सालबा और मुहारिब की बहुत बड़ी तायदाद मदीना पर छापा मारने के लिए इक्ट्ठी हो रही है। यह ख़बर मिलते ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को तैयारी का हुक्म दिया और सवार और पैदल की मिली-जुली लग-भग साढ़े चार सौ की टुकड़ी लेकर रवाना हुए और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को मदीना में अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

---

9) ज़ादुल-मआद 2/90-91 तथा इब्ने हिशाम 2/44-45

रास्ते में सहाबा बनू सालबा के जब्बार नामी एक आदमी को गिरफ़्तार कर के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में लाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे इस्लाम की दावत दी। उस ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे हज़रत बिलाल रज़ि० के साथ कर दिया और उस ने रास्ता जानने वाले की हैसियत से मुसलमानों को दुश्मन के भू-भाग तक का रास्ता बताया।

इधर दुश्मन को मदीना की सेना के आने की ख़बर हुई तो वे पास-पड़ोस की पहाड़ियों में बिखर गए लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ते रहे और सेना के साथ उस जगह तक गए जिसे दुश्मन ने अपनी टुकड़ी जुटाने के लिए चुना था। यह वास्तव में एक चश्मा था जो "ज़ी अम्र" के नाम से जाना जाता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां बद्दुओं पर रोब व दबदबा क़ायम करने और उन्हें मुसलमानों की ताक़त का एहसास दिलाने के लिए सफ़र (03 हि०) का पूरा या लगभग पूरा महीना बिता दिया और इस के बाद मदीना तशरीफ़ लाए।[10]

6. कअ्ब बिन अशरफ़ की हत्या

यहूदियों में यह वह आदमी था, जिसे इस्लाम और मुसलमानों से बड़ा बैर और जलन थी। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट पहुंचाया करता था और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ाई की खुल्लम-खुल्ला दावत देता फिरता था।

इस का ताल्लुक़ क़बीला तई की शाखा बनू निबहान से था और इस की मां क़बीला बनी नज़ीर से थी। यह बड़ा मालदार और पूंजीपति

10) ज़ादुल मआद 2/91 तथा इब्ने हिशाम 2/46 कहा जाता है कि दअसूर या ग़ोरस मुहारबी ने इसी ग़ज़वे में नबी (सल्ल०) को क़त्ल करने की कोशिश की थी लेकिन सही यह है कि यह घटना एक दूसरे ग़ज़वे में पेश आई देखिए सही बुख़ारी 2/593

था। अरब में इस के सौन्दर्य की चर्चा थी। यह एक प्रसिद्ध कवि भी था, इस का क़िला मदीना के दक्षिण में बनू नज़ीर की आबादी के पीछे स्थित था।

इसे बद्र की लड़ाई में मुसलमानों की जीत और क़ुरैश के सरदारों के क़त्ल की पहली ख़बर मिली तो बे-इख़्तियार बोल उठा, "क्या सच में ऐसा हुआ है? ये अरब के बड़े और लोगों के बादशाह थे। अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन को मार लिया है तो धरती का पेट उस की पीठ से बेहतर है।"

और जब उसे निश्चित रूप से यह ख़बर मालूम हुई तो अल्लाह का यह दुश्मन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों की बुराई और इस्लाम शत्रुओं की प्रशंसा पर उतर आया और उन्हें मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काने लगा। इस से भी उस की भावनाओं को तुष्टि न मिली तो सवार होकर क़ुरैश के पास पहुंचा और मुत्तलिब बिन अबी वदाआ़ सहमी का मेहमान हुआ। फिर मुश्रिकों की ग़ैरत भड़काने, उन की बदले की आग तेज़ करने और उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ने पर तैयार करने के लिए पद्य कह-कह कर क़ुरैश के उन सरदारों का नौहा व मातम शुरू कर दिया, जिन्हें बद्र के मैदान में क़त्ल किए जाने के बाद कुएं में फेंक दिया गया था। मक्का में उस की मौजूदगी के दौरान अबू सुफ़ियान और मुश्रिकों ने उस से मालूम किया कि हमारा दीन तुम्हारे नज़दीक ज़्यादा पसंदीदा है या मुहम्मद और उस के साथियों का? और दोनों में से कौन सा फ़रीक़ ज़्यादा हिदायत पाए हुए है? कअ़ब बिन अशरफ़ ने कहा, "तुम लोग इन से ज़्यादा हिदायत पाए हुए और अफ़ज़ल हो। इसी सिलसिले में अल्लाह ने यह आयत उतारी:—

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيباً مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ

لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلاً

"तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया है कि वे जिब्त और तागूत (ज़ालिम और सरकश) पर ईमान रखते हैं और काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग ईमान वालों से बढ़ कर हिदायत पाए हुए हैं।" (4:51)

कअ़ब बिन अशरफ़ यह सब कुछ कर के मदीना वापस आया तो यहां आ कर सहाबा किराम की औरतों के बारे में निरर्थक पद्य कहने शुरू किए और अपनी कड़ुवी और बुरी बातों के ज़रिए बहुत तक्लीफ़ पहुंचाई।

यही हालात थे जिन से तंग आ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "कौन है जो कअ़ब बिन अशरफ़ से निबटे? क्योंकि उस ने अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट दिया है।"

इस के जवाब में मुहम्मद बिन मुस्लिमा, अ़ब्बाद बिन बिश्र, अबू नाइला-------जिन का नाम सिलकान बिन सलामा था और जो कअ़ब के दूध-शरीक भाई थे----हारिस बिन औस और अबू अ़ब्स बिन जब्र ने अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं। इस छोटी सी कम्पनी के कमांडर मुहम्मद बिन मुस्लिमा थे।

कअ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल के बारे में रिवायतों का हासिल यह है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि कअ़ब बिन अशरफ़ से कौन निबटेगा, क्योंकि उसने अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा पहुंचायी है तो मुहम्मद बिन मुस्लमा ने उठ कर अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं हाज़िर हूं, क्या आप चाहते हैं कि मैं उसे क़त्ल कर दूं?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां, उन्होंने अर्ज़ किया, तो आप मुझे कुछ कहने की इजाज़त दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कह सकते हो।

इसके बाद मुहम्मद बिन मुस्लिमा, कअ़ब बिन अशरफ़ के पास तशरीफ़ ले गए और बोले, "इस आदमी ने——इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था——हम से सदक़ा तलब किया है और सच तो यह है कि इस ने हमें मशक़्क़त में डाल रखा है।"

कअ़ब ने कहा, "अल्लाह की क़सम! अभी तुम लोग और भी उकता जाओगे।"

मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, "अब जबकि हम उस की पैरवी करने वाले बन ही चुके हैं, तो मुनासिब नहीं मालूम होता कि उसका साथ छोड़ दें, जब तक यह न देख लें कि इस का अंजाम क्या होता है! अच्छा, हम चाहते हैं कि आप हमें एक वसक़ या दो वसक़ अन्न दे दें।"

कअ़ब ने कहा, "मेरे पास कुछ रेहन (गिरवी) रखो।"

मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, "आप कौन सी चीज़ पसंद करेंगे?"

कअ़ब ने कहा, "अपनी औरतों को मेरे पास रेहन रख दो।"

मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, "भला, हम अपनी औरतें आप के पास कैसे रेहन रख दें जब कि आप अ़रब के सब से सुन्दर व्यक्ति हैं।"

उस ने कहा, "तो फिर अपने बेटों को ही रेहन रख दो।"

मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, "हम अपने बेटों को कैसे रेहन रख दें? अगर ऐसा हो गया तो उन्हें गाली दी जाएगी कि यह एक वसक़ या दो वसक़ के बदले रेहन रखा गया था। यह हमारे लिए शर्म की बात है, अलबत्ता हम आप के पास हथियार रेहन रख सकते हैं।"

इसके बाद दोनों में तय हो गया कि मुहम्मद बिन मुस्लिमा (हथियार लेकर) उसके पास आएंगे। उधर अबू नाइला ने भी इसी तरह का क़दम उठाया, यानी कअ़ब बिन अशरफ़ के पास आए। कुछ देर इधर-उधर के पद्य सुनते-सुनाते रहे, फिर बोले, "भई! इब्ने अशरफ़! मैं

एक ज़रूरत से आया हूं, उसे ज़िक्र करना चाहता हूं, लेकिन इसे आप रहस्य ही रखेंगे।"

कअ़ब ने कहा, "ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।"

अबू नाइला ने कहा, "भई! उस आदमी——इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था——का आना तो हमारे लिए आज़माइश बन गया है। सारा अ़रब हमारा दुश्मन हो गया है। सबने हमें एक कमान से मारा है, हमारी राहें बंद हो गयी हैं, बाल-बच्चे बर्बाद हो रहे हैं। जानों पर बन आयी है। हम और हमारे बाल-बच्चे मेहनतों से चूर-चूर हैं।" इस के बाद उन्होंने भी कुछ इसी ढंग से बात की, जैसी मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने की थी। बात करते वक़्त अबू नाइला ने यह भी कहा कि मेरे कुछ साथी हैं, जिन के विचार भी बिल्कुल मेरे ही जैसे हैं। मैं उन्हें भी आप के पास लाना चाहता हूं, आप इनके हाथ भी कुछ बेचें और इन पर एहसान करें।

मुहम्मद बिन मुस्लिमा और अबू नाइला रज़ि० अपनी-अपनी बातों के ज़रिए अपने मक़सद में कामियाब रहे, क्योंकि इस बात-चीत के बाद हथियार और साथियों सहित इन दोनों की आमद पर कअ़ब बिन अशरफ़ चौंक नहीं सकता था। इस शुरू के मरहले को पूरा कर लेने के बाद 14 रबीउल अव्वल सन् 03 हिजरी की चांदनी रात को यह छोटी सी टुकड़ी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बक़ीअ़-ए-ग़रक़द तक उनका साथ दिया, फिर फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर जाओ, ए अल्लाह इनकी मदद फ़रमा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर पलट आए और नमाज़ व मुनाजात में लग गए।

इधर यह टुकड़ी कअ़ब बिन अशरफ़ के क़िले के दामन में पहुंची, तो उसे अबू नाइला रज़ि० ने कुछ ज़ोर से आवाज़ दी। आवाज़ सुन कर वह उनके पास आने के लिए उठा तो उस की बीवी ने ———जो अभी

नई-नवेली दुल्हन थी---कहा, "इस वक़्त कहां जा रहे हैं? मैं ऐसी आवाज़ सुन रही हूं जिस से मानो ख़ून टपक रहा है।"

काब ने कहा, "यह तो मेरा भाई मुहम्मद बिन मुस्लिमा और मेरा दूध का साथी अबू नाइला रज़ि० है। दयालू आदमी को अगर नेज़े की मार की तरफ़ बुलाया जाए तो इस पुकार पर भी वह जाता है। इस के बाद वह बाहर आ गया। ख़ुश्बू में बसा हुआ था और सर से ख़ुश्बू की लहरें फूट रही थीं।"

अबू नाइला रज़ि० ने अपने साथियों से कह रखा था कि जब वह आ जाएगा, तो मैं उस के बाल पकड़ कर सूंघूंगा। जब तुम देखना कि मैंने उस का सर पकड़ कर उसे क़ाबू में कर लिया है, तो उस पर पिल पड़ना और उसे मार डालना। चुनांचे जब कअ़ब आया तो कुछ देर बातें होती रहीं। फिर अबू नाइला रज़ि० ने कहा, "इब्ने अशरफ़! क्यों न शअ़बे-अ़जूज़ तक चलें, तनिक आज रात बातें की जाएं।" उसने कहा, अगर तुम चाहते हो तो चलते हैं? इस पर सब लोग चल पड़े। बीच रास्ते में अबू नाइला रज़ि० ने कहा, आज जैसी अच्छी ख़ुश्बू तो मैंने कभी देखी ही नहीं। यह सुन कर कअ़ब का सीना गर्व से तन गया, कहने लगा, मेरे पास अ़रब की सब से ज़्यादा ख़ुश्बू वाली औरत है। अबू नाइला रज़ि० ने कहा, इजाज़त हो तो तनिक आपका सर सूंघ लूं? वह बोला, हां, हां। अबू नाइला ने उस के सर में अपना हाथ डाला, फिर ख़ुद भी सूंघा और साथियों को भी सुघांया।

कुछ और चले तो अबू नाइला ने फिर कहा, कि भई! एक बार और। काब ने कहा, हां, हां! अबू नाइला ने फिर वही हरकत की, यहां तक कि वह सन्तुष्ट हो गया।

इसके बाद कुछ और चले, तो अबू नाइला ने फिर कहा कि भई! एक बार और। उस ने कहा, ठीक है। अब की बार अबू नाइला ने उस के सर में हाथ डाल कर ज़रा अच्छी तरह पकड़ लिया, तो बोले, "ले लो,

...लाह के इस दुश्मन को।" इतने में उस पर कई तलवारें पड़ीं, लेकिन ...काम न दे सकीं। यह देख कर मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने झट अपनी ...ली और उस के पेड़ू पर लगा कर चढ़ बैठे। कुदाल आर-पार हो ...और अल्लाह का यह दुश्मन वहीं ढेर हो गया। हमले के दौरान उस ...ने ज़बरदस्त चीख़ लगाई थी कि आस-पास में हलचल मच गई थी ...कोई क़िला ऐसा बाक़ी न बचा था जिस पर आग न रोशन की गई ...। (लेकिन हुआ कुछ भी नहीं)

कार्यवाही के दौरान हज़रत हारिस बिन औस रज़ि० को कुछ साथियों की तलवार की नोक लग गयी थी, जिस से वे घायल हो गये थे और उन के जिस्म से ख़ून बह रहा था, चुनांचे वापसी में जब यह टुकड़ी हर्रा-ए-अ़रीज़ पहुंची तो देखा कि हारिस साथ नहीं हैं, इसलिए सब लोग वहीं रुक गए। थोड़ी देर बाद हारिस भी उन के क़दमों के निशान देखते हुए आ पहुंचे। वहां से लोगों ने उन्हें उठा लिया। और बक़ीअ़-ए-ग़रक़द पहुंच कर इस ज़ोर का नारा लगाया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी सुनाई पड़ा। आप समझ गए कि इन लोगों ने उसे मार लिया है, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अल्लाहु अकबर कहा। फिर जब ये लोग आप की ख़िदमत में पहुंचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया,

افلحت الوجوه

"ये चेहरे कामियाब रहें।" उन लोगों ने कहा,

ووجهک یا رسول الله

"आप का चेहरा भी ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!" और इस के साथ ही उस ताग़ूत का सर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने रख दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के क़त्ल पर अल्लाह की तारीफ़ की और हारिस के घाव पर होंठ

का लुआब लगा दिया, जिस से उन्हें शिफ़ा मिल गयी और आगे कभी तक्लीफ़ न हुई।[11]

इधर यहूदियों को जब अपने तागूत कअ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल की ख़बर हुई तो उन के हठधर्म और हठी दिलों में रोब की लहर दौड़ गई। उनकी समझ में आ गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब यह महसूस कर लेंगे कि अम्न व अमान के साथ खेलने वालों, हंगामे और बेचैनी पैदा करने वालों और वायदों का आदर न करने वालों पर नसीहत काम नहीं कर रही है तो आप ताक़त के इस्तेमाल से भी न हिचकिचाएंगे इसलिए उन्होंने अपने इस तागूत के क़त्ल पर चूं न किया, बल्कि एकदम, दम साधे पड़े रहे। वायदे को पूरा करने का प्रदर्शन किया और हिम्मत हार बैठे, यानी सांप बड़ी तेज़ी से अपने बिलों में जा घुसे।

इस तरह एक मुद्दत तक के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने के बाहर से पेश आने वाले (और जिन की उम्मीद भी थी) ख़तरों का सामना करने के लिए फ़ारिग़ हो गए और मुसलमान इन बहुत सी अन्दरूनी मुश्किलों के भारी बोझ से बच गए, जिन का ख़तरा उन्हें महसूस हो रहा था और जिन की गंध कभी-कभी वे सूंघते रहते थे।

7. ग़ज़वा-ए-बहरान

यह एक बड़ी सैनिक टुकड़ी थी, जिस की तायदाद तीन सौ थी। इस सेना को लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रबीउल आख़िर सन् 03 हि० में बहरान नामी एक इलाक़े की ओर तशरीफ़ ले गये थे--- यह हिजाज़ के अंदर फ़रअ़ के चारों ओर एक

---

11) इस घटना की तफ़्सील इब्ने हिशाम 2/51-57, बुख़ारी 1/341-425,2/577, अबू दाऊद तथा औनुल मअबूद 2/42-43 और ज़ादुल मआद 2/91 से ली गई है।

ख़निज पदार्थों वाला क्षेत्र है— और रबीउल अव्वल और जमादिल ऊला के दो महीने वहीं ठहरे रहे। इस के बाद मदीना वापस तशरीफ़ लाए किसी तरह की भी लड़ाई न हुई।[12]

8. सरिय्या ज़ैद बिन हारिसा

उहद की लड़ाई से पहले मुसलमानों का यह आख़िरी और सब से सफल अभियान था जो जमादिल आख़िर सन् 03 हि० में पेश आया।

घटना का सविस्तार वर्णन यह है कि :--------

कुरैश बद्र की लड़ाई के बाद दुखी और परेशान तो थे ही, पर जब गर्मी का वक़्त आ गया और शाम (सीरिया) देश की व्यापारिक यात्रा का समय आ पहुंचा तो उन्हें एक और चिन्ता हुई। यह बात इस से स्पष्ट होती है कि सफ़वान बिन उमैया ने-----जिसे कुरैश की ओर से इस साल शाम देश जाने वाले व्यापारिक मंडल का प्रमुख चुना गया था---कुरैश से कहा, "मुहम्मद और उस के साथियों ने हमारे व्यापार मार्ग को हमारे लिए कष्टदायक बना दिया। समझ में नहीं आता कि हम उसके साथियों से कैसे निपटें। वे तट छोड़ कर हटते ही नहीं और तट के निवासियों ने उनसे समझौता कर लिया है। आम लोग भी उन्हीं के साथ हो गए हैं। अब समझ में नहीं आता कि हम कौन सा रास्ता अपनाएँ? अगर हम घरों ही में बैठ रहें तो अपनी मूल-पूंजी भी खा जाएंगे और कुछ बाक़ी न बचेगा, क्योंकि मक्का में हमारी ज़िंदगी इसी पर टिकी हुई है कि गर्मी में शाम (सीरिया) और जाड़े में हब्शा से व्यापार करें।"

---

12) इब्ने हिशाम 2/50-51, ज़ादुल-मआद 2/91 इस ग़ज़्वे की वजहों को निश्चित करने में अलग अलग हवाले हैं। कहा जाता है कि मदीना में यह ख़बर पहुंची कि बनू सलीम मदीना और उसके आस-पास हमला करने के लिए जंगी तैयारियाँ कर रहे हैं। और कहा जाता है कि आप कुरैश के किसी क़ाफ़िले की तलाश में निकले थे। इब्ने हिशाम ने यही वजह लिखी है। और इब्ने क़य्यिम ने भी इसी को माना है और पहली वजह बताई ही नहीं। यही बात सही भी मालूम होती है क्योंकि बनू सलीम फ़रअ़ के आस-पास आबाद नहीं थे बल्कि नज्द में आबाद थे जो फ़रअ़ से बहुत दूर है।

सफ़वान के इस सवाल के बाद इस विषय पर सोच-विचार शुरू हो गया। आख़िर अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब ने सफ़वान से कहा, "तुम तट का रास्ता छोड़ कर इराक़ के रास्ते सफ़र करो।" स्पष्ट रहे कि यह रास्ता बहुत लम्बा है, नज्द से होकर शाम जाता है और मदीना के पूरब में अच्छी-भली दूरी से गुज़रता है। क़ुरैश इस रास्ते से पूरी तरह न अंजान थे, इसलिए अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब ने सफ़वान को मश्वरा दिया कि वह फ़ुरात बिन हय्यान को—जो क़बीला बक्र बिन वाइल से ताल्लुक़ रखता था——रास्ता बताने के लिए मार्ग-दर्शक रख ले। वह इस यात्रा में उस का मार्ग-दर्शन कर देगा।

इस इन्तिज़ाम के बाद क़ुरैश का कारवां सफ़वान बिन उमैया के नेतृत्व में नये रास्ते से रवाना हुआ, मगर इस कारवां और इस की पूरी योजना की ख़बर मदीना पहुंच गयी। हुआ यह कि सुलैत बिन नोमान रज़ि० जो मुसलमान हो चुके थे, नुऐम बिन मसूऊद के साथ, जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे, मदिरा-पान की एक मीटिंग में जमा हुए——यह शराब के हराम होने से पहले की घटना है——जब नुऐम पर नशा छा गया तो उन्होंने क़ाफ़िले और उस के सफ़र की पूरी योजना को सविस्तार बयान कर दिया। सुलैत रज़ि० बिजली जैसी भरपूर तेज़ी के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा विवरण कह सुनाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुरन्त हमले की तैयारी शुरू कर दी और सौ सवारों की एक टुकड़ी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा कल्बी की कमान में देकर रवाना कर दिया। हज़रत ज़ैद ने बड़ी तेज़ी से रास्ता तय किया और अभी क़ुरैश का क़ाफ़िला बिल्कुल बे-ख़बरी की हालत में क़रदा नामक एक चश्मे पर पड़ाव डालने के लिए उतर रहा था कि उसे जा लिया और अचानक हल्ला बोल कर पूरे क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया। सफ़वान बिन उमैया और दूसरे कारवां के

सुरक्षकों को भागने के सिवा कोई रास्ता नज़र न आया।

मुसलमानों ने कारवां के सरदार फ़ुरात बिन हय्यान को और कहा जाता है कि और दो आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया। बरतनों और चांदी की बहुत बड़ी मात्रा, जो कारवां के पास थी और जिस का अंदाज़ा एक लाख दिरहम था, ग़नीमत के तौर पर हाथ आयी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुमुस निकाल कर ग़नीमत का माल टुकड़ी के लोगों में बांट दिया और फ़ुरात बिन हय्यान ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक हाथ पर इस्लाम अपना लिया।[13]

बद्र के बाद क़ुरैश के लिए यह सब से दुखद घटना थी जिसने उनके कष्ट, बेचैनी और ग़म में अधिक बढ़ौतरी कर दी। अब उन के सामने दो ही रास्ते थे-----या तो अपना गर्व व घमंड छोड़ कर मुसलमानों से समझौता कर लें या भरपूर लड़ाई कर के अपनी पुरानी इज़्ज़त और बीती बड़ाई को वापस लाएं और मुसलमानों की ताक़त को इस तरह तोड़ दें कि वे दोबारा सर न उठा सकें। मक्का के क़ुरैश ने इसी दूसरे रास्ते को चुना, चुनांचे इस घटना के बाद क़ुरैश का बदले का जोश कुछ और बढ़ गया और उस ने मुसलमानों से टक्कर लेने और उन के घरों में घुस कर उन पर हमले करने के लए भरपूर तैयारी शुरू कर दी। इस तरह पिछली घटनाओं के अलावा यह घटना भी ग़ज़वा-ए-उहद की ख़ास वजह बन गई है।

13) इब्ने हिशाम 2/50-51, रह्मतुल-लिल-आलमीन 2/219

ग़ज़वा-ए-उहद

बदला लेने की लड़ाई के लिए क़ुरैश की तैयारियां

मक्का वालों को बद्र की लड़ाई में हार जाने की जो चोट और अपने बड़ों के क़त्ल का जो दुख सहन करना पड़ा था, उस के सबब वे मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म व गुस्सा और ग़ज़ब से खौल रहे थे, यहां तक कि उन्होंने अपने क़त्ल किए गये लोगों पर रोने-पीटने से रोक दिया था और क़ैदियों के फ़िदये की अदाएगी में भी जल्दबाज़ी दिखाने से मना कर दिया था, ताकि मुसलमान उनके रंज और दुख का अंदाज़ा न कर सकें। फिर उन्होंने बद्र की लड़ाई के बाद एकमत होकर फ़ैसला किया कि मुसलमानों से एक भरपूर लड़ाई लड़ कर अपना कलेजा ठंडा करें और ग़ैज़ व ग़ज़ब और गुस्से की भावना को तस्कीन दें और इस के साथ ही इस तरह की लड़ाई की तैयारी भी शुरू कर दी। इस मामले में क़ुरैश के सरदारों में से इकरिमा बिन अबी जहल, सफ़वान बिन उमैया, अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़, ज़्यादा जोश में और सब से आगे-आगे थे।

इन लोगों ने इस सिलसिले में सब से पहला काम यह किया कि अबू सुफ़ियान का वह क़ाफ़िला जो बद्र की लड़ाई की वजह बना था और जिसे अबू सुफ़ियान बचा कर निकाल ले जाने में कामियाब हो गया था, उस का सारा माल लड़ाई के खर्चों के लिए रोक लिया और जिन लोगों का माल था उन से कहा कि ऐ क़ुरैश के लोगो! तुम्हें मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सख़्त धचका लगाया है और तुम्हारे चुने हुए सरदारों को क़त्ल कर डाला है, इसलिए उन से लड़ाई लड़ने के लिए इस माल के ज़रिए मदद करो, संभव है कि हम बदला चुका लें। क़ुरैश के लोगों ने इसे मंज़ूर कर लिया। चुनांचे यह सारा माल जिस की मात्रा एक हज़ार ऊंट और पचास हज़ार दीनार थी, लड़ाई की तैयारी के लिए बेच डाला गया। इसी बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी---

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ

"जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे अपने माल अल्लाह की राह से रोकने के लिए ख़र्च करेंगे, तो ये ख़र्च तो करेंगे लेकिन फिर यह इन के लिए हसरत की वजह भी बनेगा, फिर ये मग़लूब (पराजित) कर दिए जाएंगे।" (8:36)

फिर उन्होंने स्वयं-सेवी लड़ाई की सेवा करने का दरवाज़ा खोल दिया कि जो अहाबीश, कनाना और तिहामा के लोग मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ाई में शरीक होना चाहें, वे क़ुरैश के झंडे तले जमा हो जाएं, उन्होंने इस मक़सद के लिए लोभ-लालच की बहुत सी शक्लें भी अपनायीं, यहां तक कि अबू उज़्ज़ा कवि जो ब्रद की लड़ाई में क़ैद हुआ था और जिस को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह वचन लेकर कि अब वह आप के ख़िलाफ़ कभी न उठेगा, एहसान के तौर पर बिला फ़िदया छोड़ दिया था, उसे सफ़वान बिन उमैया ने उभारा कि वह क़बीलों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काने का काम करे और उस से यह वचन लिया कि अगर वह लड़ाई से बच कर ज़िंदा व सलामत वापस आ गया तो उसे मालामाल कर देगा वरना उस की लड़कियों की देखभाल करेगा। चुनांचे अबू उज़्ज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिए हुए वचन को पीठ पीछे डाल कर अभिमान

को उभारने वाले और भावनाओं को भड़काने वाले पद्यों के ज़रिए क़बीलों को उभारना शुरू किया। इसी तरह क़ुरैश ने एक और कवि मुसाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दे मुनाफ़ जुमही को इस मुहिम के लिए तैयार किया।

इधर अबू सुफ़ियान ने ग़ज़वा-ए-सवीक़ से नाकाम व नामुराद बल्कि सामान रसद की एक बहुत बड़ी मात्रा से हाथ धोकर वापस आने के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ लोगों को उभारने और भड़काने में कुछ ज़्यादा ही सरगर्मी दिखायी।"

फिर आख़िर में ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० की झड़प वाली घटना से क़ुरैश को जिस संगीन और आर्थिक रूप से कमर-तोड़ घाटे से दो-चार होना पड़ा और उन्हें जितना अधिक शोक और कष्ट हुआ, उस ने आग पर तेल का काम किया और इस के बाद मुसलमानों से एक निर्णायक लड़ाई लड़ने के लिए क़ुरैश की तैयारी की रफ़्तार में बड़ी तेज़ी आ गयी।

क़ुरैश की फ़ौज, लड़ाई का सामान और कमान

चुनांचे साल पूरा होते-होते क़ुरैश की तैयारी पूरी हो गई। उन के अपने लोगों के अ़लावा उन के अपने मित्रों और साथियों को मिला कर कुल तीन हज़ार की सेना तैयार हुई। क़ुरैश के नेताओं की राय हुई कि अपने साथ औरतें भी ले चलें ताकि इन की इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त का एहसास कुछ ज़्यादा ही जान लगा कर लड़ने की वजह बने। चुनांचे इस फ़ौज में उन की औरतें भी शामिल हुईं जिन की तायदाद पन्द्रह थी। सवारी और सामान ढोने के लिए तीन हज़ार ऊंट थे और सेना के लिए दो सौ घोड़े।[1] इन घोड़ों को ताज़ा दम रखने के लिए इन्हें पूरे रास्ते बाज़ू में ले जाया गया यानी इन पर सवारी नहीं की गयी। सुरक्षा हथियारों में सात सौ ज़िरहें (कवच) थीं।

---

1) ज़ादुल-मआद 2/92 यह प्रसिद्ध है लेकिन फ़तहुल-बारी 7/346 में घोड़ों की गिन्ती 100 बताई गई है

अबू सुफ़ियान को पूरी सेना का सेनापति बनाया गया । सेना की कमान ख़ालिद बिन वलीद को दी गयी और इकरिमा बिन अबू जहल को उन का सहयोगी बनाया गया। झंडा तय शुदा क़ायदे के मुताबिक़ क़बीला बनी अब्दुद्दार के हाथ में दिया गया।

मक्का की सेना का रवाना होना

इस भरपूर तैयारी के बाद मक्की सेना ने इस हालत में मदीना का रुख़ किया कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म व गुस्से और बदले की भावना उनके दिलों में शोला बन कर भड़क रही थी और यह बहुत जल्द पेश आने वाली लड़ाई के ख़ून-ख़राबे में तेज़ी का पता दे रही थी।

मदीना में सूचना

हज़रत अ़ब्बास रज़ि० क़ुरैश की इन सारी गतिविधियों और लड़ाई की तैयारियों का बड़ी होशियारी और गहराई से अध्ययन कर रहे थे, चुनांचे जूं ही यह फ़ौज हरकत में आयी हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने इन सारी बातों को एक ख़त में समेट कर तुरन्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रवाना कर दिया।

हज़रत अ़ब्बास रज़ि० का दूत संदेश पहुंचाने में बहुत फुर्तीला साबित हुआ। उस ने मक्का से मदीना तक कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी तीन दिन में तय करके उन का ख़त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले किया। उस वक़्त आप मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ रखते थे। यह ख़त हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पढ़ कर सुनाया। आप ने उन्हें रहस्य किसी को न बताने की ताकीद की और झट मदीना तशरीफ़ लाकर अंसार और मुहाजिरों के नेताओं से सलाह व मश्वरा किया।

हंगामी स्थिति के मुक़ाबले की तैयारी

इस के बाद मदीने में आम तौर से होशयार-बंदी की स्थिति पैदा हो गई। लोग किसी भी अचानक सूरतेहाल से निपटने के लिए हर वक़्त

हथियार-बंद रहने लगे, यहां तक कि नमाज़ में भी हथियार अलग नहीं किया जाता था।

इधर अंसार की एक छोटी सी टुकड़ी, जिस में साद बिन मुआज़, उसैद बिन हुज़ैर और साद बिन उबादा रज़ि० थे, को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निगरानी पर तैनात किया गया। यह लोग हथियार पहन कर सारी-सारी रात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर गुज़ार देते थे।

कुछ और टुकड़ी इस ख़तरे को देखते हुए कि कहीं ग़फ़लत की हालत में अचानक कोई हमला न हो जाये। मदीने में दाख़िले के अलग अलग रास्तों पर रवाना हो गई।

कुछ दूसरे दस्तों ने दुश्मन की चलत-फिरत का पता लगाने के लिए गश्त लगाना शुरू कर दिया। ये टुकड़ियाँ उन रास्तों पर गश्त लगाया करती थीं जिन से गुज़र कर मदीने पर छापा मारा जा सकता था।

मक्की सेना, मदीना के दामन में

इधर मक्की सेना जाने पहचाने क़ाफ़िले वाले रास्ते पर चलती रही, जब अबवा पहुंची तो अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा ने यह प्रस्ताव रखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मां की क़ब्र उखाड़ दी जाए।

लेकिन इस दरवाज़े को खोलने के जो संगीन नतीजे निकल सकते थे, उसके भय से फ़ौजी लीडरों ने यह तज्वीज़ मंज़ूर न की।

इसके बाद फ़ौज ने अपना सफ़र पहले की तरह जारी रखा, यहां तक कि मदीना के क़रीब पहुंच कर पहले अक़ीक़ घाटी से गुज़रा, फिर कुछ दाहिनी ओर कतरा कर उहद पहाड़ के क़रीब ऐनैन नामी एक जगह पर जो मदीना के उत्तर में क़नात घाटी के किनारे एक बंजर ज़मीन है पड़ाव डाल दिया, यह जुमा 06 शव्वाल सन् 03 की घटना है।

मदीना की रक्षा-नीति के लिए मज्लिसे शूरा की मीटिंग

मदीना की सूचना एजेंसियां मक्की फ़ौज की एक-एक ख़बर मदीना पहुंचा रही थीं, यहां तक कि उस के पड़ाव के बारे में आख़िरी ख़बर भी पहुंचा दी। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सैनिक हाई कमान की मंत्रालय परिषद बुलाई जिसमें मुनासिब कार्य नीति अपनाने के लिए सलाह व मश्वरा करना था, आपने उन्हें अपना देखा हुआ एक सपना बतलाया। आपने बताया कि अल्लाह की क़सम! मैंने एक भली चीज़ देखी। मैंने देखा कि कुछ गाएं ज़िब्ह की जा रही हैं और मैंने देखा कि मेरी तलवार के सिरे पर कुछ टूट-फूट है और यह भी देखा कि मैंने अपना हाथ एक महफ़ूज़ कवच में दाख़िल किया है। फिर आपने गाय का यह फल बताया कि कुछ सहाबा क़त्ल किए जाएंगे। तलवार की टूट-फूट का यह फल बताया कि आप के घर का कोई आदमी शहीद होगा और सुरक्षित ज़िरह (कवच) का यह फल बताया कि इससे मुराद मदीना शहर है।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० के सामने प्रतिरक्षात्मक नीति के बारे में अपनी राय पेश की कि मदीने से बाहर न निकलें, बल्कि शहर के भीतर ही क़िला बंद हो जाएं। अब अगर मुश्रिक अपने कैम्प में ठहरे रहते हैं तो बे-मक़सद और बुरा निवास होगा और अगर मदीना में दाख़िल होते हैं तो मुसलमान गली-कूचे के नाकों पर उनसे लड़ेंगे और औरतें छतों के ऊपर से उन पर ईंट-पत्थर फेंकेंगी, यही सही राय थी, और इसी राय से अब्दुल्लाह बिन उबई, (मुनाफ़िक़ों के सरदार) ने भी सहमति जतायी, जो इस मज्लिस में ख़ज़रज के एक बड़े नेता के रूप में शरीक था, लेकिन उस के सहमत होने की बुनियाद यह न थी कि लड़ाई की दृष्टि से यही सहीह दृष्टिकोण था, बल्कि उस का मक़सद यह था कि वह लड़ाई से दूर भी रहे और किसी को इसका एहसास भी न हो। लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंज़ूर था। उसने

चाहा कि यह आदमी अपने साथियों समेत पहली बार खुले आम रुसवा हो जाए और उन के कुफ़्र और निफ़ाक़ पर जो परदा पड़ा हुआ है, वह हट जाए और मुसलमानों को अपने सब से मुश्किल वक़्त में मालूम हो जाए कि उस की आस्तीन में कितने सांप रेंग रहे हैं।

चुनांचे बड़े सहाबा रज़ि० की एक जमाअत को जो बद्र में शिरकत से रह गयी थी, बढ़ कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मश्वरा दिया कि मैदान में तशरीफ़ ले चलें और उन्होंने अपनी इस राय पर बहुत ज़्यादा आग्रह किया यहां तक कि कुछ सहाबा रज़ि० ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम तो इस दिन की तमन्ना किया करते थे और अल्लाह से इस की दुआएं मांगा करते थे। अब अल्लाह ने यह मौक़ा जुटा दिया है और मैदान में निकलने का वक़्त आ गया है, तो फिर आप दुश्मन से मुक़ाबले ही के लिए तशरीफ़ ले चलें। वे यह न समझें कि हम डर गये हैं।"

इन गर्मी दिखाने वाले लोगों में ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० लिस्ट में सब से ऊपर थे जो बद्र की लड़ाई में अपनी तलवार के जौहर दिखा चुके थे। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि उस ज़ात की क़सम, जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किताब उतारी, मैं कोई भोजन न करूंगा, यहां तक कि मदीना से बाहर अपनी तलवार के ज़रिए उन से दो-दो हाथ कर लूं।[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी संख्या के आग्रह के सामने अपनी राय छोड़ दी और आख़िरी फ़ैसला यही हुआ कि मदीना से बाहर खुले मैदान में लड़ाई लड़ी जाए।

---

2) सीरा हलबिया 2/14

इस्लामी सेना की तर्तीब और लड़ाई के मैदान के लिए रवाना होना

इस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुमा की नमाज़ पढ़ाई तो वाज़ व नसीहत की, कोशिशों पर उभारा और बताया कि सब्र और क़दमों के जमाव से ही विजय मिल सकती है। साथ ही हुक्म दिया कि दुश्मन से मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाएं। यह सुन कर लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई।

इस के बाद जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अस्र की नमाज़ पढ़ी तो उस वक़्त तक लोग जमा हो चुके थे। अ़वाली के निवासी भी आ चुके थे। नमाज़ के बाद आप अंदर तश्रीफ़ ले गए। साथ में अबू बक्र व उमर रज़ि० भी थे। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर पर पगड़ी बांधी और लिबास पहनाया। आप ने नीचे ऊपर दो ज़िरहें पहनीं, तलवार लटकायी और हथियार से सज कर लोगों के सामने तश्रीफ़ लाए।

लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के इन्तिज़ार में तो थे ही लेकिन इस बीच हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ने लोगों से कहा कि आप लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैदान में निकलने पर ज़बरदस्ती तैयार किया है, इसलिए मामला आप ही के हवाले कर दीजिए। यह सुन कर सब लोगों ने शर्म महसूस की और जब आप बाहर तश्रीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हमें आप का विरोध नहीं करना चाहिए था। आप को जो पसंद हो वही कीजिए। अगर आप को यह पसंद है कि मदीना में रहें तो आप ऐसा ही कीजिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "कोई नबी जब अपना हथियार पहन ले

तो मुनासिब नहीं कि उसे उतारे, यहां तक कि अल्लाह उस के दर्मियान और उस के दुश्मन के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे।[3]"

इस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौज को तीन हिस्सों में बांट दिया——

1.मुहाजिरों की टुकड़ी

इस का झंडा हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर अ़ब्दरी रज़ि० को दिया।

2. क़बीला औस (अंसार) की टुकड़ी

इस का झंडा हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० को दिया।

3. क़बीला ख़ज़रज (अंसार) की टुकड़ी

इस का झंडा हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि० को दिया।

पूरी फ़ौज एक हज़ार लड़ने वाले बहादुर सिपाहियों पर सम्मिलित थी, जिन में एक सौ ज़िरह पोश (कवचधारी) और पचास घुड़सवार थे[4] और यह भी कहा जाता है कि घुड़सवार कोई भी न था।

हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को इस काम पर मुक़र्रर फ़रमाया कि वह मदीना के अंदर रह जाने वाले लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे। इस के बाद कूच का एलान फ़रमा दिया और फ़ौज ने उत्तर का रुख़ किया। हज़रत साद बिन मुआज़ और साद बिन उबादा रज़ि० ज़िरह (कवच) पहने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे-आगे चल रहे थे।

सनीयतुल विदाअ़ से आगे बढ़े तो एक टुकड़ी नज़र आयी जो बहुत हथियार पहने हुए थी और पूरी फ़ौज से अलग-थलग थी। आप

---

3) मुसनद अहमद, निसाई, हाकिम, इब्ने इस्हाक़

4) यह बात इब्ने क़य्यिम ने ज़ादुल-मआद 2/92 में ब्यान की है। हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं कि यह खुली ग़लती है। मूसा बिन उक़बा ने कहा है कि मुसलमानों के साथ उहद की लड़ाई में कोई घोड़ा था ही नहीं। वाक़िदी का ब्यान है कि केवल दो घोड़े थे एक रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास और एक अबू हुरैरा (रज़ि०) के पास (फ़तहुल-बारी 7/350)

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया तो बताया गया कि ख़ज़रज के हलीफ़ (मित्र) यहूदी हैं¹, जो मुश्रिकों के ख़िलाफ़ लड़ाई में शरीक होना चाहते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया, क्या ये मुसलमान हो चुके हैं? लोगों ने कहा, नहीं। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों के ख़िलाफ़ कुफ़्र वालों की मदद लेने से इंकार कर दिया।

सेना का मुआयना

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "शेख़ान" नामी जगह पर पहुंच कर सेना का मुआयना किया, जो लोग छोटे या लड़ाई के योग्य नज़र नहीं आए, उन्हें वापस कर दिया, उन के नाम ये हैं-----

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०,
2. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि०
3. हज़रत उसैद बिन ज़ुहैर रज़ि०
4. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि०
5. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि०
6. हज़रत अ़राबा बिन औस रज़ि०
7. हज़रत अ़म्र बिन हज़्म रज़ि०
8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि०
9. हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० अंसारी,
10. हज़रत साद बिन हिबा रज़ि०

---

(1) यह घटना इब्ने सअद ने रिवायत की है इसमें यह भी बताया गया है कि यह बनू कैनुक़ाअ के यहूद थे (2/34) लेकिन यह सही नहीं है क्यों कि बनू कैनुक़ाअ को बद्र की लड़ाई के कुछ ही दिनों बाद देश निकाला दे दिया गया था।

इसी लिस्ट में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० का नाम भी ज़िक्र किया जाता है, लेकिन बुख़ारी में इनकी जिस रिवायत का ज़िक्र किया गया है, उस से स्पष्ट होता है कि वह उहद के मौक़े पर लड़ाई में शरीक थे।

अलबत्ता कम उम्री के बावजूद हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज और समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० को जंग में शरीक होने की इजाजत मिल गई इसका कारण यह हुआ कि हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज रज़ि० बड़े माहिर तीर चलाने वाले थे। इसलिए उन्हें इजाज़त मिल गई। जब उन्हें इजाज़त मिल गयी तो हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० ने कहा कि मैं तो राफ़ेअ़ से ज़्यादा ताक़तवर हूं मैं इन्हें पछाड़ सकता हूं। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की ख़बर दी गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सामने दोनों से कुश्ती लड़वाई और सच में समुरा रज़ि० ने राफ़ेअ़ रज़ि० को पछाड़ दिया, इसलिए इन्हें भी इजाज़त मिल गयी।

उहद और मदीना के बीच रात गुज़ारना

यहीं शाम हो चुकी थी, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहीं मग़्रिब और इशा की नमाज़ पढ़ी और यहीं रात भी गुज़ारने का फ़ैसला किया। पहरे के लिए पचास सहाबा को चुना, जो कैम्प के चारों ओर चक्कर लगाते रहते थे। इन के ज़िम्मेदार मुहम्मद बिन मुस्लिमा अंसारी रज़ि० थे। ये वही बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने कअ़ब बिन अशरफ़ को ठिकाने लगाने वाली जमाअ़त का नेतृत्व किया था। ज़कवान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ख़ास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहरा दे रहे थे।

अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उस के साथियों की सरकशी

फ़ज्र होने से कुछ पहले आप फिर चल पड़े और शौत नामी जगह पर पहुंच कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। अब आप दुश्मन के बिल्कुल क़रीब

थे और दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। यहीं पहुंच कर अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ ने बग़ावत कर दी और कोई एक तिहाई फ़ौज यानी तीन सौ व्यक्तियों को लेकर यह कहता हुआ वापस चला गया कि हम नहीं समझते कि क्यों ख़ामख़ाह अपनी जान दें। उस ने इस बात पर भी विरोध जताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस की बात नहीं मानी और दूसरों की बात मान ली।

यक़ीनी तौर पर इस अलगाव की वजह वह नहीं थी जो उस मुनाफ़िक़ ने ज़ाहिर की थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस की बात नहीं मानी, क्योंकि इस शक्ल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेना के साथ यहां तक उस के आने का सवाल ही पैदा नहीं होता था, इसे फ़ौज को रवाना होने के पहले ही क़दम पर अलग हो जाना चाहिए था, इसलिए सच्चाई वह नहीं जो उस ने ज़ाहिर की थी, बल्कि सच्चाई यह थी कि वह उस नाज़ुक मोड़ पर अलग होकर इस्लामी फ़ौज में ऐसे वक़्त बेचैनी और खलबली मचाना चाहता था, जब दुश्मन उस की एक-एक नक़्ल व हरकत देख रहा हो, ताकि एक ओर तो आम फ़ौजी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ छोड़ दें और जो बाक़ी रह जाएं, उन के हौसले टूट जाएं और दूसरी ओर इस दृश्य को देख कर दुश्मन की हिम्मत बंधे और उस के हौसले बुलन्द हों, इसलिए यह कार्यवाही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके निष्ठावान साथियों के ख़ात्मे का एक असरदार उपाय था, जिस के बाद इस मुनाफ़िक़ को उम्मीद थी कि उस की और उस के साथियों की सरदारी और नेतृत्व के लिए मैदान साफ़ हो जाएगा।

क़रीब था कि यह मुनाफ़िक़ अपने कुछ मक़सदों के हासिल करने में सफल हो जाता क्योंकि और दो जमाअतों यानी क़बीला औस में से बनू हारिसा और क़बीला ख़ज़रज में से बनू सलमा के क़दम भी उखड़ चुके थे और वे वापसी की सोच रहे थे, लेकिन अल्लाह ने उन का हाथ

पकड़ा और ये दोनों जमाअतें बेचैनी और वापसी के इरादे के बाद जम गयीं। इन्हीं के बारे में अल्लाह का इर्शाद है----------

إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

"जब तुम में से दो जमाअतों ने इरादा किया कि बुज़दिली अपनाएं और अल्लाह उन का वली है और ईमान वालों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए।" (3:122)

बहरहाल मुनाफ़िक़ों ने वापसी का फ़ैसला किया तो इस सब से नाज़ुक मौक़े पर हज़रत जाबिर रज़ि० के पिता हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिराम रज़ि० ने उन्हें उन का फ़र्ज़ याद दिलाना चाहा। चुनांचे उन्होंने उन्हें डांटते हुए वापसी पर उभारते हुए और यह कहते हुए उन के पीछे-पीछे चले, कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दिफ़ाअ़ करो। पर उन्हों ने जवाब में कहा, अगर हम जानते कि आप लोग लड़ाई करेंगे तो हम वापस न होते। यह जवाब सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिराम यह कहते हुए वापस हुए कि, ऐ अल्लाह के दुश्मनो! तुम पर अल्लाह की मार, याद रखो! अल्लाह अपने नबी को तुम से बे-नियाज़ कर देगा।

इन्हीं मुनाफ़िक़ों के बारे में अल्लाह का इर्शाद है------

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَاتَّبَعْنَاكُمْ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ

"और ताकि अल्लाह उन्हें भी जान ले जिन्होंने निफ़ाक़ का काम किया और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ाई करो या रक्षा करो तो उन्होंने कहा कि अगर हम लड़ाई जानते तो यक़ीनी तौर पर तुम्हारा पालन करते। ये लोग आज ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र के

ज़्यादा क़रीब हैं, मुंह से ऐसी बात कहते हैं जो दिल में नहीं है, और ये लोग जो कुछ छुपाते हैं, अल्लाह उसे जानता है।" (3:167)

बाक़ी इस्लामी फ़ौज उहद के दामन में

इस बग़ावत और वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाक़ी फ़ौज को लेकर, जिस की तायदाद सात सौ थी, दुश्मन की तरफ़ क़दम बढ़ाया। दुश्मन का पड़ाव आप के बीच और उहद के बीच कई दिशाओं से रोक बना हुआ था। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि कोई आदमी है जो हमें दुश्मन के पास गुज़रे बिना किसी क़रीबी रास्ते से ले चले।

इस के उत्तर में अबू ख़ैसमा ने अर्ज़ किया कि "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हूं।" फिर उन्होंने एक छोटा रास्ता इख़्तियार किया जो मुश्रिकों की सेना को पच्छिम की तरफ़ छोड़ता हुआ बनी हारिसा के खेतों से गुज़रता था।

इस रास्ते से जाते हुए फ़ौज का गुज़र मुरब्बा बिन क़ैज़ी के बाग़ से हुआ। यह आदमी मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) भी था और अंधा भी। उस ने सेना का आना महसूस किया तो मुसलमानों के चेहरों पर धूल फेंकने लगा और कहने लगा कि अगर आप अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं तो याद रखें कि आप को मेरे बाग़ में आने की इजाज़त नहीं। लोग उसे क़त्ल करने को लपके लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "इसे क़त्ल न करो। यह दिल और आंख दोनों का अंधा है।"

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ कर घाटी के अन्तिम सिरे पर स्थित उहद पहाड़ की घाटी पर उतरे और वहीं अपनी फ़ौज का कैम्प लगवाया। सामने मदीना था और पीछे उहद का ऊंचा पहाड़, इस तरह दुश्मन की फ़ौज मुसलमानों और मदीना के दर्मियान एक सीमा बन गयी।

...रक्षात्मक योजना

यहां पहुंच कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सेना को क्रम के साथ संगठित किया और सामरिक दृष्टि से उसे कई टुकड़ियों में बांट दिया। दक्ष तीरअंदाज़ों की एक टुकड़ी भी चुनी जो खास योद्धाओं पर आधारित थी। उनकी कमान हज़रत जुबैर बिन नोमान अंसारी दौसी बद्री रज़ि० के सुपुर्द की और उन्हें क़नात घाटी के दक्षिणी किनारे पर स्थित एक छोटी सी पहाड़ी पर जो इस्लामी सेना के कैम्प से कोई डेढ़ सौ मीटर दक्षिण-पूरब में स्थित है और अब जबले रुमात के नाम से प्रसिद्ध है, तैनात फ़रमाया। इसका मक़सद उन बातों से साफ़ है जो आप ने इन तीरअंदाज़ों को हिदायत देते हुए कहीं। आप ने उन के कमांडरों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया, "घुड़सवारों को तीर मार कर हम से दूर रखो। वे पीछे से हम पर चढ़ न आएं। हम जीतें या हारें, तुम अपनी जगह रहना, तुम्हारी ओर से हम पर हमला न होने पाए।[6]" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीरअंदाज़ों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया, "हमारी पीछे से हिफ़ाज़त करना। अगर देखो कि हम मारे जा रहे हैं तो भी हमारी मदद को न आना और अगर देखो कि हम ग़नीमत का माल समेट रहे हैं तो भी हमारे साथ शरीक न होना।[7]" और सहीह बुख़ारी के शब्दों के अनुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यूं फ़रमाया, "अगर तुम लोग देखो कि हमें चिड़िया उचक रही हैं तो भी अपनी जगह न छोड़ना, यहां तक कि मैं बुला भेजूं और अगर तुम लोग देखो कि हम ने क़ौम को परास्त कर दिया है और उन्हें कुचल दिया है तो भी अपनी-अपनी जगह न छोड़ना, यहां तक कि मैं बुला भेजूं।"[8]

---

6) इब्ने हिशाम 2/65-66

7) अहमद, तबरानी, हाकिम इब्ने अब्बास से (देखिए फ़तहुल-बारी 7/350)

8) बुख़ारी किताबुल-जिहाद 1/426

इन सख़्त से सख़्त फ़ौजी हुक्मों और हिदायतों के साथ इस टुकड़ी को उस पहाड़ी पर लगा कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह अकेली दरार बंद कर दी जिस से दाख़िल होकर मुश्रिकों की टुकड़ी मुसलमानों की सफ़ों (लाइनों) के पीछे पहुंच सकती थी और उन को घेरे में ले सकती थी।

बाक़ी फ़ौज का क्रम इस तरह था----मैमना (दाएं बाज़ू) पर हज़रत मुंज़िर बिन अम्र रज़ि० मुक़र्रर हुए और मैसरा (बाएं बाज़ू) पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि०----और इनका सहायक हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० को बनाया गया--हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को यह मुहिम भी सौंपी गयी थी कि वह ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवारों की राह रोके रखें। इस क्रम के अलावा सफ़ (पंक्ति) के अगले हिस्से में ऐसे मशहूर और चुने हुए बहादुर मुसलमान रखे गए जिन की वीरता और युद्ध कौशल मशहूर थी और जिन्हें हज़ारों के बराबर माना जाता था।

यह योजना विधिवत और बारीकी से तैयार हुआ था जिस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैनिक दक्षता का पता चलता है और साबित होता है कि कोई कमांडर चाहे कितना अक़्ल वाला क्यों न हो आप से ज़्यादा बारीक और हिक्मत भरी योजना तैयार नहीं कर सकता, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस के बावजूद कि दुश्मन के बाद यहां तशरीफ़ लाए थे। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी फ़ौज के लिए वह जगह चुनी जो सामरिक दृष्टि से लड़ाई के मैदान की सब से अच्छी जगह थी यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ की ऊंचाइयों की ओट लेकर अपनी पीठ और दाहिना बाज़ू बचा लिया और बाएं बाज़ू पर लड़ाई में जिस इकलौती दराड़ से हमला करके पीछे तक पहुंचा जा सकता था, उसे तीरअंदाज़ों के ज़रिए बंद कर दिया और पड़ाव के लिए एक ऊंची जगह चुन ली कि अगर खुदा न करे हार से दो-चार होना पड़े तो भागने और पीछा करने वाले

की क़ैद में जाने के बजाए कैम्प में पनाह ली जा सके और अगर दुश्मन कैम्प पर क़ब्ज़े के लिए क़दम आगे बढ़ाए तो उसे बड़े संगीन नतीजों से दो-चार होना पड़े। इस के ख़िलाफ़ आप ने दुश्मन को अपने कैम्प के लिए एक ऐसी नीची जगह क़ुबूल करने पर मजबूर कर दिया कि अगर वह ग़ालिब आ जाए तो जीत का विशेष लाभ न उठा सकें और अगर मुसलमान ग़ालिब आ जाएं तो पीछा करने वालों की पकड़ से बच न सके। इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मशहूर बहादुरों की एक जमाअत चुन कर सैनिक तायदाद की कमी पूरी कर दी। यह था नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेना का क्रम और संगठन जो 7 शव्वाल 03 हिजरी को सनीचर के दिन सुबह अमल में आया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सेना में वीरता की रूह फूंकते हैं

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया कि जब तक आप हुक्म न दें, लड़ाई शुरू न की जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नीचे ऊपर दो ज़िरहें (कवच) पहन रखी थीं। अब आपने सहाबा किराम रज़ि० को लड़ाई पर उभारते हुए ताकीद की कि जब दुश्मन से टकराव हो तो क़दमों को जमा कर मुक़ाबला करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन में बहादुरी और निर्भीकता की हवा फूंकते हुए एक बड़ी तेज़ तलवार म्यान से बाहर निकाली और फ़रमाया, कौन है जो इस तलवार को लेकर इसका हक़ अदा करे? इस पर कई सहाबा तलवार लेने के लिए लपक पड़े जिनमें अली बिन अबी तालिब रज़ि०, ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० और उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी थे, लेकिन अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि० ने आगे बढ़कर अनुरोध किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसका हक़ क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने फ़रमाया, "इससे दुश्मन के चेहरे को मारो, यहां तक कि यह टेढ़ी हो

जाए।" उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! "मैं इस तलवार को लेकर इस का हक़ अदा करना चाहता हूं।" आप ने तलवार उन्हें दे दी।

अबू दुजाना रज़ि० बड़े वीर योद्धा थे। लड़ाई के वक़्त अकड़ कर चलते थे। उन के पास एक लाल पट्टी थी, जब उसे बांध लेते तो लोग समझ जाते कि वह अब मौत तक लड़ते रहेंगे। चुनांचे जब उन्होंने तलवार ली तो सर पर पट्टी भी बांध ली और दोनों फ़रीक़ की पंक्तियों में अकड़ कर चलने लगे। यही मैक़ा था जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि यह चाल अल्लाह को ना पसंद है, लेकिन इस जैसे मौक़े पर नहीं।

मक्की सेना का गठन

मुश्रिकों ने भी पंक्ति बनाने के नियम के अनुसार ही अपनी सेना का गठन किया था। उन का सेनापति अबू सुफ़ियान था जिस ने सेना के बीच के हिस्से में अपना केन्द्र बनाया था। दाहिने हिस्से पर ख़ालिद बिन वलीद थे, जो अभी तक मुश्रिक थे। बाएं हिस्से पर इकरिमा बिन अबू जहल था। पैदल सेना की कमान सफ़वान बिन उमैया के पास थी और तीरअंदाज़ों पर अब्दुल्लाह बिन रबीआ रखे गए।

झंडा बनू अब्दुद्दार की एक छोटी सी जमाअत के हाथ में था। यह पद उन्हें उस समय से हासिल था जब बनू अब्दे मनाफ़ ने कुसई से विरासत में पाए हुए पदों को आपस में बांट लिया था जिसे विस्तार से किताब के शुरू में दिया जा चुका है। फिर बाप-दादा से जो चलन चला आ रहा था, उसे देखते हुए कोई व्यक्ति उस पद के लिए उन से झगड़ नहीं सकता था लेकिन सेनापति अबू सुफ़ियान ने उन्हों याद दिलाया कि बद्र की लड़ाई में इनका झण्डा-बरदार नज़्र बिन हारिस गिरफ़्तार हुआ तो कुरैश को किन हालात से दो-चार होना पड़ा था और इस बात को याद दिलाने के साथ ही उन का गुस्सा भड़काने के लिए कहा, "ऐ बनी

अब्दुद्दार! बद्र के दिन आप लोगों ने हमारा झंडा ले रखा था तो हमें जिन हालात से दो-चार होना पड़ा वह आपने देख ही लिया है। हक़ीक़त में फ़ौज पर झंडे ही की ओर से ज़द पड़ती है। जब झंडा गिर पड़ता है तो फ़ौज के क़दम उखड़ जाते हैं। पस अबकी बार आप लोग या तो हमारा झंडा ठीक तौर से संभालें या हमारे और झंडे के बीच से हट जाएं। हम इसका इन्तिज़ाम ख़ुद कर लेंगे।" इस बातचीत से अबू सुफ़ियान का जो मक़सद था, उस में वह सफल रहा, क्योंकि उसकी बात सुन कर बनी अब्दुद्दार को सख़्त ताव आया। उन्होंने धमकियां दीं। मालूम होता था कि उसपर पिल पड़ेंगे। कहने लगे, हम अपना झंडा तुम्हें देंगे? कल जब टक्कर होगी तो देख लेना कि हम क्या करते हैं? और वाक़ई लड़ाई जब शुरू हुई तो वे बड़ी बहादुरी से जमे रहे, यहां तक कि उनका एक-एक आदमी मौत के घाट उतर गया।

क़ुरैश की राजनीतिक चालबाज़ी

लड़ाई के आरंभ होने से कुछ पहले क़ुरैश ने मुसलमानों की पंक्ति में फूट डालने और झगड़ा पैदा करने की कोशिश की। इस मक़सद के लिए अबू सुफ़ियान ने अंसार के पास यह पैग़ाम भेजा कि आप लोग हमारे और हमारे चचेरे भाई मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच से हट जाएं, तो हमारा रुख़ भी आप की ओर न होगा, क्योंकि हमें आप लोगों से लड़ने की कोई ज़रूरत नहीं, लेकिन जिस ईमान के आगे पहाड़ भी नहीं ठहर सकते, उसके आगे यह चाल कैसे कामियाब हो सकती थी, चुनांचे अंसार ने उसे बहुत सख़्त जवाब दिया और कड़वी-कसेली सुनाई।

फिर ज़ीरो वक़्त क़रीब आ गया और दोनों फ़ौजें एक दूसरे के क़रीब आ गयीं तो क़ुरैश ने इस काम के लिए एक और कोशिश यानी उन का एक ख़ियानतों का आदी आदमी अबू आमिर फ़ासिक़ मुसलमानों के सामने ज़ाहिर हुआ। उस आदमी का नाम अब्दे अम्र बिन सैफ़ी था

और उसे राहिब (दुनिया का त्यागी) कहा जाता था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका नाम फ़ासिक़ रख दिया। यह जाहिलियत में औस क़बीले का सरदार था, लेकिन जब इस्लाम आया तो इस्लाम उसके गले की फांस बन गया और वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ खुलकर दुश्मनी पर उतर आया। चुनांचे वह मदीने से निकल कर कुरैश के पास पहुंचा और उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ भड़का-भड़का कर लड़ाई पर तैयार किया और यक़ीन दिलाया कि मेरी क़ौम के लोग मुझे देखेंगे तो मेरी बात मान कर मेरे साथ हो जाएंगे। चुनांचे यह पहला आदमी था जो उहद के मैदान में हब्शियों और मक्का वालों के दासों के साथ मुसलमानों के सामने आया और अपनी क़ौम को पुकार कर अपना परिचय कराते हुए कहा, औस क़बीले के लोगों! मैं अबू आमिर हूं। उन लोगों ने कहा, ओ फ़ासिक़! अल्लाह तेरी आंख को ख़ुशी नसीब न करे। उस ने यह जवाब सुना तो कहा, ओ हो! मेरी क़ौम मेरे बाद शरारत से दो-चार हो गयी है। (फिर जब लड़ाई शुरू हुई तो उस आदमी ने बड़ी ज़ोरदार लड़ाई की और मुसलमानों पर जम कर पत्थर बरसाए।)

इस तरह कुरैश की ओर से ईमान वालों की पंक्तियों में फूट डालने की दूसरी कोशिश भी नाकाम रही। इस से अंदाज़ा किया जा सकता है कि तायदाद की ज़्यादती और साज़ व सामान के बहुत ज़्यादा होने के बाद भी मुश्रिकों के दिलों पर मुसलमानों का कितना डर और उन का कैसा दबदबा छाया हुआ था।

जोश और हिम्मत दिलाने के लिए कुरैशी औरतों की बेपनाह कोशिशें

इधर कुरैश की औरतें भी लड़ाई में अपना हिस्सा अदा करने उठीं। उन का नेतृत्व अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा कर रही थी। इन औरतों ने सफ़ों (पंक्तियों) में घूम-घूम कर और दफ़ पीट-पीट कर

लोगों को जोश दिलाया। लड़ाई के लिए भड़काया, जांबाज़ों को ग़ैरत दिलाई और नेज़ा चलाने, तलवार भांजने, मारधाड़ करने और तीर चलाने के लिए भावनाओं को भड़काया कभी वे झंडा-बरदारों से यूं कहतीं——

ويها بنى عبد الدار   ويها حماة الادبار   ضربا بكل بتار

"देखो, बनी अब्दुद्दार! देखो पीठ के निगरां! ख़ूब करो तलवार का वार"

और कभी अपनी क़ौम को लड़ाई का जोश दिलाते हुए यूं कहतीं,

إِنْ تُقْبِلُوْا نُعَانِقْ   وَنَفْرِشُ النَّمَارِقْ   اَوْ تُدْبِرُوْا نُفَارِقْ   فِرَاقَ غَيْرِ وَامِقْ

"अगर आगे बढ़ोगे तो हम गले लगाएंगी, और क़ालीनें बिछाएंगी, और अगर पीछे हटोगे तो रूठ जाएंगी और अलग हो जाएंगी।"

लड़ाई का पहला ईंधन

इस के बाद दोनों फ़रीक़ बिल्कुल आमने-सामने और क़रीब आ गए और लड़ाई का मरहला शुरू हो गया। लड़ाई का पहला ईंधन मुश्रिकों का झंडा-बरदार तलहा बिन अबी तलहा अ़ब्दरी बना। यह आदमी कुरैश का बहुत ही बहादुर घुड़सवार था। उसे मुसलमान कबशुल-कतीबा (फ़ौज का मेंढा) कहते थे। यह ऊंट पर सवार होकर निकला और लड़ने की दावत दी। इस की हद से बढ़ी हुई बहादुरी की वजह से आम सहाबा मुक़ाबले से कतरा गए, लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि० आगे बढ़े और एक क्षण की मोहलत दिए बिना शेर की तरह छलांग लगा कर ऊंट पर जा चढ़े, फिर उसे अपनी पकड़ में ले कर ज़मीन पर कूद गए और तलवार से ज़िब्ह कर दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह जोशीला दृश्य देखा तो मारे ख़ुशी के नारा-ए-तकबीर बुलन्द किया। मुसलमानों ने भी नारा-ए-तक्बीर लगाया, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत

ज़ुबैर रज़ि० की प्रशंसा की और फ़रमाया, हर नबी का एक हवारी होता है और मेरे हवारी ज़ुबैर हैं।[9]

लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु और झंडा-बरदारों का सफ़ाया

इस के बाद हर ओर लड़ाई के शोले भड़क उठे और पूरे मैदान में ज़ोरदार मार-धाड़ शुरू हो गई। मुशिरकों का झंडा लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु था। बनू अब्दुद्दार ने अपने कमांडर तलहा बिन अबी तलहा के क़त्ल के बाद एक के बाद एक कर के झंडा संभाला, लेकिन सब के सब मारे गए। सब से पहले तलहा के भाई उस्मान बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया और यह कहते हुए आगे बढ़ा।---------

ان على اهل اللواء حقا   ان تخضب الصعدة او تندق

"झंडे वालों का फ़र्ज़ है कि नेज़ा (ख़ून से) रंगीन हो जाए या टूट जाए।"

इस आदमी पर हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० ने हमला किया और इस के कंधे पर ऐसी तलवार मारी कि वह हाथ समेत कंधे को काटती और जिस्म को चीरती हुई नाफ़ तक जा पहुंची, यहां तक कि फेफड़ा दिखाई देने लगा।

इस के बाद अबू साद बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया। उस पर हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने तीर चलाया और वह ठीक उस के गले पर लगा, जिस से उस की जीभ बाहर निकल आयी और वह उसी वक़्त मर गया---लेकिन कुछ जीवनी लेखकों का कहना है कि अबू साद ने बाहर निकल कर लड़ने की दावत दी और हज़रत अली रज़ि० ने आगे बढ़ कर मुक़ाबला किया। दोनों ने एक दूसरे पर तलवार का एक-एक वार किया, लेकिन हज़रत अली रज़ि० ने अबू साद को मार लिया।

---

9) इस की चर्चा सीरते हलबिया में है जबकि अहादीस में यह जुम्ला दूसरे अवसर पर आया है।

इस के बाद मुसाफ़ेअ बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया लेकिन आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़लह रज़ि० ने तीर मार कर क़त्ल कर दिया। इस के बाद उस के भाई किलाब बिन तलहा बिन अबी तलहा न झंडा उठाया, मगर इस पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० टूट पड़े और लड़-भिड़ कर उस का काम तमाम कर दिया। फिर इन दोनों के भाई जिलास बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, मगर उसे तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० ने नेज़ा मार कर ख़त्म कर दिया और कहा जाता है कि आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़लह रज़ि० ने तीर मार कर ख़त्म किया।

ये एक ही घर के छः लोग थे। यानी सब के सब अबू तलहा अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन अब्दुद्दार के बेटे या पोते थे जो मुश्रिकों के झंडे की हिफ़ाज़त करते हुए मारे गए। इस के बाद क़बीला बनी अब्दुद्दार के एक और आदमी अरतात बिन शुरहबील ने झंडा संभाला, लेकिन उसे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने और कहा जाता है कि हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० ने क़त्ल कर दिया। इस के बाद शुरैह बिन क़ारिज़ ने झंडा उठाया मगर उसे क़ुज़मान ने क़त्ल कर दिया। क़ुज़मान मुनाफ़िक़ था और इस्लाम के बजाए क़बीले वाले की ग़ैरत के जोश में मुसलमानों के साथ लड़ने आया था------शुरैह के बाद अबू ज़ैद अम्र बिन अब्दे मुनाफ़ अब्दरी ने झंडा संभाला, मगर उसे भी क़ुज़मान ने ठिकाने लगा दिया, फिर शुरहबील बिन हाशिम अब्दरी के एक लड़के ने झंडा उठाया, मगर वह भी क़ुजमान के हाथों मारा गया।

यह बनू अब्दुद्दार के दस लोग हुए जिन्होंने मुश्रिकों का झंडा उठाया और सब के सब मारे गए। इस के बाद इस क़बीले का कोई आदमी बाक़ी न बचा जो झंडा उठाता, लेकिन इस मौक़े पर उन के एक हब्शी ग़ुलाम ने---------जिस का नाम सवाब था------लपक कर झंडा उठा लिया और ऐसी वीरता से जान लगा कर लड़ा कि अपने से पहले

झंडा उठाने वाले अपने आक़ाओं से भी बाज़ी ले गया यानी यह आदमी बराबर लड़ता रहा, यहां तक कि उस के दोनों हाथ एक-एक कर के काट दिए गए लेकिन इस के बाद भी उस ने झंडा गिरने न दिया, बल्कि घुटने के बल बैठ कर सीने और गरदन की मदद से खड़ा किए रखा यहां तक कि जान से मार डाला गया और उस वक़्त भी यह कह रहा था कि ऐ अल्लाह! अब तो मैंने कोई कसर बाक़ी न छोड़ी?

इस दास (सवाब) के क़त्ल के बाद झंडा ज़मीन पर गिर गया और उसे उठाने वाला कोई बाक़ी न बचा इसलिए वह गिरा ही रहा।

बाक़ी हिस्सों में लड़ाई की स्थिति

एक ओर मुश्रिकों का झंडा लड़ाई का केन्द्र था, तो दूसरी ओर मैदान के बाक़ी हिस्सों में भी लड़ाई में तेज़ी चल रही थी। मुसलमानों की पंक्तियों में ईमान की रूह छायी हुई थी, इसलिए वे शिर्क और कुफ़्र की फ़ौज पर इस बाढ़ की तरह टूटे पड़ रहे थे जिस के सामने कोई बन्दा ठहर नहीं पाता। मुसलमान इस मौक़े पर अमित-अमित कर रहे थे और इस लड़ाई में यही इन की ख़ास बात थी।

इधर अबू दुजाना रज़ि० अपनी लाल पट्टी बांधे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार थामे और उस के हक़ को अदा करने का पक्का इरादा किए आगे बढ़े और लड़ते हुए दूर तक जा घुसे। वे जिस किसी मुश्रिक से टकराते, उस का सफ़ाया कर देते। उन्होंने मुश्रिकों की सफ़ों की सफ़ें उलट दीं।

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० का बयान है कि जब मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तलवार मांगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे न दी तो मेरे दिल पर उसका असर हुआ और मैंने अपने मन में सोचा कि मैं आप की फूफी हज़रत सफ़िय्या का बेटा हूं, क़ुरैशी हूं और मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर अबू दुजाना रज़ि० से पहले तलवार मांगी, लेकिन आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने मुझे न दी और उन्हें दे दी इसलिए अल्लाह की क़सम! मैं देखूंगा कि यह इस से क्या काम लेते हैं? चुनांचे मैं उन के पीछे लग गया। उन्होंने यह किया कि पहले अपनी लाल पट्टी निकाली और सर पर बांधी। इस पर असार ने कहा कि अबू दुजाना ने मौत की पट्टी निकाल ली है। फिर वह यह कहते हुए मैदान की ओर बढ़े——

انا الّذی عاهدنی خلیلي ونحن بالسفح لذی النخیلِ

ان لا اقوم الدهرفی الکبول اضرب بِسَیْفِ اللّٰه والرّسولِ

"मैं ने इस मसधान (खजूर के बागों) के दामन में अपने ख़लील (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से वायदा किया है कि कभी सफ़ों (पंक्तियों) के पीछे न रहूंगा, (बल्कि आगे बढ़ कर) अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार चलाऊंगा।"

इस के बाद उन्हें जो भी मिल जाता उसे क़त्ल कर देते और मुश्रिकों में से एक आदमी था जो हमारे किसी भी घायल को पाता तो उस का ख़ात्मा कर देता था। ये दोनों धीरे-धीरे क़रीब हो रहे थे। मैंने अल्लाह से दुआ की कि दोनों में टक्कर हो जाए और सचमुच टक्कर हो गई। दोनों ने एक दूसरे पर एक-एक वार किया। पहले मुश्रिक ने अबू दुजाना पर तलवार चलाई, लेकिन अबू दुजाना ने यह हमला ढाल पर रोक लिया और मुश्रिक की तलवार ढाल में फंस कर रह गई। इस के बाद अबू दुजाना ने तलवार चलाई और मुश्रिक को वहीं पर ढेर कर दिया।[10]

इस के बाद अबू दुजाना रज़ि० सफ़ों पर सफ़ें चीरते हुए आगे बढ़े, यहां तक कि क़ुरैशी औरतों के कमांडर तक जा पहुंचे। उन्हें मालूम न था कि यह औरत है। चुनांचे उन का बयान है कि मैंने एक इंसान को

10) इब्ने हिशाम 2/68-69

देखा, वह लोगों को बड़े ज़ोर व शोर से जोश व वलवला दिला रहा है, इसलिए मैंने उसे निशाने पर ले लिया, लेकिन जब तलवार से हमला करना चाहा तो उस ने हाय पुकार मचाई और पता चला कि औरत है। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार को बट्टा न लगने दिया कि उससे किसी औरत को मारूं।

यह औरत हिन्द बिन्त उत्बा थी। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० का बयान है कि मैंने अबू दुजाना को देखा, उन्होंने हिन्द बिन्त उत्बा के सर के बीचों-बीच तलवार बुलन्द की और फिर हटा ली। मैंने सोचा अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहतर जानते हैं।[1]

इधर हज़रत हमज़ा रज़ि० भी बिफरे हुए शेर की तरह लड़ाई-लड़ रहे थे और भरपूर मार-धाड़ के साथ सेना के बीच में पहुंचने के लिए बढ़े और चढ़े जा रहे थे। उन के सामने से बड़े-बड़े योद्धा इस तरह बिखर जाते थे जैसे तेज़ आंधी में पत्ते उड़ रहे हों। उन्होंने मुश्रिकों के झंडा-बरदारों की तबाही में ज़बरदस्त रोल अदा करने के अलावा उनके बड़े-बड़े योद्धाओं और वीरों का हाल भी ख़राब कर रखा था, लेकिन अफ़सोस की बात कि इसी हाल में उन की शहादत हो गयी, मगर उन्हें बहादुरों की तरह आमने-सामने लड़ कर शहीद नहीं किया गया बल्कि बुज़दिलों की तरह छिप-छिपा कर बेख़बरी की हालत में मारा गया।

अल्लाह के शेर हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत

हज़रत हमज़ा रज़ि० के हत्यारे का नाम वहशी बिन हर्ब था। हम उन के शहीद किये जाने का वर्णन उसी की ज़ुबानी नक़ल करते हैं। उस का बयान है कि मैं ज़ुबैर बिन मुत-इम का दास था और उन का चचा तुऐमा बिन अदी बद्र की लड़ाई में मारा गया था। जब क़ुरैश उहद की

1) इब्ने हिशाम 2/69

लड़ाई पर रवाना होने लगे तो जुबैर बिन मुत-इम ने मुझ से कहा, "अगर तुम मुहम्मद के चचा हमज़ा को मेरे चचा के बदले क़त्ल कर दो तो तुम आज़ाद हो।" वहशी का बयान है कि (इस पेशकश के नतीजे में) मैं भी लोगों के साथ रवाना हुआ। मैं हब्शी था और हब्शियों की तरह नेज़ा फेंकने में माहिर था। निशाना कम ही चूकता था। जब लोगों में लड़ाई छिड़ गयी तो मैं निकल कर हमज़ा रज़ि० को देखने लगा। मेरी निगाहें उन की खोज में थीं आख़िर में मैंने उन्हें लोगों की भीड़ में देख लिया। वह ख़ाकस्तरी ऊंट की तरह मालूम हो रहे थे। लोगों को चीरते जा रहे थे। उन के सामने कोई चीज़ टिक नहीं पाती थी।

अल्लाह की क़सम! मैं अभी उन के क़त्ल के इरादे से तैयार ही हो रहा था और एक पेड़ या पत्थर की ओट में छिप कर उन्हें क़रीब आने का मौक़ा देना चाहता था कि इतने में सबाअ़ बिन अब्दुल उज़्ज़ा मुझ से आगे बढ़ कर उन के पास जा पहुंचा। हमज़ा रज़ि० ने उसे ललकारते हुए कहा, "ओ शर्मगाह की चमड़ी काटने वाली के बेटे! यह ले।" और साथ ही इस ज़ोर की तलवार मारी कि मानो उसका सर था ही नहीं।

वहशी का बयान है कि उस के साथ ही मैंने अपना नेज़ा तौला और जब मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो गया तो उन की ओर उछाल दिया, नेज़ा नाफ़ के नीचे लगा और दोनों पांवों के बीच से पार हो गया। उन्होंने मेरी ओर उठना चाहा, लेकिन मग़लूब हो गये। मैंने उसी हाल में उनको छोड़ दिया, यहां तक कि उन की मृत्यु हो गयी। इसके बाद मैंने उनके पास जाकर अपना नेज़ा निकाल लिया और फ़ौज में वापस जाकर बैठ गया। (मेरा काम ख़त्म हो चुका था) मुझे उनके सिवा किसी और से सरोकार न था। मैंने उन्हें सिर्फ़ इसलिए क़त्ल किया था कि आज़ाद हो जाऊं, चुनांचे जब मक्का आया तो मुझे आज़ादी मिल गई।[12]

12, इब्ने हिशाम 2/69-72, बुख़ारी 2/583 वहशी ने ताईफ़ की लड़ाई के बाद इस्लाम क़ुबूल किया और अपने इसी नेज़े से दौरे सिद्दीक़ी में यमामा की लड़ाई में मुसैलिमा कज़्ज़ाब को क़त्ल किया। रूमियों के ख़िलाफ़ यरमूक की लड़ाई में भी भाग लिया।

मुसलमानों ही का पल्ला भारी रहा

शेरे अल्लाह और शेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत के नतीजे में मुसलमानों को जो भारी नुक़सान हुआ, इस के बावजूद लड़ाई में मुसलमानों ही का पल्ला भारी रहा हज़रत अबू बक्र व उमर, अली व ज़ुबैर, मुसअब बिन उमैर, तलहा बिन उबैदुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन जहश, साद बिन मुआज़, साद बिन उबादा, साद बिन रबीअ़ और नज़्र बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन वग़ैरह ने ऐसी वीरता से लड़ाई लड़ी कि मुश्रिकों के छक्के छूट गए, हौसले टूट गए और उन की ताक़त जवाब दे गयी।

औरत की गोद से तलवार की धार पर

और आइए, तनिक इधर देखें। इन्हीं जान लड़ा देने वाले योद्धाओं में एक और बुज़ुर्ग हज़रत हंज़ला अल-ग़सील रज़ि० नज़र आ रहे हैं, जो आज एक निराली शान से लड़ाई के मैदान में मौजूद हैं:—आप उसी अबू आमिर राहिब के बेटे हैं जो बाद में फ़ासिक़ के नाम से मशहूर हुआ और जिसका उल्लेख हम पिछले पन्नों में कर चुके हैं। हज़रत हंज़ला ने अभी नयी-नयी शादी की थी। लड़ाई का एलान हुआ तो वह बीवी के संग थे। आवाज़ सुनते ही बीवी की गोद से सर निकाल कर जिहाद के लिए चल पड़े। और जब मुश्रिकों के साथ लड़ाई का मैदान गर्म हुआ तो उन की सफ़ें चीरते-फाड़ते उन के सेनापति अबू सुफ़ियान तक जा पहुंचे और क़रीब था कि उसका काम तमाम कर देते, मगर अल्लाह ने ख़ुद उनके लिए शहादत तय कर रखी थी, चुनांचे ज्यूं ही उन्होंने अबू सुफ़ियान को निशाने पर लेकर तलवार बुलन्द की, शद्दाद बिन औस ने देख लिया और झट हमला कर दिया जिससे ख़ुद हज़रत हंज़ला रज़ि० शहीद हो गए।

तीरअंदाज़ों का कारनामा

जबले रमात पर जिन तीरअंदाज़ों (धनुधारियों) को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नियुक्त किया था, उन्होंने भी

लड़ाई की रफ़्तार मुसलमानों के हक़ में चलाने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मक्की घुड़सवारों ने ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में और अबू आमिर फ़ासिक़ की सहायता से इस्लामी फ़ौज का बायां बाज़ू तोड़ कर मुसलमानों के पीछे तक पहुंचने और उनकी पंक्तियों में खलबली मचा कर भरपूर पराजय से दो-चार करने के लिए तीन बार ज़ोरदार हमले किए, लेकिन मुसलमान तीरअंदाज़ों ने उन्हें इस तरह तीरों से छलनी किया कि उनके तीनों हमले विफल हो गए।[13]

मुश्रिकों की हार

कुछ देर तक इसी तरह तेज़ लड़ाई होती रही और छोटी सी इस्लामी सेना लड़ाई की रफ़्तार पर पूरी तरह छायी रही। आख़िर में मुश्रिकों के हौसले टूट गए। उन की लाइनें दाएं-बाएं आगे-पीछे से बिखरने लगीं, मानो तीन हज़ार मुश्रिकों को सात सौ नहीं, बल्कि तीस हज़ार मुसलमानों का सामना है। उधर मुसलमान थे कि ईमान व यक़ीन और वीरता और जान खपाने वाली भावना का बड़ा ही ऊंचा नमूना बने तलवार के जौहर दिखा रहे थे।

जब क़ुरैश ने मुसलमानों के ताबड़-तोड़ हमले रोकने के लिए अपनी पूरी ताक़त लगा देने के बावजूद मजबूरी और बे-बसी महसूस की और उन के हौसले इस हद तक टूट गए कि सवाब के क़त्ल के बाद किसी को साहस न हुआ कि लड़ाई का सिलसिला जारी रखने के लिए अपने गिरे हुए झंडे के क़रीब जा कर उसे ऊंचा करे तो उन्होंने पसपा होना शुरू कर दिया और भागने का रास्ता अपनाया और बदला लेने, मान सम्मान को बहाल करने और अपने बड़कपन की वापसी की जो बातें उन्होंने सोच रखी थीं उन्हें बिल्कुल भूल गए।

13) फ़तहुल-बारी 7/346

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि अल्लाह ने मुसलमानों पर अपनी मदद उतारी और उन से अपना वायदा पूरा किया। चुनांचे मुसलमानों ने तलवारों से मुश्रिकों की ऐसी कटाई की कि वे कैम्प से भी परे भाग गए और बेशक उनको हार का सामना करना पड़ा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि उनके पिता ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मैंने देखा कि हिन्द बिन्त उत्बा और उसकी साथी औरतों की पिंडुलियां नज़र आ रही हैं। वे कपड़े उठा कर भागी जा-रही हैं, उनकी गिरफ़्तारी में कोई चीज़ रोक नहीं थी।"[14]

सहीह बुख़ारी में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० की रिवायत है कि जब मुश्रिकों से हमारी टक्कर हुई तो मुश्रिकों में भगदड़ मच गयी, यहां तक कि मैंने औरतों को देखा की पिंडुलियों से कपड़े उठाए पहाड़ में तेज़ी से भाग रही थीं। उनकी पाज़ेबें दिखाई दे रहीं थीं।[15] और इस भगदड़ की स्थिति में मुसलमान मुश्रिकों पर तलवार चलाते और माल समेटते हुए उनका पीछा कर रहे थे।

तीर अंदाज़ों की भयानक ग़लती

लेकिन ठीक उस वक़्त जब कि यह छोटी सी इस्लामी फ़ौज मक्का वालों के ख़िलाफ़ इतिहास के पन्नों में अपनी एक और शानदार जीत लिख रही थी, जो अपनी चमक-दमक में बद्र की लड़ाई की जीत से किसी तरह कम न थी, तीरअंदाज़ों की बड़ी सख्या ने एक भयानक ग़लती की जिसकी वजह से लड़ाई का पांसा पलट गया। मुसलमानों को ज़बरदस्त नुक़सान का सामना करना पड़ा और स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद होने से बाल-बाल बचे और इसकी वजह से मुसलमानों की वह साख और वह दबदबा जाता रहा जो बद्र की लड़ाई के नतीजे में उन्हें हासिल हुआ था।

---

14) इब्ने हिशाम 2/77

15) बुख़ारी 2/579

पिछले पन्नों में गुज़र चुका है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीरअंदाज़ों को विजय अथवा पराजय हर हाल में अपने पहाड़ी मोर्चे पर डटे रहने की कितनी कड़ी ताकीद फ़रमाई थी, लेकिन इन सारे ताकीद भरे हुक्मों के बाद भी जब उन्होंने देखा कि मुसलमान दुश्मन का ग़नीमत का माल लूट रहे हैं तो उन पर दुनिया की मुहब्बत का कुछ असर ग़ालिब आ गया। चुनांचे उन्होंने कहा कि ग़नीमत! (लूट का माल)! ग़नीमत!——तुम्हारे साथी जीत गए!——अब काहे का इन्तिज़ार है?

इस आवाज़ के उठते ही उसके कमांडर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० ने उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म याद दिलाए और फ़रमाया, क्या तुम लोग भूल गए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें क्या हुक्म दिया था? लेकिन उनके अधिकतर लोगों ने इस याद दिलाने पर कान न धरा और कहने लगे, अल्लाह की क़सम! हम भी लोगों के पास ज़रूर जाएंगे और कुछ माले ग़नीमत ज़रूर हासिल करेंगे।[16] इसके बाद चालीस तीरअंदाज़ों ने अपने मोर्चे छोड़ दिए और ग़नीमत (लूट) का माल समेटने के लिए आम फ़ौज में जा शामिल हुए। इस तरह मुसलमानों का पिछला हिस्सा ख़ाली हो गया। और वहां सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० और उन के नौ साथी बाक़ी रह गए जो इस इरादे के साथ अपने मोर्चे पर डटे हुए थे कि या तो उन्हें इजाज़त दी जाएगी या वे अपनी जान दे देंगे।

इस्लामी सेना मुश्रिकों के घेरे में

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, जो इससे पहले तीन बार इस मोर्चे पर विजय पाने की कोशिश कर चुके थे, इस सुनहरे मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए बड़ी तेज़ी से चक्कर काट कर इस्लामी सेना के पीछे जा पहुंचे और कुछ क्षणों में अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० और उन के साथियों का

16) यह बात बुख़ारी में हज़रत बरा बिन आज़िब की हदीस में है देखिये 1/426

सफ़ाया करके मुसलमानों पर पीछे से टूट पड़े। उनके घुड़सवारों ने एक नारा बुलन्द किया जिससे हारे हुए मुश्रिकों को इस नई तब्दीली का ज्ञान हो गया और वे भी मुसलमानों पर टूट पड़े। इधर क़बीला बनू हारिस की एक औरत उमरा बिन्त अलक़मा ने लपक कर ज़मीन पर पड़ा हुआ मुश्रिकों का झंडा उठा लिया। फिर क्या था, बिखरे हुए मुश्रिक उसके गिर्द सिमटने लगे और एक ने दूसरे को आवाज़ दी, जिसके नतीजे में वे मुसलमानों के ख़िलाफ़ इकट्ठे हो गए और जमकर लड़ाई शुरू कर दी। अब मुसलमान आगे और पीछे दोनों ओर से घेरे में आ चुके थे मानो चक्की के दो पाटों के बीच में पड़ गए थे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़तरे भरा फ़ैसला और वीरता भरा क़दम

उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ नौ सहाबा[17] की छोटी सी टुकड़ी के साथ पीछे बैठे थे[18] और मुसलमानों की मार-धाड़ और मुश्रिकों के खदेड़े जाने का दृश्य देख रहे थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचानक ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवार दिखाई पड़े। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने दो ही रास्ते थे, या तो आप नौ साथियों सहित तेज़ी से भाग कर किसी सुरक्षित जगह चले जाते और अपनी फ़ौज को जो निशाने पर आया ही चाहती थी, उस की क़िस्मत पर छोड़ देते या अपनी जान ख़तरे में डालकर अपने सहाबा को बुलाते और उनकी एक भली संख्या अपने पास जमा कर के एक मज़बूत मोर्चा बना लेते और इसके ज़रिए मुश्रिकों का घेरा तोड़ कर अपनी सेना के लिए उहद की बुलन्दी की ओर जाने का रास्ता बनाते।

17) मुस्लिम (2/107) में रिवायत है कि आप उहद के दिन सिर्फ़ सात अनसार और दो क़ुरैशी सहाबा के बीच रह गए थे।

18) इसका सुबूत अल्लाह का यह इर्शाद है والرسول يدعوكم في اخراكم अर्थात रसूल (सल्ल०) तुम्हारे पीछे से तुम्हें बुला रहे थे।

ग़ज़वा-ए-उहद का नक़्शा
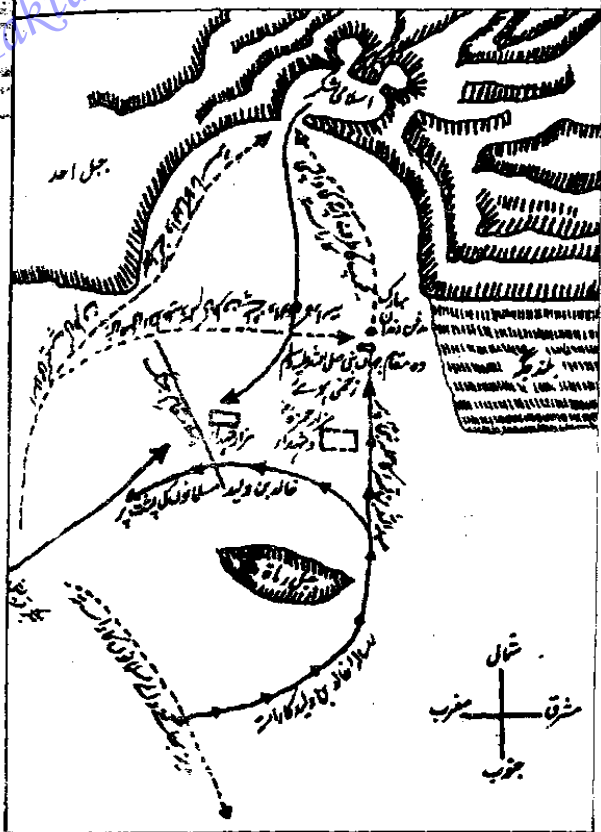
आज़माइश के इस सब से नाज़ुक मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपूर्व बुद्धिमानी और वीरता सामने आई, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जान बचा कर भागने के बजाए अपनी जान ख़तरे में डाल कर सहाबा किराम रज़ि० की जान बचाने का फ़ैसला किया।

चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवारों को देखते ही बड़ी ऊंची आवाज़ से सहाबा किराम रज़ि० को पुकारा "अल्लाह के बन्दो!------इधर! हालांकि आप जानते थे कि यह आवाज़ मुसलमानों से पहले मुश्रिकों तक पहुंच जाएगी और यही हुआ भी। चुनांचे यह आवाज़ सुन कर मुश्रिकों को मालूम हो गया कि आप यहीं मौजूद हैं, इसलिए उन की एक टुकड़ी मुसलमानों से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंच गयी और बाक़ी घुड़सवारों ने तेज़ी के साथ मुसलमानों को घेरना शुरू कर दिया। अब हम दोनों मोर्चों का विवरण अलग-अलग दे रहे हैं।

मुसलामानों में बिखराव

जब मुसलमान घेर लिए गए तो एक गिरोह तो होश खो बैठा, उसे सिर्फ़ अपनी जान की पड़ी थी, चुनांचे उस ने लड़ाई का मैदान छोड़कर भागने का रास्ता अपनाया। उसे कुछ ख़बर न थी कि पीछे क्या हो रहा है उनमें से कुछ तो भागकर मदीने में जा घुसे और कुछ पहाड़ के ऊपर चढ़ गए। एक और गिरोह पीछे की ओर पलटा तो मुश्रिकों के साथ मिल गया। दोनों फ़ौजें गड-मड हो गईं और एक को दूसरे का पता न चल सका। इसके नतीजे में ख़ुद मुसलमानों के हाथों कुछ मुसलमान मार डाले गए। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि उहद के दिन (पहले) बुरी तरह मुश्रिकों को हार का मुंह देखना पड़ा। इस के बाद इबलीस ने आवाज़ लगाई कि अल्लाह के बन्दो! पीछे---इस पर अगली लाइन पलटी और पिछली सफ़ से गुथ गयी। हुज़ैफ़ा रज़ि०

ने देखा कि उनके बाप यमान रज़ि पर हमला हो रहा है। वह बोले, अल्लाह के बन्दो! मेरे बाप हैं, लेकिन अल्लाह की क़सम! लोगों ने उनसे हाथ न रोका, यहां तक कि उन्हें मार ही डाला। हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, अल्लाह आप लोगों की मग़फ़िरत करे। हज़रत उर्वा रज़ि०! का बयान है कि अल्लाह की क़सम! हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० में हमेशा ख़ैर का हिस्सा बाक़ी रहा, यहां तक कि वह अल्लाह से जा मिले।[19]

ग़रज़ इस गिरोह की लाइनों में बड़ा बिखराव और अव्यवस्था पैदा हो गई थी। बहुत से लोग हैरान व परेशान थे। उन की समझ में नहीं आ रहा था कि किधर जाएं। इसी बीच एक पुकारने वाले की पुकार सुनाई पड़ी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए हैं इस से रहा सहा होश भी जाता रहा। अकसर लोगों के हौसले टूट गए। कुछ ने लड़ाई से हाथ रोक लिया और थक कर हथियार फेंक दिए। कुछ और लोगों ने सोचा कि मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई से मिलकर कहा जाए कि वह अबू सुफ़ियान से उनके लिए अमान तलब कर दे।

कुछ क्षणों के बाद उन लोगों के पास से हज़रत अनस बिन अन-नज़्र रज़ि० का गुज़र हुआ, देखा कि हाथ पर हाथ धरे पड़े हैं। पूछा किस चीज़ का इन्तिज़ार है? जवाब दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए। हज़रत अनस बिन अन-नज़्र ने कहा, तो अब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद तुम लोग ज़िंदा रह कर क्या करोगे? उठो और जिस चीज़ पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जान दी, उसी पर तुम भी जान दे

19) बुख़ारी 1/539, 2/581, फ़तहुल-बारी 7/351,362-363 बुख़ारी के अलावा कुछ रिवायतों में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इन की दियत देनी चाही लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) ने कहा "मैंने उनकी दियत मुसलमानों पर सदक़ा कर दी" इसकी वजह से नबी (सल्ल०) के नज़दीक हज़रत हुज़ैफ़ा के ख़ैर (सवाब) में बढ़ोतरी हो गई देखिए मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 246

दो। इस के बाद कहा, ऐ अल्लाह! इन लोगों ने----- यानी मुसलमानों ने--------जो कुछ किया है, उस पर मैं तेरे हुज़ूर माफ़ी चाहता हूं और इन लोगों ने ------यानी मुश्रिकों ने----जो कुछ किया है उस से अलगाव अपनाता हूं और यह कह कर आगे बढ़ गए। आगे हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० से मुलाक़ात हुई। उन्होंने मालूम किया, अबू उमर! कहां जा रहे हो? हज़रत अनस रज़ि० ने जवाब दिया। आहा! जन्नत की ख़ुश्बू का क्या कहना। ऐ साद! मैं इसे उहद के परे महसूस कर रहा हूं। इस के बाद और आगे बढ़े और मुश्रिकों से लड़ते हुए शहीद हो गए। लड़ाई के ख़त्म होने के बाद उन्हें पहचाना न जा सका, यहां तक कि उन की बहन ने उन्हें सिर्फ़ उंगलियों के पोर से पहचाना। उन को नेज़े, तलवार और तीर के अस्सी से अधिक घाव आए थे।[20]

इसी तरह साबित बिन दहदाह रज़ि० ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा, "अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए हैं तो अल्लाह तो ज़िंदा है वह तो नहीं मर सकता। तुम अपने दीन के लिए लड़ो, अल्लाह तुम्हें जीत और मदद देगा।" उस पर अंसार की एक जमाअत उठ पड़ी और हज़रत साबित रज़ि० ने उन की मदद से ख़ालिद की टुकड़ी पर हमला कर दिया और लड़ते-लड़ते हज़रत ख़ालिद के हाथों नेज़े से शहीद हो गए। उन्हीं की तरह उन के साथी भी लड़ते-लड़ते शहीद हो गये।[21]

एक मुहाजिर सहाबी एक अंसारी सहाबी के पास से गुज़रे जो ख़ून में लथ-पथ थे, मुहाजिर ने कहा, भई फ़्लां! आप को मालूम हो चुका है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए। अंसारी ने कहा, अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए तो

---

20) ज़ादुल-मआद 2/93,96, बुख़ारी 2/579

21) अस-सीरतुल- हलबिया 2/22

वह अल्लाह का दीन पहुंचा चुके हैं। अब तुम्हारा काम है कि उस दीन की हिफ़ाज़त के लिए लड़ो।[22]

इस तरह की हौसला बढ़ाने वाली और वलवला पैदा करने वाली बातों से इस्लामी फ़ौज के हौसले बहाल हो गये और उन के होश व हवास अपनी जगह आ गये। चुनांचे अब उन्होंने हथियार डालने या इब्ने उबई से मिल कर अमान तलब करने की बात सोचने के बजाए हथियार उठा लिए और मुश्रिकों के भारी बाढ़ से टकरा कर उन का घेरा तोड़ने और नेतृत्व-केन्द्र तक रास्ता बनाने की कोशिश में लग गए। इसी बीच यह भी मालूम हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल की ख़बर मात्र झूठ और गढ़न्त है। इस से उन की ताक़त और बढ़ गयी और उन के हौसलों और वलवलों में ताज़गी आ गई, चुनांचे वे एक सख़्त और ख़ूनी लड़ाई के बाद घेरा तोड़ कर घेराव से निकलने और एक मज़बूत केन्द्र के चारों ओर जमा होने में सफल हो गए।

इस्लामी फ़ौज का एक तीसरा गिरोह वह था जिसे सिर्फ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता थी। यह गिरोह घेराव की कार्यवाही का ज्ञान होते ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर पलटा, उन में सब से आगे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० जैसे लोग थे। ये लोग क़त्ल करने वालों में आगे-आगे थे लेकिन जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते गिरामी के लिए ख़तरा पैदा हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा और बचाव करने वालों में भी सब से आगे-आगे आ गए।

22) ज़ादुल-मआद 2/96

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चारों ओर ख़ूनी लड़ाई

ठीक उस वक़्त जबकि इस्लामी फ़ौज घेरे में आकर मुश्रिकों की चक्की के दो पाटों के दर्मियान पिस रही थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास भी ख़ूनी लड़ाई जारी थी। हम बता चुके हैं कि मुश्रिकों ने घेराव की कार्यवाही शुरू की तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ नौ आदमी थे और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को यह कह कर पुकारा कि मेरी ओर आओ! मैं अल्लाह का रसूल हूं तो आप की आवाज़ मुश्रिकों ने सुन ली और आप को पहचान लिया। (क्योंकि उस वक़्त वह मुसलमानों से भी ज़्यादा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब थे) चुनांचे उन्होंने झपट कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमला कर दिया और किसी मुसलमान के आने से पहले-पहले अपना पूरा बोझ डाल दिया। इस तुरन्त हमले के नतीजे में उन मुश्रिकों और वहां पर मौजूद नौ सहाबा के बीच बड़ी ज़बरदस्त लड़ाई शुरू हो गई जिस में मुहब्बत, जान फ़िदा करना, वीरता और जान लड़ाने की बड़ी ही अनोखी घटनाएं सामने आईं।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि उहद के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सात अंसार और दो क़ुरैशी सहाबा के साथ अलग-थलग रह गये थे। जब हमलावर आप के बिल्कुल क़रीब पहुंच गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "कौन है जो इन्हें हम से दूर करे और उस के लिए जन्नत है? या (यह फ़रमाया कि) वह जन्नत में मेरा साथी होगा?" इसके बाद एक अंसारी सहाबी आगे बढ़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। इसके बाद फिर मुश्रिक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिल्कुल क़रीब आ गए और फिर यही हुआ। इस तरह बारी बारी सातों अंसारी सहाबी शहीद

हो गए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दो बाकी साथियों ———यानी कुरैशियों से फ़रमाया, "हमने अपने साथियों से इंसाफ नहीं किया।"[23]

"इन सातों में से आख़िरी सहाबी हज़रत अम्मारा बिन यज़ीद बिन अस-सकन थे। वह लड़ते रहे, लड़ते रहे, यहां तक कि घावों से चूर होकर गिर पड़े।[24]"

इब्नुस्सकन के गिरने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ दोनों कुरैशी सहाबी रह गये थे। चुनांचे सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में अबू उस्मान रज़ि० का बयान रिवायत किया गया है कि जिन दिनों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ाइयां लड़ीं, उन में से एक लड़ाई में आप के साथ तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० और साद (बिन अबी वक़्क़ास) रज़ि० के सिवा कोई न रह गया था।[25] और यह समय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के लिए सब से ज़्यादा नाज़ुक समय था, जबकि मुश्रिकों के लिए बड़ा ही सुनहरा मौक़ा था और सच तो यह है कि मुश्रिकों ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाने में कोई कोताही नहीं की। उन्होंने अपना ताबड़-तोड़ हमला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर केन्द्रित रखा और चाहा की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का काम तमाम कर दें। इसी हमले में उत्बा बिन अबी वक़्क़ास ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पत्थर मारा

---

23) मुस्लिम बाब ग़ज़वा-ए-उहद 2/107

24) थोड़ी देर बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास सहाबा किराम (रज़ि०) की एक टुकड़ी आ गई उन्होंने काफ़िरों को हज़रत अम्मारा से पीछे धकेला और उन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़रीब ले आए आप (सल्ल०) ने उन्हें अपने पावँ पर टिका लिया और उन्होंने इस हलात में दम तोड़ दिया कि उन का गाल रसूलुल्लाह के पावँ पर था (इब्ने हिशाम 2/81) मानो यह इच्छा पूर्ण हो गई हो कि

निकल जाए दम तेरे क़दमों के "ऊपर" यही दिल की हसरत यही आरज़ू है

25) बुख़ारी 1/527, 2/581

जिससे आप पहलू के बल गिर गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दायां निचला रुबाई[26] दांत टूट गया। और आपका निचला होंठ घायल हो गया। अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ोहरी ने आगे बढ़कर आप का माथा घायल कर दिया। एक और अड़ियल सवार अब्दुल्लाह बिन क़ुम-आ ने लपक कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधे पर ऐसी तेज़ तलवार मारी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक महीने से ज़्यादा दिनों तक इसकी तक्लीफ़ महसूस करते रहे, अलबत्ता आपकी दोहरी ज़िरह न कट सकी। इसके बाद उसने पहले ही की तरह फिर एक ज़ोरदार तलवार मारी जो आंख से नीचे की उभरी हुई हड्डी पर लगी और उसकी वजह से ख़ूद[27] की दो कड़ियां चेहरे के अंदर धंस गईं। साथ ही उस ने कहा, इसे ले, मैं क़ुम-आ (तोड़ने वाले) का बेटा हूं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चेहरे से ख़ून पोंछते हुए फ़रमाया, "अल्लाह तुझे तोड़ डाले।"[28]

सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रुबाई दांत तोड़ दिया गया और सर घायल कर दिया गया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चेहरे से ख़ून पोंछते जा

---

26) मुंह के बिलकुल बीचों बीच नीचे ऊपर के दो-दो दाँत सनाया कहलाते हैं और इनके दाएँ बाएँ नीचे ऊपर के एक एक दाँत रुबाअी कहलाते हैं जो कुचली के नोकीले दाँत से पहले होते हैं

27) लोहे या पत्थर की टोपी जिसे लड़ाई में सर और चहरे की रक्षा के लिए ओढ़ा जाता है।

28) अल्लाह ने आप (सल्ल०) की यह दुआ सुन ली, इब्ने आईज़ की रिवायत है कि इब्ने क़ुम-आ लड़ाई से घर वापस जाने के बाद अपनी बकरियाँ देखने के लिए निकला तो यह बकरियाँ पहाड़ की चोटी पर मिलीं। जब इब्ने क़ुम-आ वहां पहुंचा तो एक पहाड़ी बकरे ने हमला कर दिया और सींग मार-मार कर पहाड़ की चोटी से नीचे लुढ़का दिया (फ़तहुल-बारी 7/373) और तबरानी की रिवायत है कि अल्लाह ने उस पर एक पहाड़ी बकरा आच्छादित (मुसल्लत) कर दिया जिसने सींग मार-मार कर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया (फ़तहुल-बारी 7/366)

थे और कहते जा रहे थे, "वह क़ौम कैसे कामियाब हो सकती है जिस ने अपने नबी के चेहरे को घायल कर दिया और उस का दांत तोड़ दिया, हालांकि वह उन्हें अल्लाह की ओर दावत दे रहा था।" इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी-----

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ

"आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे और चाहे तो अज़ाब दे कि वे ज़ालिम हैं।"[29] (3:128)

तबरानी की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस दिन फ़रमाया, "उस क़ौम पर अल्लाह का कड़ा अज़ाब हो जिस ने अपने पैग़म्बर का चेहरा ख़ून में सान दिया हो।" फिर थोड़ी देर रुक कर फ़रमाया——

اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

"ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को बख़्श दे, वह नहीं जानती।"[30]

सहीह मुस्लिम की रिवायत में भी यही है कि आप बार-बार कह रहे थे-------

رَبِّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

"ऐ पालनहार! मेरी क़ौम को बख़्श दे, वह नहीं जानती।"[31]

क़ाज़ी अयाज़ की शिफ़ा में ये शब्द हैं---------

29) बुख़ारी 2/582, मुस्लिम 2/108

30) फ़तहुल-बारी 7/373

31) मुस्लिम-बाब ग़ज़वा-ए-उहद 2/108

اللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

"ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को हिदायत दे। वह नहीं जानती।"[32]

इस में संदेह नहीं कि मुश्रिक आप का काम तमाम कर देना चाहते थे, मगर दोनों क़ुरैशी सहाबा यानी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियाल्लाहु अन्हुमा ने ज़ोरदार जांबाज़ी और बेमिसाल बहादुरी से काम लेकर सिर्फ़ दो होते हुए भी मुश्रिकों की कामियाबी असंभव बना दी। ये दोनों अरब के सबसे माहिर तीरअंदाज़ थे। उन्होंने तीर मार-मार कर मुश्रिक हमलावरों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से परे रखा।

जहां तक साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का ताल्लुक़ है तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने तरकश के सारे तीर उन के लिए बिखेर दिए और फ़रमाया, "चलाओ, तुम पर मेरे मां बाप फ़िदा हों।"[33] उन की सलाहियत का अंदाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सिवा किसी और के मां बाप के लिए फ़िदा होने की बात नहीं कही।[34]

और जहां तक हज़रत तलहा रज़ि० का ताल्लुक़ है तो उन के कारनामे का अंदाज़ा नसाई की एक रिवायत से लगाया जा सकता है जिस में हज़रत जाबिर रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुश्रिकों के उस वक़्त के हमले का ज़िक्र किया है, जब आप अंसार की ज़रा सी तायदाद के साथ तशरीफ़ रखते थे। हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जा लिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कौन है जो इन से निबटे? हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, मैं।

---

32) किताबुश-शिफ़ा बि-तअरीफ़ि हुक़ूक़िल-मुस्तफ़ा 1/81

33-34) बुख़ारी 1/497, 2/580-581

इसके बाद हज़रत जाबिर रज़ि० ने अंसार के आगे बढ़ने और एक-एक कर के शहीद होने की वह तफ़्सील ज़िक्र की है। जिसे हम सहीह मुस्लिम के हवाले से बयान कर चुके हैं। हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब ये सब शहीद हो गए तो हज़रत तलहा रज़ि० आगे बढ़े और 11 आदमियों के बराबर अकेले लड़ाई लड़ी, यहां तक कि उन के हाथ पर तलवार की एक ऐसी करारी चोट लगी जिस से उनकी उंगलियां कट गयीं। इस पर उन के मुंह से आवाज़ निकली हिस (सी)। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम बिस्मिल्लाह कहते तो तुम्हें फ़रिश्ते उठा लेते और लोग देखते, हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि अल्लाह ने मुश्रिकों को पलटा दिया।[35]

इकलील में हाकिम की रिवायत है कि उन्हें उहद के दिन उन्तालीस या पैंतीस चोटें आयीं और उन की बिचली और शहादत की उंगलियां बेकार हो गयीं।[36]

इमाम बुख़ारी रह० ने क़ैस बिन अबी हाज़िम से रिवायत्त किया है कि उन्होंने कहा, मैंने हज़रत तलहा रज़ि० का हाथ देखा कि वह बेकार (शल) था। उससे उहद के दिन उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बचाया था।[37]

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के बारे में उस दिन फ़रमाया, जो आदमी किसी शहीद को धरती पर चलता हुआ देखना चाहे, वह तलहा बिन उबैदुल्लाह को देख ले।[38]

---

35) फ़तहुल-बारी 7/361, निसाई 2/52-53

36) फ़तहुल-बारी 7/361,

37) बुख़ारी 1/527, 581

38) मिशकात 2/566, इब्ने हिशाम 2/86

और अबू दाऊद तयालसी ने हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया है कि अबू बक्र रज़ि० उहद की लड़ाई का ज़िक्र करते तो कहते कि यह लड़ाई पूरी की पूरी तलहा रज़ि० के लिए थी,[39] (यानी इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा का असल कारनामा उन्हीं ने अंजाम दिया था) हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उन के बारे में यह भी कहा———

ياطلحة بن عبيد الله قد وجبت لك الجنان و بوأت المها العينا

"ऐ तलहा बिन उबैदुल्लाह! तुम्हारे लिए जन्नतें वाजिब हो गईं और तुम ने अपने यहां हूरे ईन (मोटी आँखों वाली हूरों) का ठिकाना बना लिया।[40]"

इसी सब से नाज़ुक समय में और सब से कठिन वक़्त में अल्लाह ने ग़ैब से अपनी मदद उतारी चुनांचे बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत साद रज़ि० का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उहद के दिन देखा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो आदमी थे, सफ़ेद कपड़े पहने हुए। ये दोनों आप की ओर से ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे थे। मैंने इस से पहले और इस के बाद इन दोनों को कभी नहीं देखा। एक और रिवायत में है कि ये दोनों हज़रत जिब्रील व हज़रत मीकाईल अलैहि० थे।[41]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सहाबा के इकट्ठा होने की शुरूआत

यह पूरी घटना कुछ क्षणों के अंदर-अंदर बिल्कुल अचानक और तेज़ी से घटी, वरना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चुने हुए सहाबा

39) फ़तहुल-बारी 7/361

40) मुख़्तसर तारीख़े दमश्क़ 7/82, शरह शुज़ूरुज़-ज़हब के हाशिये प्र० 114 के हवाले से

41) बुख़ारी 2/580

किराम जो लड़ाई के समय में पहली पंक्ति में थे, लड़ाई की स्थिति बदलते ही और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ सुनते ही आप की ओर तेज़ी से दौड़ कर आए कि कहीं आप किसी अप्रिय घटना के शिकार न हो जाएं, पर ये लोग पहुंचे तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घायल हो चुके थे, छः अंसारी शहीद हो चुके थे, सातवें घायल होकर गिर चुके थे और हज़रत साद और तलहा जान तोड़ कर सुरक्षा कर रहे थे। इन लोगों ने पहुंचते ही अपने जिस्मों और हथियारों से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिर्द एक बाढ़ तैयार कर दी और दुश्मन के ताबड़-तोड़ हमले रोकने में बड़ी बहादुरी से काम लिया। लड़ाई की पंक्ति से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पलट कर आने वाले सब से पहले सहाबी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ार के साथी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० थे।

इब्ने हब्बान ने अपनी सहीह में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया है कि अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया, "उहद के दिन सारे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पलट गए थे। (यानी रक्षकों के सिवा तमाम सहाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आप के ठहरने की जगह छोड़ कर लड़ाई के लिए अगली पंक्तियों में चले गए थे फिर घेराव के हादसे के बाद) मैं पहला आदमी था जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पलट कर आया। देखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक आदमी था, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से लड़ रहा था। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बचा रहा था मैंने (जी ही जी में) कहा, तुम तलहा हो, तुम पर मेरे मां बाप फ़िदा हों। तुम तलहा हो, तुम पर मेरे मां बाप फ़िदा हों। इतने में अबू उबैदा बिन जर्राह मेरे पास आ गए। वह इस तरह दौड़ रहे थे मानो चिड़िया (उड़ रही) है, यहां तक कि मुझ से आ मिले। अब हम दोनों नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर दौड़े, देखा तो आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे तलहा बिछे पड़े हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अपने भाई को संभालो, उस ने (जन्नत) वाजिब कर ली।" हज़रत अबू बक्र रज़ि० का बयान है कि (हम पहुंचे तो) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा घायल हो चुका था और ख़ूद की दो कड़ियां आंख के नीचे गाल में धंस चुकी थीं। मैंने उन्हें निकालना चाहा तो अबू उबैदा ने कहा, अल्लाह का वास्ता देता हूं मुझे निकालने दीजिए। इस के बाद उन्होंने मुंह से एक कड़ी पकड़ी और धीरे-धीरे निकालनी शुरू की ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट न पहुंचे और आख़िरकार एक कड़ी अपने मुंह से खींच कर निकाल दी, लेकिन (इस कोशिश में) उन का एक निचला दांत गिर गया। अब दूसरी मैंने खींचनी चाही तो अबू उबैदा ने फिर कहा, अबू बक्र! अल्लाह का वास्ता देता हूं मुझे खींचने दीजिए! इस के बाद दूसरी भी धीरे-धीरे खींची, लेकिन उन का दूसरा निचला दांत भी गिर गया। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपने भाई तलहा को संभालो, (उस ने जन्नत) वाजिब कर ली।' हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० कहते हैं कि अब हम तलहा की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उन्हें संभाला। उन को दस से ज़्यादा घाव आ चुके थे।[42] (इस से भी अंदाज़ा होता है कि हज़रत तलहा ने उस दिन बचाव और ख़ूनी लड़ाई में कैसी जांबाज़ी और बे-जिगरी से काम लिया था)

फिर इन्ही सब से नाज़ुक लम्हों में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास जांबाज़ सहाबा की एक जमाअत भी आ पहुंची, जिन के नाम ये हैं--------

1. हज़रत अबू दुजाना
2. हज़रत मुसअब बिन उमैर

42) ज़ादुल-मआद 2/95

3. हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब
4. हज़रत सहल बिन हुनैफ़
5. हज़रत मालिक बिन सिनान (हज़रत अबू सईद खुदरी के पिता)
6. हज़रत उम्मे अ़म्मारा नुसैबा बिन्त काब माज़निया
7. हज़रत क़तादा बिन नोमान
8. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब
9. हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ़ और
10 अबू तलहा रज़ियाल्लाहु अन्हुम अजमईन।

मुश्रिकों के दबाव में बढ़ौतरी

इधर मुश्रिकों की तायदाद दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, जिस के नतीजे में उन के हमले तेज़ होते जा रहे थे और उन का दबाव बढ़ता जा रहा था, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन कुछ गढ़ों में से एक गढ़े में जा गिरे जिन्हें अबू आ़मिर फ़ासिक़ ने इसी क़िस्म की शरारत के लिए खोद रखा था, और उस के नतीजे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घुटने में मोच आ गई, चुनांचे हज़रत अ़ली रज़ि० ने आप का हाथ थामा और तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० ने (जो खुद भी घावों से चूर थे) आप को गोद में ले लिया। तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बराबर खड़े हो सके।

हज़रत नाफ़ेअ़ बिन जुबैर रज़ि० कहते हैं, "मैंने एक मुहाजिर सहाबी को सुना, फ़रमा रहे थे, मैं उहद की लड़ाई में हाज़िर था। मैंने देखा कि हर ओर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तीर बरस रहे हैं और आप तीरों के बीच में हैं, लेकिन सारे तीर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फेर दिए जाते हैं (यानी आगे घेरा डाले हुए सहाबा उन्हें रोक लेते थे) और मैंने देखा कि अब्दुल्लाह बिन शिहाब

ज़ोहरी कह रहा था, मुझे बताओ, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहां हैं? अब या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के क़रीब थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कोई भी न था। फिर वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आगे निकल गया। इस पर सफ़वान ने उस की निन्दा की। जबाव में उस ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मैंने उसे देखा ही नहीं। अल्लाह की क़सम! वह हम से बचा लिया गया है। इस के बाद हम चार आमदी यह वायदा करके निकले कि उन्हें क़त्ल कर देंगे, लेकिन उन तक पहुंच न सके।[43]"

अपूर्व वीरता

बहरहाल इस मौक़े पर ऐसी अपूर्व वीरता और चमचमाती क़ुर्बानियों का प्रदर्शन किया, जिस की मिसाल इतिहास में नहीं मिलती, चुनांचे अबू तलहा रज़ि० ने अपने आप को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे ढाल बना लिया। वह अपना सीना सामने कर दिया करते थे ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुश्मनों के तीरों से बचाए रख सकें। हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि उहुद के दिन लोग (यानी आम मुसलमान) हार कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास (आने के बजाए इधर-उधर) भाग गए और अबू तलहा रज़ि० आप के आगे अपनी एक ढाल लेकर रोक बन गए। वह माहिर तीरअंदाज़ थे। बहुत खींच कर तीर चलाते थे, चुनांचे उस दिन दो या तीन कमानें तोड़ डालीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से कोई आदमी तीरों का तरकश लिए गुज़रता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते कि इन्हें अबू तलहा के लिए बिखेर दो और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ौम की ओर सर उठा कर देखते तो अबू तलहा कहते, "मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान, आप सर

43) ज़ादुल मआद 2/97

...कर न झांकें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कौम का कोई ...न लग जाए। मेरा सीना आप के सीने के आगे है।[44]"

हज़रत अनस रज़ि० से यह भी रिवायत है कि हज़रत अबू तलहा रज़ि० अपना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक ही ढाल से बचाव कर रहे थे और अबू तलहा रज़ि० बहुत अच्छे तीरअंदाज़ थे। जब वह तीर चलाते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गरदन उठा कर देखते कि उन का तीर कहां गिरा।[45]

हज़रत अबू दुजाना रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे खड़े हो गए और अपनी पीठ को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ढाल बना दिया। उन पर तीर पड़ रहे थे लेकिन वे हिलते न थे।

हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ि० ने उत्बा बिन अबी वक़्क़ास का पीछा किया, जिस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक दांत शहीद किया था और उस को इस ज़ोर से तलवार मारी कि उस का सर छटक गया, फिर उस के घोड़े और तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया। हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० बहुत ज़्यादा चाहते थे कि अपने इस भाई —उत्बा——को क़त्ल करें, मगर वह सफल न हो सके, बल्कि इस का श्रेय हज़रत हातिब की क़िस्मत में था।

हज़रत सहल बिन हुनैफ़ भी बड़े वीर तीरअंदाज़ थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मौत पर वचन लिया और उस के बाद मुश्रिकों को बड़े ज़ोर व शोर से हटाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद भी तीर चला रहे थे। चुनांचे हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी कमान से इतने

44) बुख़ारी 2/581

45) बुख़ारी 1/406

तीर चलाए कि उसका किनारा टूट गया, फिर उस कमान को हज़रत क़तादा रज़ि० बिन नोमान ने ले लिया और वह उन्हीं के पास रही। उस दिन यह घटना भी घटी कि हज़रत क़तादा रज़ि० की आंख चोट खा कर चेहरे पर ढलक आयी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे अपने हाथ से पपोटे के अंदर दाख़िल कर दिया। इस के बाद उन की दोनों आंखों में यही ज़्यादा ख़ूबसूरत लगती थी और इसी की बीनाई (आंखों की रोशनी) ज़्यादा तेज़ थी।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने लड़ते-लड़ते मुंह पर चोट खाई जिस से उन के सामने का दांत टूट गया और उन्हें बीस या बीस से ज़्यादा घाव आए। जिन में से कुछ घाव पांव में लगे और वह लंगड़े हो गए।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० के पिता मालिक बिन सिनान रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे से ख़ून चूस कर साफ़ किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसे थूक दो। उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! इसे तो मैं हरगिज़ न थूकूंगा, इस के बाद पलट कर लड़ने लगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी किसी जन्नती आदमी को देखना चाहता हो, वह इन्हें देखे। इस के बाद वे लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

एक अनोखा कारनामा ख़ातून सहाबिया हज़रत उम्मे अम्मारा नुसैबा बिन्ते काब रज़ि० ने अंजाम दिया। वह कुछ मुसलमानों के दर्मियान लड़ती हुई इब्ने क़ुम-आ के सामने आ गयीं। इब्ने क़ुम-आ ने उन के कंधे पर ऐसी तलवार मारी कि गहरा घाव हो गया। उन्होंने भी इब्ने क़ुमा-आ को अपनी तलवार से कई चोटें लगाईं, लेकिन कमबख़्त दो ज़िरहें (कवच) पहने हुए था, इस लिए बच गया हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ि० ने लड़ते-भिड़ते बारह घाव खाए।

हज़रत मुस्‌अब बिन उमैर रज़ि० ने भी बड़ी बहादुरी से लड़ाई लड़ी। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इब्ने कुम-आ और उस के साथियों के लिए बराबर हमलों से बचाव का काम कर रहे थे। उन्हीं के हाथ में इस्लामी सेना का झंडा था। ज़ालिमों ने उन के दाहिनी हाथ पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि हाथ कट गया। इस के बाद उन्होंने बाएं हाथ में झंडा पकड़ लिया और कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में डटे रहे, आख़िर कार उन का बायां हाथ भी काट दिया गया। इस के बाद उन्होंने झंडे पर घुटने टेक कर उसे सीने और गरदन के सहारे लहराए रखा और इसी हालत में शहीद हो गए। उन का क़ातिल इब्ने कुम-आ था। वह समझ रहा था कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं क्योंकि हज़रत मुस्‌अब बिन उमैर रज़ि० आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी शक्ल के थे। चुनांचे वह हज़रत मुस्‌अब को शहीद करके मुश्रिकों की ओर वापस चला गया और चिल्ला चिल्ला कर एलान किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क़त्ल कर दिए गए।[46]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शहीद होने की ख़बर और लड़ाई का प्रभावः

इस एलान से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शहीद होने की ख़बर मुसलमानों और मुश्रिकों दोनों में फैल गयी और यही वह सब से नाज़ुक घड़ी थी, जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अलग-थलग दुश्मनों से घिरे हुए बहुत से सहाबा किराम रज़ि० के हौसले टूट गए, उन के इरादे ठंडे पड़ गए और उन की लाइनें उथल-पुथल और बिखराव का शिकार हो गयीं, मगर आप की शहादत की यही ख़बर इस हैसियत से फ़ायदेमंद रही कि इस के बाद मुश्रिकों के जोश भरे हमलों में कुछ कमी आ गयी, क्योंकि वे महसूस कर रहे थे

46) इब्ने हिशाम 2/73, 80, 83, ज़ादुल-मआद 2/97

कि आख़िरी मक़सद पूरा हो चुका है। चुनांचे अब बहुत से मुश्रिकों ने हमला बंद करके मुसलमान शहीदों की लाशों का अंग-भंग करना शुरू कर दिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निरंतर युद्ध-सज्जा और हालात पर क़ाबू

हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि० के शहीद कर दिए जाने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झंडा हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० को दिया। उन्होंने जम कर लड़ाई की। वहां पर मौजूद बाक़ी सहाबा किराम रज़ि० ने भी बेमिसाल बहादुरी और जांबाज़ी के साथ अपनी रक्षा और हमला किया जिस से आख़िर में इस बात की संभावना पैदा हो गई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुश्रिकों की सफ़ें चीर कर घेरे गए सहाबा किराम रज़ि० के लिए रास्ता बनाएं। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़दम आगे बढ़ाया और सहाबा किराम रज़ि० की ओर तशरीफ़ लाए। सब से पहले हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहचाना, ख़ुशी से चीख़ पड़े, मुसलमानो! ख़ुश हो जाओ। यह हैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशारा फ़रमाया कि ख़ामोश रहो—— ताकि मुश्रिकों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मौजूदगी और मौजूदगी की जगह का पता न लग सके—— मगर उन की आवाज़ मुसलमानों के कान तक पहुंच चुकी थी, चुनांचे मुसलमान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह में आना शुरू हो गए और धीरे-धीरे लगभग तीस सहाबा जमा हो गए।

जब इतनी तायदाद जमा हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ की घाटी यानी कैम्प की ओर हटना शुरू किया मगर चूंकि इस वापसी का मतलब यह था कि मुश्रिकों ने

मुसलमानों को घेरे में लेने की जो कार्यवाही की थी, वह बे-नतीजा रह जाए, इसलिए मुश्रिकों ने इस वापसी को नाकाम बनाने के लिए अपने ताबड़-तोड़ हमले जारी रखे, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन हमलावरों की भीड़-चीर कर रास्ता बना ही लिया और इस्लाम के शेरों की बहादुरी और शहज़ोरी के सामने उनकी एक न चली। इसी बीच मुश्रिकों का एक अड़ियल घुड़सवार उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरह यह कहते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर बढ़ा कि या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा, इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी दो-दो हाथ करने के लिए ठहर गए, मगर मुक़ाबले की नौबत न आई, क्योंकि उसका घोड़ा एक गढ़े में गिर गया और इतने में हारिस बिन सम्मा रज़ि० ने भी उसके पास पहुंच कर उसे ललकारा और उसके पांव पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि वहीं बिठा दिया। फिर उसका काम तमाम करके उसका हथियार ले लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आ गए, मगर इतने में मक्की फ़ौज के एक दूसरे सवार अब्दुल्लाह बिन जाबिर ने पलट कर हज़रत हारिस बिन सम्मा रज़ि० पर हमला कर दिया और उनके कंधे पर तलवार मार कर घायल कर दिया, मगर मुसलमानों ने लपक कर उन्हें उठा लिया। उधर ख़तरों से खेलने वाले मर्दे मुजाहिद हज़रत अबू दुजाना रज़ि० जिन्होंने आज लाल पट्टी बांध रखी थी, अब्दुल्लाह बिन जाबिर पर टूट पड़े और उसे ऐसी तलवार मारी कि उसका सर उड़ गया।

कुदरत का खेल देखिए कि इसी खूनी मार-धाड़ के बीच मुसलमानों को नींद की झपकियां भी आ रही थीं और जैसा कि कुरआन ने बताया है, यह अल्लाह की ओर से शान्ति और इत्मीनान था। अबू तलहा रज़ि० का बयान है कि मैं भी उन लोगों में था जिन पर उहद के दिन नींद आ रही थी, यहां तक कि मेरे हाथ से कई बार तलवार गिर गयी। हालत

यह थी कि वह गिरती थी और मैं पकड़ता था, फिर गिरती थी और फिर पकड़ता था।[47]

सार यह कि इस तरह की वीरता और जांबाज़ी के साथ यह टुकड़ी संगठित होकर पीछे हटती हुयी पहाड़ की घाटी में स्थित कैम्प तक जा पहुंची और बाक़ी फ़ौज के लिए भी इस सुरक्षित जगह तक पहुंचने का रास्ता बना दिया, चुनांचे बाक़ी फ़ौज भी अब आप के पास आ गई और हज़रत ख़ालिद की फ़ौजी महारत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फ़ौजी महारत के सामने नाकाम हो गयी।

उबई बिन ख़ल्फ़ की हत्या

इब्ने इसहाक़ का बयान है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी में तशरीफ़ ला चुके तो अबई बिन ख़ल्फ़ यह कहता हुआ आया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहां हैं? या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा। सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम में से कोई उस पर हमला करे? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसे आने दो। जब क़रीब आया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन सम्मा रज़ि० से एक छोटा सा नेज़ा लिया और लेने के बाद झटका दिया, तो इस तरह लोग इधर-उधर उड़ गए जैसे ऊंट अपने बदन को झटका देता है तो मक्खियां उड़ जाती हैं। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के सामने आ पहुंचे। उस की ख़ूद और ज़िरह के दर्मियान हलक़ के पास थोड़ी सी जगह खुली दिखाई पड़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी पर टिका कर ऐसा नेज़ा मारा कि वह घोड़े से कई बार लुढ़क-लुढ़क गया। जब क़ुरैश के पास गया------जब कि गरदन में कोई बड़ी ख़राश न थी, अलबत्ता ख़ून बंद था और बहता न था तो कहने लगा, मुझे अल्लाह की क़सम! मुहम्मद ने क़त्ल कर दिया, लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम तुम्हारा दिल चला

47) बुख़ारी 2/582

...है वरना तुम्हें अल्लाह की क़सम कोई ख़ास चोट नहीं है। उस ने ... वह मक्का में मुझ से कह चुका था कि मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा।[48] ...लिए अल्लाह की क़सम! अगर वह मुझ पर थूक देता तो भी मेरी ... चली जाती। आख़िरकार अल्लाह का यह दुश्मन मक्का वापस होते ... सरिफ़ नामी जगह पर पहुंच कर मर गया।[49] अबुल अस्वद ने हज़रत ...रज़ि० से रिवायत किया है कि यह बैल की तरह आवाज़ निकालता ... और कहता था कि उस ज़ात की क़सम, जिस के हाथ में मेरी जान ... जो तक्लीफ़ मुझे है अगर वह ज़ुल- मजाज़ के सारे बाशिंदों को होती ...ती वे सब के सब मर जाते।[50]

हज़रत तलहा रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उठाते हैं

पहाड़ की तरफ़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के दौरान एक चट्टान आ गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर चढ़ने की कोशिश की, मगर चढ़ न सके, क्योंकि एक तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बदन भारी हो चुका था, दूसरे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोहरी ज़िरह पहन रखी थी, और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त चोटें भी आई थीं, इसलिए हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० नीचे बैठ गए और आप को सवार कार के खड़े हो गए, इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चट्टान पर पहुंच गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तलहा ने (जन्नत) वाजिब कर ली।[51]

---

48) इस की घटना यह है कि जब मक्का मे उबई की मुलाक़ात रसूलुल्लाह (सल्ल०) से होती तो वह आप से कहता ए मुहम्मद (सल्ल०) मेरे पास ऊद नाम का एक घोड़ा है मैं उसे रोज़ाना तीन साअ (7.5 कि०) दाना खिलाता हूँ उसी पर बैठ कर तुम्हें क़त्ल करुँगा। जवाब में रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते कि इनशा अल्लाह मैं तुम्हें क़त्ल करुँगा।

49) इब्ने हिशाम 2/84, ज़ादुल-मआद 2/97

50) मुख़तसर सीरतुर-रसूल (शेख़ अब्दुल्लाह) पृ०250

51) इब्ने हिशाम 2/86

मुश्रिकों का आख़िरी हमला

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी के अंदर ठहरने की जगह पहुंच गए तो मुश्रिकों ने मुसलमानों को चोट पहुंचाने की आख़िरी कोशिश की। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि उस समय जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी के अंदर तश्रीफ़ रखते थे, अबू सुफ़ियान और ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में मुश्रिकों का एक दस्ता चढ़ आया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! ये हम से ऊपर न जाने पाएं। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और मुहाजिरों की एक जमाअत ने लड़ कर उन्हें पहाड़ से नीचे उतार दिया।[52]

मग़ाज़ी उमवी का बयान है कि मुश्रिक पहाड़ पर चढ़ आए तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत साद रज़ि० से फ़रमाया, इन के हौसले पस्त करो यानी इन्हें पीछे ढकेल दो। उन्होंने कहा, मैं अकेले इन के हौसले कैसे पस्त करूं? इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार यही बात दोहराई। आख़िर में हज़रत साद रज़ि० ने अपने तरकश से एक तीर निकाला और एक आदमी को मारा तो वह वहीं ढेर हो गया। हज़रत साद रज़ि० कहते हैं कि मैं ने फिर अपना तीर लिया, उसे पहचानता था और इस से दूसरे को मारा तो उस का भी काम तमाम हो गया। इस के बाद फिर तीर लिया, उसे पहचानता था और उस से तीसरे को मारा तो उस की भी जान जाती रही, इस के बाद मुश्रिक नीचे उतर गए। मैंने कहा, यह मुबारक तीर है। फिर मैंने उसे अपने तरकश में रख लिया। यह तीर ज़िंदगी भर हज़रत साद रज़ि० के पास रहा और उन के बाद उन की औलाद के पास रहा।[53]

---

52) इब्ने हिशाम 2/86
53) ज़ादुल-मआद 2/95

शहीदों का मुसला

यह आख़िरी हमला था जो मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ किया था, चूंकि उन्हें आप के अंजाम का सही ज्ञान नहीं था, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शहादत का लगभग यक़ीन था इसलिए उन्होंने अपने कैम्प की तरफ़ पलट कर मक्का वापसी की तैयारी शुरू कर दी। कुछ मुश्रिक मर्द और औरतें मुसलमान शहीदों के मुसूले में लग गये यानी शहीदों की शर्मगाहें और कान, नाक वग़ैरह काट लिये, पेट चीर दिए। हिन्द बिन्त उत्बा ने हज़रत हमज़ा रज़ि० का कलेजा चाक कर दिया और मुंह में डाल कर चबाया और निगलना चाहा, लेकिन निगल न सकी तो थूक दिया और कटे हुए कानों और नाकों का पाज़ेब और हार बनाया।[54]

आख़िर तक लड़ाई लड़ने के लिए मुसलमानों की तैयारी

फिर इस आख़िरी वक़्त में दो ऐसी घटनाएं घटीं जिन से यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं कि जांबाज़ और वीर मुसलमान आख़िर तक लड़ाई लड़ने के लिए कितने मुस्तैद थे और अल्लाह की राह में लड़ने के लिए कैसा ज़बरदस्त हौसला रखते थे-----

1. हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि० का बयान है कि मैं उन मुसलमानों में था जो घाटी से बाहर आए थे। मैंने देखा कि मुश्रिकों के हाथों मुसलमान शहीदों का मुसूला किया जा रहा है, तो रुक गया, फिर आगे बढ़ा, क्या देखता हूं कि एक मुश्रिक जो भारी भरकम ज़िरह में लिपटा हुआ था, शहीदों के बीच से गुज़र रहा है और कहता जा रहा है कि कटी हुई बकरियों की तरह ढेर हो गए और एक मुसलमान उस की राह तक रहा है वह भी ज़िरह पहने हुए है। मैं कुछ क़दम और बढ़ कर उसके पीछे हो लिया, फिर खड़े हो कर आंखों ही आंखों में मुस्लिम और काफ़िर को तोलने लगा। महसूस हुआ कि काफ़िर अपने डील-डोल

54) इब्ने हिशाम 2/90

और साज़ व सामान दोनों लिहाज़ से बेहतर है। अब मैं दोनों का इन्तिज़ार करने लगा आख़िर में दोनों में टक्कर हो गयी और मुसलमान ने काफ़िर को ऐसी तलवार मारी कि वह पांव तक काटती चली गयी। मुश्रिक दो टुकड़े होकर गिरा, फिर मुसलमान ने अपना चेहरा खोला और कहा, ओ कअ़ब! कैसी रही? मैं अबू दुजाना हूं।[55]

2. लड़ाई के अन्त पर कुछ मोमिन औरतें जिहाद के मैदान में पहुंचीं। चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि मैंने हज़रत आइशा बिन्त अबू बक्र रज़ि० और उम्मे सुलैम को देखा कि पिंडुली के पाज़ेब कपड़े तक चढ़ाए पीठ पर मश्क लाद-लाद कर ला रही थीं और घायलों के मुंह में उंडेल रही थीं।[56] हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि उहद के दिन हज़रत उम्मे सलीत रज़ि० हमारे लिए मश्कें भर-भर कर ला रही थीं।[57]

इन्हीं औरतों में हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० भी थीं। उन्होंने जब हार खाए मुसलमानों को देखा कि मदीना में घुसना चाहते हैं तो उन के चेहरों पर मिट्टी फेंकने लगीं और कहने लगीं यह सूत कातने का तकला लो और हमें तलवार दो।[58] इस के बाद तेज़ी से लड़ाई के मैदान में पहुंचीं और घायलों को पानी पिलाने लगीं। उन पर हिब्बान बिन अ़रक़ा ने तीर चलाया। वह गिर पड़ीं और परदा खुल गया इस पर अल्लाह के दुश्मन ने ज़ोरदारा ठट्ठा लगाया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात बुरी लगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत

---

55) अल-बिदाया वन-निहाया 4/17

56) बुख़ारी 1/403, 2/581

57) बुख़ारी 1/403

58) सूत कातना अरब की औरतों का ख़ास काम था। इस लिए सूत कातने का तकला (फिरकी) औरतों का वैसा ही ख़ास सामान था जैसे हमारे मुलक में चूड़ी। इस अवसर पर उम्मे ऐमन के उक्त मुहावरे का ठीक वही मतलब है जो हमारी ज़बान के इस मुहावरे का है कि "चूड़ी लो और तलवार दो"

साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को एक बे-रीश तीर देकर फ़रमाया, इसे चलाओ। हज़रत साद रज़ि० ने चलाया तो वह तीर हिब्बान के हलक़ पर लगा और वह चित गिरा और उसका परदा खुल गया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह हंसे कि जड़ के दांत दिखाई देने लगे, फ़रमाया साद रज़ि० ने उम्मे ऐमन (रज़ि०) का बदला चुका लिया। अल्लाह उनकी दुआ कुबूल करे।[59]

घाटी में क़रार पाने के बाद

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घाटी के अंदर अपने ठहरने की जगह में कुछ क़रार पा लिया तो हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० महरास से अपनी ढाल में पानी भर लाए----कहा जाता है महरास पत्थर में बना हुआ वह गढ़ा होता है, जिस में ज़्यादा सा पानी आ सकता हो और कहा जाता है कि यह उहद में एक चश्मे का नाम था। बहरहाल हज़रत अ़ली रज़ि० ने वह पानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पीने के लिए पेश किया आप ने कुछ ना-पसंदीदा गंध महसूस की, इसलिए उसे पिया तो नहीं, अलबत्ता उस से चेहरे का ख़ून धो लिया और सर पर भी डाल लिया। इस हालत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे थे, "उस आदमी पर अल्लाह का सख़्त ग़ज़ब हो जिस ने उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे को ख़ून में डुबो दिया।[60]"

हज़रत सह्ल रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे मालूम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घाव किस ने धोया? पानी किस ने बहाया? और इलाज किस चीज़ से किया गया? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० आप का घाव धो रही थीं और हज़रत अ़ली रज़ि० ढाल से पानी बहा रहे थे। जब

---

59) अस-सीरतुल-हलबिया 2/22

60) इब्ने हिशाम 2/85

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने देखा कि पानी की वजह से ख़ून बढ़ता ही जा रहा है तो चटाई का एक टुकड़ा लिया और उसे जला कर चिपका दिया जिस से ख़ून रुक गया।[61]

इधर मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० मीठा और स्वाद भरा पानी लाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पिया और दुआ-ए-ख़ैर दी।[62] घाव की वजह से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज़ बैठे-बैठे पढ़ी और सहाबा किराम रज़ि० ने भी आप के पीछे बैठ कर ही नमाज़ अदा की।[63]

अबू सुफ़ियान की बद-तमीज़ी और हज़रत उमर रज़ि० से दो-दो बातें

मुश्रिकों ने वापसी की तैयारी पूरी कर ली तो अबू सुफ़ियान उहद पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ और ऊंची आवाज़ से बोला, क्या तुम में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं? लोगों ने कोई जवाब न दिया, उस ने फिर पूछा, क्या तुम में अबू क़हाफ़ा के बेटे (अबू बक्र रज़ि०) हैं? लोगों ने कोई जवाब न दिया। उस ने फिर सवाल किया, क्या तुम में उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) हैं? लोगों ने इस बार भी जवाब न दिया-------क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को जवाब देने से मना फ़रमा दिया था------अबू सुफ़ियान ने इन तीन के सिवा किसी और के बारे में न पूछा, क्योंकि उसे और उस की क़ौम को मालूम था कि इस्लाम की स्थापना इन ही तीनों के ज़रिए है। बहरहाल जब कोई जवाब न मिला, तो उस ने कहा चलो इन तीनों से फ़ुर्सत हुई। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० बे-क़ाबू हो गये और बोले, "ओ अल्लाह के दुश्मन! जिन का तूने नाम लिया है, वे सब ज़िन्दा हैं

61) बुख़ारी 2/584

62) अस-सीरतुल-हलबिया 2/30

63) इब्ने हिशाम 2/87

और अभी अल्लाह ने तेरी रुसवाई का सामान बाक़ी रखा है।" इस के बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, "तुम्हारे क़त्ल किए गए लोगों का मुसला हुआ है, लेकिन मैंने न इस का हुक्म दिया था और न इस का बुरा ही मनाया है," फिर नारा लगाया, 'हुबल बुलन्द हो'।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम लोग जवाब क्यों नहीं देते? सहाबा ने अर्ज़ किया क्या जवाब दें? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कहो

اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلُّ

(अल्लाह बुलन्द और बरतर है।)

फिर अबू सुफ़ियान ने नारा लगाया,

لَنَا عُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ

(हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारे लिए उज़्ज़ा नहीं)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जवाब क्यों नहीं देते? सहाबा ने मालूम किया, क्या जवाब दें? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कहो,

اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ

(अल्लाह हमारा मौला है और तुम्हारा कोई मौला नहीं)

इस के बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, "कितना अच्छा कारनामा रहा। आज का दिन बद्र की लड़ाई के दिन का बदला है और लड़ाई डोल है।[64]"

---

64) अर्थात कभी एक पक्ष विजयी होता है और कभी दूसरा, जैसे डोल कभी कोई खींचता है और कभी कोई।

हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में कहा, "बराबर नहीं, हमारे क़त्ल किए गए लोग जन्नत में हैं और तुम्हारे क़त्ल किए गए लोग जहन्नम में।"

इस के बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, उमर! मेरे क़रीब आओ। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जाओ, देखो क्या कहता है? वह क़रीब आए तो अबू सुफ़ियान ने कहा, उमर! मैं अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं, क्या हम ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को क़त्ल कर दिया है! हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! नहीं, बल्कि इस वक़्त वह तुम्हारी बातें सुन रहे हैं। अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम मेरे नज़दीक इब्ने क़ुम-आ से ज़्यादा सच्चे और सीधे रास्ते पर हो।[65]

बद्र में एक और लड़ाई लड़ने की बात

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अबू सुफ़ियान और उस के साथी वापस होने लगे तो अबू सुफ़ियान ने कहा, "अगले साल बद्र में फिर लड़ने का वायदा है।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से फ़रमाया, "कह दो ठीक है। अब यह बात हमारे और तुम्हारे दर्मियान तय रही।[66]"

मुश्रिकों के दृष्टिकोण की जांच

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० को रवाना किया और फ़रमाया, "क़ौम (मुश्रिकों) के पीछे-पीछे जाओ और देखो वे क्या कर रहे हैं और उन का इरादा क्या है? अगर उन्होंने घोड़े पहलू में रखे हों और ऊंटों पर सवार हों तो उन का इरादा मक्का का है और अगर घोड़ों पर सवार हों और ऊंट हांक कर ले जाएं तो मदीना का इरादा है" फिर फ़रमाया "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर उन्होंने मदीना

65) इब्ने हिशाम 2/93-94, ज़ादुल-मआद 2/94, बुख़ारी 2/579

66) इब्ने हिशाम 2/94

का इरादा किया तो मैं मदीना जाकर उन से दो-दो हाथ करूंगा। हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि इस के बाद मैं उन के पीछे निकला तो देखा कि उन्होंने घोड़े पहलू में कर रखे हैं, ऊंटों पर सवार हैं और मक्का का रुख़ है।[67]

शहीदों और घायलों की ख़बरगीरी

कुरैश की वापसी के बाद मुसलमान अपने शहीदों और घायलों की खोज-ख़बर लेने के लिए फ़ारिग़ हो गए। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० का बयान है कि उहुद के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे भेजा कि मैं साद बिन रबीअ़ रज़ि० को खोजूं और फ़रमाया कि अगर वह दिखाई पड़ जाएं तो उन्हें मेरा सलाम कहना और यह कहना कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मालूम कर रहे हैं कि तुम अपने आप को कैसा पा रहे हो? हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मैं क़त्ल किए गए लोगों के बीच चक्कर लगाते हुए उन के पास पहुंचा तो वह आख़िरी सांस ले रहे थे। उन्हें नेज़े, तलवार और तीर के सत्तर से ज़्यादा घाव आए थे। मैंने कहा, "ऐ साद! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप को सलाम कहते हैं और मालूम कर रहे हैं कि मुझे बताओ अपने आप को कैसा पा रहे हो?" उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम। आप से कहो कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! जन्नत की ख़ुश्बू पा रहा हूं और मेरी क़ौम अंसार से कहो कि अगर तुम में से एक आंख भी हिलती रही और दुश्मन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंच गया तो तुम्हारे लिए अल्लाह के नज़दीक कोई उज़्र न होगा----और उसी वक़्त उन की जान निकल गयी।[68]

67) इब्ने हिशाम 2/94. हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुल-बारी (7/347) में लिखा है कि मुश्रिकीन के इरादों का पता लगाने के लिए हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) गए थे।

68) ज़ादुल- मआद 2/96

लोगों ने घायलों में उसैरिम रज़ि० को भी पाया, जिन का नाम अम्र बिन साबित रज़ि० था। उन में थोड़ी सी जान बाक़ी थी। इस से पहले उन्हें इस्लाम की दावत दी जाती थी, मगर वे कुबूल नहीं करते थे, इसलिए लोगों ने (ताज्जुब से) कहा कि यह उसैरिम कैसे आया है? इसे तो हम ने इस हालत में छोड़ा था कि वह इस दीन का इन्कारी था। चुनांचे उन से पूछा गया कि तुम्हें यहां क्या चीज़ ले आयी? क़ौम की हिमायत का जोश या इस्लाम से लगाव? उन्होंने कहा, "इस्लाम का लगाव। सच तो यह है कि मैं अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आया और इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिमायत में लड़ाई में शरीक हुआ, यहां तक कि अब इस हालत से दो-चार हूं, जो आप लोगों की आंखों के सामने है।" और उसी वक़्त उन का इंतिक़ाल हो गया। लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उस का ज़िक्र किया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "वह जन्नतियों में से है।" हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि—हालांकि उस ने अल्लाह के लिए एक वक़्त की भी नमाज़ नहीं पढ़ी थी।[69] (क्योंकि इस्लाम लाने के बाद अभी किसी नमाज़ का वक़्त आया ही नहीं था कि शहीद हो गए।)

इन ही घायलों में क़ुज़मान भी मिला, वह इस लड़ाई में ख़ूब-ख़ूब लड़ा था और अकेले सात या आठ मुश्रिकों को मार डाला था। वह जब मिला तो घावों से चूर था। लोग उसे उठाकर बनू ज़फ़र के मुहल्ले में ले गए और मुसलमानों ने उसे ख़ुशख़बरी सुनायी। कहने लगा, अल्लाह की क़सम! मेरी लड़ाई तो सिर्फ़ अपनी क़ौम की श्रेष्ठता (बरतरी) के लिए थी और अगर यह बात न होती तो मैं लड़ता ही नहीं। इसके बाद जब उसके घावों में तेज़ी आ गई तो उसने अपने आप को ज़िब्ह कर के आत्म-हत्या कर ली। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

69) ज़ादुल-मआद 2/94, इब्ने हिशाम 2/90

[उ]सका जब भी ज़िक्र किया जाता था तो फ़रमाते थे कि वह जहन्नमी [है] (और इस घटना ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की [भवि]ष्यवाणी की पुष्टि भी कर दी।) सच तो यह है कि अल्लाह के कलिमे [को] बुलन्द करने के बजाए वतन परस्ती या किसी दूसरी राह में लड़ने [वा]ले का अंजाम यही है चाहे वह इस्लाम के झंडे के नीचे, बल्कि रसूल [सल]्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा की सेना ही में शरीक होकर क्यों न लड़ रहे हों।

इसके बिल्कुल विपरीत क़त्ल किए गए लोगों में बनू सालबा का एक यहूदी था। उसने उस वक़्त जबकि लड़ाई के बादल मंडरा रहे थे, अपनी क़ौम से कहा, "ऐ यहूदियों की जमाअत! अल्लाह की क़सम! तुम जानते हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद तुम पर फ़र्ज़ है।" यहूदियों ने कहा, मगर आज सबृत (शनिवार) का दिन है। उसने कहा, तुम्हारे लिए कोई सबृत नहीं। फिर उस ने अपनी तलवार ली, साज़ व सामान उठाया और बोला, अगर मैं मारा जाऊं तो मेरा माल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है, वह इस में जो चाहेंगे करेंगे। इस के बाद लड़ाई के मैदान में गया और लड़ते-भिड़ते मारा गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मुख़ैरीक़ बेहतरीन यहूदी था।"[71]

इस मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद भी शहीदों का मुआयना फ़रमाया और फ़रमाया कि मैं इन लोगों के हक़ में गवाह रहूंगा। सच तो यह है कि जो आदमी अल्लाह की राह में घायल किया जाता है, उसे अल्लाह क़ियामत के दिन इस हालत में उठाएगा कि उस के घाव से ख़ून बह रहा होगा, रंग तो ख़ून ही का होगा, लेकिन ख़ुश्बू मुश्क की ख़ुशबू जैसी होगी।[72]

70) इब्ने हिशाम 2/88, ज़ादुल-मआद 2/97-98

71) इब्ने हिशाम 2/88,89

72) इब्ने हिशाम 2/98

कुछ सहाबा रज़ि० ने अपने शहीदों को मदीना मुंतक़िल कर लिया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि अपने शहीदों को वापस ला कर उन की शहादतगाहों में दफ़न करें, साथ ही शहीदों के हथियार और पोस्तीन के लिबास उतार लिए जाएं, फिर उन्हें नहलाए बिना जिस हालत में हों, उसी हालत में दफ़न कर दिया जाए। आप दो-दो, तीन-तीन शहीदों को एक ही क़ब्र में दफ़न फ़रमा रहे थे और दो-दो आदमियों को एक ही कपड़े में इकट्ठा लपेट देते थे और मालूम फ़रमाते थे कि उन में से कुरआन किस को ज़्यादा याद है। लोग जिस की तरफ़ इशारा करते उसे क़ब्र में आगे करते और फ़रमाते कि मैं क़ियामत के दिन इन लोगों के बारे में गवाही दूंगा। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिराम और अम्र बिन जमूह रज़ि० एक ही क़ब्र में दफ़न किए गए, क्योंकि इन दोनों में दोस्ती थी।[73]

हज़रत हंज़ला रज़ि० की लाश ग़ायब थी। खोजने के बाद एक जगह इस हालत में मिली कि ज़मीन पर पड़ी हुई थी और उस से पानी टपक रहा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को बताया कि फ़रिश्ते उन्हें नहला रहे हैं, फिर फ़रमाया, उन की बीवी से पूछो, क्या मामला है? उन की बीवी से मालूम किया गया तो उन्होंने घटना बतलाई। यहीं से हज़रत हंज़ला रज़ि० का नाम "ग़सीलुल मलाइका" (फ़रिश्तों के नहलाये हुए) पड़ गया।[74]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत हमज़ा रज़ि० का हाल देखा, तो बहुत दुखी हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी हज़रत सफ़िय्या रज़ि० तशरीफ़ लाईं, वह भी अपने भाई हज़रत हमज़ा रज़ि० को देखना चाहती थीं लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के सुपुत्र हज़रत ज़ुबैर

73) ज़ादुल-मआद 2/98, बुख़ारी 2/584

74) ज़ादुल-मआद 2/94

रज़ि० से कहा कि उन्हें वापस ले जाएं। वह अपने भाई का हाल देख लें, मगर हज़रत सफ़िय्या रज़ि० ने कहा, आख़िर ऐसा क्यों? मुझे मालूम हो चुका है कि मेरे भाई का मुस्ला किया गया है, लेकिन यह अल्लाह की राह में है, इस लिए जो कुछ हुआ हम उस पर पूरी तरह राज़ी हैं। मैं सवाब समझते हुए इनशा अल्लाह ज़रूर सब्र करूंगी। इस के बाद वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के पास आईं, उन्हें देखा, उन के लिए दुआ की, إِنَّا لِلَّهِ पढ़ी और अल्लाह से मग़्फ़िरत मांगी, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि इन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० के साथ दफ़न कर दिया जाए। वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के भांजे भी थे और दूध-शरीक भाई भी।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० पर जिस तरह रोए, उस से बढ़ कर रोते हुए हम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी नहीं देखा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क़िब्ले की तरफ़ रखा, फिर उन के जनाज़े पर खड़े हुए और इस तरह रोए कि आवाज़ ऊंची हो गई।[75]

हक़ीक़त में शहीदों का दृश्य था ही बड़ा दिलदोज़ और दुखद! चुनांचे हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ि० का बयान है कि हज़रत हमज़ा के लिए एक काली धारियों वाली चादर के सिवा कोई कफ़न न मिल सका। यह चादर सर पर डाली जाती तो पांव खुल जाते और पांव पर डाली जाती तो सर खुल जाता, आख़िर में चादर से सर को ढक दिया गया और पांव पर इज़ख़िर[76] घास डाल दी गयी।[77]

---

75) यह इब्ने शाज़ान की रिवायत है देखिए मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) पृ०255

76) यह बिलकुल मूज के शक्ल की खुशबूदार घास होती है बहुत सी जगहों पर चाय में डाल कर पकाई भी जाती है अरब में इसका पौधा हाथ डेढ़ हाथ से लम्बा नहीं होता जबकि हिन्दुस्तान में एक मीटर से भी लम्बा होता है।

77) मुसनद अहमद, मिशकात 1/140

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का बयान है कि मुसअब बिन उमैर रज़ि० शहीद किए गए------ और वह मुझ से बेहतर थे—— तो उन्हें एक चादर के अंदर कफ़नाया गया। हालत यह थी कि अगर उन का सर ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव ढांके जाते तो सर खुल जाता था। उन की यही हालत हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने भी बयान की है और इतना और बढ़ा दिया है कि (इस हालत को देख कर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से फ़रमाया कि चादर से इन का सर ढांक दो और पांव पर इज़्ख़िर डाल दो।[78]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की हम्द व सना (गुण-गान) करते और उस से दुआ फ़रमाते हैं

इमाम अहमद रह० की रिवायत है कि उहद के दिन जब मुश्रिक वापस चले गए तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, "बराबर हो जाओ, ताकि मैं अपने रब का गुण-गान कर लूं।" इस हुक्म पर सहाबा किराम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे सफ़ें बांध लीं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यूं फ़रमाया------

"ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सारा गुण-गान है। ऐ अल्लाह! जिस चीज़ को तू फैला दे, उसे कोई तंग नहीं कर सकता और जिस चीज़ को तू तंग कर दे, उसे कोई फैला नहीं सकता। जिस आदमी को तू गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और जिस आदमी को तू हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता। जिस चीज़ को तू रोक दे, उसे कोई दे नहीं सकता और जो चीज़ तू दे दे, उसे कोई रोक नहीं सकता। जिस चीज़ को तू दूर कर दे, उसे कोई क़रीब नहीं कर सकता और जिस चीज़ को तू क़रीब कर दे, उसे कोई दूर नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह! हमारे ऊपर अपनी बरकतें, रहमत और फ़ज़्ल व रिज़्क़ फैला दे।

78) बुख़ारी 2/579, 584

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हमेशा रहने वाली नेमत का सवाल करता हूं जो न टले और न ख़त्म हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से फ़क्र (उपवास) के दिन मदद का और भय के दिन अम्न का सवाल करता हूं। ऐ अल्लाह! जो कुछ तूने हमें दिया है और उस के शर (हानियों) से और जो कुछ नहीं दिया है उस के भी शर से तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ अल्लाह! हमारे नज़दीक ईमान को प्रिय कर दे और इसे हमारे दिलों में सुंदर बना दे। और कुफ़्र, फ़िस्क़ और ना-फ़रमानी को ना-गवार बना दे और हमें हिदायत पाए हुए लोगों में कर दे। ऐ अल्लाह! हमें मुसलमान ही रखते हुए वफ़ात दे और मुसलमान ही रखते हुए ज़िंदा रख और रुसवाई और फ़ित्ने से दो-चार किए बिना नेक लोगों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! तू उन काफ़िरों को मार और उन पर सख़्ती और अज़ाब कर जो तेरे पैग़म्बरों को झुठलाते और तेरी राह से रोकते हैं। ऐ अल्लाह! इन काफ़िरों को भी मार, जिन्हें किताब दी गई, ऐ अल्लाह![79]

मदीना को वापसी और मुहब्बत करने और जान लगा देने की अनोखी घटनाएं

शहीदों के दफ़न करने और अल्लाह के गुण-गान से फ़ारिग़ होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना का रुख़ फ़रमाया, जिस तरह लड़ाई के ज़माने में, ईमान वाले सहाबा से मुहब्बत करने और जान लड़ाने की अनोखी घटनाएं हुई थीं उसी तरह बीच रास्ते में ईमान वाली सहाबियात (सहाबी औरतों) से सत्य और जान पर खेल जाने की अनोखी घटनाएं सामने आईं।

चुनांचे रास्ते में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुलाक़ात हज़रत हमना बिन्त जहश रज़ि० से हुई। उन्हें उनके भाई अब्दुल्लाह बिन जहश के शहीद हो जाने की ख़बर दी गयी। उन्होंने

79) बुख़ारी, अल-अदबुल-मुफ़रद, मुसनद अहमद 3/424

إِنَّا لِلّٰه पढ़ी और मग्फ़िरत की दुआ की। फिर उन के मामूं हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब की शहादत की ख़बर दी गई। उन्होंने फिर إِنَّا لِلّٰه पढ़ी और मग्फ़िरत की दुआ की। इस के बाद उन के शौहर हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि० की शहादत की ख़बर दी गई तो तड़प कर चीख़ उठीं और धाड़ें मार कर रोने लगीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "औरत का शौहर उस के यहां एक ख़ास दर्जा रखता है।[80]"

इसी तरह आप का गुज़र बनू दीनार की एक ख़ातून (महिला) के पास से हुआ, जिस के शौहर, भाई और बाप तीनों शहीद हो चुके थे। जब उन्हें इन लोगों की शहादत की ख़बर दी गई तो कहने लगीं, कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या हुआ? लोगों ने कहा, उम्मे फ़्लां! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैरियत से हैं और अल्लाह का शुक्र है जैसा तुम चाहती हो, वैसे ही हैं। महिला ने कहा, तनिक मुझे दिखला दो। मैं भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वजूदे मुबारक देख लूं। लोगों ने उन्हें इशारे से बतलाया। जब उन की नज़र आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ी तो वे बे इख़्तियार पुकार उठीं?

كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ

"आप के बाद हर मुसीबत तुच्छ (हेच) है।"[81]

बीच रास्ते ही में हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० की मां आप के पास दौड़ती हुई आईं। उस वक़्त हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घोड़े की लगाम थामे

---

80) इब्ने हिशाम 2/98

81) इब्ने हिशाम 2/99

हुए थे, कहने लगे, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी मां हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "उन्हें मरहबा हो।" इस के बाद उन के स्वागत के लिए रुक गए। जब वह क़रीब आ गईं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के सुपुत्र अम्र बिन मुआज़ रज़ि० की शहादत पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हें तसल्ली दी और सब्र करने के लिए कहा। कहने लगीं, जब मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलामत देख लिया तो मेरे लिए हर मुसीबत मामूली है। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहद के शहीदों के लिए दुआ फ़रमाई और फ़रमाया, "ऐ उम्मे साद! तुम खुश हो जाओ और शहीदों के घर वालों के लिए खुशख़बरी सुना दो कि उन के शहीद सब के सब एक साथ जन्नत में हैं और अपने घर वालों के बारे में उन सब की शफ़ाअ़त कुबूल कर ली गयी है।"

कहने लगीं, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! इन के पीछे रह जाने वालों के लिए भी दुआ फ़रमा दीजिए।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ भी अल्लाह! इन के दिलों का ग़म दूर कर, इन की मुसीबत का बदल अ़ता फ़रमा और बाक़ी लोगों की बेहतरीन देख भाल फ़रमा।"[82]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में

उसी दिन, सनीचर 07 शव्वाल सन् 03 हि० को शाम (संध्या काल) के समय अल्लाह के रसलू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुंचे। घर पहुंच कर अपनी तलवार हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को दी और फ़रमाया, बेटी! इस का ख़ून धो दो, अल्लाह की क़सम! यह आज मेरे लिए बहुत सहीह साबित हुई। फिर हज़रत अ़ली रज़ि० ने भी तलवार लपकाई और फ़रमाया, इस का भी ख़ून धो दो। अल्लाह की क़सम! आज यह भी बहुत सहीह साबित हुई। इस पर अल्लाह के रसूल

82) अस-सीरतुल-हलबिया 2/47

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अगर तुम ने बे-लाग लड़ाई लड़ी है तो तुम्हारे साथ सहल रज़ि० बिन हुनैफ़ और अबू दुजाना रज़ि० ने भी बे-लाग लड़ाई लड़ी है।[83]"

बहुत सी रिवायतें इस पर सहमत हैं कि मुसलमान शहीदों की तायदाद सत्तर थी, जिन में बहुत ज़्यादा तायदाद अंसार की थी, यानी उन के 65 आदमी शहीद हुए थे, 41 ख़ज़रज़ से और 24 औस से, एक आदमी यहूदियों में से क़त्ल हुआ था और मुहाजिर शहीदों की तायदाद सिर्फ़ चार थी।

बाक़ी रहे क़ुरैश के क़त्ल किए गए लोग तो इब्ने इस्हाक़ के बयान के मुताबिक़ उन की तायदाद 22 थी। लेकिन जंगी विशेषज्ञों और जीवनी लेखकों ने इस लड़ाई का जो विस्तृत वर्णन किया है और जिन में लड़ाई के अलग-अलग मरहलों में क़त्ल होने वाले मुश्रिकों का ज़िक्र भी है उन पर गहरी नज़र रखते हुए बारीकी के साथ हिसाब लगाया जाए, तो यह तायदाद 22 नहीं, बल्कि 37 होती है, अल्लाह बेहतर जाने।[84]

मदीने में हंगामी हालत

मुसलमानों ने उहद की लड़ाई से वापस आकर (8 शव्वाल सन् 03 हिजरी, सनीचर और इतवार के बीच की रात) हंगामी हालत में गुज़ारी। लड़ाई ने उन्हें चूर-चूर कर रखा था। इस के बावजूद वे रात भर मदीना के रास्तों और गुज़रने की जगहों पर पहरा देते रहे और अपने चीफ़ कमांडर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ास हिफ़ाज़त पर तैनात रहे, क्योंकि इन्हें हर ओर से ख़तरे दिखाई दे रहे थे।

---

83) इब्ने हिशाम 2/100

84) देखिए इब्ने हिशाम 2/122-129, फ़तहुल-बारी 7/351 और ग़ज़वा-ए-उहद (मु० अहमद-बाशमील 278-280)

ग़ज़्वा-ए-हमराउल-असद

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूरी रात लड़ाई से पैदा होने वाले हालात पर विचार करते हुए गुज़ारी। आपको डर था कि अगर मुश्रिकों ने सोचा कि लड़ाई के मैदान में अपना पल्ला भारी रहते हुए भी हम ने कोई फ़ायदा नहीं उठाया तो उन्हें यक़ीनी तौर पर शर्मिन्दगी होगी और वे रास्ते से पलट कर मदीना पर दोबारा हमला करेंगे। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ैसला किया कि हर हाल में मक्की सेना का पीछा किया जाना चाहिए।

चुनांचे जीवनी-लेखकों का वर्णन है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहद की लड़ाई के दूसरे दिन यानी रविवार 8 शव्वाल सन् 03 हि० को सुबह सवेरे एलान फ़रमा दिया कि दुश्मन के मुक़ाबले के लिए चलना है और साथ ही यह भी एलान फ़रमाया कि हमारे साथ सिर्फ़ वही आदमी चल सकता है जो उहद की लड़ाई में मौजूद था, फिर भी अब्दुल्लाह बिन उबई ने इजाज़त चाही कि आप के साथ रहे, पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इजाज़त न दी। इधर जितने मुसलमान थे, अगर्चे घावों से बहुत परेशान, ग़म से निढाल और भय और आशंका से दोचार थे, लेकिन सबने बिना झिझक के आज्ञापालन के लिए सर झुका दिया। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने भी इजाज़त चाही जो ग़ज़्वा-ए-उहद की लड़ाई में शरीक न थे। सेवा में आकर कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं चाहता हूं कि आप जिस किसी लड़ाई में तशरीफ़ ले जाएं, मैं भी सेवा में हाज़िर रहूं और चूंकि (इस लड़ाई में) मेरे बाप ने मुझे अपनी बच्चियों की देख-भाल के लिए घर पर रोक दिया था, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे इजाज़त दे दें कि मैं भी आप के साथ चलूं" इस पर आपने उन्हें इजाज़त दे दी।

प्रोग्राम के मुताबिक़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मुसलमानों को साथ लेकर रवाना हुए और मदीना से आठ मील दूर हमराउल-असद पहुंच कर पड़ाव डाला।

ठहरने के समय में माबद बिन अबी माबद खुज़ाई अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर इस्लाम ले आया----और कहा जाता है कि वह अपने शिरक ही पर क़ायम था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हितैषी था----क्योंकि खुज़ाआ और बनू हाशिम के दर्मियान दोस्ती और सहयोग का समझौता था, बहरहाल उस ने कहा, "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप को और आप के साथियों को जो तक्लीफ़ पहुंची है, वह अल्लाह की क़सम हम पर बहुत भारी गुज़री है हमारी आरज़ू थी कि अल्लाह आप को सकुशल रखता"------- इस तरह हमदर्दी ज़ाहिर करने पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान के पास जाए और उसका हौसला तोड़े।

उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो आशंका महसूस की थी कि मुश्रिक मदीना की तरफ़ पलटने की बात सोचेंगे वह बिल्कुल सच थी, चुनांचे मुश्रिकों ने मदीना से 36 मील दूर रौहा नामी जगह पर पहुंच कर जब पड़ाव डाला तो आपस में एक दूसरे को मलामत की, कहने लगे "तुम लोगों ने कुछ नहीं किया, उनकी शौकत व ताक़त तोड़ कर उन्हें यूं ही छोड़ दिया, हालांकि अभी उनके इतने सर बाक़ी हैं कि वे तुम्हारे लिए फिर सरदर्द बन सकते हैं, इसलिए वापस चलो और उन्हें जड़ से साफ़ कर दो।"

लेकिन ऐसा महसूस होता है कि यह सतही (सरसरी) राय थी जो उन लोगों की तरफ़ से पेश की गई थी, जिन्हें दोनों फ़रीक़ों की ताक़त और उनके हौसलों का सही अंदाज़ा न था, इसीलिए एक ज़िम्मेदार अफ़सर सफ़वान बिन उमैया ने इस राय का विरोध किया और कहा, "लोगो! ऐसा न करो। मुझे ख़तरा है कि जो (मुसलमान उहद की लड़ाई

में) नहीं आए थे, वे भी अब तुम्हारे ख़िलाफ़ जमा हो जाएंगे। इसलिए इस हालत में वापस चले-चलो कि जीत तुम्हारी है, वरना मुझे ख़तरा है कि मदीना पर फिर चढ़ाई करोगे तो गर्दिश में पड़ जाओगे" लेकिन भारी तायदाद ने यह राय कुबूल न की और फ़ैसला किया कि मदीना वापस चलेंगे, लेकिन अभी पड़ाव छोड़ कर अबू सुफ़ियान और उसके फ़ौजी हिले भी न थे कि माबद बिन अबी माबद खुज़ाई पहुंच गया। अबू सुफ़ियान को मालूम न था कि यह मुसलमान हो गया है, उसने पूछा, माबद! पीछे की क्या ख़बर है? माबद ने——प्रोपेगन्डे की बात बढ़ाते हुए——कहा, "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथियों को लेकर तुम्हारे पीछे निकल चुके हैं, उनकी तायदाद इतनी भारी है कि मैं ने वैसी टुकड़ी कभी देखी ही नहीं। सारे लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ गुस्से से कबाब हुए जा रहे हैं। उहद में पीछे रह जाने वाले भी आ गये हैं, वे जो कुछ बर्बाद कर चुके, उस पर बड़े शर्मिन्दा हैं और तुम्हारे ख़िलाफ़ इस क़दर भड़के हुए हैं कि मैंने उसकी मिसाल देखी ही नहीं।"

अबू सुफ़ियान ने कहा, "अरे भाई! यह क्या कह रहे हो?"

माबद ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मेरा विचार है कि तुम कूच करने से पहले-पहले घोड़ों की पेशानियां देख लोगे या फ़ौज की अगली टुकड़ी इस टीले के पीछे ज़ाहिर हो जाएगी?"

अबू सुफ़ियान ने कहा, "अल्लाह की क़सम! हम ने फ़ैसला किया है कि उन पर पलट कर फिर हमला करें और उनकी जड़ काटकर रख दें।"

माबद ने कहा, "ऐसा न करना, मैं तुम्हारी भलाई की बात कर रहा हूं।"

ये बातें सुन कर मक्की फ़ौज के हौसले टूट गए। उनपर घबराहट और रौब छा गया और उन्हें इसी में भलाई नज़र आई कि मक्का की

और अपनी वापसी जारी रखें। अलबत्ता अबू सुफ़ियान ने इस्लामी फ़ौज का पीछा करने से बाज़ रखने और इस तरह दोबारा टकराव से बचने के लिए प्रोपेगन्डे का एक जवाबी हमला किया जिस की शक्ल यह हुई कि अबू सुफ़ियान के पास से क़बीला अब्दुल क़ैस का एक क़ाफ़िला गुज़रा। अबू सुफ़ियान ने कहा, "क्या आप लोग मेरा एक संदेश मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहुंचा देंगे? मेरा वायदा है कि उसके बदले जब आप लोग मक्का आएंगे तो उकाज़ के बाज़ार में आप लोगों को इतनी किशमिश दूंगा जितनी यह आपकी ऊंटनी उठा सकेगी।"

उन लोगों ने कहा, "जी हां।"

अबू सुफ़ियान ने कहा, "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंचा दें कि हमने उन की और उनके साथियों की जड़ काट देने के लिए दोबारा पलट कर हमला करने का फ़ैसला किया है।"

इसके बाद जब यह क़ाफ़िला हमराउल-असद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० के पास से गुज़रा तो उनसे अबू सुफ़ियान का संदेश कह सुनाया और कहा कि लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ जमा हैं, उन से डरो, मगर उनकी बातें सुनकर मुसलमानों के ईमान में और बढ़ोतरी हो गई और उन्होंने कहा;

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ

"अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कार साज़ (कर्ता-धर्ता) है" (इस ईमानी ताक़त की बदौलत) वे लोग अल्लाह की नेमत और मेहरबानी के साथ पलटे। उन्हें किसी बुराई ने न छुआ और उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी की पैरवी की और अल्लाह बड़ी मेहरबानी वाला है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रविवार को हमराउल-असद तश्रीफ़ ले गए थे। सोमवार, मंगलवार और बुधवार

यानी 9, 10 और 11 शव्वाल सन् 03 हि० तक वहीं ठहरे रहे। इस के बाद मदीना वापस आए। मदीना वापसी से पहले अबू अज़्ज़ा जुमही आप की पकड़ में आ गया। यह वही आदमी है जिसे बद्र में गिरफ़्तार किए जाने के बाद उसकी गरीबी और लड़कियों ज़्यादा होने की वजह से इस शर्त पर बिना किसी बदले के छोड़ दिया गया था कि वह अल्लाह के रसूल के ख़िलाफ़ किसी से सहयोग नहीं करेगा, लेकिन इस आदमी ने वायदा के ख़िलाफ़ लोगों की भावनाओं को अपने पद्यों द्वारा भड़काया——जिसका उल्लेख पिछले पन्नों में हो चुका है-----फिर मुसलमानों से लड़ने के लिए खुद भी उहद की लड़ाई में आया। जब यह गिरफ़्तार कर के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो कहने लगा, "मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरी ग़लती माफ़ कर दो, मुझ पर एहसान कर दो और मेरी बच्चियों की ख़ातिर मुझे छोड़ दो। मैं वचन देता हूं कि अब दोबारा ऐसी हरकत नहीं करूंगा।" नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अब यह नहीं हो सकता कि तुम मक्का जाकर अपने गाल पर हाथ फेरो और कहो मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दो बार धोखा दिया। मोमिन एक सूराख़ से दो बार नहीं डसा जा सकता। इस के बाद हज़रत जुबैर रज़ि० या हज़रत आसिम रज़ि० बिन साबित को हुक्म दिया और उन्होंने उस की गरदन मार दी।

इसी तरह मक्का का एक जासूस भी मारा गया। उस का नाम मुआविया बिन मुग़ीरह बिन अबिल आस था और यह अब्दुल मलिक बिन मरवान का नाना था। यह आदमी इस तरह निशाने पर आया कि जब उहद के दिन मुश्रिक वापस चले गए तो अपने चचेरे भाई हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से मिलने आया। हज़रत उस्मान रज़ि० ने उस के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अमान तलब की। आप ने इस शर्त पर अमान दे दी कि अगर वह तीन दिन के बाद पाया गया तो क़त्ल कर दिया जाएगा, लेकिन जब मदीना

इस्लामी सेना से ख़ाली हो गया तो यह आदमी क़ुरैश की जासूसी के लिए तीन दिन से ज़्यादा ठहर गया और जब फ़ौज वापस आयी तो भागने की कोशिश की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को हुक्म दिया और उन्होंने उस आदमी का पीछा कर के उसे मार डाला।[85]

ग़ज़वा-ए-हमराउल-असद का उल्लेख अगर्चे अलग से किया जाता है, मगर यह हक़ीक़त में कोई ग़ज़वा न था बल्कि उहद लड़ाई ही का हिस्सा और उसी के भागों में से एक भाग था।

ग़ज़वा-ए-उहद में जीत और हार का विश्लेषण

यह है ग़ज़वा-ए-उहद अपने तमाम मराहिल और पूरे ब्योरे के साथ। इस लड़ाई के अंजाम के बारे में बड़ी लम्बी-लम्बी वार्ताएं की गयी हैं कि क्या इसे मुसलमानों की हार समझी जाए या नहीं? जहां तक हक़ीक़तों का ताल्लुक़ है तो इस में संदेह नहीं कि लड़ाई के दूसरे राउंड में मुश्रिकों की स्थिति मज़बूत थी और लड़ाई का मैदान उन्हीं के हाथ में था। जानी नुक़सान भी मुसलमानों ही का ज़्यादा हुआ और अधिक भयानक रूप में हुआ। मुसलमानों का कम से कम एक गिरोह यक़ीनी तौर पर हार खा कर भागा और लड़ाई की रफ़्तार मक्की फ़ौज के हक़ में रही, लेकिन इन सब के बावजूद कुछ मामले ऐसे हैं जिनकी बुनियाद पर हम उसे मुश्रिकों की जीत नहीं कह सकते।

एक तो यह बात क़तई तौर पर मालूम है कि मक्की फ़ौज मुसलमानों के कैम्प पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकी थी और मदनी फ़ौज के बड़े हिस्से में सख़्त उथल-पुथल और अव्यवस्था के बावजूद वह भागी

85) ग़ज़वा-ए-उहद और ग़ज़वा-ए-हमराउल-असद का विवरण (तफ़सील) इब्ने हिशाम 2/60-129, ज़ादुल-मआद 2/91-108 फ़तहुल-बारी सही बुख़ारी के साथ 7/345-377, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 242-257 से लिया गया है और दूसरी किताबों के हवाले उन्हीं जगहों पर दिए गए हैं।

नहीं थी, बल्कि बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए अपने सेनापति के पास जमा हो गयी थी, साथ ही मुसलमानों का पल्ला इस हद तक हल्का नहीं हुआ था कि मक्की फ़ौज उन का पीछा करती। इस के अलावा एक भी मुसलमान काफ़िरों की क़ैद में नहीं गया, न कुफ़्फ़ार ने कोई ग़नीमत का माल हासिल किया। फिर कुफ़्फ़ार लड़ाई के तीसरे राउंड के लिए तैयार नहीं हुए, हालांकि इस्लामी फ़ौज अभी अपने कैम्प ही में थी इस के अलावा कुफ़्फ़ार ने लड़ाई के मैदान में एक या दो दिन या तीन दिन क़ियाम नहीं किया, हालांकि उस ज़माने के विजेताओं का यही तरीक़ा था और जीत की यह एक बड़ी ज़रुरी निशानी थी, मगर कुफ़्फ़ार ने तुरन्त वापसी का रास्ता इख़्तियार किया और मुसलमानों से पहले ही लड़ाई का मैदान ख़ाली कर दिया, साथ ही उन्हें बच्चे क़ैद करने और माल लूटने के लिए मदीना में दाख़िल होने की हिम्मत न हुई, हालांकि यह शहर कुछ ही क़दम की दूरी पर था और फ़ौज से पूरी तरह ख़ाली और एक दम खुला पड़ा था और रास्ते में कोई रुकावट भी न थी।

इन सारी बातों का खुलासा यह है कि कुरैश को ज़्यादा से ज़्यादा सिर्फ़ यह हासिल हुआ कि उन्होंने एक वक़्ती मौक़े से फ़ायदा उठा कर मुसलमानों को तनिक तेज़ क़िस्म की चोट पहुंचाई, वरना इस्लामी फ़ौज को घेरे में लेने के बाद उसे पूरी तरह क़त्ल या क़ैद कर लेने का जो फ़ायदा उन्हें लड़ाई की दृष्टि से ज़रूर ही हासिल होना चाहिए था, उस में वे विफल रहे और इस्लामी सेना कुछ बड़े घाटे के बावजूद घेरा तोड़ कर निकल गई और इस तरह का घाटा तो बहुत बार खुद विजेताओं को सहन करना पड़ता है, इसलिए इस मामले को मुश्रिकों की विजय का नाम नहीं दिया जा सकता।

बल्कि वापसी के लिए अबू सुफ़ियान की जल्दी इस बात का पता देती है कि उसे ख़तरा था कि अगर लड़ाई का तीसरा दौर शुरू हो गया तो उस की फ़ौज बड़ी तबाही और हार से दो-चार हो जाएगी। इस बात

की और ज़्यादा ताईद अबू सुफ़ियान की उस पालिसी से होती है जो उस ने हमराउल-असद की लड़ाई के लिए अपनाया था।

ऐसी स्थिति में हम इस लड़ाई को किसी एक फ़रीक़ की जीत और दूसरे की हार कहने के बजाए अनिर्णायक लड़ाई कह सकते हैं, जिस में हर फ़रीक़ ने सफलता या घाटे से अपना-अपना हिस्सा हासिल किया, फिर लड़ाई के मैदान से भागे बिना और अपने कैम्प को दुश्मन के क़ब्ज़े के लिए छोड़े बिना लड़ाई से दामन बचा लिया और अनिर्णायक लड़ाई कहते ही इसी को हैं। इसी ओर अल्लाह के इस इर्शाद से भी इशारा निकलता है।

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ

"क़ौम (मुश्रिकों) का पीछा करने में ढीले न पड़ो। अगर तुम दुख महसूस कर रहे हो, तो तुम्हारी ही तरह वे भी दुख महसूस कर रहे हैं और तुम लोग अल्लाह से उस चीज़ की उम्मीद रखते हो जिस की वे उम्मीद नहीं रखते।" (4:104)

इस आयत में अल्लाह ने नुक़सान पहुंचाने और नुक़सान महसूस करने में एक सेना को दूसरी सेना जैसा बताया है, जिस का लाभ यह है कि दोनों फ़रीक़ की पालिसी एक जैसी थी और दोनों फ़रीक़ इस हालत में वापस हुए थे कि कोई भी ग़ालिब न था।

इस लड़ाई पर क़ुरआन की समीक्षा

बाद में क़ुरआन मजीद उतरा तो उस में लड़ाई के एक-एक मरहले पर रोशनी डाली गई और समीक्षा करते हुए उन वजहों की निशान देही की गई जिस के नतीजे में मुसलमानों को इस भारी घाटे का सामना करना पड़ा था और बताया गया कि इस तरह के निर्णायक मरहलों पर

ईमान वाले और यह उम्मत, (जिसे दूसरे के मुकाबले में भली उम्मत होने का गौरव प्राप्त है) जिन ऊंचे और अहम मक़सदों को पाने के लिए (यह उम्मत) वजूद में लाई गई है, उन की दृष्टि से अभी ईमान वालों के अलग-अलग गिरोहों में क्या-क्या कमज़ोरियां रह गई हैं।

इसी तरह कुरआन मजीद ने मुनाफ़िक़ों के दृष्टि-कोण का उल्लेख करते हुए उन की हक़ीक़त बे-परदा की है। उन के सीनों में अल्लाह और रसूल के ख़िलाफ़ छिपी हुई दुश्मनी पर से परदा उठा दिया और भोले-भाले मुसलमानों में उन मुनाफ़िक़ों और उनके भाई यहूदियों ने जो भ्रम फैला रखे थे, उन्हें दूर किया और उन तारीफ़ के लाइक़ हिक्मतों और मक़सदों की ओर इशारा फ़रमाया जो इस लड़ाई का नतीजा थीं।

इस लड़ाई के बारे में सूरः आले इमरान की साठ आयतें उतरीं। सब से पहले लड़ाई के शुरूआती मरहले का ज़िक्र किया गया, इर्शाद हुआ--

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ

"याद करो जब तुम अपने घर से निकल कर (उहद के मैदान में गए और वहां) ईमान वालों को लड़ाई के लिए जगह-जगह नियुक्त कर रहे थे।"

(3:121)

फिर आख़िर में इस लड़ाई के नतीजों और हिक्मतों पर भरपूर रौशनी डाली गयी, कहा गया-----

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ فَآمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَإِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيْمٌ

"ऐसा नहीं हो सकता कि अल्लाह मोमिनों को उसी हालत पर छोड़ दे जिस पर तुम लोग हो, यहां तक कि नापाक को पाक से अलग

कर दे, और ऐसा नहीं हो सकता कि अल्लाह तुम्हें ग़ैब की ख़बरें दे, लेकिन वह अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है। पस अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाए और तक़्वा इख़्तियार किया तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है।" (3:179)

लड़ाई में काम कर रहे अल्लाह के मक़सद और हिक्मतें

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने इस शीर्षक (उनवान) पर बड़े विस्तार में लिखा है।[86] हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं, उलमा ने कहा है कि उहुद की लड़ाई और उस के अंदर पेश आने वाली परेशानी में रब की बड़ी अज़ीम हिक्मतें और फ़ायदे थे, जैसे मुसलमानों को ना फ़रमानी के बुरे अंजाम और उस के करने की नहूसत से सूचित करना, क्योंकि तीरअंदाज़ों को अपने केन्द्र पर डटे रहने का जो हुक्म अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया था, उन्होंने उस के ख़िलाफ़ करते हुए केन्द्र छोड़ दिया था (और इसी वजह से नुक़्सान उठाना पड़ा था) एक हिक्मत पैग़म्बरों की उस सुन्नत को ज़ाहिर कर रहा था कि पहले ये आज़माइश में डाले जाते हैं और आख़िर में उन्हीं को सफलता मिलती है और इस में यह हिक्मत छिपी हुई है कि अगर उन्हें हमेशा सफलता ही सफलता हासिल हो तो ईमान वालों की सफ़ों में वे लोग भी घुस आएंगे जो ईमान वाले नहीं हैं, फिर सच्चे और झूठे का अंतर न किया जा सकेगा। और अगर हमेशा हार ही हार मिले तो उन के भेजे जाने का मक़सद ही पूरा न हो सकेगा। इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यही है कि दोनों शक्लें पेश आएं, ताकि सच्चे और झूठे में अतंर हो जाए, क्योंकि मुनाफ़िक़ों का निफ़ाक़ मुसलमानों से छिपा हुआ था। जब यह घटना घटी और निफ़ाक़ वालों ने अपनी कथनी-करनी ज़ाहिर की तो इशारा स्पष्ट हो गया और मुसलमानों को मालूम हो गया कि ख़ुद उन के अपने घरों के भीतर भी उन के दुश्मन मौजूद हैं, इसलिए मुसलमान

86) ज़ादुल-मआद 2/99-108

उनसे निपटने के लिए भी तैयार और उन की ओर से सावधान हो गए।

एक हिक्मत यह भी थी कि कुछ जगहों पर मदद के आने में देर होने से विनम्रता आती है और मन का गर्व टूटता है चुनांचे जब ईमान वाले आज़माइश से दो चार हुए तो उन्होंने सब्र से काम लिया, अलबत्ता मुनाफ़िक़ों में रोना-पीटना मच गया।

एक हिक्मत यह भी थी कि अल्लाह ने ईमान वालों के लिए अपने प्रतिष्ठा (एज़ाज़) के घर (यानी जन्नत) में कुछ ऐसे दर्जे तैयार कर रखे हैं जहां तक उन के कर्मों की पहुंच नहीं होती। इसलिए आज़माइश और दुख के भी कुछ कारण तैयार कर रखे हैं ताकि उन की वजह से उन दर्जों तक ईमान वालों की पहुंच हो सके।

और एक हिक्मत यह भी थी कि शहादत (शहीद होना) औलिया-ए-किराम का सब से ऊंचा दर्जा है इसलिए यह दर्जा उन को जुटा दिया गया।

और एक हिक्मत यह भी थी कि अल्लाह अपने दुश्मनों को हलाक करना चाहता था, इसलिए उन के लिए उसकी वज्हें भी जुटा दीं, यानी कुफ़्र व ज़ुल्म और अल्लाह वालों को कष्ट पहुंचाने में हद से बढ़ी हुई उद्दंडता (फिर उन के इसी अ़मल के नतीजे में) ईमान वालों को गुनाहों से पाक व साफ़ कर दिया और काफ़िरों को हलाक व बर्बाद।[87]

87) फ़तहुल-बारी 7/340

उहद के बाद की फ़ौजी मुहिमें

मुसलमानों की प्रसिद्धि और साख पर उहद की विफलता का बहुत बुरा असर पड़ा। उन की हवा उखड़ गयी और विरोधियों के दिलों से उन का दबदबा जाता रहा। इस के नतीजे में ईमान वालों की दाख़िली और बाहरी मुश्किलों में बढ़ौतरी हो गयी। मदीना पर हर ओर से ख़तरे मंडलाने लगे। यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और बद्दुओं ने खुल कर दुश्मनी ज़ाहिर की और हर गिरोह ने मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की, बल्कि यह उम्मीद बांध ली कि वह मुसलमानों का काम तमाम कर सकता है और उन्हें जड़ व बुनियाद से उखाड़ सकता है। चुनांचे अभी इस लड़ाई को दो महीने भी नहीं गुज़रे थे कि बनू असद ने मदीना पर छापा मारने की तैयारी की, फिर सफ़र सन् 04 हि० में अ़ज़्ल और क़ारा के क़बीलों ने एक ऐसी मक्कारी भरी चाल चली कि दस सहाबा किराम को शहीद होना पड़ा और ठीक उसी महीने में रईस बनू आ़मिर ने इसी तरह की एक दग़ाबाज़ी के ज़रिए सत्तर सहाबा किराम को शहीद कर दिया। यह घटना बीरे मऊना के नाम से मशहूर है। इस बीच बनू नज़ीर भी खुली दुश्मनी दिखाना शुरू कर चुके थे, यहां तक कि उन्होंने रबीउल अव्वल सन् 04 हि० में ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शहीद करने की कोशिश की। इधर बनू ग़तफ़ान की जुर्रत इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने जमादिल ऊला सन् 04 हि० में मदीना पर हमले का प्रोग्राम बनाया।

ग़रज़ मुसलमानों की जो साख उहद की लड़ाई में उखड़ गई थी उस के नतीजे में मुसलमान एक मुद्दत तक बराबर ख़तरों से दो-चार रहे लेकिन वह तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ोरदार हिक्मत थी जिस ने सारे ख़तरों का रुख़ फेर कर मुसलमानों का रोब व दबदबा वापस दिला दिया और उन्हें दोबारा इज़्ज़त व एहतिराम के ऊंचे मक़ाम तक पहुंचा दिया। आपका सब से पहला क़दम हमराउल-असद तक मुश्रिकों का पीछा करने का था। इस कार्यवाही से आपकी फ़ौज की आबरू बड़ी हद तक बरक़रार रह गयी, क्योंकि यह ऐसा आदरपूर्ण और वीरतापूंर्ण जंगी क़दम था कि विरोधी, ख़ास तौर से मुनाफ़िक़ और यहूद का मुंह हैरत से खुले का खुला रह गया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लगातार ऐसी जंगी कार्यवाहियां कीं कि उनसे सिर्फ़ मुसलमानों की पुरानी हैबत (दबदबा) ही बहाल नहीं हुई, बल्कि इसमें और बढ़ौतरी भी हो गयी। अगले पृष्ठों में इन्हीं का कुछ उल्लेख किया जा रहा है-----

1. सरिय्या अबू सलमा रज़ि

उहद की लड़ाई के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ सब से पहले बनू असद बिन खुज़ैमा का क़बीला उठा। उस के बारे में मदीना में यह ख़बर पहुंची कि खुवैलिद के दो बेटे तलहा और सलमा अपनी क़ौम और अपनी बात मानने वालों को लेकर बनू असद को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमले की दावत देते फिर रहे हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झट डेढ़ सौ अंसार और मुहाजिरों का एक दस्ता तैयार फ़रमाया और हज़रत अबू सलमा को उस का झंडा देकर सेनापति बना कर भेज दिया। हज़रत अबू सलमा रज़ि० ने बनू असद के हरकत में आने से पहले ही उनपर इस क़दर अचानक हमला किया कि वे भाग कर इधर-उधर बिखर गए। मुसलमानों ने उनके ऊंट और बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ैरियत के साथ मदीना वापस आ गए। उन्हें आमने-सामने की लड़ाई भी नहीं लड़नी पड़ी।

यह सरिय्या मुहर्रम सन् 04 हि० का चांद निकलने पर रवाना किया गया था। वापसी के बाद हज़रत अबू सलमा रज़ि० का एक घाव——जो उन्हें उहुद में लगा था——फूट पड़ा और उस की वजह से वह जल्द ही वफ़ात पा गए।[1]

2. अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० की मुहिम

इसी माह मुहर्रम 04 हि० की पांच तारीख़ को यह ख़बर मिली कि ख़ालिद बिन सुफ़ियान हुज़ली मुसलमानों पर हमला करने के लिए फ़ौज जमा कर रहा है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके ख़िलाफ़ कार्यवाही के लिए अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० को रवाना फ़रमाया।

अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० मदीना से 18 दिन बाहर रहकर 23 मुहर्रम को वापस तशरीफ़ लाए। वह ख़ालिद को क़त्ल करके उस का सर भी साथ लाए थे। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर उन्होंने यह सर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने पेश किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें एक डंडा दिया और फ़रमाया कि यह मेरे और तेरे दर्मियान क़ियामत के दिन निशानी रहेगा। चुनांचे जब उनकी वफ़ात का वक़्त आया तो उन्होंने वसीयत की कि यह डंडा भी उनके साथ उनके कफ़न में लपेट दिया जाए।[2]

3. रजीअ़ की घटना

इसी साल 04 हि० के सफ़र के महीने में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अ़ज़्ल और क़ारा के कुछ लोग हाज़िर हुए और ज़िक्र किया कि उन के अंदर इस्लाम का कुछ चर्चा है, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन के साथ कुछ लोगों को

1) ज़ादुल-मआद 2/108
2) ज़ादुल-मआद 2/109, इब्ने हिशाम 2/619-620

दीन सिखाने और कुरआन पढ़ाने के लिए रवाना फ़रमा दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने इस्हाक़ के कहने के मुताबिक़ छः लोगों को और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ दस आदमियों को रवाना फ़रमाया और इब्ने इस्हाक़ के कहने के मुताबिक़ मरसद बिन अबी मरसद ग़नवी को और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ आसिम रज़ि० बिन उमर बिन ख़त्ताब के नाना हज़रत आसिम रज़ि० बिन साबित को उनका अमीर मुक़र्रर फ़रमाया। जब ये लोग राबिग़ और जद्दा के बीच क़बीला हुज़ैल के रजीअ नामी एक चश्मे पर पहुंचे तो उन पर अ़ज़्ल और क़ारा के ज़िक्र किए गए लोगों ने हुज़ैल क़बीला की एक शाखा बनू लहयान को चढ़ा दिया और बनू लहयान के कोई एक सौ तीरअंदाज़ उन के पीछे लग गए और क़दम के निशानों को देख-देख कर उन्हें जा लिया। इन सबाहा किराम रज़ि० ने एक टीले पर पनाह ली। बनू लहयान ने उन्हें घेर लिया और कहा, "तुम्हारे लिए वचन है कि अगर हमारे पास उतर आओ तो हम तुम्हारे किसी आदमी को क़त्ल नहीं करेंगे।" हज़रत आसिम रज़ि० ने उतरने से इंकार कर दिया और अपने साथियों सहित उन से लड़ाई शुरू कर दी। आख़िरकार तीरों की बौछार से सात आदमी शहीद हो गए और सिर्फ़ तीन आदमी हज़रत ख़ुबैब रज़ि० ज़ैद बिन दसना और एक और सहाबी बाक़ी बचे। अब फिर बनू लहयान ने अपना वायदा दोहराया और इस पर तीनों सहाबी इनके पास उतर आए, लेकिन उन्होंने क़ाबू पाते ही बद-अ़हदी की और उन्हें अपनी कमानों की तांत से बांध लिया। इस पर तीसरे सहाबी ने यह कहते हुए कि यह पहली बद-अहदी है, उनके साथ जाने से इंकार कर दिया। उन्होंने खींच घसीट कर साथ ले जाने की कोशिश की, लेकिन सफल न हुए तो उन्हें क़त्ल कर दिया और हज़रत ख़ुबैब और ज़ैद रज़ि० को मक्का ले जाकर बेच दिया। इन दोनों सहाबा रज़ि० ने बद्र के दिन मक्का के सरदारों को क़त्ल किया था।

हज़रत ख़ुबैब रज़ि० कुछ दिनों मक्का वालों की क़ैद में रहे, फिर मक्का वालों ने उनके क़त्ल का इरादा किया और उन्हें हरम से बाहर तनईम ले गए। जब सूली पर चढ़ाना चाहा तो उन्होंने फ़रमाया, "मुझे छोड़ दो, मैं तनिक दो रक्अत नमाज़ पढ़ लूं। मुश्रिकों ने छोड़ दिया और आपने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेर चुके तो फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! अगर तुम लोग यह न कहते कि मैं जो कुछ कर रहा हूं घबराहट की वजह से कर रहा हूं तो मैं कुछ और लम्बा करता। इस के बाद फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इन्हें एक-एक कर के गिन ले, फिर उन्हें बिखेर कर मारना और इनमें से किसी एक को बाक़ी मत छोड़ना।" फिर ये पद्य पढ़े।

لقد اجمع الا حزاب حولی والبوا — قبائلهم واستجمعوا كل مجمع

وقد قربوا ابناء هم و نساء هم — وقربت من جزع طويل ممنع

الی الله اشكو غربتی بعد كربتی — وماجمع الاحزاب لی عند مضجعی

فذا العرش صبرنی علی ما يراد بی — فقد بضعوا لحمی وقد يوس مطعمی

وقد خيرونی الكفر والموت دونه — فقد ذرفت عيناى من غير مدمع

ولست ابالی حين اقتل مسلما — علی ای شق كان لله مضجعی

وذلک فی ذات الاله وإن يشاء — يبارک علی اوصال شلو ممزع

"लोग मेरे चारों ओर झुंड के झुंड जमा हो गए हैं, अपने क़बीलों को चढ़ा लाए हैं और सारा मज्मा जमा कर लिया है, अपने बेटों और औरतों को भी क़रीब लाए हैं और मुझे एक लम्बे मज़बूत तने के क़रीब कर दिया गया है। मैं अपनी बेवतनी और बेबसी का शिक्वा और अपनी क़त्ल गाह के पास गिरोहों की जमा की हुई आफ़तों की फ़रियाद अल्लाह ही से कर रहा हूं। ऐ अर्श वाले! मेरे ख़िलाफ़ दुश्मनों के जो इरादे हैं, उस पर मुझे सब्र दे। उन्होंने मुझे बोटी-बोटी कर दिया है और

मेरी ख़ुराक बुरी हो गई है। इन्होंने मुझे कुफ़्र का इख़्तियार दिया है, हालांकि मौत उससे कमतर और आसान है। मेरी आंखें आंसू के बग़ैर उमड़ आयीं। मैं मुसलमान मारा जाऊं तो मुझे परवाह नहीं कि अल्लाह की राह में किस पहलू पर क़त्ल हूंगा। यह तो अल्लाह की ज़ात के लिए है और वह चाहे तो बोटी-बोटी किए हुए अंगों के जोड़-जोड़ में बरकत दे।"

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने हज़रत ख़ुबैब रज़ि० से कहा क्या तुम्हें यह बात पसंद आएगी कि (तुम्हारे बदले) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास होते, हम उनकी गरदन मारते और तुम अपने बाल-बच्चों में रहते? उन्होंने कहा, "नहीं, अल्लाह की क़सम! मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि अपने बाल-बच्चों में रहूं और (उस के बदले) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जहां आप हैं, वहीं रहते हुए, कांटा चुभ जाए और वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तक्लीफ़ दे।"

इसके बाद मुश्रिकों ने उन्हें सूली पर लटका दिया और उनकी लाश की निगरानी के लिए आदमी मुक़र्रर कर दिए, लेकिन हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० तश्रीफ़ लाए और रात में झांसा देकर लाश उठा ले गए और उसे दफ़न कर दिया। हज़रत ख़ुबैब रज़ि० का क़ातिल उक़्बा बिन हारिस था। हज़रत ख़ुबैब ने उसके बाप हारिस को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था।

सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत ख़ुबैब रज़ि० पहले बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने क़त्ल के मौक़े पर दो रक्अत नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा निकाला। उन्हें क़ैद में देखा गया कि वे अंगूर के गुच्छे खा रहे थे, हालांकि उन दिनों मक्का में ख़जूर भी नहीं मिलती थी।

दूसरे सहाबी जो इस घटना में गिरफ़्तार हुए थे, यानी हज़रत ज़ैद बिन दसना, उन्हें सफ़वान बिन उमैया ने ख़रीद कर अपने बाप के बदले क़त्ल कर दिया।

कुरैश ने सइ मक़सद के लिए भी आदमी भेजे कि हज़रत आसिम रज़ि० के जिस्म का कोई टुकड़ा लाएं, जिसेसे उन्हें पहचाना जा सके, क्योंकि उन्होंने बद्र की लड़ाई में कुरैश के किसी बड़े आदमी को क़त्ल कर दिया था, लेकिन अल्लाह ने उन पर भिड़ों का झुंड भेज दिया, जिसने कुरैश के आदमियों से उनकी लाश की हिफ़ाज़त की और ये लोग उनका कोई हिस्सा हासिल करने पर ताक़त न पा सके। हक़ीक़त में हज़रत आसिम रज़ि० ने अल्लाह से यह वायदा कर रखा था कि न उन्हें कोई मुश्रिक छुएगा न वे किसी मुश्रिक को छूएंगे। बाद में जब हज़रत उमर रज़ि० को इस घटना की ख़बर हुई तो फ़रमाया करते थे कि अल्लाह ईमान वाले बंदे की हिफ़ाज़त उसकी वफ़ात के बाद भी करता है जैसे उसकी ज़िंदगी में करता है।[3]

4. बीरे मऊना की दुर्घटना

जिस महीने रजीअ़ की घटना घटी, ठीक उसी महीने बीरे मऊना की दुर्घटना भी घटी जो रजीअ़ की घटना से कहीं ज़्यादा संगीन थी।

इस घटना का सार यह है कि अबू बरा आमिर बिन मालिक, जो "मलाअ़िबुल-असिन्ना" (नेज़ों से खेलने वाला) की उपाधि से प्रसिद्ध था, मदीना में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे इस्लाम की दावत दी। उस ने इस्लाम तो कुबूल नही किया, लेकिन दूरी भी इख़्तियार नहीं की। उस ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर आप अपने साथियों को दीन की दावत देने के लिए नज्द वालों के पास भेजें तो मुझे उम्मीद है कि वे लोग आप की दावत कुबूल कर लेंगे।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मुझे अपने सहाबा के बारे में नज्द वालों से ख़तरा है।" अबू बरा ने कहा, "वे मेरी पनाह में होंगे।" इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने इस्हाक़ के

3) इब्ने हिशाम 2/169-179, ज़ादुल-मआद 2/109,बुख़ारी 2/568,569,585

कहने के मुताबिक़ चालीस और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ सत्तर आदमियों को उस के साथ भेज दिया। सत्तर ही की रिवायत सहीह है और मुंज़िर बिन अम्र को जो बनू साइदा से ताल्लुक़ रखते थे और "मोतक़ु लिल-मौत" (मौत के लिए आज़ाद किए हुए) की उपाधि से मशहूर थे, उन का अमीर बना दिया । ये लोग फ़ुज़ला (दीन के बड़े ज्ञानी) ,क़ुर्रा (कुरआन पढ़ने वाले), सादात (सब में बड़े) और अख़यार (चुने हुए) सहाबा थे। दिन में लकड़ियां काट कर उस के बदले अहले सुफ़्फ़ा (चबूतरे वाले ग़रीब लोगों) के लिए अनाज ख़रीदते और कुरआन पढ़ते-पढ़ाते थे और रात में अल्लाह के हुज़ूर मुनाजात और नमाज़ के लिए खड़े हो जाते थे। इस तरह चलते-चलाते मऊना के कुएं पर जा पहुंचे। यह कुआं बनू आमिर और हर्रा बिन सुलैम के बीच में एक भू-भाग पर स्थित है। वहां पड़ाव डालने के बाद इन सहाबा किराम रज़ि० ने उम्मे सुलैम रज़ि० के भाई हिराम बिन मिलहान रज़ि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त देकर अल्लाह के दुश्मन आमिर बिन तुफ़ैल के पास रवाना किया, लेकिन उस ने ख़त को देखा तक नहीं और एक आदमी को इशारा कर दिया जिस ने हज़रत हिराम रज़ि० को पीछे से इस ज़ोर का नेज़ा मारा कि वह नेज़ा आर पार हो गया। ख़ून देख कर हज़रत हिराम रज़ि० ने फ़रमाया, "अल्लाहु अकबर! रब्बे काबा की क़सम! मैं कामियाब हो गया।"

इस के बाद तुरन्त ही उस अल्लाह के दुश्मन आमिर ने बाक़ी सहाबा पर हमला करने के लिए अपने क़बीले बनी आमिर को आवाज़ दी, मगर उन्होंने अबू बरा के पनाह देने की वजह से उस की आवाज़ पर कान न धरे। इधर से निराश होकर उस आदमी ने अबू सुलैम को आवाज़ दी। बनू सुलैम के तीन क़बीलों उसैया, राल और ज़कवान ने इस पुकार का जवाब दिया और झट आकर इन सहाबा किराम रज़ि० को घेर लिया। जवाब में सहाबा किराम ने भी लड़ाई की, मगर सब के

सब शहीद हो गए, सिर्फ़ हज़रत काब बिन ज़ैद बिन नज्जार रज़ि० ज़िंदा बचे। उन्हें शहीदों के दर्मियान से घायल हालत में उठा लाया गया और वह ख़ंदक़ (खाई) की लड़ाई तक ज़िंदा रहे। इन के अलावा दो और सहाबा हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी और हज़रत मुंज़िर बिन उक़बा बिन आमिर रज़ि० ऊंट चरा रहे थे। उन्होंने घटना स्थल पर चिड़ियों को मंडलाते देखा तो सीधे घटना स्थली पर पहुंचे। फिर हज़रत मुंज़िर तो अपने साथियों के साथ मिल कर मुश्रिकों से लड़ते हुए शहीद हो गए और हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मुरी को क़ैद कर लिया गया, लेकिन जब बताया गया कि उन का ताल्लुक़ क़बीला मुज़र से है तो आमिर ने उन के माथे के बाल कटवा कर अपनी मां की ओर से ----जिस पर एक गरदन आज़ाद करने की मन्नत थी-----आज़ाद कर दिया।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० इस दर्दनाक दुर्घटना की ख़बर लेकर मदीना पहुंचे इन सत्तर अफ़ाज़िल (बड़े-बड़े) मुसलमानों की शहादत की दुखद घटना ने उहद की लड़ाई का घाव ताज़ा कर दिया। और यह इस दृष्टि से अधिक दुखद था कि उहद के शहीद तो एक खुली हुई और आमने-सामने की लड़ाई में मारे गए थे, मगर ये बेचारे एक शर्मनाक ग़द्दारी की भेंट चढ़ गए।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० वापसी में क़नात घाटी के सिरे पर स्थित स्थान क़रक़रा पहुंचे तो एक पेड़ की छाया में उतर पड़े, वहीं बनू किलाब के दो आदमी भी उतरे। जब वे दोनों बेख़बर सो गये तो हज़रत अम्र बिन उमैया ने उन दोनों का सफ़ाया कर दिया। उन का विचार था कि अपने साथियों का बदला ले रहे हैं, हालांकि उन दोनों के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से अह्द (वायदा, वचन) था, मगर हज़रत अम्र जानते न थे, चुनांचे जब मदीना आकर उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी

इस कार्यवाही की ख़बर दी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम ने ऐसे दो आदमियों को क़त्ल किया है, जिन की दियत (बदले का जुर्माना) मुझे ज़रूर ही अदा करनी है। इस के बाद आप मुसलमान और उन के मित्र यहूद से दियत जमा करने में लग गए[4] और यही घटना बनू नज़ीर की लड़ाई की वजह बनी, जैसा कि आगे आ रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मऊना और रजीअ़ की इन दुखद घटनाओं से जो कुछ ही दिनों आगे पीछे घटित हुयी थीं[5] इतना दुख पहुंचा और आप इतना दुखी और परेशान हुए[6] कि जिन क़ौमों और क़बीलों ने इन सहाबा रज़ि० के साथ धोखे-बाज़ी और हत्या का यह व्यवहार किया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन पर एक महीने तक बद-दुआ फ़रमाई। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि जिन लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० को बीरे मऊना पर शहीद किया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन पर तीस दिन तक बद-दुआ की। आप फ़ज्र की नमाज़ में राल, ज़कवान, लहयान और उसैया पर बद-दुआ करते थे और फ़रमाते थे कि उसैया ने अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफ़रमानी की, अल्लाह तआ़ला ने इस बारे में अपने नबी पर वह्य उतारी जो बाद में मंसूख़ (निरस्त) हो गई। वह वह्य यह थी "हमारी क़ौम को यह बतला दो कि हम अपने पालनहार से मिले तो वह हम से राज़ी है और हम उस से राज़ी हैं।" इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना यह क़ुनूत छोड़ दिया।[7]

---

4) देखिए इब्ने हिशाम 2/183-188, ज़ादुल-मआद 2/109-110, बुख़ारी 2/584,586

5) वाक़िदी ने लिखा है कि रजीअ और मऊना दोनों घटनाओं की सूचना रसूलुल्लाह (सल्ल०) को एक ही रात में मिली थी।

6) इब्ने सअद ने हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जितना बिअरे-मऊना के लोगों पर ग़मगीन हुए मैंने किसी और पर आप को इतना ज़्यादा ग़मगीन होते नहीं देखा मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 260

7) बुख़ारी 2/586-588

5. ग़ज़वा-ए-बनी नज़ीर

हम बता चुके हैं कि यहूदी इस्लाम और मुसलमानों से जलते-भुनते थे, मगर वे चूंकि मर्दे मैदान न थे, षड़यंत्रकारी और आग लगाने वाले थे, इसलिए लड़ाई के बजाए द्वेष और कपट का प्रदर्शन करते थे और मुसलमानों को समझौते और वायदों के बावजूद कष्ट देने के लिए तरह-तरह के हीले, बहाने और उपाय करते थे, अलबत्ता बनू कैनुक़ाअ़ के देश निकाला और कअ़ब बिन अशरफ़ के क़त्ल की घटना घटी तो उन के हौसले टूट गए और उन्होंने भयभीत होकर ख़ामोशी और सुकून अपना लिया, लेकिन उहद की लड़ाई के बाद उन का साहस फिर लौट आया। उन्होंने खुल्लम-खुल्ला दुश्मनी और विद्रोह किया। मदीना के मुनाफ़िक़ों और मक्का के मुश्रिकों से परदे के पीछे सांठ-गांठ की और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों की हिमायत में काम किया।[8]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब कुछ जानते हुए सब्र से काम लिया लेकिन रजीअ़ और मऊना की घटनाओं के बाद इन की जुर्रत व हिम्मत हद से ज़्यादा बढ़ गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के अंत का प्रोग्राम बना लिया।

इस का विस्तृत वर्णन यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कुछ साथियों के साथ यहूदियों के पास तशरीफ़ ले गए और उन से बनू किलाब के उन दोनों क़त्ल किये गए लोगों की दियत (जुर्माने की रक़म) में सहायता के लिए बातचीत की—(जिन्हें हज़रत अ़म्र बिन उमैया ज़ुमरी ने ग़लती से क़त्ल कर दिया था)----इन पर समझौते के हिसाब से यह सहायता ज़रूरी थी। इन्होंने कहा, "अबुल क़ासिम! हम ऐसा ही करेंगे। आप यहां तशरीफ़ रखिए, हम आप की ज़रूरत पूरी किए देते हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के एक घर की दीवार से

8) अबू दाऊद बाब ख़बरुन-नज़ीर से यह बात ली गई है देखीए अबू दाऊद शरह औनुल-मअबूद के साथ 3/116 -117

टेक लगा कर बैठ गए और उन के वायदे के पूरा करने का इन्तिज़ार करने लगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बक्र रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० हज़रत अली रज़ि० और सहाबा किराम की एक जमाअत भी तश्रीफ़ रखती थी।

इधर यहूदी तंहाई में जमा हुए तो इन पर शैतान सवार हो गया और जो दुर्भाग्य उन का भाग्य बन चुका था, उसे शैतान ने सुंदर बना कर सामने रख दिया यानी उन यहूदियों ने आपस में मश्वरा किया कि क्यों न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही को क़त्ल कर दिया जाए। चुनांचे उन्हों ने कहा, "कौन है जो इस चक्की को लेकर ऊपर जाए और आप के सिर पर गिरा कर आप को कुचल दे।" इस पर एक भाग्यहीन यहूदी अम्र बिन जहाश ने कहा, मैं -----! इन लोगों से सलाम बिन मुश्कम ने कहा भी कि ऐसा न करो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! इन्हें तुम्हारे इरादों की ख़बर दे दी जाएगी और फिर हमारे और इन के दर्मियान जो अ़हद और समझौता है, यह उस का तोड़ना भी है। लेकिन उन्होंने एक न सुनी और अपनी योजना को पूरा करने पर जमे रहे।

इधर अल्लाह की ओर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत जिब्रील तश्रीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यहूदियों के इरादे की ख़बर दे दी। आप तेज़ी से उठे और मदीना के लिए चल पड़े। बाद में सहाबा किराम भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आकर मिले और कहने लगे, आप उठ आए और हम समझ न सके। आपने बतलाया कि यहूदियों का क्या इरादा था।

मदीना वापस आ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुरन्त ही मुहम्मद बिन मस्लमा को बनी नज़ीर के पास रवाना फ़रमाया और उन्हें यह नोटिस दिया कि तुम लोग मदीना से निकल जाओ। अब यहां मेरे साथ नहीं रह सकते, तुम्हें दस दिन की मोहलत दी जाती है। इस के बाद जो आदमी पाया जाएगा, उस की गरदन मार दी जाएगी। इस

नोटिस के बाद यहूदियों को देश-निकाला के सिवा कोई रास्ता समझ में न आया। चुनांचे वे कुछ दिन तक सफ़र की तैयारियां करते रहे, लेकिन इसी दौरान अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने कहला भेजा कि अपनी जगह जमे रहो, डट जाओ और घर-बार न छोड़ो। मेरे पास दो हज़ार जंगी जवान हैं जो तुम्हारे साथ तुम्हारे क़िलों में दाख़िल होकर तुम्हारी हिफ़ाज़त में जान दे देंगे और अगर तुम्हें निकाला ही गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में किसी से हरगिज़ नहीं दबेंगे और अगर तुम से लड़ाई की गई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और बनू क़ुरैज़ा और बनू ग़तफ़ान जो तुम्हारे मित्र हैं, वे भी तुम्हारी मदद करेंगे।

यह पैग़ाम सुन कर यहूदियों का स्वाभिमान पलट आया और उन्होंने तय कर लिया कि देश-निकाला के मुक़ाबले में टक्कर ली जाएगी। उन के सरदार हुयई बिन अख़तब को उम्मीद थी कि मुनाफ़िक़ों के सरदार ने जो कुछ कहा है, वह पूरा करेगा, इसलिए उस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जवाबी पैग़ाम भेज दिया कि हम अपने इलाक़े से नहीं निकलते, आप को जो करना हो कर लें।

इस में संदेह नहीं कि मुसलमानों की दृष्टि से यह स्थिति नाज़ुक थी क्योंकि उन के लिए अपने इतिहास के इस नाज़ुक और पेचीदा मोड़ पर दुश्मनों से टकराव कुछ ज़्यादा फ़ायदेमंद और मुनासिब न था, अंजाम ख़तरनाक हो सकता था। आप देख ही रहे हैं कि सारा अरब मुसलमानों के ख़िलाफ़ था और मसुलमानों की दो तब्लीग़ी मंडलियां बड़ी बेदर्दी से मारी जा चुकी थीं, फिर बनी नज़ीर के यहूदी इतने ताक़तवर थे कि उन का हथियार डालना आसान न था और उन से लड़ाई मोल लेने में तरह-तरह के ख़तरे थे, पर बीरे मऊना की दुखद घटना से पहले और उस के बाद के हालात ने जो नयी करवट ली थी उस की वजह से मुसलमान क़त्ल और वायदा ख़िलाफ़ी जैसे अपराधों के सिलसिले में

ज़्यादा भावुक हो गये थे और इन अपराधों के करने वालों के ख़िलाफ़ मुसलमानों की प्रतिशोध की भावना बहुत बढ़ गयी थी। और उन्होंने तय कर लिया कि चूंकि बनू नज़ीर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल का प्रोग्राम बनाया था। इसलिए उन से बहरहाल लड़ना है, भले ही उसके जो भी नतीजे हों। चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुयई बिन अख़तब का जवाबी पैग़ाम मिला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और सहाबा किराम रज़ि० ने कहा --अल्लाहु अकबर! और फिर लड़ाई के लिए उठ खड़े हुए और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को मदीना का इंतिज़ाम सौंप कर बनू नज़ीर के इलाक़े की ओर रवाना हो गए। हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के हाथ में झंडा था। बनू नज़ीर के क्षेत्र में पहुंच कर उन का घेराव कर लिया गया।

इधर बनू नज़ीर ने अपने क़िलों और गढ़ियों में पनाह ली और क़िले में बंद रह कर फ़सील से तीर और पत्थर बरसाते रहे, चूंकि खजूर के बाग़ उन के लिए ढाल का काम दे रहे थे, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि इन पेड़ों को काट कर जला दिया जाए। बाद में इसी की ओर इशारा कर के हज़रत हस्सान रज़ि० ने फ़रमाया था-----

وَهَانَ عَلٰی سَرَاةِ بَنِی لُوَیٍ حَرِیقٌ بِالْبُوَیْرَةِ مُسْتَطِیْرُ

"बनी लूई के सरदारों के लिए यह मामूली बात थी कि बुवैरा में आग के शोले बुलन्द हों" (बुवैरा बनू नज़ीर के मरुधान का नाम था) और उसी के बारे में अल्लाह का यह इर्शाद भी उतरा---------

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِيْنَ

"तुम ने खजूर के जो पेड़ काटे या जिन्हें अपने तनों पर खड़ा रहने दिया, वह सब अल्लाह ही के हुक्म से था और ऐसा इसलिए किया गया ताकि अल्लाह इन फ़ासिक़ों (अवज्ञाकारियों) को रुसवा करे।" (59:5)

बहरहाल जब उन का घेराव कर लिया गया तो बनू कुरैज़ा उन से अलग थलग रहे। अब्दुल्लाह बिन उबई ने भी ख़ियानत की और उन के मित्र ग़तफ़ान भी मदद को न आए। ग़रज़ कोई भी उन्हें मदद देने या उन की मुसीबत टालने पर तैयार न हुआ। इसी लिए अल्लाह ने उन की घटना की बात यूं बयान फ़रमाई।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّي بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ

"जैसे शैतान इंसान से कहता है कुफ़्र करो और जब वह कुफ़्र कर बैठता है तो शैतान कहता है, मैं तुम से बरी हूं।" (59:16)

घेराव कुछ ज़्यादा लम्बा न हुआ, बल्कि सिर्फ़ छ रात----या कुछ के कहने के मुताबिक़ पन्द्रह रात-----जारी रहा कि इस बीच अल्लाह ने उन के दिलों में रोब डाल दिया। उन के हौसले टूट गये। वे हथियार डालने पर तैयार हो गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहलवा भेजा कि हम मदीना से निकलने को तैयार हैं। आप ने उन के देश-निकाला की बात मंज़ूर फ़रमा ली, और यह भी मंज़ूर फ़रमा लिया कि वे हथियारों के सिवा बाक़ी जितना साज़ व सामान ऊंटों पर लाद सकते हों सब लेकर बाल-बच्चों समेत चले जाएं।

बनू नज़ीर ने इस मंज़ूरी के बाद हथियार डाल दिए और अपने हाथों अपने मकान उजाड़ डाले, ताकि दरवाज़े और खिड़कियां भी लाद ले जाएं, बल्कि कुछ कुछ ने तो छत की कड़ियां और दीवारों की खूंटियां भी लाद लीं, फिर औरतों और बच्चों को सवार किया और छ सौ ऊंटों पर लद-लदा कर रवाना हो गए। बहुत से यहूदी और उनके बड़े जैसे हुयई बिन अख़तब और सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ ने ख़ैबर का रुख़ किया। एक जमाअत शाम देश गई, सिर्फ़ दो आदमियों यानी यामीन रज़ि० बिन अम्र रज़ि० और अबू सईद रज़ि० बिन वहब ने इस्लाम क़ुबूल किया, इसलिए उन के माल को हाथ नहीं लगाया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शर्त के मुताबिक़ बनू नज़ीर के हथियार, ज़मीन, घर और बाग़ अपने क़ब्ज़े में ले लिए। हथियार में पचास ज़िरहें, पचास ख़ूद और तीन सौ चालीस तलवारें थीं।

बनू नज़ीर के ये बाग़, ज़मीन और मकान ख़ालिस अल्लाह के रसूल का हक़ थे। आप को अधिकार था कि आप इसे अपने लिए बचा कर रखें या जिसे चाहें दें। चुनांचे आप ने ग़नीमत के माल की तरह इन मालों का ख़ुमुस (पांचवा हिस्सा) नहीं निकाला, क्योंकि इसे अल्लाह ने आप को 'फ़य' के तौर पर दिया था। मुसलमानों ने इस पर घोड़े और ऊंट दौड़ा कर उसे (तलवार के बल पर) नहीं जीता था, इसलिए आप ने अपने इस विशेष अधिकार के तहत इस पूरे माल को सिर्फ़ शुरू के मुहाजिरों में बांट दिया। अलबत्ता दो अंसारी सहाबा यानी अबू दुजाना रज़ि० और सहल बिन हुनैफ़ रज़ि० को उनकी ग़रीबी की वजह से उस में से कुछ अता फ़रमाया। इस के अलावा आप ने (एक छोटा सा टुकड़ा अपने लिए सुरक्षित रखा जिस में से आप) अपनी पाक बीवियों का साल भर का ख़र्च निकालते थे और इस के बाद जो कुछ बचता था उसे जिहाद की तैयारी के लिए हथियार और घोड़ों के जुटाने में ख़र्च कर दिया करते थे।

ग़ज़वा-ए-बनू नज़ीर रबीउल अव्वल सन् 04 हि०, अगस्त 625 ई० में हुई और अल्लाह ने इस ताल्लुक़ से पूरी सूरः हश्र उतारी। जिस में यहूदियों के देश-निकाला का चित्र खींचते हुए मुनाफ़िक़ों की रीति-नीति पर से परदा उठाया गया है और 'फ़य' (लड़ाई में मिला माल) के हुक्मों को बयान फ़रमाते हुए मुहाजिरों और अंसार की प्रशंसा की गई है और यह भी बताया गया है कि लड़ाई की मसलहतों को देखते हुए दुश्मन के पेड़ काटे जा सकते हैं और उन में आग लगाई जा सकती है ऐसा करना ज़मीन में फ़साद फैलाना नहीं है, फिर ईमान वालों को तक़्वा के अपनाने और आख़िरत की तैयारी की ताकीद की गई है। इन सब

के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपना गुण-गान करते हुए और अपने नामों और विशेषणों के बयान करते हुए सूरः ख़त्म फ़रमा दी है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि० इस सूरः (हश्र) के बारे में फ़रमाया करते थे कि इसे सूरः बनी नज़ीर कहो।[9]

6.ग़ज़वा-ए-नज्द

बनू नज़ीर की लड़ाई में किसी कुर्बानी के बिना मुसलमानों को शानदार कामियाबी हासिल हुई। इस से मदीने में क़ायम मुसलमानों की सत्ता मज़बूत हो गई और मुनाफ़िक़ों पर बद-दिली छा गयी। अब उन्हें खुल कर कुछ करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन बद्दूओं की ख़बर लेने के लिए यकसू (एकाग्रचित) हो गए जिन्होंने उहद के बाद ही से मुसलमानों को ज़बरदस्त परेशानियों में उलझा रखा था और इस्लाम की दावत देने वालों पर बड़े ही ज़ुल्म भरे तरीकों से हमले कर-कर के उन्हें मौत के घाट उतार चुके थे और अब उनका साहस इस हद तक बढ़ चुका था कि वे मदीना पर चढ़ाई की सोच रहे थे।

चुनांचे बनू नज़ीर की लड़ाई से फ़ारिग़ होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी उन वायदा ख़िलाफ़ी करने वालों को सज़ा देने के लिए उठे भी न थे कि आप को ख़बर मिली कि बनी ग़तफ़ान के दो कबीले बनू मुहारिब और बनू सालबा लड़ाई के लिए बद्दूओं और देहातियों को जमा कर रहे हैं। इस ख़बर के मिलते ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द पर धावा बोलने का फ़ैसला कर लिया और नज्द के वीरानों में दूर तक घुसते चले गए जिसका मक़सद यह था कि इन संग-दिल बद्दूओं पर डर छा जाए और वे दोबारा मुसलमानों के ख़िलाफ़ पहले जैसी संगीन कार्यवाहियां को दोहराने का साहस न करें।

9) इब्ने हिशाम 2/190-192, ज़ादुल-मआद 2/71, 110, बुख़ारी 2/574-575

इधर सरकश बद्दू जो लूट-मार की तैयारियां कर रहे थे मुसलमानों के इस अचानक धावे की ख़बर सुनते ही डर कर भाग खड़े हुए और पहाड़ों की चोटियों में जा दुबके। मुसलमानों ने लुटेरे क़बीलों पर अपना रोब व दबदबा क़ायम करने के बाद अम्न व अमान के साथ वापस मदीना की राह ली।

जीवनी-लेखकों ने इस सिलसिले में एक निश्चित लड़ाई का नाम लिया है जो रबीउल आख़िर या जमादिल ऊला सन् 04 हि० में नज्द की धरती पर हुई थी और वह इसी लड़ाई को "ग़ज़वा-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ़" क़रार देते हैं। जहां तक हक़ीक़तों और सुबूत का ताल्लुक़ है, तो इस में संदेह नहीं कि इन दिनों में नज्द के अंदर एक लड़ाई हुई थी, क्योंकि मदीना के हालात ही कुछ ऐसे थे। अबू सुफ़ियान ने उहद की लड़ाई से वापसी के वक़्त अगले साल बद्र के मैदान में जिस लड़ाई के लिए ललकारा था और जिसे मुसलमानों ने मंज़ूर कर लिया था अब उसका वक़्त क़रीब आ रहा था और सामरिक दृष्टि से यह बात किसी तरह भी उचित न थी कि बद्दुओं और अरबों को उन की उद्दंडता और विद्रोह पर बाक़ी छोड़ कर बद्र जैसी ज़ोरदार लड़ाई में जाने के लिए मदीना ख़ाली कर दिया जाए, बल्कि ज़रूरी था कि बद्र के मैदान में जिस भयानक लड़ाई की आशा थी, उसके लिए निकलने से पहले इन बद्दुओं की शौकत पर ऐसी चोट लगायी जाए कि उन्हें मदीना का रुख़ करने का साहस न हो।

बाक़ी रही यह बात कि यही लड़ाई जो रबीउल आख़िर या जमादिल ऊला सन् 04 हि० में हुई थी, ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई थी, हमारी जांच के मुताबिक़ सही नहीं। क्योंकि ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि० मौजूद थे और अबू हुरैरह रज़ि० ख़ैबर की लड़ाई से सिर्फ़ कुछ दिन पहले इस्लाम लाए थे। इसी तरह हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि० (मुसलमान होकर यमन से रवाना हुए तो उन की कश्ती हब्शा के तट से जा लगी

थी और वह हब्शा से उस वक़्त वापस आए थे जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर में तश्रीफ़ रखते थे। इस तरह वह पहली बार) ख़ैबर के अंदर ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो सके थे। पस ज़रूरी है कि ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई ख़ैबर की लड़ाई के बाद हुई हो।

सन् 04 हि० के एक अर्से बाद ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई के पेश आने की एक निशानी यह भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई में "सलातुल ख़ौफ़"[10] (डर की नमाज़) पढ़ी थी। और सलाते ख़ौफ़ पहले पहल अ़स्फ़ान की लड़ाई में पढ़ी गयी और इस में कोई मतभेद नहीं कि अ़स्फ़ान की लड़ाई का समय खंदक़ की लड़ाई के भी बाद का है। जब कि खंदक़ की लड़ाई का ज़माना सन् 05 हि० के आख़िर का है। हक़ीक़त में अ़स्फ़ान की लड़ाई हुदैबिया की यात्रा की एक छोटी सी घटना है और हुदैबिया की यात्रा सन् 06 हि० के आख़िर में पेश आई थी, जिस से वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर की राह ली थी, इसलिए इस दृष्टि से भी ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई का ज़माना ख़ैबर के बाद ही साबित होता है।

7. ग़ज़्वा-ए-बद्र द्वितीय

अरबों का दबदबा तोड़ देने और बद्दुओं की शरारतों से सन्तुष्ट हो जाने के बाद मुसलमानों ने अपने बड़े दुश्मन (क़ुरैश) से लड़ने की तैयारी शुरू कर दी, क्योंकि साल तेज़ी से ख़त्म हो रहा था और उहद के मौक़े

---

10) लड़ाई के बीच नमाज़ को सलाते ख़ौफ़ कहते हैं। जिसका एक तरीक़ा यह है कि आधी फ़ौज हथियारबन्द हो कर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े बाक़ी आधी फ़ौज हथियार बांधे दुश्मन पर नज़र रखे एक रकअत के बाद यह फ़ौज इमाम के पीछे आ जाए और [illegible] फ़ौज दुश्मन पर नज़र रखने चली जाए, इमाम दूसरी रकअत पढ़ ले तो बारी-बारी फ़ौज के दोनों हिस्से अपनी-अपनी नमाज़ पूरी करें। इस नमाज़ के इससे मिलते-जुलते और भी तरीक़े हैं जो लड़ाई की अवस्था के हिसाब से अपनाए जा सकते हैं। तरीक़े हदीस की किताबों में हैं।

पर तय किया हुआ वक़्त क़रीब आता जा रहा था और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० का फ़र्ज़ था कि लड़ाई के मैदान में अबू सुफ़ियान और उस की क़ौम से दो-दो हाथ करने के लिए निकलें और लड़ाई की चक्की इस हिक्मत के साथ चलाएं कि जो फ़रीक़ ज़्यादा हिदायत पाया हुआ और मज़बूती का हक़दार हो, हालात का रुख़ पूरी तरह उस के हक़ में हो जाए।

चुनांचे शाबान सन् 04 हिजरी, मुताबिक़ जनवरी सन् 626 ई० में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना का इंतिज़ाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० को सौंप कर इस तय शुदा लड़ाई के लिए बद्र का रुख़ फ़रमाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ डेढ़ हज़ार की सेना और दस घोड़े थे। आप ने फ़ौज का झंडा हज़रत अ़ली रज़ि० को दिया और बद्र पहुंच कर मुश्रिकों के इंतिज़ार में ख़ेमा डाले पड़े रहे।

दूसरी तरफ़ अबू सुफ़ियान भी पचास सवारों सहित दो हज़ार मुश्रिकों की सेना लेकर रवाना हुआ और मक्के से एक मरहला दूर घाटी मर्रज़्ज़हरान पहुंच कर मोजिन्ना नाम के मशहूर चश्मे पर पड़ाव डाल दिया, लेकिन वह मक्का ही से बोझल और बद-दिल था। बार-बार मुसलमानों के साथ होने वाली लड़ाई का अंजाम सोचता था और रोब व दबदबे से कांप उठता था। मर्रज़्ज़हरान पहुंच कर उसकी हिम्मत जवाब दे गई और वह वापसी के बहाने सोचने लगा। आख़िर में अपने साथियों से कहा, "क़ुरैश के लोगो! लड़ाई उस वक़्त मुनासिब होती है जब हरियाली और शादाबी हो कि जानवर भी चर सकें और तुम दूध भी पी सको। इस वक़्त सूखा पड़ा हुआ है, इसलिए मैं वापस जा रहा हूं और तुम भी वापस चले चलो।"

ऐसा लगता था कि पूरी सेना भय और आतंक का शिकार थी, क्योंकि अबू सुफ़ियान के इस मश्वरे पर किसी भी प्रकार का विरोध किए

बिना सब ने वापसी की राह ली और किसी ने भी सफ़र जारी रखने और मुसलमानों से लड़ाई लड़ने की राय न दी।

इधर मुसलमानों ने बद्र में आठ दिन तक ठहर कर दुश्मन का इन्तिज़ार किया और इस बीच अपने व्यापार का सामान बेच कर एक दिरहम के दो दिरहम बनाते रहे। इस के बाद इस शान से मदीना वापस आए कि लड़ाई में आगे बढ़ना उन के हाथ में आ गया था, दिलों पर उन की धाक बैठ चुकी थी और माहौल पर उन की पकड़ मज़बूत हो चुकी थी। यह लड़ाई बद्रे मौइद, बद्रे सानी, बद्रे आख़िर और बदरे सुग़रा (छोटी बद्र) के नामों से मशहूर है।[11]

ग़ज़वा-ए-दूमतुल जन्दल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र से वापस हुए तो हर ओर अम्न व अमान क़ायम हो चुका था और पूरे इस्लामी राज्य में सुख और शान्ति की ठंडी हवा चल रही थी। अब आप अरब की अन्तिम सीमाओं तक ध्यान देने के लिए फ़ारिग़ हो चुके थे और इस की ज़रूरत भी थी, ताकि हालात पर मुसलमानों का ग़लबा और कन्ट्रोल रहे और दोस्त व दुश्मन सभी उस को महसूस और तस्लीम करें।

चुनांचे बद्रे सुग़रा के बाद छः माह तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इत्मीनान से मदीना में क़ियाम फ़रमाया। इस के बाद आप को ख़बरें मिलीं कि शाम देश के क़रीब दूमतुल जन्दल के पास-पड़ोस में आबाद क़बीले आने-जाने वाले क़ाफ़िलों पर डाके डाल रहे हैं और वहां से गुज़रने वाली चीज़ें लूट लेते हैं। यह भी मालूम हुआ कि उन्होंने मदीना पर हमला करने के लिए एक बड़ी सेना जुटा ली है। इन ख़बरों को दृष्टि में रख कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिबाअ़ बिन अरफ़ता ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीना में अपना जानशीं मुक़र्रर फ़रमा कर एक हज़ार मुसलमानों की तायदाद के साथ कूच फ़रमाया।

---

11) इस ग़ज़वे की तफ़सील के लिए देखें इब्ने हिशाम 2/209-210, ज़ादुल-मआद 2/112

यह 25 रबीउल अव्वल 05 हि० की घटना है। रास्ता बताने के लिए बनी उज़रा का एक आदमी रख लिया गया था जिस का नाम मज़कूर था।

इस लड़ाई में आप का तरीक़ा यह था कि आप रात में सफ़र फ़रमाते और दिन में छिपे रहते थे, ताकि दुश्मन पर बिल्कुल अचानक और बे-ख़बरी में टूट पड़ें। क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ कि वे लोग बाहर निकल गए हैं, इसलिए उनके मवेशियों और चरवाहों पर हल्ला बोल दिया, कुछ हाथ आए, कुछ निकल गये।

जहां तक दूमतुल जन्दल के निवासियों का ताल्लुक़ है तो जिसका जिधर सींग समाया भाग निकला, जब मुसलमान दूमतुल जन्दल के मैदान में उतरे तो कोई न मिला। आप ने कुछ दिन ठहर कर इधर-उधर कई टुकड़ियां रवाना कीं, लेकिन कोई भी हाथ न आया। आख़िरकार आप मदीना पलट आए। इस लड़ाई में उयैना बिन हिस्न[1] से समझौता भी हुआ। (दूमा, यह शाम देश की सीमा पर एक शहर है, यहां से दमिश्क़ की दूरी पांच रात और मदीना की दूरी 15 रात है)

इन अचानक और निर्णायक कार्यवाहियों और हिक्मत और सूझ-बूझ पर आधारित योजनाओं के ज़रिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लामी जगत में सुख-शान्ति बनाने और स्थिति पर क़ाबू पाने में सफलता प्राप्त की। और समय की रफ़्तार का रुख़ मुसलमानों के हक़ में मोड़ लिया और उन अंदरूनी और बाहरी कठिनाइयों में बराबर कमी की जो हर ओर से उन्हें घेरे हुए थीं। चुनांचे मुनाफ़िक़ चुप और निराश होकर बैठ गये। यहूदियों के एक क़बीले का देश निकाला कर दिया गया। दूसरे क़बीलों ने पड़ोसी होने और समझौता करने के हक़ को निभाने और उन्हें पूरा करने का प्रदर्शन किया। बद्दू और क़ुरैश ढीले पड़ गए और क़ुरैश मुसलमान से टकराने मे बचने लगे और मुसलमानों को इस्लाम फैलाने और रब की तालीम और पैग़ाम के प्रचार के अवसर मिल गए।

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब

एक साल से ज़्यादा मुद्दत की सामरिक मुहिमों और कार्यवाहियों के बाद अरब प्रायद्वीप पर शान्ति छा गयी थी और हर ओर सुख-शान्ति का दौर-दौरा हो गया था। पर यहूदियों को जो अपनी दुष्टताओं, षड्यंत्रों और छल-कपट के नतीजे में तरह-तरह की ज़िल्लत व रुसवाई का मज़ा चख चुके थे, अब भी होश नहीं आया था। उन्होंने षडयंत्रों और छल-कपट के घिनौने नतीजों से कोई सबक़ नहीं सीखा था चुनांचे ख़ैबर चले जाने के बाद तो उन्होंने यह इन्तिज़ार किया कि देखें मुसलमानों और मूर्ति-पूजकों के बीच जो सैनिक संघर्ष चल रहा है, उसका नतीजा क्या होता है, लेकिन जब देखा कि हालात मुसलमानों के हक़ में हो गए हैं, रात व दिन की गर्दिश ने उनके प्रभावों को बड़ा फैलाव दे दिया है। और दूर-दूर तक उन की सत्ता का सिक्का बैठ गया है तो उन्हें बड़ी जलन हुई। उन्होंने नये सिरे से षड़यंत्र शुरू किए और मुसलमानों पर एक ऐसी चोट लगाने की तैयारी में लग गए जिस के नतीजे में उनका जीवन-दीप ही गुल हो जाए, लेकिन चूंकि उन्हें सीधे-सीधे मुसलमानों से टकराने की हिम्मत न थी, इसलिए इस मक़सद के लिए बड़ा ही भयानक प्लान तैयार किया।

इस का विस्तृत विवरण यह है कि बनू नज़ीर के बीस सरदार और नेता मक्का में क़ुरैश के पास हाज़िर हुए और उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ाई पर तैयार करते हुए

अपनी मदद का विश्वास दिलाया। कुरैश ने उनकी बात मान ली। चूंकि वह उहद के दिन बद्र के मैदान में मुसलमानों के मुक़ाबले का वायदा और संधि कर के उसके ख़िलाफ़ कर चुके थे, इसलिए उनका विचार था कि अब इस प्रस्तावित लड़ाई के लिए क़दम उठाकर अपनी नामवरी भी बहाल कर लेंगे और अपनी कही हुई बात भी पूरी कर देंगे।

इस के बाद यहूद का यह प्रतिनिधि-मंडल बनू ग़तफ़ान के पास गया और कुरैश ही की तरह उन्हें भी लड़ाई के लिए तैयार किया। वे भी तैयार हो गए। फिर इस मंडली ने अरब के शेष क़बीलों में घूम-घूम कर लोगों को लड़ाई पर उभारा और इन क़बीलों के भी बहुत से लोग तैयार हो गए। ग़रज़ इस तरह यहूदी राजनीतिज्ञों ने पूरी कामियाबी के साथ कुफ़्र के तमाम बड़े-बड़े गिरोहों और जत्थों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप की दावत और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़का कर लड़ाई के लिए तैयार कर लिया।

इस के बाद तय शुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ दक्षिण से कुरैश, कनाना और तिहामा में आबाद दूसरे दोस्त क़बीलों ने मदीना की ओर कूच किया, इन सब का कमांडर-इन-चीफ़ अबू सुफ़ियान था और उन की तायदाद चार हज़ार थी। यह सेना मर्रज़्ज़हरान पहुंची तो बनू सुलैम भी इस में शामिल हो गए। इधर उसी वक़्त पूरब की ओर से ग़तफ़ानी क़बीले फ़ज़ारा, मर्रा और अशजअ़ ने कूच किया फ़ज़ारा का सेनापति उयैना बिन हिस्न था। बनू मर्रा का हारिस बिन औफ़ और बनू अशजअ़ का मिसअ़र बिन रख़ीला। इन्हीं के साथ बनू असद और दूसरे क़बीलों के बहुत से लोग भी आए थे।

इन सारे क़बीलों ने एक निश्चित समय और निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक़ मदीना का रुख़ किया था। इसलिए कुछ दिन के अंदर-अंदर मदीना के पास दस हज़ार सिपाहियों की एक बड़ी फ़ौज जमा हो गयी। यह इतनी बड़ी सेना थी कि शायद मदीना की पूरी आबादी (औरतों,

बच्चों, बूढ़ों और जवानों को मिला कर भी) इसके बराबर न थी। अगर हमलावरों का यह ठाठें मारता हुआ समुद्र मदीना की चार-दीवारी तक अचानक पहुंच जाता तो मुसलमानों के लिए बहुत ख़तरनाक साबित होता। कुछ अजब नहीं कि इन की जड़ कट जाती और इनका मुकम्मल सफ़ाया हो जाता, लेकिन मदीना का नेतृत्व बड़ा जागरुक और चौकस नेतृत्व था उसकी उंगलियां हमेशा हालात की नब्ज़ पर रहती थीं और वह हालात का विश्लेषण करके आने वाली घटनाओं का ठीक-ठीक अंदाज़ा भी लगाती थीं और उनसे निमटने के लिए सबसे उचित क़दम भी उठाती थी, चुनांचे कुफ़्फ़ार की भारी सेना ज्यों ही अपनी जगह से हरकत में आयी, मदीना के मुख़बिरों ने अपने नेतृत्व को इसकी सूचना दे दी।

सूचना पाते ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाई कमान की मज्लिसे शूरा बुलायी और प्रतिरक्षात्मक योजना पर सलाह व मश्वरा किया। शूरा वालों ने विचार-विमर्श के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० का एक प्रस्ताव सर्व सम्मति से मंज़ूर किया। यह प्रस्ताव हज़रत सलमान फ़ारसी ने इन शब्दों में दिया था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! फ़ारस में जब हमारा घेराव किया जाता था तो हम अपने चारों ओर खाई खोद लिया करते थे।

यह बड़ा हिक्मत भरा प्रतिरक्षात्मक प्रस्ताव था। अ़रब वाले इसे जानते न थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रस्ताव पर तुरन्त अ़मल दरामद शुरू फ़रमाते हुए हर दस आदमी को चालीस हाथ खाई खोदने का काम सौंप दिया और मुसलमानों ने पूरी मेहनत और दिल लगा कर खाई खोदनी शुरू कर दी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस काम पर उभारते भी थे और अ़मली तौर पर इस में पूरी तरह शरीक भी रहते थे। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत सहल बिन साद रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खाई में थे, लोग खुदाई कर रहे थे और हम कंधों पर मिट्टी ढो रहे थे कि (इसी बीच) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया------

اَللّٰهم لاَ عيش إلاّ عَيش الاٰخرة فاغفر للمها جرين والانصار

"ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस मुहाजिरों और अंसार को बख़्श दे।[1]"

एक दूसरी रिवायत में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाई की तरफ़ तशरीफ़ लाए तो देखा कि मुहाजिर और अंसार एक ठंडी सुबह में खोदने का काम कर रहे हैं, इनके पास दास न थे, कि उनके बजाए दास यह काम कर देते। आप ने उन की मशक्क़त और भूख देख कर फ़रमाया-------

اللّٰهم ان العيش عيش الاٰخرة فاغفر للانصار والمهاجرة

"ऐ अल्लाह! यक़ीनन ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस अंसार और मुहाजिरों को बख़्श दे।"

अंसार और मुहाजिरों ने इस के जवाब में कहा-----

نحن الذين بايعوا محمدا على الجهاد ما بقينا ابدا

"हम वह हैं कि हमने हमेशा के लिए, जब तक कि बाक़ी रहें, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिहाद पर बैअत की है।[2]"

सहीह बुख़ारी ही में हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप खाई से मिट्टी ढो रहे थे, यहां तक कि धूल ने आप के पेट की खाल

1) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ 2/588
2) बुख़ारी 1/397, 2/588

ढांक दी थी। आपके बाल बहुत ज़्यादा थे। मैंने (इसी हालत में) आप को अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० के उत्साहित करने वाले कलिमे कहते हुए सुना। आप मिट्टी ढोते जाते थे और यह कहते जाते थे।

اَللّٰهُمَّ لولاانت مَا اهْتَدَ يْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا

فَاَنْزِلَنْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا وَثَبِّتِ الْاَ قْدَامَ اِنْ لَّا قَيْنَا

اِنَّ الا ولى رَغِبُوْا عَلَيْنَا وَاِنْ اَرَادُوْا فِتْنَةً اَبَيْنَا

"ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा देते, न नमाज़ पढ़ते, पस हम पर सुकून नाज़िल फ़रमा और अगर टकराव हो जाए तो हमारे क़दम साबित रख। इन्होंने हमारे ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया है। अगर इन्होंने कोई फ़ित्ना चाहा तो हम हरगिज़ सर नहीं झुकाएंगे।"

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी शब्द खींच कर कहते थे। एक रिवायत में आख़िरी पद्य इस तरह है------

اِنَّ الا ولى قد بَغَوْا عليْنَا واِنْ ارادُ وافتنةً اَبَيْنَا

"यानी उन्होंने हम पर ज़ुल्म किया है और अगर वे हमें फ़ित्ने में डालना चाहेंगे तो हम हरगिज़ सर न झुकाएंगे।[3]"

मुसलमान एक ओर इस जोश के साथ काम कर रहे थे तो दूसरी ओर इतनी तेज़ भूख सहन कर रहे थे कि उस को सोच कर ही कलेजा फट जाता है। चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि (खाई वालों के पास) दो पिसर (एक प्रकार का माप) जौ लाया जाता या बू देती हुई

---

3. बुख़ारी 2/589

चिकनाई के साथ बना कर लोगों के सामने रख दिया जाता था। लोग भूखे होते थे और उसका स्वाद गले के लिए अप्रिय होता था, इससे बदबू उठ रही होती थी।[4]

अबू तलहा रज़ि० कहते हैं कि हम ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भूख की शिकायत की और अपने पेट को खोल कर एक-एक पत्थर दिखाया तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना पेट खोल कर दो पत्थर दिखा दिए।[5]

खाई की खुदाई के वक़्त नुबूवत की कई निशानियां भी सामने आईं। सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अंदर सख़्त भूख की निशानियां देखीं तो बकरी का बच्चा ज़िब्ह किया और उन की बीवी ने एक साअ् (लगभग ढाई किलो) जौ पीसा, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूरे रहस्य के साथ निवेदन किया कि अपने कुछ साथियों के साथ तश्रीफ़ लाएं, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम खाई वालों को, जिन की तायदाद एक हज़ार थी, साथ लेकर चल पड़े और सब लोगों ने उसी ज़रा से खाने से पेट भर कर खाया, फिर भी मांस की हांडी अपनी हालत में बाक़ी रही और भरी की भरी जोश मारती रही और गूंधा हुआ आटा अपनी हालत पर बाक़ी रहा। इस से रोटी पकायी जाती रही।[6]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० की बहन खाई के पास दो पिसर खजूर लेकर आईं कि उनके भाई और मामूं खा लेंगे, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़रीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से वह खजूरें ले लीं और एक कपड़े के ऊपर

---

4) बुख़ारी 2/588

5) तिरमिज़ी, मिश्कातुल-मसाबीह 2/448

6) यह घटना बुख़ारी में है देखिए 2/588-589

बिखेर दीं। फिर खाई वालों को दावत दी। खाई वाले उन्हें खाते गये, वह बढ़ती गयी, यहां तक कि सारे खाई वाले खा-खा कर चले गए और खजूरें थीं कि कपड़े के किनारों से बाहर गिर रही थीं।[7]

इन्ही दिनों में इन दोनों घटनाओं से कहीं बढ़ कर एक और घटना घटी, जिसे इमाम बुख़ारी ने हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत किया है। हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि हम लोग खाई खोद रहे थे कि एक चट्टान जैसा टुकड़ा आड़े आ गया। लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और बताया कि यह चट्टान जैसा टुकड़ा खाई में रोक बन गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं उतर रहा हूं। इस के बाद आप उठे, आप के पेट पर पत्थर बंधा हुआ था---- हम ने तीन दिन से कुछ चखा न था-----फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुदाल लेकर मारा तो वह चट्टान जैसा टुकड़ा भुरभुरे तोदे (मिट्टी का ढेर) में तब्दील हो गया।[8]

हज़रत बरा रज़ि० का बयान है कि खाई की खुदाई के मौक़े पर कुछ हिस्से में एक भारी चट्टान आ पड़ी, जिस से कुदाल उचट जाती थी, कुछ टूटता ही न था। हम ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस की शिकायत की। आप तशरीफ़ लाए, कुदाल ली और बिस्मिल्लाह कह कर एक चोट मारी (तो एक टुकड़ा टूट गया) और फ़रमाया, "अल्लाहु अकबर! मुझे शाम देश की कुंजियां दी गई हैं। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त वहां के लाल महलों को देख रहा हूं।" फिर दूसरी चोट मारी, तो एक दूसरा टुकड़ा कट गया और फ़रमाया, "अल्लाहु अकबर! मुझे फ़ारस दिया गया है। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त मदाइन का सफ़ेद महल देख रहा हूं। "फिर तीसरी चोट लगायी और फ़रमाया, "बिस्मिल्लाह!" तो शेष बची चट्टान भी कट गयी।

---

7) इब्ने हिशाम 2/218

8) बुख़ारी 2/588

फ़िर फ़रमाया, "अल्लाहु अकबर! मुझे यमन की कुंजियां दी गयी हैं। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त अपनी इस जगह से सनआ के फाटक देख रहा हूं।[9]"

इब्ने इस्हाक़ ने ऐसी ही रिवायत हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० से ज़िक्र की है।[10]

चूंकि मदीना उत्तर के अलावा शेष हर दिशा से हर्रे (लावे की चट्टानों) पहाड़ों और खजूर के बाग़ों से घिरा हुआ है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक माहिर और तजुर्बेकार फौजी की हैसियत से यह जानते थे कि मदीना पर इतनी बड़ी फ़ौज का धावा सिर्फ़ उत्तर की ओर से हो सकता है। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल इसी ओर खाई खुदवाई।

मुसलमानों ने खाई खोदने का काम बराबर जारी रखा। दिन भर खुदाई करते और शाम को घर पलट आते, यहां तक कि मदीना की दीवारों तक कुफ़्फ़ार के भारी लश्कर के पहुंचने से पहले तय शुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ खाई तैयार हो गई।[11]

इधर कुरैश अपनी चार-हज़ार की फ़ौज लेकर मदीना पहुंचे तो रूमा, जर्फ़ और ज़ग़ाबा के बीच मजमउल-अस्याल में पड़ाव डाल दिया और दूसरी ओर से ग़तफ़ान और उन के नज्दी साथी छः हज़ार की फ़ौज लेकर आए तो उहद के पूर्वी किनारे ज़म्बे नक़मी में पड़ाव डाल कर जम गए, जैसा कि कुरआन मजीद में ज़िक्र किया गया है------

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا

---

9) निसाई 2/56, मुसनद अहमद यह अलफ़ाज़ निसाई के नहीं हैं निसाई में عن رجل من الصحابه है

10) इब्ने हिशाम 2/219

11) इब्ने हिशाम 2/220-221

"और जब ईमान वालों ने इन जत्थों को देखा तो कहा, यह तो वही चीज़ है जिसका अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वायदा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच ही फ़रमाया था और इस (हालत) ने उनके ईमान और इताअत के जज़्बे को और बढ़ा दिया।" (33:22)

लेकिन मुनाफ़िक़ों और कमज़ोर नफ़्स लोगों की नज़र उस सेना पर पड़ी तो उनके दिल दहल गए।

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا

"और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कह रहे थे कि अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से जो वायदा किया था, वह सिर्फ़ धोखा था।" (33:12)

बहरहाल उस सेना से मुक़ाबले के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तीन हज़ार मुसलमानों की टुकड़ी लेकर तशरीफ़ लाए और सलअ़ पर्वत की ओर पीठ कर के क़िला बंदी की शक्ल अपना ली। सामने ख़न्दक़ थी जो मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के बीच रुकावट बनी हुई थी। मुसलमानों का कोड शब्द था حم لا ينصرون (हामीम! उन की मदद न की जाए) मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० के हवाले किया गया था और औरतों और बच्चों को मदीना के क़िलों और गढ़ियों में सुरिक्षत कर दिया गया था।

जब मुश्रिक हमले की नीयत से मदीने की ओर बढ़े तो क्या देखते हैं कि एक चौड़ी सी खाई उनके और मदीना के बीच रोक है, मजबूर होकर उन्हें घेराव करना पड़ा, हालांकि वे घरों से चलते समय इस के लिए तैयार होकर नहीं आए थे, क्योंकि प्रतिरक्षा की यह योजना- ---खुद उनके कथन के अनुसार------एक ऐसी चाल थी जिसको अरब जानते

...न थे इसलिए उन्होंने इस मामले को सिरे से अपने हिसाब में दाख़िल ही न किया था।

मुश्रिक खाई के पास पहुंच कर मारे गुस्से के चक्कर काटने लगे। उन्हें ऐसे कमज़ोर बिन्दु की खोज थी, जहां से वे उतर सकें। इधर मुसलमान उन की चलत-फिरत पर पूरी नज़र रखे हुए थे और उन पर तीर बरसाते रहते थे, ताकि उन्हें खाई के क़रीब आने की हिम्मत न हो, वे उस में न कूद सकें और न मिट्टी डाल कर-पार करने के लिए रास्ता बना सकें।

इधर क़ुरैश के घुड़सवारों को स्वीकार न था कि खाई के पास घेराव के नतीजों के इन्तिज़ार में बे-फ़ायदा पड़े रहें। यह उनकी आदत और शान के ख़िलाफ़ बात थी। चुनांचे उनकी एक जमाअत ने जिनमें अम्र बिन अब्दे वुद्द, इक्रिमा बिन अबी जहल और ज़िरार बिन ख़त्ताब वग़ैरह थे, एक तंग जगह से खाई पार कर ली और उन के घोड़े खाई और सलअ के बीच में चक्कर काटने लगे। उधर से हज़रत अली रज़ि० कुछ मुसलमानों के साथ निकले और जिस जगह से उन्होंने घोड़े कुदाए थे, उसे क़ब्ज़े में लेकर उनकी वापसी का रास्ता बंद कर दिया। इस पर अम्र बिन अब्दे वुद्द ने लड़ाई के लिए ललकारा। हज़रत अली रज़ि० दो-दो हाथ करने के लिए मुक़ाबले में आ गए और एक ऐसा चुभता हुआ वाक्य कहा कि वह गुस्से में घोड़े से कूद पड़ा, उसकी कूचें काटीं, उस के चेहरे को मारा और हज़रत अली रज़ि० के सामने आ गया, वह बड़ा बहादुर और साहस वाला था। दोनों में ज़ोरदार टक्कर हुई। हर एक ने दूसरे पर बढ़-बढ़ कर वार किए। आख़िर में हज़रत अली रज़ि० ने उसे समाप्त कर दिया। बाक़ी मुश्रिक भाग कर खाई पार चले गए। वे इतने आतंकित थे कि इक्रिमा ने भागते हुए अपना नेज़ा भी छोड़ दिया।

मुश्रिकों ने किसी-किसी दिन खाई पार करने या उसे पाट कर रास्ता बनाने की बड़ी ज़बरदस्त कोशिश की, लेकिन मुसलमानों ने बड़े

अच्छे तरीके से उन्हें दूर रखा और उन्हें इस तरह तीरों से छलनी किया और ऐसी बहादुरी से उनकी तीरअंदाज़ी का मुक़ाबला किया कि उनकी हर कोशिश नाकाम हो गयी।

इसी तरह के ज़ोरदार मुक़ाबलों के दौरान अल्लाह के रसूल और सहाबा किराम रज़ि० की कुछ नमाज़ें भी फ़ौत हो गई थीं। चुनांचे बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० खाई के दिन आए और कुफ़्फ़ार को सख़्त-सुस्त कहते हुए कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आज मैं मुश्किल से सूरज डूबते-डूबते नमाज़ पढ़ सका। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "और मैंने तो अल्लाह की क़सम! अभी नमाज़ पढ़ी ही नहीं है।" इसके बाद हम लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बुतहान में उतरे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के लिए वुज़ू फ़रमाया, और हम ने भी वुज़ू किया। फिर आप ने अस्र की नमाज़ पढ़ी। यह सूरज डूब चुकने के बाद की बात है। इस के बाद मग़्रिब की नमाज़ पढ़ी।[12]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस नमाज़ के फ़ौत होने का इतना दुख था कि आपने मुश्रिकों के लिए बद-दुआ फ़रमा दी। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खाई के दिन फ़रमाया, "अल्लाह इन मुश्रिकों के लिए इन के घरों और क़ब्रों को आग से भर दे, जिस तरह इन्होंने हम को नमाज़े वुस्ता (की अदाएगी) न करने में लगाए रखा और सूरज डूब गया।[13]"

मुस्नद अहमद और मुस्नद शाफ़ई रह० में रिवायत है कि मुश्रिकों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़ुहर, अस्र, मग़्रिब और इशा

12) बुख़ारी 2/590
13) बुख़ारी 2/590

की नमाज़ों को अदा न करने में लगाए रखा, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये सारी नमाज़ें एक साथ पढ़ीं। इमाम नववी फ़रमाते हैं कि इन रिवायतों में समानता की शक्ल यह है कि खाई की लड़ाई का सिलसिला कई दिन तक जारी रहा, पस किसी दिन एक शक्ल पेश आयी और किसी दिन दूसरी।[14]

यहीं से यह बात भी निकलती है कि मुश्रिकों की ओर से खाई पार करने की कोशिश और मुसलमानों की ओर से बराबर हिफ़ाज़ती क़दम कई दिन तक जारी रहा, मगर चूंकि दोनों सेनाओं के दर्मियान खाई रोक थी, इसलिए आमने-सामने की और ख़ूनी लड़ाई की नौबत न आ सकी, बल्कि सिर्फ़ तीरअंदाज़ी होती रही। इसी तीरअंदाज़ी में दोनों फ़रीक़ के कुछ आदमी मारे भी गए——लेकिन उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है यानी छः मुसलमान और दस मुश्रिक जिन में से एक या दो आदमी तलवार से क़त्ल किए गए थे।

इसी तीरअंदाज़ी के बीच हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० को भी एक तीर लगा, जिस से उनके बाज़ू की बड़ी रग कट गयी। उन्हें हिबान बिन अरक़ा नामी एक क़ुरैशी मुश्रिक का तीर लगा था। हज़रत साद रज़ि० ने (घायल होने के बाद) दुआ की कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि जिस क़ौम ने तेरे रसूल को झुठलाया और उन्हें निकाल बाहर किया, उनसे तेरी राह में जिहाद करना मुझे जितना प्रिय है उतना किसी और क़ौम से नहीं है। ऐ अल्लाह! मैं समझता हूं कि अब तूने हमारी और उनकी लड़ाई को आख़िरी मरहले तक पहुंचा दिया है, पस अगर क़ुरैश की लड़ाई कुछ बाक़ी रह गयी हो तो मुझे उनके लिए बाक़ी रख कि मैं उनसे तेरी राह में जिहाद करूं और अगर तूने लड़ाई ख़त्म कर दी है तो इसी घाव को जारी करके उसे मेरी मौत की वजह बना दे।[15] उनकी इस

14) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 287, शरह मुस्लिम लिन-नववी 1/227
15) बुख़ारी 2/591

दुआ का आख़िरी टुकड़ा यह था कि (लेकिन) मुझे मौत न दे, यहां तक कि बनू क़ुरैज़ा के मामले में मेरी आंखों को ठंडक हासिल हो जाए।[16] बहरहाल एक ओर मुसलमान लड़ाई के मोर्चे पर इन मुश्किलों से दो चार थे, तो दूसरी ओर षड़यंत्र और जोड़-तोड़ के सांप अपने बिलों में हरकत कर रहे थे और इस कोशिश में थे कि मुसलमानों के जिस्म में अपना विष उतार दें। चुनांचे बनू नज़ीर का बड़ा अपराधी------हुयई बिन अख़तब-----बनू क़ुरैज़ा के इलाक़े में आया और उनके सरदार काब बिन असद क़ुरज़ी के पास हाज़िर हुआ। यह काब बिन असद वही आदमी है जो बनू क़ुरैज़ा की ओर से वचन देने का अधिकार रखता था और जिसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह समझौता किया था कि लड़ाई के मौक़ों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद करेगा। (जैसा कि पिछले पन्नों में गुज़र चुका है) हुयई ने आकर उसके दरवाज़े पर दस्तक दी तो उस ने दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया, मगर हुयई उससे ऐसी-ऐसी बातें करता रहा कि अन्ततः उसने दरवाज़ा खोल ही दिया। हुयई ने कहा, "ऐ काब! मैं तुम्हारे पास ज़माने (वक़्त) की इज़्ज़त और फ़ौजों का (सेनाओं का) अपार समुद्र लेकर आया हूं। मैं ने क़ुरैश को उसके सरदारों और नेताओं समेत लाकर रूमा के मजमउल अस्याल में उतार दिया है। और बनू ग़तफ़ान को उनके नेताओं और सरदारों सहित उहद के पास ज़म्बे नक़मी में पड़ाव डाल दिया है। इन लोगों ने मुझे वचन दिया है कि वह मुहम्मद और उसके साथियों का पूरा सफ़ाया किए बिना यहां से न टलेंगे।"

काब ने कहा, "अल्लाह की क़सम! तुम मेरे पास ज़माने (वक़्त) की ज़िल्लत और (फ़ौजों का) बरसा हुआ बादल लेकर आए हो जो सिर्फ़ गरज-चमक रहा है, मगर उस में कुछ रह नहीं गया है। हुयई! तुम पर अफ़सोस! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे। मैंने मुहम्मद में सच्चाई और वफ़ादारी के सिवा कुछ नहीं देखा है।"

16) इब्ने हिशाम 2/227

मगर हुयई लगातार अपनी बात मनवाने की कोशिश करता रहा, यहां तक कि उसे राज़ी कर ही लिया। अलबत्ता उसे इस मक़सद के लिए यह वायदा करना पड़ा कि अगर कुरैश ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़त्म किए बिना वापसी की राह ली, तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे क़िले में दाख़िल हो जाऊंगा। फिर जो अंजाम तुम्हारा होगा, वही मेरा भी होगा। हुयई की इस वचन-बद्धता के बाद काब बिन असद ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया हुआ वचन भंग कर दिया और मसुलमानों के साथ तय की हुई ज़िम्मेदारियों से अलग होकर उन के ख़िलाफ़ मुश्रिकों की ओर से लड़ाई में शरीक हो गया।[17]

इस के बाद कुरैज़ा के यहूदी अमली तौर पर लड़ाई की कार्यवाहियों में लग गए। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि हज़रत सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० के फ़ारेअ नामी किले के अदंर थीं। हज़रत हस्सान रज़ि० औरतों और बच्चों के साथ वहीं थे। हज़रत सफ़िया रज़ि० कहती हैं कि हमारे पास से एक यहूदी गुज़रा और क़िले का चक्कर काटने लगा। यह उस वक़्त की बात है जब बनू कुरैज़ा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किए गए वायदे को तोड़ कर आप से लड़ रहे थे और हमारे और उनके बीच कोई न था जो हमारी रक्षा करता---अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुसलमानों समेत दुश्मन के मुक़ाबले में फंसे हुए थे। अगर हम पर कोई हमलावर हो जाता तो आप उन्हें छोड़ कर आ नहीं सकते इसलिए मैंने कहा ए हस्सान! यह यहूदी...जैसा कि आप देख रहे हैं क़िले का चक्कर लगा रहा है और मुझे ख़ुदा की क़सम! डर है यह बाक़ी यहूदियों को भी मुसलमानों की हमारी कमज़ोरी से आगाह कर देगा, उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० इस तरह

17) इब्ने हिशाम 2/220-221

फंसे हुए हैं कि हमारी मदद को नहीं आ सकते, इसलिए आप जाइए और इसे क़त्ल कर दीजिए।

हज़रत हस्सान रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप जानती हैं कि मैं इस काम का आदमी नहीं, हज़रत सफ़िया रज़ि० कहती हैं अब मैंने ख़ुद अपनी कमर बांधी, फिर सुतून (खम्बे) की एक लकड़ी ली और इस के बाद क़िले से उतर कर इस यहूदी के पास पहुंची और लकड़ी से मार-मार का उसका अंत कर दिया। इसके बाद क़िले में वापस आई और हस्सान रज़ि० से कहा, जाइए, इसके हथियार और सामान उतार लीजिए, चूंकि वह मर्द है इसलिए मैंने उसके हथियार नहीं उतारे। हस्सान रज़ि० ने कहा, मुझे उसके हथियार और सामान की कोई ज़रूरत नहीं।[18]

सच तो यह कि मुसलमान बच्चों और औरतों की हिफ़ाज़त पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी के इस वीरता भरे कारनामे पर बड़ा गहरा और अच्छा असर पड़ा। इस कार्यवाही से शायद यहूदियों ने समझा कि इन क़िलों और गढ़ियों में भी मुसलमानों की हिफ़ाज़ती सेना मौजूद है----हालांकि वहां कोई टुकड़ी न थी--------इसीलिए यहूद को दोबारा इस प्रकार की हिम्मत न हुई। अलबत्ता वे मूर्ति-पूजक हमलावरों के साथ अपने एका और एकता का सुबूत पेश करने के लिए उन्हें लगातार रसद पहुंचाते रहे, यहां तक कि मुसलमानों ने उनकी रसद के बीस ऊंटों पर क़ब्ज़ा भी कर लिया।

बहरहाल यहूदियों के वचन भंग कर देने की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुरन्त उसकी जांच की ओर तवज्जोह फ़रमाई ताकि बनू क़ुरैज़ा का दृष्टिकोण उन पर स्पष्ट हो जाए और उसकी रोशनी में

18) इब्ने हिशाम 2/228

सैनिक दृष्टि से जो क़दम उठाना उचित हो, उठाया जाए। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस ख़बर की जांच के लिए हज़रत साद बिन मुआज़, साद बिन उबादा, अब्दुल्लाह बिन रवाहा और ख़व्वात बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम को रवाना फ़रमाया और हिदायत की कि जाओ। देखो, बनी क़ुरैज़ा के बारे में जो कुछ मालूम हुआ है, वह वाक़ई सही है या नहीं? अगर सही है तो वापस आकर सिर्फ़ मुझे बता देना और वह भी इशारों-इशारों में, ताकि लोगों के हौसले पस्त न हों और अगर वे अपने वायदों पर क़ायम हैं तो फिर लोगों के दर्मियान एलानिया इसका ज़िक्र कर देना। जब ये लोग बनी क़ुरैज़ा के क़रीब पहुंचे तो उन्हें इंतिहाई घटियापन पर तैयार पाया। उन्होंने एलानिया गालियां बकीं, दुश्मनी की बातें कीं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीन की। कहने लगे, "अल्लाह का रसूल कौन---? हमारे और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बीच न कोई वायदा है न वचन।" यह सुन कर वे लोग वापस आ गये और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंच कर स्थिति की ओर संकेत करते हुए सिर्फ़ इतना कहा, अ़ज़्ल व क़ारा! कहने का मतलब यह था कि जिस तरह अ़ज़्ल और क़ारा ने रजीअ़ वालों के साथ वायदे नहीं पूरे किए थे, उसी तरह यहूदी भी वचन भंग करने पर तुले हुए हैं।

इसके बावजूद कि इन सहाबा किराम ने सच छिपाने की कोशिश की, लेकिन आम लोगों को हालात की जानकारी हो गयी और इस तरह एक भयानक ख़तरा साक्षात उनके सामने आ गया।

सच तो यह है कि मुसलमान उस वक़्त बड़ी नाज़ुक स्थिति से गुज़र रहे थे। पीछे बनू क़ुरैज़ा थे जिनका हमला रोकने के लिए उनके और मुसलमानों के बीच कोई और न था, आगे मुश्रिकों की भारी भरकम फ़ौज थी, जिन्हें छोड़ कर हटना संभव न था। फिर मुसलमान औरतें और बच्चे थे जो किसी सुरक्षा व्यवस्था के बिना चरित्रहीन यहूदियों के

क़रीब ही थे, इसलिए लोगों में बड़ी बेचैनी पैदा हुई जिसकी स्थिति इस आयत में बयान की गई है।–

وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا هُنَالِكَ ابْتُلِىَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا

"और जब निगाहें टेढ़ी हो गईं, दिल गले में आ गये और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक़्त ईमान वालों की आज़माइश की गई और उन्हें तेज़ी से झिंझोड़ दिया गया।" (33:10-11)

फिर इसी मौक़े पर कुछ मुनाफ़िक़ों के निफ़ाक़ ने भी सर निकाला, चुनांचे वे कहने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो हम से वायदे करते थे कि हम क़ैसर व किसरा के ख़ज़ाने पाएंगे और यहां यह हालत है कि पेशाब-पाख़ाने के लिए निकलने में भी जान की ख़ैरियत नहीं। कुछ और मुनाफ़िक़ों ने अपनी क़ौम के बड़े लोगों के सामने यहां तक कहा कि हमारे घर दुश्मन के सामने खुले पड़े हैं। हमें इजाज़त दीजिए कि हम अपने घरों को वापस चले जाएं, क्योंकि हमारे घर शहर से बाहर हैं। नौबत यहां तक पहुंच चुकी थी कि बनू सलमा के क़दम उखड़ रहे थे और वे पीछे हटने की सोच रहे थे। इन्ही लोगों के बारे में अल्लाह ने यह इर्शाद फ़रमाया है-----

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ اِلَّا غُرُوْرًا ० وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِىَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِىَ بِعَوْرَةٍ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ०

"और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिन के दिलों में बीमारी है कह रहे थे कि हम से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो वायदा किया है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं। और जब उनकी

एक जमाअत ने कहा कि ऐ यस्रिब वालो! तुम्हारे लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए वापस चलो, और उन का एक फ़रीक़ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से इजाज़त मांग रहा था। कहता था, "हमारे घर ख़ाली पड़े हैं, हालांकि वे घर ख़ाली नहीं पड़े थे, ये लोग सिर्फ़ फ़रार चाहते थे।" (33:12-13)

एक ओर सेना का यह हाल था, दूसरी ओर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह स्थिति थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू कुरैज़ा की वायदा ख़िलाफ़ी की ख़बर सुनकर अपना सर और चेहरा कपड़े से ढक लिया और देर तक चित लेटे रहे। इस स्थिति को देख कर लोगों की बेचैनी और ज़्यादा बढ़ गयी, लेकिन इसके बाद आप पर आशा छा गयी और आप अल्लाहु अकबर कहते हुए खड़े हुए और फ़रमाया, मुसलमानो! अल्लाह की मदद और जीत की ख़ुशख़बरी सुन लो। इसके बाद आपने आने वाले हालात से निपटने का प्रोग्राम बनाया और इसी प्रोग्राम के एक हिस्से के तौर पर मदीना की निगरानी के लिए सेना का एक हिस्सा भेजते रहे, ताकि मुसलमानों को ग़ाफ़िल देख कर यहूदियों की ओर से औरतों और बच्चों पर अचानक कोई हमला न हो जाए, लेकिन इस मौक़े पर एक फ़ैसला कर देने वाले क़दम के उठाने की ज़रूरत थी, जिसके द्वारा दुश्मन के विभिन्न गिरोहों को एक दूसरे से बे-ताल्लुक़ कर दिया जाए। इस मक़सद के लिए आप ने सोचा कि बनू ग़तफ़ान के दोनों सरदारों, उयैना बिन हिस्न और हारिस बिन औफ़ से मदीने की एक तिहाई पैदावार पर समझौता कर लें ताकि ये दोनों सरदार अपने-अपने क़बीले लेकर वापस चले जाएं और मुसलमान अकेले कुरैश पर जिन की ताक़त का बार-बार अंदाज़ा लगाया जा चुका था भारी चोट लगाने के लिए फ़ारिग़ हो जाएं। इस प्रस्ताव पर कुछ बातें भी हुईं, पर जब आपने हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० से इस प्रस्ताव के बारे में मश्वरा किया

तो उन दोनों ने एक जुबान होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है तब तो बिना कुछ कहे सुने मान लेते हैं और आप अगर सिर्फ़ हमारे लिए ऐसा करना चाहते हैं तो हमें इस की ज़रूरत नहीं। जब हम लोग और ये लोग दोनों शिरक और बुत-परस्ती पर थे, तब तो ये लोग मेज़बानी या ख़रीदने बेचने के सिवा किसी और शक्ल से एक दाने का भी लोभ नहीं करते थे, तो भला अब जबकि अल्लाह ने हमें इस्लामी हिदायत दे रखी है और आपके ज़रीए इज़्ज़त बख़्शी है, हम इन्हें अपना माल देंगे? अल्लाह की क़सम! हम तो इन्हें सिर्फ़ अपनी तलवार देंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों की राय को ठीक क़रार दिया और फ़रमाया कि जब मैंने देखा कि सारा अरब एक कमान खींच कर तुम पर पिल पड़ा है तो सिर्फ़ तुम्हारे लिए मैंने यह काम करना चाहा था।

फिर-----अलहम्दु लिल्लाह—अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि दुश्मन में फूट पड़ गई उनके लोग हार गए और उनकी ताक़त टूट गयी। हुआ यह कि बनू ग़तफ़ान के एक साहब जिन का नाम नुऐम बिन मस्ऊद बिन आमिर अशजई था अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं मुसलमान हो गया हूं लेकिन मेरी क़ौम को मेरे इस्लाम लाने की जानकारी नहीं, इसलिए आप मुझे कोई हुक्म फ़रमाइए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम सिर्फ़ एक आदमी हो, (इसलिए कोई फ़ौजी क़दम तो नहीं उठा सकते) अलबत्ता जितना संभव हो उन में फूट डालो और उनका साहस तोड़ो, क्योंकि लड़ाई तो कार्य-नीति का नाम है। इस पर हज़रत नुऐम तुरन्त ही बनू क़ुरैज़ा के यहां पहुंचे। अज्ञानता-युग में उनसे उनका बड़ा मेल-जोल था। वहां पहुंच कर उन्होंने कहा, आप लोग जानते हैं कि मुझे

आप लोगों से मुहब्बत और विशेष संबंध है। उन्होंने कहा, जी हां। नुऐम ने कहा, अच्छा तो सुनिए कि कुरैश का मामला आप लोगों से भिन्न है। यह इलाक़ा आपका अपना इलाक़ा है यहां आपका घर-द्वार है, धन-दौलत है, बाल-बच्चे हैं। आप इसे छोड़ कर कहीं और नहीं जा सकते, मगर जब कुरैश व ग़तफ़ान मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से लड़ने आए तो आपने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ उनका साथ दिया, ज़ाहिर है उनका यहां न घर-बार है, न माल व दौलत है, न बाल-बच्चे हैं। इसलिए उन्हें मौक़ा मिला तो कोई क़दम उठाएंगे, वरना पूरा बिस्तर बांध कर विदाअ़ हो जाएंगे। फिर आप लोग होंगे और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) होंगे, इसलिए वे जैसे चाहेंगे, आप से बदला लेंगे। इस पर बनू कुरैज़ा चौंके और बोले, नुऐम! बताइए, अब क्या किया जा सकता है? उन्होंने कहा, देखिए कुरैश जब तक आप लोगों को कुछ आदमी बंधक के तौर पर न दें, आप उनके साथ लड़ाई में शरीक न हों। कुरैज़ा ने कहा, आप ने बहुत मुनासिब राय दी है।

इसके बाद हज़रत नुऐम रज़ि० सीधे कुरैश के पास पहुंचे और बोले, "आप लोगों से मुझे जो मुहब्बत और भला चाहने का जज़्बा है, उसे तो आप जानते ही हैं?" उन्होंने कहा, "जी हां।" हज़रत नुऐम ने कहा, "अच्छा तो सुनिए कि यहूदियों ने मुहम्मद और उनके साथियों से जो वायदा ख़िलाफ़ी की थी, इस पर वे शर्मिन्दा हैं और अब उन में यह बात तय हुई है कि वे (यहूदी) आप लोगों से कुछ लूट का माल हासिल करके उन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हवाले कर देंगे और फिर आप लोगों के ख़िलाफ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपना मामला सही कर लेंगे। इसलिए अगर वे माल तलब करें तो आप हरगिज़ न दें।" इसके बाद ग़तफ़ान के पास भी जा कर यही बात दोहरायी। (और उनके भी कान खड़े हो गये।)

इसके बाद जुमा और सनीचर के बीच की रात को क़ुरैश ने यहूदियों के पास यह पैग़ाम भेजा कि हमारा ठहराव किसी उचित और मुनासिब जगह पर नहीं है।, घोड़े और ऊंट मर रहे हैं, इसलिए इधर से आप लोग और उधर से हम लोग उठें और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमला कर दें, लेकिन यहूदियों ने जवाब में कहलवाया कि आज सनीचर का दिन है और आप जानते हैं कि हमसे पहले जिन लोगों ने इस दिन के बारे में शरीअत के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की थी उन्हें कैसे अ़ज़ाब से दो-चार होना पड़ा था। इसके अ़लावा आप लोग जब तक अपने कुछ आदमी हमें लूट के माल के तौर पर न दे दें, हम लड़ाई में शरीक न होंगे। दूत जब यह जवाब लेकर वापस आए तो क़ुरैश और ग़तफ़ान ने कहा, "अल्लाह की क़सम! नुऐम रज़ि० ने सच ही कहा था"। चुनांचे उन्होंने यहूदियों को कहला भेजा कि अल्लाह की क़सम! हम आपको कोई आदमी नहीं देंगे, बस आप लोग हमारे साथ ही निकल पड़ें और (दोनों तरफ़ से) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हल्ला बोल दिया जाए। यह सुन कर क़ुरैज़ा ने आपस में कहा, अल्लाह की क़सम! नुऐम ने हम से सच ही कहा था। इस तरह दोनों फ़रीक़ का विश्वास एक दूसरे पर से उठ गया। उनकी पंक्तियों में फूट पड़ गयी और उनके हौसले टूट गए।

इस बीच मुसलमान अल्लाह से यह दुआ कर रहे थे: اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَّوْعَاتِنَا "(ऐ अल्लाह! हमारी परदापोशी फ़रमा और हमें ख़तरों से सुरक्षित कर दे)" और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमा रहे थे---

اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ اِهْزِمِ الْاَحْزَابَ اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ

"ऐ अल्लाह! किताब उतारने वाले और जल्द हिसाब लेने वाले, इन फ़ौजों को हरा दे। ऐ अल्लाह! इन्हें हरा दे और झिंझोड़ कर रख दे।"[19]

---

19) बुख़ारी किताबुल-जिहाद 1/411, किताबुल-मग़ाज़ी 2/590

आख़िरकार अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों की दुआएं सुन लीं। चुनांचे मुश्रिकों की सफ़ों (लाइनों) में फूट पड़ जाने और बद-दिली व पस्त-हिम्मती घुस जाने के बाद अल्लाह ने उनपर तेज़ हवाओं का तूफ़ान भेज दिया, जिसने उनके ख़ेमे उखाड़ दिए, हांडियां उलट दीं, तुनाबों (ख़ेमे की रस्सियां) की खूंटियां उखाड़ दीं, किसी चीज़ को क़रार न रहा और उसके साथ ही फ़रिश्तों की फ़ौज भेज दी जिसने उन्हें हिला डाला और उनके दिलों में रोब और डर डाल दिया।

इसी ठंडी और कड़कड़ाती हुई रात में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० को कुफ़्फ़ार की ख़बर लाने के लिए भेजा। वह उनके मोर्चे में पहुंचे तो वहां ठीक यही हालत बरपा थी, और मुश्रिक वापसी के लिये तैयार हो चुके थे। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में वापस आकर उनके रवाना होने की ख़बर दी। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की तो (देखा कि मैदान साफ़ है) अल्लाह ने दुश्मन को किसी भलाई हासिल करने का मौक़ा दिए बिना उसके ग़म व गुस्सा समेत वापस कर दिया है और उनसे लड़ाई के लिए तन्हा काफ़ी हुआ है। मतलब यह कि इस तरह अल्लाह ने अपना वायदा पूरा किया, अपनी फ़ौज को इज़्ज़त दी, अपने बंदे की मदद की और अकेले ही सारी सेनाओं को हराया। चुनांचे आप इसके बाद मदीना वापस आ गए।

खाई की लड़ाई सबसे सही कथन के अनुसार शव्वाल सन् 05 हि० में हुई थी और मुश्रिकों ने एक महीने या लगभग एक महीने तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का घेराव जारी रखा था, तमाम उद्गमों पर कुल मिला कर एक नज़र डालने से मालूम होता है कि घेराव का आरंभ शव्वाल में हुआ था और अंत

ज़ी-क़अ्दा में। इब्ने साद का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ अलैहि व सल्लम जिस दिन खाई से वापस हुए, बुध का दिन था ज़ी-क़अ्दा के ख़त्म होने में सिर्फ़ सात दिन बाक़ी थे।

खाई (अहज़ाब) की लड़ाई हक़ीक़त में जान व माल के नुक़सान की लड़ाई न थी, बल्कि अअ्साब (स्नायुओं) की लड़ाई थी। इस में कोई ख़ूनी लड़ाई नहीं हुई, लेकिन फिर भी यह इस्लामी इतिहास की एक निर्णायिक लड़ाई थी, चुनांचे इस के नतीजे में मुश्रिकों के हौसले टूट गये और यह स्पष्ट हो गया कि अ़रब की कोई भी ताक़त मुसलमानों की इस छोटी सी ताक़त को जो मदीना में पल-बढ़ रही है समाप्त नहीं कर सकती, क्योंकि अहज़ाब की लड़ाई में जितनी बड़ी ताक़त जुटाई गयी थी, उस से बड़ी ताक़त जुटाना अरबों के बस की बात न थी, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अहज़ाब की वापसी के बाद फ़रमाया———

الآنَ نَغْزُوهُمْ وَلَا يَغْزُونَنَا نَحْنُ نَسِيرُ إِلَيْهِمْ

"अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे वह हम पर चढ़ाई न करेंगे, अब हमारी फ़ौज उनकी ओर जाएगी।"

ग़ज़वा-ए-बनू क़ुरैज़ा

जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाई से वापस तश्रीफ़ लाए उसी दिन ज़ुहर के वक़्त जबकि आप हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के मकान में नहा रहे थे, हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, "क्या आपने हथियार रख दिए, हालांकि अभी फ़रिश्तों ने हथियार नहीं रखे और मैं भी क़ौम का पीछा करके बस वापस चला आ रहा हूं। उठिए! और अपने साथियों को लेकर बनू क़ुरैज़ा का रुख़ कीजिए। मैं आगे-आगे जा रहा हूं। उनके क़िलों में भूकम्प पैदा करूंगा और उनके दिलों में रोब व दहशत पैदा करूंगा।" यह कह कर हज़रत जिब्रील फ़रिश्तों के झुंड के साथ रवाना हो गए।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से मुनादी करायी कि जो आदमी "सुनने और मानने" पर क़ायम है, वह अस्र की नमाज़ बनू क़ुरैज़ा ही में पढ़े। इसके बाद मदीने का इन्तिज़ाम हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को सौंपा और हज़रत अ़ली रज़ि० को लड़ाई का झंडा देकर आगे रवाना फ़रमा दिया। वह बनू क़ुरैज़ा के क़िलों के क़रीब पहुंचे तो बनू क़ुरैज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर गालियों की बौछाड़ शुरू कर दी।

इतने में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुहाजिरों और अंसार के साथ रवाना हो चुके थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू क़ुरैज़ा के इलाक़े में पहुंच कर "अना" नामी एक

कुंए पर उतरे। आम मुसलमानों ने भी लड़ाई का एलान सुनकर तुरन्त बनी कुरैज़ा के इलाके का रुख़ किया। रास्ते में अस्र की नमाज़ का वक़्त आ गया, तो कुछ ने कहा हम—जैसा कि हमें हुक्म दिया गया है—बनू कुरैज़ा पहुंच कर ही अस्र की नमाज़ पढ़ेंगे, यहां तक कि कुछ ने अस्र की नमाज़ इशा के बाद पढ़ी, लेकिन कुछ दूसरे सहाबा रज़ि० ने कहा, आपके कहने का मक़सद यह नहीं था, बल्कि यह था कि हम जल्द से जल्द रवाना हो जाएं, इसलिए उन्होंने रास्ते ही में नमाज़ पढ़ ली, अलबत्ता (जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने यह मामला पेश हुआ तो) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी भी फ़रीक़ को सख़्त-सुस्त नहीं कहा।

बहरहाल अलग-अलग टुकड़ियों में बंट कर इस्लामी सेना बनू कुरैज़ा के इलाके में पहुंची और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जा शामिल हुई, फिर बनू कुरैज़ा के किलों का घेराव कर लिया। इस सेना की कुल संख्या तीन हज़ार थी और इस में तीस घोड़े थे।

जब घेराव सख़्त हो गया तो यहूदियों के सरदार काब बिन असद ने यहूदियों के सामने तीन विभिन्न प्रस्ताव रखे-----

1. या तो इस्लाम अपना लें और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन में दाख़िल होकर अपनी जान, माल और बाल बच्चों को सुरक्षित कर लें----काब बिन असद ने इस प्रस्ताव को रखते हुए यह भी कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम लोगों पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि वह वाक़ई नबी और रसूल हैं और वह वही हैं जिन्हें तुम अपनी किताब में पाते हो।

2. या अपने बीवी-बच्चों को खुद अपने हाथों क़त्ल कर दें, फिर तलवार सौंत कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर निकल पड़ें और पूरी ताक़त से टकरा जाएं। इस के बाद या तो जीत जाएं या सब के सब मारे जाएं।

3. या फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० पर धोखे से सनीचर के दिन पिल पड़ें क्योंकि उन्हें इत्मीनान होगा कि आज लड़ाई नहीं होगी।

लेकिन यहूदियों ने इन तीनों में से कोई भी प्रस्ताव मंज़ूर नहीं किया, जिस पर उनके सरदार काब बिन असद ने (झल्ला कर) कहा, "तुम में से किसी ने मां की कोख से जन्म लेने के बाद एक रात भी होशमंदी के साथ नहीं गुज़ारी है।"

इन तीनों प्रस्तावों का खंडन करने के बाद बनू कुरैज़ा के सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता रह जाता था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने हथियार डाल दें और अपनी क़िस्मत का फ़ैसला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर छोड़ दें। लेकिन उन्होंने चाहा कि हथियार डालने से पहले अपने कुछ मुसलमान दोस्तों से सम्पर्क बना लें। सभंव है कि पता लग जाए कि हथियार डालने का नतीजा क्या होगा। चुनांचे उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास संदेश भेजा कि आप अबू लुबाबा को हमारे पास भेज दें। हम उनसे मश्वरा करना चाहते हैं। अबू लुबाबा रज़ि० उन के मित्र थे और उनके बाग़ और आल औलाद भी उसी इलाक़े में थे। जब अबू लुबाबा रज़ि० वहां पहुंचे तो मर्द लोग उन्हें देख कर उनकी ओर दौड़ पड़े और औरतें और बच्चे उनके सामने धहाड़ें मार-मार कर रोने लगे। इस हालत को देख कर हज़रत अबू लुबाबा रज़ि० को रोना आ गया। यहूदियों ने कहा, "अबू लुबाबा रज़ि० क्या आप मुनासिब समझते हैं कि हम मुहम्मद के फ़ैसले पर हथियार डाल दें?" उन्होंने फ़रमाया, हां लेकिन साथ ही हाथ से हलक़ की ओर संकेत भी कर दिया, जिसका मतलब यह था कि ज़िब्ह कर दिए जाओगे, लेकिन तुरन्त एहसास हुआ कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ख़ियानत है। चुनांचे वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वापस आने के

बजाए सीधे मस्जिदे नबवी पहुंचे और अपने आप को मस्जिद के एक खम्बे से बांध लिया और क़सम खाई कि उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही अपने मुबारक हाथों से खोलेंगे और वह आगे बनू कुरैज़ा के भू-भाग में कभी प्रवेश न करेंगे। उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महसूस कर रहे थे कि उनकी वापसी में देर हो रही है। फिर जब विस्तार से बातें मालूम हुईं तो फ़रमाया अगर वह मेरे पास आ गए होते तो मैं उनके लिए बख़्शिश की दुआ कर देता, लेकिन जब वह वही काम कर बैठे हैं तो अब मैं भी उन्हें उनकी जगह से खोल नहीं सकता, यहां तक कि अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले।

इधर अबू लुबाबा रज़ि० के इशारे के बावजूद बनू कुरैज़ा ने यही तय किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने हथियार डाल दें और वह जो फ़ैसला मुनासिब समझें, करें। हालांकि बनू कुरैज़ा एक लम्बी मद्दत तक घेराव सहन कर सकते थे, क्योंकि एक ओर उनके पास भारी मात्रा में खाने-पीने का सामान था, पानी के सोते और कुएं थे, मज़बूत और सुरक्षित क़िले थे और दूसरी ओर मुसलमान खुले मैदान में ख़ून जमा देने वाले जाड़े और भूख की सख़्तियां सह रहे थे और खाई की लड़ाई की शुरूआत से भी पहले से लगातार लड़ाई में व्यस्त रहने की वजह से थकन से चूर-चूर थे, लेकिन बनी कुरैज़ा की लड़ाई वास्तव में एक स्नायुओं (अअ़साब) की लड़ाई थी, अल्लाह ने उनके दिलों में रोब डाल दिया था और उन के हौसले टूटते जा रहे थे, फिर हौसलों की यह टूटन उस वक़्त अपनी हद को पहुंच गयी जब हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ि० ने आगे बढ़े और हज़रत अ़ली रज़ि० ने गरज कर यह एलान किया कि ईमान के फ़ौजियो! अल्लाह की क़सम! अब मैं भी या तो वही चखूंगा जो हमज़ा रज़ि० ने चखा या उनका क़िला जीत करके रहूंगा।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० का यह निश्चय सुनकर बनू कुरैज़ा ने जल्दी से अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले कर दिया कि आप जो फ़ैसला मुनासिब समझें करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि मर्दों को बांध दिया जाए। चुनांचे मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी रज़ि० की निगरानी में इन सबके हाथ बांध दिए गए और औरतों और बच्चों को मर्दों से अलग कर दिया गया। क़बीला औस के लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि आप ने बनू क़ैनुक़ाअ़ के साथ जो सुलूक फ़रमाया था वह आपको याद ही है। बनू क़ैनुक़ाअ़ हमारे भाई ख़ज़रज के साथी थे और ये लोग हमारे मित्र हैं, इसलिए इन पर उपकार करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या आप लोग इस पर राज़ी नहीं कि इनके बारे में आप ही का एक-एक आदमी फ़ैसला करे? उन्होंने कहा, क्यों नहीं। आप ने फ़रमाया, तो यह मामला साद बिन मुआज़ रज़ि० के हवाले है। औस के लोगों ने कहा, हम इस पर राज़ी हैं।

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० को बुला भेजा। वह मदीना में थे। फ़ौज के साथ तश्रीफ़ नहीं लाए थे, क्योंकि खाई की लड़ाई के दौरान बाज़ू की रग कटने की वजह से घायल थे। उन्हें एक गधे पर सवार करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में लाया गया। जब क़रीब पहुंचे तो उनके क़बीले के लोगों ने उन्हें दोनों ओर से घेर लिया और कहने लगे, साद! अपने हलीफ़ों के बारे में अच्छाई और एहसान से काम लीजिए।——अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको इसीलिए सरपंच बनाया है कि आप उनसे अच्छा व्यवहार करें, मगर वे चुपचाप थे, कोई जवाब न दे रहे थे। जब लोगों ने गुज़ारिश की भरमार कर दी, तो बोले, अब वक़्त आ गया है कि साद को अल्लाह के

बारे में किसी निन्दा करने वाले की परवाह न हो। यह सुन कर कुछ लोग उसी वक़्त मदीना आ गए और क़ैदियों की मौत की ख़बर फैला दी।

इसके बाद जब हज़रत साद रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे तो आपने फ़रमाया, अपने सरदार की तरफ़ उठ कर बढ़ो! लोगों ने बढ़कर जब उन्हें उतार लिया, तो आपने फ़रमाया, ऐ साद! ये लोग आपके फ़ैसले पर उतरे हैं। जब उन्हें। हज़रत साद रज़ि० ने कहा, क्या मेरा फ़ैसला इन पर लागू होगा? लोगों ने कहा, जी हां। उन्होंने कहा, मुसलमानों पर भी? लोगों ने कहा, जी हां। उन्होंने फिर कहा, और जो यहां हैं, उन पर भी! उन का इशारा प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के डेरे की ओर था मगर इज़्ज़त व ताज़ीम की वजह से चेहरा दूसरी ओर कर रखा था। आप ने फ़रमाया, जी हां, मुझ पर भी। हज़रत साद रज़ि० ने कहा, "तो इन के बारे में मेरा फ़ैसला यह है कि मर्दों को क़त्ल कर दिया जाए, औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया जाए और माल बांट दिए जांए।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम ने उन के बारे में वही फ़ैसला किया है जो सात आसमानों के ऊपर से अल्लाह का फ़ैसला है।

हज़रत साद रज़ि० का यह फ़ैसला बड़े ही न्याय और इंसाफ़ पर आधारित था, क्योंकि बनू क़ुरैज़ा ने मुसलमानों की मौत और ज़िंदगी के सब से नाज़ुक क्षणों में जो बुरी तरह अह्द (वचन, संधि) तोड़ा था, वह तो था ही, इसके अलावा उन्होंने मुसलमानों की समाप्ति के लिए डेढ़ हज़ार तलवारें, दो हज़ार नेज़े, तीन सौ कवचें और पांच सौ ढालें जुटा रखी थीं, जिन पर विजयी हाने के बाद मुसलमानों ने क़ब्ज़ा किया।

इस फ़ैसले के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर बनू क़ुरैज़ा को मदीना लाकर, बनू नज्जार की एक औरत ——जो हारिस रज़ि० की सुपुत्री थीं——के घर में क़ैद कर दिया गया और मदीना के बाज़ार में खाइयां खोदी गयीं, फिर उन्हें एक-एक टोली

बना कर ले जाया गया और इन खाइयों में उन की गरदनें मार दी गई। कार्यवाही शुरू होने के थोड़ी देर बाद बाक़ी क़ैदियों ने अपने सरदार काब बिन असद से मालूम किया कि आप का क्या अंदाज़ा है? हमारे साथ क्या हो रहा है? उसने कहा, "क्या तुम लोग किसी भी जगह समझ-बूझ नहीं रखते? देखते नहीं कि पुकारने वाला रुक नहीं रहा है और जाने-वाला पलट नहीं रहा है? यह अल्लाह की क़सम! क़त्ल है।" बहरहाल इन सबकी (जिन की तायदाद छ और सात सौ के बीच थी) गरदनें मार दी गयीं।

इस कार्यवाही के ज़रिए विद्रोह करने और बेवफ़ाई करने वालों के उन सांपों का पूरी तौर पर ख़ात्मा हो गया जिन्होंने पक्का वायदा और समझौता तोड़ा था। मुसलमानों के अंत के लिए उनकी ज़िंदगी के बड़े संगीन और बहुत बड़े नाज़ुक समय में दुश्मन को मदद देकर लड़ाई के बड़े अपराधियों का चरित्र पेश किया था और अब वे हक़ीक़त में मुक़दमे और फांसी के हक़दार हो चुके थे।

बनू क़ुरैज़ा की इस तबाही के साथ ही बनू नज़ीर का शैतान और अहज़ाब की लड़ाई का एक बड़ा अपराधी हुयई बिन अख़तब भी अपनी करनी को पहुंच गया। यह आदमी उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़ीया रज़ि० का बाप था। क़ुरैश व ग़तफ़ान की वापसी के बाद जब बनू क़ुरैज़ा का घेराव किया गया और उन्होंने क़िला बंदी अपनायी, तो यह भी उनके साथ क़िला बंद हो गया था क्योंकि अहज़ाब की लड़ाई के दिनों में यह आदमी जब काब बिन असद को विद्रोह पर उभारने और बेईमानी करने पर तैयार करने के लिए आया था तो इस का वायदा कर रखा था और अब उसी वायदे को निबाह रहा था। उसे जिस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो एक जोड़ा पहने हुए था जिसे खुद ही हर ओर से एक-एक अंगुल फाड़ रखा था ताकि उसे माले ग़नीमत में न रखवा लिया जाए। उसके दोनों हाथ

गरदन के पीछे रस्सी से एक साथ बंधे हुए थे। उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़िताब कर के कहा, "सुनिए, मैंने आप की दुश्मनी पर अपने आपकी निन्दा नहीं की, लेकिन जो अल्लाह से लड़ता है, मग़्लूब हो जाता है।" फिर लोगों को ख़िताब करके कहा, "लोगो! अल्लाह के फ़ैसले में कोई हरज नहीं। यह तो भाग्य का फ़ैसला है और एक बड़ा क़त्ल है जो अल्लाह ने बनी इसराईल पर लिख दिया था।" इसके बाद वह बैठा और उस की गरदन मार दी गई।

इस घटना में बनू कुरैज़ा की एक औरत भी क़त्ल की गयी। उस ने हज़रत ख़ल्लाद बिन सुवैद रज़ि० पर चक्की का पाट फेंक कर उन्हें क़त्ल कर दिया था। इसीके बदले उसे क़त्ल कर दिया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म था कि जिसके नाफ़ के नीचे बाल आ चुके हों, उसे क़त्ल कर दिया जाए। चूंकि हज़रत अ़तीया कुरज़ी को अभी बाल नहीं आए थे, इसलिए उन्हें ज़िंदा छोड़ दिया गया। चुनांचे उन्होंने मुसलमान होकर सहाबी होने का शर्फ़ हासिल किया।

हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि० ने विनती (गुज़ारिश) की कि ज़ुबैर बिन बाता और उस के बाल-बच्चों को उन्हें भेंट स्वरूप दे दिया जाए---इसकी वजह यह थी कि ज़ुबैर ने साबित रज़ि० पर कुछ उपकार किए थे—इनकी विनती मान ली गई इसके बाद साबित बिन क़ैस रज़ि० ने ज़ुबैर से कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुमको और तुम्हारे बाल बच्चों को मुझे भेंट कर दिया है और मैं इन सब को तुम्हारे हवाले करता हूं। (यानी तुम बाल बच्चों समेत आज़ाद हो) लेकिन जब ज़ुबैर बिन बाता को मालूम हुआ कि उसकी क़ौम क़त्ल कर दी गई है तो उसने कहा, साबित! तुम पर मैंने जो एहसान किया था, उसका वास्ता देकर कहता हूं कि मुझे भी दोस्तों तक पहुंचा दो। चुनांचे उसकी भी गरदन मार कर उसे उसके यहूदी दोस्तों तक पहुंचा दिया

गया। अलबत्ता हज़रत साबित रज़ि० ने जुबैर बिन बाता के लड़के अब्दुर्रहमान रज़ि० को ज़िंदा रखा, चुनांचे उन्होंने इस्लाम लाकर सहाबी होने का शर्फ़ हासिल किया। इसी तरह बनू नज्जार की एक ख़ातून हज़रत उम्मुल मुंज़िर सलमा बिन्ते कैस ने गुज़ारिश की, कि समौअल कुरज़ी के लड़के रिफ़ाआ को उन के लिए भेंट में दे दिया जाए। उनकी भी गुज़ारिश मंज़ूर हुई और रिफ़ाआ को उनके हवाले कर दिया गया। उन्होंने रिफ़ाआ को ज़िंदा रखा और उन्होंने भी इस्लाम लाकर सहाबी होने शर्फ़ हासिल किया।

कुछ और लोगों ने भी उसी रात हथियार डालने की कार्यवाही से पहले इस्लाम स्वीकार कर लिया था, इसलिए उनकी जान व माल और आल-औलाद बचे रहे। उसी रात अम्र नामी एक और आदमी-----जिसने बनू कुरैज़ा के वचन भंग करने में शिरकत न की थी-----बाहर निकला। उसे पहरेदारों के कमांडर मुहम्मद बिन मुस्लमा रज़ि० ने देखा, लेकिन पहचान कर छोड़ दिया। फिर मालूम नहीं, वह कहां गया।

बनू कुरैज़ा के मालों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुमुस (पांचवां) हिस्सा निकाल कर बांट दिया। घुड़सवार को तीन हिस्से दिए। एक हिस्सा उसका अपना और दो हिस्से घोड़े के और पैदल को एक हिस्सा दिया। कैदियों और बच्चों को हज़रत साद बिन ज़ैद अंसारी रज़ि० की निगरानी में नज्द भेज कर उनके बदले घोड़े और हथियार ख़रीद लिए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए बनू कुरैज़ा की औरतों में से हज़रत रैहाना रज़ि० बिन्ते अम्र बिन ख़न्नाफ़ा को चुना। यह इब्ने इस्हाक़ के कहने के मुताबिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मिल्कियत में रहीं।[1] लेकिन कलबी का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु

1) इब्ने हिशाम 2/245

अलैहि व सल्लम ने उन्हें सन् 06 हि० में आज़ाद कर के शादी कर ली थी। फिर जब आप हज्जतुल-विदाअ से वापस तशरीफ़ लाए तो उनका इंतिक़ाल हो गया और आप ने उन्हें बक़ीअ में दफ़न फ़रमा दिया।[2]

जब बनू क़ुरैज़ा का काम पूरा हो चुका तो नेक बंदे हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० की इस दुआ के क़ुबूल कर लिए जाने का वक़्त आ गया, जिसका ज़िक्र अहज़ाब की लड़ाई के बीच आ चुका है। चुनांचे उन का घाव फूट गया। उस वक़्त वह मस्जिदे नबवी में थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए वहीं ख़ेमा लगवा दिया था ताकि क़रीब ही से उन की देख-भाल कर लिया करें। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि उनके सीने का घाव फूट कर बहा। मस्जिद में बनू ग़िफ़ार के भी कुछ ख़ेमे थे। वह देख कर चौंके कि उनकी तरफ़ ख़ून बह कर आ रहा है। उन्होंने कहा, ख़ेमे वालो! यह क्या है जो तुम्हारी ओर से हमारी तरफ़ आ रहा है।" देखा तो हज़रत साद के घाव से ख़ून की धारा बह रही थी, फिर उसी से उनकी मौत हो गयी।[3]

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि साद बिन मुआज़ रज़ि० की मौत से रहमान का अ़र्श हिल गया।[4] इमाम तिर्मिज़ी रह० ने हज़रत अनस रज़ि० से एक हदीस रिवायत की है और उसे सहीह भी क़रार दिया है कि जब हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० का जनाज़ा उठाया गया तो मुनाफ़िक़ों ने कहा, इनका जनाज़ा कितना हल्का है? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "इसे फ़रिश्ते उठाए हुए थे।[5]"

---

2) तलक़ीहु फ़हूम 12
3) बुख़ारी 2/591
4) बुख़ारी 1/536, मुस्लिम 2/294, तिरमिज़ी 2/225
5) तिरमिज़ी 2/225

बनू कुरैज़ा के घेराव के दौरान सिर्फ़ एक ही मुसलमान शहीद हुए जिनका नाम ख़ल्लाद रज़ि० बिन सुवैद है। यह वही सहाबी हैं जिन पर बनू कुरैज़ा की एक औरत ने चक्की का पाट फेंक मारा था, इनके अलावा हज़रत उकाशा रज़ि० के भाई अबू सिनान रज़ि० बिन मोहसिन ने घेराव के समय में वफ़ात पाई।

जहां तक हज़रत अबू लुबाबा रज़ि० का मामला है तो वह छः रात बराबर सुतून से बंधे रहे। उनकी बीवी हर नमाज़ के वक़्त आकर खोल देती थीं और वह नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फिर उसी सुतून में बंध जाते थे। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सुबह ही सुबह उनकी तौबा नाज़िल हुई। उस वक़्त आप हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के घर में तशरीफ़ रखते थे। हज़रत अबू लुबाबा रज़ि० का बयान है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने अपने हुजरे के दरवाज़े पर खड़े होकर मुझसे कहा ऐ अबू लुबाबा रज़ि० खुश हो जाओ! अल्लाह ने तुम्हारी तौबा कुबूल कर ली, यह सुन कर सहाबा उन्हें खोलने के लिए उछल पड़े, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया कि उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवाए कोई और नहीं खोलेगा। चुनांचे जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज्र की नमाज़ के लिए निकले और वहां से गुज़रे तो उन्हें खोल दिया।

यह लड़ाई ज़ी-क़अ़दा में हुई, पचीस दिन तक घेराव रहा।[6] अल्लाह ने इस लड़ाई और खाई की लड़ाई के बारे में सूरः अहज़ाब में बहुत सी आयतें उतारीं और दोनों लड़ाइयों के अहम हिस्सों की समीक्षा की। ईमान वालों और निफ़ाक़ वालों के हालात बयान फ़रमाए। दुश्मन के विभिन्न गिरोहों में फूट और पस्त-हिम्मती का ज़िक्र फ़रमाया और अहले किताब की वायदा ख़िलाफ़ी के नतीजों पर रोशनी डाली।

---

6) इब्ने हिशाम 2/237-238 ग़ज़वे की तफ़सीलात के लिए देखिए इबने हिशाम 2/233-273 बुख़ारी 2/590-591, ज़ादुल-मआद 2/72-74, मुख़तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 287-290

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब और क़ुरैज़ा के बाद की जंगी मुहिमें

1. सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ की हत्या

सलाम बिन अबिल हुक़ैक़----जिस का उपनाम अबू राफ़ेअ़ था-----यहूदियों के उन बड़े अपराधियों में से था, जिन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों को भड़काने में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था और माल और रसद (अन्न आदि) से उन की सहायता की थी।[1] इस के अलावा वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट भी पहुंचाता था। इसलिए मुसलमान जब बनू क़ुरैज़ा से फ़ारिग़ हो चुके तो क़बीला ख़ज़रज के लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसके क़त्ल की इजाज़त चाही, चूंकि इस से पहले काब बिन अशरफ़ का क़त्ल क़बीला औस के कुछ सहाबा के हाथों हो चुका था, इसलिए क़बीला ख़ज़रज की ख़्वाहिश थी कि ऐसा ही कोई कारनामा हम भी अंजाम दें, इसलिए उन्होंने इजाज़त मांगने में जल्दी की।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इजाज़त दे तो दी, लेकिन ताकीद फ़रमा दी कि औरतों और बच्चों को क़त्ल न किया जाए! इस के बाद एक छोटी सी टुकड़ी जिस में पांच आदमी थे, इस मुहिम पर चली। ये सब के सब क़बीला ख़ज़रज की शाखा बनू सलमा

1) फ़तहुल-बारी 7/343

से ताल्लुक़ रखते थे और इन के कमांडर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उतैक रज़ि० थे।

इस टीम ने सीधे ख़ैबर का रुख़ किया, क्योंकि अबू राफ़ेअ़ का किला वहीं था। जब क़रीब पहुंचे तो सूरज डूब चुका था और लोग अपने ढोर-डंगर लेकर वापस हो चुके थे। अब्दुल्लाह बिन उतैक रज़ि० ने कहा, तुम लोग यहीं ठहरो, मैं जाता हूं और दरवाज़े के पहरेदार के साथ ख़ूबसूरत बहाना बनाता हूं, हो सकता है अंदर चला जाऊं। इस के बाद वह तशरीफ़ ले गए और दरवाज़े के क़रीब जाकर सर पर कपड़ा डाल कर यूं बैठ गये, मानो ज़रूरत पूरी कर रहे हैं। पहरेदार ने ज़ोर से पुकार कर कहा, "ओ अल्लाह के बंदे! अगर अदंर आना है तो आ जाओ, वरना मैं दरवाज़ा बंद करने जा रहा हूं।"

अब्दुल्लाह बिन उतैक रज़ि० कहते हैं कि मैं अंदर घुस गया और छुप गया। जब सब लोग अंदर आ गये तो पहरेदार ने दरवाज़ा बंद कर के एक खूंटी पर चाबियां लटका दीं। (कुछ देर बाद जब हर तरफ़ सुकून हो गया तो) मैंने उठ कर चाबियां लीं और दरवाज़ा खोल दिया। अबू राफ़ेअ़ कोठे पर रहता था और वहां मज्लिस हुआ करती थी। जब मज्लिस के लोग चले गए तो मैं उस के कोठे की ओर चढ़ा। मैं जो कोई दरवाज़ा भी खोलता था, उसे अंदर की ओर से बंद कर लेता था। मैं ने सोचा अगर लोगों को मेरा पता लग भी गया तो अपने पास उनके पहुंचने से पहल ही अबू राफ़ेअ़ को क़त्ल कर लूंगा। इस तरह मैं उस के पास पहुंच तो गया (लेकिन) वह अपने बाल-बच्चों के दर्मियान एक अंधेरे कमरे में था और मुझे मालूम न था कि वह इस कमरे में किस जगह है। इसलिए मैं ने कहा, अबू राफ़ेअ़! उसने कहा यह कौन है? मैंने झट आवाज़ की तरफ़ लपक कर उस पर तलवार की एक चोट लगाई, लेकिन मैं उस वक़्त हड़बड़ाया हुआ था, इसलिए कुछ न कर सका। उधर उसने ज़ोर की चीख़ मारी, इसलिए मैं झट कमरे से बाहर निकल

गया और ज़रा दूर ठहर कर फिर आ गया और (आवाज़ बदल कर) बोला, अबू राफ़ेअ यह कैसी आवाज़ थी? उस ने कहा, तेरी मां बर्बाद हो, एक आदमी ने अभी मुझे इस कमरे में तलवार मारी है। अब्दुल्लाह बिन उतैक कहते हैं कि अब मैंने एक ज़ोरदार चोट लगाई, जिससे वह ख़ून में लतपत हो गया, लेकिन मैं अब भी उसे क़त्ल न कर सका था, इसलिए मैंने तलवार की नोक उस के पेट पर रख कर दबा दी और वह उस की पीठ तक जा रही। मैं समझ गया कि मैंने उसे क़त्ल कर लिया है, इसलिए अब मैं एक-एक दरवाज़ा खोलता हुआ वापस हुआ और एक सीढ़ी के पास पहुंच कर यह समझते हुए कि नीचे तक पहुंच चुका हूं, पांव रखा तो नीचे गिर पड़ा। चांदनी रात थी, पिंडुली सरक गयी। मैंने पगड़ी से उसे कस कर बांधा और दरवाज़े पर आ कर बैठ गया और जी ही जी में कहा कि आज जब तक यह मालूम न हो जाए कि मैं ने उसे क़त्ल कर लिया है, यहां से नहीं निकलूंगा। चुनांचे जब मुर्ग ने बांग दी तो मौत की ख़बर देने वाला क़िले की दीवार पर चढ़ा और ऊंची आवाज़ से पुकारा कि मैं हिजाज़ के व्यापारी अबू राफ़ेअ की मौत की ख़बर दे रहा हूं। अब मैं अपने साथियों के पास पहुंचा और कहा कि भाग चलो। अल्लाह ने अबू राफ़ेअ को उस के बुरे नतीजे (मौत) तक पहुंचा दिया। चुनांचे मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और आप से पूरी बात बताई, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपना पांव फैलाओ। मैंने अपना पांव फैलाया। आप ने उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा और ऐसा लगा मानो कोई तक्लीफ़ थी ही नहीं।[2]

यह सहीह बुख़ारी की रिवायत है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत यह है कि अबू राफ़ेअ के घर में पांचों सहाबा किराम घुसे थे और सब ने उस के क़त्ल में शिरकत की थी और जिस सहाबी ने उस के ऊपर तलवार

2) बुख़ारी 2/577

का बोझ डाल कर क़त्ल किया था, वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस थे। इस रिवायत में यह भी बताया गया है कि उन लोगों ने जब रात में अबू राफ़ेअ को क़त्ल कर लिया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उतैक की पिंडुली टूट गयी, तो उन्हें उठा लाये और क़िले की दीवार के आर-पार एक जगह चश्मे की नहर गयी हुई थी उसी में घुस गए। उधर यहूदियों ने आग जलाई और हर ओर दौड़-दौड़ कर देखा, जब निराश हो गए तो मक़तूल के पास वापस आ गए। सहाबा किराम रज़ि० वापस हुए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उतैक को लाद कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में ले आए।[3]

इस टुकड़ी की रवानगी ज़ी-क़अदा या ज़िल-हिज्जा सन् 05 हि० में अमल में आई थी।[4]

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहज़ाब और कुरैज़ा की लड़ाइयों से फ़ारिग़ हो गए और सामरिक अपराधियों से निपट चुके तो उन क़बीलों और अरबों के ख़िलाफ़ सिखाने वाले हमले शुरू किए जो सुख-शान्ति की राह में भारी पत्थर बने हुए थे और ज़बरदस्त ताक़त के बग़ैर शान्तिपूर्वक नहीं रह सकते थे। नीचे इस सिलसिले के ग़ज़वात और सराया का संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है।

2. सरिय्या मुहम्मद बिन मस्लमा

अहज़ाब व कुरैज़ा की लड़ाइयों से फ़ारिग़ होने के बाद यह पहली झड़प है, जिस के लिए 30 आदमियों की छोटी से टुकड़ी भेजी गयी।

इस लड़ाई को नज्द के अंदर बकरात के क्षेत्र में ज़रीया के आस-पास क़रता नामी जगह पर भेजा गया था। ज़रीया और मदीना के बीच सात रात की दूरी है। रवानगी 10 मुहर्रम सन् 06 हि० को अमल

---

3) इब्ने हिशाम 2/274-275

4) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/223 और ग़ज़वा-ए-अहज़ाब में दिए गए दूसरे हवाले

में आयी थी और निशाना बनू बक्र बिन किलाब की एक शाखा थी। मुसलमानों ने छापा मारा तो दुश्मन के सारे लोग भाग निकले। मुसलमानों ने चौपाए और बकरियां हांक लीं और मुहर्रम में एक दिन बाक़ी था कि मदीना आ गए। ये लोग बनी हनीफ़ा के सरदार सुमामा बिन असाल हनफ़ी को भी गिरफ़्तार कर लाए थे। वे मुसैलमा कज़्ज़ाब के हुक्म से भेस बदल कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने निकले थे।[5] लेकिन मुसलमानों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और मदीना लाकर मस्जिदे नबवी के एक खम्बे से बांध दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए तो मालूम किया, "सुमामा तुम्हारे नज़दीक क्या है?" उन्होंने कहा, "ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरे नज़दीक ख़ैर है। अगर तुम क़त्ल करो तो एक ख़ून वाले को क़त्ल करोगे और अगर एहसान करो तो एक क़द्र-दान पर एहसान करोगे और अगर माल चाहते हो तो जो चाहो मांग लो। उस के बाद आप ने उन्हें उसी हाल में छोड़ दिया। फिर आप दोबारा गुज़रे तो फिर वही सवाल किया और सुमामा ने फिर वही जवाब दिया। इस के बाद आप तीसरी बार गुज़रे, तो फिर वही सवाल व जवाब हुआ। इस के बाद आप ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया कि सुमामा को आज़ाद कर दो। उन्होंने आज़ाद कर दिया। सुमामा मस्जिदे नबवी के क़रीब खजूर के एक बाग़ में गए, गुस्ल किया और आप के पास वापस आ कर मुसलमान हो गए, फिर कहा, "अल्लाह की क़सम! इस धरती पर कोई चेहरा मेरे नज़दीक आप के चेहरे से ज़्यादा नफ़रत वाला न था, लेकिन अब आप का चेहरा दूसरे तमाम चेहरों से भी ज़्यादा प्रिय हो गया है और अल्लाह की क़सम! इस धरती पर कोई दीन मेरे नज़दीक आप के दीन से ज़्यादा बुरा न था, मगर अब आप का दीन दूसरे तमाम दीनों से ज़्यादा प्रिय हो गया है। आप के सवारों ने मुझे इस हालत में गिरफ़्तार

5) सीरते हलबिया 2/297

किया था कि मैं उमरा का इरादा कर रहा था।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुश रहो! और हुक्म दिया कि उमरा कर लें। जब वह कुरैश के इलाक़े में पहुंचे तो उन्होंने कहा कि सुमामा! तुम बद-दीन हो गए हो? सुमामा ने कहा, नहीं! बल्कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर मुसलमान हो गया हूं और सुनो, अल्लाह की क़सम! तुम्हारे पास यमामा से गेहूं का एक दाना नहीं आ सकता, जब तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस की इजाज़त न दे दें। यमामा मक्का वालों के लिए खेत की हैसियत रखता था। हज़रत सुमामा ने वतन वापस जाकर मक्का के लिए अन्न की रवानगी बंद कर दी जिस से कुरैश बड़ी मुश्किलों में पड़ गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़राबत (रिश्तेदारी) का वास्ता देते हुए लिखा कि सुमामा को लिख दें कि वे ग़ल्ले की रवानगी बंद न करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा ही किया।[6]

3. ग़ज़वा-ए-बनू लहयान

बनू लहयान वही हैं जिन्होंने रजीअ़ नामी जगह पर दस सहाबा किराम रज़ि० को धोखे से घेर कर आठ की हत्या कर दी और दो को मक्का वालों के हाथों बेच दिया था जहां वह बेदर्दी से क़त्ल कर दिए गए थे, लेकिन चूंकि उन का क्षेत्र हिजाज़ के अंदर बहुत दूर मक्का की सीमा से क़रीब स्थित था और उस वक़्त मुसलमानों और कुरैश अ़रबों के दर्मियान बड़ी खींचातानी चल रही थी, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस इलाक़े में बहुत अंदर तक "बड़े दुश्मन" के क़रीब चले जाना उचित नहीं समझते थे, लेकिन जब कुफ़्फ़ार के विभिन्न गिरोहों के दर्मियान फूट पड़ गयी, उन के इरादे

6) अबू दाऊद 2/119, मुख़्तसरुस सीरः (शेख़ अब्दुल्लाह) 292-293

कमज़ोर पड़ गए और उन्होंने हालात के सामने बड़ी हद तक घुटने टेक दिए, तो आप ने महसूस किया कि अब बनू लहयान से रजीअ़ में क़त्ल किए गए लोगों का बदला लेने का वक़्त आ गया है, चुनांचे आप ने रबीउल-अव्वल या जमादिल-ऊला सन् 06 हि० में दो सौ सहाबा के साथ उन का रुख़ किया, मदीना में हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को अपना जानशीं बनाया और ज़ाहिर किया कि आप शाम देश का इरादा रखते हैं। इस के बाद आप धावा बोलते हुए अम्ज और उस्फ़ान के दर्मियान बत्ने ग़रान नामी एक घाटी में—जहाँ आप के सहाबा को शहीद किया गया था——पहुंचे और उन के लिए रहमत की दुआएं कीं। इधर बनू लहयान को आप के आने की ख़बर हो गई थी, इसलिए वे पहाड़ की चोटियों पर निकल भागे और उन का कोई भी आदमी पकड़ में न आ सका। आप उन के भू-भाग में दो दिन ठहरे रहे। इस बीच टुकड़ियां भी भेजीं, लेकिन बनू लहयान न मिल सके। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस्फ़ान का इरादा किया और वहां से दस घुड़सवार कराउल-ग़मीम भेजे ताकि कुरैश को भी आप के आने की ख़बर हो जाए। इस के बाद आप कुल चौदह दिन मदीना से बाहर गुज़ार कर मदीना वापस आ गए।

इस मुहिम से फ़ारिग़ होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बराबर फ़ौजी मुहिमें और टुकड़ियां भेजीं। नीचे उनका संक्षेप में ज़िक्र किया जा रहा है।

4. सरिय्या ग़मर

रबीउल अव्वल या रबीउल आख़िर सन् 06 हि० में हज़रत उकाशा बिन मुहसिन रज़ि० को चालीस लोगों की कमान देकर ग़मर नामी जगह की ओर रवाना किया गया। यह बनू असद के एक सोते का नाम है। मुसलमानों का आना सुन कर दुश्मन भाग गये और मुसलमान उन के दो सौ ऊंट मदीना हांक लाए।

5. सरिय्या ज़ुल क़िस्सा (1)

इसी रबीउल अव्वल या रबीउल-आख़िर सन् 06 हि० में हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० के नेतृत्व में 10 फ़ौजियों की एक टुकड़ी ज़ुल क़िस्सा की ओर रवाना की गयी। यह जगह बनू सालबा के इलाक़े में स्थित थी। दुश्मन जिस की तायदाद एक सौ थी एक जगह छिप गये और जब सहाबा किराम रज़ि० सो गए तो अचानक हमला कर के उन्हें क़त्ल कर दिया, सिर्फ़ मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० बच निकलने में सफल हो सके और वह भी घायल होकर।

6. सरिय्या ज़ुल क़िस्सा (2)

मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० के साथियों की शहादत के बाद रबीउल-आख़िर 06 हि० ही में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को ज़ुलक़िस्सा की ओर रवाना फ़रमाया। उन्होंने चालीस व्यक्तियों को लेकर ज़िक्र किए गए सहाबा किराम रज़ि० की शहादत-गाह का रुख़ किया और रात भर पैदल सफ़र कर के बहुत सवेरे बनू सालबा के इलाक़े में पहुंचते ही छापा मार दिया, लेकिन बनू सालबा इस तेज़ी से पहाड़ों में भागे कि मुसलमानों की पकड़ में न आ सके। सिर्फ़ एक आदमी पकड़ा गया और वह मुसलमान हो गया अलबत्ता मवेशी और बकरियां हाथ आईं।

7. सरिय्या जमूम

यह सरिय्या ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में रबीउल आख़िर सन् 06 हि० में जमूम की ओर भेजा गया। जमूम मर्रज़्ज़हरान (मौजूदा फ़ातिमा घाटी) में बनू सुलैम के एक चश्मे (सोते) का नाम है। हज़रत ज़ैद रज़ि० वहां पहुंचे तो क़बीला मुज़ैना की एक औरत जिस का नाम हलीमा था पकड़ में आ गई। उस ने बनू सुलैम की एक जगह का पता बताया जहां से बहुत मवेशी, बकरियां और क़ैदी हाथ आए। हज़रत ज़ैद रज़ि० यह सब ले कर मदीना वापस आए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने उस मुज़नी औरत को आज़ाद कर के उस की शादी कर दी।

8. सरिय्या ईस

यह सरिय्या एक सौ सत्तर सवारों पर आधारित था और इसे भी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में जमादिल ऊला सन् 06 हि० में ईस की तरफ़ रवाना किया गया था। इस मुहिम में कुरैश के एक क़ाफ़िले का माल हाथ आया जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद हज़रत अबुल-आस के नेतृत्व में यात्रा कर रहा था। अबुल-आस उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे, वह गिरफ़्तार तो न हो सके, मगर भाग कर सीधे मदीना पहुंचे और हज़रत ज़ैनब रज़ि० की पनाह लेकर उनसे कहा कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कह कर क़ाफ़िले का माल वापस दिला दें। हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने यह बात पेश की तो आप ने किसी तरह का दबाव डाले बग़ैर सहाबा किराम रज़ि० से इशारा किया कि माल वापस कर दें। सहाबा किराम रज़ि० ने थोड़ा ज़्यादा और छोटा-बड़ा जो कुछ था सब वापस कर दिया। अबुल-आस रज़ि० सारा माल लेकर मक्का पहुंचे, अमानतें उन के मालिकों के हवाले कीं, फिर मुसलमान होकर मदीना तश्रीफ़ लाए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले ही निकाह की बुनियाद पर हज़रत ज़ैनब रज़ि० को उन के हवाले कर दिया, जैसा कि सहीह हदीस से साबित है।[7]

आप ने पहले ही निकाह की बुनियाद पर इसलिए हवाले कर दिया था कि उस वक़्त तक कुफ़्फ़ार पर मुसलमान औरतों के हराम किए जाने का हुक्म नहीं आया था और एक हदीस में यह जो आया है कि आप ने नये निकाह के साथ रुख़्सत किया था या यह कि छः वर्ष के बाद

7. अबू दाऊद तथा शरह औनुल-मअबूद बाब الى متى ترد عليه امرأته اذا اسلم بعدها

विदाअ़ किया था तो यह न अर्थ के एतिबार सही है न सनद के एतिबार से सहीह है।[8] बल्कि दोनों दृष्टि से ज़ईफ़ (कमज़ोर) है और जो लोग इसी ज़ईफ़ हदीस के क़ाइल हैं, वह एक अनोखी टकराने वाली बात कहते हैं। वह कहते हैं कि अबुल-आ़स सन् 08 हि० के आख़िर में मक्का की विजय से कुछ पहले मुसलमान हुए थे। फिर यह भी कहते हैं कि सन् 08 हि० के शुरू में हज़रत ज़ैनब रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया था हालांकि अगर ये दोनों बातें सहीह मान ली जाएं तो टकराव बिल्कुल स्पष्ट है। सवाल यह है कि ऐसी स्थिति में अबुल-आ़स के इस्लाम लाने और हिजरत करके मदीना पहुंचने के वक़्त हज़रत ज़ैनब ज़िंदा ही कहां थीं उन्हें उन के पास नये निकाह या पुराने निकाह की बुनियाद पर अबुल-आ़स रज़ि० के हवाले किया जाता। हम ने इस विषय पर "बुलूग़ुल मराम" की टिप्पणी में सविस्तार वार्ता की है।

मशहूर साहिबे मग़ाज़ी मूसा बिन उक़्बा का रुजहान इस तरफ़ है कि यह घटना 09 हि० में अबू बसीर और उन के साथियों के हाथों घटी थी, लेकिन यह न सहीह हदीस के मुताबिक़ है न ज़ईफ़ हदीस के।

9. सरिय्या तर्फ़ या तुर्क़

यह सरिय्या भी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में जमादिल-आख़िर में तर्फ़ या तुर्क़ नामी जगह की ओर रवाना किया गया। यह जगह बनू सालबा के क्षेत्र में थी। हज़रत ज़ैद रज़ि० के साथ सिर्फ़ पंद्रह आदमी थे, लेकिन बद्दुओं ने ख़बर पाते ही भागने का रास्ता अपना लिया। उन्हें ख़तरा था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं। हज़रत ज़ैद को चार ऊंट हाथ लगे और वह चार दिन बाद वापस आए।

8) दोनों हदीसों पर वार्तालाप (कलाम) के लिए देखें तोहफ़तुल-अहवज़ी 2/195-196

10. सरिय्या वादियुल कुरा

यह सरिय्या बारह आदमियों पर सम्मिलित था और इस के कमांडर भी हज़रत ज़ैद रज़ि० ही थे। वह रजब सन् 06 हि० में वादियुल कुरा की ओर रवाना हुए। मक़सद दुश्मन की चलत-फिरत का पता लगाना था, मगर वादियुल कुरा के निवासियों ने उन पर हमला कर के नौ सहाबा को शहीद कर दिया और सिर्फ़ तीन बच सके, जिन में एक ख़ुद हज़रत ज़ैद रज़ि० थे।[9]

11. सरिय्या ख़ब्त

इस सरिय्या का ज़माना रजब सन् 08 हि० बताया जाता है। मगर आगे- पीछे की घटनाएं बताती हैं कि यह हुदैबिया से पहले की घटना है। हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे तीन सौ सवारों का जत्था रवाना फ़रमाया। हमारे अमीर अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० थे कुरैश के एक क़ाफ़िले का पता लगाना था। हम इस मुहिम के दौरान सख़्त भूख से दो चार हुए, यहां तक कि पत्ते झाड़-झाड़ कर खाने पड़े। इसी लिए इस का नाम जैशे ख़ब्त पड़ गया (ख़ब्त झाड़े जाने वाले पत्तों को कहते हैं)। आख़िर एक आदमी ने तीन ऊंट ज़िब्ह किये, फिर तीन ऊंट ज़िब्ह किए, फिर तीन ऊंट ज़िब्ह किए, लेकिन इस के बाद अबू उबैदा रज़ि० ने उसे मना कर दिया। फिर उस के बाद ही समुद्र ने अंबर नामी एक मछली फेंक दी, जिसे हम आधे महीने तक खाते रहे और उस का तेल भी लगाते रहे, यहां तक कि हमारे जिस्म पहली हालत पर पलट आए और हम तन्दुरुस्त हो गए। अबू उबैदा रज़ि० ने उस की पसली का एक कांटा लिया और सेना के भीतर सब से लम्बे आदमी और सब से लम्बे ऊंट को देख कर आदमी

---

9) रहमतुल-लिल-आलमीन, 2/226 इन सराया (सरिय्या का बहु वचन) की तफ़सीलात के लिए रहमतुल-लिल-आलमीन, ज़ादुल-मआद 2/120-122 और तलक़ीहु फ़ुहूमि अहलिल-असर के हाशिये प्र० 28-29 में देखी जा सकती हैं।

को उस पर सवार किया और वह (सवार होकर) कांटे के नीचे से गुज़र गया। हम ने उस के मांस के कुछ टुकड़े तोशे के तौर पर रख लिए और जब मदीना पहुंचे तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस का ज़िक्र किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "यह एक रोज़ी है जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निकाली थी, इसका मांस तुम्हारे पास हो तो हमें भी खिलाओ।" हम ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में कुछ मांस भेज दिया।[10] घटना का विवेचन समाप्त हुआ----------

ऊपर जो यह कहा गया है कि इस घटना का आगा-पीछा बताता है कि यह हुदैबिया से पहले की है। इसकी वजह यह है कि हुदैबिया के समझौते के बाद मुसलमान कुरैश के किसी क़ाफ़िले से छेड़-छाड़ नहीं करते थे।

---

10) बुख़ारी 2/625-626, मुस्लिम 2/145-146

ग़ज़वा-ए-बनिल मुस्तलिक़ या ग़ज़वा-ए-मुरैसीअ़(सन् 05 या 06 हि०)

यह लड़ाई सामरिक दृष्टि से कोई भारी भरकम लड़ाई नहीं है, मगर इस हैसियत से इस का बड़ा महत्त्व है कि इस में कुछ घटनाएं ऐसी हुई हैं जिन की वजह से इस्लामी समाज में बेचैनी और हलचल मच गई और जिस के नतीजे में एक ओर मुनाफ़िक़ों पर से परदा हटा तो दूसरी ओर ऐसे ताज़ीरी क़ानून लागू हुए जिन से इस्लामी समाज को महानता, श्रेष्ठता और मन की पवित्रता की एक ख़ास शक्ल मिली। हम पहले लड़ाई का वर्णन करेंगे। इस के बाद इन घटनाओं का विवरण देंगे।

यह लड़ाई-----जीवनी-लेखकों के मुताबिक़ शअ़बान सन् 05 या 06 हि०[1] में लड़ी गई। इस की वजह यह हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

---

1) इसका सुबूत यह दिया जाता है कि इसी ग़ज़वे से वापसी में इफ़्क (हज़रत आएशा (रज़ि०) पर झूठा इल्ज़ाम लगाया जाना) की घटना घटी और मालूम है कि यह घटना हज़रत ज़ैनब से नबी (सल्ल०) की शादी और मुसलमान औरतों के लिए परदे का हुक्म उतरने के बाद घटी थी। चूंकि हज़रत ज़ैनब की शादी 5वें हिजरी साल के आख़िर अर्थात ज़ी-क़अ़दा या ज़िल-हिज्जा में हुई थी और इस बात पर सब सहमत हैं कि यह ग़ज़वा शअ़बान ही के महीने में हुआ था इस लिए यह शअ़बान 5 हिजरी का नहीं बल्कि 6 हिजरी का हो सकता है। दूसरी ओर जो लोग इस ग़ज़वे का सन् शअ़बान 5 हिजरी बताते हैं उनका कहना यह है कि हदीसे इफ़्क में अह्ले इफ़्क को लेकर सअ़द बिन मुआज़ और सअ़द बिन उबादा (रज़ि०) के बीच अपवाद (सख़्त कलामी) की बात कही गई है।

व सल्लम को यह ख़बर मिली कि बनू मुस्तलिक़ का सरदार हारिस बिन अबी ज़िरार आप से लड़ने के लिए अपने अरबों और कुछ दूसरे क़बीलों को साथ ले कर आ रहा है। आपने बुरैदा बिन हसीब असलमी रज़ि० को हालात मालूम करने के लिए रवाना फ़रमाया। उन्होंने उस क़बीले में जा कर हारिस बिन अबी ज़िरार से मुलाक़ात और बातचीत की और वापस आ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हालात से सूचित किया।

जब आप को ख़बर के सहीह होने का अच्छी तरह यक़ीन आ गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को तैयारी का हुक्म दिया और बहुत जल्द रवाना हो गए। रवानगी 2 शअ़बान को हुई। इस लड़ाई में आप के साथ मुनाफ़िक़ों की भी एक जमाअ़त थी जो

और मालूम है कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि०) की 5 हिजरी के आख़िर में ग़ज़वा-ए-बनू क़ुरैज़ा के बाद मौत हो गई थी इस लिए इफ़्क की घटना के वक़्त इनकी मौजूदगी इस बात का सुबूत है कि यह घटना और यह ग़ज़वा 6 हिजरी मे नहीं बल्कि 5 हिजरी में हुआ।

इसका जवाब पहले पक्ष ने यह दिया है कि हदीसे इफ़्क में हज़रत सअद बिन मुआज का नाम लेना रावी (हदीस बयान करने वाले) का भ्रम है क्योंकि यही हदीस हज़रत आईशा (रज़ि०) से इब्ने इस्हाक़ ने ज़हरी अन अबदुल्लाह बिन अतबा अन आईशा द्वारा रिवायत की है तो इसमें सअद बिन मुआज की जगह सैयद बिन हुजैर का नाम लिया है चुनाचे इमाम अबू मुहम्मद बिन हज़्म फ़रमाते है कि निसंदेह यही सही है और सअद बिन मुआज़ का नाम लेना भ्रम है।(ज़ादुल-मआद 2/115)

मेरा कहना है अगरचे पहले पक्ष का सुबूत काफ़ी ठोस है (और इसलिए पहले मैं भी इसी को मानता था) लेकिन ग़ोर करें तो मालूम होगा कि इस सुबूत का असल नुक्ता यह है कि नबी (सल्ल०) से हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) की शादी 5 हिजरी के आख़िर में हुई थी जबकि इस पर कुछ अनुमानों के सिवा कोई ठोस सुबूत नहीं है। जबकि इफ़्क की घटना में और इसके बाद हज़रत सअद बिन मुआज़ (मृत 5 हिजरी) की मौजूदगी बहुत सी सही हदीसों से साबित है जिन्हें भ्रम कह देना मुश्किल है। इसलिए ऐसा क्यों नही हो सकता कि हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) की शादी 4 हिजरी के आख़िर या 5 हिजरी के शुरु में हुई हो जैसा कि कुछ किताबों मे दिया गया है। और इफ़्क की घटना और ग़ज़वा-ए-बनिल-मुसतलिक़ शअबान 5 हिजरी में हुई हो।

इस से पहले किसी लड़ाई में नहीं गयी थी। आप ने मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को (और कहा जाता है कि हज़रत अबू ज़र रज़ि० को और कहा जाता है कि नुमैला रज़ि० बिन अब्दुल्लाह लैसी को) सौंपा था। हारिस बिन अबी ज़िरार ने इस्लामी सेना की ख़बर लाने के लिए एक जासूस भेजा था, लेकिन मुसलमानों ने उसे गिरफ़्तार कर के क़त्ल कर दिया।

जब हारिस बिन अबी ज़िरार और उस के साथियों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी और अपने जासूस के क़त्ल किए जाने की जानकारी हुई तो वे बहुत डरे और जो अरब उन के साथ थे, वे सब बिखर गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुरैसीअ़ सोते[2] (चश्मे) तक पहुंचे तो बनू मुस्तलिक़ लड़ने के लिए तैयार हो गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम ने भी सफ़ बंदी कर ली। पूरी इस्लामी सेना के झंडा बरदार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० थे और ख़ास अंसार का झंडा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के हाथ में था। कुछ देर दोनों फ़रीक़ों में तीरों का तबादला हुआ, इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से सहाबा किराम रज़ि० ने यकायक हमला किया और विजयी हो गए। मुश्रिकों ने पराजय का मुंह देखा, कुछ मारे गए, औरतों और बच्चों को क़ैद कर लिया गया। मवेशी और बकरियां भी हाथ आईं। मुसलमानों का सिर्फ़ एक आदमी मारा गया जिसे एक अंसारी ने दुश्मन का आदमी समझ कर मार दिया था।

इस लड़ाई के बारे में इतिहासकारों का बयान यही है, लेकिन अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि यह वहम (भ्रम) है, क्योंकि इस में लड़ाई नहीं हुई थी, बल्कि आप ने सोते के पास उन पर छापा मार कर औरतों, बच्चों और माल-मवेशी पर क़ब्ज़ा कर लिया था जैसा कि

2) "मुरैसीअ" क़दीद के क़रीब समुद्र के किनारे बनू मुस्तलिक़ एक सोते (चश्मे) का नाम था।

सहीह बुख़ारी में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू मुस्तलिक़ पर छापा मारा और वह ग़ाफ़िल थे।[3] हदीस के आख़िर तक)

क़ैदियों में हज़रत जुवैरिया रज़ि० भी थीं जो बनू मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन अबी ज़िरार की बेटी थीं। वह साबित बिन क़ैस के हिस्से में आईं। साबित ने उन्हें मकातिब[4] बना लिया, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की ओर से निश्चित रक़म अदा कर के उन से शादी कर ली। इस शादी की वजह से मुसलमानों ने बनू मुस्तलिक़ के एक सौ घरानों को जो मुसलमान हो चुके थे, आज़ाद कर दिया। कहने लगे कि ये लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ससुराल के लोग हैं।[5]

यह है उस लड़ाई की रिपोर्ट। बाक़ी रहीं वे घटनाएं जो इस लड़ाई में सामने आयीं, तो चूंकि उन की बुनियाद अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों का सरदार और उस के साथी थे। इसलिए अनुचित न होगा कि पहले इस्लामी समाज के भीतर उन के आचरण और रीति-नीति की एक झलक पेश कर दी जाए और बाद में घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया जाए।

ग़ज़वा-ए-बनिल मुस्तलिक़ से पहले मुनाफ़िक़ों का रवैया

हम कई बार ज़िक्र कर चुके हैं कि अब्दुल्लाह बिन उबई को इस्लाम और मुसलमानों से आम तौर से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ास तौर से बड़ी चिढ़ थी। चूंकि औस व ख़ज़रज उस के नेतृत्व पर सहमत हो चुके थे और उस को ताज

---

3) बुख़ारी किताबुल-इतक़ 1/345, फ़तहुल-बारी 7/431

4) मकातिब उस दास या दासी को कहते हैं जो अपने मालिक से यह निश्चित कर ले कि वह एक निश्चित धन मालिक को दे कर उसकी दासता से आज़ाद हो जाएगा

5) ज़ादुल-मआद 2/112-113, इब्ने हिशाम 2/289-290,294-295

पहनाने के लिए मूंगों का ताज बनाया जा रहा था कि इतने में मदीना के अंदर इस्लाम की किरणें पहुंच गईं और लोगों की तवज्जोह इब्ने उबई से हट गई इसलिए उसे एहसास था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस की बादशाहत छीन ली है।

उस का यह द्वेष और जलन हिजरत की शुरूआत ही से साफ़ था जबकि अभी उस ने इस्लाम ज़ाहिर भी नहीं किया था, फिर इस्लाम ज़ाहिर करने के बाद उस का यही रवैया रहा। चुनांचे उस के इस्लाम ज़ाहिर करने से पहले एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गधे पर सवार हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० की बीमार पुर्सी के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक मज्लिस से गुज़र हुआ, जिस में अब्दुल्लाह बिन उबई भी था। उस ने अपनी नाक ढक ली और बोला हम पर धूल न उड़ाओ। फिर जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज्लिस वालों पर कुरआन की तिलावत फ़रमाई, तो कहने लगा, "आप अपने घर में बैठिए, हमारी मज्लिस में हमें न घेरिए[6]"

यह इस्लाम ज़ाहिर होने से पहले की बात है, लेकिन बद्र की लड़ाई के बाद जब उसने हवा का रुख़ देख कर इस्लाम अपनाया, तब भी वह अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों का दुश्मन ही रहा और इस्लामी समाज में टूट-फूट पैदा करने और इस्लाम की आवाज़ को कमज़ोर करने की बराबर तदबीरें करता रहा। वह इस्लाम-दुश्मनों से बड़ा ख़ुलूस भरा ताल्लुक़ रखता था, चुनांचे बनू कैनुक़ाअ़ के मामले में उसने बड़े ही अनुचित तरीक़े से दख़ल अंदाज़ी की थी। (जिसका ज़िक्र पिछले पृष्ठों में आ चुका है) इसी तरह उसने उहद की लड़ाई में भी शरारत, वायदा-ख़िलाफ़ी, मुसलमानों में तोड़-फोड़ और उन की पंक्तियों में बेचैनी और खलबली पैदा करने की कोशिशें की थीं। (इस का भी ज़िक्र गुज़र चुका है)

---

6) इब्ने हिशाम 1/584, 587, बुख़ारी 2/924, मुस्लिम 2/109

इस मुनाफ़िक़ की धोखाधड़ी और चालबाज़ियों का हाल यह था कि यह अपने इस्लाम ज़ाहिर करने के बाद हर जुमा को जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुत्बा देने के लिए तशरीफ़ लाते तो पहले खुद खड़ा हो जाता और कहता, "लोगो! यह तुम्हारे दर्मियान अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह ने इनके ज़रिए तुम्हें मान सम्मान दिया है, इसलिए इनकी मदद करो, इन्हें ताक़त पहुंचाओ और इनकी बात सुनो और मानो।" इसके बाद बैठ जाता और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ कर खुत्बा देते। फिर उसकी ढिठाई और बेहयाई उस वक़्त इंतिहा को पहुंच गयी जब उहद की लड़ाई के बाद पहला जुमा आया क्योंकि----- यह आदमी उस लड़ाई में अपनी सब से बुरी धोखाधड़ी के बावजूद खुत्बा से पहले-----फिर खड़ा हो गया और वही बातें दोहरानी शुरू कीं जो इससे पहले कहा करता था, लेकिन अब की बार मुसलमानों ने हर ओर से उस के कपड़ों को पकड़ कर कहा, "ओ अल्लाह के दुश्मन बैठ जा! तू ने जो-जो हरकतें की हैं, इसके बाद अब तू इस लायक़ नहीं रह गया है। इसके बाद वह लोगों की गरदनें फलांगता हुआ और यह बड़बड़ाता हुआ बाहर निकल गया कि मैं इन साहब की ताईद के लिए उठा तो मालूम होता है कि मैं ने कोई अपराध-पूर्ण बात कह दी। संयोग से दरवाज़े पर एक अंसारी साहबी से मुलाक़ात हो गयी। उन्होंने कहा, तेरी बर्बादी हो वापस चल! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ कर देंगे। उसने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं चाहता कि वह मेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें।[7]

इसके अलावा इब्ने उबई ने बनू नज़ीर से भी संबंध बना रखा था और उनसे मिल कर मुसलमानों के ख़िलाफ़ परदे के पीछे षड्यंत्र रचा करता था।

---

7) इब्ने हिशाम 2/105

इसी तरह इब्ने उबई और उसके साथियों ने खाई की लड़ाई में मुसलमानों के भीतर बेचैनी और खलबली मचाने और दबदबे में रखने के लिए तरह-तरह के जतन किए थे, जिस का ज़िक्र अल्लाह ने सूरः अहज़ाब की नीचे लिखी आयतों में किया है—

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ○
وَإِذْ قَالَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ
النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۖ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ○ وَلَوْ دُخِلَتْ
عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ○ وَلَقَدْ كَانُوا
عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ○ قُل لَّن يَنفَعَكُمُ
الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ○ قُلْ مَن ذَا الَّذِي
يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ
اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ○ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا
وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ○ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ
إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم
بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ○ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ
يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُم مَّا
قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ○

"और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग, जिन के दिलों में बीमारी है कह रहे थे, कि हम से अल्लाह उस के रसूल ने जो वायदा किया था, वह

सिर्फ़ धोखा था और जब उन में से एक गिरोह कह रहा था कि ऐ यस्रिब वालो! अब तुम्हारे लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए पलट चलो और उन का एक फ़रीक़ यह कह कर नबी से इजाज़त तलब कर रहा था कि हमारे घर खुले हुऐ हैं। (यानी उन की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं) हालांकि वे खुले पड़े न थे, ये लोग सिर्फ़ भागना चाहते थे और अगर शहर के हर ओर से उन पर धावा बोल दिया गया होता और उन से फ़ित्ने (में शरीक होने) का सवाल किया गया होता तो ये उस में जा पड़ते और मुश्किल ही से कुछ रुकते। उन्होंने इस से पहले अल्लाह से वायदा किया था कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह से किए हुए वायदे की पूछ-ताछ होकर रहनी है। आप कह दीजिए कि तुम मौत या क़त्ल से भागोगे तो यह भगदड़ तुम्हें फ़ायदा न पहुंचाएगी और ऐसी स्थिति में फ़ायदा उठाने का थोड़ा ही मौक़ा दिया जाएगा। आप कह दें कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है अगर वह तुम्हारे लिए बुरा इरादा करे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और ये लोग अल्लाह के सिवा किसी और को हिमायत करने वाला और मदद करने वाला नहीं पाएंगे। अल्लाह तुम में से उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो रोड़े अटकाते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारी तरफ़ आओ और जो लड़ाई में सिर्फ़ थोड़ा सा हिस्सा लेते हैं जो तुम्हारा साथ देने में बड़े ही कंजूस हैं। जब ख़तरा आ पड़े तो आप देखेंगे कि आप की तरफ़ इस तरह दीदे फिरा-फिरा कर देखते हैं जैसे मरने वाले पर मौत छा रही है और जब ख़तरा टल जाए तो माल व दौलत के लोभ में तुम्हारा स्वागत तेज़ी के साथ चलती हुई ज़ुबानों से करते हैं। ये लोग हक़ीक़त में ईमान ही नहीं लाए हैं, इसलिए अल्लाह ने इन के अमल बेकार कर दिए और अल्लाह पर यह बात आसान है। ये समझते हैं कि हमलावर गिरोह अभी गए नहीं हैं और अगर वे (फिर पलट कर) आ जाएं तो ये चाहेंगे कि बद्दुओं के बीच तुम्हारी ख़बर पूछते रहें। अगर ये तुम्हारे बीच रहें भी तो कम ही लड़ाई में हिस्सा लेंगे।''

इन आयातों में मौक़े के हिसाब से, मुनाफ़िक़ों के सोचने का ढंग, काम के तरीक़े, मनोविज्ञान और मतलबी और अवसरवादिता का एक पूर्ण चित्र खींच दिया गया है।

इन सबके बावजूद यहूदी मुनाफ़िक़ और मुश्रिक, ग़रज़ सारे ही इस्लाम के दुश्मनों को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि इस्लाम के ग़ालिब होने की वजह से भौतिक श्रेष्ठता यानी हथियार, सेना और संख्या की अधिकता नहीं है, बल्कि इस की वजह वह खुदा-परस्ती और नैतिक मूल्य हैं जिन से पूरा इस्लामी समाज और इस्लाम धर्म से ताल्लुक़ रखने वाला हर व्यक्ति बंधा हुआ है, इन इस्लाम दुश्मनों को यह भी मालूम था कि इस लाभ का स्रोत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़ात है जो इन नैतिक मूल्यों का चमत्कार की हद तक सब से ऊंचा नमूना है।

इसी तरह ये इस्लाम दुश्मन चार-पांच साल तक साथ रह कर भी यह समझ चुके थे कि इस दीन और इस के मानने वालों को हथियारों के बल पर समाप्त करना संभव नहीं। इसलिए उन्होंने शायद यह तय किया कि नैतिक पहलू को बुनियाद बना कर इस दीन के ख़िलाफ़ बड़े पैमाने पर प्रोपेगंडे की लड़ाई छेड़ दी जाए और इस का पहला ख़ास निशाना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व को बनाया जाए चूंकि मुनाफ़िक़ मुसलमानों की पंक्ति में पांचवां कालम थे और मदीना के अंदर ही रहते थे, मुसलमानों से बे-झिझक मिल-जुल सकते थे और उन की भावनाओं को किसी भी "मुनासिब" मौक़े पर आसानी के साथ भड़का सकते थे। इसलिए इस प्रोपेगन्डे की ज़िम्मेदारी उन मुनाफ़िक़ों ने अपने सर ली, या उन के सर डाली गयी और अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने उस के नेतृत्व का बेड़ा उठाया।

उन का यह प्रोग्राम उस वक़्त तनिक ज़्यादा खुल कर सामने आया, जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ दी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से शादी की। चूंकि अ़रब का यह चलन चला आ रहा था कि वे मुंह-बोले बेटे को अपने सगे लड़के का दर्जा देते थे और उस की बीवी को सगे बेटे की बीवी की तरह हराम समझते थे, इसलिए जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० से शादी की तो मुनाफ़िक़ों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ शोर व हंगामा करने के लिए अपनी समझ से दो कमज़ोर पहलू हाथ आए।

एक यह कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० आप की पांचवीं बीवी थीं, जबकि क़ुरआन ने चार से ज़्यादा बीवियां रखने की इजाज़त नहीं दी है, इसलिए यह शादी कैसे दुरुस्त हो सकती है?

दूसरे यह कि ज़ैनब रज़ि० आप के बेटे------यानी मुंह-बोले बेटे------की बीवी थीं, इसलिए अ़रब के चलन के मुताबिक़ उन से शादी करना बड़ा ही संगीन जुर्म और बड़ा गुनाह था। चुनांचे इस सिलसिले में ख़ूब प्रचार किया गया और तरह-तरह की कहानियां घड़ी गयीं। कहने वालों ने यहां तक कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ैनब रज़ि० को अचानक देखा और उन के सौन्दर्य से इतना प्रभावित हुए कि नक़द दिल दे बैठे और जब उन के बेटे ज़ैद रज़ि० को इस का ज्ञान हुआ तो उन्होंने ज़ैनब रज़ि० का रास्ता मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ाली कर दिया।

मुनाफ़िक़ों ने इस कहानी का इतने ज़ोर-शोर से प्रचार किया कि उस के असर (प्रभाव) हदीस की किताबों और क़ुरआन की तफ़्सीरों में अब तक चले आ रहे हैं। उस वक़्त यह सारा प्रोपेगंडा कमज़ोर और भोले-भाले मुसलमानों के अंदर इतना असरदार साबित हुआ कि आख़िरकार क़ुरआन मजीद में इस के बारे में खुली आयतें उतरीं जिन

के भीतर छिपे संदेहों की बीमारी का पूरा-पूरा इलाज था। इस प्रचार के फैलाव का अंदाज़ा इस से किया जा सकता है कि सूरः अहज़ाब की शुरूआत ही इस आयत से हुई-------

يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا

"ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह से डरो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से न दबो, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।" (33:10)

यह मुनाफ़िक़ों की हरकतों और कार्यवाहियों की ओर एक छोटा सा इशारा है और उस का एक बयान है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये सारी हरकतें सब्र, नर्मी और मेहरबानी के साथ सहन कर रहे थे और आम मुसलमान भी उन की शरारतों से दामन बचा कर सब्र और बर्दाश्त के साथ रह रहे थे, क्योंकि उन्हें तजुर्बा था कि मुनाफ़िक़ कुदरत की तरफ़ से रह-रह कर रुसवा किए जाते रहेंगे। चुनांचे इर्शाद है----

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ

"वे देखते नहीं कि उन्हें हर साल एक बार या दो बार फ़िल्ने में डाला जाता है, फिर न तो वे तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं।" (9:126)

ग़ज़वा-ए-बनिल मुस्तलिक़ में मुनाफ़िक़ों का रोल

जब बनू मुस्तलिक़ की लड़ाई हुई और मुनाफ़िक़ भी उस में शरीक हुए तो उन्होंने ठीक वही किया जो अल्लाह ने इस आयत में फ़रमाया है----

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَّلَا أَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ

"अगर वे तुम्हारे अदंर निकलते तो तुम्हें और बिगाड़ ही से दो-चार करते और बिगाड़ की खोज में तुम्हारे भीतर कोशिश करते" (9:47)

चुनांचे इस लड़ाई में उन्हें भड़ास निकालने के दो अवसर मिले जिस से लाभ उठा कर उन्होंने मुसलमानों की पंक्तियों में अच्छी-भली बेचैनी और बिखराव पैदा कर दिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ सब से बुरा प्रचार किया। इन दोनों अवसरों के कुछ विवरण यह हैं———

1. मदीना से सब से कमीने आदमी को निकालने की बात

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा-ए-बनू मुस्तलिक़ से फ़ारिग़ होकर अभी मुरैसीअ़ सोते पर ही ठहरे हुए थे कि कुछ लोग पानी लेने गए। उन्ही में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का एक मज़दूर भी था जिस का नाम जहजाह गिफ़ारी था। पानी पर एक और आदमी सिनान बिन वबर जोहनी से उस की धक्कम-धक्का हो गयी और दोनों लड़ पड़े फिर जोहनी ने पुकारा, या मअ़शरल् अंसार (ऐ अंसार के लोगो मदद को पहुंचो) और जहजाह ने आवाज़ दी, या मअ़शरल्-मुहाजिरीन (ऐ मुहाजिर के लोगो! मदद को पहुंचो।) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (ख़बर मिलते ही वहां तशरीफ़ ले गए और) फ़रमाया, "मैं तुम्हारे अंदर मौजूद हूं और जाहिलियत की पुकार पुकारी जा रही है? इसे छोड़ दो, यह बदबूदार है।"

इस घटना की ख़बर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को हुई तो गुस्से से भड़क उठा और बोला, "क्या इन लोगों ने ऐसी हरकत की है? ये हमारे इलाक़े में आ कर अब हमारे ही दुश्मन और हरीफ़ हो गए हैं? अल्लाह की क़सम! हमारी और इन की हालत पर तो वही मिसाल सही बैठती है जो पहलों ने कही है कि अपने कुत्ते को पाल-पोस कर मोटा ताज़ा करो ताकि वह तुम्ही को फाड़ खाए। सुनो! अल्लाह की क़सम! अगर हम मदीना वापस हुए तो हम में सब से इज़्ज़तदार आदमी सब

से ज़लील आदमी को निकाल बाहर करेगा।" फिर हाज़िर लोगों की ओर तवज्जोह कर के कहा, "यह मुसीबत तुम ने खुद मोल ली है। तुम ने इन्हें अपने शहर में उतारा और अपने माल बांट कर दिए। देखो! तुम्हारे हाथों में जो कुछ है, अगर उसे देना बंद कर दो, तो ये तुम्हारा शहर छोड़ कर कहीं और चलते बनेंगे।"

उस वक़्त मज्लिस में एक नवजवान सहाबी हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० भी मौजूद थे। उन्होंने आ कर अपने चचा को पूरी बात कह सुनायी। उन के चचा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० भी मौजूद थे, बोले, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अब्बाद बिन बिश्र रज़ि० से कहिए कि उसे क़त्ल कर दें। आप ने फ़रमाया, उमर रज़ि०! यह कैसे मुनासिब रहेगा, लोग कहेंगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों को क़त्ल कर रहा है, नहीं बल्कि तुम कूच का एलान कर दो। यह ऐसा वक़्त था जिस में आप कूच नहीं फ़रमाया करते थे। लोग चल पड़े तो हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ख़िदमत में हाज़िर हुए और सलाम करके अर्ज़ किया कि आज आप ने बे-वक़्त कूच किया है। आप ने फ़रमाया, क्या तुम्हारे साहब (यानी इब्ने उबई) ने जो कुछ कहा है, तुम्हें उस की ख़बर नहीं हुई? उन्होंने मालूम किया, उस ने क्या कहा है? आप ने फ़रमाया, उस का ख़्याल है कि अगर वह मदीना वापस हुआ तो सब से इज़्ज़तदार आदमी सब से ज़लील आदमी को मदीना से बाहर निकाल देगा। उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर आप चाहें तो उसे मदीने से निकाल बाहर करें। अल्लाह की क़सम! वह ज़लील है और आप इज़्ज़त वाले हैं।" इस के बाद उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उस के साथ नर्मी का व्यवहार कीजिए, क्योंकि अल्लाह की क़सम! अल्लाह आप को हमारे पास उस वक़्त ले आया जब उस की क़ौम उस की ताजपोशी के

लिए मूंगों का ताज तैयार कर रही थी, इसलिए अब वह समझता है कि आप ने उस से उस की बादशाहत छीन ली है।"

फिर आप शाम तक पूरा दिन और सुबह तक पूरी रात चलते रहे, बल्कि अगले दिन के शुरू के वक़्तों में इतनी देर तक सफ़र जारी रखा कि धूप से तक्लीफ़ होने लगी। इस के बाद उतर कर पड़ाव डाला गया तो लोग ज़मीन पर जिस्म रखते ही बेख़बर हो गए। आप का मक़सद भी यही था लोगों को सुकून से बैठ कर गप लड़ाने का मौक़ा न मिले।

इधर अब्दुल्लाह बिन उबई को जब पता चला कि ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० ने भांडा फोड़ दिया है तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अल्लाह की क़सम खा कर कहने लगा कि उस ने जो बात आप को बताई है, वह बात मैंने नहीं कही है और न उसे ज़ुबान पर लाया हूं। उस वक़्त वहां अंसार के जो लोग भी मौजूद थे, उन्होंने भी कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अभी वह लड़का है, मुम्किन है उसे वहम (भ्रम) हो गया हो और इस आदमी ने जो कुछ कहा था, उसे ठीक-ठीक न याद रख सका हो।" इसलिए आप ने इब्ने उबई की बात सच मान ली। हज़रत ज़ैद रज़ि० का बयान है कि इस पर मुझे ऐसा ग़म हुआ कि वैसे ग़म से मैं कभी दो-चार नहीं हुआ था। मैं सदमे से अपने घर में बैठा रहा, यहां तक कि अल्लाह ने सूरः मुनाफ़िक़ून नाज़िल फ़रमाई जिस में दोनों बातों का ज़िक्र है-------

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا

"ये मुनाफ़िक़ वही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उन पर ख़र्च न करो, यहां तक कि वे चलते बनें।" (63:7)

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ـ

"ये मुनाफ़िक़ कहते हैं कि अगर हम मदीना वापस हुए तो इस से इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा।" (63:8)

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि (इस के बाद) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बुलवाया और ये आयतें पढ़ कर सुनाई, फिर फ़रमाया, अल्लाह ने तुम्हारी तस्दीक़ कर दी।[8]

इस मुनाफ़िक़ के सुपुत्र जिनका नाम अब्दुल्लाह रज़ि० ही था, उस के बिल्कुल विरुद्ध, बड़े नेक इंसान और चुने हुए सहाबियों में से थे। उन्होंने अपने बाप से अलगाव अपना लिया और मदीना के दरवाज़े पर तलवार सौंत कर खड़े हो गए। जब उन का बाप अब्दुल्लाह बिन उबई वहां पहुंचा तो उस से बोले अल्लाह की क़सम! आप यहां से आगे नहीं बढ़ सकते, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इजाज़त दे दें, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इज़्ज़त वाले हैं और आप ज़िल्लत वाले हैं। इस के बाद जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां तशरीफ़ लाए, तो आप ने उस को मदीना में दाख़िल होने की इजाज़त दी और तब साहबज़ादे ने बाप का रास्ता छोड़ा। अब्दुल्लाह बिन उबई के इन्ही साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने आप से यह भी अर्ज़ किया था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप इसे क़त्ल करने का इरादा रखते हों तो मुझे फ़रमाइए, अल्लाह की क़सम! मैं इस का सर आप की ख़िदमत में हाज़िर कर दूंगा।[9]

2. इफ़्क की घटना

इस लड़ाई की दूसरी अहम घटना इफ़्क की घटना है। इस घटना का सार यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा यह था कि सफ़र में जाते हुए पाक बीवियों के दर्मियान कुरआ अंदाज़ी फ़रमाते, जिस का कुरआ निकलता, उसे साथ ले जाते। इस

---

8 बुख़ारी 1/499, 2/227-229, इब्ने हिशाम 2/290-292

9 इब्ने हिशाम 2/290-292, मुख़्तसरुस-सीरा (शैख़ अब्दुल्लाह) 277

लड़ाई में कुरआ हज़रत आइशा रज़ि० के नाम निकला और आप उन्हें साथ ले गए। लड़ाई से वापसी में एक जगह पड़ाव डाला गया। हज़रत आइशा अपनी ज़रूरत के लिए गईं और अपनी बहन का हार जिसे उधार ले गयी थीं, खो बैठीं। एहसास होते ही तुरन्त उस जगह वापस गयीं जहां हार ग़ायब हुआ था। इसी बीच वे लोग आ गए जो आप का हौदज (पालकी) ऊंट पर लादा करते थे। उन्होंने समझा आप हौदज के अंदर तशरीफ़ रखती हैं, इसलिए उसे ऊंट पर लाद दिया और हौदज के हल्केपन पर न चौंके, क्योंकि हज़रत आइशा रज़ि० अभी नव उम्र थीं, बदन मोटा और भारी न था। साथ ही चूंकि कई आदमियों ने मिलकर हौदज उठाया था इसलिए भी हल्केपन पर ताज्जुब न हुआ। अगर सिर्फ़ एक या दो आदमी उठाते तो उन्हें ज़रूर महसूस हो जाता।

बहरहाल हज़रत आइशा रज़ि० हार ढूंढ कर पड़ाव पर पहुंचीं तो पूरी सेना जा चुकी थी और मैदान बिल्कुल ख़ाली पड़ा था, न कोई पुकारने वाला था न कोई जवाब देने वाला। वह इस ख़्याल से वहीं बैठ गईं कि लोग उन्हें नहीं पाएंगे तो पलट कर वहीं खोजने आएंगे लेकिन अल्लाह अपनी बात पर ग़ालिब है वह अर्श से जो चाहता है करता है चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० की आंख लग गई और वह सो गईं। फिर सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ि० की यह आवाज़ सुन कर जागीं कि اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी--------? सफ़वान लश्कर के पिछले हिस्से में सोए थे, उनकी आदत भी अधिक सोने की थी। उन्होंने जब हज़रत आइशा रज़ि० को देखा तो पहचान लिया, क्योंकि वह परदे का हुक्म नाज़िल होने से पहले भी उन्हें देख चुके थे। उन्होंने इन्ना लिल्लाह पढ़ी और अपनी सवारी बिठा कर हज़रत आइशा रज़ि० के क़रीब कर दी। हज़रत आइशा रज़ि० उस पर सवार हो गईं। हज़रत सफ़वान की ज़ुबान से इन्ना लिल्लाह के अलावा कुछ न निकला चुप-चाप सवारी की नकेल थामी और पैदल

चलते हुए फ़ौज में आ गए। यह ठीक दोपहर का वक़्त था और लश्कर पड़ाव डाल चुका था। उन्हें इस हालत में आता देख कर विभिन्न लोगों ने अपने ढंग से समीक्षा की और अल्लाह के दुश्मने ख़बीस अब्दुल्लाह बिन उबई को भड़ास निकालने का एक और मौक़ा मिल गया, चुनांचे उसके पहलू में निफ़ाक़ और जलन की जो चिंगारी सुलग रही थी, उसने छिपे दर्द को और नुमायां कर दिया यानी बदकारी की तोहमत घड़कर घटनाओं के ताने-बाने बुनना, तोहमत के ख़ाके में रंग-भरना और उसे फैलाना बढ़ाना और उधेड़ना और बुनना शुरू किया। उसके साथी भी उसी की बात को बुनियाद बना कर उसके क़रीब होने लगे और जब मदीना आए तो इन तोहमत लगाने वालों ने ख़ूब जम कर प्रचार किया। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश थे, कुछ बोल नहीं रहे थे, लेकिन जब लम्बी मुद्दत तक वह्य न आई, तो आप ने हज़रत आइशा रज़ि० से अलगाव के बारे में अपने ख़ास सहाबा रज़ि० से मश्वरा किया। हज़रत अली रज़ि० ने स्पष्ट किए बिना इशारों-इशारों में मश्वरा दिया कि आप उनसे अलगाव अपना कर किसी और से विवाह कर लें, लेकिन हज़रत उसामा रज़ि० वग़ैरह ने मश्वरा दिया कि आप उन्हें अपनी बीवी बनाए रखें और दुश्मनों की बात पर कान न धरें। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिंबर पर खड़े हो कर अब्दुल्लाह बिन उबई की पहुंचाई पीड़ाओं से मुक्ति पाने की ओर ध्यान आकृषित किया इस पर हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ने उसके क़त्ल की इजाज़त चाही लेकिन हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० पर जो अब्दुल्लाह बिन उबई के क़बीला ख़ज़रज के सरदार थे, क़बाइली पक्ष ग़ालिब आ गया और दोनों में तेज़-तेज़ बातें हो गई जिस के नतीजे में दोनों क़बीले भड़क उठे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी मुश्किल से उन्हे चुप किया, फिर ख़ुद भी ख़ामोश हो गये।

इधर हज़रत आइशा रज़ि० का हाल यह था कि वह लड़ाई से वापस आते ही बीमार पड़ गईं और एक महीने तक बराबर बीमार रहीं। उन्हें इस तोहमत के बारे में कुछ भी मालूम न था। अलबत्ता यह बात उन्हें खटकती रहती थी कि बीमारी की हालत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से जो दया-कृपा होती रहती थी, अब वह नज़र नहीं आ रही थी। बीमारी ख़त्म हुई तो वह एक रात उम्मे मिस्तह रज़ि० के साथ ज़रूरत पूरी करने के लिए मैदान में गईं। इत्तिफ़ाक़ से उम्मे मिस्तह रज़ि० अपनी चादर में फंस कर फिसल गईं और इस पर उन्होंने अपने बेटे को बद-दुआ दी। हज़रत आइशा रज़ि० ने इस हरकत पर उन्हें टोका तो उन्होंने हज़रत आइशा को बतलाने के लिए कि मेरा बेटा भी प्रोपेगंडे के जुर्म में शरीक है, तोहमत की घटना कह सुनायी। हज़रत आइशा रज़ि० ने वापस आकर इस ख़बर का ठीक-ठीक पता लगाने की ग़रज़ से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मां बाप के पास जाने की इजाज़त चाही, फिर इजाज़त पा कर मां बाप के पास तश्रीफ़ ले गईं और पूरी बात मालूम हुई तो फूट-फूट कर रोने लगीं और फिर दो रातें और एक दिन रोते-रोते गुज़र गया। इस बीच न तो सोईं और न ही आंसू की झड़ी रुकी। वह महसूस करती थीं कि रोते-रोते कलेजा फट जाएगा। इसी हालत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए। कलिमा-ए-शहादत पर आधारित ख़ुत्बा पढ़ा और "अम्मा बाद" कह कर फ़रमाया, "ऐ आइशा! मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी और ऐसी बात का पता लगा है। अगर तुम इससे बरी हो तो अल्लाह बहुत जल्द तुम्हारा बरी होना ज़ाहिर कर देगा और अल्लाह न करे तुम से कोई गुनाह हो गया है तो तुम अल्लाह से माफ़ी मांगो और तौबा करो क्योंकि बंदा जब अपने गुनाह का इक़रार करके अल्लाह के हुज़ूर तौबा करता है तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है।"

इस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि० के आंसू एक दम थम गए, और अब उन्हें आंसू की एक बूंद भी महसूस नहीं हो रही थी। उन्होंने अपने मां बाप से कहा कि वह आप को जवाब दें, लेकिन उन की समझ में न आया कि क्या जवाब दें। इस के बाद हज़रत आइशा रज़ि० ने ख़ुद ही कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं जानती हूं कि यह बात सुनते-सुनते आप लोगों के दिलों में अच्छी तरह बैठ गई है और आप लोगों ने इसे बिल्कुल सच समझ लिया है, इसलिए अब अगर मैं यह कहूं कि मैं बरी हूं— और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूं——तो आप लोग मेरी बात सच न समझेंगे और अगर मैं किसी बात को स्वीकार कर लूं——हालांकि अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूं——तो आप लोग सहीह मान लेंगे। ऐसी शक्ल में, अल्लाह की क़सम! मेरे लिए और आप लोगों के लिए वही मसल (कहावत) है, जिसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद साहब ने कहा था कि——

فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ

"सब्र ही बेहतर है और तुम लोग जो कुछ कहते हो, उस पर अल्लाह की मदद चाहिए।" (12:18)

इस के बाद हज़रत आइशा रज़ि० दूसरी तरफ़ पलट कर लेट गईं और उसी वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य उतरनी शुरू हो गयी। फिर जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य के उतरने की हालत ख़त्म हुई तो आप मुस्कुरा रहे थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली बात जो फ़रमाई, वह यह थी कि ऐ आइशा रज़ि०! अल्लाह ने तुम्हें बरी कर दिया, इस पर (ख़ुशी से) उन की मां बोलीं, (आइशा रज़ि०!) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ उठो (शुक्रिया अदा करो) उन्होंने अपने दामन के पाक होने और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत पर

विश्वास की वजह से किसी क़दर नाज़ भरे अंदाज़ में कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं तो उन की ओर न उठूंगी और सिर्फ़ अल्लाह की हम्द करूंगी।

इस मौक़े पर इफ़्क की घटना के बारे में जो आयतें उतरीं, वे सूरः नूर की दस आयतें हैं जो إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ से शुरू होती हैं।'

इस के बाद तोहमत लगाने के जुर्म में मिस्तह बिन असासा, हस्सान बिन साबित और हम्ना बिन्ते जहश रज़ि० को अस्सी-अस्सी कोड़े मारे गए।[10] अलबत्ता ख़बीस अब्दुल्लाह बिन उबई की पीठ इस सज़ा से बच गयी, जबकि तोहमत लगाने वालों की लिस्ट में वह सब से ऊपर था और उसी ने इस मामले में सब से अहम रोल अदा किया था। उसे सज़ा न देने की वजह या तो यह थी कि जिन लोगों पर हदें क़ायम कर दी जाती हैं वह उन के लिए आख़िरत के अज़ाब की कमी और गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं और अब्दुल्लाह बिन उबई को अल्लाह ने आख़िरत में बड़ा अज़ाब देने का एलान फ़रमा दिया था, या फिर वही हित काम कर रहा था, जिस की वजह से उस की इस्लाम से दुश्मनी के बावजूद उसे क़त्ल नहीं किया गया।[11]

इसी तरह एक महीने के बाद मदीना का वातावरण संदेह, बेचैनी और परेशानी के बादलों से साफ़ हो गया और अब्दुल्लाह बिन उबई इस तरह रुसवा हुआ कि दोबारा सर न उठा सका। इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि इस के बाद वह जब कोई गड़बड़ करता तो ख़ुद उस की क़ौम के लोग उस पर ग़ुस्सा होते, उस की पकड़ करते और उसे सख़्त-सुस्त कहते। इस स्थिति को देख कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

---

10) इस्लाम का क़ानून यही है कि जो आदमी किसी पर हरामकारी का आरोप लगाए और सुबूत न दे तो उसे (आरोप लगाने वाले को) 80 कोड़े मारे जाएँ।

11) बुख़ारी 1/364, 2/696-698, ज़ादुल-मआद 2/113-115, इब्ने हिशाम 2/297-307

सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, "ऐ उमर! क्या विचार है? देखो, अल्लाह की क़सम! अगर तुम ने इस आदमी को उस दिन क़त्ल कर दिया होता, जिस दिन तुम ने मुझ से उसे क़त्ल करने की बात कही थी, तो उस के बहुत से हमदर्द उठ खड़े होते, लेकिन अगर आज उन्हीं हमदर्दों को उस के क़त्ल का हुक्म दिया जाए, तो वे उसे क़त्ल कर दें।" हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरी समझ में ख़ूब आ गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामला मेरे मामले से ज़्यादा बरकत वाला है।[12]"

12) इब्ने हिशाम 2/293

ग़ज़्वा-ए-मुरैसीअ़ के बाद की फ़ौजी मुहिमें

1. सरिय्या दयारे बनी कल्ब, इलाक़ा दूमतुल जन्दल

यह सरिय्या हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के नेतृत्व में शअ़बान सन् 06 हि० में भेजा गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न इन्हें अपने सामने बिठा कर खुद अपने मुबारक हाथ से पगड़ी बांधी और लड़ाई में सब से अच्छा तरीक़ा अपनाने की वसीयत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर वे लोग तुम्हारी बात मान लें तो तुम उन के बादशाह की लड़की से शादी कर लेना। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने वहां पहुंच कर तीन दिन लगातार इस्लाम की दावत दी, आख़िरकार क़ौम ने इस्लाम क़ूबुल कर लिया। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने तमाज़ुर बिन्ते अस्बग़ से शादी की। यही हज़रत अ़ब्दुर्रहमान के बेटे अबू सलमा की मां हैं। इस महिला के पिता अपनी क़ौम में सरदार और बादशाह थे।

2. सरिय्या दयारे बनी साद, इलाक़ा फ़िदक

यह सरिय्या शअ़बान 06 हि० में हज़रत अ़ली रज़ि० के नेतृत्व में भेजी गयी। इस की वजह यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि बनू साद की एक-टुकड़ी यहूदियों को कुमुक (मदद) पहुंचाना चाहती है, इसलिए आप ने हज़रत अ़ली

रज़ि० को दो सौ आदमी देकर रवाना फ़रमाया। ये लोग रात में सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे। आख़िर एक जासूस पकड़ में आया, और उस ने माना कि उन लोगों ने ख़ैबर की खजूरों के बदले सहायता जुटाने की पेशकश की है। जासूस ने यह भी बतलाया कि बनू साद ने किस जगह जत्थाबंदी की है। चुनांचे हज़रत अ़ली रज़ि० ने उन पर छापा मार कर पांच सौ ऊंट और दो हज़ार बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया। अलबत्ता बनू साद अपनी औरतों और बच्चों समेत भाग निकले उन का सरदार वुबर बिन अ़लीम था।

3. सरिय्या वादियुल कुरा

यह सरिय्या हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० या हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्त्व में रमज़ान 06 हि० में रवाना किया गया। इस की वजह यह थी कि बनू फ़ज़ारा की एक शाखा ने धोखे से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने का प्रोग्राम बनाया था, इसलिए आप ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को रवाना फ़रमाया। हज़रत सलमा बिन अकवअ़ रज़ि० का बयान है कि इस झड़प में मैं भी आप के साथ था। जब हम सुबह की नमाज़ पढ़ चुके तो आप के हुक्म से हम लोगों ने छापा मारा और सोते पर धावा बोल दिया। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कुछ लोगों को क़त्ल किया। मैंने एक गिरोह को देखा, जिस में औरतें और बच्चे भी थे। मुझे डर हुआ कि कहीं ये लोग मुझ से पहले पहाड़ पर पहुंच जाएं। इसलिए मैंने उनको पकड़ने की कोशिश की और उनके और पहाड़ के दर्मियान एक तीर चलाया। तीर देख कर ये लोग ठहर गए। इनमें उम्मे क़रफ़ा नामी एक औरत थी, जो एक पुरानी पोस्तीन ओढ़े हुए थी। उसके साथ उसकी बेटी भी थी जो उस की सबसे ख़ूबसूरत औरतों में से थी। मैं उन सब को हांकता हुआ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास ले आया। उन्होंने वह लड़की अ़ता की। मैंने उसका कपड़ा तक न खोला था कि बाद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने यह लड़की सलमा बिन अकवअ़ से लेकर मक्का भेज दी और उस के बदले वहां के कई मुसलमान क़ैदियों को रिहा करा लिया।[1]

उम्मे क़रफ़ा एक शैतान सिफ़त औरत थी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हत्या के उपाय किया करती थी और इस उद्देश्य के लिए उसने अपने परिवार के तीस घुड़सवार भी तैयार किए थे, इसलिए उसे ठीक बदला मिल गया और उसके तीसों सवार मारे गए।

4. सरिय्या उरनिय्यनि

यह सरिय्या शव्वाल सन् 06 हि० में हज़रत कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी रज़ि०[2] की क़ियादत में भेजा गया। इस की वजह यह है कि उकल और उरैना के कुछ लोगों ने मदीना आ कर इस्लाम ज़ाहिर किया और मदीना ही में ठहर गये, लेकिन इनको मदीना की जलवायु रास न आयी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हें कुछ ऊंटों के साथ चरागाह भेज दिया और हुक्म दिया कि ऊंटों का दूध और पेशाब पिएं। जब ये लोग तन्दुरुस्त हो गए तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊंटों को हांक ले गए और इस्लाम अपनाने के बाद अब फिर कुफ़्र अपना लिया, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी खोज के लिए कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी रज़ि० को बीस सहाबा रज़ि० के साथ रवाना फ़रमाया और यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह उरनियों पर रास्ता अंधा कर दे और कंगन से भी ज़्यादा तंग बना दे। अल्लाह ने यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई, उन पर रास्ता अंधा कर दिया, चुनांचे वे पकड़ लिए गए और

---

1 मुस्लिम 2/81 कहा जाता है कि यह सरिय्या 7 हिजरी में हुआ था

2) यह वही हज़रत कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी हैं जिन्होंने ग़ज़वा-ए-बदर से पहले ग़ज़वा-ए-सफ़वान में मदीना के जानवरों पर छापा मारा था बाद में इन्होंने इसलाम क़ुबूल किया और फ़तहे-मक्का के वक़्त शहीद हो गए।

उन्होंने मुसलमान चरवाहों के साथ जो कुछ किया था, उस के क़िसास और बदले के तौर पर उन के हाथ पांव काट दिए गए, आंखों में गर्म सलाइयां फेरी गयीं और उन्हें हर्रा के एक कोने में छोड़ दिया गया, जहां वह ज़मीन कुरेदते-कुरेदते अपने नतीजे को पहुंच गए (अर्थात मर गए)।[3] उन की यह घटना सहीह बुख़ारी वग़ैरह में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की गयी है।[4]

जीवनी-लेखक इस के बाद एक और सरिय्ये का उल्लेख करते हैं, जिसे अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० ने हज़रत सलमा बिन अबी सलमा के साथ शव्वाल सन् 06 हि० में जीता था। इसका विवरण यह बताया गया है कि हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० अबू सुफ़ियान को क़त्ल करने के लिए मक्का तशरीफ़ ले गए थे, क्योंकि अबू सुफ़ियान ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए एक देहाती को मदीना भेजा था, अलबत्ता दोनों फ़रीक़ों में से कोई भी अपनी मुहिम में सफल न हो सका। जीवनी-लेखक यह भी कहते हैं कि इसी सफ़र में हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी ने तीन काफ़िरों को क़त्ल किया था और हज़रत ख़ुबैब रज़ि० की लाश उठाई थी, हालांकि हज़रत ख़ुबैब रज़ि० की शहादत की घटना रजीअ़ के कुछ दिन या कुछ महीने बाद की है और रजीअ़ की घटना सफ़र 04 हि० की है, इसलिए मैं यह समझ नहीं पा रहा कि ये दोनों अलग-अलग सफ़रों की घटनाएं थीं जो जीवनी-लेखकों के लिए गडमड हो गयीं और उन्होंने दोनों को एक ही सफ़र में ज़िक्र कर दिया या यह कि हक़ीक़त में दोनों घटनाएं एक ही सफ़र में घटीं, लेकिन जीवनी-लेखकों को साल निश्चित करने में ग़लती हो गयी और उन्होंने इसे सन् 04 हि० के बजाए 06 हि० में ज़िक्र कर दिया। हज़रत

3) ज़ादुल मआद 2/122 कुछ इज़ाफ़े के साथ
4) बुख़ारी 2/602 वग़ैरह

अ़ल्लामा मंसूरपुरी रह० ने भी इस घटना को जंगी मुहिम या झड़प मानने से इंकार किया है। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

ये हैं वे सराया और ग़ज़वात जो अहज़ाब की लड़ाई और बनी कुरैज़ा की लड़ाई के बाद पेश आईं। इन में से किसी भी लड़ाई या झड़प में कोई सख़्त लड़ाई नहीं हुई, सिर्फ़ किसी-किसी में मामूली क़िस्म की झड़पें हुई, इसलिए इन मुहिमों को लड़ाई के बजाए परेड, फ़ौजी गश्त और सज़ा देने वाली चलत-फिरत कहा जा सकता है। जिस का मक़सद ढीठ बद्दुओं और अकड़े हुए दुश्मनों को डराना था। हालात पर विचार करने से ज़ाहिर होता है कि अहज़ाब की लड़ाई के बाद स्थिति में बदलाव आ गया था और इस्लाम के दुश्मनों के हौसले टूटते जा रहे थे। अब उन्हें यह उम्मीद बाक़ी नहीं रह गयी थी कि इस्लाम की दावत को तोड़ा और उस की शौकत को कुचला जा सकता है मगर यह बदलाव तनिक अच्छी तरह खुलकर उस समय सामने आया जब मुसलमान हुदैबिया समझौते से निपट चुके थे। यह समझौता असल में इस्लामी ताक़त को मान लेना और इस बात पर मुहर लगा देना था कि अब इस ताक़त को अ़रब प्रायद्वीप में बाक़ी और बरक़रार रहने से कोई ताक़त रोक नहीं सकती।

हुदैबिया का समझौता

(ज़ी-क़अ़दा सन् 06 हि०)

हुदैबिया के उमरे की वजह

जब अ़रब प्रायद्वीप में हालात बड़ी हद तक मुसलमानों के हक़ में हो गए तो इस्लामी दावत की कामियाबी और भारी विजय की निशानियां धीरे-धीरे ज़ाहिर होना शुरू हुईं, और मस्जिदे हराम में जिस का दरवाज़ा मुश्रिकों ने मुसलमानों पर छः वर्ष से बंद कर रखा था, मुसलमानों के लिए इबादत का हक़ मान लिए जाने की इब्तिदाई (आरंभिक) बातें शुरू हो गयीं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना के अंदर यह सपना दिखाया गया कि आप और आप के सहाबा किराम रज़ि० मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। आप ने ख़ान-ए- काबा की कुंजी ली और सहाबा सहित बैतुल्लाह का तवाफ़ और उमरा किया, फिर कुछ लोगों ने सर के बाल मुंडाए और कुछ ने कटवाने को काफ़ी समझा। आप ने सहाबा किराम रज़ि० को इस सपने की ख़बर दी तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई और उन्होंने यह समझा कि इस साल मक्का में दाख़िला नसीब होगा। आप ने सहाबा किराम रज़ि० को यह भी बतलाया कि आप उमरा अदा फ़रमाएंगे इसलिए सहाबा किराम रज़ि० भी सफ़र के लिए तैयार हो गए।

मुसलमानों में रवाना होने का एलान

आप ने मदीना और आस-पास की आबादियों में एलान फ़रमा दिया कि लोग आप के साथ रवाना हों, लेकिन अधिकतर अरबों ने देर की। इधर आप ने अपने कपड़े धोए, मदीना पर इब्ने उम्मे मक्तूम या नुमैला लैसी रज़ि० को अपना जानशीं बनाया और अपनी क़ुसवा नामक ऊंटनी पर सवार होकर पहली ज़ी-क़अ़दा सन् 06 हि० को सोमवार के दिन रवाना हो गये। आप के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० भी थीं। चौदह सौ (और कहा जाता है कि पंद्रह सौ) सहाबा किराम साथ में थे, आप ने मुसाफ़िरों की तरह हिथयार यानी म्यान के अंदर बंद तलवारों के सिवा और किसी क़िस्म का कोई हथियार नहीं लिया था।

मक्का की ओर मुसलमानों की हरकत

आप का रुख़ मक्का की ओर था। ज़ुल-हुलैफ़ा पहुंच कर आप ने हद्य[1] को क़लादे पहनाए, कोहान चीर कर निशान बनाया और उमरा का एहराम बांधा, ताकि लोगों को इत्मीनान रहे कि आप लड़ेंगे नहीं। आगे-आगे क़बीला ख़ुज़ाआ का एक जासूस भेज दिया ताकि वह क़ुरैश के इरादों की खबर लाए। अ़स्फ़ान के क़रीब पहुंचे तो उस जासूस ने आ कर ख़बर दी कि मैं काब बिन लुइ (क़बीले का नाम) को इस हालत में छोड़ कर आ रहा हूं कि उन्होंने आप से मुक़ाबला करने के लिए अहाबीश (मित्र क़बीलों) को और दूसरे लोगों को जमा कर रखा है और वे आप से लड़ने और आप को बैतुल्लाह से रोकने का इरादा किए हुए

---

1) हद्य—वह जानवर जिसे हज और उमरा करने वाले मक्का या मिना में ज़िब्ह करते हैं। इसलाम से पहले अरब में यह रिवाज था कि हद्य का जानवर अगर भेड़ बकरी है तो निशानी के लिए गले मे हार पहना दिया जाता था और अगर ऊंट है तो कुकुद (कोहान) को चीर कर खून लगा दिया जाता था ऐसे जानवर से कोई आदमी छेड़छाड़ नहीं करता था शरीअत ने इस रिवाज को बाक़ी रखा।

हैं। इस ख़बर के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम से मश्वरा किया और फ़रमाया, "क्या आप लोगों की यह राय है कि ये लोग जो कुरैश की मदद पर कमर बांधे हुए हैं हम उनके बाल-बच्चों पर टूट पड़ें और क़ब्ज़ा कर लें? इसके बाद अगर वह ख़ामोश बैठते हैं तो इस हालत में ख़ामोश बैठते हैं कि लड़ाई की मार और दुख व परेशानी से दो-चार हो चुके हैं और भागते हैं तो वह भी इस हालत में कि अल्लाह उनकी गरदन काट चुका होगा। या आप लोगों की यह राय है कि हम ख़ाना-ए-काबा का रूख़ करें और जो राह में रुकावट पैदा करें उस से लड़ाई करें?" इस पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहतर जानते हैं मगर हम उमरा करने आए हैं, किसी से लड़ने नहीं आए हैं, अलबत्ता जो हमारे और बैतुल्लाह के बीच रूकावट उससे लड़ाई करेंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा तब चलो। चुनांचे लोगों ने सफ़र जारी रखा।

बैतुल्लाह से मुसलमानों को रोकने की कोशिश

इधर कुरैश को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रवाना होने की जानकारी हुई तो उन्होंने एक मज्लिस (मंत्रणा परिषद) बुलाई और तय किया कि जैसे भी मुम्किन हो, मुसलमानों को बैतुल्लाह से दूर रखा जाए, चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब अहाबीश से कतरा कर अपना सफ़र जारी रखा तो बनी काब के एक आदमी ने आ कर आप को ख़बर दी कि कुरैश ने ज़ी तुवा मक़ाम पर पड़ाव डाल रखा है और ख़ालिद बिन वलीद दो सौ सवारों का दस्ता ले कर कुराउल ग़मीम में तैयार खड़े हैं। (कुराउल ग़मीम मक्का जाने वाली केन्द्रीय और मेन रोड पर स्थित है) ख़ालिद ने मुसलमानों को रोकने की भी कोशिश की, चुनांचे उन्होंने अपने सवारों को ऐसी जगह तैनात किया, जहां से दोनों फ़रीक़ एक दूसरे को देख रहे थे। ख़ालिद

ने ज़ुहर की नमाज़ में जब यह देखा कि मुसलमान रुकूअ़ और सज्दे कर रहे हैं, तो कहने लगे कि ये लोग ग़ाफ़िल थे, हम ने हमला किया होता तो इन्हें मार लिया होता। इस के बाद तय किया कि अ़स्र की नमाज़ में मुसलमानों पर अचानक टूट पड़ेंगे, लेकिन अल्लाह ने उसी दौरान ख़ौफ़ की नमाज़ (जंग की हालत की ख़ास नमाज़) का हुक्म नाज़िल कर दिया और ख़ालिद के हाथ से मौक़ा जाता रहा।

ख़ूनी टकराव से बचने की कोशिश और रास्ते की तब्दीली

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुराउल ग़मीम का केन्द्रीय रास्ता छोड़ कर एक दूसरा टेढ़ा रास्ता अपनाया जो पहाड़ी घाटियों के दर्मियान से होकर गुज़रता था। यानी आप दाहिनी ओर कतरा कर हम्श के दर्मियान से गुज़रते हुए एक ऐसे रास्ते पर चले जो सनीयतुल मरार पर निकला था। सनीयतुल मरार से हुदैबिया में उतरते हैं और हुदैबिया मक्का के निचले इलाक़े में स्थित है। इस रास्ते को इख़्तियार करने का फ़ायदा यह हुआ कि कुराउल ग़मीम का वह केन्द्रीय रोड जो तनईम से गुज़र कर हरम तक जाता था और जिस पर ख़ालिद बिन वलीद की टुकड़ी तैनात थी, वह बाईं ओर छूट गयी। ख़ालिद ने मुसलमानों के धूल-धपाड़े को देख कर जब यह महसूस किया कि उन्होंने रास्ता बदल लिया है, तो घोड़े को एड़ लगाई और कुरैश को इस नई स्थिति के ख़तरे से सचेत करने के लिए भागम-भाग मक्का पहुंचे।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सफ़र पहले की तरह जारी रखा। जब सनीयतुलमरार पहुंचे तो ऊंटनी बैठ गई, लोगों ने कहा, हल-हल, लेकिन वह बैठी ही रही। लोगों ने कहा, कुसवा अड़ गयी है। आप ने फ़रमाया, कुसवा अड़ी नहीं है और न उस की यह आदत है, बल्कि उसे उस हस्ती ने रोक रखा है, जिस ने हाथी को रोक दिया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "उस ज़ात की

क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, ये लोग किसी भी ऐसे मामले की मांग नहीं करेंगे जिस में अल्लाह की हुरमतों (माननीय चीज़ों) का सम्मान कर रहे हों, लेकिन मैं उसे ज़रूर मान लूंगा।" उस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊंटनी को डांटा तो वह उछल कर खड़ी हो गयी। फिर आप ने रास्ते में थोड़ी सी तब्दीली की और हुदैबिया के पास एक चश्मे (सोते) पर उतर गए, जिस में थोड़ा सा पानी था और उसे लोग थोड़ा-थोड़ा सा ले रहे थे। चुनांचे कुछ ही क्षणों में सारा पानी ख़त्म हो गया। अब लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्यास की शिकायत की, आप ने तरकश से एक तीर निकाला और हुक्म दिया कि चश्मे (सोते) में डाल दें। लोगों ने ऐसा ही किया, इस के बाद अल्लाह की क़सम! उस सोते से लगातार पानी उबलने लगा, यहां तक कि तमाम लोग जी भर पी कर वापस हुए।

बुदैल बिन वरक़ा का माध्यम

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संतुष्ट हो चुके तो बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाअ़ी भी अपने क़बीला ख़ुज़ाआ़ के कुछ लोगों के साथ हाज़िर हुआ। तिहामा के निवासियों में यही क़बीला (ख़ुज़ाआ़) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भला चाहने वाला था। बुदैल ने कहा, "मैं काब बिन लुइ को देख कर आ रहा हूं कि वह हुदैबिया के अधिक पानी के पास पड़ाव डाले हुए हैं। उन के साथ औरतें और बच्चे भी हैं। वह आप से लड़ने और आप को बैतुल्लाह से रोकने का इरादा किए हुए हैं।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं। क़ुरैश को लड़ाइयों ने थका दिया है और ज़्यादा नुक़्सान पहुंचाया है, इसलिए अगर वे चाहें तो उनसे एक मुद्दत तय कर लूं और वे मेरे और लोगों के बीच से हट जाएं, और अगर वह चाहें तो जिस चीज़ में लोग दाखिल हुये हैं, उस में वे भी दाख़िल हो सकते हैं, वरना उन को राहत तो प्राप्त ही रहेगी।

और अगर उन्हें लड़ाई के सिवा कुछ मंज़ूर नहीं, तो उस ज़ात की क़सम, जिस के हाथ में मेरी जान है, मैं अपने दीन के मामले में उन से उस वक़्त तक लड़ता रहूंगा जब तक कि मेरी गरदन जुदा न हो जाए, या जब तक अल्लाह अपना हुक्म लागू न कर दे।"

बुदैल ने कहा, "आप जो कुछ कह रहे है, मैं उसे कुरैश तक पहुंचा दूंगा। इस के बाद वह कुरैश के पास पहुंचा और बोला, मैं उन साहब के पास से आ रहा हूं। मैंने उन से एक बात सुनी है, अगर चाहो तो पेश कर दूं। इस पर मूर्खों ने कहा, हमें कोई ज़रूरत नहीं कि तुम हम से उन की कोई बात बयान करो, लेकिन जो लोग सूझ-बूझ रखते थे उन्होंने कहा, लाओ, सुनाओ, तुम ने क्या सुना है? बुदैल ने कहा, मैं ने उन्हें यह और यह बात कहते हुए सुना है। इस पर कुरैश ने मिकरज़ बिन हफ़्स को भेजा। उसे देख कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह वायदा का झूठा आदमी है, चुनांचे जब उस ने आप के पास आ कर बात की तो आप ने उस से वही बात कही जो बुदैल और उस के साथियों से कही थी। उस ने वापस जा कर कुरैश को पूरी बात की ख़बर दी।

कुरैश के दूत

इस के बाद हुलैस बिन अलक़मा नामी बनू कनाना के एक आदमी ने कहा, मुझे उन के पास जाने दो। लोगों ने कहा, जाओ। जब वह सामने आया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, "यह फ़्लां आदमी है, यह ऐसी क़ौम से ताल्लुक़ रखता है जो हद्य के जानवरों का बड़ा एहतिराम करती है। इसलिए जानवरों को खड़ा कर दो।" सहाबा ने जानवरों को खड़ा कर दिया और ख़ुद भी लब्बैक पुकारते हुए उस का स्वागत किया। उस आदमी ने यह हालत देखी तो कहा, सुब्हानल्लाह! इन लोगों को बैतुल्लाह से रोकना हरगिज़ मुनासिब नहीं और वहीं से अपने साथियों के पास वापस चला

गया और बोला, "मैंने हद्य के जानवर देखे हैं जिन के गलों में क़लादे हैं और जिन के कोहान चीरे हुए हैं, इसलिए मैं मुनासिब नहीं समझता कि इन्हें बैतुल्लाह से रोका जाए।" इस पर कुरैश और उस आदमी में ऐसी बातें हुई कि वह ताव में आ गया।

इस मौके पर उर्वा बिन मस्ऊद सकफ़ी ने हस्तक्षेप किया और बोला। इस आदमी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तुम्हारे सामने एक अच्छा प्रस्ताव रखा है इसलिए उसे मान लो और मुझे उन के पास जाने दो। लोगों ने कहा, जाओ, चुनांचे वह आप के पास हाज़िर हुआ और बात शुरू कर दी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस से भी वही बात कही जो बुदैल से कही थी। इस पर उर्वा ने कहा, "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह बताइए कि अगर आप ने अपनी क़ौम का सफ़ाया भी कर दिया तो क्या अपने आप से पहले किसी अरब के बारे में सुना है कि उस ने अपनी क़ौम का सफ़ाया कर दिया हो? और अगर दूसरी स्थिति सामने आई, तो अल्लाह की क़सम! मैं ऐसे चेहरे और ऐसे बदमाश लोगों को देख रहा हूं जो इसी लायक़ हैं कि आप को छोड़ कर भाग जाएं।" इस पर हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, जा लात की शर्मगाह का लटकता हुआ चमड़ा चूस! हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ कर भागेंगे! उर्वा ने कहा, यह कौन है? लोगों ने कहा, यह अबू बक्र रज़ि० हैं। उस ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० को मुख़ातब कर के कहा, "देखो, उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर ऐसी बात न होती कि तुम ने मुझ पर एक एहसान किया था और मैंने उस का बदला नहीं दिया है तो मैं यक़ीनी तौर पर तुम्हारी इस बात का जवाब देता।"

इस के बाद उर्वा फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें करने लगा। वह जब बातें करता तो आप की दाढ़ी पकड़ लेता। हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर के

पास ही खड़े थे, हाथ में तलवार थी और सर पर ख़ूद। उर्वा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दाढ़ी पर हाथ बढ़ाता तो वह तलवार का दस्ता उस के हाथ पर मारते और कहते कि अपना हाथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दाढ़ी से परे रख। आख़िर उर्वा ने अपना सिर उठाया और बोला, यह कौन है? लोगों ने कहा, मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० हैं। इस पर उस ने कहा-----ओ------बद-अहद----! क्या मैं तेरी बद-अहदी के सिलसिले में दौड़-धूप नहीं कर रहा हूं? घटना यह घटी थी कि जाहिलियत (अज्ञानता काल) में हज़रत मुग़ीरह रज़ि० कुछ लोगों के साथ थे, फिर उन्हें क़त्ल कर के उन का माल ले भागे थे और आ कर मुसलमान हो गये थे। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मैं इस्लाम तो क़ुबूल कर लेता हूं, लेकिन माल से मेरा कोई वास्ता नहीं। (इस मामले में उर्वा के दौड़ धूप- की वजह यह थी कि हज़रत मुग़ीरह रज़ि० उसके भतीजे थे।)

इस के बाद उर्वा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सहाबा किराम के ख़ास ताल्लुक़ का दृश्य देखने लगा, फिर अपने साथियों के पास वापस आया और बोला, "ऐ क़ौम! अल्लाह की क़सम! मैं क़ैसर व किसरा और नज्जाशी जैसे बादशाहों के पास जा चुका हूं। ख़ुदा की क़सम! मैंने किसी बादशाह को नहीं देखा कि उसके साथी उस का इतना आदर करते हों। जितना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आदर करते हैं अल्लाह की क़सम! वह खंखार भी थूकते थे तो किसी न किसी आदमी के हाथ पर पड़ता था और वह आदमी उसे अपने चेहरे और देह पर मल लेता था और जब वह कोई हुक्म देते थे तो उसे पूरा करने के लिए सब दौड़ पड़ते थे और जब वुज़ू करते थे तो लगता था कि उस के वुज़ू के पानी के लिए लोग लड़ पड़ेंगे और जब कोई बात बोलते थे तो सब अपनी आवाज़ें पस्त कर लेते थे और आदर की वजह से उन्हें भरपूर नज़र से नहीं देखते थे और उन्होंने तुम पर एक अच्छा प्रस्ताव रखा है, इसलिए उसे क़ुबूल कर लो।"

वही है जिसने उनके हाथ तुमसे रोके

जब कुरैश के जोशीले और योद्धा नवजवानों ने देखा कि उन के बड़े लोग समझौता चाहते हैं तो उन्होंने समझौते में रुकावट पैदा करने का एक प्रोग्राम बनाया और यह तय किया कि रात को यहां से निकल कर चुपके से मुसलमानों के कैम्प में घुस जाएं और ऐसा हंगामा बरपा कर दें कि लड़ाई की आग भड़क उठे, फिर उन्होंने इस योजना पर अ़मल करने के लिए कोशिश भी की, चुनांचे रात की तारीकी में सत्तर या अस्सी नौजवानों ने तनईम पहाड़ से उतर कर मुसलमानों के कैम्प में चुपके से घुसने की कोशिश की। लेकिन इस्लामी पहरेदारों के कमांडर मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० ने उन सब को गिरफ़्तार कर लिया, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समझौते की ख़ातिर इन सब को माफ़ करते हुए आज़ाद कर दिया। इसी के बारे में अल्लाह का यह इर्शाद आया——

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ

"वही है जिस ने बत्ने मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से रोके, इस के बाद कि तुम को उन पर क़ाबू दे चुका था।" (48:24)

हज़रत उस्मान रज़ि० दूत बना कर भेजे गए

अब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सोचा कि एक दूत रवाना फ़रमाएं जो कुरैश के सामने ताकीदी तरीक़े पर आप के मौजूदा सफ़र के मक़सद को साफ़ कर दे। इस काम के लिए आप ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए मजबूरी बताई कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर मुझे कष्ट दिया गया तो मक्का में बनी काब का एक आदमी भी ऐसा नहीं, जो मेरी हिमायत में बिगड़ सकता हो, आप हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को भेज दें, उन का कुंबा क़बीला मक्का ही में है।

वह आप का पैग़ाम अच्छी तरह पहुंचा देंगे। आप ने हज़रत उस्मान रज़ि० को बुलवाया और कुरैश के पास रवाना होने का हुक्म देते हुए फ़रमाया, "उन्हें बतला दो कि हम लड़ने नहीं आए हैं, उमरा करने आए हैं। उन्हें इस्लाम की दावत भी दो।" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि० को यह हुक्म भी दिया कि वह मक्का में ईमान वाले मर्दों और औरतों के पास जा कर उन्हें विजय की शुभ-सूचना सुना दें और यह बतला दें कि अल्लाह तआला अब अपने दीन को मक्का में ज़ाहिर व ग़ालिब करने वाला है, यहां तक कि ईमान की वजह से किसी को यहां छिपने की ज़रूरत न होगी।

हज़रत उस्मान रज़ि० आप का पैग़ाम ले कर रवाना हुए। बलदह नामी जगह में कुरैश के पास से गुज़रे तो उन्होंने पूछा, कहां का इरादा है? फ़रमाया, मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह और यह संदेश दे कर भेजा है। कुरैश ने कहा, हम ने आप की बात सुन ली, आप अपने काम पर जाइए। इधर सईद बिन आस ने उठ कर हज़रत उस्मान को मरहबा कहा (यानी स्वागत किया) और अपने घोड़े पर ज़ीन कस कर आप को सवार किया और साथ बिठा कर अपनी पनाह में मक्का ले गया, वहां जा कर हज़रत उस्मान रज़ि० ने कुरैश के सरदारों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पैग़ाम सुनाया। उस से फ़ारिग़ हो चुके तो कुरैश ने पेशकश की कि आप बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लें, मगर आप ने इस पेशकश को रद्द कर दिया और यह गवारा न किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तवाफ़ करने से पहले ख़ुद तवाफ़ कर लें।

हज़रत उस्मान रज़ि० के शहीद किए जाने की अफ़्वाह और बैअ़ते रिज़्वान

हज़रत उस्मान रज़ि० दूत होने की अपनी मुहिम पूरी कर चुके थे, लेकिन कुरैश ने उन्हें अपने पास रोक लिया। शायद वह चाहते थे कि

आने वाली स्थिति पर आपसी मश्वरा कर के कोई फ़ैसला कर लें और हज़रत उस्मान रज़ि० को उन के लाए हुए पैग़ाम का जवाब देकर वापस करें, मगर हज़रत उस्मान रज़ि० के देर तक रुके रहने की वजह से मुसलमानों में यह अफ़वाह फैल गयी कि उन्हें क़त्ल कर दिया गया है। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस की ख़बर मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हम इस जगह से नहीं टल सकते, यहां तक कि लोगों से युद्ध कर लें। फिर आप ने सहाबा किराम रज़ि० को बैअ़त की दावत दी, सहाबा किराम रज़ि० टूट पड़े और इस बात पर बैअ़त की कि लड़ाई का मैदान छोड़ कर भाग नहीं सकते। एक जमाअ़त ने मौत पर बैअ़त की यानी मर जाएंगे, मगर लड़ाई का मैदान न छोड़ेंगे। सब से पहले अबू सिनान असदी रज़ि० ने बैअ़त की। हज़रत सलमा बिन अकवअ़ रज़ि० ने तीन बार बैअ़त की-----शुरू में, बीच में और आख़िर में--------अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद अपना हाथ पकड़ कर फ़रमाया, यह उस्मान रज़ि० का हाथ है। फिर जब बैअ़त पूरी हो चुकी तो हज़रत उस्मान रज़ि० भी आ गये और उन्होंने भी बैअ़त की। इस बैअ़त में सिर्फ़ एक आदमी ने जो मुनाफ़िक़ था शिरकत नहीं की, उस का नाम जद्द बिन क़ैस था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बैअ़त एक पेड़ के नीचे ली। हज़रत उमर रज़ि० मुबारक हाथ थामे हुए थे और हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० ने पेड़ की कुछ शाखाएं पकड़ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर से हटा रखी थीं इसी बैअ़त का नाम बैअ़ते रिज़वान है और इसी के बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी है-----

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ

"अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हुआ, जब कि वह आप से पेड़ के नीचे बैअ़त कर रहे थे।" (48:18)

समझौता और उसकी धाराएं

बहरहाल कुरैश ने स्थिति की विकटता समझ ली, इसलिए झट सुहैल बिन अ़म्र को समझौता क मामला तय करने के लिए रवाना किया और यह ताकीद कर दी कि समझौते में यह बात अनिवार्य रूप से तय की जाए कि आप इस साल वापस चले जाएं। ऐसा न हो कि अरब यह कहें कि आप हमारे शहर में ज़बरदस्ती दाख़िल हो गए। इन हिदायतों को लेकर सुहैल बिन अ़म्र आप के पास हाज़िर हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे आता देख कर सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, "तुम्हारा काम तुम्हारे लिए आसान कर दिया गया। इस आदमी को भेजने का मतलब ही यह है कि कुरैश समझौता चाहते हैं।" सुहैल ने आप के पास पहुंच कर देर तक बातें कीं और आख़िरकार दोनों फ़रीक़ों में समझौते की धाराएं तय हो गयीं जो ये थीं---------

1. अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस साल मक्का में दाख़िल हुए बिना वापस जाएंगे, अगले साल मुसलमान मक्का आएंगे और तीन दिन ठहरेंगे। उन के साथ सवार का हथियार होगा, म्यानों में तलवारें होंगी, और उन से किसी क़िस्म की छेड़-छाड़ नहीं की जाएगी।

2. दस साल तक दोनों फ़रीक़ लड़ाई बंद रखेंगे । इस मुद्दत में लोग अम्न से रहेंगे, कोई किसी पर हाथ नहीं उठाएगा।

3. जो मुहम्मद के समझौते में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकेगा और जो कुरैश के समझौते में दाख़िल होना चाहे दाख़िल हो सकेगा। जो क़बीला जिस फ़रीक़ में शामिल होगा, उस फ़रीक़ का एक हिस्सा समझा जाएगा, इसलिए ऐसे किसी क़बीले पर ज़्यादती हुई तो ख़ुद उस फ़रीक़ पर ज़्यादती समझी जाएगी।

4. कुरैश का जो आदमी अपने सरपरस्त की इजाज़त के बिना... यानी भाग कर—मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास जाएगा, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे वापस कर देंगे, लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों में से जो आदमी—पनाह लेने की ग़रज़ से भाग कर—कुरैश के पास आएगा, कुरैश उसे वापस न करेंगे।

इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ि० को बुलाया कि लिख दें और यह इमला कराया— "**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**" इस पर सुहैल ने कहा, हम नहीं जानते, रहमान क्या है? आप यूं लिखिए "**बिस्मिकल्लाहुम-म**" (ऐ अल्लाह तेरे नाम से) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि यही लिखो इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह इमला कराया, यह वह बात है जिस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समझौता किया। इस पर सुहैल ने कहा, अगर हम जानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो फिर हम न तो आप को बैतुल्लाह से रोकते और न लड़ाई करते, इसलिए आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखवाइए। आप ने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं भले ही तुम लोग झुठलाओ फिर हज़रत अ़ली रज़ि० को हुक्म दिया कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखें और शब्द "रसूलुल्लाह" मिटा दें, लेकिन हज़रत अली रज़ि० ने गवारा न किया कि इस शब्द को मिटाएं, इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद अपने हाथ से मिटा दिया। इस के बाद पूरी दस्तावेज़ लिखी गयी।

फिर जब समझौता पूरा हो गया तो बनू ख़ुज़ाआ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हो गए। ये लोग हक़ीक़त में अब्दुल मुत्तलिब के ज़माने ही से बनू हाशिम के साथी थे, जैसा कि किताब के शुरू में गुज़र चुका है, इसलिए इस समझौते में दाख़िला उसी पुरानी हलफ़ की ताकीद और पक्कापन था। दूसरी ओर बनू बक्र कुरैश के साथ हो गए।

अबू जन्दल रज़ि० की वापसी

अभी समझौते का पत्र लिखा ही जा रहा था कि सुहैल के बेटे अबू जन्दल रज़ि० अपनी बेड़ियां घसीटते आ पहुंचे। वह मक्का के निचले हिस्से से निकल कर आए थे। उन्होंने यहां पहुंच कर अपने आप को मुसलमानों के दर्मियान डाल दिया। सुहैल ने कहा, यह पहला आदमी है जिस के बारे में मैं आप से मामला करता हूं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसे वापस कर दें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अभी तो हम ने लिखना पूरा नहीं किया है। उस ने कहा, तब मैं आप से किसी बात पर समझौते का कोई मामला ही न करूंगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा तो तुम इस को मेरी ख़ातिर छोड़ दो। उसने कहा, मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ातिर भी नहीं छोड़ सकता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं-नहीं इतना तो कर ही दो। उस ने कहा नहीं, मैं नहीं कर सकता। फिर सुहैल ने अबू जन्दल रज़ि० के चेहरे पर चांटा रसीद किया और मुश्रिकों की तरफ़ वापस करने के लिए उन के कुरते का कॉलर पकड़ कर घसीटा अबू जन्दल रज़ि० ज़ोर-ज़ोर से चीख़ कर कहने लगे, मुसलमानो! क्या मैं मुश्रिकों की तरफ़ वापस किया जाऊंगा कि वे मुझे मेरे दीन के बारे में फ़िले में डालें? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अबू जन्दल! सब्र करो और इसे सवाब का कारण (बाइस) समझो। अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जो दूसरे कमज़ोर मुसलमान हैं, उन सब के लिए कुशादगी और पनाह की जगह बनाएगा। हम ने कुरैश से समझौता कर लिया है और हम ने उनको और उन्होंने हमको इसपर अल्लाह का वायदा दे रखा है। इसलिए हम वायदा-ख़िलाफ़ी नहीं कर सकते।"

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० उछल कर अबू जन्दल के पास पहुंचे। वह उनके पहलू में चलते जा रहे थे और कहते जा रहे थे, अबू

जन्दल! सब्र करो, ये लोग मुश्रिक हैं, इन का ख़ून तो बस कुत्ते का ख़ून है और साथ ही साथ अपनी तलवार का दस्ता भी उन के क़रीब करते जा रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि मुझे आशा थी कि वह तलवार लेकर अपने बाप (सुहैल) को उड़ा देंगे, लेकिन उन्होंने अपने बाप के बारे में कंजूसी से काम लिया और संधि का समझौता लागू हो गया।

उमरा से हलाल होने के लिए कुर्बानी और बालों की कटाई

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समझौते की लिखा पढ़ी कर के फ़ारिग़ हो चुके, तो फ़रमाया, उठो! और अपन-अपने जानवर कुर्बान कर दो, लेकिन अल्लाह की क़सम! कोई भी न उठा, यहां तक कि आप ने यह बात तीन बार दोहराई, मगर फिर भी कोई न उठा तो आप उम्मे सलमा रज़ि० के पास गए और लोगों के इस पेश आने वाले तरीक़े का ज़िक्र किया। उम्मुल मोमिनीन ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर आप ऐसा चाहते हैं तो फिर आप तशरीफ़ ले जाइए और किसी से कुछ कहे बिना चुपचाप अपना जानवर ज़िब्ह कर दीजिए और अपने हज्जाम को बुला कर सर मुंडा लीजिए।" इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और कुछ कहे बिना यही किया, यानी अपना कुर्बानी का जानवर ज़िब्ह कर दिया और हज्जाम को बुला कर सर मुंडा लिया। जब लोगों ने देखा तो ख़ुद भी उठ कर अपने-अपने जानवर ज़िब्ह कर दिए और इस के बाद आपस में एक दूसरे का सर मूंडने लगे। हालत यह थी कि लगता था कि ग़म की वजह से एक दूसरे का क़त्ल कर देंगे। इस मौक़े पर गाय और ऊंट सात-सात आदमियों की ओर से ज़िब्ह किए गए। आप ने वह ऊंट ज़िब्ह किया जो किसी ज़माने में अबू जहल के पास था। उस की नाक में चांदी का एक हलक़ा था। इस का मक़सद यह था कि मुश्रिक जल भुन कर रह जाएं, फिर अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सर मुंडाने वालों के लिए तीन बार मग़्फ़िरत की दुआ की और कैंची से कटाने वालों के लिए एक बार। इसी सफ़र में अल्लाह ने हज़रत काब बिन उजरा के सिलसिले में यह हुक्म भी उतारा कि जो आदमी कष्ट की वजह से अपना सर (एहराम की हालत में) मुंडा ले, वह रोज़े या सदक़े या ज़बीहे की शक्ल में फ़िदया दे।

हिजरत करने वाली औरतों का वापसी से इंकार

इस के बाद कुछ ईमान वाली औरतें आ गईं। उन के वलियों ने मांग की कि हुदैबिया में जो समझौता पूरा हो चुका है, उस के मुताबिक उन्हें वापस किया जाए, लेकिन आप ने यह मांग इस दलील की वजह से रद्द कर दी कि इस धारा के बारे में समझौते में जो शब्द लिखा गया था वह यह था——

وعلى ان لا یاتیک منا رجل وان کان على دینک الا رددته علینا

"और (यह समझौता इस शर्त पर किया जा रहा है कि) हमारा जो आदमी आप के पास जाएगा आप उसे अनिवार्य रूप से वापस कर देंगे, चाहे वह आप ही के दीन पर क्यों न हो।[1]"

इसलिए औरतें इस समझौते में सिरे से दाख़िल ही न थीं। फिर अल्लाह ने इसी सिलसिले में यह आयत भी उतारी——

يَآيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ ----- بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ ـ

"ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें हिजरत कर के आएं तो उन का इम्तिहान लो, अल्लाह उन के ईमान को बेहतर जानता है, पस अगर उन्हें ईमान वाली जानो तो कुफ़्फ़ार की ओर न पलटाओ, न वे कुफ़्फ़ार के लिए और न कुफ़्फ़ार उन के लिए हलाल हैं। अलबत्ता इन के काफ़िर शौहरों ने जो महर उन को दिए थे, उसे वापस दे दो और (फिर) तुम पर कोई हरज नहीं कि उन से निकाह कर लो जब कि उन्हें उन के महर अदा करो और काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रखो।" (60:10)

1) बुख़ारी 1/380

इस आयत के उतारने के बाद जब कोई ईमान वाली औरत हिजरत कर के आती तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के इस इर्शाद की रोशनी में उस की परीक्षा लेते कि

إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ ـــــ

"(ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें आएं और इस बात पर बैअ़त करें कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी, चोरी न करेंगी, ज़िना न करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी, अपने हाथ-पांव के दर्मियान से कोई बोहतान घड़ कर न लाएंगी और किसी भली बात में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी, तो उन से बैअ़त ले लो और उन के लिए अल्लाह से माफ़ी की दुआ करो, यक़ीनी तौर पर अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।" (60:12)

चुनांचे जो औरतें इस आयत में बयान की गई शर्तों की पाबंदी का वचन देतीं, आप उन से फ़रमाते कि मैंने तुम से बैअ़त ले ली, फिर उन्हें वापस न करते।

इस हुक्म के मुताबिक़ मुसलमानों ने अपनी काफ़िर बीवियों को तलाक़ दे दी, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० के निकाह में दो औरतें थीं जो शिर्क पर क़ायम थीं। आप ने उन दोनों को तलाक़ दे दी। फिर एक से मुआविया ने शादी कर ली और दूसरी से सफ़वान बिन उमैया ने।

इस समझौते की धाराओं का फल

यह है हुदैबिया का समझौता। जो आदमी इस की धाराओं का इन की पृष्ठ-भूमि समेत समीक्षा करेगा, उसे कोई संदेह न रहेगा कि यह मुसलमानों की महान विजय थी, क्योंकि क़ुरैश ने अब तक मुसलमानों के वजूद को माना न था और उन्हें बर्बाद करने पर तुले बैठे थे। उन्हें

इंतिज़ार था कि एक न एक दिन यह ताक़त दम तोड़ देगी। इस के अलावा क़ुरैश अरब प्रायद्वीप के धार्मिक नेता और दुनिया का सदर होने की हैसियत से इस्लामी दावत और आम लोगों के बीच पूरी ताक़त के साथ रुकावट बने रहने की कोशिश में रहते थे। इस पृष्ठ-भूमि में देखिए तो समझौते की ओर सिर्फ़ झुक जाना ही मुसलमानों की ताक़त का स्वीकार करना और इस बात का एलान था कि अब क़ुरैश इस ताक़त को कुचलने की ताक़त नहीं रखते। फिर तीसरी धारा के पीछे साफ़ तौर पर यह मनोवैज्ञानिक स्थिति पैदा होती नज़र आती है कि क़ुरैश को दुनिया के पहलू से सदर और धार्मिक नेतृत्त्व का जो पद प्राप्त था, उसे उन्होंने बिल्कुल भुला दिया था और अब उन्हें सिर्फ़ अपनी पड़ी थी। उन को इस से कोई मतलब न था कि बाक़ी लोगों का क्या बनता है, यानी अगर सारे का सारा अरब प्रायद्वीप इस्लाम की गोद में आ जाए तो क़ुरैश को इस की कोई परवाह नहीं और वे इस में किसी तरह का हस्तक्षेप न करेंगे, क्या क़ुरैश के इरादे और उद्देश्यों की दृष्टि से यह उनकी ज़बरदस्त हार नहीं है? और मुसलमानों के उद्देश्यों की दृष्टि से यह खुली जीत नहीं है? आख़िर इस्लाम के मानने वालों और इस्लाम के विरोधियों के दर्मियान जो ख़ूनी लड़ाइयां हुई थीं उन का मंशा और मक़सद इस के सिवा क्या था कि अक़ीदे (विश्वास) और धर्म (दीन) के बारे में लोगों को पूरी आज़ादी मिल जाए, यानी अपनी आज़ाद मर्ज़ी से जो आदमी चाहे मुसलमान हो और जो चाहे काफ़िर रहे। कोई ताक़त उन की मर्ज़ी और इरादे के सामने रोड़ा बन कर खड़ी न हो। मुसलमानों का यह मक़सद तो हरगिज़ न था कि दुश्मन के माल ज़ब्त किए जाएं, उन्हें मौत के घाट उतारा जाए और उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया जाए, यानी मुसलमानों का मक़सद सिर्फ़ वही था जिसे अल्लामा इक़बाल ने अपने पद्य में यूँ कहा है—

शहादत है मत्लूब व मक़सूदे मोमिन,
न माले ग़नीमत न किश्वर कुशाई।

आप देख सकते हैं कि इस समझौते के ज़रिए मुसलमान का ऊपर ज़िक्र किया गया मक़सद अपने तमाम हिस्सों और ज़रूरी चीज़ों समेत हासिल हो गया और इस तरह हासिल हो गया कि कभी-कभी लड़ाई में खुली विजय मिलने के बावजूद हासिल नहीं हो पाता, फिर इस आज़ादी की वजह से मुसलमानों ने दावत व तब्लीग़ के मैदान में बड़ी ज़बरदस्त कामियाबी हासिल की, चुनांचे मुसलमान फ़ौजों की तायदाद, जो इस समझौते से पहले तीन हजार से ज़्यादा कभी न हो सकी थी, वह सिर्फ़ दो साल के भीतर मक्का विजय के मौक़े पर दस हज़ार हो गयी।

धारा 2 भी हक़ीक़त में इस खुली जीत का एक हिस्सा है, क्योंकि लड़ाई की शुरूआत मुसलमानों ने नहीं, बल्कि मुश्रिकों ने की थी। अल्लाह का इर्शाद है---- وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ

"यानी पहली बार इन्हीं लोगों ने तुम लोगों से शुरूआत की।"

जहां तक मुसलमानों की टुकड़ियों और फ़ौजी गश्तों का ताल्लुक़ है तो मुसलमानों का उद्देश्य इन से केवल यह था कि क़ुरैश अपने मूर्खतापूर्ण गर्व और अल्लाह का रास्ता रोकने से बाज़ आ जाएं और समतापूर्ण आधार पर मामला कर लें, यानी हर फ़रीक़ अपनी-अपनी डगर पर चलते रहने के लिए आज़ाद रहे। अब विचार कीजिए कि दस वर्ष तक लड़ाई बंद रखने का समझौता आख़िर उस घमंड और अल्लाह के रास्ते में रुकावट न डालने ही का तो वचन है, जो इस बात की दलील है कि लड़ाई की शुरूआत करने वाला कमज़ोर और बिना साधन होकर अपने उद्देश्य में असफल हो गया।

जहां तक पहली धारा का ताल्लुक़ है तो यह भी हक़ीक़त में मुसलमानों की नाकामी के बजाए कामियाबी की निशानी है क्योंकि यह धारा हक़ीक़त में उस पांबदी की समाप्ति का एलान है जिसे क़ुरैश ने मुसलमानों पर मस्जिदे हराम में दाख़िले के ताल्लुक़ से लगा रखी थी। हां, इस धारा में क़ुरैश के लिए भी तशफ़्फ़ी की इतनी सी बात थी कि

वे इस एक साल मुसलमानों को रोकने में कामियाब रहे, मगर ज़ाहिर है कि यह थोड़ी देर का और बे-हैसियत फ़ायदा था।

इस के बाद इस समझौते के सिलसिले में यह पहलू भी ध्यान देने का है कि क़ुरैश ने मुसलमानों को ये तीन रियायतें देकर सिर्फ़ एक रियायत हासिल की जिस का ज़िक्र धारा 4 में हुआ है। लेकिन यह रियायत हद दर्जा मामूली और बे-क़ीमत थी और इस में मुसलमानों का कोई नुक़सान न था, क्योंकि यह मालूम था कि जब तक मुसलमान मुसलमान रहेगा, अल्लाह, रसूल और मदीनतुल-इस्लाम से भाग नहीं सकता। इस के भागने की सिर्फ़ एक ही शक्ल हो सकती है कि वह इस्लाम से फिर जाए, चाहे ज़ाहिरी तौर पर चाहे छुप कर और ज़ाहिर है कि जब फिर आए, तो मुसलमानों को इस की ज़रूरत नहीं, बल्कि इस्लामी समाज में उस के मौजूद रहने से कहीं बेहतर है कि वह अलग हो जाए और यही वह बात है जिस की ओर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस इर्शाद में इशारा फ़रमाया था।

إِنَّهُ مَنْ ذَهَبَ مِنَّا إِلَيْهِمْ فَأَبْعَدَهُ اللّٰهُ

"जो हमें छोड़ कर इन मुश्रिकों की ओर भागा, उसे अल्लाह ने दूर (या बर्बाद) कर दिया।[2]"

बाक़ी रहे मक्का के वे बाशिंदे, जो मुसलमान हो चुके थे या मुसलमान होने वाले थे, तो उन के लिए यद्यपि इस समझौते के मुताबिक़ मदीने में पनाह लेने वाला होने की गुंजाइश न थी, लेकिन अल्लाह की ज़मीन तो बहरहाल फैली हुई थी, क्या हब्शा की ज़मीन ने ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुसलमानों के लिए अपनी गोद नहीं खोल दी थी। जब मदीना के लोग इस्लाम का नाम भी नहीं जानते थे? इसी तरह आज भी ज़मीन का कोई टुकड़ा मुसलमानों के लिए अपनी गोद खोल सकता था और

---

2) मुस्लिम बाब सुलहुल-हुदैबियह 2/105

सही बात थी जिसकी तरफ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस इर्शाद में इशारा फ़रमाया था।

وَمَنْ جَاءَنَا مِنْهُمْ سَيَجْعَلُ اللهُ لَهُ فَرَجًا وَّمَخْرَجًا

"उन का जो आदमी हमारे पास आएगा, अल्लाह उसके लिए फैलाव और निकलने की जगह बना देगा।" (मुस्लिम 2:105)

फिर इस क़िस्म के रक्षात्मक उपायों से यद्यपि ज़ाहिरी तौर पर कुरैश ने मान-सम्मान प्राप्त किया था पर यह हक़ीक़त में कुरैश की सख़्त मनोवैज्ञानिक घबराहट, परेशानी, स्नायूई (अअ़साबी) दबाव और टूट जाने की निशानी है। इस से पता चलता है कि इन्हें अपने मूर्तिपूजक समाज के बारे में बड़ा डर लगा हुआ था और वह महसूस कर रहे थे कि उन का यह समाजिक घरौंदा एक खाई के ऐसे खोखले और भीतर से कटे हुए किनारे पर खड़ा है जो किसी भी वक़्त टूट कर गिरने वाला है, इसलिए उस की हिफ़ाज़त के लिए इस तरह के रक्षात्मक उपाय हासिल कर लेना ज़रूरी हैं। दूसरी ओर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस खुले दिल से यह शर्त मंज़ूर की कि कुरैश के यहां पनाह लेने वाले किसी मुसलमान की वापसी की मांग न करेंगे वह इस बात की दलील है कि आप को अपने समाज के जमाव और पक्केपन पर पूरा-पूरा भरोसा था और इस क़िस्म की शर्त आप के लिए क़तई तौर पर किसी डर की वजह न थी।

मुसलमानों का ग़म और हज़रत उमर का वाद-विवाद करना

यह है हुदैबिया-समझौते का स्पष्टीकरण, लेकिन इन धाराओं में दो बातें देखने में ऐसी थीं कि इन की वजह से मुसलमानों को बड़ा दुख और अफ़सोस हुआ----एक यह कि आपने बताया था कि आप बैतुल्लाह तशरीफ़ ले जाएंगे और उस का तवाफ़ करेंगे, लेकिन आप तवाफ़ किए बिना वापस हो रहे थे। दूसरे यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह ने अपना दीन ग़ालिब करने का वायदा किया है, फिर क्या वजह है कि आप ने कुरैश का दबाव कुबूल किया, और दब कर समझौता किया? ये दोनों बातें अच्छी तरह शक व संदेह और गुमान व वस्वसे पैदा कर रही थीं इधर मुसलमानों की भावनाएं इतनी घायल थीं कि वे समझौते की धाराओं की गहराइयों और नतीजों पर विचार करने के बजाए दुख और अफ़सोस से निढाल थे और शायद सब से ज़्यादा ग़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को था। चुनांचे उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या हम लोग हक़ पर और वे लोग बातिल पर नहीं हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्यों नहीं? उन्हों ने कहा, हमारे क़त्ल किए गए लोग जन्नत में और उन के क़त्ल किए गए लोग जहन्नम में नहीं हैं? आप ने फ़रमाया, क्यों नहीं? उन्होंने कहा, तो फिर हम अपने दीन के बारे में दबाव क्यों कुबूल करें और ऐसी हालत में पलटें कि अभी अल्लाह ने हमारे और उन के दर्मियान फ़ैसला नहीं किया है? आप ने फ़रमाया, "ख़त्ताब के साहबज़ादे! मैं अल्लाह का रसूल हूं और उस की नाफ़रमानी नहीं कर सकता। वह मेरी मदद करेगा और मुझे कदापि बर्बाद नहीं करेगा।" उन्होंने कहा, क्या आप ने हम से यह बयान नहीं किया था कि हम बैतुल्लाह की ज़ियारत करेंगे और उस का तवाफ़ करेंगे? आप ने फ़रमाया, क्यों नहीं? लेकिन क्या मैंने यह भी कहा था कि हम इसी साल करेंगे? उन्होंने कहा, नहीं। आपने फ़रमाया, तो बहरहाल तुम बैतुल्लाह तक पहुंचोगे और उस का तवाफ़ करोगे?

इस के बाद हज़रत उमर रज़ियाल्लाहु अन्हु गुस्से से बिफरे हुए हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास पहुंचे और उन से वही बातें कहीं, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कही थीं और उन्होंने भी ठीक वही जवाब दिया जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने दिया था और आख़िर में इतना और बढ़ा दिया कि आप (यानी प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का दामन थामे रहो, यहां तक कि मौत आ जाए, क्योंकि अल्लाह की क़सम, आप हक़ पर हैं।

इस के बाद إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا की आयतें उतरीं, जिस में इस समझौते को खुली जीत क़रार दिया गया है। ये आयतें उतरीं तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया और पढ़ कर सुनाया। वह कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह जीत है? फ़रमाया, हां, इस से उनके दिल को सुकून हो गया और वापस चले गए।

बाद में हज़रत उमर रज़ि० को अपनी ग़लती का एहसास हुआ तो बड़े शर्मिन्दा हुए। खुद उन का बयान है कि मैंने उस दिन जो ग़लती की थी और जो बात कह दी थी, उस से डर कर मैंने बहुत से नेक काम किए, बराबर सदक़ा व ख़ैरात करता रहा, रोज़े रखता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा और ग़ुलाम आज़ाद करता रहा, यहां तक कि अब मुझे ख़ैर की उम्मीद है।[3]

कमज़ोर मुसलमानों का मसअला हल हो गया

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ ला कर संतुष्ट हो चुके तो एक मुसलमान जिसे मक्का में कष्ट दिया जा रहा था छूट कर भाग आया। उनका नाम अबू बसीर रज़ि० था। वह क़बीला सक़ीफ़ से ताल्लुक़ रखते थे और क़ुरैश से दोस्ती का ताल्लुक़ था। क़ुरैश ने उनकी वापसी के लिए दो आदमी भेजे और यह

---

3) सुलह हुदैबिया की तफ़सीलात इन किताबों से ली गई हैं। फ़तहुल-बारी 7/439-458, बुख़ारी 1/378-381, मुस्लिम 2/104-106, इब्ने हिशाम 2/308-322, ज़ादुल-मआद 122-127, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 207-305, तारीख़े उमर बिन अल-ख़त्ताब (इब्ने जौज़ी) 39-40

कहलवाया कि हमारे और आपके बीच जो वचन और वायदा है, उसे पूरा कीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बसीर रज़ि० को उन दोनों के हवाले कर दिया। ये दोनों उन्हें साथ लेकर रवाना हुए और जुल-हुलैफ़ा पहुंच कर उतरे और खजूर खाने लगे। अबू बसीर रज़ि० ने एक आदमी से कहा, ऐ फ़लां! अल्लाह की क़सम! मैं देखता हूं कि तुम्हारी यह तलवार बड़ी उम्दा है। उस आदमी ने उसे न्याम से निकाल कर कहा, हां-हां! अल्लाह की क़सम! यह बहुत अच्छी है। मैंने इसका बार-बार तजुर्बा किया है। अबू बसीर ने कहा, तनिक मुझे दिखाओ, मैं भी देखूं। उस आदमी ने अबू बसीर रज़ि० को तलवार दे दी। और अबू बसीर रज़ि० ने तलवार लेते ही उसे मार कर ढेर कर दिया।

दूसरा भाग कर मदीना आया और दौड़ता हुआ मस्जिदे नबवी में घुस गया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे देख कर फ़रमाया, यह डरा हुआ दिखाई पड़ता है। वह आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंच कर बोला, मेरा साथी अल्लाह की क़सम! क़त्ल कर दिया गया और मैं भी क़त्ल ही किया जाने वाला हूं। इतने में अबू बसीर रज़ि० आ गए और बोले, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह ने आप का वचन पूरा कर दिया। आपने मुझे उनकी ओर पलटा दिया, फिर अल्लाह ने मुझे उनसे निजात दे दी।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "इसकी मां की बर्बादी हो। इसे कोई साथी मिल जाए तो यह तो लड़ाई की आग भड़का देगा।" यह बात सुन कर अबू बसीर समझ गए कि अब उन्हें फिर काफ़िरों के हवाले किया जाएगा इसलिए वे मदीना से निकल कर समुद्र तट पर आ गए। उधर अबू जन्दल बिन सुहैल भी छूट भागे और अबू बसीर से आ मिले। अब कुरैश का जो आदमी भी इस्लाम लाकर भागता वह अबू बसीर से आ मिलता यहां तक कि उनकी एक जमाअत इकट्ठी हो गयी। इसके बाद उन लोगों ने शाम देश आने-जाने वाले

किसी भी कुरैशी क़ाफ़िले का पता चलता तो वे उस से ज़रूर छेड़-छाड़ करते और क़ाफ़िले वालों को मार कर उनका माल लूट लेते। कुरैश ने तंग आ कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह और रिश्तेदारी का हवाला देते हुए पैग़ाम दिया कि आप उन्हें अपने पास बुला लें और अब जो भी आप के पास जाएगा, शान्ति से रहेगा। इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप को बुलवा लिया और वह मदीना आ गए।[4]

कुरैशी भाइयों का इस्लाम कुबूल कर लेना

इस समझौते के बाद 07 हि० के शुरू में हज़रत अम्र बिन आस, ख़ालिद बिन वलीद और उस्मान बिन तलहा रज़ियाल्लाहु अन्हुम मुसलमान हो गए। जब ये लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप ने फ़रमायाः "मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को हमारे हवाले कर दिया है।[5]"

---

4) सुलह हुदैबिया की तफ़सीलात इन किताबों से ली गई हैं। फ़तहुल-बारी 7/439-458, बुख़ारी 1/378-381, मुस्लिम 2/104-106, इब्ने हिशाम 2/308-322, ज़ादुल-मआद 122-127, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 207-305, तारीख़े उमर बिन अल-ख़त्ताब (इब्ने जौज़ी) 39-40

5) इस बारे में बहुत मतभेद है कि यह सहाबा किस साल इसलाम लाए अस्माउर-रिजाल की सब किताबों में इसे 8 हिजरी की घटना बताया गया है। लेकिन नज्जाशी के पास अम्र बिन आस (रज़ि०) के इस्लाम लाने की घटना मशहूर है जो 7 हिजरी की है। और यह भी मालूम है कि हज़रत ख़ालिद और उसमान बिन तलहा उस वक़्त मुसलमान हुए थे जब हज़रत अम्र बिन आस हबशा से वापस आए थे क्योंकि जब वह हबशा से वापस आ कर मदीना के लिए निकले तो रास्ते में इनकी इन दोनों से मुलाक़ात हुई और तीनों हज़रात ने एक साथ ख़िदमते नबवी में हाज़िर हो कर इसलाम कुबूल किया इसका मतलब यह है कि यह सभी हज़रात 7 हिजरी के शुरू में मुसलमान हुए والله اعلم,

नयी तबदीली

हुदैबिया का समझौता हक़ीक़त में इस्लाम और मुसलमानों की ज़िंदगी में एक नए बदलाव की शुरूआत थी। चूंकि इस्लाम की अ़दावत और दुश्मनी में क़ुरैश सब से ज़्यादा मज़बूत, हठधर्म और लड़ाका क़ौम की हैसियत रखते थे, इसलिए जब वे लड़ाई के मैदान में पसपा हो कर सुख-सलामती की ओर आ गए तो अहज़ाब की तीन भुजाओं-----क़ुरैश, ग़तफ़ान और यहूद-----में से सब से मज़बूत भुजा टूट गयी और चूंकि क़ुरैश ही पूरे अरब प्रायद्वीप में बुतपरस्ती के लीडर और अगुवा थे, इस लिए लड़ाई के मैदान से उनके हटते ही बुत-परस्तों की भावनाएं ठंडी पड़ गयीं और उनके शत्रु-भाव में बड़ी हद तक तब्दीली आ गयी। चुनांचे हम देखते हैं कि इस समझौते के बाद ग़तफ़ान की ओर से भी किसी बड़ी कोशिश और शोर-शराबे का प्रदर्शन नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने कुछ किया भी तो यहूदियों के भड़काने पर।

जहां तक यहूदियों का ताल्लुक़ है तो वे यस्रिब से देश-निकाला मिलने के बाद ख़ैबर को अपनी घटिया हरकतों और षड़यंत्रों का अड्डा बना चुके थे। वहां उनके शैतान अंडे-बच्चे दे रहे थे और फ़ित्ने की आग भड़काने में लगे रहते थे वे मदीना के आस-पास आबाद बद्दुओं को भड़काते रहते थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़ात्मे या कम से कम उन्हें बड़े पैमाने पर चोट पहुंचाने के उपाय सोचते रहते थे। इसलिए हुदैबिया-समझौते के बाद नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने सब से पहला और निर्णायक क़दम दुष्टताओं और बिगाड़ों के इसी केन्द्र के ख़िलाफ़ उठाया।

बहरहाल शान्ति के इस मरहले पर जो हुदैबिया-समझौते के बाद शुरू हुआ था, मुसलमानों को इस्लामी दावत फैलाने और प्रचार करने का अहम मौक़ा हाथ आ गया था, इसलिए इस मैदान में उनकी सरगर्मियां ज़्यादा हो गईं जो लड़ाई वाली सरगर्मियों पर छायी रहीं, इसलिए मुनासिब होगा कि इस दौर की दो क़िस्में कर दी जाएं——

1. तब्लीग़ी सरगर्मियां और बादशाहों और क़ौम के सरदारों के नाम पत्र,

2. सामरिक सरगर्मियां।

फिर अनुचित न होगा कि इस मरहले की सामरिक सरगर्मियां पेश करने से पहले बादशाहों और ज़िम्मेदारों के नाम पत्रों का विवरण पेश कर दिया जाए, क्योंकि फ़ितरी तौर पर इस्लामी दावत पहले नम्बर पर है, बल्कि यही वह असल मक़सद है जिसके लिए मुसलमानों ने तरह-तरह की परेशानियां, लड़ाइयां, आज़माइशें, हंगामे और बेचैनियां सहन की थीं।

बादशाहों और सरदारों के नाम पत्र

सन् 06 हि० के आख़िर में जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुदैबिया से वापस तशरीफ़ लाए तो, आपने विभिन्न बादशाहों के नाम पत्र लिख कर उन्हें इस्लाम की दावत दी।

आपने इन पत्रों के लिखने का इरादा फ़रमाया तो आपसे कहा गया कि बादशाह उसी शक्ल में पत्र स्वीकार करेंगे, जब उन पर मुहर लगी हो, इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चांदी की अंगूठी बनवायी जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह उभरा हुआ था। यह निशान तीन लाइनों में था। मुहम्मद एक लाइन में, रसूल एक लाइन में और अल्लाह एक लाइन में।[1] शक्ल यह थी:---- محمد رسول الله

फिर आपने जानकार और अनुभवी सहाबा किराम रज़ि० को दूत के रूप में चुना और उन्हें बादशाहों के पास पत्र देकर भेज दिया। अल्लामा मंसूरपुरी ने पूरे विश्वास के साथ लिखा है कि आपने ये दूत अपने ख़ैबर जाने से कुछ दिन पहले पहली मुहर्रम सन् 07 हि० को रवाना फ़रमाए थे।[2] अगली लाइनों में वह पत्र और उनसे उभरने वाले कुछ प्रभाव पेश किए जा रहे हैं———

---

1) बुख़ारी 2/872-873

2) रहमतुल-लिल-आलमीन 1/171

1. नज्जाशी शाहे हब्श के नाम पत्र

इस नज्जाशी का नाम असहमा बिन अबजर था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के नाम जो पत्र लिखा उसे अम्र बिन उमैया जुमरी रज़ि० के ज़रिए सन् 06 हि० के आख़िर या 07 हि० के शुरू में रवाना फ़रमाया। तबरी ने इस ख़त के शब्दों का भी उल्लेख किया है, लेकिन इसे ध्यान से देखने से अंदाज़ा होता है कि यह वह ख़त नहीं है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुदैबिया-समझौते के बाद लिखा था, बल्कि यह ख़त शायद उस ख़त की इबारत है जिसे आप ने मक्की दौर में हज़रत जाफ़र रज़ि० को, उन की हब्शा की हिजरत के वक़्त दिया था, क्योंकि ख़त के आख़िर में मुहाजिरों का उल्लेख इन लफ़्ज़ों में किया गया है---------

وقد بعثت اليكم ابن عمى جعفرا ومعه نفر من المسلمين، فاذا جاءك فاقرهم ودع التجبر

"मैंने तुम्हारे पास अपने चचेरे भाई जाफ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ रवाना किया है, जब वह तुम्हारे पास पहुंचें तो उन्हें अपने पास ठहराना और जब्र इख़्तियार न करना।

बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से एक और ख़त का लेख रिवायत किया है जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्जाशी के पास रवाना किया था उसका अनुवाद यह है-------

"यह ख़त है मुहम्मद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से नज्जाशी असहम शाहे हबशा के नाम,

उस पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसने न कोई बीवी इख़्तियार की, न लड़का और (मैं इसकी भी गवाही देता हूं कि) मुहम्मद उसका बन्दा और रसूल

है और मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं क्योंकि मैं उसका रसूल हूं, इसलिए इस्लाम लाओ सलामत रहोगे, "ऐ अह्ले किताब एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करें, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं, हम में से कोई किसी को अल्लाह के बजाए रब न बनाए। पस अगर वे मुंह मोड़ें तो कह दो कि गवाह रहो, हम मुसलमान हैं। अगर तुमने यह दावत कुबूल न की तो तुम पर अपनी क़ौम के नसारा का गुनाह है।"

डाक्टर हमीदुल्लाह साहब (पैरिस) ने एक और ख़त को नोट किया है जो अभी पिछले कुछ सालों (माज़ी क़रीब में) पहले मिला है और सिर्फ़ एक शब्द के मतभेद के साथ यही ख़त अल्लामा इब्ने क़य्यिम की पुस्तक "ज़ादुल मआद" में भी मौजूद है। डा० साहब ने इस पत्र के लेख की जांच-पड़ताल में बड़ा दिमाग़ लगा कर काम लिया है आज के दौर की बहुत सी नयी जानकारियों से बहुत कुछ फ़ायदा उठाया है और इस पत्र का फ़ोटो किताब में शामिल है। इस पत्र का अनुवाद यह है———

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हब्शा के अज़ीम नज्जाशी के नाम,

"उस आदमी पर सलाम, जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद मैं तुम्हारी ओर अल्लाह की हम्द (गुण-गान) करता हूं, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जो कुद्दूस और सलाम है। अम्न देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला और निगरां है। और मैं गवाही देता हूं कि ईसा इब्ने मरयम अल्लाह की रूह और उसका कलिमा हैं। अल्लाह ने उन्हें पवित्र और पाक-दामन मरयम बतूल की तरफ़ डाल दिया और उसकी रूह और फूंक से मरयम ईसा अलैहि० के लिए गर्भवती हुईं, जैसे अल्लाह ने आदम को अपने हाथ से पैदा किया, मैं الله وحده لا شريك له की तरफ़ और उस

की इताअत पर एक दूसरे की मदद की ओर दावत देता हूं और इस बात की तरफ़ (बुलाता हूं) कि तुम मेरी पैरवी करो और जो कुछ मेरे पास आया है, उस पर ईमान ले आओ, क्योंकि मैं अल्लाह का रसूल हूं और मैं तुम्हें और तुम्हारी सेना को अल्लाह की ओर बुलाता हूं और मैंने तब्लीग़ व नसीहत कर दी, इसलिए मेरी नसीहत क़ुबूल करो और उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे।[3]"

डा० हमीदुल्लाह साहब ने बड़े विश्वास भरे शब्दों में कहा है कि यही वह ख़त है जिसे अल्लाह के रसूल ने हुदैबिया के बाद नज्जाशी के पास रवाना फ़रमाया था। जहां तक इस की प्रमाणिकता की बात है तो दलीलों पर नज़र डालने के बाद इसके सही होने में कोई संदेह नहीं रहता, लेकिन इस बात की कोई दलील नहीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुदैबिया के बाद यही ख़त रवाना फ़रमाया था, बल्कि बैहक़ी ने जो पत्र इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से नक़्ल किया है, उस की शैली उन पत्रों से ज़्यादा मिलती-जुलती है, जिन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुदैबिया के बाद ईसाई बादशाहों और सरदारों के पास रवाना फ़रमाया था, क्योंकि जिस तरह आपने इन पत्रों में 'आयते करीमा; يَااَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ नोट फ़रमाई थी, उसी तरह बैहक़ी के रिवायत किए हुए ख़त में भी यह आयत दर्ज है। इस के अलावा इस पत्र में स्पष्ट शब्दों में असहमा का नाम भी आ गया है जबकि डा० हमीदुल्लाह साहब के नक़्ल किए हुए ख़त में किसी का नाम नहीं है, इस लिए मेरा ग़ालिब गुमान यह है कि डा० साहब का नक़्ल किया हुआ ख़त हक़ीक़त में वह ख़त है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने असहमा की वफ़ात के बाद उसके

3) देखिए रसूले अकरम की सियासी जिन्दगी(डा० हमीदुल्लाह) 108,109,122-125. ज़ादुल-मआद में आख़िरी वाक्य (जुमला) والسلام على من اتبع الهدى की जगह اسلم انت है देखिए ज़ादुल-मआद 3/60

जानशीं के नाम लिखा था और शायद यही वजह है कि उसमें कोई नाम लिखा हुआ नहीं है।

इस तर्तीब की मेरे पास कोई दलील नहीं है, बल्कि इसकी बुनियाद केवल वे अंदरूनी गवाहियां है जो इन ख़तों के लेखों से मालूम होती हैं। अलबत्ता डा० हमीदुल्लाह साहब पर ताज्जुब है कि उन्होंने इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से बैहक़ी के नक़्ल किए हुए पत्र को पूरे विश्वास के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वह ख़त क़रार दिया है जो आपने असमहा की वफ़ात के बाद उसके जानशीं के नाम लिखा था, हालांकि उस पत्र में स्पष्ट शब्दों में असहमा का नाम मौजूद है (अल्लाह बेहतर जाने)[4]

बहरहाल जब अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पत्र नज्जाशी के हवाले किया, तो नज्जाशी ने उसे लेकर आंख पर रखा और तख़्त (सिंहासन) से ज़मीन पर उतर आया और हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ि० के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर इस बारे में पत्र में लिखा, जो यह है---------

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

मुहम्मद, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में नज्जाशी असहमा की ओर से ——

ऐ अल्लाह के नबी, आप पर अल्लाह की तरफ़ से सलाम और उसकी रहमत और बरकत हो, वह अल्लाह जिस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। अम्मा बादः

ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुझे आपका पत्र मिला जिसमें आप ने ईसा अलैहि० का मामला ज़िक्र किया है।

---

4) देखिए रसूले अकरम की सियासी ज़िन्दगी 108-114, 121-131

आसमान व ज़मीन के अल्लाह की क़सम! आपने जो कुछ ज़िक्र फ़रमाया है, हज़रत ईसा अलैहि० उससे एक तिनका बढ़ कर न थे। वह वैसे ही थे जैसे आपने ज़िक्र फ़रमाया है[5] फिर आपने जो कुछ हमारे पास भेजा है हमने उसे जाना और आप के चचेरे भाई और आप के सहाबा रज़ि० की मेहमान नवाज़ी की और मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के सच्चे और पक्के रसूल हैं। और मैंने आप से बैअ़त की और आप के चचेरे भाई से बैअ़त की और उनके हाथ पर अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के लिए इस्लाम कुबूल किया।[6]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्जाशी से यह भी कहा था कि वह हज़रत जाफ़र रज़ि० और हब्शा के दूसरे मुहाजिरों को रवाना कर दे, चुनांचे उसने हज़रत अ़म्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० के साथ दो नावों में उनके रवाना होने का इन्तिज़ाम कर दिया। एक नाव के सवार जिसमें हज़रत जाफ़र और हज़रत अबू मूसा अशअ़री और कुछ दूसरे सहाबा रज़ि० थे, सीधे ख़ैबर पहुंच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दूसरी नाव के सवार जिनमें ज़्यादातर बाल-बच्चे थे, सीधे मदीना पहुंचे।[7]

ज़िक्र किए गए नज्जाशी ने तबूक की लड़ाई के बाद रजब सन् 09 हि० में वफ़ात पाई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी वफ़ात ही के दिन सहाबा किराम रज़ि० को उसकी मौत की ख़बर दी और उस पर ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। उसकी वफ़ात के बाद दूसरा बादशाह उसका जानशीं होकर सिंहासन पर बैठा, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

5) हज़रत ईसा के सबंद्ध में यह वाक्य (जुमले) डा० हमीदुल्लाह की इस राय का समर्थन करते हैं कि इसका यह ख़त असहमा के नाम था। (والله اعلم)

6) ज़ादुल-मआद 3/61

7) इब्ने हिशाम 1/359

सल्लम ने उसके पास भी एक पत्र भेजा, लेकिन यह न मालूम हो सका कि उसने इस्लाम क़ुबूल किया या नहीं।[8]

मुक़ौक़िस, शाहे मिस्र के नाम पत्र

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पत्र जुरैज बिन मत्ता[9] के नाम रवाना फ़रमाया जिस की उपाधि मुक़ौक़िस थी और जो मिस्र और इस्कन्दरिया का बादशाह था। पत्र इस तरह है---------

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

अल्लाह के बंदे और उसके रसूल मुहम्मद की ओर से मुक़ौक़िस अज़ीमे क़िब्त की ओर

उस पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। अम्मा बाद---------

मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं, इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे और इस्लाम लाओ, अल्लाह तुम्हें दोहरा बदला देगा, लेकिन अगर तुमने मुंह मोड़ा तो तुम पर क़िब्त वालों का भी गुनाह होगा। "ऐ क़िब्त वालो! एक ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएं और इस में से कोई किसी को अल्लाह के बजाए रब न बनाए, पस अगर वह मुंह मोड़ें तो कह दो कि गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं।[10]"

---

8) यह बात कुछ हद तक मुस्लिम की रिवायत से ली जा सकती है जो हज़रत अनस (रज़ि०) से ब्यान की गई है। 2/99

9) यह नाम अल्लामा मंसूरपूरीने रहमतुल-लिल-आलमीन 1/178 में दिया है जबकि डा० हमीदुल्लाह ने इसका नाम बिन्यामीन बताया है देखिए रसूले अकरम की सियासी ज़िन्दगी 141

10) ज़ादुल-मआद (इब्ने क़य्यिम) 3/61 अभी जल्दी ही यह ख़त मिला है डा० हमीदुल्लाह ने इसका जो फ़ोटो अपनी किताब में दिया है उसमें और ज़ादुल-मआद के लेख में सिर्फ़ दो लफ़्ज़ों का अंतर है। ज़ादुल-मआद में है اسلم تسلم اسلم يوتك الله और ख़त में है فاسلم تسلم يوتك الله इसी तरह ज़ादुल-मआद में है اثم اهل القبط और ख़त में है اثم القبط देखिए रसूले अकरम की सियासी ज़िन्दगी 136-137

इस पत्र को पहुंचाने के लिए हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ को चुना गया। वह मुक़ौक़िस के दरबार में पहुंचे तो फ़रमाया। "(इस ज़मीन पर) तुमसे पहले एक आमदी गुज़रा है जो अपने आप को सब से बड़ा रब (पालनहार) समझता था। अल्लाह ने उसे पहले और आख़िर के लोगों के लिए एक शिक्षा बना दिया। पहले तो उस के द्वारा लोगों से बदला लिया, फिर खुद उसको बदले का निशाना बनाया। इस लिए दूसरे से शिक्षा लो, ऐसा न हो कि दूसरे तुम से शिक्षा लें।"

मुक़ौक़िस ने कहा, हमारा एक दीन है जिसे हम छोड़ नहीं सकते, जब तक कि उस से बेहतर दीन न मिल जाए।

हज़रत हातिब ने फ़रमाया, "हम तुम्हें इस्लाम की दावत देते हैं जिसे अल्लाह ने तमाम दीनों के बदले काफ़ी बना दिया है। देखो! इस नबी ने लोगों को (इस्लाम की) दावत दी तो उस के ख़िलाफ़ क़ुरैश सब से ज़्यादा सख़्त साबित हुए। यहूदियों ने सब से बढ़ कर दुश्मनी की और नसारा (ईसाई) सब से ज़्यादा क़रीब रहे। मेरी उम्र की क़सम! जिस तरह हज़रत मूसा अलैहि० ने हज़रत ईसा अलैहि० के लिए ख़ुशख़बरी दी थी, उसी तरह हज़रत ईसा अलैहि० ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ुशख़बरी दी है और हम तुम्हें क़ुरआन मजीद की दावत उसी तरह देते हैं जैसे तुम तौरात वालों को इंजील की दावत देते हो। जो नबी जिस क़ौम को पा जाता है, वह क़ौम उस की उम्मत हो जाती है और उस पर ज़रूरी हो जाता है कि वह उस नबी की इताअत करे और तुमने उस नबी का दौर पा लिया है और फिर हम तुम्हें मसीही दीन से रोकते नहीं हैं बल्कि हम तो उसी का हुक्म देते हैं।"

मुक़ौक़िस ने कहा, "मैंने इस नबी के मामले पर ग़ौर किया तो मैंने पाया कि वह किसी ना-पसंदीदा बात का हुक्म नहीं देते और किसी पसंदीदा बात से मना नहीं करते, वह न गुमराह जादूगर हैं न झूठे काहिन, बल्कि मैं देखता हूं कि उनके साथ नुबूवत की यह निशानी है

कि वह छिपी बातों को निकालते और कानाफूंसी की ख़बर देते हैं, मैं और विचार करूंगा।''

मुक़ौक़िस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त लेकर (एहतिराम के साथ) हाथी-दांत की एक डिबिया में रख दिया, और मोहर लगा कर अपनी एक लौंडी के हवाले कर दिया। फिर अरबी लिखने वाले एक कातिब को बुला कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में नीचे लिखा पत्र लिखवाया————

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम''

''मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के लिए मुक़ौक़िस अज़ीमे क़िब्त की ओर से।

आप पर सलाम! अम्मा बाद

मैंने आपका पत्र पढ़ा और आपकी ज़िक्र की हुई बात और दावत को समझा। मुझे मालूम है कि अभी एक नबी का आना बाक़ी है। मैं समझता था कि वह शाम (सीरिया) से ज़ाहिर होगा। मैंने आपके दूत का मान-सम्मान किया। आपकी सेवा में दो लौंडियां भेज रहा हूं जिन्हें क़िब्तियों में बड़ा दर्जा हासिल है और कपड़े भेज रहा हूं और आपकी सवारी के लिए एक ख़च्चर भी भेंट कर रहा हूं और आप पर सलाम!''

मुक़ौक़िस ने इस पर कुछ इज़ाफ़ा नहीं किया, और इस्लाम नहीं लाया। दोनों लौंडियां मारिया और सीरीन थीं, ख़च्चर का नाम दुल-दुल था जो हज़रत मुआविया रज़ि० के ज़माने तक बाक़ी रहा।[11] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मारिया को अपने पास रखा, और उन्हीं के बतन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटे इब्राहीम पैदा हुए और सीरीन को हज़रत हस्सान बिन सबित अंसारी के हवाले कर दिया।

---

11) ज़ादुल-मआद 3/61

3. शाहे फ़ारस ख़ुसरू परवेज़ के नाम ख़त

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ख़त बादशाहे फ़ारस किसरा (खुसरू) के पास रवाना किया, जो यह था-----------

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

"मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से किसरा अज़ीमे फ़ारस की ओर

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदे और रसूल हैं। मैं तुम्हें अल्लाह की ओर बुलाता हूं, क्योंकि मैं तमाम इंसानों की तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ हूं, ताकि जो आदमी ज़िंदा है उसे बुरे अंजाम से डराया जाए और काफ़िरों पर हक़ बात साबित हो जाए। (यानी हुज्जत पूरी हो जाए) पस तुम इस्लाम लाओ सुरक्षित रहोगे और अगर इससे इंकार किया तो तुम पर मजूस के गुनाह का भी बोझ होगा।"

इस पत्र को ले जाने के लिए आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० का चुनाव किया। उन्होंने यह पत्र बहरैन के ज़िम्मेदार के हवाले किया। अब यह नहीं मालूम कि बहरैन के ज़िम्मेदार ने यह पत्र अपने किसी आदमी के ज़रिए किसरा के पास भेजा या खुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० को रवाना किया, बहरहाल जब यह ख़त किसरा को पढ़कर सुनाया गया तो उसने चाक कर दिया और बड़े ही गर्व के साथ बोला, मेरी प्रजा में से एक तुच्छ दास अपना नाम मुझ से पहले लिखता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इस घटना की ख़बर हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह उसकी बादशाही को टुकड़-टुकड़े करे और फिर वही हुआ जो आपने फ़रमाया था। चुनांचे उसके बाद किसरा ने अपने यमन के गवर्नर बाज़ान को लिखा कि यह आदमी जो हिजाज़ में

है, उस के यहां अपने दो ताक़तवर और मज़बूत आदमी भेज दो कि वे उसे मेरे पास हाज़िर करें। बाज़ान ने हुक्म के मुताबिक़ दो आदमी चुने और उन्हें एक पत्र देकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास रवाना किया, जिसमें आप को यह हुक्म दिया गया था कि इनके साथ किसरा के पास हाज़िर हो जाएं। जब वे मदीना पहुंचे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने हाज़िर हुए तो एक ने कहा, "किसरा शहंशाह ने शाह बाज़ान को एक पत्र के द्वारा हुक्म दिया है कि वह आप के पास एक आदमी भेज कर आपको किसरा के सामने हाज़िर करे और बाज़ान ने इस काम के लिए मुझे आप के पास भेजा है कि आप मेरे साथ चलें। साथ ही दोनों ने धमकी भरी बातें भी कहीं। आपने उन्हें हुक्म दिया कि कल मुलाक़ात करें।"

उधर ठीक उसी वक़्त जब कि मदीना में यह दिलचस्प "मुहिम" सामने आयी थी, ख़ुद ख़ुसरू परवेज़ के घराने के अंदर उस के ख़िलाफ़ विद्रोह का एक ज़बरदस्त शोला भड़क रहा था, जिस के नतीजे में क़ैसर की सेना के हाथों फ़ारसी सेनाओं की बराबर हार के बाद अब ख़ुसरू का बेटा शेरवैह अपने बाप को क़त्ल कर के ख़ुद बादशाह बन बैठा था। यह मंगल की रात 10 जमादिल-ऊला सन् 07 हि० की घटना है।[12]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस घटना की जानकारी वह्य के ज़रिए हुई। चुनांचे जब सुबह हुई और दोनों फ़ारसी प्रतिनिधि हाज़िर हुए तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन्हें इस घटना की ख़बर दी। उन दोनों ने कहा, कुछ होश है, आप क्या कह रहे हैं? हमने इससे बहुत मामूली बात भी आपके जुर्म में शामिल की है, तो क्या आपकी यह बात हम बादशाह को लिख भेजें? आपने फ़रमाया हां, उसे मेरी इस बात की ख़बर कर दो और उससे यह भी कह दो कि मेरा दीन और हुकूमत वहां तक पहुंच कर रहेगी जहां तक किसरा पहुंच चुका

12) फ़तहुल-बारी 8/127

है, बल्कि इस से भी आगे बढ़ते हुए उस जगह जाकर रुकेगी जिस से आगे ऊंट और घोड़े के क़दम जा ही नहीं सकते। तुम दोनों उस से यह भी कह देना कि अगर तुम मुसलमान हो जाओ तो जो कुछ तुम्हारे क़ब्ज़े में है, वह सब मैं तुम्हें दे दूंगा और तुम्हें तुम्हारी क़ौम अबना का बादशाह बना दूंगा। इसके बाद वे दोनों मदीना से रवाना हो कर बाज़ान के पास पहुंचे और उसे विस्तार से सब बातें बतायीं। थोड़ी देर बाद एक पत्र आया कि शेरवैह ने अपने बाप की हत्या कर दी है। शेरवैह ने अपने उस पत्र में यह भी हिदायत की थी कि जिस आदमी के बारे में मेरे बाप ने तुम्हें लिखा था, उसे दूसरा हुक्म आने तक भड़काना नहीं।

इस घटना की वजह से बाज़ान और उसके फ़ारसी साथी (जो यमन में मौजूद थे) मुसलमान हो गए।[13]

4. क़ैसर शाहे रूम के नाम पत्र

सहीह बुख़ारी में एक लम्बी हदीस में वह पत्र दर्ज है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिरक़्ल शाहे रूम के पास रवाना फ़रमाया था। वह पत्र यह है

"बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम"

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जानिब से हिरक़्ल अज़ीमे रूम की तरफ़।

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। तुम इस्लाम लाओ, सालिम रहोगे, इस्लाम लाओ अल्लाह तुम्हें तुम्हारा बदला दो बार देगा। और अगर तुमने मुंह फेरा तो तुम पर अरीसियों (प्रजा) का (भी) गुनाह होगा। ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी और को न पूजें, उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न करें और अल्लाह के

13) मुहाज़िराते ख़िज़री 1/147, फ़तहुल-बारी 8/127-128, देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन

...ब न बनाए। पस अगर लोग रुख़ फेरें ...कह दो कि तुम लोग गवाह रहो हम मुसलमान हैं।[14]"

...इस पत्र को पहुंचाने के लिए दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी को चुना ... आप ने उन्हें हुक्म दिया कि वह यह ख़त बसरी ज़िम्मेदार के ...ाले कर दें और वह इसे क़ैसर के पास पहुंचा देगा। इसके बाद जो ...पेश आया उसका विवरण सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ि० से ...वायत किया गया है। उनका कहना है कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ने उनसे बयान किया कि हिरक़्ल ने उसको क़ुरैश की एक जमाअत समेत बुलवाया। यह जमाअत हुदैबिया-समझौते के तहत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के दर्मियान तय की गयी अम्न (शान्ति) अवधि में शाम-देश को व्यापार के लिए गयी हुई थी। ये लोग ईलिया (बैतुल मक़्दिस) में उस के पास हाज़िर हुए।[15] हिरक़्ल ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया। उस वक़्त उस के चारों ओर रूम के बड़े बड़े लोग थे। फिर उस ने उन को और अपने अनुवादक को बुला कर कहा कि यह आदमी जो अपने आप को नबी समझता है, उससे तुम्हारा कौन सा आदमी सब से ज़्यादा क़रीबी नसबी (वंशीय) ताल्लुक़ रखता है? अबू सुफ़ियान का बयान है कि मैं ने कहा, मैं वंशीय दृष्टि से उसका सबसे ज़्यादा क़रीबी आदमी हूं। हिरक़्ल ने कहा इसे मेरे क़रीब कर दो और उसके साथियों को भी क़रीब करके उसके पीछे बिठा

14) बुख़ारी 1/4-5

15) इस वक़्त क़ैसर इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए हमस से इलिया (बैतुल-मुक़द्दस) गया हुआ था कि अल्लाह ने उसके हाथों फ़ारिस को खुली पराजय (हार) दी (मुस्लिम 2/99) इसकी तफ़सील यह है कि फ़ारसियों ने ख़ुसरो परवेज़ को क़त्ल करने के बाद रूमियों से उनके क़ब्ज़ा किए हुए इलाक़ों की वापसी की शर्त पर सुलह (सन्धि) कर ली और वह सलीब भी वापस कर दी जिसके बारे में ईसाइयों का मानना है कि इसी पर हज़रत ईसा अलैहिस-सलाम को फांसी दी गई थी। क़ैसर इस सुलह के बाद सलीब को इसकी अपनी जगह स्थापित करने और इस कामयाबी पर अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए 629 ई० अर्थात 7 हिजरी में इलिया गया था।

दो। इसके बाद हिरक़्ल ने अपने आदमी से कहा कि मैं इस आदमी से उस आदमी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में कुछ सवाल करूंगा। अगर यह झूठ बोले, तो तुम लोग उसे झुठला देना। अबू सुफ़ियान कहते हैं कि अल्लाह की क़सम अगर झूठ बोलने की बदनामी का डर न होता तो मैं आपके बारे में यक़ीनी तौर पर झूठ बोलता।

अबू सुफ़ियान कहते हैं, इसके बाद पहला सवाल जो हिरक़्ल ने मुझसे आपके बारे में किया, वह यह था कि तुम लोगों में उसका वंश कैसा है?

मैंने कहाः वह ऊंचे वंश वाला है।

हिरक़्ल ने कहाः तो क्या यह बात इससे पहले भी तुम में से किसी ने कही थी?

मैंने कहाः नहीं।

हिरक़्ल ने कहाः क्या इसके बाप दादा में से कोई बादशाह गुज़रा है?

मैंने कहाः नहीं।

हिरक़्ल ने कहाः अच्छा तो बड़े लोगों ने उसकी पैरवी की है या कमज़ोरों ने?

मैंने कहाः बल्कि कमज़ोरों ने।

हिरक़्ल ने कहाः ये लोग बढ़ रहे हैं या घट रहे हैं?

मैंने कहाः बल्कि बढ़ रहे हैं।

हिरक़्ल ने कहाः क्या इस दीन में दाख़िल होने के बाद कोई आदमी इस दीन से हट कर मुर्तद्द (विधर्मी) भी होता है?

मैंने कहाः नहीं।

हिरक़्ल ने कहाः इस ने जो बात कही है क्या उसे कहने से पहले

तुम लोग उसे "झूठा" कहते थे।

मैंने कहाः नहीं।

हिरक़्ल ने कहाः क्या वह बद-अहदी (वादा ख़िलाफ़ी) भी करता है?

मैंने कहाः नहीं, अलबत्ता हम लोग इस वक़्त उसके साथ सुलह की एक मुद्दत गुज़ार रहे हैं मालूम नहीं इसमें वह क्या करेगा? अबू सुफ़ियान कहते हैं कि इस वाक्य के अलावा मुझे और कहीं कुछ घुसेड़ने का मौक़ा नहीं मिला?

हिरक़्ल ने कहाः क्या तुम लोगों ने उससे लड़ाई लड़ी है?

मैंने कहाः जी हां।

हिरक़्ल ने कहाः तो तुम्हारी और उसकी लड़ाई कैसी रही?

मैंने कहाः लड़ाई हम दोनों के दर्मियान डोल के समान है। वह हमें नुक़्सान पहुंचा लेता है और हम उसे नुक़्सान पहुंचा लेते हैं।

हिरक़्ल ने कहाः वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देता है?

मैंने कहाः वह कहता है कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो। तुम्हारे बाप दादा जो कुछ कहते थे उसे छोड़ दो और वह हमें नमाज़, सच्चाई, परहेज़-गारी, पाक-दामनी और रिश्तेदारों के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म देता है।

इसके बाद हिरक़्ल ने अपने अनुवादक से कहा, "तुम उस व्यक्ति (अबू सुफ़ियान) से कहो कि मैंने तुम से इस आदमी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का वंश पूछा, तो तुम ने बताया कि वह ऊंचे वंश का है और क़ाइदा यही है कि पैग़म्बर अपनी क़ौम के ऊंचे वंश में से भेजे जाते हैं।

और मैंने मालूम किया कि क्या यह बात इससे पहले भी तुम में से किसी ने कही थी? तुम ने बतलाया कि नहीं। मैं कहता हूं कि अगर यह बात इससे पहले किसी और ने कही होती तो मैं यह कहता कि यह

व्यक्ति एक ऐसी बात की नक़्क़ाली कर रहा है जो इससे पहले कही जा चुकी है।

और मैंने मालूम किया कि क्या इसके बाप दादों में कोई बादशाह गुज़रा है? तुमने बताया कि नहीं। मैं कहता हूं कि अगर इसके बाप दादों में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं कहता कि यह आदमी अपने बाप की बादशाही चाहता है।

और मैंने यह मालूम किया कि क्या जो बात इसने कही है, उसे कहने से पहले तुम लोग उसे झुठा कहा करते थे? तो तुमने बताया कि नहीं, और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह लोगों पर तो झूठ न बोले और अल्लाह पर झूठ बोले।

मैंने यह भी मालूम किया कि बड़े लोग इस की पैरवी कर रहे हैं या कमज़ोर? तो तुमने यह बताया कि कमज़ोरों ने इसका पालन किया है और सच तो यह है कि यही लोग पैग़म्बरों को मानने वाले होते हैं।

मैंने पूछा कि क्या इस दीन में दाख़िल होने के बाद कोई आदमी विमुख होकर विधर्मी भी हो जाता है, तो तुम ने बतलाया कि नहीं और सच तो यह है कि ईमान जब पूरी तरह दिलों में घुस जाता है तो ऐसा ही होता है।

और मैंने मालूम किया कि क्या वह वायदे के ख़िलाफ़ भी करता है, तो तुम ने बतलाया कि नहीं। और पैग़म्बर ऐसे ही होते हैं। वे वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करते।

मैंने यह भी पूछा कि वह किन बातों का हुक्म देता है? तो तुम ने बताया कि वह तुम्हें अल्लाह की इबादत करने और उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराने का हुक्म देता है, मूर्ति पूजा से रोकता है और नमाज़, सच्चाई और परहेज़गारी व पाकदामनी का हुक्म देता है।

तो जो कुछ तुमने बताया है, अगर वह सही है तो यह आदमी बहुत जल्द मेरे इन दोनों क़दमों की जगह का मालिक हो जाएगा। मैं जानता था कि यह नबी आने वाला है, लेकिन मेरा यह गुमान न था कि वह तुम में से होगा। अगर मुझे यक़ीन होता कि मैं उसके पास पहुंच सकूंगा तो उस से मुलाक़ात का कष्ट सहन करता और अगर उसके पास होता तो उसके दोनों पांव धोता।"

इसके बाद हिरक़्ल ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त मंगा कर पढ़ा। जब पढ़ कर फ़ारिग़ हुआ तो वहां आवाज़ें उठीं और बड़ा शोर मचा। हिरक़्ल ने हमारे बारे में हुक्म दिया और हम बाहर कर दिये गए। जब हम लोग बाहर लाए गए, तो मैंने अपने साथियों से कहा, अबू कबशा[16] के बेटे का मामला बड़ा ज़ोर पकड़ गया, इससे तो बनू असफ़र (रूमियों)[17] का बादशाह डरता है। इसके बाद मुझे बराबर यक़ीन रहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन ग़ालिब आकर रहेगा, यहां तक कि अल्लाह ने मेरे अंदर इस्लाम को दाख़िल कर दिया।

यह क़ैसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक पत्र का वह असर था जिसे अबू सुफ़ियान ने देखा। इस मुबारक पत्र का एक असर यह भी हुआ कि क़ैसर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस मुबारक लेख को पहुंचाने वाले यानी देह्या कलबी रज़ि०

---

16) अबू कबशा के बेटे का अभिप्राय (से मुराद) नबी (सल्ल०) हैं। अबू कबशा आप के दादा या नाना में से किसी का उपनाम है और कहा जाता है कि यह हलीमा सअदिया (आप (सल्ल०) को दूध पिलाने वाली) के पति का उपनाम था बहरहाल अबू कबशा एक अनजान आदमी है। अरब में यह चलन था कि जब किसी की निंदा करनी होती तो उसको उसके बाप दादा में से किसी अनजान आदमी के नाम से पुकारते थे।

17) बनुल-असफ़र (असफ़र की औलाद—असफ़र का अर्थ पीला) रुमियों को बनुल-असफ़र कहा जाता है क्यों कि रुम के जिस बेटे से रुमियों की नस्ल थी वह किसी वजह से असफ़र (पीले) के उपनाम से प्रसिद्ध हो गया था।

को माल और दौलत से नवाज़ा, लेकिन हज़रत दिह्या रज़ि० ये तोहफ़े लेकर वापस हुए तो हिस्मा में क़बीला जुज़ाम के कुछ लोगों ने उन पर डाका डाल कर सब कुछ लूट लिया। हज़रत दिह्या रज़ि० मदीना पहुंचे तो अपने घर के बजाए सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा माजरा कह सुनाया। बातें सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्त्व में पांच सौ सहाबा किराम की एक जमाअत हिस्मा रवाना फ़रमाई। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने क़बीला जुज़ाम पर रात को छापा मारकर उनकी ख़ासी तायादाद को क़त्ल कर दिया और उनके चौपायों और औरतों को हांक लाए। चौपायों में एक हज़ार ऊंट और पांच हज़ार बकरियां थीं और क़ैदियों में एक सौ औरतें और बच्चे थे।

चूंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और क़बीला जुज़ाम में पहले से समझौता चला आ रहा था, इसलिए इस क़बीले के एक सरदार ज़ैद बिन रिफ़ाआ जुज़ामी रज़ि० ने झट नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में विरोध प्रकट किया और फ़रियाद की। ज़ैद बिन रिफ़ाआ रज़ि० इस क़बीले के कुछ और लोगों के साथ पहले ही मुसलमान हो चुके थे और जब हज़रत दिह्या रज़ि० पर डाका पड़ा था तो उनकी मदद भी की थी, इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका विरोध स्वीकार करते हुए ग़नीमत के माल और क़ैदी वापस कर दिए।

आम तौर से युद्ध का वर्णन करने वाले लेखकों ने इस घटना को हुदैबिया-समझौते से पहले बताया है, मगर यह भारी ग़लती है, क्योंकि क़ैसर के पास पत्र हुदैबिया के समझौते के बाद रवाना किया गया था, इसलिए अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि यह घटना निःसन्देह हुदैबिया के बाद की है।[18]

18) देखिए ज़ादुल-मआद 2/122, हाशिया तलक़ीहुल-फ़ुहूम 29

6. मुंज़िर बिन सावी के नाम पत्र

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पत्र मुंज़िर बिन सावी, हाकिमे बहरैन, के पास लिख कर उसे भी इस्लाम की दावत दी और इस पत्र को अला बिन अल-हज़्रमी रज़ि० के हाथों रवाना फ़रमाया। जवाब में मुंज़िर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लिखा "अम्मा बाद! ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैंने आपका पत्र बहरैन वालों को पढ़ कर सुना दिया। कुछ लोगों ने इस्लाम को मुहब्बत और पाकीज़गी की नज़र से देखा और उस की गोद में चले गए और कुछ ने पसंद नहीं किया। और मेरी ज़मीन में यहूदी और मजूसी भी हैं, इसलिए आप इस बारे में अपना हुक्म बताइए।" इस के जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह पत्र लिखा—

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

मुहम्मद अल्लाह के रसूल की तरफ़ से मुंज़िर बिन सावी की ओर, तुम पर सलाम हो। मैं तुम्हारे साथ अल्लाह की हम्द (गुण-गान) करता हूं जिस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल है।"

"अम्मा बाद! मैं तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूं। याद रहे कि जो आदमी भलाई करेगा और भला चाहेगा, वह अपने ही लिए भलाई करेगा और जो आदमी मेरे दूतों का पालन और उन के हुक्म की पैरवी करे, उस ने मेरा आज्ञापालन किया और जो उनका भला चाहे उसने मेरा भला चाहा और मेरे दूतों ने तुम्हारी अच्छी प्रशंसा की है और मैंने तुम्हारी क़ौम के बारे में तुम्हारी सिफ़ारिश क़ुबूल कर ली है, इसलिए मुसलमान जिस हाल पर ईमान लाए हैं, उन्हें उस पर छोड़ दो और मैंने ग़लती करने वालों को माफ़ कर दिया है, इसलिए उनसे क़ुबूल कर लो, और जब तक तुम सुधार का रास्ता अपनाए रहोगे, हम तुम्हें तुम्हारे अमल से

अलग नहीं करेंगे और जो यहूदी या मजूसी अपने धर्म पर क़ायम रहें, उन पर ज़िज़्या है।[19]

6. हौज़ा बिन अली साहिबे यमामा के नाम पत्र

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हौज़ा बिन अली हाकिमे यमामा के नाम नीचे इस तरह पत्र लिखा----

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

मुहम्मद अल्लाह के रसूल की तरफ़ से हौज़ा बिन अ़ली के नाम———

उस आदमी पर सलाम हो जो हिदायत की पैरवी करे। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मेरा दीन ऊंटों और घोड़ों की पहुंच की अन्तिम सीमा तक ग़ालिब आ कर रहेगा, इसलिए इस्लाम लाओ सालिम रहोगे और तुम्हारे मातहत जो कुछ है उसे तुम्हारे लिए बरक़रार रखूंगा।"

इस पत्र को पहुंचाने के लिए दूत के रूप में सलीत बिन अ़म्र आमरी रज़ि० को चुना गया। हज़रत सलीत रज़ि० उस मुहर लगे हुए पत्र को लेकर हौज़ा के पास गये, तो उसने आपको मेहमान बनाया और मुबारकबाद दी। हज़रत सलीत रज़ि० ने उसे पत्र पढ़ कर सुनाया तो उस ने दर्मियानी क़िस्म का जवाब दिया और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में यह लिखा-----आप जिस चीज़ की दावत देते हैं, उस की अच्छाई और उम्दगी का क्या पूछना, और अ़रब पर मेरा दबदबा बैठा हुआ है, इसलिए कुछ काम मेरे ज़िम्मे कर दें, मैं आप की पैरवी करूंगा। उस ने हज़रत सलीत रज़ि० को तोहफ़े भी दिए और हिज्र का बना हुआ

---

19) ज़ादुल-मआद 3/61-62 अभी जल्दी ही यह ख़त मिला है और डा० हमीदुल्लाह ने अपनी किताब में इसका फ़ोटो छापा है ज़ादुल-मआद के लेख (इबारत) में और इस फ़ोटो में सिर्फ़ एक शब्द का अन्तर है फ़ोटो में لاالہ لاھو की जगह لاالہ غیرہ है।

कपड़ा भी दिया। हज़रत [illegible]
अलैहि व सल्लम की सेवा में आए और सारी बातें विस्तार के साथ बता [illegible] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका ख़त पढ़ कर फ़रमाया, "अगर वह ज़मीन का एक टुकड़ा भी मुझ से तलब करेगा तो मैं उसे नहीं दूंगा। वह खुद भी तबाह होगा, और जो कुछ उस के हाथ में है, वह भी तबाह होगा।" फिर जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की विजय के बाद वापस तशरीफ़ लाए तो हज़रत जिब्रील अलैहि० ने यह ख़बर दी कि हौज़ा का इंतिक़ाल हो चुका है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "सुनो! यमामा में एक झूठा ज़ाहिर होने वाला है जो मेरे बाद क़त्ल किया जाएगा। एक कहने वाले ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उसे कौन क़त्ल करेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम और तुम्हारे साथी और सच में ऐसा ही हुआ।[20]"

7. हारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी हाकिमे दमिश्क़ के नाम पत्र

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के पास इस तरह पत्र लिखा था———

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

मुहम्मद, अल्लाह के रसूल की तरफ़ से हारिस बिन अबी शिम्र के नाम

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और ईमान लाए और तस्दीक़ करे, और मैं तुम्हें दावत देता हूं कि अल्लाह पर ईमान लाओ जो अकेला है और जिसका कोई शरीक नहीं, और तुम्हारे लिए तुम्हारी बादशाहत बाक़ी रहेगी।"

---

20) ज़ादुल-मआद 3/63

यह पत्र क़बीला असद बिन ख़ुज़ैमा से ताल्लुक़ रखने वाले एक सहाबी हज़रत शुजाअ् रज़ि० बिन वहब के हाथों भेजा गया। जब उन्होंने यह ख़त हारिस के हवाले किया, तो उसने कहा, "मुझ से मेरी बादशाहत कौन छीन सकता है? मैं उस पर धावा बोलने ही वाला हूं।" और इस्लाम न लाया।

8. शाहे उमान के नाम पत्र

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पत्र शाहे उमान जैफ़र और उस के भाई अ़ब्द के नाम लिखा। इन दोनों के बाप का नाम जलन्दी था। पत्र का इस तरह था---------

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की ओर से जलन्दी के दोनों सुपुत्रों जैफ़र और अ़ब्द के नाम-----------------

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। अम्मा बाद! मैं तुम दोनों को इस्लाम की दावत देता हूं, इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे, क्योंकि मैं तमाम इंसानों की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं, ताकि जो ज़िंदा है, उसे अंजाम के ख़तरे से सचेत (आगाह) कर दूं और काफ़िरों पर क़ौल (मेरी बात) साबित हो जाए। अगर तुम दोनों इस्लाम का इक़रार कर लोगे, तो तुम ही दोनों को वाली (मालिक) और हाकिम बनाऊंगा और अगर तुम दोनों ने इस्लाम का इक़रार करने से इंकार किया तो तुम्हारी बादशाहत ख़त्म हो जाएगी। तुम्हारी ज़मीन पर घोड़ों का हमला होगा और तुम्हारी बादशाहत पर मेरी नुबूवत ग़ालिब आ जाएगी।"

इस पत्र को ले जाने के लिए दूत के रूप में हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ि० चुने गए। उनका बयान है कि मैं रवाना होकर उमान पहुंचा और अ़ब्द से मुलाक़ात की। दोनों भाइयों में यह ज़्यादा दूर-अन्देश (दूर तक सोचने वाला) और नर्म स्वभाव का था। मैं ने कहा, मैं तुम्हारे पास और

तुम्हारे भाई के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दूत बन कर आया हूं। उस ने कहा, मेरा भाई उम्र और बादशाहत दोनों में मुझ से बड़ा और मुझ से आगे है, इसलिए मैं तुमको उसके पास पहुंचा देता हूं कि वह तुम्हारा पत्र पढ़ ले। इसके बाद उसने कहा, अच्छा! तो तुम किस बात की दावत देते हो?

मैंने कहा, "हम एक अल्लाह की ओर बुलाते हैं, जो तन्हा है, जिसका कोई शरीक नहीं, और हम कहते हैं कि उसके अलावा जिसकी पूजा की जाती है, उसे छोड़ दो और यह गवाही दो कि मुहम्मद अल्लाह के बंदे और रसूल हैं।"

अब्द ने कहा, "ऐ अम्र! तुम अपनी क़ौम के सरदार के बेटे हो, बताओ, तुम्हारे पिता ने क्या किया? क्योंकि हमारे लिए उसका तरीक़ा पैरवी करने के लायक़ होगा।"

मैंने कहा, "वह तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए बिना वफ़ात पा गए लेकिन मुझे हसरत है कि काश उन्होंने इस्लाम अपनाया होता और आप की पुष्टि की होती। मैं ख़ुद भी उन्हीं की राय पर था लेकिन अल्लाह ने मुझे इस्लाम की हिदायत दे दी।"

अ़ब्द ने कहाः तुम ने कब उन की पैरवी की?

मैंने कहाः अभी जल्दी ही।

उसने मालूम कियाः तुम किस जगह इस्लाम लाए।

मैंने कहाः नज्जाशी के पास और बतलाया कि नज्जाशी भी मुसलमान हो चुका है।

अ़ब्द ने पूछाः उस की क़ौम ने उस की बादशाहत का क्या किया?

मैंने कहाः उसे बरक़रार रखा और उस की पैरवी की।

उस ने कहाः अस्क़फ़ों और राहिबों ने भी उस की पैरवी की?

मैंने कहाः हां!

अ़ब्द ने कहाः ऐ अम्र! देखो क्या कह रहे हो, क्योंकि आदमी की कोई भी आदत झूठ से ज़्यादा रुसवा करने वाली नहीं।

मैंने कहाः मैं झूठ नहीं कह रहा हूं और न हम इसे हलाल समझते हैं।

अ़ब्द ने कहाः मैं समझता हूं, हिरक़्ल को नज्जाशी के इस्लाम लाने का ज्ञान नहीं।

मैंने कहाः क्यों नहीं?

अ़ब्द ने कहाः तुम्हें यह बात कैसे मालूम?

मैंने कहाः नज्जाशी हिरक़्ल को टैक्स अदा किया करता था लेकिन जब उस ने इस्लाम कुबूल किया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक़ की तो बोला, अल्लाह की क़सम! अब वह अगर मुझ से एक दिरहम भी मांगेगा, तो मैं नहीं दूंगा और जब उसकी ख़बर हिरक़्ल को हुई तो उस के भाई यनाक़ ने कहा, 'क्या तुम अपने गुलाम को छोड़ दोगे कि वह तुम्हें टैक्स न दे और तुम्हारे बजाए एक दूसरे आदमी का नया दीन इख़्तियार कर ले? हिरक़्ल ने कहा, यह एक आदमी है जिसने एक दीन को पसंद किया और उसे अपने लिए इख़्तियार कर लिया। अब मैं उसका क्या कर सकता हूं? अल्लाह की क़सम! अगर मुझे अपनी बादशाहत का लालच न होता, तो मैं भी वही करता जो उसने किया है।

अ़ब्द ने कहाः अम्र! देखो क्या कह रहे हो?

मैंने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं तुम से सच कह रहा हूं।

अ़ब्द ने कहाः अच्छा मुझे बताओ, वह किस बात का हुक्म देते हैं और किस चीज़ से मना करते हैं?

मैंने कहाः अल्लाह की इताअ़त का हुक्म देते हैं और उसकी नाफ़रमानी से मना करते हैं, नेकी और रिश्तेदारियों का ख़्याल करने का हुक्म देते हैं और ज़ुल्म व ज़्यादती, ज़िनाकारी, शराब पीना और पत्थर, मूर्ति और सलीब की इबादत से मना करते हैं।

अ़ब्द ने कहाः यह कितनी अच्छी बात है जिस की ओर बुलाते हैं, अगर मेरा भाई भी इस बात पर मेरा साथ देता तो हम लोग सवार होकर चल पड़ते यहां तक कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाते और उनकी पुष्टि करते! लेकिन मेरा भाई अपनी बादशाहत का इस से कहीं ज़्यादा लोभी है कि उसे छोड़ कर किसी का आज्ञाकारी बन जाए।

मैंने कहा, अगर वह इस्लाम कुबूल कर ले, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस की क़ौम पर उसकी बादशाहत बाक़ी रखेंगे, अलबत्ता इनके मालदारों से सदक़ा लेकर फ़क़ीरों में बांट देंगे।

अ़ब्द ने कहा, यह तो बड़ी अच्छी बात है, अच्छा, बताओ, सदक़ा क्या है?

जवाब में मैंने विभिन्न मालों के अंदर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुक़र्रर किए हुए सदक़ों की तफ़्सील बतायी। जब ऊंट की बारी आई तो वह बोला, ऐ अ़म्र! हमारे इन मवेशियों में से भी सदक़ा लिया जाएगा? जो ख़ुद ही पेड़ चर लेते हैं।

मैंने कहाः हां।

अ़ब्द ने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं नहीं समझता कि मेरी क़ौम अपने देश के फैलाव और संख्या की अधिकता के बावजूद इसको मान लेगी।

हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ि० का बयान है कि मैं उसकी डयोढ़ी

में कुछ दिन ठहरा रहा। वह अपने भाई के पास जा कर मेरी सारी बातें बताता रहता था, फिर एक दिन उसने मुझे बुलाया और मैं अंदर दाख़िल हुआ। चोबदारों ने मेरे बाज़ू पकड़ लिए। उसने कहा, छोड़ दो, और मुझे छोड़ दिया गया। मैंने बैठना चाहा तो चोबदारों ने मुझे बैठने न दिया। मैं ने बादशाह की ओर देखा, तो उसने कहा, अपनी बात कहो, मैं ने मुहर वाला पत्र उस के हवाले कर दिया। उसने मुहर तोड़ कर ख़त पढ़ा जब पूरा ख़त पढ़ चुका तो अपने भाई के हवाले कर दिया। भाई ने भी उसी तरह पढ़ा, मगर मैंने देखा कि उसका भाई उस से ज़्यादा नर्म दिल है।

बादशाह ने पूछाः मुझे बताओ कुरैश ने क्या रवैया अपनाया है?

मैंने कहाः सब इन के ताबेदार हो गए हैं, कोई दीन से चाव की बुनियाद पर और कोई तलवार से भयभीत हो कर?

बादशाह ने पूछाः उनके साथ कौन लोग हैं?

मैंने कहाः सारे लोग हैं। उन्होंने इस्लाम को बड़े चाव से अपनाया है और उसे तमाम दूसरी चीज़ों पर प्रमुखता दी है। उन्हें अल्लाह की हिदायत और अपनी अक़्ल की रहनुमाई से यह बात मालूम हो गई है कि वे गुमराह थे। अब इस इलाक़े में मैं नहीं जानता कि तुम्हारे सिवा कोई और बाक़ी रह गया है। और अगर तुम ने इस्लाम न अपनाया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी न की तो तुम्हें सवार रौंद डालेंगे, और तुम्हारी हरियाली का सफ़ाया कर देंगे। इसलिए इस्लाम कुबूल कर लो, सलामत रहोगे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुमको तुम्हारी क़ौम का हुक्मरां बना देंगे। तुम पर न सवार दाख़िल होंगे, न प्यादे।

बादशाह ने कहाः मुझे आज छोड़ दो और कल फिर आओ।

इसके बाद मैं उसके भाई के पास वापस आ गया।

उस ने कहा: अम्र! मुझे उम्मीद है कि अगर बादशाहत का लोभ ग़ालिब न आया तो वह इस्लाम कुबूल कर लेगा। दूसरे दिन फिर बादशाह के पास गया, लेकिन उस ने इजाज़त देने से इंकार कर दिया, इसलिए मैं उसके भाई के पास वापस आ गया और बतलाया कि बादशाह तक मेरी पहुंच न हो सकी। भाई ने मुझे उसके यहां पहुंचा दिया। उसने कहा: "मैं ने तुम्हारी दावत पर विचार किया, अगर मैं बादशाहत एक ऐसे आदमी के हवाले कर दूं, जिस के घुड़सवार यहां पहुंचे भी नहीं तो मैं अरब में सब से कमज़ोर समझा जाऊंगा और अगर उसके घुड़सवार यहां पहुंच आए तो ऐसा रन पड़ेगा (जंग होगी) कि उन्हें कभी उससे पाला न पड़ा होगा।"

मैंने कहा: अच्छा तो कल मैं वापस जा रहा हूं।

जब उसे मेरी वापसी का यक़ीन हो गया तो उस ने भाई से अकेले में बात की और बोला: "यह पैग़म्बर जिन पर ग़ालिब आ चुका है उनके मुक़ाबले में हमारी कोई हैसियत नहीं और उसने जिस किसी के पास भी पैग़ाम भेजा है, उसने दावत कुबूल कर ली है, इसलिए दूसरे दिन सुबह ही मुझे बुलवाया गया और बादशाह और उस के भाई दोनों ने इस्लाम अपना लिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक़ की और सदक़ा वसूल करने और लोगों के दर्मियान फ़ैसला करने के लिए मुझे आज़ाद छोड़ दिया और जिस किसी ने मेरा विरोध किया, उसके ख़िलाफ़ मेरे मददगार साबित हुए।[21]"

इस घटना के हर पहलू को देखने से मालूम होता है कि बाक़ी बादशाहों के मुक़ाबले में इन दोनों के पास पत्र की रवानगी बड़ी देर से

21) ज़ादुल-मआद 3/63-64

अमल में आई थी। शायद यह फ़तहे-मक्का के बाद की घटना है।

इन पत्रों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दावत इस धरती के अधिकतर बादशाहों तक पहुंचा दी। इसके जवाब में कोई ईमान लाया तो किसी ने कुफ़्र किया, लेकिन इतना ज़रूर हुआ कि कुफ़्र करने वालों की तवज्जोह भी इस ओर हो गई और उन के नज़दीक आपका दीन और आपका नाम एक जानी पहचानी चीज़ बन गया।

हुदैबिया-समझौते के बाद की सैनिक गतिविधियां

ग़ज़वा-ए-ग़ाबा या ग़ज़वा-ए-ज़ी क़र्द

यह ग़ज़वा असल में बनू फ़ज़ारह की एक टुकड़ी के ख़िलाफ़ जिसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मवेशियों पर डाका डाला था, उनका पीछा करने के लिए हुआ।

हुदैबिया के बाद और ख़ैबर से पहले यह पहली और एक ही लड़ाई है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेश आयी। इमाम बुख़ारी ने इस अध्याय का नाम रखते हुए बतलाया है कि यह ख़ैबर से सिर्फ़ तीन दिन पहले पेश आयी थी और यही बात इस लड़ाई के प्रमुख कर्ता-धर्ता हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ि० से भी रिवायत की गयी है। उन की रिवायत सहीह मुस्लिम में देखी जा सकती है। आम तौर से लड़ाई विशेषज्ञ कहते हैं कि यह घटना हुदैबिया-समझौते से पहले की घटना है, लेकिन जो बात सहीह मुस्लिम में बयान की गयी है, युद्ध विशेषज्ञों के बयान के मुक़ाबले में वही ज़्यादा सहीह है[1]

---

1) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ज़ातु-क़रद 2/603, मुस्लिम बाब ग़ज़वा-ए-क़रद व ग़ैरुहा 2/113-115 फ़तहुल-बारी 7/460-462, ज़ादुल-मआद 2/120

इस ग़ज़वे के हीरो हज़रत सलमा बिन अक्वअ़ रज़ि० से जो रिवायतें आई हैं, उनका सार यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सवारी के ऊंट अपने दास रिबाह रज़ि० के साथ चरने के लिए भेजे थे और मैं भी अबू तलहा रज़ि० का घोड़ा लिए उनके साथ था कि अचानक सुबह के वक़्त अ़ब्दुर्रहमान फ़ुज़ारी ने ऊंटों पर छापा मारा और उन सबको हांक ले गया और चरवाहे को क़त्ल कर दिया। मैं ने कहा: रिबाह! यह घोड़ा लो, इसे अबू तलहा तक पहुंचा दो और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर कर दो, और ख़ुद मैंने एक टीले पर खड़े होकर मदीना की ओर रुख़ किया और तीन बार पुकार लगाई: या सबाहाह! (हाय, सुबह का हमला) फिर मैं हमलावरों के पीछे चल निकला उन पर तीर बरसाता जाता था और यह पद्य पढ़ता जाता था———

اَنَا ابْنُ الْاَكْوَعِ وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعِ

मैं अकवअ़ का बेटा हूं और आज का दिन दूध पीने वाले का दिन है। (यानी आज पता लग जाएगा कि किसने अपनी मां का दूध पिया है?)

सलमा बिन अक्वअ़ रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मैं उन्हें बराबर तीरों से छलनी करता रहा, जब कोई सवार मेरी ओर पलट कर आता तो मैं किसी पेड़ की ओट में बैठ जाता, फिर उसे तीर मार कर घायल कर देता, यहां तक कि जब ये लोग पहाड़ के तंग रास्ते में दाख़िल हुए तो मैं पहाड़ पर चढ़ गया और पत्थरों से उनकी ख़बर लेने लगा। इस तरह मैंने बराबर उनका पीछा किए रखा, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जितने भी ऊंट थे, मैंने उन सबको अपने पीछे कर लिया और उन लोगों ने मेरे लिए उन ऊंटों को आज़ाद छोड़ दिया, लेकिन मैंने फिर भी उनका पीछा जारी रखा और

उन पर तीर बरसाता रहा, यहां तक कि बोझ कम करने के लिए उन्होंने तीस से ज़्यादा चादरें और तीस से ज़्यादा नेज़े फेंक दिए। वे लोग जो कुछ भी फेंकते थे मैं उस पर (निशान के तौर पर) थोड़े से पत्थर डाल देता था ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथी पहचान लें (कि यह दुश्मन से छीना हुआ माल है।) इसके बाद वे लोग एक घाटी के तंग मोड़ पर बैठ कर दोपहर का खाना खाने लगे। मैं भी एक चोटी पर जा कर बैठा। यह देखकर उनके चार आदमी पहाड़ पर चढ़कर मेरी तरफ़ आए (जब इतने क़रीब आ गए कि बात सुन सकें तो) मैंने कहा, तुम लोग मुझे पहचानते हो? मैं सलमा बिन अक्वअ़ हूं, तुममें से जिस किसी के पीछे दौड़ूंगा बे-धड़क पा लूंगा और जो कोई मेरे पीछे दौड़ेगा, हरगिज़ न पा सकेगा। मेरी यह बात सुन कर चारों वापस चले गए और मैं अपनी जगह जमा रहा, यहां तक कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सवारों को देखा कि पेड़ों के बीच से चले आ रहे हैं। सबसे आगे अख़रम रज़ि० थे, उनके पीछे अबू क़तादा रज़ि० और उनके पीछे मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० (मोर्चे पर पहुंच कर) अब्दुर्रहमान और अख़रम में टक्कर हुयी। अख़रम ने अ़ब्दुर्रहमान के घोड़े को घायल कर दिया, लेकिन अ़ब्दुर्रहामन ने नेज़ा मार कर हज़रत अबू अख़रम रज़ि० को क़त्ल कर दिया और उनके घोड़े पर जा बैठा, मगर इतने में हज़रत अबू क़तादा रज़ि० अब्दुर्रहमान के सर पर जा पहुंचे और उसे नेज़ा मार कर क़त्ल कर दिया। बाक़ी हमलावर पीठ फेर कर भागे और हमने उन्हें खदेड़ना शुरू किया। मैं उनके पीछे पैदल दौड़ रहा था। सूरज डूबने से कुछ पहले उन लोगों ने अपनी दिशा एक घाटी की तरफ़ मोड़ी, जिसमें क़िरद नाम का एक चश्मा था। ये लोग प्यासे थे और वहां पानी-पीना चाहते थे लेकिन मैंने उन्हें चश्मे से परे ही रखा और वे एक बूंद भी न चख सके। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और घुड़सवार सहाबी दिन डूबने के बाद मेरे पास

पहुंचे। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! ये सब प्यासे थे। अगर आप मुझे सौ आदमी दे दें तो मैं ज़ीन समेत उन के तमाम घोड़े छीन लूं और उनकी गरदनें पकड़ कर सेवा में हाज़िर कर दूं। आप ने फ़रमायाः अकवअ़ के बेटे! तुम क़ाबू पा गए हो तो अब तनिक नर्मी बरतो। फिर आपने फ़रमाया कि इस वक़्त बनू ग़तफ़ान में उनकी मेहमान नवाज़ी की जा रही है।

(इस लड़ाई पर) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समीक्षा करते हुए फ़रमायाः आज हमारे सब से बेहतर घुड़सवार अबू क़तादा और सबसे बेहतर पैदल सवार सलमा रज़ि० हैं और आपने मुझे दो हिस्से दिए, एक पैदल सवार का हिस्सा और दूसरा घुड़सवार का हिस्सा। और मदीना वापस होते हुए मुझे (यह शर्फ़ बख़्शा कि) अपनी अ़ज़बा नामी ऊंटनी पर अपने पीछे सवार फ़रमा लिया।

इस लड़ाई के दौरान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने का इन्तिज़ाम हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को सौंपा था और लड़ाई का झंडा हज़रत मिक़्दाद बिन अ़म्र रज़ि० को सौंपा था[2]।

---

2) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ज़ातु-क़रद 2/603, मुस्लिम बाब ग़ज़वा-ए-क़रद व ग़ैरह 2/113-115 फ़तहुल-बारी 7/460-462, ज़ादुल-मआद 2/120

ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर और ग़ज़्वा-ए-वादियुल क़ुरा (मुहर्रम 07 हि०)

ख़ैबर, मदीना के उत्तर में लगभग 60 या 80 मील के फ़ासले पर एक बड़ा शहर था। यहां क़िले भी थे और खेतियां भी। अब यह एक बस्ती रह गई है। इस की जलवायु कुछ अस्वस्थ है।

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुदैबिया के समझौते के नतीजे में अहज़ाब की लड़ाई के तीन बाज़ुओं में से सब से मज़बूत बाज़ू (क़ुरैश) की ओर से पूरी तरह संतुष्ट और शान्त हो गये तो आप ने चाहा कि बाक़ी दो बाज़ुओं-----यहूदियों और नज्द के क़बीलों---------से भी हिसाब-किताब चुका लें ताकि हर ओर से पूरी तरह सुख-शन्ति हासिल हो जाए और पूरे इलाक़े में शान्ति का दौर-दौरा हो और मुसलमान बराबर चल रहे ख़ूनी संघर्ष से निजात पा कर अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने और उसकी दावत के लिए फ़ारिग़ हो जाएं।

चूंकि ख़ैबर षड़यंत्रों और चालबाज़ियों का गढ़, सैनिक भड़काव का केन्द्र और लड़ाने-भिड़ाने और लड़ाई की आग भड़काने की खान था, इसलिए सब से पहले यही जगह मुसलमानों के ध्यान केन्द्रित करने का मुस्तहिक़ था।

रहा यह प्रश्न कि ख़ैबर सच में ऐसा था या नहीं तो इस सिलसिले में यह नहीं भूलना चाहिए कि वे ख़ैबर वाले ही थे जो खाई की लड़ाई

में मुश्रिकों के तमाम गिरोहों को मुसलमानों पर चढ़ा लाए थे, फिर यही थे जिन्होंने बनू कुरैज़ा को विद्रोह और वायदा ख़िलाफ़ी पर तैयार किया था, साथ ही यही थे जिन्होंने इस्लामी समाज के पांचवें कालम, मुनाफ़िक़ों से और अहज़ाब की लड़ाई के तीसरे बाज़ू---बनू ग़तफ़ान और बद्दुओं...... से बराबर संबंध बनाए रखा था और स्वयं भी लड़ाई की तैयारियां कर रहे थे और अपनी इन कार्यवाहियों के ज़रिए मुसलमानों को आज़माइशों में डाल रखा था, यहां तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी शहीद करने का प्रोग्राम बना लिया था। इन हालात से मजबूर होकर मुसलमानों को बार-बार फ़ौजी मुहिमें भेजनी पड़ी थीं और इन चालबाज़ियों और षड्यंत्रों के नेताओं जैसे "सलाम बिन अबुल हुक़ैक़, और असीर बिन ज़ारिम के क़ैदियों का सफ़ाया करना पड़ा था, लेकिन इन यहूदियों के बारे में मुसलमानों का दायित्व वास्तव में इस से भी कहीं बड़ा था, अलबत्ता मुसलमानों ने इस फ़र्ज़ को अदा करने में थोड़ी देर से काम इसलिए लिया था कि अभी एक ताक़त—यानी कुरैश--जो इन यहूदियों से ज़्यादा बड़ी, ताक़तवर लड़ाकू और योद्धा थी, मुसलमानों के मुक़ाबले में थी, इसलिए मुसलमान इसे नज़रअंदाज़ कर के यहूदियों की ओर रुख़ नहीं कर सकते थे, लेकिन जैसे ही कुरैश के साथ इस मोर्चा-बंदी का अंत हुआ, इन अपराधी यहूदियों का हिसाब लेने के लिए माहौल बन गया और इन के हिसाब का दिन क़रीब आ गया।

ख़ैबर के लिए कूच करना

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुदैबिया से वापस आकर ज़िलहिज्जा का पूरा महीना और मुहर्रम के कुछ दिन मदीने में निवास किया। फिर मुहर्रम के शेष दिनों में ख़ैबर के लिए रवाना हो गए।

मुफ़स्सिरों (भाष्यकारों) का बयान है कि ख़ैबर अल्लाह का वायदा था जो उसने अपने इर्शाद के ज़रिए फ़रमाया था;

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ

"अल्लाह ने तुम से बहुत से माले ग़नीमत का वायदा किया है, जिसे तुम हासिल करोगे तो उसको तुम्हारे लिए तत्काल हासिल करा दिया।" (48:20)

"जिसको शीघ्र ही अदा कर दिया।" इस से तात्पर्य हुदैबिया का समझौता है और "बहुत से माले ग़नीमत" से मुराद ख़ैबर है।

इस्लामी सेना की तायदाद

चूंकि मुनाफ़िक़ और कमज़ोर ईमान के लोग हुदैबिया की यात्रा में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ अपनाने के बजाए अपने घरों में बैठे रह गए थे, इसलिए अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके बारे में हुक्म देते हुए फ़रमाया——

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلٰى مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلَامَ اللّٰهِ ۚ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ۝

"जब तुम ग़नीमत के माल हासिल करने के लिए जाने लगोगे तो ये पीछे छोड़े गये लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। ये चाहते हैं क अल्लाह की बात बदल दें। इनसे कह देना कि तुम हर्गिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही से यह बात कह दी है, (इस पर) ये लोग कहेंगे कि (नहीं) बल्कि तुम लोग हम से जलते हो (हालांकि सच तो यह है) कि ये लोग कम ही समझते हैं।" (48:15)

चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर की ओर रवाना होने का इरादा किया तो एलान फ़रमाया दिया कि आप के साथ केवल वही आदमी रवाना हो सकता है, जिसे वाक़ई तौर पर

जिहाद का चाव और इच्छा है। इस एलान के नतीजे में आप के साथ सिर्फ़ वही लोग जा सके जिन्होंने हुदैबिया में पेड़ के नीचे बैअ़ते रिज़्वान की थी और उनकी तायदाद सिर्फ़ चौदह सौ थी।

इस लड़ाई के दौरान मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत सिबाअ़ बिन अरफ़ता ग़िफ़ारी रज़ि० को-------और इब्ने इस्हाक़ के कहने के मुताबिक़ --------- नुमैला रज़ि० बिन अब्दुल्लाह लैसी को सौंपा गया था। जांच पड़ताल करने वालों के नज़दीक पहली बात ज़्यादा सही है।[1]

इसी मौक़े पर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० भी मुसलमान होकर मदीना तशरीफ़ लाए थे। उस वक़्त हज़रत सिबाअ़ रज़ि० बिन अरफ़ता फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० उन की ख़िदमत में आए। उन्हों ने तोशा फ़राहम कर दिया और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए ख़ैबर की ओर चल पड़े। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचे तो (ख़ैबर पर विजय मिल चुकी थी) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसमलानों से बात कर के हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और उनके साथियों को भी माले ग़नीमत में शरीक कर लिया।

यहूदियों के लिए मुनाफ़िक़ों की सरगर्मियां

इस मौक़े पर यहूदियों की हिमायत में मुनाफ़िक़ों ने भी काफ़ी भाग-दौड़ की। चुनांचे मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने ख़ैबर के यहूदियों को यह पैग़ाम भेजा कि अब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तुम्हारी तरफ़ रुख़ किया है, इसलिए चौकन्ना हो जाओ, तैयारी कर लो और देखो डरना नहीं, क्योंकि तुम्हारी तायदाद

1) देखिए फ़तहुल-बारी 7/465,ज़ादुल-मआद 2/133

और तुम्हारा साज़ व सामान ज़्यादा है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी बहुत थोड़े और ग़रीब हैं उनके पास हथियार भी बस थोड़े ही से हैं।

जब ख़ैबर वालों को इसकी जानकारी हुई तो उन्होंने कनाना बिन अबुल हुक़ैक़ और हौज़ा बिन क़ैस को मदद हासिल करने के लिए बनू ग़तफ़ान के पास रवाना किया, क्योंकि वह ख़ैबर के यहूदियों के साथी और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनके मददगार थे। यहूदियों ने यह भी पेश-कश की कि अगर उन्हें मुसलमानों पर ग़लबा हासिल हो गया तो ख़ैबर की आधी पैदावार उन्हें दी जाएगी।

ख़ैबर का रास्ता

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर जाते हुए इस्र पहाड़ को पार किया (इसे असर भी कहते हैं) फिर सहबा घाटी से गुज़रे, इस के बाद एक और घाटी में पहुंचे, जिसका नाम रजीअ़ है। (मगर यह वह रजीअ़ नहीं है, जहां अ़ज़्ल व क़ारा की गद्दारी से बनू लिहयान के हाथों आठ सहाबा किराम रज़ि० की शहादत और हज़रत ज़ैद व ख़ुबैब रज़ि० की गिरफ़्तारी और फिर मक्का में शहादत की घटना घटी थी)

रजीअ़ से बनू ग़तफ़ान की आबादी सिर्फ़ एक दिन और एक रात की दूरी पर स्थित थी और बनू ग़तफ़ान ने तैयार होकर यहूदियों की सहायता के लिए ख़ैबर की राह ले ली थी, लेकिन बीच रास्ते में उन्हें अपने पीछे कुछ शोर व हंगामा सुनाई पड़ा तो उन्होंने समझा कि मुसलमानों ने उन के बाल-बच्चों और जानवरों पर हमला कर दिया है, इसलिए वे वापस पलट गए और ख़ैबर को मुसलमानों के लिए आज़ाद छोड़ दिया।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दोनों मार्ग-विशेषज्ञों को बुलाया जो सेना को रास्ता बताने पर तैनात थे।

इन में से एक का नाम हुसैल था। इन दोनों से आप ने ऐसा मुनासिब रास्ता मालूम करना चाहा जिसे अपना कर ख़ैबर में उत्तर की ओर से यानी मदीना के बजाए शाम (सीरिया) की ओर से दाख़िल हो सकें, ताकि इस कार्यनीति के द्वारा एक ओर तो यहूदियों के शाम भागने का रास्ता बंद कर दें और दूसरी ओर बनू ग़तफ़ान और यहूदियों के बीच रुकावट बन कर उन की ओर से किसी मदद के पहुंचने की संभावनाएं ख़तम कर दें।

एक मार्ग-दर्शक ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं आप को ऐसे ही रास्ते से ले चलूंगा।" चुनांचे वह आगे-आगे चला। एक जगह पर पहुंच कर जहां अनेकों रास्ते फूटते थे, अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! इन सब रास्तों से आप अपनी मंज़िल तक पहुंच सकते हैं," आप ने फ़रमाया कि वह हर एक का नाम बताए। उसने बताया कि एक नाम हज़न (सख़्त और खुरदरा) है। आपने उस पर चलना मंज़ूर न किया। उसने बताया, दूसरे का नाम शाश (बिखराव और परेशानी पैदा करने वाला) है। आपने उसे भी मंज़ूर न किया। उस ने बताया, तीसरे का नाम हातिब (लकड़हारा) है। आपने उस पर भी चलने से इंकार कर दिया। हुसैल ने कहा, अब एक ही रास्ता बाक़ी रह गया है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उस का नाम क्या है? हुसैल ने कहा, मरहब (फैलाव, कुशादगी) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी पर चलना पसंद किया।

रास्ते की कुछ घटनाएं

1. हज़रत सलमा बिन अक्वअ़ रज़ि० का बयान है कि हम लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ख़ैबर रवाना हुए। रात में सफ़र तय हो रहा था, एक आदमी ने आमिर से कहा, ऐ आमिर! क्यों न हमें अपनी कुछ अनोखी बातें सुनाओ?—आमिर कवि थे—सवारी से उतरे और क़ौम के गुण बताने लगे। पद्य ये थे--------

اَللّٰهُمَّ لَوْلَا اَنْتَ مَااهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا

فَاغْفِرْ فِدَاءً لَكَ مَا اتَّقَيْنَا وَثَبِّتِ الْاَقْدَامَ اِنْ لَاقَيْنَا

وَاَلْقِيَنْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا اِنَّا اِذَا صِيْحَ بِنَا اَبَيْنَا

وَبِالصِّيَاحِ عَوَّلُوْا عَلَيْنَا

"ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा करते, न नमाज़ पढ़ते, हम तुझ पर क़ुर्बान! तू हमें बख़्श दे, जब तक हम तक़्वा इख़्तियार करें और अगर हम टकराएं तो हमारे क़दमों को जमाए रख और हम पर शान्ति उतार। जब हमें ललकारा जाता है तो हम अकड़ जाते हैं और ललकार में लोगों ने हम पर भरोसा किया है।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह कौन राग से पढ़ रहा है? लोगों ने कहाः आ़मिर बिन अक्वअ़ आपने फ़रमाया, अल्लाह उस पर रहम करे। क़ौम के एक आदमी ने कहा, अब तो (उन की शहादत) वाजिब हो गयी। आपने उन के वजूद से हमें बताया क्यों नहीं?[2]

सहाबा किराम रज़ि० को मालूम था कि (जंग के मोके पर) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी इसांन के लिए ख़ास तौर पर मग़्फ़िरत की दुआ़ करें, तो वह शहीद हो जाता है।[3] और यही घटना ख़ैबर की लड़ाई में (हज़रत आ़मिर रज़ि० के साथ) पेश आयी। (इसी लिए उन्होंने यह अ़र्ज़ किया था, कि क्यों न उनके लिए लम्बी उम्र की दुआ की गयी कि उनके अस्तित्व से हम और ज़यादा फ़ायदा उठाते?)

2. ख़ैबर के बिल्कुल क़रीब सहबा (घाटी) में आपने अ़स्र की नमाज़ पढ़ी। फिर तोशे (खाने का सामान) मंगवाए, तो सिर्फ़ सत्तू लाया

---

2) बुख़ारी ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर 2/603, मुस्लिम बाब ग़ज़्वा-ए-ज़ी-करद व ग़ैरुहा 2/115

3) मुस्लिम 2/115

गया। और उसे आप के हुक्म से साना गया फिर आपने खाया और सहाबा रज़ि० ने भी खाया। इसके बाद आप मग़रिब की नमाज़ के लिए उठे, तो सिर्फ़ कुल्ली की। सहाबा ने भी कुल्ली की, फिर आपने नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया[4] (पिछले वुज़ू ही को काफ़ी समझा) फिर आप ने इशा की नमाज़ अदा फ़रमाई।[5]

इस्लामी फ़ौज ख़ैबर के दामन में

मुसलमानों ने आख़िरी रात जिस की सुबह लड़ाई शुरू हुई ख़ैबर के क़रीब गुज़ारी, लेकिन यहूदियों को कानों-कान ख़बर न हुई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि जब रात के वक़्त किसी क़ौम के पास पहुंचते, तो सुबह हुए बग़ैर उनके क़रीब न जाते। चुनांचे उस रात जब सुबह हुई तो आप ने ग़लस (अंधेरे) में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। इसके बाद मुसलमान सवार होकर ख़ैबर की ओर बढ़े। इधर ख़ैबर वाले बे-ख़बरी में अपने फावड़े और खांची वग़ैरह लेकर अपनी खेती-बाड़ी के लिए निकले, तो अचानक फ़ौज देख कर चीख़ते हुए शहर की ओर भागे कि अल्लाह की क़सम! मुहम्मद सेना सहित आ गए हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दृश्य देख कर फ़रमाया, "अल्लाहु अकबर! ख़ैबर तबाह हुआ, अल्लाहु अकबर ख़ैबर तबाह हुआ, जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर पड़ते हैं तो उन डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है।[6]"

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सेना के पड़ाव के लिए एक जगह का चुनाव किया। इस पर हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि० ने आ कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह बताइए कि इस जगह पर अल्लाह ने आप को पड़ाव डालने का हुक्म

---

4) बुख़ारी 2/603

5) मग़ाज़ियुल-वाक़िदी (ग़ज़वा-ए-ख़ैबर) 112

6) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर 2/603-604

दिया है या यह सिर्फ़ आप की लड़ाई की चाल और राय है? आपने फ़रमाया, नहीं यह सिर्फ़ एक राय और उपाय है। उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह जगह नज़ात क़िले से बहुत ही क़रीब है और ख़ैबर के सारे योद्धा इसी क़िले में हैं। इन्हें हमारे हालात की पूरी-पूरी जानकारी रहेगी और हमें उन के हालात की ख़बर न होगी। उनके तीर हम तक पहुंच जाएंगे और हमारे तीर उन तक न पहुंच सकेंगे। हम उनके रात के धावों से भी बचे न रहेंगे। फिर यह जगह ख़जूरों के बीच है, पस्ती (निचली ज़मीन) में स्थित है और यहां की धरती भी वबा वाली है, इसलिए मुनासिब होगा कि आप किसी ऐसी जगह पड़ाव डालने का हुक्म फ़रमाएं, जो इन बिगाड़ की बातों से ख़ाली हो और हम उसी जगह जा कर पड़ाव डालें।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम ने जो राय दी बिल्कुल ठीक है इसके बाद आप दूसरी जगह चले गए।

साथ ही जब आप ख़ैबर के इतने क़रीब पहुंच गए कि शहर दिखाई पड़ने लगा, तो आपने फ़रमाया, ठहर जाओ। सेना ठहर गयी और आपने यह दुआ फ़रमायी---------

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَمَا اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرْضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا اَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَا اَضْلَلْنَ فَاِنَّا نَسْأَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

"ऐ अल्लाह! सातों आसमान और जिन पर वह साया डाले हुए हैं, उन के पालनहार! और सातों ज़मीन और जिनको वह उठाए हुए हैं, उन के पालनहार! और शैतान और जिनको उन्होंने गुमराह किया, उन के पालनहार! हम तुझ से इस आबादी की भलाई, इसके निवासियों की भलाई और इसमें जो कुछ है उसकी भलाई का सवाल करते हैं और

इस बस्ती की दुष्टता से और इसके निवासियों की दुष्टता से और इस में जो कुछ है, उसकी दुष्टता से तेरी पनाह चाहते हैं।"(इसके बाद, फ़रमाया,चलो) अल्लाह के नाम से आगे बढ़ो।[7]

लड़ाई की तैयारी और ख़ैबर के क़िले

जिस रात ख़ैबर की सीमाओं में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाख़िल हुए, फ़रमायाः "मैं कल झंडा एक ऐसे आदमी को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करते हैं" और जिससे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहब्बत करते हैं सुबह हुई तो सबाहा किराम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदतम में हाज़िर हुए। हर एक यही आरज़ू बांधे और आस लगाए था कि झंडा उसे मिल जाएगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अली बिन अबी तालिब कहां हैं? सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उनकी तो आंख आई हुई है।[8] फ़रमाया, उन्हें बुला लाओ वह लाए गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी आंखों में दहन का लुआब (मुंह का गीलापन) लगाया और दुआ फ़रमाई। वह ठीक हो गये, जैसे उन्हें कोई तक्लीफ़ थी ही नहीं। फिर उन्हें झंडा अ़ता फ़रमाया। उन्होंने अ़र्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं उनसे उस वक़्त तक लड़ूंगा कि वह हमारे जैसे हो जाएं?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "इत्मीनान से जाओ, यहां तक कि उनके मैदान में उतरो, फिर उन्हें इस्लाम की दावत दो और इस्लाम में अल्लाह के जो हक़ उन पर वाजिब होते हैं उनको बताओ अल्लाह की क़सम! तुम्हारे ज़रिए अगर अल्लाह

---

7) इब्ने हिशाम 2/319

8) इसी बीमारी की वजह से आप शुरु में पीछे रह गए थे फिर लशकर से जा मिले

एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो यह तुम्हारे लिए लाल ऊंटों से बेहतर है।[9]"

ख़ैबर की आबादी दो हिस्सों में बटी हुई थी। एक हिस्से में नीचे दिए हुए पांच क़िले थे----

1. हिस्ने नाइम 2. हिस्ने सअब बिन मुआज़, 3. हिस्ने क़िला ज़ुबैर, 4. हिस्ने उबई, 5. हिस्ने नज़ार।

इनमें से पहले तीन क़िलों पर शमिल इलाक़ा नतात कहलाता था और बाक़ी दो क़िलों पर शामिल इलाक़ा शक़ के नाम से मशहूर था।

ख़ैबर की आबादी का दूसरा, हिस्सा कतीबा कहलाता था इसमें सिर्फ़ तीन क़िले थे।

1. हिस्ने क़मूस (यह क़बीला बनू नज़ीर के ख़ानदान अबुल हुक़ैक़ का क़िला था।)

(2.) हिस्ने वतीह, (3.) हिस्ने सलालिम।

इन आठ क़िलों के अलावा ख़ैबर में और क़िले और गढ़ियां भी थीं मगर वे छोटी थीं और ताक़त और हिफ़ाज़त में इन क़िलों के बराबर की न थीं।

जहां तक लड़ाई का ताल्लुक़ है तो वह सिर्फ़ पहले हिस्से में हुई, दूसरे हिस्से के तीनों क़िले लड़ने वालों की अधिकता के बावजूद लड़ाई के बग़ैर ही मुसलमानों के हवाले कर दिए गए।

लड़ाई की शुरूआत और नाइम क़िले पर विजय

ऊपर लिखे गए आठ क़िलों में सब से पहले नाइम क़िले पर हमला हुआ, क्योंकि यह क़िला अपनी स्थिति की नज़ाकत और सामरिक

9) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर 2/605-606 कुछ रिवायतों से पता चलता है कि ख़ैबर के एक क़िले को जीतने की कई नाकाम कोशिशों के बाद हज़रत अली को झण्डा दिया गया था लेकिन तहक़ीक़ करने वालों के नज़दीक ज़्यादा सही वही है जो लिखा गया है।

दृष्टि से यहूदियों की पहली प्रतिरक्षात्मक लाइन की हैसियत रखता था और यही क़िला मरहब नामी उस ताक़तवर और योद्धा यहूदी का क़िला था जिसे एक हज़ार मर्दों के बराबर जाना जाता था।

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० मुसलमानों की सेना लेकर इस क़िले के सामने पहुंचे और यहूदियों को इस्लाम की दावत दी तो उन्होंने दावत ठुकरा दी और अपने बादशाह मरहब की कमान में मुसलमानों के मुक़ाबले में आ खड़े हुए। लड़ाई के मैदान में उतर कर पहले मरहब ने लड़ने के लिए ललकारा जिस की दशा सलमा बिन अक्‌वअ़ ने यूं बयान की है कि जब हम लोग ख़ैबर पहुंचे तो उनका बादशाह मरहब अपनी तलवार लेकर बड़े गर्व के साथ इठलाता और यह पद्य पढ़ता हुआ आया——

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّى مَرْحَبُ   شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبُ
اِذَا الْحُرُوْبُ اَقْبَلَتْ تَلَهَّبُ

"ख़ैबर को मालूम है कि मैं मरहब हूं, सशस्त्र, वीर और अनुभवी योद्धा! जब लड़ाई भड़के!" उसके मुक़ाबले के लिए मेरे चचा आ़मिर रज़ि० ज़ाहिर हुए और फ़रमाया——

قدعلمت خيبر انى عامر   شاكى السلاح بطل مغامر

"ख़ैबर जातना है कि मैं आ़मिर हूं, सशस्त्र और बहादुर योद्धा।"

फिर दोनों ने एक दूसरे पर वार किया। मरहब की तलवार मेरे चचा आ़मिर रज़ि० की ढाल में जा चुभी और आमिर रज़ि० ने उसे नीचे से मारना चाहा, लेकिन उनकी तलवार छोटी थी, उन्होंने यहूदी की पिंडुली पर वार किया तो तलवार का सिरा पलट कर उनके घुटने पर आ लगा और अन्ततः उसी घाव से उनकी मौत हो गयी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दो उंगलियां इकट्ठी करके उनके बारे में फ़रमाया कि

उनके लिए दोहरा बदला है वे बड़े योद्धा और मुजाहिद थे। कम ही उनके जैसा कोई अरब की धरती पर चला होगा।[10]

बहरहाल हज़रत आमिर रज़ि० के घायल हो जाने के बाद मरहब के मुकाबले के लिए हज़रत अली रज़ि० तशरीफ़ ले गए। हज़रत सलमा बिन अक्वअ़ रज़ि० का बयान है कि उस वक़्त हज़रत अली रजि. ० ने ये पद्य पढ़े।

اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِیْ اُمِّیْ حَیْدَرَہ کَلَیْثِ غَابَاتٍ کَرِیْہِ الْمَنْظَرَہ

اُوْفِیْہِمْ بِالصَّاعِ کَیْلَ السَّنْدَرَہ

"मैं वह आदमी हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम हैदर (शेर) रखा है, जंगल के शेर की तरह भयानक। मैं इन्हीं साअ़ के बदले नेज़े की नाप पूरी करूंगा।"

इसके बाद मरहब के सर पर ऐसी तलवार मारी कि वहीं ढेर हो गया। फिर हज़रत अली रज़ि० ही के हाथों जीत मिली।[11]

लड़ाई के बीच हज़रत अली रज़ि० यहूदियों के किले के क़रीब पहुंचे तो क़िले की चोटी से एक यहूदी ने झांक कर पूछा, तुम कौन हो? हज़रत अली रज़ि० ने कहाः मैं अ़ली बिन अबी तालिब हूं। यहूदियों ने कहा, उस किताब की क़सम! जो मूसा अलैहि० पर उतारी गई तुम लोग ऊंचे हो गए। इसके बाद मरहब का भाई यासिर यह कहते हुए निकला कि कौन है जो मेरा मुक़ाबला करेगा? उसके इस चैलेंज पर हज़रत ज़ुबैर

---

10) मुस्लिम बाब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर 2/122, ग़ज़वा-ए-ज़ी-क़रद व ग़ैरुहा 2/115, बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर 2/603

11) मरहब के क़ातिल के बारे में बहुत मतभेद है और इसमें भी मतभेद है कि वह किस दिन मारा गया और किस दिन यह किला जीता गया(फ़तेह हुआ) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों में भी इस मतभेद की झलक है। हमने जो तरतीब दी है वह बुख़ारी की रिवायत के हिसाब से है।

रज़ि० मैदान में उतरे। इस पर उनकी मां हज़रत सफ़िय्या रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या मेरा बेटा क़त्ल किया जाएगा? आप ने फ़रमायाः नहीं! बल्कि तुम्हारा बेटा उसे क़त्ल करेगा। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने यासिर को क़त्ल कर दिया।

इसके बाद हिस्ने नाइम के पास ज़ोरदार लड़ाई हुई, जिसमें कई चोटी के सरदार यहूदी मारे गए और बाक़ी यहूदियों में मुक़ाबले की ताक़त न रही, चुनांचे वे मुसलमानों का हमला न रोक सके। कुछ सूत्रों से मालूम होता है कि यह लड़ाई कई दिन जारी रही और इसमें मुसलमानों को ज़बरदस्त मुक़ाबले का सामना करना पड़ा। फिर भी यहूदी मुसलमानों को नीचा दिखाने से निराश हो चुके थे, इसलिए चुपके-चुपके उस क़िले से निकल कर सअब क़िले में चले गए और मुसलमानों ने क़िला नाइम पर क़ब्ज़ा कर लिया।

सअब बिन मुआज़ के क़िले की विजय

नाइम क़िले के बाद सअब क़िला ताक़त और सुरक्षा की दृष्टि से दूसरा सब से बड़ा मज़बूत क़िला था। मसुलमानों ने सिर्फ़ हुबाब बिन मुंज़िर अंसारी रज़ि० की कमान में इस क़िले पर हमला किया और तीन दिन तक उसे घेरे में लिए रखा। तीसरे दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस क़िले की विजय के लिए विशेष दुआ फ़रमाई।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि क़बीला असलम की शाखा बनू सहम के लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ कियाः हम लोग चूर हो चुके हैं और हमारे पास कुछ नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ऐ अल्लाह! तुझे इन का हाल मालूम है, तू जानता है कि इनके अंदर ताक़त नहीं और मेरे पास भी कुछ नहीं कि मैं इन्हें दूं! इसलिए इन्हें यहूदियों के ऐसे क़िले पर विजय दिला जो सब से अधिक उपयोगी हो

और जहां सब से ज़्यादा खाना और चर्बी मिले।' और अल्लाह तआला ने सअब बिन मुआज़ क़िले पर विजय प्रदान की। ख़ैबर में कोई ऐसा क़िला न था जहां इस क़िले से ज़्यादा खाना और चर्बी मौजूद हो।[12]

और जब दुआ फ़रमाने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इस क़िले पर हमले की दावत दी तो हमला करने में बनू असलम ही आगे-आगे थे। यहां भी क़िले के सामने मार काट हुई। फिर इसी दिन सूरज डूबने से पहले-पहले क़िला जीत लिया गया मुसलमानों ने इस क़िले में कुछ मिनजनीक़ और दब्बाबे भी पाए।[13]

इब्ने इस्हाक़ की इस रिवायत में जिस ज़बरदस्त भूख का ज़िक्र किया गया है। इसी का यह नतीजा था कि लोगों ने (विजय मिलते ही) गधे ज़िब्ह कर दिए और चूल्हों पर हंडियां चढ़ा दीं, लेकिन जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस का ज्ञान हुआ, तो आप ने घरेलू गधे के गोश्त से मना फ़रमा दिया।

ज़ुबैर के क़िले की विजय

नाइम और सअब क़िले की जीत के बाद यहूदी नतात के सारे क़िलों से निकल कर ज़ुबैर क़िला में जमा हो गए। यह एक सुरक्षित क़िला था और पहाड़ की चोटी पर स्थित था। रास्ता इतना पेचदार और कठिन था कि यहां न सवारों की पहुंच हो सकती थी, न पैदल चलने वालों की। इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस के चारों ओर घेराव किया और तीन दिन तक घेराव किए पड़े रहे। इस के बाद एक यहूदी ने आ कर कहा, "ऐ अबुल क़ासिम! अगर आप एक

---

12) इब्ने हिशाम 2/22।

13) लकड़ी का एक महफ़ूज़ और बन्द गाड़ी नुमा डिब्बा बनाया जाता था जिसमें नीचे से कई आदमी घुस कर क़िले की शहर-पनाह जा पहुँचते थे और दुश्मन के वार से बचते हुए शहर-पनाह में दरार डाल दिया करते थे यही दब्बाबा कहलाता था। अब टेंक को दब्बाबा कहा जाता है।

महीने तक घेराव जारी रखें तो भी इन्हें कोई परवाह न होगी, अलबत्ता इन के पीने का पानी और चश्मे (सोते) ज़मीन के नीचे हैं। ये रात में निकलते हैं, पानी पी लेते और ले लेते हैं, फिर क़िले में वापस चले जाते हैं और आप से सुरक्षित रहते हैं। अगर आप इनका पानी बंद कर दें, तो ये घुटने टेक देंगे।" इस सूचना पर आप ने उनका पानी बंद कर दिया। इसके बाद यहूदियों ने बाहर आ कर ज़बरदस्त लड़ाई की जिस में कई मुसलमान मारे गए और लगभग दस यहूदी भी काम आए, लेकिन क़िले पर विजय मिल गयी।

उबई के क़िले की विजय

क़िला ज़ुबैर हार जाने के बाद यहूदी हिस्ने उबई में क़िला बंद हो गए। मुसलमानों ने उसका भी घेराव कर लिया। अब की बार दो वीर योद्धा यहूदी एक के बाद एक लड़ने की दावत देते हुए मैदान में उतरे और दोनों ही मुस्लिम योद्धाओं के हाथों मारे गए। दूसरे यहूदी के क़ातिल लाल पट्टी वाले मशहूर योद्धा हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा अंसारी रज़ि० थे। वह दूसरे यहूदी को क़त्ल कर के बड़ी तेज़ी से क़िले में जा घुसे और उन के साथ ही इस्लामी सेना भी क़िले में जा घुसी। क़िले के अंदर कुछ देर तक तो बड़ी ज़ोरदार लड़ाई हुई, लेकिन इसके बाद यहूदियों ने क़िले से खिसकना शुरू कर दिया और आख़िरकार सब के सब भाग कर क़िला नज़ार में पहुंच गए जो ख़ैबर से पहले आधे (यानी पहले हिस्से) का आख़िरी क़िला था।

क़िला नज़ार की विजय

यह क़िला इलाक़े का सब से मज़बूत क़िला था और यहूदियों को लगभग यक़ीन था कि मुसलमान अपनी इंतिहाई कोशिश सर्फ़ कर देने के बावजूद इस क़िले में दाख़िल नहीं हो सकते, इसलिए इस क़िले में उन्होंने औरतों और बच्चों सहित निवास किया जबकि पिछले चार क़िलों में औरतों और बच्चों को नहीं रखा गया था।

मुसलमानों ने इस क़िले का सख़्ती से घेराव किया और यहूदियों पर ज़बरदस्त दबाव डाला, लेकिन क़िला चूंकि एक ऊंची और सुरक्षित पहाड़ी पर स्थित था, इसलिए इसमें दाख़िल होने की कोई शक्ल नहीं बन रही थी। इधर यहूदी क़िले से बाहर निकल कर मुसलमानों से टकराने की हिम्मत नहीं कर रहे थे, अलबत्ता तीर बरसा-बरसा कर और पत्थर फेंक-फेंक कर सख़्त मुक़ाबला कर रहे थे।

जब इस क़िला (नज़ार) की जीत मुसलमानों के लिए ज़्यादा कठिन लगने लगी, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिनजनीक़ के अस्त्रों को लगाने का हुक्म दिया। और ऐसा मालूम होता है कि मुसलमानों ने कुछ गोले फेंके भी जिससे क़िले की दीवारों में दराड़ पड़ गई और मुसलमान अंदर घुस गए। इसके बाद क़िले के अंदर ज़बरदस्त लड़ाई हुई और यहूदियों ने ज़बरदस्त और सबसे बुरी हार खाई। वे बाक़ी क़िलों की तरह इस क़िले से चुपके-चुपके खिसक कर न निकल सके, बल्कि इस तरह मुंह छुपा कर भागे कि अपनी औरतों और बच्चों को भी साथ न ले जा सके और उन्हें मुसलमानों के रहम व करम पर छोड़ दिया।

इस मज़बूत क़िले की विजय के बाद ख़ैबर का पहला आधा यानी नतात और शक़ का इलाक़ा जीत लिया गया। इस इलाक़े में छोटे-छोटे कुछ और क़िले भी थे, लेकिन इस क़िले के जीते जाने के बाद ही यहूदियों ने इन बाक़ी क़िलों को भी ख़ाली कर दिया और शहर ख़ैबर के दूसरे मिंतक़े (इलाक़े) यानी कतीबा की ओर भाग गए।

ख़ैबर के दूसरे आधे पर भी विजय

नतात और शक़ का क्षेत्र जीता जा चुका तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कतीबा, वतीह और सलालिम के इलाक़े की ओर रुख़ किया। सलालिम बनू नज़ीर के एक मशहूर यहूदी अबुल हुक़ैक़ का क़िला था। उधर नतात और शक़ के इलाक़े से हार कर भागने

वाले सारे यहूदी भी यहीं पहुंचे थे और बड़ी ही ठोस क़िला बंदी कर ली थी।

युद्ध-विशेषज्ञों के बीच मतभेद है कि यहां के तीनों क़िलों में से किसी क़िले पर लड़ाई हुई या नहीं? इब्ने इस्हाक़ के बयान में स्पष्ट है कि क़िला क़मूस को जीतने के लिए लड़ाई लड़ी गयी, बल्कि इसके तमाम पहलुओं से यह भी मालूम होता है कि यह क़िला सिर्फ़ लड़ाई के ज़रिए जीता गया और यहूदियों की ओर से आत्म-समर्पण करने के लिए यहां कोई बातचीत नहीं हुई।[14]

लेकिन वाक़िदी ने दो टूक शब्दों में स्पष्ट किया है कि इस इलाक़े के तीनों क़िले बातचीत के ज़रिए मुसलमानों के हवाले किए गए। मुम्किन है क़िला क़मूस के हवाला किए जाने के लिए थोड़ी बहुत लड़ाई के बाद बातचीत हुई हो, अलबत्ता बाक़ी दोनों क़िले किसी लड़ाई के बिना मुसलमानों के हवाले किए गए।

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस इलाक़े कतीबा में तशरीफ़ लाए तो वहां के निवासियों का सख़्ती से घेराव किया। यह घेराव चौदह दिन जारी रहा। यहूदी अपने क़िलों से निकल ही नहीं रहे थे, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरादा किया कि मिनजनीक़ (तोप) लगाएं। जब यहूदियों को तबाही का यक़ीन हो गया तो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से समझौते के लिए बातचीत शुरू की।

समझौते की बातचीत

पहले इब्ने अबिल हुक़ैक़ ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पैग़ाम भेजा कि क्या मैं आपके पास आकर बातचीत कर सकता हूं? आपने फ़रमाया, हां! और जब यह जवाब मिला तो उसने

---

14) इब्ने हिशाम 2/231,236,237

आप के पास हाज़िर होकर इस शर्त पर समझौता कर लिया कि क़िले में जो सेना है उसकी जान बख़्शी कर दी जाएगी और उनके बाल-बच्चे उन्हीं के पास रहेंगे। (यानी उन्हें लौंडी-गुलाम नहीं बनाया जाएगा), बल्कि वे अपने बाल-बच्चों को लेकर ख़ैबर की ज़मीन से निकल जाएंगे और अपने माल, बाग़, ज़ीमनें, सोने, चांदी, घोड़े, ज़िरहें, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले कर देंगे, सिर्फ़ इतना कपड़ा ले जाएंगे, जो इंसान (उन की) की पीठ पर होगा।[15] अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "और अगर तुम लोगों ने मुझ से कुछ छिपाया तो फिर अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इनकी ज़िम्मेदारी न होगी।" यहूदियों ने यह शर्त मंज़ूर कर ली और समझौता हो गया।[16] इस समझौते के बाद तीनों क़िले मुसलमानों के हवाले कर दिए गए और इस तरह ख़ैबर की जीत पूरी हो गई।

अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों की वायदा ख़िलाफ़ी और उन का क़त्ल

इस समझौते के होते हुए अबुल हक़ैक़ के दोनों बेटों ने बहुत सा माल ग़ायब कर दिया। एक खाल ग़ायब कर दी, जिसमें माल और हुयई बिन अख़तब के ज़ेवरात थे, उसे हुयई बिन अख़तब मदीना से बनू नज़ीर के देश निकाला दिए जाने के वक़्त अपने साथ लाया था।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कनाना बिन अबुल हुक़ैक़ लाया गया। उसके पास बनू

---

15) अबू दाऊद में यह तफ़सील है कि आपने इस शर्त पर समझौता किया था कि मुसलमानों की तरफ़ से यहूदियों को इजाज़त होगी कि ख़ैबर से जिला वतन होते हुए अपनी सवारियों पर जितना माल लाद सकें ले जाएं (देखिए अबू दाऊद बाब मा जाअ फ़ी हुक्मि अर्ज़ि ख़ैबर 2/76)

16) ज़ादुल मआद 2/136

नज़ीर का ख़ज़ाना था, लेकिन आप ने मालूम किया तो उसने यह मानने से इंकार कर दिया कि उसे ख़ज़ाने की जगह के बारे में कोई जानकारी है। इसके बाद एक यहूदी ने आकर बताया कि मैं कनाना को हर दिन इस वीराने का चक्कर लगाते हुए देखता था। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कनाना से फ़रमाया, "यह बताओ कि अगर यह ख़ज़ाना हम ने तुम्हारे पास से बरामद कर लिया तो फिर हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे ना?" उस ने कहा, जी हां! आपने वीराना खोदने का हुक्म दिया और उस से कुछ ख़ज़ाना बरामद हुआ। फिर बाक़ी ख़ज़ाने के बारे में आपने मालूम किया तो उसने फिर अदा करने से इंकार कर दिया। इस पर आपने उसे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के हवाले कर दिया और फ़रमायाः इसे सज़ा दो, यहां तक कि इसके पास जो कुछ है वह सबका सब हमें हासिल हो जाए। हज़रत ज़ुबैर ने उसके सीने पर चक़माक़ की ठोकरें मारीं, यहां तक कि उसकी जान पर बन आई। फिर उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहम्मद बिन मस्लमा के हवाले कर दिया और उन्होंने महमूद बिन मस्लमा के बदले उस की गरदन मार दी। (महमूद साया हासिल करने के लिए क़िला नाइम की दीवार के नीचे बैठे थे कि उस आदमी ने चक्की का पाट गिरा कर उन्हें क़त्ल कर दिया था)

इब्ने क़य्यिम का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों को क़त्ल करा दिया था और इन दोनों के ख़िलाफ़ माल छिपाने की गवाही कनाना के चचेरे भाई ने दी थी।

इसके बाद आप ने हुयई बिन अख़्तब की बेटी हज़रत सफ़िय्या रज़ि० को क़ैदियों में शामिल कर लिया। वह कनाना बिन अबुल हुक़ैक़ की बीवी थीं और अभी दुल्हन थीं। उनकी हाल ही में रुख़्सती हुई थी।

ग़नीमत के माल का बांटा जाना

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों को ख़ैबर से देश-निकाला देने का इरादा फ़रमाया था और समझौते में यही तय भी हुआ था, मगर यहूदियों ने कहा, "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हमें इसी भू-भाग में रहने दीजिए, हम इसकी देख-रेख करेंगे, क्योंकि हमें आप लोगों से ज़्यादा इसकी जानकारी है।" इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० के पास इतने गुलाम (दास) न थे जो इस ज़मीन की देख-रेख और जोतने-बोने का काम कर सकते और न ख़ुद सहाबा किराम रज़ि० को इतनी फ़ुर्सत थी कि यह काम कर पाते, इसलिए आपने ख़ैबर की ज़मीन को इस शर्त पर यहूदियों के हवाले कर दी कि सारी खेती और तमाम फलों की पैदावार का आधा यहूदियों को दिया जाएगा और जब तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्ज़ी होगी उस को बाक़ी रखेंगे (और जब चाहेंगे, देश निकाला दे देंगे।) इसके बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ख़ैबर की पैदावार का अंदाज़ा लगाया करते थे।

ख़ैबर का बंटवारा इस तरह किया गया कि उसे 36 हिस्सों में बांट दिया गया। हर हिस्सा एक सौ हिस्सों पर शामिल था। इस तरह कुल (3600) हिस्से हुए। इसमें से आधा यानी अठारह सौ हिस्से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के थे। आम मुसलमानों की तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी सिर्फ़ एक ही हिस्सा था, बाक़ी यानी अठारह सौ हिस्सों पर शामिल दूसरा आधा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की सामूहिक ज़रूरतों और घटनाओं के लिए अलग कर लिया था। अठारह सौ हिस्सों पर ख़ैबर को इसलिए बांटा गया कि यह अल्लाह की ओर से हुदैबिया वालों के लिए एक दान था, जो मौजूद थे उनके लिए भी और जो मौजूद न थे उनके लिए भी, और हुदैबिया वालों की

तायदाद चौदह सौ थी, जो ख़ैबर आते हुए अपने साथ दो सौ घोड़े लाए थे, चूंकि सवार के अलावा ख़ुद घोड़े को भी हिस्सा मिलता है और घोड़े का हिस्सा डबल यानी दो फ़ौजियों के बराबर होता है, इसलिए ख़ैबर को अठारह सौ हिस्सों पर बांटा गया, तो दो सौ घुड़सवारों को तीन-तीन हिस्से के हिसाब से छः सौ मिले थे और बारह सौ पैदले, सेना को एक-एक हिस्से के हिसाब से बारह सौ हिस्से मिले ।[17]

ख़ैबर के ग़नीमत के मालों की ज़्यादती का अंदाज़ा सहीह बुख़ारी में रिवायत की गयी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की इस रिवायत से होता है कि उन्होंने फ़रमाया, "हम लोगों का जी न भरा, यहां तक कि हम ने ख़ैबर जीत लिया।" इसी तरह हज़रत आइशा रज़ियाल्लाहु अन्हा की इस रिवायत से होता है कि उन्होंने फ़रमाया: जब ख़ैबर जीत लिया गया तो हम ने कहा, अब हमें पेट भर कर खजूर मिलेगी।[18] साथ ही जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरों ने अंसार के खजूरों के वे पेड़ वापस कर दिए जो अंसार ने मदद के तौर पर उन्हें दे रखे थे, क्योंकि अब उनके लिए ख़ैबर में माल और खजूर के पेड़ हो चुके थे।[19]

हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब और अशअ़री सहाबियों का आना

इसी लड़ाई में हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उन के साथ अशअ़री मुसलमान यानी हज़रत अबू मूसा और उनके साथी रज़ियाल्लाहु अन्हुम भी थे।

---

17) ज़ादुल-मआद 2/137-138

18) बुख़ारी 3/609

19) ज़ादुल-मआद 2/148, मुस्लिम 2/96

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० का बयान है कि यमन में हमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ाहिर होने की जानकारी हुई, तो हम लोग यानी मैं और मेरे दो भाई अपनी क़ौम के पचास आदमियों समेत अपने वतन से हिजरत कर के एक नाव पर सवार हो कर आपकी सेवा में रवाना हुए, लेकिन हमारी नाव ने हमें नज्जाशी के देश हब्शा में फेंक दिया, वहां हज़रत जाफ़र रज़ि० और उन के साथियों से मुलाक़ात हुई। उन्होंने बताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें भेजा है और यहीं ठहरे रहने का हुक्म दिया है और आप लोग भी हमारे साथ ठहर जाइए। चुनांचे हम लोग भी उनके साथ ठहर गए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में उस वक़्त पहुंच सके जब आप ख़ैबर जीत चुके थे। आपने हमारा भी हिस्सा लगाया, लेकिन हमारे अलावा किसी भी आदमी का जो ख़ैबर की विजय में मौजूद न था, कोई हिस्सा नहीं लगाया, सिर्फ़ लड़ाई में शरीकों ही का हिस्सा लगाया, अलबत्ता हज़रत जाफ़र रज़ि० और उन के साथियों के साथ हमारी नाव वालों का भी हिस्सा लगाया और उनको ग़नीमत के माल में हिस्सा दिया।[20]

और जब हज़रत जाफ़र रज़ि० नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचे तो आपने उनका स्वागत किया और उन्हें बोसा देकर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता कि मुझे किस बात की खुशी ज़्यादा है? ख़ैबर की जीत की या जाफ़र के आने की।[21]

याद रहे कि इन लोगों को बुलाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी (रज़ि०) को नज्जाशी के पास भेजा था और उस से कहलवाया था कि वह उन लोगों को आपके पास रवाना कर दे। चुनांचे नज्जाशी ने दो नावों पर

---

20) बुख़ारी 1/443 तथा देखिए फ़तहुल-बारी 7/484-487

21) ज़ादुल-मआद 2/139

सवार करके उन्हें रवाना कर दिया। ये कुल सोलह आदमी थे और इनके साथ इनके बाक़ी बच्चे और औरतें भी थीं। बाक़ी लोग इससे पहले मदीना आ चुके थे।[22]

हज़रत सफ़िय्या से शादी

हम बता चुके हैं कि जब हज़रत सफ़िय्या का शौहर कनाना बिन अबुल हुक़ैक़ अपनी बद-अ़हदी की वजह से क़त्ल कर दिया गया तो हज़रत सफ़िय्या रज़ि० क़ैदी औरतों में शामिल कर ली गयीं। इस के बाद जब ये क़ैदी औरतें जमा की गयीं तो हज़रत दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी रज़ियाल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आ कर कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे क़ैदी औरतों में से एक लौंडी दे दीजिए। आप ने फ़रमाया, जाओ और एक लौंडी ले लो। उन्होंने जा कर हज़रत सफ़िय्या बिन्त हुयई को चुन लिया। इस पर एक आदमी ने आपके पास आकर अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आपने बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर की सैयदा सफ़िय्या को दिह्या के हवाले कर दिया, हालांकि वह सिर्फ़ आपकी शान के मुताबिक़ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दिह्या रज़ि० को सफ़िय्या समेत बुलाओ। हज़रत दिह्या रज़ि० उनको साथ लिए हाज़िर हुए। आपने उन्हें देख कर हज़रत दिह्या रज़ि० से फ़रमाया कि क़ैदियों में से कोई दूसरी लौंडी ले लो। फिर आपने हज़रत सफ़िय्या पर इस्लाम पेश किया। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसके बाद आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे विवाह कर लिया और उनकी आज़ादी को ही उनका मह्र क़रार दिया। मदीना वापसी में सद्दे सहबा पर वह हलाल (माहवारी से पाक) हो गईं। इसके बाद हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने उन्हें आपके लिए सजाया और रात को

22) तारीख़े ख़िज़री 1/128

आपके पास भेज दिया। आपने दूल्हे की हैसियत से उनके साथ सुबह की और खजूर, घी और सत्तू सान कर वलीमा खिलाया और रास्ते में तीन दिन शादी की रात के तौर पर उनके पास क़ियाम फ़रमाया।[23]

इस मौक़े पर आपने उनके चेहरे पर हरा निशान देखा, मालूम किया, "यह क्या है?" कहने लगीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आपके ख़ैबर आने से पहले मैंने सपना देखा था कि चांद अपनी जगह से टूट कर मेरी गोद में आ गिरा है। अल्लाह की क़सम! मुझे आपके मामले का कोई विचार भी न था, लेकिन मैंने यह सपना अपने पति से बयान किया तो उसने मेरे चेहरे पर थप्पड़ मारते हुए कहा: "यह बादशाह जो मदीना में है तुम उसकी आरज़ू कर रही हो"[24]

विष में सनी बकरी की घटना

ख़ैबर की जीत के बाद जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संतुष्ट और एकाग्र हो चुके तो सलाम बिन मुश्कम की बीवी ज़ैनब बिन्त हारिस ने आप के पास भुनी हुई बकरी का हदिया भेजा। उसने पूछ रखा था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन सा अंग ज़्यादा पसंद करते हैं और उसे बताया गया था कि दस्ता, इसलिए उसने दस्ते में ख़ूब विष मिला दिया था और इसके बाद बाक़ी हिस्सा भी विषैला कर दिया था, फिर उसे लेकर वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और आपके सामने रखा तो आप ने दस्ता उठा कर उसका एक टुकड़ा चबाया लेकिन निगलने के बजाए थूक दिया, फिर फ़रमाया कि यह हड्डी मुझे बतला रही है कि इसमें विष मिलाया गया है। इसके बाद आप ने ज़ैनब को बुलाया तो उसने इक़रार कर लिया। आपने पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया? उसने कहा,

23) बुख़ारी 1/54, 2-604, 606, ज़ादुल-मआद 2/137

24) ज़ादुल-मआद 2/137, इब्ने हिशाम 2/336

मैंने सोचा अगर यह बादशाह है तो हमें इससे राहत मिल जाएगी और अगर नबी है तो उसे ख़बर दे दी जाएगी। इस पर आपने उसे माफ़ कर दिया।

इस मौके पर आपके साथ हज़रत बिश्न बिन बरा बिन मारूर रज़ि० भी थे। उन्होंने एक कौर (लुक्मा) निगल लिया था जिसकी वजह से उन की मौत हो गई।

रिवायतों में मतभेद है कि आपने उस औरत को माफ़ कर दिया था या क़त्ल कर दिया था। ततबीक़ (समानता) इस तरह दी गई है कि पहले तो आपने माफ़ कर दिया था, लेकिन जब हज़रत बिश्न रज़ि० की मौत हो गयी तो फिर क़िसास के तौर पर क़त्ल कर दिया।[25]

ख़ैबर की लड़ाई में दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग

ख़ैबर की विभिन्न लड़ाइयों में कुल मुसलमान जो शहीद हुए, उन की तायदाद 16 है, चार क़ुरैश से, एक क़बीला अशजअ से, एक क़बीला असलम से, एक ख़ैबर के निवासियों में से और बाक़ी अंसार से।

एक कथन यह भी है कि इन लड़ाइयों में कुल 18 मुसलमान शहीद हुए। अल्लामा मंसूरपुरी ने 19 लिखा है फिर वह लिखते हैं: "जीवनी-लेखकों ने ख़ैबर में शहीद होने वालों की तायदाद पंद्रह लिखी है। मुझे खोजते हुए 23 नाम मिले। ज़नीफ़ बिन वाइला रज़ि० का नाम सिर्फ़ वाक़िदी ने और ज़नीफ़ बिन हबीब रज़ि० का नाम सिर्फ़ तबरी ने लिया है। बिश्न बिन बरा बिन मारूर रज़ि० का देहांत लड़ाई ख़त्म होने के बाद विषैला गोश्त खाने से हुआ जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ज़ैनब (यहूदी औरत) ने भेजा था। बिश्न बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ि० के बारे में

---

25) ज़ादुल-मआद 2/139-140, फ़तहुल-बारी 7/497, असल घटना बुख़ारी में तफ़सील से भी और संक्षिप्त में भी दी गई है देखिए 1/449, 2/610, 860 तथा इब्ने हिशाम 2/337-338

दो रिवायतें हैं------- (1) बद्र में शहीद हुए (2) ख़ैबर की लड़ाई में शहीद हुए, मेरे नज़दीक पहली रिवायत क़वी (सही) है।[26]"

दूसरे फ़रीक़ यानी यहूदियों के क़त्ल किए लोगों की तायदाद 93 है।

फ़िदक

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर पहुंच कर मुहैयसा बिन मसऊद रज़ि० को इस्लाम की दावत देने के लिए फ़िदक के यहूदियों के पास भेज दिया था, लेकिन फ़िदक वालों ने इस्लाम क़ुबूल करने में देर की, मगर जब अल्लाह ने ख़ैबर पर विजय दिला दी तो उन के दिलों में रोब पड़ गया और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आदमी भेज कर ख़ैबर वालों के मामले के मुताबिक़ फ़िदक की आधी पैदावार देने की शर्तों पर समझौता करने का प्रस्ताव आप ने प्रस्ताव मान लिया और इस तरह फ़िदक का भू-भाग मुख्य रूप से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हुआ, क्योंकि मुसलमानों ने उस पर घोड़े और ऊंट नहीं दौड़ाए थे।[27] (यानी उसे तलवार के ज़ोर पर नहीं जीता गया था)

वादियुल क़ुरा

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर से फ़ारिग़ हुए तो वादियुल क़ुरा तशरीफ़ ले गए। वहां भी यहूदियों की एक जमाअत थी और उनके साथ अरब की एक जमाअत भी शामिल हो गई थी। जब मुसलमान वहां उतरे तो यहूदियों ने तीरों से स्वागत किया। वे पहले से पंक्ति बनाए हुए थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक ग़ुलाम मारा गया। लोगों ने कहा, उसके लिए जन्नत मुबारक हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हरगिज़ नहीं, उस ज़ात

26) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/268- 270

27) इब्ने हिशाम 2/337, 353

की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, उसने ख़ैबर की लड़ाई में लूट का माल बांटे जाने से पहले, उस में से जो चादर चुराई थी, वह आग बन कर उस पर भड़क रही है। लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद सुना, तो एक आदमी एक तस्मा (धागा) या दो तस्मे लेकर आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः यह एक तस्मा या दो तस्मे आग के हैं।[28]

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ाई के लिए सहाबा किराम की तर्तीब बनाई और सफ़ें तैयार कीं। पूरी फ़ौज का झंडा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के हवाले किया। एक झंडा हुबाब बिन मुंज़िर को दिया और तीसरा झंडा उबादा बिन बिश्र को दिया, इसके बाद आपने यहूदियों को इस्लाम की दावत दी। उन्होंने स्वीकार न किया और उनका एक आदमी लड़ाई के मैदान में उतरा। इधर से ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० ज़ाहिर हुए और उसका काम तमाम कर दिया। फिर दूसरा आदमी निकला। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने उसे भी क़त्ल कर दिया। इसके बाद एक और आदमी मैदान में आया, उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत अली रज़ि० निकले और उसे क़त्ल कर दिया। इस तरह धीरे धीरे उनके ग्यारह आदमी मारे गए। जब एक आदमी मारा जाता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाक़ी यहूदियों को इस्लाम की दावत देते।

उस दिन जब नमाज़ का वक़्त होता तो आप सहाबा किराम रज़ि० को नमाज़ पढ़ाते और फिर पलट कर यहूदियों के मुक़ाबले में चले जाते और उन्हें इस्लाम, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत देते। इस तरह लड़ते-लड़ते शाम हो गयी। दूसरे दिन सुबह आप फिर तशरीफ़ ले गए, लेकिन अभी सूरज नेज़ा बराबर भी न बुलन्द न हुआ होगा कि उनके हाथ में जो कुछ था उसे आपके हवाले

28) बुख़ारी 2/608

कर दिया यानी आपने ताक़त के बल पर विजय प्राप्त की और अल्लाह ने उनके मालों को आपको ग़नीमत में दिया। सहाबा किराम रज़ि० को बहुत सारा साज़ व सामान हाथ आया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वादियुल क़ुरा में चार दिन निवास किया और जो माले ग़नीमत हाथ आया उसे सहाबा किराम में बांट दिया, अलबत्ता ज़मीन और खजूर के बाग़ों को यहूदियों के हाथ में रहने दिया और उसके बारे में उनसे भी (ख़ैबर वालों जैसा) मामला तय कर लिया।[29]

तैमा

तैमा के यहूदियों को जब ख़ैबर, फ़िदक और वादियुल क़ुरा के निवासियों के हथियार डाल देने की ख़बर मिली तो उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी क़िस्म की मोर्चा-बन्दी का प्रदर्शन करने के बजाए ख़ुद से आदमी भेज कर समझौते की बात रखी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी बात मान ली, और ये यहूदी अपने माल व दौलत में जमे रहे।[30] इसके बारे में आपने एक लेख भी दिया जो यह था—

"यह लेख है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से बनू आ़दिया के लिए। उनके लिए ज़िम्मा है और उन पर जिज़िया है। उन पर न ज़्यादती होगी, न उन्हें देश-निकाला दिया जाएगा। रात मददगार होगी और दिन पक्कापन देने वाला (यानी यह समझौता सदैव के लिए होगा) और यह लेख ख़ालिद रज़ि० बिन सईद ने लिखा।[31]

---

29) ज़ादुल-मआद 2/146-147

30) ज़ादुल-मआद 2/147

31) इब्ने सअ़द 1/279

मदीना को वापसी

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना वापसी का रास्ता लिया। वापसी के दौरान लोग एक घाटी के क़रीब पहुंचे तो ऊंची आवाज़ से اللہ اکبر لا الٰہ الا اللہ कहने लगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अपने आप पर नर्मी करो, तुम लोग किसी बहरे और ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि उस हस्ती को पुकार रहे हो जो सुनने वाली और क़रीब है।[32]"

साथ ही रास्ते में एक बार रात भर सफ़र जारी रखने के बाद आप ने रात के आख़िरी हिस्से में रास्ते में किसी जगह पड़ाव डाला और हज़रत बिलाल रज़ि० को यह ताकीद कर के सो गए कि हमारे लिए रात पर नज़र रखना (यानी सुबह होते ही नमाज़ के लिए जगा देना) लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि० की भी आंख लग गयी। यह (पूरब की ओर मुंह कर के) अपनी सवारी के साथ टेक लगाए बैठे थे कि सो गए। फिर कोई भी न जागा, यहां तक कि लोगों पर धूप आ गई। इसके बाद सबसे पहले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जागे। फिर (लोगों को जगाया गया) और आप इस घाटी से निकल कर कुछ आगे तश्रीफ़ ले गए। फिर लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। कहा जाता है कि यह घटना किसी दूसरे सफ़र में घटी थी।[33]

ख़ैबर की लड़ाइयों के विस्तार में जाने के बाद विचार करने से मालूम होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी या तो (सन् 07 हि० के) सफ़र के आख़िर में हुई थी या फिर रबीउल अव्वल के महीने में।

---

32) बुख़ारी 2/605

33) इब्ने हिशाम 2/340 यह घटना काफ़ी मशहूर है और हदीस की सामान्य किताबों में है। तथा देखिए ज़ादुल-मआद 2/147

सरिय्या अबान बिन सईद

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे सेनापतियों से ज़्यादा अच्छी तरह यह बात जानते थे कि हराम महीनों के ख़ात्मे के बाद मदीना को इस तरह ख़ाली छोड़ देना विवेक और दूर-दर्शिता के बिल्कुल ख़िलाफ़ है जबकि मदीने के आस-पास ऐसे बद्दू निवास करते हैं जो लूट-मार और डाका ज़नी के लिए मुसलमानों की ग़फ़लत के इन्तिज़ार में रहते हैं। इसलिए जिन दिनों में आप ख़ैबर तशरीफ़ ले गये थे उन्ही दिनों में आप ने बद्दुओं को भयभीत करने के लिए अबान बिन सईद रज़ि० की कमान में नज्द की ओर एक टुकड़ी भेज दी थी। अबान बिन सईद रज़ि० अपना फ़र्ज़ अदा कर के वापस आए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ैबर में मुलाक़ात हुई। उस वक़्त आप ख़ैबर जीत चुके थे।

ज़्यादा संभावना यह है कि यह टुकड़ी सफ़र सन् 07 हि० में भेजी गयी थी। इसका उल्लेख सहीह बुख़ारी में हुआ है।[34] हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० लिखते हैं कि मुझे इस सरिय्या का हाल न मालूम हो सका।[35]

---

34) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर 2/608-609

35) फ़तहुल-बारी 7/491

ग़ज़वा-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ् (सन् 07 हि०)

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहज़ाब के तीन बाज़ुओं में से दो मज़बूत बाज़ुओं को तोड़ कर फ़ारिग़ हो गए तो तीसरे बाज़ू की ओर ध्यान देने का भर पूर मौक़ा मिल गया। तीसरा बाज़ू वे बद्दू थे जो नज्द के वीराने में ठहरे हुए थे और रह-रह कर लूट-मार की कार्यवाहियां करते रहते थे।

चूंकि ये बद्दू किसी आबादी या शहर के निवासी न थे और इन का निवास मकानों और क़िलों के अंदर न था, इसलिए मक्का वालों और ख़ैबर के निवासियों के मुक़ाबलें में इन पर पूरा क़ाबू पा लेना और इन की शरारतों और बिगाड़ों की आग पूरी तरह बुझा देना बहुत कठिन था, इसलिए इन के हक़ में सिर्फ़ डराने वाली सज़ा की कार्यवाही ही फ़ायदेमंद हो सकती थीं।

चुनांचे इन बद्दुओं पर रोब और दबदबा क़ायम करने की ग़रज़ से—और एक दूसरे कथन के अनुसार मदीना के पास-पड़ोस में छापा मारने के इरादे से जमा होने वाले बद्दुओं को बिखेरने की ग़रज़ से—नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सज़ा के तौर पर एक हमला फ़रमाया जो ग़ज़वा-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ् के नाम से मशहूर है

आम तौर से लड़ाइयों का उल्लेख करने वालों ने इस लड़ाई का ज़िक्र सन् 04 हि० में किया है लेकिन इमाम बुख़ारी ने इस का समय सन् 05 हि० बताया है। चूंकि इस लड़ाई में हज़रत अबू मूसा अशअ़री

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने शिरकत की थी, इसलिए यह इस बात की दलील है कि यह लड़ाई ख़ैबर की लड़ाई के बाद हुई थी। (महीना शायद रबीउल अव्वल का था) क्योंकि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० उस वक़्त मदीना पहुंच कर मुसलमान हुए थे, जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर के लिए मदीना से जा चुके थे। फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० मुसलमान होकर सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ख़ैबर पहुंचे और जब पहुंचे तो ख़ैबर जीता जा चुका था। इसी तरह हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि० हबश से उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे थे जब ख़ैबर जीता जा चुका था, इसलिए ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई में इन दोनों सहाबा की शिरकत इस बात की दलील है कि यह ग़ज़वा ख़ैबर के बाद ही किसी वक़्त हुआ था।

जीवनी-लेखकों ने इस लड़ाई के बारे में जो कुछ ज़िक्र किया है, उसका सार यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीला अनमार या बनू ग़तफ़ान की दो शाखाओं बनी सालबा और बनी मुहारिब के जमाव की ख़बर सुन कर मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत अबू ज़र रज़ि० या हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि० के हवाले किया और झट चार सौ या सात सौ सहाबा किराम रज़ि० के साथ नज्द के इलाक़े का रुख़ किया, फिर मदीना से दो दिन की दूरी पर नख़्ला नामी जगह पहुंच कर बनू ग़तफ़ान के कुछ लोगों से सामना हुआ, लेकिन लड़ाई नहीं हुई, अलबत्ता आप ने इस मौक़े पर सलाते ख़ौफ़ (यानी लड़ाई की हालत वाली नमाज़) पढ़ाई।

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ निकले। हम छः आदमी थे और एक ही ऊंट था जिस पर बारी-बारी सवार होते थे। इस से हमारे क़दम छलनी हो गए। मेरे भी दोनों पांव

घायल हो गए और नाखुन झड़ गए। चुनांचे हम लोग अपने पांव पर चीथड़े लपेटे रहते थे, इसी लिए इस का नाम ज़ातुर्रिक़ाअ (चीथड़ों वाला) पड़ गया, क्योंकि हम ने उस लड़ाइ में अपने पांवों पर चीथड़े और पट्टियां बांध और लपेट रखी थीं।[1]

और सहीह बुख़ारी ही में हज़रत जाबिर रज़ि० से यह रिवायत है कि हम लोग ज़ातुर्रिक़ाअ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। (क़ायदा यह था कि) जब हम किसी छायादार पेड़ पर पहुंचते तो उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए छोड़ देते थे। (एक बार) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पड़ाव डाला और लोग पेड़ की छाया हासिल करने के लिए इधर-उधर कांटेदार पेड़ों के बीच बिखर गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी एक पेड़ के नीचे उतरे और उसी पेड़ से तलवार लटका कर सो गए। हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमें बस ज़रा सी नींद आई थी कि इतने में एक मुश्रिक ने आ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार सौंत ली और बोला, "तुम मुझ से डरते हो?" आप ने फ़रमाया, नहीं। उस ने कहा, "तब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा।" आप ने फ़रमाया, अल्लाह——।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हमें अचानक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पुकार रहे थे। हम पहुंचे तो देखा कि एक अरब बद्दू आप के पास बैठा है। आप ने फ़रमाया, "मैं सोया था और इसने मेरी तलवार सौंत ली, इतने में मैं जाग गया और सौंती हुइ तलवार इसके हाथ में थी। इसने मुझसे कहा, "तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?" मैं ने कहा: "अल्लाह! तो अब यह वही आदमी बैठा हुआ है।" फिर आपने उसे कोई सज़ा न दी।

1) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ज़ातुर्रिक़ाअ 2/592, मुस्लिम बाब ग़ज़वतुर-रिक़ाअ 2/118

अबू अवाना रज़ि० की रिवायत में इतनी तफ़्सील और है कि (जब आपने उसके सवाल के जवाब में अल्लाह कहा तो तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी, फिर वह तलवार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उठा ली और फ़रमायाः "अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?" उसने कहा आप अच्छे पकड़ने वाले होइए (यानी एहसान कीजिए) आपने फ़रमाया, "तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं।" उसने कहा; मैं आप को वचन देता हूं कि आप से लड़ाई नहीं करूंगा और न आप से लड़ाई करने वालों का साथ दूंगा।" हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि उसके बाद आपने उसकी राह छोड़ दी और उसने अपनी क़ौम में जाकर कहा, मैं तुम्हारे यहां सबसे अच्छे इंसान के पास से आ रहा हूं।[2]

सहीह बुख़ारी की एक रिवायत में बयान किया गया है कि नमाज़ की इक़ामत कही गयी और आप ने एक गिरोह को दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई फिर वह लोग पीछे चले गये और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरे गिरोह को दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई। इस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार रक्अतें हुई और सहाबा किराम की दो-दो रक्अतें[3] इस रिवायत पर पूरी तरह विचार करने से मालूम होता है कि यह नमाज़ ज़िक्र की गई घटना के बाद ही पढ़ी गयी थी।

सहीह बुख़ारी की रिवायत में जिसे मुसद्दिद ने अबू अवाना रज़ि० से और उन्होंने अबू बिश्र रज़ि० से रिवायत किया है, बताया गया है कि उस आदमी का नाम ग़ौरिस बिन हारिस था।[4] इब्ने हजर कहते हैं कि वाक़िदी के नज़दीक इस घटना के विस्तार में जा कर यह बयान किया गया है कि इस अरब देहाती का नाम दअसूर था और उसने इस्लाम

2) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 264 तथा देखिए फ़तहुल-बारी 7/416

3) बुख़ारी 1/407-408, 2/593

4) बुख़ारी 2/593

स्वीकार कर लिया था लेकिन वाक़िदी के कलाम से ज़ाहिरी तौर पर मालूम होता है कि ये अलग-अलग दो घटनाएं थीं जो दो अलग-अलग लड़ाइयों में घटित हुई थीं।[5] (अल्लाह बेहतर जाने)

इस लड़ाई से वापसी में सहाबा किराम रज़ि० ने एक मुश्रिक औरत को गिरफ़्तार कर लिया। इस पर उसके शौहर ने मन्नत मानी कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों में एक ख़ून बहा कर रहेगा। चुनांचे वह रात के वक़्त आया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुश्मन से मुसलमानों की हिफ़ाज़त के लिए दो आदमियों यानी अ़ब्बाद बिन बिश्र रज़ि० और अम्मार बिन यासिर रज़ि० को पहरे पर लगा रखा था। जिस वक़्त वह आया, हज़रत अ़ब्बाद रज़ि० खड़े नामज़ पढ़ रहे थे। उसने उसी हालत में उनको तीर मारा उन्होंने नमाज़ तोड़े बग़ैर तीर निकाल कर झटक दिया। उसने दूसरा और तीसरा तीर मारा, लेकिन उन्होंने नमाज़ न तोड़ी और सलाम फेर कर ही फ़ारिग़ हुए, फिर अपने साथी को जगाया, साथी ने (हालात जान कर) कहा, "सुब्हानल्लाह! आप ने मुझे जगा क्यों न दिया?" उन्होंने कहा, "मैं एक सूरः पढ़ रहा था, गवारा न हुआ कि उसे बीच में छोड़ दूं।[6]"

सख़्त-दिल अ़रब देहातियों को रोब में लेने और उन्हें भयभीत करने में इस लड़ाई का बड़ा असर रहा। हम इस लड़ाई के बाद पेश आने वाली झड़पों की तफ़सील पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि ग़तफ़ान के इन क़बीलों ने इस लड़ाई के बाद सर उठाने की हिम्मत न की, बल्कि ढीले पड़ते-पड़ते हथियार डाल दिए और अन्त में इस्लाम अपना लिया, यहां तक कि इन देहातियों के कई क़बीले हम को मक्का विजय और

---

5) फ़तहुल-बारी 7/428

6) ज़ादुल-मआद 2/112 तथा इस ग़ज़्वे की तफ़सील के लिए देखिए इब्ने हिशाम 2/203-209, ज़ादुल-मआद 2/110-112, फ़तहुल-बारी 7/417-428

हुनैन की लड़ाई में मुसलमानों के साथ नज़र आते हैं और उन्हें हुनैन की लड़ाई के माले ग़नीमत से हिस्सा दिया जाता है, फिर मक्का विजय से वापसी के बाद उनके पास सदक़ों को वसूल करने के लिए इस्लामी हुकूमत के कर्मचारी भेजे जाते हैं और वे क़ायदे के साथ अपने सदक़े अदा करते है। ग़रज़ इस नीति से वे तीनों बाज़ू टूट गए जो खाई की लड़ाई में मदीना पर हमलावार हुए थे और इस की वजह से पूरे इलाक़े में सुख-शान्ति का दौर-दौरा हो गया। इसके बाद कुछ क़बीलों ने कुछ क्षेत्रों में जो शोर व हंगामा किया उस पर मुसलमानों ने बड़ी आसानी से क़ाबू पा लिया, बल्कि इसी लड़ाई के बाद बड़े-बड़े शहरों और देशों के जीते जाने का रास्ता हमवार होना शुरू हुआ, क्योंकि इस लड़ाई के बाद देश के भीतर हालात पूरी तरह इस्लाम और मुसलमानों के लिए साज़गार हो चुके थे।

वर्ष 07 हि० के कुछ और सराया

इस ग़ज़वे से वापस आ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शव्वाल सन् 07 हि० तक मदीना में निवास किया और इस बीच कई सराया रवाना किए, कुछ का विवरण इस तरह है------

1. सरिय्या क़दीद (सफ़र या रबीउल अव्वल सन् 07 हि०)

यह सरिय्या ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी रज़ि० की कमान में क़दीद की ओर क़बीला बनी मलूह की सज़ा के तौर पर रवाना किया गया। वजह यह थी कि बनू मलूह ने बिश्र बिन सुवैद के साथियों को क़त्ल कर दिया था और उसी के बदले के लिए इस टुकड़ी की रवानगी अमल में आई थी। इस टुकड़ी ने रात को छापा मार कर बहुत से लोगों को क़त्ल कर दिया और ढोर-डंगर हांक लाए। फिर इनके दुश्मन ने एक बड़ी सेना के साथ पीछा किया, लेकिन जब मुसलमानों के क़रीब पहुंचे तो वर्षा होने लगी और एक ख़तरनाक बाढ़ आ गयी जो दोनों फ़रीक़ों के दर्मियान रुकावट बन गयी। इस तरह मुसलमानों ने बाक़ी रास्ता भी शान्तिपूर्वक तय कर लिया।

2. सरिय्या हस्मी (जमादिल आख़िर सन् 07 हि०)

इस का ज़िक्र दुनिया के बादशाहों के नाम ख़तों के अध्याय में आ चुका है।

3. सरिय्या तुर्बा (शअबान सन् 07 हि०)

यह सरिय्या हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के नेतृत्व में रवाना किया गया। उन के साथ तीस आदमी थे जो रात में सफ़र करते और दिन में रूपोश (छिपे) रहते थे लेकिन बनू हवाज़िन को पता चल गया और वह निकल भागे। हज़रत उमर रज़ि० उनके इलाक़े में पहुंचे तो कोई भी न मिला और वह मदीना पलट आये।

4. सरिय्या (अतराफ़े फ़िदक) (शअ़बान सन् 07 हि०)

यह सरिय्या हज़रत बशीर बिन साद अंसारी रज़ि० के नेतृत्व में तीस आदमियों के साथ बनू मुर्रा को सज़ा देने के लिए रवाना किया गया। हज़रत बशीर ने उनके इलाक़े में पहुंच कर भेड़, बकरियां और चौपाए हांक लिए और वापस हो गए। रात में दुश्मन ने आ लिया। मुसलमानों ने जम कर तीरअंदाज़ी की लेकिन आख़िरकार बशीर और उनके साथियों के तीर ख़त्म हो गये। उनके हाथ ख़ाली हो गए और इस के नतीजे में सब के सब क़त्ल कर दिए गए। सिर्फ़ बशीर रज़ि० ज़िंदा बचे। उन्हें घायलावस्था में उठा कर फ़िदक लाया गया और वे वहीं यहूदियों के पास ठहरे रहे, यहां तक कि उनके घाव भर गए। इसके बाद वह मदीना आए।

5. सरिय्या मीफ़आ़ (रमज़ान 07 हि०)

यह सरिय्या हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी के नेतृत्व में बनू अ़वाल और बनू अ़ब्द बिन सालबा को सज़ा देने के लिए और कहा जाता है कि क़बीला जुहैना की शाखा हरक़ात को सज़ा देने के लिए रवाना किया गया। मुसलमानों की तायदाद 130 थी। उन्होंने दुश्मन पर

मिलकर हमला किया और जिस ने भी सर उठाया उसे क़त्ल कर दिया। फिर चौपाए और भेड़-बकरियां हांक लाए इसी झड़प में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ने नुहैक बिन मिरदास को لا إله إلا الله कहने के बावजूद क़त्ल कर दिया था और उस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सज़ा के तौर पर फ़रमाया था कि तुम ने उसका दिल चीर कर क्यों न मालूम कर लिया कि वह सच्चा था या झूठा?

6. सरिय्या ख़ैबर (शव्वाल सन् 07 हि०)

इस सरिय्ये में तीस सवार थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया था। वजह यह थी कि असीर या बशीर बिन ज़िराम बनू ग़तफ़ान को मुसलमानों पर चढ़ाई करने के लिए जमा कर रहा था। मसुलमानों ने असीर को यह उम्मीद दिला कर कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे ख़ैबर का गवर्नर बना देंगे, उसके तीस साथियों समेत अपने साथ चलने पर तैयार कर लिया, लेकिन क़रक़रा नियार पहुंच कर दोनों फ़रीक़ों में बदगुमानी पैदा हो गयी जिस के नतीजे में असीर और उसके तीस साथियों को लड़ाई में जान से हाथ धोने पड़े।

7. सरिय्या यमन व जबार (शव्वाल सन् 07 हि०)

यह बनू ग़तफ़ान और कहा जाता है कि बनू फ़ज़ारा और बनू उज़रा के क्षेत्र का नाम है यहां हज़रत बशीर बिन कअ़ब अंसारी रज़ि० को तीन सौ मुसलमानों के साथ रवाना किया गया। मक़सद एक बड़ी सेना को बिखेर देना था जो मदीना पर हमलावार होने के लिए जमा हो रही थी। मुसलमान रात में सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे। जब दुश्मन को हज़रत बशीर रज़ि० के आने की ख़बर हुई तो वह भाग खड़ा हुआ। हज़रत बशीर रज़ि० ने बहुत से जानवरों पर क़ब्ज़ा किया। दो आदमी भी क़ैद कर लिए और जब इन दोनों को ले कर नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की सेवा में मदीना पहुंचे तो दोनों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

8.सरिय्या ग़ाबा

इसे इमाम इब्ने क़य्यिम ने उमरा-ए-क़ज़ा से पहले 07 हि० की झड़पों में गिना है। इस का सार यह है कि क़बीला जश्म बिन मुआविया का एक आदमी बहुत से लोगों को साथ ले कर ग़ाबा आया। वह चाहता था कि बनू क़ैस को मुसलमानों से लड़ने के लिए जमा करे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हदरद को सिर्फ़ दो आदमियों के साथ रवाना किया। हज़रत अबू हदरद रज़ि० ने कोई ऐसी लड़ाई की रण-नीति अपनायी कि दुश्मन को ज़बरदस्त हार हुई और वे बहुत से ऊंट और भेड़-बकरियां हांक लाए।[7]

7) ज़ादुल-मआद 2/149-150, इन सराया की तफ़सील के लिए देखिए रहमतुल-लिल आलमीन 2/229 -231, ज़ादुल- मआद 2/148-150, तलक़ीहुल-फ़ुहूम हाशिये के साथ पृ० 31 और मुख़्तसरुस्-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 322-324

उमरा-ए-क़ज़ा

इमाम हाकिम कहते हैं; यह ख़बर तवातुर (निरंतरता) के साथ साबित है कि जब ज़ीक़ादा का चांद हो गया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया कि अपने उमरे की क़ज़ा के तौर पर उमरा करें और कोई भी आदमी जो हुदैबिया में हाज़िर था, पीछे न रहे। चुनांचे (इस मुद्दत में) जो लोग शहीद हो चुके थे उन्हें छोड़ कर बाक़ी सभी लोग रवाना हुए और हुदैबिया वालों के अलावा कुछ और लोग भी उमरा करने के लिए साथ निकले। इस तरह तायदाद दो हज़ार हो गयी, औरतें और बच्चे इन के अलावा थे।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर अबू रहम गिफ़ारी रज़ि० को मदीना में अपना जानशीं मुक़र्रर किया। साठ ऊंट साथ लिए और नाजिया बिन जुन्दुब असलमी रज़ि० को उनकी देख-भाल का काम सौंपा। ज़ुल-हुलैफ़ा से उमरे का एहराम बांधा और लब्बैक की आवाज़ लगाई। आपके साथ मुसलमानों ने भी लब्बैक पुकारा और कुरैश की ओर से बद-अहदी (वायदा न निभाना) के डर की वजह से हथियार लेकर योद्धाओं के साथ तैयार हो कर निकले। जब याजिज की घाटी पहुंचे तो सारे हथियार यानी ढाल, सिपर, तीर, नेज़े सब रख दिए और उनकी हिफ़ाज़त के लिए औस बिन ख़ौली अंसारी रज़ि० की

---

1) फ़तहुल-बारी 7/500

मातहती में दो सौ आदमी वहीं छोड़ दिए और सवार का हथियार यानी म्यान में रखी हुई तलवारें लेकर मक्का में दाख़िल हुए।[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में दाख़िले के वक़्त अपनी क़ुसवा नामी ऊंटनी पर सवार थे। मुसलमानों ने तलवारें गले में टांग रखी थीं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घेरे में लिए हुए लब्बैक पुकार रहे थे।

मुश्रिक मुसलमानों का तमाशा देखने के लिए (घरों से) निकल कर कअ्बा के उत्तर में स्थित पहाड़ क़ुईक़आन पर (जा बैठे थे)। उन्होंने आपस में बातें करते हुए कहा था कि तुम्हारे पास एक ऐसी जमाअ़त आ रही है जिसे यस्रिब के बुख़ार ने तोड़ डाला है, इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया कि वे पहले तीन चक्कर दौड़ कर लगाएं। अलबत्ता रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दर्मियान सिर्फ़ चलते हुए गुज़रें। कुल (सातों) चक्कर दौड़ कर लगाने का हुक्म सिर्फ़ इसलिए नहीं दिया कि रहमत व मुहब्बत चाहिए थी। इस हुक्म का मंशा यह था कि मुश्रिक आप की ताक़त देख लें।[3] इस के अ़लावा आप ने सहाबा किराम को इज़्तिबाअ़ का भी हुक्म दिया था। इज़्तिबाअ़ का मतलब यह है कि दायां कंधा खुला रखें (और चादर दाहिनी बग़ल के नीचे से गुज़ार कर आगे-पीछे दोनों तरफ़ से) इसका दूसरा किनारा बाएं कंधे पर डाल लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में उस पहाड़ी घाटी के रास्ते से दाख़िल हुए जो जुहून पर निकलती है। मुश्रिकों ने आप को देखने के लिए लाइन लगा रखी थी———आप लगातार लब्बैक कह रहे थे, यहां तक कि (हरम पहुंच कर) अपनी छड़ी से हजरे

---

2) फ़त्हुल-बारी 7/500 तथा ज़ादुल-मआद 2/151

3) बुख़ारी 1/218, 2/610-611, मुस्लिम 1/412

अस्वद को छुआ, फिर तवाफ़ किया। मुसलमानों ने भी तवाफ़ किया। उस समय हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० तलवार लटकाए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे-आगे चल रहे थे और ये पद्य पढ़ रहे थे—

خلوا بنى الكفار عن سبيله خلوا فكل الخير فى رسوله

قد انزل الرحمن فى تنزيله فى صحف تتلى على رسوله

يارب انى مومن بقيله انى رأيت الحق فى قبوله

بان خير القتل فى سبيله اليوم نضربكم على تنزيله

ضربا يزيل الهام عن مقيله ويذهل الخليل عن خليله

"कुफ़्फ़ार के पूतो! इनका रास्ता छोड़ दो। रास्ता छोड़ दो कि सारी भलाई उसके पैग़म्बर ही में है। रहमान ने अपनी तंज़ील (उतारी हुई चीज़) में उतारा है, यानी ऐसे सहीफ़ों (ग्रंथों) में जिनकी तिलावत उसके पैग़म्बर पर की जाती है। ऐ पालनहार! मैं उनकी बात पर ईमान रखता हूं और उसे कुबूल करने ही को हक़ जानता हूं— — —कि बेहतरीन क़त्ल वह है जो अल्लाह की राह में हो। आज हम उसकी तंज़ील के मुताबिक़ तुम्हें ऐसी मार मारेंगे कि खोपड़ी अपनी जगह से छटक जाएगी और दोस्त को दोस्त से बे-ख़बर कर देगी।"[4]

हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत में इसका भी ज़िक्र है कि इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने कहा, "ऐ इब्ने रवाहा! तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने और अल्लाह के हरम में पद्य कह रहे हो?" नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ

4) रिवायतों में इन पद्यों (अशआर) और इनकी तरतीब (क्रम) में मतभेद है हमने विभिन्न पद्यों को इकट्ठा कर दिया है।

उमर! इन्हें रहने दो, क्योंकि यह उनके लिए तीर की मार से भी ज़्यादा तेज़ है।"[5]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों ने तीन चक्कर दौड़ कर लगाए। मुश्रिकों ने देखा तो कहने लगे, ये लोग जिनके बारे में हम यह समझ रहे थे कि बुख़ार ने उन्हें तोड़ दिया है, ये तो ऐसे और ऐसे लोगों से भी ज़्यादा ताक़तवर हैं।[6]

तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर आपने सफ़ा और मर्वा की सओ़ी की (दौड़ लगाई)। उस वक़्त आप के हद्‌य यानी क़ुर्बानी के जानवर मर्वा के पास खड़े थे। आपने सओ़ी से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया; यह क़ुर्बान-गाह है और मक्के की सारी गलियां क़ुर्बान-गाह हैं। इस के बाद मर्वा ही के पास जानवरों को क़ुर्बान कर दिया, फिर वहीं सर मुंडाया। मुसलमानों ने भी ऐसा ही किया। इसके बाद कुछ लोगों को याजिज भेज दिया गया कि वे हथियारों की हिफ़ाज़त करें और जो लोग हिफ़ाज़त पर लगाए गए थे, वे आकर अपना उमरा अदा कर लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में तीन दिन निवास किया। चौथे दिन सुबह हुई तो मुश्रिकों ने हज़रत अली रज़ि० के पास आ कर कहा, अपने साहब से कहो कि हमारे यहां से रवाना हो जाएं, क्योंकि मुद्दत गुज़र चुकी है। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से निकल आए और सरिफ़ नामी जगह में उतर कर क़ियाम फ़रमाया।

मक्का से आप के रवाना होने के वक़्त पीछे-पीछे हज़रत हमज़ा रज़ि० की बेटी भी चचा-चचा कहती हुई आ गयीं। उन्हें हज़रत अली रज़ि० ने ले लिया। इसके बाद हज़रत अली रज़ि०, हज़रत जाफ़र रज़ि०

5) तिरमिज़ी 2/107

6) मुस्लिम 1/412

और हज़रत ज़ैद रज़ि० के दर्मियान उनके बारे में मतभेद उठ खड़ा हुआ। (हर एक दावेदार था कि वही उनके पोषण का ज़्यादा हक़दार है) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जाफ़र रज़ि० के हक़ में फ़ैसला किया क्योंकि उस बच्ची की ख़ाला उन्हीं की बीवी थीं।

इसी उमरा के सफ़र में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस आमिरीया रज़ि० से शादी की। इस मक़सद के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का पहुंचने से पहले हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ि० को अपने आगे हज़रत मैमूना रज़ि० के पास भेज दिया था और उन्होंने अपना मामला हज़रत अब्बास रज़ि० को सौंप दिया था। क्योंकि हज़रत मैमूना रज़ि० की बहन हज़रत उम्मुल फ़ज़्ल उन्हों के बीवी थीं। हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत मैमूना रज़ि० की शादी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कर दी। फिर आप ने मक्का से वापसी के वक़्त हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ि० को पीछे छोड़ दिया कि वह हज़रत मैमूना रज़ि० को सवार कर के आप की ख़िदमत में ले आएं। चुनांचे आप सरिफ़ पहुंचे तो वह आपकी ख़िदमत में पहुंचा दी गईं।[7]

इस उमरा का नाम उमरा-ए-क़ज़ा या तो इसलिए पड़ा कि यह उमरा हुदैबिय उमरा की क़ज़ा के तौर पर था, या इसलिए कि यह हुदैबिया में तय की गयी सुलह के मुताबिक़ किया गया था (और इस तरह की सुलह-सफ़ाई को अरबी में क़ज़ा और मुक़ाज़ात कहते हैं) इस दूसरी वजह को खोज करने वालों ने तर्जीह के क़ाबिल कहा है।[8] साथ ही इस उमरे को चार नाम से याद किया जाता है——(1) उमरा-ए-क़ज़ा, (2) उमरा-ए-क़ज़ीया, (3) उमरा-ए-क़िसास, (4) और सुलह का उमरा।[9]

---

7) ज़ादुल-मआद 2/152

8) ज़ादुल-मआद 1/172, फ़तहुल-बारी 7/500

9) फ़तहुल-बारी 7/500

कुछ और सराया

1. सरिय्या अबुल औज़ा (ज़िल हिज्जा 07 हि०)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पचास आदमियों को हज़रत अबुल औज़ा रज़ि० के नेतृत्व में बनू सुलैम को इस्लाम की दावत देने के लिए रवाना किया, लेकिन जब बनू सुलैम को इस्लाम की दावत दी गयी तो उन्होंने जवाब दिया कि तुम जिस बात की दावत देते हो, हमें इसकी कोई ज़रूरत नहीं। फिर उन्होंने ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी जिस में अबुल औज़ा घायल हो गए, फिर भी मुसलमानों ने दुश्मन के दो आदमियों को क़ैद किया।

2. सरिय्या ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह (सफ़र 08 हि०)

इन्हें दो सौ आदमियों के साथ फ़िदक के आस-पास हज़रत बशीर बिन साद के साथियों की शहादत-गाह में भेजा गया था। इन लोगों ने दुश्मन के जानवरों पर क़ब्ज़ा किया और उन के अनेक लोगों को क़त्ल कर दिया।

3. सरिय्या ज़ाते अतलह (रबीउल अव्वल सन् 08 हि०)

इस झड़प का विवेचन यह है कि बनू क़ुज़ाआ ने मुसलमानों पर हमला करने के लिए एक बड़ी टुकड़ी इकट्ठा कर रखी थी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज्ञान हुआ तो आप ने कअब बिन उमैर रज़ि० के नेतृत्व में सिर्फ़ पंद्रह सहाबा किराम को उनकी तरफ़ रवाना फ़रमाया। सहाबा किराम रज़ि० ने सामना होने पर उन्हें इस्लाम की दावत दी, पर उन्होंने इस्लाम क़ुबूल करने के बजाए उनको तीरों से छलनी कर के सब को शहीद कर डाला। सिर्फ़ एक आदमी ज़िंदा बचा जो क़त्ल किए गए लोगों के बीच से उठा लाया गया।[10]

---

10) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/231

सरिय्या ज़ाते इर्क़ (रबीउल अव्वल सन् 08 हि०)

इसकी घटना यह है कि बनू हवाज़िन ने बार-बार दुश्मनों को कुमक पहुंचाई थी, इसलिए पच्चीस आदमियों की कमान देकर हज़रत शुजाअ बिन वहब असदी रज़ि० को उनकी ओर रवाना किया गया। ये लोग दुश्मन के जानवर हांक लाए लेकिन लड़ाई और छेड़-छाड़ की नौबत नहीं आयी।[11]

11) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/231 तथा तलक़ीहुल-फ़ुहूम 33 (हाशिया)

मअ़रका-ए-मूता

मूता जार्डन में बलक़ा के क़रीब एक आबादी का नाम है जहां से बैतुलमक़्दिस दो दिन की दूरी पर स्थित है। यह मअ़रका यहीं हुआ था।

यह सब से बड़ी ख़ूनी लड़ाई थी जो मुसलमानों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में ही लड़नी पड़ी और यही लड़ाई ईसाई देशों के जीते जाने की शुरुआत साबित हुई। इसका समय जमादिल ऊला सन् 08 हि० मुताबिक़ अगस्त या सितंबर 629 ई० है।

मअ़रके की वजह

इस मअ़रके की वजह यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन उमैर अज़्दी रज़ि० को अपना पत्र देकर बुसरा के शासक के पास रवाना किया तो उन्हें क़ैसरे रूम के गवर्नर शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी ने, जो बलक़ा पर नियुक्त था, गिरफ़्तार कर लिया और मज़बूती के साथ बांध कर उनकी गरदन मार दी।

याद रहे कि दूतों की हत्या बड़ा ही बुरा अपराध था, जो युद्ध की घोषणा जैसा था, बल्कि इस से भी बढ़ कर समझा जाता था, इसलिए जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस घटना की सूचना दी गई तो आप पर यह बात बड़ी बोझल हुई और आप ने उस

इलाक़े पर चढ़ाई के लिए तीन हज़ार की सेना तैयार की।[1] और यह सब से बड़ी इस्लामी सेना थी जो इस से पहले अहज़ाब की लड़ाई के अलावा किसी और लड़ाई में न जुटायी जा सकी थी।

सेना के अधिकारियों और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वसीयत

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सेना का सेनापति हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को नियुक्त किया। और फ़रमाया कि अगर ज़ैद रज़ि० क़त्ल कर दिए जाएं तो जाफ़र रज़ि०, और जाफ़र रज़ि० क़त्ल कर दिए जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा सेनापति होंगे।[2] आप ने सेना के लिए सफ़ेद झंडा बांधा और उसे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के हवाले किया।[3] सेना को आप ने यह वसीयत भी फ़रमाई कि जिस जगह पर हज़रत हारिस बिन उमैर रज़ि० क़त्ल किए गए थे, वहां पहुंच कर उस जगह के निवासियों को इस्लाम की दावत दें, अगर वे इस्लाम स्वीकार कर लें, तो बेहतर, वरना अल्लाह से मदद मांगें और लड़ाई करें। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह के नाम से, अल्लाह की राह में, अल्लाह के साथ कुफ़्र करने वालों से लड़ाई करो और देखो वायदा-ख़िलाफ़ी न करना, ख़ियानत न करना, किसी बच्चे और औरत और बड़ी उम्र वाले बूढ़े व्यक्ति को और गिरजे में रहने वाले संयासियों को क़त्ल न करना। खजूर और कोई और पेड़ न काटना और किसी इमारत को मत ढाना।[4]

1) ज़ादुल-मआद 2/155, फ़तहुल-बारी 7/511
2) बुख़ारी बाब ग़ज़वा-ए-मूता मिन अरज़िश-शाम 2/611
3) मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 327
4) मुख़्तसरुस सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 327, रहमतुल लिल आलमीन 2/271

इस्लामी सेना का रवाना होना और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा का रोना

जब इस्लामी सेना चल पड़ने के लिए तैयार हो गयी तो लोगों ने आ-आ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नियुक्त सेनापतियों को अल-विदाअ़ कहा और सलाम किया। उस समय एक सेनापति हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० रोने लगे। लोगों ने पूछा, आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने कहाः देखो, अल्लाह की क़सम! (इस की वजह) दुनिया की मुहब्बत या तुम्हारे साथ मेरा ख़ास ताल्लुक़ नहीं है, बल्कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह की किताब की एक आयत पढ़ते हुए सुना है जिस में जहन्नम का ज़िक्र है। आयत यह है------

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا

"तुम में से हर आदमी जहन्नम पर वारिद होने वाला है। यह तुम्हारे रब पर एक ज़रूरी और फ़ैसला की हुई बात है।" (19:71)

मैं नहीं जानता कि जहन्नम पर वारिद होने के बाद कैसे पलट सकूंगा? मुसलमानों ने कहा, अल्लाह सलामती के साथ आप लोगों का साथी हो, आप की ओर से प्रतिरक्षा करे और आप को हमारी तरफ़ नेकी और ग़नीमत के साथ वापस लाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा——

لكنني اسأل الرحمن مغفرة وضربة ذات فرع تقذف الزبدا

اوطعنة بيدى حران مجهزة بحربة تنفذ الاحشاء والكبدا

حتى يقال اذا مروا على جدثى يا ارشد الله من غاز وقد رشدا

"लेकिन मैं रहमान से मग़फ़िरत का और हड्डी तोड़ने वाली और भेजा चीर देने वाली तलवार की काट का, या किसी नेज़े वाले के हाथों, आंतों और जिगर के पार उतर जाने वाले नेज़े की ज़बरदस्त चोट का सवाल करता हूं ताकि जब लोग मेरी क़ब्र पर गुज़रें तो कहें, हाय वह ग़ाज़ी, जिसे अल्लाह ने हिदायत दी और जो हिदायत पाया हुआ रहा।"

इस के बाद सेना रवाना हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसका साथ देते हुए सनीयतुल विदाअ़ तक तशरीफ़ ले गए और वहीं से उसे अल-विदाअ़ कहा।[5]

इस्लामी सेना का आगे बढ़ते रहना और अचानक आने वाली भयानक स्थिति का सामना

इस्लामी सेना उत्तर की ओर बढ़ती हुई मआ़न पहुंची। यह जगह उत्तरी हिजाज़ से मिले हुए शामी (जार्डनी) इलाक़े में स्थित है। यहां सेना ने पड़ाव डाला और यहीं जासूसों ने सूचना दी कि हिरक़्ल क़ैसरे रूम बलक़ा के क्षेत्र में मआब के स्थान पर एक लाख रूमियों की सेना लेकर पड़ाव डाले हुए है और उसके झंडे तले लख़्म व जुज़ाम, बिल्क़ीन व बुहरा और बलि (अरब क़बीलों) के एक लाख व्यक्ति से भी ज़्यादा जमा हो गए हैं।

मआ़न में मंत्रणा

मुसलमानों के हिसाब में सिरे से यह बात थी ही नहीं कि इन्हें किसी ऐसी भारी सेना का सामना करना पड़ जाएगा जिस से अति दूर भू-भाग में एक दम अचानक दो-चार हो गए थे। अब उन के सामने प्रश्न यह था कि क्या तीन हज़ार की यह छोटी सी सेना दो लाख के ठाठें मारते हुए समुद्र से टकरा जाए या क्या करे? मुसलमान हैरान थे और इसी हैरानी में मआ़न के अंदर दो रातें ग़ौर और मश्वरा करते हुए गुज़ार

5) इब्ने हिशाम 2/373-374, ज़ादुल-मआद 2/156, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 327

दीं। कुछ लोगों का विचार था कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लिख कर दुश्मन की तायदाद की ख़बर दे दें। इस के बाद या तो आप की ओर से और ज़्यादा कुमुक मिलेगी, या और कोई हुक्म होगा और उसे पूरा किया जाएगा।

लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने इस राय का विरोध किया और यह कह कर लोगों को गरमा दिया कि लोगों! अल्लाह की क़सम! जिस चीज़ से आप कतरा रहे हैं यह तो वही शहादत है जिस की तलब में आप निकले हैं। याद रहे कि दुश्मन से हमारी लड़ाई तायदाद, ताक़त और अधिकता के बल पर नहीं है, बल्कि हम सिर्फ़ उस दीन के बल पर लड़ते हैं, जिसे अल्लाह ने हमें नेमत के तौर पर दे रखा है। इसलिए चलिए आगे बढ़िए! हमें दो भलाइयों में से एक भलाई हासिल हो कर रहेगी। या तो हम ग़ालिब आएंगे या शहीद हो जाएंगे। आख़िरकार हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० की पेश की हुई बात तय पा गई।

दुश्मन की ओर इस्लामी सेना का आगे बढ़ना

मतलब यह है कि इस्लामी सेना मआन में दो रातें बिताने के बाद दुश्मन की ओर आगे बढ़ी और बलक़ा की एक आबादी में जिस का नाम 'मशारिफ़' था, हिरक़्ल की सेनाओं से उसका सामना हुआ। इसके बाद दुश्मन और ज़्यादा क़रीब आ गया और मुसलमानों ने 'मूता' की तरफ़ सिमट कर पड़ाव डाल दिया, फिर सेना को नए सिरे से तर्तीब दी गई। दाहिने अंग पर क़ुतबा बिन क़तादा अज़री नियुक्त किए गए और बाएं पर उबादा बिन मालिक अंसारी रज़ि०।

लड़ाई की शुरूआत और सेनापतियों का एक के बाद एक शहीद होना

इसके बाद मूता ही में दोनों फ़रीक़ों के दर्मियान टकराव हुआ और बड़ी सख़्त लड़ाई शुरू हुई। तीन हज़ार की (मुस्लिम) सेना दो लाख के टिड्डी दल के तूफ़ानी हमलों का मुक़ाबला कर रही थी। अनोखी लड़ाई

थी, दुनिया फटी-फटी आंखों से देख रही थी, लेकिन जब ईमान की ठंडी हवा चलती है तो इसी तरह की अनोखी बातें देखी और सुनी जाती है।

सब से पहले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चहेते हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने झंडा लिया और ऐसी बे-जिगरी से लड़े कि इस्लामी सेनानियों के अलावा कहीं और उसकी मिसाल नहीं मिलती। वह लड़ते रहे लड़ते रहे, यहां तक कि दुश्मन के नेज़ों में गुथ गए और शहीद हो कर धरती पर आ रहे।

इस के बाद हज़रत जाफ़र रज़ि० की बारी थी। उन्होंने लपक कर झंडा उठाया और बे-मिसाल लड़ाई शुरू कर दी। जब लड़ाई की तेज़ी यौवन पर आयी तो अपने लाल व काले घोड़े से कूद पड़े, कूचें काट दीं और वार पर वार करते और रोकते रहे, यहां तक कि दुश्मन की चोट से दाहिना हाथ कट गया। इसके बाद उन्होंने झंडा बाएं हाथ में ले लिया और उसे लगातार उठाए रखा, यहां तक कि बायां हाथ भी काट दिया गया। फिर दोनों बचे बाज़ुओं से झंडा गोद में ले लिया और उस वक़्त तक बुलन्द रखा जब तक कि शहीद न हो गए। कहा जाता है कि एक रूमी ने उनको ऐसी तलवार मारी कि उनके दो टुकड़े हो गए। अल्लाह ने उन्हें उन के दोनों बाज़ुओं के बदले जन्नत में दो बाज़ू दिए, जिनके ज़रिए वे जहां चाहते हैं उड़ते हैं, इसीलिए उनकी उपाधि (लक़ब) जाफ़र तैयार और जाफ़र ज़ुल-जनाहैन पड़ गया। (तैयार का अर्थ उड़ने वाला और ज़ुल जनाहैन का अर्थ दो बाज़ुओं वाला।)

इमाम बुख़ारी ने नाफ़ेअ़ के वास्ते से इब्ने उमर रज़ि० का यह बयान रिवायत किया है कि मैं ने मूता की लड़ाई के दिन हज़रत जाफ़र रज़ि० के पास जबकि वह शहीद हो चुके थे, खड़े हो कर उन के जिस्म पर नेज़े और तलवार के पचास घाव गिनती किए। इन में से कोई भी घाव पीछे नहीं लगा था।[6]

6) बुख़ारी बाब ग़ज़्वा-ए-मूता मिन अरज़िश-शाम 2/611

एक दूसरी रिवायत में इब्ने उमर रज़ि० का यह बयान इस तरह रिवायत किया गया है कि मैं भी उस लड़ाई में मुसलमानों के साथ था। हम ने जाफ़र बिन अबी तालिब को तलाश किया तो उन्हें क़त्ल किए गए लोगों में पाया और उनके जिस्म में नेज़े और तीर के नव्वे से अधिक घाव पाए।[7] नाफ़ेअ़ से उमरी की रिवायत में इतना और बढ़ा हुआ है कि "हमने ये सब घाव उनके जिस्म के अगले हिस्से में पाए।[8]"

इस तरह बहादुरी और साहस से भरपूर लड़ाई के बाद जब हज़रत जाफ़र रज़ि० भी शहीद कर दिए गए तो अब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने झंडा उठाया और अपने घोड़े पर सवार आगे बढ़े और अपने आप को मुकाबले के लिए तैयार करने लगे, लेकिन उन्हें किसी क़दर हिचकिचाहट हुई, यहां तक कि थोड़ा सा झिझके भी, लेकिन उस के बाद कहने लगे।

اقسمت یا نفس لتنزلنه کارهة اولتطا وعنه

ان أجلب الناس وشدوا الرنه مالی اراک تکرهین الجنه

"ऐ नफ़्स! क़सम है कि तू ज़रूर मुक़ाबले के लिए उतर, चाहे नागवारी के साथ, चाहे ख़ुशी-ख़ुशी। अगर लोगों ने लड़ाई बर्पा कर रखी है और नेज़े तान रखे हैं तो मैं तुझे क्यों जन्नत से बचने वाला देख रहा हूं।"

इस के बाद वह मुक़ाबले में उतर आए। इतने में उनका चचेरा भाई एक मांस लगी हुई हड्डी ले आया और बोला, "इसके ज़रीए अपनी पीठ मज़बूत कर लो, क्योंकि इन दिनों तुम्हें बड़े कड़े हालात से दो चार

---

7) बुख़ारी बाब ग़ज़्वा-ए-मूता मिन अरज़िश-शाम 2/611

8) फ़तहुल-बारी 7/512 दोनों हदीसों में गिनती का फ़र्क़ है समानता यह दी गई है कि तीरों के ज़ख़्म शामिल कर के गिनती बढ़ जाती है। (देखिए फ़तहुल-बारी)

होना पड़ा है। उन्होंने हड्डी लेकर एक बार नोची, फिर फेंक कर तलवार थाम ली और आगे बढ़ कर लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।"

झंडा, अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार के हाथ में

इस मौक़े पर क़बीला बनू अजलान के साबित बिन अरक़म रज़ि० नामी एक सहाबी ने लपक कर झंडा उठा लिया और फ़रमाया, मुसलमानो! अपने किसी आदमी को सेनापति बना लो। सहाबा रज़ि० ने कहा: आप ही यह काम अंजाम दें। उन्होंने कहा: मैं यह काम नहीं कर सकूंगा। इसके बाद सहाबा किराम रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को चुना और उन्होंने झंड़ा लेते ही बड़ी ज़ोरदार लड़ाई की। चुनांचे सहीह बुख़ारी में ख़ुद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० से रिवायत है कि मूता कि लड़ाई के दिन मेरे हाथ में नौ तलवारें टूट गईं, फिर मेरे हाथ में सिर्फ़ एक यमनी बाना (छोटी सी तलवार) बाक़ी बची।[9] और एक दूसरी रिवायत में उनका बयान इस तरह रिवायत किया गया है कि मेरे हाथ में मूता की लड़ाई के दिन नौ तलवारें टूट गयीं और एक यमनी बाना मेरे हाथ में चिपक कर रह गया।[10]

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मूता की लड़ाई ही के दिन, जबकि अभी लड़ाई के मैदान से किसी तरह की कोई ख़बर नहीं आयी थी? वह्य के आधार पर फ़रमाया कि झंडा ज़ैद रज़ि० ने लिया और वह शहीद कर दिए गए। फिर जाफ़र रज़ि० ने लिया, वह भी शहीद कर दिए गए, फिर इब्ने रवाहा रज़ि० ने लिया, वे भी शहीद कर दिए गए।— इस बीच आपकी आंखें आंसुओं से भर गई थीं——यहां तक कि झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने लिया (और ऐसी लड़ाई लड़ी कि) अल्लाह ने उन पर जीत दिला दी।[11]

---

9) बुख़ारी ग़ज़वा-ए-मूता मिन अर्ज़िश-शाम 2/611

10) बुख़ारी ग़ज़वा-ए-मूता मिन अर्ज़िश-शाम 2/611

11) बुख़ारी ग़ज़वा-ए-मूता मिन अर्ज़िश-शाम 2/611

लड़ाई का अंत

बड़ी वीरता, धैर्य और जान लगा देने के बावजूद यह बात बड़ी आश्चर्य जनक थी कि मुसलमानों की यह छोटी सी सेना रूमियों की उस भारी-भरकम सेना की तूफ़ानी लहरों के सामने डटी रह जाए, इसलिए इस नाज़ुक मरहले में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने मुसलमानों को इस आज़माइश से निकालने के लिए जिस में वह स्वयं कूद पड़े थे, अपनी महारत और पूर्ण कार्य-कौशल का प्रदर्शन किया।

रिवायतों में बड़ा मतभेद है कि इस लड़ाई का आख़िरी अंजाम क्या हुआ। तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से स्थिति यह मालूम होती है कि लड़ाई के पहले दिन हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० दिन भर रूमियों के सामने डटे रहे लेकिन वे एक ऐसी जंगी चाल की ज़रूरत महसूस कर रहे थे जिस से रूमियों को आतंकित कर के इतनी कामियाबी के साथ मुसलमानों को पीछे हटा लें कि रूमियों को पीछा करने कि हिम्मत न हो, क्योंकि वह जानते थे कि अगर मुसलमान भाग खड़े हुए और रूमियों ने पीछा करना शुरू कर दिया तो मुसलमानों को उनके पंजे से बचाना बड़ा कठिन होगा।

चुनांचे जब दूसरे दिन सुबह हुई तो उन्होंने सेना का रूप-स्वरूप बदल दिया और उसकी एक नयी तर्तीब क़ायम कर दी। अगली लाइन को पिछली लाइन और पिछली लाइन को अगली लाइन की जगह रख दिया और दाएं को बाएं और बाएं को दाएं से बदल दिया। यह स्थिति देख कर दुश्मन चौंक गया और कहने लगा, इन्हें कुमुक पहुंच गयी है। मतलब यह कि रूमी शुरू ही में आतंकित हो गए और जब दोनों सेनाओं का आमना-सामना हुआ और कुछ देर तक झड़प हो चुकी तो हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने अपनी सेना को व्यवस्था बचाते हुए मुसलमानों को थोड़ा-थोड़ा पीछे हटाना शुरू किया, लेकिन रूमियों ने इस डर से उनका पीछा न किया कि मुसलमान धोखा दे रहे हैं और कोई चाल चल कर

उन्हें रेगिस्तान की पहनाइयों (भीतरी भाग) में फेंक देना चाहते हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि दुश्मन अपने इलाक़े में वापस चला गया और मुसलमानों का पीछा करने की न सोची। उधर मुसलमान कामियाबी और सलामती के साथ पीछे हटे और फिर मदीना वापस आ गए।[12]

दोनों फ़रीक़ के क़त्ल किए गए लोग

इस लड़ाई में 12 मुसलमान शहीद हुए। रूमियों के क़त्ल किए गए लोगों की तायदाद का ज्ञान न हो सका, अलबत्ता लड़ाई के विस्तृत विवरण से मालूम होता है कि वे भारी संख्या में मारे गए। अंदाज़ा किया जा सकता है कि अकेले हज़रत ख़ालिद रज़ि० के हाथ में नौ तलवारें टूट गयीं तो क़त्ल किए गए लोगों और घायलों की संख्या कितनी रही होगी।

इस मअ्रके का प्रभाव

इस मअ्रके की कठिनाइयां जिस बदले के लिए सहन की गई थीं, मुसलमान यद्यपि वह बदला न ले सके, लेकिन इस लड़ाई ने मुसलमानों की साख और प्रसिद्धि में बड़ी भारी वृद्धि कर ली। इसकी वजह से सारे अ्रब ने दांतों तले उंगली दबा ली, क्योंकि रूमी उस समय धरती पर सब से बड़ी शक्ति थे। अ्रब समझते थे कि उनसे टकराना आत्महत्या जैसा है, इसलिए तीन हज़ार की मामूली सेना का दो लाख की भारी-भरकम सेना से टकरा कर कोई उल्लेखनीय हानि उठाए बिना वापस आ जाना किसी अनोखे कारनामे से कम न था और इस यह सच्चाई ज़्यादा मज़बूती के साथ साबित होती थी, कि अरब अब तक जिस प्रकार के लोगों को जानते और समझते थे, मुसलमान उनसे अलग-थलग एक दूसरे ही प्रकार के लोग हैं। वे अल्लाह की ओर से समर्थन पाए हुए और सहायता पाए हुए लोग हैं और उनके रहनुमा सच में अल्लाह के रसूल

---

12) देखिए फ़तहुल-बारी 7/513-514, ज़ादुल-मआद 2/156, लड़ाई की तफ़सील पिछली और इन दोनों किताबों से ली गई है।

हैं। इसी लिए हम देखते हैं कि वे हठधर्म क़बीले जो मुसलमानों से बराबर झगड़ते रहते थे, इस लड़ाई के बाद उनका झुकाव इस्लाम की ओर हो गया। चुनांचे बनू सुलैम, अशजअ़, ग़तफ़ान, ज़ुबयान और फ़ज़ारा वग़ैरह क़बीलों ने इस्लाम अपना लिया।

यही लड़ाई है जिस से रूमियों के साथ ख़ूनी टकराव शुरू हुआ, जो आगे चल कर रूमी देशों की जीतों और दूर-दूर के इलाक़ों पर मुसलमानों की सत्ता का आरंभ-बिन्दु साबित हुआ।

सरिय्या ज़ातुस्सलासिल

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मूता की लड़ाई के सिलसिले में मशारिफ़े शाम के अंदर रहने वाले अरब क़बीलों के दृष्टि-कोण की जानकारी हुई कि वे मुसलमानों से लड़ने के लिए रूमियों के झंडे तले जमा हो गए थे तो आप ने एक ऐसी हिकमते बालिग़ा (परिपक्व नीति) की ज़रूरत महसूस की जिसके ज़रिए एक ओर तो इन अ़रब क़बीलों और रूमियों में भेद-भाव पैदा हो जाए और दूसरी ओर ख़ुद मुसलमानों से उनकी दोस्ती हो जाए, ताकि इस इलाक़े में दोबारा आप के ख़िलाफ़ इतनी बड़ी सेना जमा करना संभव न हो सके।

इस मक़सद के लिए आप ने हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ि० को चुना क्योंकि उनकी दादी क़बीला बली से ताल्लुक़ रखती थीं। चुनांचे आप ने मूता की लड़ाई के बाद ही यानी जमादिल आख़िर सन् 08 हि० में उनका दिल रखने के लिए हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ि० को उन की ओर भेजा। कहा जाता है कि जासूसों ने यह ख़बर भी दी थी कि बनू क़ुज़ाआ़ ने मदीना पर धावा बोलने के इरादे से एक टुकड़ी तैयार कर रखी है, इसलिए आप ने हज़रत अ़म्र बिन आस रज़ि० को उनकी ओर रवाना किया। संभव है दोनों चीज़ें इकट्ठा हो गयी हों।

बहरहाल अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के लिए सफ़ेद झंडा बांधा और उसके साथ काली झंडियां भी दीं और उनकी कमान में बड़े-बड़े मुहाजिरों व अंसार की तीन सौ की तायदाद देकर उन्हें विदा किया। उन के साथ तीस घोड़े भी थे। आप ने हुक्म दिया कि बली और अ़ज़रा और बिलक़ीन के जिन लोगों के पास से गुज़रें उनसे मदद चाहें। वे रात को सफ़र करते और दिन को छिपे रहते थे। जब दुश्मन के क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ कि उन की सेना बहुत बड़ी है। इसलिए हज़रत अ़म्र रज़ि० ने हज़रत राफ़ेअ़ रज़ि० बिन मकीस जोहनी को कुमुक तलब करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में भेज दिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को झंडा देकर उनके नेतृत्व में दो सौ फ़ौजियों की कुमुक रवाना फ़रमाई, जिस में मुहाजिरों के सरदार------जैसे अबू बक्र रज़ि० व उमर रज़ि०------और अंसार के सरदार भी थे। हज़रत उबैदा रज़ि० को हुक्म दिया गया था कि अ़म्र बिन आ़स रज़ि० से जा मिलें और दोनों मिल कर काम करें, मतभेद न करें। वहां पहुंच कर अबू उबैदा रज़ि० ने इमामत करनी चाही लेकिन हज़रत अ़म्र रज़ि० ने कहा, आप मेरे पास कुमुक के तौर पर आए हैं, अमीर मैं हूं। अबू उबैदा ने उनकी बात मान ली और नमाज़ हज़रत अम्र रज़ि० ही पढ़ाते रहे।

कुमुक आ जाने के बाद यह सेना और आगे बढ़ कर कुज़ाआ़ के इलाक़े में दाख़िल हुई और इस इलाक़े को रौंदती हुई उसकी दूर-दराज़ की सीमाओं तक जा पहुंची। आख़िर में एक सेना से मुडभेड़ हुई, लेकिन जब मुसलमानों ने उस पर हमला किया तो वह इधर उधर-भाग कर बिखर गयी।

इसके बाद औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ि० को दूत बना कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में भेजा गया।

उन्होंने मुसलमानों की सलामती के साथ वापसी की ख़बर दी और लड़ाई के बारे में सविस्तार बताया।

ज़ातुस्सलासिल, वादियुल कुरा से आगे एक क्षेत्र का नाम है। यहां से मदीना की दूरी दस दिन है। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि मुसलमान क़बीला जुज़ाम की फ़ौज में स्थित सलसल नामी एक स्रोत पर उतरे थे। इसी लिए इस मुहिम का नाम ज़ातुस्सलासिल पड़ गया।[13]

सरिय्या ख़िज़रा (शअ़बान सन् 08 हि०)

इस झड़प की वजह यह थी कि नज्द के अंदर क़बीला मुहारिब के इलाक़े में ख़िज़रा नामी एक जगह पर बनू ग़तफ़ान सेना जमा कर रहे थे, इसलिए उन का सर कुचलने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू क़तादा को पंद्रह आदमियों की टीम देकर रवाना किया। उन्होंने दुश्मन के कई आदमियों को क़त्ल और क़ैद किया और ग़नीमत का माल भी हासिल किया। इस मुहिम में वह पंद्रह दिन मदीना से बाहर रहे।[14]

---

13) इब्ने हिशाम 2/623-626, ज़ादुल मआद 2/157

14) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/233, तलक़ीहुल-फ़ुहूम 33

ग़ज़वा-ए-फ़त्हे मक्का

इमाम इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि यह वह महान विजय है जिस के द्वारा अल्लाह ने अपने दीन को, अपने रसूल को, अपनी सेना को और अपने अमानतदार गिरोह को इज़्ज़त दी और अपने शहर को और अपने घर को, जिसे दुनिया वालों के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया है, कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों के हाथों से छुटकारा दिलाया। इस विजय से आसमान वालों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और उसकी इज़्ज़त की डोरें जौज़ा के कंधों पर तन गईं और इसकी वजह से लोग अल्लाह के दीन में जत्थे के जत्थे दाख़िल हुए और धरती का चेहरा रोशनी और चमक-दमक से जगमगा उठा।[1]

इस ग़ज़्वे की वजह

हुदैबिया समझौते की चर्चा करते वक़्त हम यह बात बता चुके हैं कि इस समझौते की एक धारा यह थी कि जो कोई मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहद व वायदों में दाख़िल होना चाहे दाख़िल हो सकता है और जो कोई क़ुरैश के अहद व वायदों में दाख़िल होना चाहे दाख़िल हो सकता है और जो क़बीला जिस फ़रीक़ के साथ शामिल होगा उस फ़रीक़ का एक हिस्सा समझा जाएगा, इसलिए ऐसा कोई क़बीला अगर किसी हमले या ज़्यादती का शिकार होगा तो यह ख़ुद उस फ़रीक़ पर हमला और ज़्यादती मानी जाएगी।

---

1) ज़ादुल-मआद 2/160

इस धारा के तहत बनू ख़ुज़ाआ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वायदे और समझौते में दाख़िल हो गए और बनू बक्र कुरैश के वायदे और समझौते में। इस तरह दोनों क़बीले एक दूसरे से सुरक्षित और बे-ख़तर हो गए, लेकिन चूंकि इन दोनों क़बीलों में अज्ञानता-काल से द्वेष और वैर चला आ रहा था, इसलिए जब इस्लाम आया और हुदैबिया का समझौता हो गया और दोनों फ़रीक़ एक दूसरे से संतुष्ट हो गये तो बनू बक्र ने इस मौक़े को ग़नीमत समझ कर चाहा कि बनू ख़ुज़ाआ से पुराना बदला चुका लें। चुनांचे नौफ़ल बिन मुआविया दैली ने बनू बक्र की एक जमाअत साथ ले कर शअबान सन् 08 हि० में बनू ख़ुज़ाआ पर रात के अंधेरे में हमला कर दिया। उस वक़्त बनू ख़ुज़ाआ वतीर नामी एक सोते पर पड़ाव डाले हुए थे, उनके कई लोग मारे गए, कुछ झड़प और लड़ाई भी हुई। इधर कुरैश ने इस हमले में हथियारों से बनू बक्र की मदद की, बल्कि उनसे कुछ आदमी भी रात के अंधेरे का फ़ायदा उठा कर लड़ाई में शरीक हुए। बहरहाल हमलावरों ने बनू ख़ुज़ाआ को खदेड़ कर हरम तक पहुंचा दिया। हरम पहुंच कर बनू बक्र ने कहा, "ऐ नौफ़ल! अब तो हम हरम में दाख़िल हो गए। तुम्हारा अल्लाह! तुम्हारा अल्लाह!---------इस के जवाब में नौफ़ल ने एक बड़ी बात कही, बोलाः बनूबक्र आज कोई अल्लाह नहीं, अपना बदला चुका लो। मेरी उम्र की क़सम! तुम लोग हरम में चोरी करते हो तो क्या हरम में अपना बदला नहीं ले सकते।"

इधर बनू ख़ुज़ाआ ने मक्का पहुंच कर बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई और अपने एक आज़ाद किए गए ग़ुलाम राफ़ेअ के घरों में पनाह ली और अम्र बिन सालिम ख़ुज़ाई ने वहां से निकल कर तुरन्त मदीना का रुख़ किया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंच कर सामने खड़ा हो गया। उस वक़्त आप मस्जिदे नबवी में सहाबा किराम के बीच तशरीफ़ फ़रमा थे। अम्र बिन सालिम ने कहा--

يا رب انى ناشد محمدا	حلفنا وحلف ابيه الا تلدا
قد كنتم ولدا وكنا والدا	ثمة اسلمنا ولم ننزع يدا
فانصر هداك الله نصرا ايدا	وادع عباد الله يأتوا مددا
فيهم رسول الله قد تجردا	ابيض مثل البدر يسمو صعدا
ان سيم خسفا وجهه تربدا	في فيلق كالبحر يجري مزبدا
ان قريشا اخلفوك الموعدا	ونقضوا ميثاقك المؤكدا
وجعلوا لي في كداء رصدا	وزعموا ان لست ادعو احدا
وهم اذل واقل عددا	هم بيتونا بالوتير هجدا

وقتلونا ركعا وسجدا

"ऐ परवरदिगार! मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उन के युग और उन के पिता के पुराने युग[2] की दुहाई दे रहा हूं। आप लोग औलाद थे और हम जनने वाले।[3] फिर हम ने ताबेदारी अपनायी और कभी उस से हटे नहीं। अल्लाह आपको हिदायत दे, आप ज़ोर दार मदद कीजिए और अल्लाह के बंदों को पुकारिए, वे मदद को आएंगे, जिन में अल्लाह के रसूल होंगे, हथियार पोश और चढ़े हुये चौदहवीं के चांद की तरह गोरे और सुदंर। अगर उन पर ज़ुल्म और उन की तौहीन की जाए तो चेहरा तमतमा उठता है। आप एक ऐसी बड़ी सेना के अंदर तशरीफ़ लाएंगे जो झाग भरे समुद्र की तरह लहरें मारता होगा। यक़ीनी तौर पर क़ुरैश ने आप के वचन व समझौते के विरुद्ध काम किया है और आप

2) इशारा उस सन्धि (अह्द) की ओर है जो बनू ख़ुज़ाआ औ बनू हाशिम के बीच अब्दुल-मुत्तलिब के ज़माने से चला आ रहा था इसकी चर्चा किताब के शुरु में की जा चुकी है।

3) इशारा इस बात की तरफ़ है कि अब्दे मुनाफ़ की माँ अर्थात क़ुसई की बीवी बनू ख़ुज़ाआ से थीं इसलिए नबी (सल्ल०) का पूरा ख़ानदान बनू ख़ुज़ाआ की औलाद ठहरा।

का पक्का वचन तोड़ दिया है। उन्होंने मेरे लिए कदा में घात लगाई और यह समझा कि मैं किसी को (मदद के लिए) न पुकारूंगा, हालांकि वे बड़े ज़लील और तायदाद में थोड़े हैं। उन्होंने वतीर पर रात में हमला किया और हमें रुकूअ और सज्दे की हालत में क़त्ल किया।" (यानी हम मुसलमान थे और हमें क़त्ल किया गया)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ अम्र बिन सालिम! तेरी मदद की गई।" इसके बाद आसमान में बादल का एक टुकड़ा दिखाई पड़ा। आप ने फ़रमाया, ये बादल बनू काब की मदद की ख़ुशख़बरी से दमक रहा है।

इस के बाद बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाअी के नेतृत्व में बनू ख़ुज़ाआ की एक जमाअत मदीना आई और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया कि कौन से लोग मारे गए और किस तरह क़ुरैश ने बनू बक्र का साथ दिया। इसके बाद ये लोग मक्का वापस चले गए।

समझौते की तजदीद (नवीनीकरण) के लिए अबू सुफ़ियान मदीना में

इसमें संदेह नहीं कि क़ुरैश और उन के साथियों ने जो कुछ किया था वह खुली हुई वायदा ख़िलाफ़ी थी, जिसके सहीह होने की कोई वजह नहीं थी। इसीलिए ख़ुद क़ुरैश को भी अपनी वायदा ख़िलाफ़ी का बहुत जल्द एहसास हो गया और उन्होंने उसके अंजाम की संगीनी को देखते हुए एक मज्लिसे मुशावरत (मंत्ररणा परिषद) आयोजित, जिसमें तय किया गया कि वह अपने सेनापति अबू सुफ़ियान को अपना नुमाइन्दा (प्रतिनिधि) बना कर समझौते के नवीनीकरण के लिए मदीना रवाना करें।

उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को बताया कि क़ुरैश अपने इस वायदे को तोड़ने के बाद

अब क्या करने वाले हैं। चुनांचे आप ने फ़रमाया कि "मानो मैं अबू सुफ़ियान को देख रहा हूं कि वह समझौते को फिर से पक्का करने और समझौते की मुद्दत को बढ़ाने के लिए आ गया है।"

इधर अबू सुफ़ियान तै किए हुए प्रस्ताव के मुताबिक़ रवाना होकर अस्फ़ान पहुंचा तो बुदैल बिन वरक़ा से मुलाक़ात हुई । बुदैल मदीना से मक्का वापस आ रहा था। अबू सुफ़ियान समझ गया कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से होकर आ रहा है। पूछा, बुदैल! कहां से आ रहे हो? बुदैल ने कहा, मैं ख़ुज़ाआ के साथ इस तट और घाटी में गया हुआ था। पूछा, क्या तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास नहीं गए थे? बुदैल ने कहा, नहीं।

मगर जब बुदैल मक्का की ओर रवाना हो गया तो अबू सुफ़ियान ने कहा, अगर वह मदीना गया था तो वहां (अपने ऊंट को) गुठली का चारा खिलाया होगा। इसलिए अबू सुफ़ियान उस जगह गया जहां बुदैल ने अपना ऊंट बिठाया था और उसकी मेंगनी ले कर तोड़ी तो उसमें खजूर की गुठली नज़र आयी। अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं अल्लाह की क़सम खा कर कहता हूं कि बुदैल मुहम्मद के पास गया था।

बहरहाल अबू सुफ़ियान मदीना पहुंचा और अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० के घर गया। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर बैठना चाहा तो उन्होंने बिस्तर लपेट दिया। अबू सुफ़ियान ने कहा, "बेटी! क्या तुम ने इस बिस्तर को मेरे लायक़ नहीं समझा या मुझे इस बिस्तर के लायक़ नहीं समझा?" उन्होंने कहा, "यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर है और आप नापाक मुश्रिक आदमी हैं।" अबू सुफ़ियान कहने लगा, अल्लाह की क़सम! मेरे बाद तुम्हें शर (दुष्टताई) पहुंच गया है।"

फिर अबू सुफ़ियान वहां से निकल कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया और आप से बातें की। आप ने उसे कोई जवाब न दिया। इस के बाद अबू बक्र रज़ि० के पास गया और उन से कहा कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात करें। उन्होंने कहा, मैं ऐसा नहीं कर सकता। इस के बाद वह उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास गया और उन से बात की। उन्होंने कहा, भला मैं तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिफ़ारिश करूंगा, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे लकड़ी के टुकड़े के सिवा कुछ न मिले तो मैं उसी के ज़रिए तुम लोगों से जिहाद करूंगा। इस के बाद वह हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब के पास पहुंचा। वहां हज़रत फ़ातिमा रज़ि० भी थीं और हज़रत हसन रज़ि० भी थे जो अभी छोटे से बच्चे थे और सामने घुटना-घुटनों चल रहे थे। अबू सुफ़ियान ने कहा, "ऐ अ़ली रज़ि०! मेरे साथ तुम्हारा सब से गहरा वंशीय ताल्लुक़ है। मैं एक ज़रूरत से आया हूं। ऐसा न हो कि जिस तरह मैं नामुराद आया, उसी तरह नामुराद वापस जाऊं, तुम मेरे लिए मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सिफ़ारिश कर दो। हज़रत अली ने कहा, अबू सुफ़ियान! तुझ पर अफ़सोस! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बात का निश्चय कर लिया है, हम इस बारे में आप से कोई बात नहीं कर सकते। इस के बाद वह हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और बोला: क्या आप ऐसा कर सकती हैं कि अपने इस बेटे को हुक्म दें कि वह लोगों के दर्मियान पनाह देने का एलान कर के हमेशा के लिए अरब का सरदार हो जाए? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मेरा यह बेटा इस दर्जे को नहीं पहुंचा है कि लोगों के दर्मियान पनाह देने का एलान कर सके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के होते हुए कोई पनाह दे भी नहीं सकता।"

इन कोशिशों और नाकामियों के बाद अबू सुफ़ियान की आंखों के सामने दुनिया अंधेरी हो गयी। उस ने हज़रत अली बिन अबी तालिब से कड़ी घबड़ाहट, असमंजस और निराशा की हालत में कहा, "अबुल हसन! मैं देखता हूं हालात संगीन हो गये हैं, इसलिए मुझे कोई रास्ता बताओ।" हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे लिए कोई उपयोगी चीज़ नहीं जानता, अलबत्ता तुम जो बनू कनाना के सरदार हो, इसलिए खड़े हो कर लोगों के बीच अमान का एलान कर दो, इस के बाद अपनी धरती पर वापस चले जाओ।" अबू सुफ़ियान ने कहा, "क्या तुम्हारा विचार है कि ये मेरे लिए कुछ उपयोगी होगा?" हज़रत अली रज़ि० ने कहा: "नहीं अल्लाह की क़सम! मैं इसे उपयोगी तो नहीं समझता, लेकिन इस के अलावा कोई शक्ल भी समझ में नहीं आती।" इस के बाद अबू सुफ़ियान ने मस्जिद में खड़े हो कर एलान किया कि लोगो! मैं लोगों के बीच अमान का एलान कर रहा हूं। फिर अपने ऊंट पर सवार हो कर मक्का चला गया।

कुरैश के पास पहुंचा, तो वे पूछने लगे कि पीछे का क्या हाल है? अबू सुफ़ियान ने कहा, "मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास गया, बात की तो अल्लाह की क़सम! उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर अबू क़हाफ़ा के बेटे के पास गया तो उस के अंदर कोई भलाई नहीं पाई। इस के बाद उमर बिन ख़त्ताब के पास गया तो उसे सब से कट्टर दुश्मन पाया, फिर अली रज़ि० के पास गया तो उसे सब से नर्म पाया। उस ने मुझे एक राय दी और मैं ने उस पर अमल भी किया, लेकिन पता नहीं वह काम का भी था नहीं? लोगों ने पूछा, वह क्या राय थी? अबू सुफ़ियान ने कहा, "वह राय यह थी कि मैं लोगों के दर्मियान अमान का एलान कर दूं और मैं ने ऐसा ही किया।"

कुरैश ने कहा, तो क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे लागू क़रार दिया? अबू सुफ़ियान ने कहा, नहीं। लोगों ने कहा, तेरा

नाश हो, उस आदमी (अ़ली रज़ि०) ने तेरे साथ तो सिर्फ़ मज़ाक़ किया। अबू सुफ़ियान ने कहा, अल्लाह की क़सम! इस के अ़लावा कोई शक्ल न बन सकी।

ग़ज़्वे की तैयारी और छिपाने की कोशिश

तबरानी की रिवायत से मालूम होता हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वायदा-ख़िलाफ़ी की ख़बर आने से तीन दिन पहले ही हज़रत आइशा रज़ि० को हुक्म दे दिया था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साज़ व सामान तैयार कर दें, लेकिन किसी को पता न चले। इस के बाद हज़रत आइशा रज़ि० के पास हज़रत अबू बक्र रज़ि० तशरीफ़ लाए तो पूछा, बेटी! यह कैसी तैयारी है? उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मालूम। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, यह बनू असफ़र यानी रूमियों से लड़ाई का समय नहीं, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरादा किधर का है? हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मालूम। तीसरे दिन सुबह की सुबह अ़म्र बिन सालिम ख़ुज़ाअ़ी चालीस सवारों को लेकर पहुंच गया और يا رب اني ناشد محمد। वाले पद्य कहे तो लोगों को मालूम हुआ कि क़ुरैश ने वचन भंग किया है। इस के बाद बुदैल आया, फिर अबू सुफ़ियान आया तो लोगों को हालात की सही-सही जानकारी हुई। इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयारी का हुक्म देते हुए बताया कि मक्का चलना है और साथ ही यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! जासूसों और ख़बरों को क़ुरैश तक पहुंचने से रोक और पकड़ ले, ताकि हम उन के इलाक़े में उन के सर पर एक दम जा पहुंचें।

फिर गुप्त रूप से और रहस्य रखते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ान के महीने (सन् 08 हि०) में हज़रत अबू क़तादा बिन रुबई के नेतृत्व में आठ आदमियों की एक

टुकड़ी बत्ने अज़म की ओर रवाना की। यह जगह ज़ी ख़शब और ज़िल मर्वा के बीच मदीना से लगभग 36 अरबी मील की दूरी पर स्थित है। मक़सद यह था कि समझने वाला समझे कि आप उसी इलाक़े का रुख़ करेंगे और यही ख़बरें इधर-उधर फैलीं। लेकिन जब यह टुकड़ी अपने निश्चित स्थान पर पहुंच गई तो उसे ख़बर मिली कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के लिए रवाना हो चुके हैं। चुनांचे यह भी आप से जा मिला।[4]

इधर हातिब बिन अबी बलतआ रज़ि० ने कुरैश को एक पत्र लिख कर यह ख़बर भेज दी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमला करने वाले हैं। उन्होंने यह पत्र एक औरत को दिया था और उसे कुरैश तक पहुंचाने पर मुआवज़ा रखा था। औरत सर की चोटी में पत्र छिपा कर चली, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह्य से हातिब की इस हरकत की ख़बर दे दी गयी, चुनांचे आप ने हज़रत अली रज़ि०, हज़रत मिक्दाद रज़ि०, हज़रत जुबैर रज़ि० और हज़रत अबू मरसद ग़नवी रज़ि० को यह कह कर भेजा कि जाओ ख़ाख़ के रौज़े पर पहुंचो। वहां हौदज पर बैठी एक औरत मिलेगी जिस के पास कुरैश के नाम एक पत्र होगा। ये हज़रात घोड़ों पर सवार तेज़ी से रवाना

4) यही सरिय्या है जिसकी मुलाक़ात आमिर बिन अज़्बत से हुई तो आमिर ने इसलामी रिवाज के मुताबिक सलाम किया। लेकिन मुहलिम बिन जुसामा ने किसी पुराने मन-मुटाव (रंजिश) की वजह से उसे क़त्ल कर दिया और उसके ऊँट और सामन पर क़बजा कर लिया। इस पर यह आयत उतरी ولا تقولوا لمن القى اليكم السلام لست مومنا अर्थात "जो तुम से सलाम करे इसे यह न कहो तू मोमिन नहीं" इसके बाद सहाबा (रज़ि०) मुहलिम को रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास ले आए कि आप इसके लिए मग़फ़िरत की दुआ कर दें। लेकिन जब मुहलिम आप के सामने हाज़िर हुआ तो आप (सल्ल०) ने 3 बार फ़रमाया ऐ अल्लाह! मुहलिम को न बख़्श। इसके बाद मुहलिम अपने कपड़े के दामन से अपने आँसू पोंछता हुआ उठा इब्ने इस्हाक़ का ब्यान है कि इसकी क़ौम के लोग कहते हैं कि बाद में इसके लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मग़फ़िरत की दुआ कर दी थी। देखिए ज़ादुल-मआद 2/150 इब्ने हिशाम 2/626-628

हुए। वहां पहुंचे तो औरत मौजूद थी। उस से कहा कि वह नीचे उतरे और पूछा कि क्या तुम्हारे पास कोई पत्र है? उस ने कहा, मेरे पास कोई पत्र नहीं। उन्होंने उस के कजावे की तलाशी ली, लेकिन कुछ न मिला। इस पर हज़रत अली रज़ि० ने उस से कहा, "मैं अल्लाह की क़सम खा कर कहता हूं कि न अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झूठ कहा है न हम झूठ कह रहे हैं, तुम या तो पत्र निकालो या हम तुम्हें नंगा कर देंगे।" जब उस ने यह पक्कापन देखा, तो बोली, अच्छा मुंह फेरो। उन्होंने मुंह फेरा। तो उस ने चोटी खोल कर पत्र निकाला और उन के हवाले कर दिया। ये लोग पत्र ले कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे देखा तो पत्र में लिखा था: (हातिब बिन अबी बलतआ की ओर से कुरैश की ओर) फिर कुरैश को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रवाना होने की ख़बर दी थी।[5] अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हातिब रज़ि० को बुलाकर पूछा कि हातिब रज़ि०! यह क्या है? उन्हों ने कहा: ऐ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे ख़िलाफ़ जल्दी न फ़रमाएं। अल्लाह की क़सम! अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मेरा ईमान है। मैं न तो विमुख हुआ हूं और न मुझ में तब्दीली आयी है। बात सिर्फ़ इतनी है कि मैं ख़ुद कुरैश का आदमी नहीं, अलबत्ता उन में चिपका हुआ था और मेरे घर वाले और बाल बच्चे वहीं हैं लेकिन कुरैश

---

5) सुहैली ने कुछ मग़ाज़ी के हवाले से ख़त का लेख (मज़मून) इस तरह ब्यान किया है। अम्मा बाद! ऐ जमाअते कुरैश! रसूलुल्लाह(सल्ल०) तुम्हारे पास रात जैसा सैले रवाँ (तेज़ बहता हुआ बाढ़ का पानी) की तरह बढ़ता हुआ लशकर ले कर आ रहे हैं और ख़ुदा की क़सम अगर वह अकेले भी तुम्हारे पास आ जाएं तो अल्लाह उनकी मदद करेगा और उनसे अपना वचन(वादा) पूरा करेगा इसलिए तुम लोग अपने बारे में सोच लो। वाक़िदी ने अपनी एक मुर्सल सनद से रिवायत किया है कि हज़रत हातिब ने सुहैल बिन [illegible], सफ़वान बिन उमय्या और इकरमा के पास यह लिखा था कि" रसूलुल्लाह(सल्लम०) ने लोगों में ग़ज़वे का ऐलान कर दिया है और मैं नहीं समझता कि आप का इरादा तुम लोगों के सिवा किसी और का है और मैं चाहता हूं कि तुम लोगों पर मेरा एक एहसान रहे (फ़तहुल-बारी 7/521)

से मेरी कोई क़राबत नहीं कि वे मेरे बाल बच्चों की हिफ़ाज़त करें। इस के ख़िलाफ़ दूसरे लोग जो आप के साथ हैं वहां उन के रिश्तेदार हैं जो उन की हिफ़ाज़त करेंगे। इसलिए जब मुझे यह चीज़ हासिल न थी, तो मुरतद्द मैंने चाहा कि उन पर एक उपकार कर दूं, जिस के बदले वह मेरे रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करें। इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे छोड़िए मैं इस की गरदन मार दूं, क्योंकि इस ने अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साथ के ख़ियानत की है और यह मुनाफ़िक़ हो गया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, देखो! यह बद्र की लड़ाई में हाज़िर हो चुका है और उमर तुम्हें क्या पता? हो सकता है अल्लाह ने बद्र वालों को देख कर कहा हो कि तुम लोग जो चाहो करो, मैंने तुम्हें बख़्श दिया। यह सुन कर हज़रत उमर की आंखें आंसुओं से भीग गयीं और उन्होंने कहाः अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहतर जानते हैं।[6]

इस तरह अल्लाह ने जासूसों को पकड़ लिया और मुसलमानों की जंगी तैयारियों की कोई ख़बर कुरैश तक न पहुंच सकी।

इस्लामी सेना मक्का के रास्ते में

10 रमज़ानुल मुबारक सन् 08 हि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना छोड़ कर मक्का का रुख़ किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दस हज़ार सहाबा किराम रज़ि० थे। मदीना पर अबू रहम ग़िफ़ारी रज़ि० की नियुक्ति हुई।

जोहफ़ा में या इस से कुछ ऊपर आप के चचा हज़रत अब्बास बिन अबदुल मुत्तलिब रज़ि० मिले। वह मुसलमान हो कर अपने बाल-बच्चों

6) बुख़ारी 1/422, 2/612 हज़रत जुबैर और हज़रत मुरसिद के नामों का इज़ाफ़ा बुख़ारी की कुछ दूसरी रिवायात में है।

समेत हिजरत करते हुए तशरीफ़ ला रहे थे। फिर अबवा में आप के चचेरे भाई अबू सुफ़ियान बिन हारिस और फुफेरे भाई अब्दुल्लाह बिन उमैया मिले। आप ने इन दोनों को देख कर मुंह फेर लिया, क्योंकि ये दोनों आप को भारी पीड़ा पहुंचाया करते और आप की बुराई किया करते थे। यह स्थिति देख कर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐसा नहीं होना चाहिए कि आप के चचेरे भाई और फुफेरे भाई ही आप के यहां सब से बड़े भाग्यहीन हों।

उधर हज़रत अ़ली रज़ि० ने अबू सुफ़ियान बिन हारिस को सिखाया कि तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने जाओ और वही कहो जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने उन से कहा था---

تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَکَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخَاطِئِيْنَ

"अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आप को हम पर प्रमुखता दी और निश्चित रूप से हम ही ग़लती पर थे।" (12:91)

क्योंकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह पसंद नहीं करेंगे कि किसी और का जवाब आप से बेहतर रहा हो। चुनांचे अबू सुफ़ियान ने यही किया और जवाब में तुरन्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया---

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

"आज तुम पर कोई चोट नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्श दे और वह तमाम रहम करने वालों में सब से बेहतर रहम करने वाला है।" (12:92)

इस पर अबू सुफ़ियान ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुछ पद्य सुनाए, जिन में से कुछ ये थे---

لعمرک انی حین احمل رایة　لتغلب خیل اللات خیل محمد

لکالمد لج الحیر ان اظلم لیله　فهذا اوانی حین اهدی فا هتدی

هدانی ها د غیر نفسی ودلنی　علی اللّٰه من طردته کل مطرد

"तेरी उम्र की क़सम! जिस वक़्त मैं ने इसलिए झंडा उठाया था कि लात के घुड़सवार मुहम्मद के सवारों पर ग़ालिब आ जाएं तो मेरी स्थिति रात के उस मुसाफ़िर जैसी थी जो बहुत ही अंधेरी रात में हैरान व परेशान हो, लेकिन अब समय आ गया है कि मुझे हिदायत दी जाए और मैं हिदायत पाऊं। मुझे मेरे मन के बजाए एक हादी (हिदायत देने वाला) ने हिदायत दी और अल्लाह का रास्ता उसी आदमी ने बताया जिसे मैंने हर मौक़े पर धुत्कार दिया था।"

यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के सीने पर चोट लगाई और फ़रमाया, "तुम ने मुझे हर मौक़ा पर धुत्कारा था।[7]"

मर्रुज़्ज़हरान में इस्लामी सेना का पड़ाव

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सफ़र जारी रखा। आप और सहाबा रोज़े से थे लेकिन उस्फ़ान और क़ुदैद के बीच कदीद नामी सोते पर पहुंच कर आप ने रोज़ा तोड़ दिया[8] और आप के साथ सहाबा किराम ने भी रोज़ा तोड़ दिया। इस के बाद फिर आप

---

7) बाद में अबू सुफ़ियान के इसलाम में बड़ी ख़ूबी आ गई। कहा जाता है कि जब से उन्होंने इसलाम कुबूल किया शर्म की वजह से रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ मुंह उठा कर न देखा रसूलुल्लाह (सल्ल०) भी उनसे मुहब्बत करते थे और उनके लिए जन्नत का ख़ुशख़बरी देते थे और फ़रमाते थे मुझे उम्मीद है कि यह हमज़ा का बदल साबित होंगे जब इनकी वफ़ात का वक़्त आया तो कहने लगे. मुझ पर न रोना क्योंकि इसलाम लाने के बाद मैंने कभी कोई गुनाह की बात नहीं कही। ज़ादुल-मआद 2/162-163

8) बुख़ारी 2/613

ने सफ़र जारी रखा, यहां तक कि रात के शुरू के वक़्तों में मर्रज़्ज़हरान---वादी फ़ातिमा----पहुंच कर उतर गए। वहां आप के हुक्म से लोगों ने अलग-अलग आग जलाई। इस तरह दस हज़ार (चूल्हों में) आग जलाई गई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को पहरे पर मुक़र्रर फ़रमाया।

अबू सुफ़ियान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में

मर्रज़्ज़हरान में पड़ाव डालने के बाद हज़रत अब्बास रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सफ़ेद ख़च्चर पर सवार हो कर निकले। उन का मक़सद यह था कि कोई लकड़हारा या कोई भी आदमी मिल जाए तो उस से कुरैश के पास ख़बर भेज दें ताकि वह मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दाख़िल होने से पहले आप के पास हाज़िर होकर अमान तलब कर लें।

इधर अल्लाह ने कुरैश पर सारी ख़बरों को रोक दिया था, इसलिए उन्हें हालात की कुछ भी जानकारी न थी, अलबत्ता वे डर और अंदेशों से दो चार थे और अबू सुफ़ियान बाहर जा-जा कर ख़बरों का पता लगाता रहता था। चुनांचे उस वक़्त भी वह और हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा ख़बरों का पता लगाने की ग़रज़ से निकले हुए थे।

हज़रत अब्बास रज़ि० का बयान है कि अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़च्चर पर सवार जा रहा था कि मुझे अबू सुफ़ियान और बुदैल बिन वरक़ा की बात-चीत सुनाई पड़ी। वह आपस में बहस व मुबाहसा कर रहे थे। अबू सुफ़ियान कह रहा था कि अल्लाह की क़सम! मैं ने आज रात जैसी आग और ऐसी फ़ौज तो कभी देखी ही नहीं, और जवाब में बुदैल कह रहा था, ये अल्लाह की क़सम! बनू ख़ुज़ाआ हैं। लड़ाई ने इन्हें छील कर रखा दिया है। इस पर अबू सुफ़ियान कह रहा था, ख़ुज़ाआ इस से कहीं कमतर और ज़लील (नीच) हैं कि यह उन की आग और उन की सेना हो।

हज़रत अब्बास कहते हैं कि मैंने उस की आवाज़ पहचान ली और कहा, अबू हंज़ला! उस ने भी मेरी आवाज़ पहचान ली और बोला, अबुल फ़ज़्ल! मैंने कहा, हां! उस ने कहा, क्या बात है? मेरे मां-बाप तुझ पर कुर्बान। मैंने कहा, यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं लोगों समेत, हाय कुरैश की तबाही! अल्लाह की क़सम!

उस ने कहा, अब क्या हीला (बहाना) है? मेरे मां बाप तुम पर कुर्बान। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर वह तुम्हें पा गए, तो तुम्हारी गरदन मार देंगे। इसलिए इस ख़च्चर पर पीछे बैठ जाओ, मैं तुम्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले चलता हूं और तुम्हारे लिए अमान तलब किए देता हूं। इस के बाद अबू सुफ़ियान मेरे पीछे बैठ गया और उस के दोनों साथी वापस चले गए।

हज़रत अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं अबू सुफ़ियान को ले कर चला। जब किसी अलाव के पास से गुज़रता तो लोग कहते, कौन है? मगर जब देखते कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़च्चर है और मैं उस पर सवार हूं तो कहते कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हैं और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ख़च्चर पर हैं, यहां तक कि मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के अलाव के पास से गुज़रा। उन्होंने कहा, कौन है? और उठ कर मेरी ओर आए। जब पीछे अबू सुफ़ियान को देखा तो कहने लगे, अबू सुफ़ियान! अल्लाह का दुश्मन? अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि उस ने बिना किसी शर्त के तुझे (हमारे) क़ाबू में कर दिया। इस के बाद वह निकल कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर दौड़े और मैं ने भी ख़च्चर को ऐड़ लगाई। मैं आगे बढ़ गया और ख़च्चर से कूद कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जा घुसा। इतने में उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी घुस आए और बोले कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह अबू सुफ़ियान है।

मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इसकी गरदन मार दूं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं ने इसे पनाह दे दी है। फिर मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठ कर आप का सर पकड़ लिया और कहा, अल्लाह की क़सम! आज रात मेरे सिवा कोई और आप से काना-फूंसी न करेगा। जब अबू सुफ़ियान के बारे में हज़रत उमर ने बार-बार कहा, तो मैंने कहा, उमर! ठहर जाओ! अल्लाह की क़सम! अगर यह बनी अ़दी बिन कअ़ब का आदमी होता, तो तुम ऐसी बात न कहते। उमर रज़ि० ने कहा, अब्बास! ठहर जाओ। अल्लाह की क़सम, तुम्हारा इस्लाम लाना मेरे नज़दीक ख़त्ताब के इस्लाम लाने से---------अगर वह इस्लाम लाते-------ज़्यादा पसंदीदा है और इस की वजह मेरे लिए सिर्फ़ यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नज़दीक तुम्हारा इस्लाम लाना ख़त्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा पसंदीदा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अब्बास! इसे (यानी अबू सुफ़ियान को) अपने डेरे में ले जाओ, सुबह मेरे पास ले आना। इस हुक्म के मुताबिक़ मैं उसे डेरे में ले गया और सुबह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में लाया। आप ने उसे देख कर फ़रमाया, अबू सुफ़ियान! तुम पर अफ़सोस! क्या अब भी तुम्हारे लिए वक़्त नहीं आया कि तुम यह जान सको कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं? अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां बाप आप पर फ़िदा! आप कितने नर्म-दिल, कितने करम करने वाले और कितने अपने को चाहने वाले हैं। मैं अच्छी तरह समझ चुका हूं कि अगर अल्लाह के साथ कोई और भी इलाह होता तो अब तक मेरे कुछ काम आया होता।

आप ने फ़रमाया, अबू सुफ़ियान! तुम पर अफ़सोस! क्या तुम्हारे लिए अब भी वक़्त नहीं आया कि तुम यह जान सको कि मैं अल्लाह

का रसूल हूं। अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां बाप आप पर फ़िदा, आप कितने सहनशील, कितने दयावान और कितने रिश्तों के जोड़ने वाले हैं। इस बात के बारे में तो अब भी दिल में कुछ न कुछ खटक है। इस पर हज़रत अब्बास ने कहा, अरे! गरदन मारे जाने की नौबत आने से पहले-पहले इस्लाम अपना लो और यह मान लो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इस पर अबू सुफ़ियान ने इस्लाम अपना लिया और सत्य की गवाही दी।

हज़रत अब्बास (रज़ि०) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अबू सुफ़ियान एज़ाज़ (सम्मान) पसंद है, इसलिए इसे कोई एज़ाज दे दीजिए। आप ने फ़रमाया, ठीक है। जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए, उसे अमान (सुरक्षा) है और जो अपना दरवाज़ा अंदर से बंद कर ले उसे अमान है और जो मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए उसे आमान है।

इस्लामी सेना मर्रज़्ज़हरान से मक्का की ओर

उसी सुबह——मंगल 17 रमज़ान सन् 08 हि० की सुबह——अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्रज़्ज़हरान से मक्का रवाना हुए और हज़रत अब्बास रज़ि० को हुक्म दिया कि अबू सुफ़ियान को घाटी की तंग जगह पर पहाड़ के नाके के पास रोक रखें, ताकि वहां से गुज़रने वाली खुदाई फ़ौजों को अबू सुफ़ियान देख सके। हज़रत अब्बास रज़ि० ने ऐसा ही किया। इधर क़बीले अपने-अपने फुरेरे लिए गुज़र रहे थे, जब वहां से कोई क़बीला गुज़रता, तो अबू सुफ़ियान पूछता कि अब्बास! ये कौन लोग हैं। जवाब में हज़रत अब्बास----मिसाल के तौर पर---- कहते कि बनू सुलैम हैं, तो अबू सुफ़ियान कहता कि मुझे सुलैम से क्या लेना-देना? फिर कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान पूछता कि ऐ अब्बास! ये कौन लोग हैं? वे कहते मुज़ैना हैं। अबू सुफ़ियान कहता,

मुझे मुज़ैना से क्या मतलब? यहां तक कि सारे क़बीला एक-एक कर के गुज़र गए। जब भी कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान हज़रत अ़ब्बास रज़ि० से उस के बारे में ज़रूर मालूम करता और जब वे उसे बताते तो वह कहता कि मुझे बनी फ़्लां से क्या वास्ता? यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हरी टुकड़ी के बीच में तशरीफ़ लाए। आप मुहाजिरों और अंसार के बीच में थे। यहां इंसानों के बजाए सिर्फ़ लोहे की बाढ़ दिखाई पड़ रही थी। अबू सुफ़ियान ने कहा, सुबहानल्लाह! ऐ अ़ब्बास! ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा, यह अंसार और मुहाजिरों के दर्मियान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते हैं। अबू सुफ़ियान ने कहा, भला इन से मोर्चा लेने की ताक़त किसे है? इस के बाद उसने आगे कहा, अबुल फ़ज़्ल! तुम्हारे भतीजे की बादशाहत तो अल्लाह की क़सम! बड़ी ज़बरदस्त हो गयी। हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने कहा: अबू सुफ़ियान! यह नुबुवत है। अबू सुफ़ियान ने कहा, हां! अब तो यही कहा जाएगा।

इस मौक़े पर एक घटना और घटित हुई। अंसार का फुरेरा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के पास था। वह अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो बोले!---اليوم يوم الملحمة اليوم تستحل الحرمة---

"आज ख़ून बहाने और मार-धाड़ का दिन है। आज हुर्मत (हराम होना) हलाल कर ली जाएगी"

आज अल्लाह ने क़ुरैश की ज़िल्लत उसके भाग्य में तय कर दी है। इसके बाद जब वहां से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुज़रे तो अबू सुफ़ियान ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप ने वह बात नहीं सुनी जो साद रज़ि० ने कही है? आप ने फ़रमाया, साद ने क्या कहा है? अबू सुफ़ियान ने कहा, यह और यह बात कही है। यह सुन कर हज़रत उस्मान रज़ि० और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हमें ख़तरा है कि कहीं साद रज़ि० कुरैश के अंदर मार-धाड़ न मचा दें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि आज का दिन वह दिन है जिस में कअ़बा का आदर किया जाएगा। आज का दिन वह दिन है जिस में अल्लाह कुरैश को इज़्ज़त बख़्शेगा।" इस के बाद आप ने हज़रत साद रज़ि० के पास आदमी भेज कर झंडा उन से ले लिया और उन के सुपुत्र क़ैस रज़ि० के हवाले कर दिया। मानो झंडा हज़रत साद रज़ि० के हाथ में नहीं निकला------और कहा जाता है कि आप ने झंडा हज़रत जुबैर रज़ि० के हवाले कर दिया था।

इस्लामी सेना अचानक कुरैश के सर पर

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू सुफ़ियान के पास से गुज़र चुके तो हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने उससे कहा, अब दौड़ कर अपनी क़ौम के पास जाओ। अबू सुफ़ियान तेज़ी से मक्का पहुंचा और बड़ी ही ऊंची आवाज़ से पुकारा, "कुरैश के लोगो! यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। तुम्हारे पास इतनी सेना ले कर आए हैं कि मुक़ाबले की ताक़त नहीं, इसलिए जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए, उसे अमान है।" यह सुन कर उसकी बीवी हिन्द बिन्ते उत्बा उठी और उसकी मोंछ पकड़ कर बोली, मार डालो इस मश्क की तरह चरबी से भरे हुए पतली पिंडुलियों वाले को। बुरा हो ऐसी ख़ुशख़बरी देने वाले ख़बर पहुंचाने वाले का।

अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम्हारी बर्बादी हो, देखो तुम्हारी जानों के बारे में यह औ़रत तुम्हें धोखे में न डाल दे, क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसी सेना ले कर आए हैं जिस से मुक़ाबले की ताब नहीं, इसलिए जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए, उसे अमान है। लोगों ने कहा, अल्लाह तुझे मारे, तेरा घर हमारे कितने आदमियों के काम आ सकता है? अबू सुफ़ियान ने कहा, और जो अपना दरवाज़ा

अंदर से बंद कर ले उसे भी अमान है और जो मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए उसे भी अमान है। यह सुन कर लोग अपने-अपने घरों और मस्जिदे हराम की ओर भागे, अलबत्ता अपने कुछ गुंडों को लगा दिया और कहा कि इन्हें हम आगे किए देते हैं, अगर क़ुरैश को कुछ कामियाबी हुई तो हम उनके साथ ही रहेंगे और अगर उन पर चोट लगी तो हम से जो कुछ मांग की जाएगी मंज़ूर कर लेंगे। क़ुरैश के ये मूर्ख औबाश मुसलमानों से लड़ने के लिए इक्रिमा बिन अबी जहल, सफ़वान बिन उमैया और सुहैल बिन अम्र की कमान में ख़न्दमा के अदंर जमा हुए। उन में बनू बक्र का एक आदमी हमास बिन क़ैस भी था जो इस से पहले हथियार ठीक-ठाक करता रहता था, जिस पर उस की बीवी ने (एक दिन) कहा, यह काहे की तैयारी है जो मैं देख रही हूं? उस ने कहा, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उस के साथियों से मुक़ाबले की तैयारी है। इस पर बीवी ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उसके साथियों से मुक़ाबले में कोई चीज़ ठहर नहीं सकती। उस ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मुझे उम्मीद है कि मैं उनके कुछ साथियों को तुम्हारा नौकर बनाऊंगा।" इसके बाद कहने लगा------

ان يقبلوا اليوم فمالى علة هذا سلاح كامل و ألة

و ذوغرارين سريع السلة

"अगर वे आज आमने-सामने आ गए तो मेरे लिए कोई विवशता न होगी। यह पूरा हथियार लंबे फल वाला नेज़ा और झट सौंती जाने वाली दोधारी तलवार है।"

ख़न्दमा की लड़ाई में यह आदमी भी आया हुआ था।

इस्लामी सेना ज़ी-तुवा में

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्रज़्ज़हरान से रवाना हो कर ज़ी तुवा पहुंचे--------इसी बीच अल्लाह के दिए हुए

विजय-पद पर अति विनम्रता से आप ने अपना सर झुका रखा था, यहां तक कि दाढ़ी के बाल कजावे की लकड़ी से जा लग रहे थे।——ज़ी तुवा में आप ने सेना को व्यवस्थित किया, अंग-प्रत्यंग बनाए। ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को दाहिने पहलू पर रखा——उसमें असलम, सुलैम, ग़िफ़ार, मुज़ैना, जुहैना और अरब के कुछ दूसरे क़बीले थे———और ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को हुक्म दिया कि वह मक्का में निचले हिस्से से दाख़िल हों और अगर कुरैश में से कोई आड़े आए तो उसे काट कर रख दें, यहां तक कि सफ़ा पर आप से आ मिलें।

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम बाएं पहलू पर थे। उन के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फुरेरा था। आप ने उन्हें हुक्म दिया कि मक्का में ऊपर के हिस्से यानी कदा से दाख़िल हों और जुहून में आप का झंडा गाड़ कर आप के आने तक वहीं ठहरे रहें।

हज़रत अबू उबैदा प्यादे पर नियुक्त थे। आप ने उन्हें हुक्म दिया कि बत्ने वादी का रास्ता पकड़ें यहां तक कि मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे उतरें।

मक्का में इस्लामी सेना का प्रवेश

इन हिदायतों के बाद तमाम टुकड़ियां अपने-अपने निश्चित रास्तों पर चल पड़ीं।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० और उनके साथियों के रास्ते में जो मुश्रिक भी आया, उसे सुला दिया गया, अलबत्ता उनके साथियों में से भी कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी रज़ि० और ख़ुनैस बिन ख़ालिद बिन रबीआ शहीद हो गये। वजह यह हुई कि ये दोनों सेना से बिछड़ कर एक दूसरे रास्ते पर चल पड़े और उस बीच उन्हें क़त्ल कर दिया गया। ख़न्दमा पहुंच कर हज़रत ख़ालिद और उन के साथियों का टकराव कुरैश के झगड़ालुओं से हुआ मामूली सी झड़प में बारह मुश्रिक मारे गए और इसके बाद

फ़त्हे मक्का
का नक़्शा
منیٰ، عرفات اور طائف کا راستہ
جنت المعلیٰ
شمال
مشرق
مغرب
جنوب
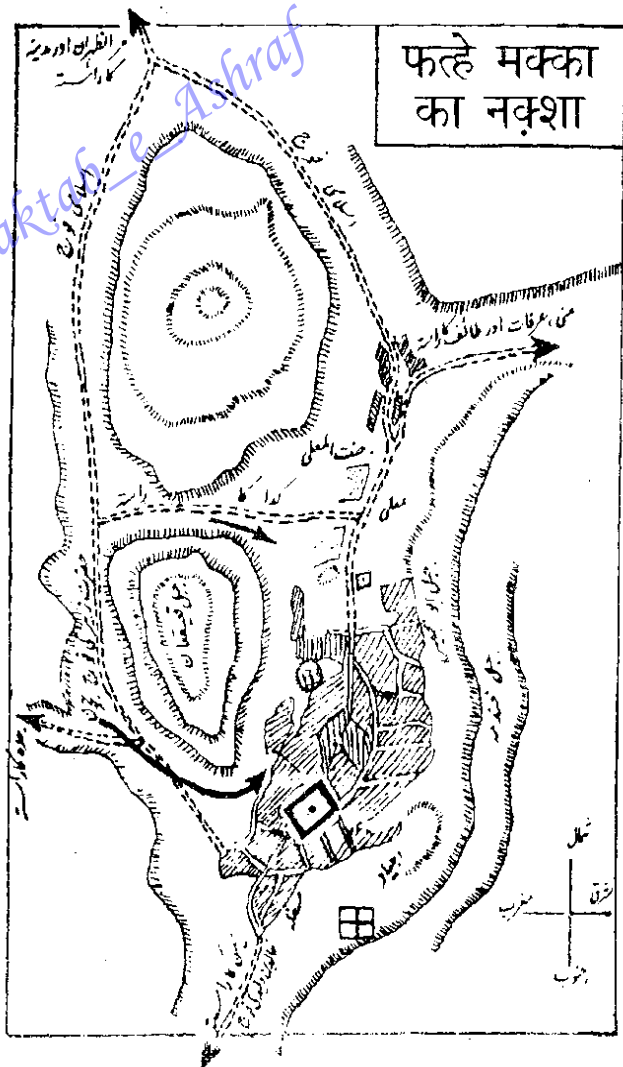
मुश्रिकों में भगदड़ मच गयी। हमास बिन कैस जो मुसलमानों से लड़ने के लिए हथियार ठीक-ठाक करता रहता था भाग कर अपने घर में जा घुसा और अपनी बीवी से बोलाः दरवाज़ा बंद कर लो। उसने कहाः वह कहां गया जो तुम कहा करते थे? कहने लगा--------

انک لو شهدت یوم الخندمه　　اذ فر صفوان وفر عکرمة

واستقبلتنابا لسیوف المسلمة　　یقطعن کل ساعد وجمجمه

ضربا فلا یسمع الا غمغمه　　لهم نهیت خلفنا وهمهمه

"अगर तुम ने ख़न्दमा की लड़ाई का हाल देखा होता जबकि सफ़वान और इक्रिमा भाग खड़े हुए और सौंती हुई तलवारों से हमारा स्वागत किया गया, जो कलाइयां और खोपड़ियां इस तरह काटती जा रही थीं कि पीछे सिवाए उन के शोर व हंगामा और हम-हमा के कुछ सुनाई नहीं पड़ता था, तो तुम निन्दा की मामूली बात न कहतीं।"

इस के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि० मक्का के गली-कूचों को रौंदते हुए सफ़ा पर्वत पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जा मिले।

इधर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने आगे बढ़ कर जुहून में मस्जिदे फ़त्ह के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का झंडा गाड़ा और आप के लिए एक कुब्बा (गोल झोंपड़ी) बनाया, फिर वहीं ठहरे रहे, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए।

मस्जिदे हराम में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दाख़िला और उसे बुतों से पाक करना

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठे और आगे-पीछे और आस-पास के मौजूद सहाबा (अंसार और मुहाजिरीन)

के साथ मस्जिदे हराम में तशरीफ़ लाए। आगे बढ़ कर हज्रे अस्वद को चूमा और उस के बाद बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। उस वक़्त आप के हाथ में एक कमान थी और बैतुल्लाह के चारों ओर और उस की छत पर तीन सौ साठ बुत थे। आप उसी कमान से उन बुतों को ठोकर मारते जाते थे और कहते जाते थे———

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝

"हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया। बातिल तो मिटने वाली चीज़ है ही।" (17:18)

جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝

"हक़ आ गया और बातिल की चलत-फिरत ख़त्म हो गयी।" (34:49)

और आप की ठोकर से बुत चेहरों के बल गिरते जाते थे।

आप ने तवाफ़ अपनी ऊंटनी पर बैठ कर फ़रमाया था और एहराम की हालत में न होने की वजह से सिर्फ़ तवाफ़ ही को काफ़ी समझा। तवाफ़ पूरा करने के बाद हज़रत उस्मान बिन तलहा रज़ि० को बुला कर उनसे काबा की कुंजी ली, फिर आप के हुक्म से ख़ाना-ए-काबा को खोला गया। अंदर दाख़िल हुए तो तस्वीरें नज़र आईं, जिनमें हज़रत इब्राहीम अलैहि० और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तस्वीरें भी थीं। और उनके हाथ में फ़ाल-गीरी के तीर थे। आपने यह मंज़र देख कर फ़रमाया, "अल्लाह इन मुश्रिकों को हलाक करे। अल्लाह की क़सम! इन दोनों पैग़म्बरों ने कभी भी फ़ाल (शकुन) के तीर इस्तेमाल नहीं किए।" आपने ख़ाना-ए-काबा के अंदर लकड़ी की बनी हुई एक कबूतरी भी देखी। उसे अपने मुबारक हाथों से तोड़ दिया और तस्वीरें आप के हुक्म से मिटा दी गईं।

ख़ाना-ए-काबा में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ और कुरैश से ख़िताब

इस के बाद आप ने अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया। हज़रत उसामा रज़ि० और बिलाल रज़ि० भी अंदर ही थे। फिर दरवाज़े के सामने की दीवार का रुख़ किया। जब दीवार सिर्फ़ तीन हाथ की दूरी पर रह गयी, तो वहीं ठहर गए। दो खम्भे आप के बाईं ओर थे, एक खम्भा दाहिनी ओर और तीन खम्भे पीछे------उन दिनों ख़ाना-ए-काबा में छः खम्भे थे----फिर वहीं आप ने नमाज़ पढ़ी। इसके बाद बैतुल्लाह के अंदरूनी हिस्से का चक्कर लगाया। तमाम कोनों में तक्बीर व तौहीद के कलिमे कहे, फिर दरवाज़ा खोल दिया। कुरैश (सामने) मस्जिदे हराम में लाइनें लगाए खचाखच भरे थे। उन्हें इन्तिज़ार था कि आप क्या करते हैं! आप ने दरवाज़े के दोनों बाज़ू पकड़ लिए, कुरैश नीचे थे उन्हें यूं मुख़ातब फ़रमाया------

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं। उसने अपना वायदा सच कर दिखाया, अपने बंदे की मदद की और अकेले सारे जत्थों को हराया। सुनो! बैतुल्लाह की कुंजी संभालने और हाजियों को पानी पिलाने के अलावा सारी पद-प्रतिष्ठा या कमाल, या ख़ून मेरे इन दोनों क़दमों के नीचे है। याद रखो क़त्ले ख़ता शिब्हे अ़मद में——जो कोड़े और डंडे से हो——मुग़ल्लज़ दियत है, यानी सौ ऊंट जिनमें से चालीस ऊंटनियों के पेट में उनके बच्चे हों।"

ऐ कुरैश के लोगो! अल्लाह ने तुम से जाहिलियत का गर्व और बाप-दादा पर घमंड का ख़ात्मा कर दिया सारे लोग आदम अलैहि० से हैं और आदम अलैहि० मिट्टी से। इसके बाद यह आयत तिलावत की--

يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَّ أُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَائِلَ لِتَعَارَفُوْا إِنَّ

أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

"ऐ लोगो! हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें कौमों और कबीलों में बांटा, ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। तुम में अल्लाह के नज़दीक सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वही है जो सब से ज़्यादा तक़्वा वाला हो। बेशक अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।" (49:13)

आज कोई पकड़ नहीं

इस के बाद आप ने फ़रमया, "कुरैश के लोगो तुम्हारा क्या ख़्याल है? मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करने वाला हूं।" उन्होंने कहा, "अच्छा--- आप करीम भाई हैं और करीम भाई के लड़के हैं।" आप ने फ़रमाया, तो मैं तुम से वही बात कह रहा हूं जो हज़रत यूसुफ़ अलैहि० ने अपने भाइयों से कही थी कि لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ (आज तुम से कोई पूछताछ नहीं) जाओ तुम सब आज़ाद हो।"

कअ़बे की कुंजी

इस के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद हराम में बैठ गए। हज़रत अली रज़ि० ने-----जिनके हाथ में काबे की कुंजी थी----ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, "हुज़ूर! हमारे लिए हाजियों को पानी पिलाने के सम्मान के साथ ख़ाना-ए-काबा की कुंजी का भार उठाने का सम्मान भी जमा फ़रमा दीजिए। अल्लाह आप पर रहमत नाज़िल करे।" एक और रिवायत के मुताबिक यह गुज़ारिश हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने की थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस्मान बिन तलहा कहां हैं? उन्हें बुलाया गया। आप ने फ़रमाया, "उस्मान! यह लो अपनी कुंजी! आज का दिन नेकी और वफ़ादारी का दिन है।"तबक़ात इब्ने साद की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुंजी देते हुए फ़रमाया, "इसे हमेशा-हमेशा के लिए लो। तुम लोगों से इसे वही छीनेगा जो ज़ालिम होगा।

ऐ उस्मान! अल्लाह ने तुम लोगों को अपने घर का अमीन बनाया है, इसलिए इस बैतुल्लाह से तुम्हें जो कुछ मिले, उस से भले तरीके से खाना।''

कअबे की छत पर अज़ाने बिलाली

अब नमाज़ का वक़्त हो चुका था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि काबे पर चढ़ कर अज़ान कहें। उस वक़्त अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, अत्ताब बिन असीद और हारिस बिन हिशाम काबा के सेहन में बैठे थे। अत्ताब ने कहा, अल्लाह ने असीद पर यह करम किया कि उन्होंने यह (अज़ान) न सुनी, वरना उसे एक नागवार चीज़ सुननी पड़ती। इस पर हारिस ने कहा, सुनो, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे मालूम हो जाए कि वह हक़ पर हैं तो मैं उनकी पैरवी करने वाला बन जाऊंगा। इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा, देखो! अल्लाह की क़सम! मैं कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि अगर मैं कुछ बोलूंगा तो ये कंकड़ियां भी मेरे बारे में ख़बर दे देंगी। इस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, अभी तुम लोगों ने जो बातें की हैं, वे मुझे मालूम हो चुकी हैं, फिर आप ने उन की बातें दोहरा दीं। इस पर हारिस और अत्ताब बोल उठे, हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह की क़सम! कोई आदमी हमारे साथ था ही नहीं कि हमारी इन बातों को जानता और हम कहते कि उसने आपको ख़बर दी होगी।

जीत या शुक्राने की नमाज़

उसी दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मे हानी बिन्ते अबू तालिब के घर तशरीफ़ ले गए। वहां स्नान किया और उनके घर में ही आठ रक्अत नमाज़ पढ़ी। यह चाश्त का वक़्त था, इस लिए किसी ने उसको चाश्त की नमाज़ समझा और किसी ने फ़त्ह (विजय) की नमाज़। उम्मे हानी रज़ि० ने अपने दो देवरों को पनाह दे रखी थी।

आप ने फ़रमाया, ऐ उम्मे हानी! जिसे तुम ने पनाह दी उसे हम ने भी पनाह दी। इस इर्शाद की वजह यह थी कि उम्मे हानी के भाई हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० इन दोनों को क़त्ल करना चाहते थे, इसलिए उम्मे हानी रज़ि० ने इन दोनों को छिपा कर घर का दरवाज़ा बंद कर रखा था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गए तो इनके बारे में सवाल किया और ऊपर का जवाब दिया गया।

बड़े मुजरिमों का ख़ून बेकार क़रार दिया गया

मक्का विजय के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़े अपराधियों में से नौ आदमियों का ख़ून बेकार बताते हुए हुक्म दिया कि अगर वे काबे के परदे के नीचे भी पाए जाएं तो उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। उनके नाम ये हैं------

1. अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल, 2. अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी सर्ह, 3. इक्रिमा बिन अबी जहल 4. हारिस बिन नुफ़ैल बिन वहब, 5. मुक़ीस बिन सबाबा, 6. हब्बार बिन अस्वद 7,8. इब्ने ख़तल की दो लौंडियां, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बुराई गाया करती थीं, 9. सारा, जो मुत्तलिब की औलाद में से किसी की लौंडी थी, उसी के पास हातिब रज़ि० का ख़त पाया गया था।

इब्ने अबी सर्ह का मामला यह हुआ कि उसे हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में ले जा कर जान-बख़्शी की सिफ़ारिश कर दी और आप ने उस की जान-बख़्शी फ़रमाते हुए उसका इस्लाम स्वीकार कर लिया, लेकिन इस से पहले आप कुछ देर तक इस उम्मीद में चुप रहे कि कोई सहाबी उठकर उसे क़त्ल कर देंगे, क्योंकि यह आदमी इस से पहले भी एक बार इस्लाम अपना चुका था और हिजरत कर के मदीना आया था, लेकिन फिर इस्लाम से

पलट कर भाग गया था। (फिर भी इसके बाद का चरित्र उनके अच्छे इस्लाम का पता देता है रज़ियल्लाहु अन्हु)

इक्रिमा बिन अबू जहल ने भाग कर यमन का रास्ता लिया, लेकिन उसकी बीवी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उसके लिए अमान की तलबगार हुई और आप ने अमान दे दी। इसके बाद इक्रिमा के पीछे-पीछे गयी और उसे साथ ले आई। उसने वापस आ कर इस्लाम कुबूल कर लिया और उस के इस्लाम की स्थिति बहुत अच्छी रही।

इब्ने ख़तल ख़ाना-ए-काबा का परदा पकड़ कर लटका हुआ था। एक सहाबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर ख़बर दी। आप ने फ़रमाया इसे क़त्ल कर दो, उन्होंने इसे क़त्ल कर दिया।

मुक़ीस बिन सबाबा को हज़रत नुमैला बिन अब्दुल्लाह ने क़त्ल किया। मुक़ीस भी पहले मुसलमान हो चुका था, लेकिन फिर एक अंसारी को क़त्ल कर के इस्लाम से फिर गया, और भाग कर मुश्रिकों के पास चला गया था।

हारिस मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत पीड़ा पहुंचाया करता था। उसे हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया।

हब्बार बिन अस्वद वही आदमी है जिस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुपुत्री हज़रत ज़ैनब रज़ि० को उन की हिजरत के मौक़े पर ऐसा कचोका मारा था कि वह हौदज से एक चट्टान पर जा गिरी थीं और इस की वजह से उन का गर्भ गिर गया था। यह आदमी मक्का विजय के दिन निकल भागा, फिर मुसलमान हो गया और उस के इस्लाम की स्थिति अच्छी रही।

इब्ने ख़तल की दोनों लौंडियों में से एक क़त्ल की गई, दूसरी के लिए अमान तलब की गई और उसने इस्लाम अपना लिया। इसी तरह

सारा के लिए अमान तलब की गई और वह भी मुसलमान हो गई (खुलासा यह कि नौ में से चार क़त्ल किए गए, पांच की जान-बख़्शी हुई और उन्होंने इस्लाम अपना लिया।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं, जिन लोगों का ख़ून बेकार बताया गया, उनके ताल्लुक़ से अबू मअ़शर ने हारिस बिन तलाल ख़ुज़ाई का भी ज़िक्र किया है। इसे हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया। इमाम हाकिम ने इसी सूची में काब बिन ज़ुहैर का ज़िक्र किया है——काब की घटना मशहूर है, उसने बाद में आ कर इस्लाम क़ुबूल किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा की। (इसी सूची में) वहशी बिन हर्ब और अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्ते उत्बा रज़ि० हैं जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया और इब्ने ख़तल की लौंडी अरनब है जो क़त्ल की गई और उम्मे साद हैं, यह भी क़त्ल की गई, जैसा कि इब्ने इस्हाक़ ने ज़िक्र किया है इस तरह मर्दों की तायदाद आठ और औरतों की तायदाद छः हो जाती है। हो सकता है कि दोनों लौंडियां अरनब और उम्मे साद हों और मतभेद सिर्फ़ नाम का हो या उपनाम और उपाधि की दृष्टि से मतभेद हो गया हो।[9]

सफ़वान बिन उमैया और फ़ुज़ाला बिन उमैर का इस्लाम क़ुबूल करना

सफ़वान का ख़ून यद्यिप बेकार नहीं क़रार दिया गया था, लेकिन क़ुरैश का एक बड़ा नेता होने की हैसियत से उसे अपनी जान का ख़तरा था, इसी लिए वह भी भाग गया। उमैर बिन वह्ब जुमही ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आ कर उसके लिए अमान तलब की। आप ने अमान दे दी और निशानी के तौर पर उमैर को वह पगड़ी भी दे दी जो मक्का में दाख़िले के वक़्त आप ने अपने

9) फ़तहुल-बारी 8/11-12

सर पर बांध रखी थी। उमैर रज़ि० सफ़वान के पास पहुंचे तो वह जद्दा से यमन जाने के लिए नाव पर सवार होने की तैयारी कर रहा था। उमैर रज़ि० उसे वापस ले आए। उस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, मुझे दो महीने की मोहलत दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हें चार महीने की मोहलत है। इस के बाद सफ़वान ने इस्लाम कुबूल कर लिया। उसकी बीवी पहले ही मुसलमान हो चुकी थी। आप ने दोनों को पहले ही निकाह पर बाक़ी रखा।

फ़ुज़ाला एक सख़्त आदमी था जिस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तवाफ़ कर रहे थे वह क़त्ल के इरादे से आपके पास आया लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बता दिया कि उसके दिल में क्या है इस पर वह मुसलमान हो गया।

विजय के दूसरे दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ुत्बा

विजय के दूसरे दिन ख़ुत्बा देने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के बीच फिर खड़े हुए। आप ने अल्लाह की प्रशंसा की, गुणगान किया और उसकी शान के मुताबिक़ उस की बड़ाई बयान की, फिर फ़रमाया, "लोगो"! अल्लाह ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया, उसी दिन मक्का को हराम (आदर्शीय शहर) ठहराया। इसलिए वह अल्लाह की हुर्मत की वजह से क़ियामत तक के लिए हराम है। कोई आदमी जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है, उसके लिए हलाल नहीं कि उसमें ख़ून बहाए या यहां का कोई पेड़ काटे। अगर कोई आदमी इस वजह से छूट अपनाए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां लड़ाई लड़ी तो उससे कह दो कि अल्लाह ने अपने रसूल को इजाज़त दी थी, लेकिन तुम्हें इजाज़त नहीं दी है और मेरे लिए भी उसे सिर्फ़ दिन की एक घड़ी

में हलाल किया गया, फिर आज उसकी हुर्मत उसी तरह पलट आयी, जिस तरह कल उसकी हुर्मत थी। अब चाहिए कि जो हाज़िर है वह गायब को यह बात पहुंचा दे।''

एक रिवायत में इतना और बढ़ा हुआ है कि यहां का कांटा न काटा जाए, शिकार न भगाया जाए, और गिरी-पड़ी चीज़ न उठायी जाए, अलबत्ता वह आदमी उठा सकता है, जो इस का परिचय कराए और यहां की घास न उखाड़ी जाए। हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मगर इज़ख़िर (अरब की मशहूर घास जो मूज जैसी होती है और चाय और दवा के तौर पर इस्तेमाल होती है) क्योंकि यह लोहार और घर की ज़रूरत की चीज़ है। आप ने फ़रमाया, मगर इज़ख़िर!

बनू ख़ुज़ाआ ने उस दिन बनू लैस के एक आदमी को क़त्ल कर दिया था, क्योंकि बनू लैस के हाथों उनका एक आदमी जाहिलियत में मारा गया था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बारे में फ़रमाया, ख़ुज़ाआ के लोगो! अपना हाथ क़त्ल से रोक लो, क्योंकि क़त्ल अगर नफ़ा देने वाला होता, तो बहुत क़त्ल हो चुका। तुम ने एक ऐसा आदमी क़त्ल किया है कि मैं उसकी दियत ज़रूरी तौर पर अदा करूंगा, फिर मेरी इस जगह के बाद अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो मक़्तूल के वलियों को दो बातों का इख़्तियार होगा, चाहें तो क़ातिल का ख़ून बहाएं और चाहें तो उससे दियत लें।

एक रिवायत में है कि इसके बाद यमन के एक आदमी ने जिस का नाम अबू शाह था उठ कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! (इसे) मेरे लिए लिखवा दीजिए। आप ने फ़रमाया, अबू शाह के लिए लिख दो।[10]

---

10) इन रिवायात के लिए देखिए बुख़ारी 1/22,216,247,328,329,2/615,617, मुस्लिम 1/437-439 इब्ने हिशाम 2/415-416, अबू दाऊद 1/276

अंसार के अंदेशे

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की जीत पूरी कर चुके——और मालूम है कि यही आप का शहर, आप की जन्म-स्थली और वतन था——तो अंसार ने आपस में कहा, क्या ख़्याल है अब अल्लाह ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आप की अपनी भू-भाग और आप का शहर जिता दिया है, तो आप यहीं ठहरेंगे? उस वक़्त आप सफ़ा पर हाथ उठाए दुआ फ़रमा रहे थे। दुआ से फ़ारिग़ हुए तो मालूम किया, तुम लोगों ने क्या बात की है? उन्होंने कहा, कुछ नहीं ऐ अल्लाह के रसूल! मगर आप ने आग्रह किया तो आख़िर में इन लोगों ने बतला दिया। आप ने फ़रमाया, अल्लाह की पनाह! अब ज़िंदगी और मौत तुम्हारे साथ है।

बैअ़त

जब अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को मक्का की जीत दिला दी तो मक्का वालों पर सत्य स्पष्ट हो गया और वे जान गए कि इस्लाम के सिवा सफलता का कोई रास्ता नहीं, इसलिए वे इस्लाम के ताबेदार बनते हुए बैअ़त के लिए जमा हो गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़ा पर बैठ कर लोगों से बैअ़त लेनी शुरू की। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० आप से नीचे थे और लोगों से वचन ले रहे थे। लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअ़त की कि जहां तक हो सकेगा आप की बात सुनेंगे और मानेंगे।

इस मौके पर तफ़्सीरे मदारिक में यह रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्दों की बैअ़त से फ़ारिग़ हो चुके तो वहीं सफ़ा ही पर औरतों से बैअ़त लेनी शुरू की। हज़रत उमर रज़ि० आप से नीचे बैठे थे और आप के हुक्म पर औरतों से बैअ़त ले रहे थे और उन्हें आप की बातें पहुंचा रहे थे। इसी बीच अबू सुफ़ियान की

बीवी हिंद बिन्त उत्बा भेस बदल कर आई। असल में हज़रत हमज़ा रज़ि० की लाश के साथ उस ने जो हरकत की थी, उसकी वजह से वह बहुत डरी हुई थी कि कहीं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे पहचान न लें। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (बैअ़त शुरू की) तो फ़रमाया, मैं तुमसे इस बात पर बैअ़त लेता हूं कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करोगी। हज़रत उमर रज़ि० ने (यही बात दोहराते हुए) औरतों से इस बात पर बैअ़त की कि वे अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और चोरी न करोगी। इस पर हिन्द बोल उठी, अबू सुफ़ियान कंजूस आदमी है। अगर मैं उसके माल में से कुछ ले लूं तो ? अबू सुफियान ने (जो वहीं मौजूद थे) कहा, तुम जो कुछ ले लो वह तुम्हारे लिए हलाल है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कुराने लगे, आपने हिन्द को पहचान लिया, फ़रमाया अच्छा---तो तुम हो हिन्द! वह बोली हां, ऐ अल्लाह के नबी! जो कुछ गुज़र चुका है उसे माफ़ फ़रमा दीजिए। अल्लाह आप को माफ़ फ़रमाए।

इस के बाद आप ने फ़रमाया, और ज़िना न करोगी। इस पर हिन्द ने कहा, भला कहीं हुर्रा (आज़ाद औरत) भी ज़िना करती है! फिर आप ने फ़रमाया, और अपनी औलाद को क़त्ल न करोगी। हिन्द ने कहा, हम ने तो बचपन में इन्हें पाला पोसा, लेकिन बड़े होने पर आप लोगों ने उन्हें क़त्ल कर दिया, इसलिए आप और वह ही बेहतर जानें। याद रहे कि हिन्द का बेटा हनज़ला बिन अबू सुफ़ियान बद्र के दिन क़त्ल किया गया था। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० हंसते-हंसते चित लेट गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुस्कुराए।

इसके बाद आप ने फ़रमाया, और कोई बोहतान न गढ़ोगी। हिन्द ने कहा, अल्लाह की क़सम! बोहतान बड़ी बुरी बात है और आप हमें

वाक़ई हिदायत और अच्छे अख़्लाक़ का हुक्म देते हैं। फिर आप ने फ़रमाया, और किसी भली बात में रसूल की नाफ़रमानी न करोगी। हिन्द ने कहा, अल्लाह की क़सम! हम अपनी इस मज्लिस में अपने दिलों के अदंर यह बात लेकर नहीं बैठी हैं कि आप की नाफ़रमानी भी करेंगी।

फिर वापस होकर हिन्द रज़ि० ने अपना बुत तोड़ दिया । वह उसे तोड़ती जा रही थी और कहती जा रही थी, हम तेरे बारे में धोखे में थे।[11]

मक्का में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ठहरना और काम

मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 19 दिन ठहरे रहे। इस बीच आप ने इस्लामी पहचान को नया करते रहे और लोगों को हिदायत व तक़्वा की तल्क़ीन करते रहे। इन्हीं दिनों आप के हुक्म से हज़रत अबू असैद ख़ुज़ाओ़ी रज़ि० ने नए सिरे से हरम-सीमाओं के खम्बे गाड़े। आप ने इस्लाम की दावत और मक्का के आस-पास बुतों को तोड़ने के लिए कई टुकड़ियां भी रवाना कीं और इस तरह सारे बुत तोड़ डाले गए। आप के मुनादी ने मक्का में एलान किया कि जो आदमी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने घर में कोई बुत न छोड़े बल्कि उसे तोड़ डाले।

सराया और प्रतिनिधि-मंडल

1. मक्का-विजय से एकाग्र हो जाने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 25 रमज़ान सन् 08 हि० को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में उज़्ज़ा को गिराने के लिए एक टुकड़ी भेजी। उज़्ज़ा नख़ला में था। क़ुरैश और सारे बनू कनाना उसकी पूजा करते थे और यह उनकी सबसे बड़ी मूर्ति थी। बनू शैबान इसके मुजाविर थे। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने तीस सवारों के साथ नख़ला जा

---

11) देखिए मदारिकुत-तनज़ील लिन-नसफ़ी आयते बैअत की तफ़सीर

कर उसे ढा दिया। वापसी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि तुम ने कुछ देखा भी था? हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, नहीं। आप ने फ़रमाया, तब तो हक़ीक़त में तुम ने ढाया ही नहीं। फिर से जाओ और उसे ढा दो। हज़रत ख़ालिद रज़ि० बिफरे और तलवार सौंते हुए दोबारा तशरीफ़ ले गए। अब की बार उन की तरफ़ एक नंगी, काली, बिखरे बालों वाली औरत निकली। मुजाविर उसे चीख़-चीख़ कर पुकारने लगा, लेकिन इतने में हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने इस ज़ोर की तलवार मारी कि उस औरत के दो टुकड़े हो गए। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वापस आ कर ख़बर दी। आप ने फ़रमाया, हां! वही उज़्ज़ा थी। अब वह निराश हो चुकी है कि तुम्हारे देश में कभी भी उसकी पूजा की जाए।

2. इसके बाद आप ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को इसी महीने सुवाअ नामी बुत ढाने के लिए रवाना किया। यह मक्का से तीन मील की दूरी पर रहात में बनू हुज़ैल की एक मूर्ति थी, जब हज़रत अम्र रज़ि० वहां पहुंचे तो पुजारी ने पूछा, तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा, मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे ढाने का हुक्म दिया है। उसने कहा तुम इस पर समर्थ नहीं हो सकते। हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, क्यों? उसने कहा (प्राकृतिक ढंग से) रोक दिए जाओगे। हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, तुम अब तक असत्य पर हो? तुम पर अफ़सोस! क्या यह सुनता या देखता है? इसके बाद मूर्ति के पास जा कर उसे तोड़ डाला और अपने साथियों को हुक्म दिया कि वे उसके ख़ज़ाने वाला मकान ढा दें, लेकिन उसमें कुछ न मिला, फिर पुजारी से कहा, कहो, कैसा रहा? उसने कहा, मैं अल्लाह के लिए इस्लाम लाया।

3. उसी माह हज़रत साद बिन ज़ैद अशहली रज़ि० को बीस सवार दे कर मनात की ओर रवाना किया गया। यह क़ुदैद के पास मुशल्लल में औस व ख़ज़रज और ग़स्सान आदि की मूर्ति थी। जब हज़रत साद

रज़ि० वहां पहुंचे तो उस के पुजारी ने उन से पूछा, तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा, मनात को ढाना चाहता हूं। उसने कहा, तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। हज़रत साद रज़ि० मनात की ओर बढ़े तो एक काली, नंगी, बिखरे बालों वाली औरत निकली। वह अपना सीना पीट-पीट कर हाय-हाय कर रही थी। उससे पुजारी ने कहा, मनात! अपने कुछ अवज्ञाकारियों को पकड़ ले, लेकिन इतने में हज़रत साद रज़ि० ने तलवार मारकर उसका काम तमाम कर दिया, फिर लपक कर मूर्ति ढा दी और उसे तोड़-फोड़ डाला। ख़ज़ाने में कुछ न मिला।

4. उज़्ज़ा को ढा कर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद वापस आए तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी माह शअबान सन् 08 हि० में बनू जज़ीमा के पास रवाना फ़रमाया, लेकिन हमला करना मक़सद न था, बल्कि इस्लाम का प्रचार था। हज़रत ख़ालिद रज़ि० मुहाजिर, अंसार और बनू सुलैम के साढ़े तीन सौ आदमियों को ले कर रवाना हुए और बनू जज़ीमा के पास पहुंच कर इस्लाम की दावत दी। उन्होंने اسلمنا (हम इस्लाम लाए) के बजाए صبأنا صبأنا (हम ने अपना दीन छोड़ा, हम ने अपना दीन छोड़ा) कहा। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उन का क़त्ल और उन की गिरफ़्तारी शुरू कर दी और एक-एक क़ैदी अपने हर-हर साथी के हवाले किया, फिर एक दिन हुक्म दिया कि हर आदमी अपने क़ैदी को क़त्ल कर दे, लेकिन हज़रत इब्ने उमर रज़ि० और उन के साथियों ने इस हुक्म को पूरा करने से इंकार कर दिया और जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो आप से इस का ज़िक्र किया। आप ने अपने दोनों हाथ उठाए और दो बार फ़रमायाः "ऐ अल्लाह ख़ालिद ने जो कुछ किया मैं उससे तेरी ओर बराअत (बचाव) अपनाता हूं।[12]"

12) बुख़ारी 1/450,2/622

इस मौके पर सिर्फ़ बनू सुलैम के लोगों ने अपने क़ैदियों को क़त्ल किया था। अंसार व मुहाजिरों ने क़त्ल नहीं किया था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ि० को भेज कर उनके क़त्ल किए गए लोगों की दियत और उनके नुक़्सानों का मुआवज़ा अदा फ़रमाया। इस मामले में हज़रत ख़ालिद और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के बीच कुछ तेज़-तेज़ बातें हो गईं और खिंचाव हो गया था। इस की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुई तो आप ने फ़रमाया, ख़ालिद! ठहर जाओ, मेरे साथियों को कुछ कहने से बचो। अल्लाह की क़सम! अगर उहद पहाड़ सोना हो जाए और वह सारा का सारा तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दो, तब भी मेरे साथियों में से किसी एक आदमी की एक सुबह की इबादत या एक शाम की इबादत को नहीं पहुंच सकते।[13]

यह है ग़ज़वा-ए-फ़त्हे मक्का----- यही वह निर्णायक लड़ाई और भारी विजय है जिसने मूर्ति-पूजा की ताक़त पूरे तौर पर तोड़ कर रख दी और उसका काम इस तरह तमाम कर दिया कि अरब प्रायद्वीप में उसके बाक़ी रहने की कोई गुंजाइश और जायज़ होने की कोई वजह नहीं रह गयी, क्योंकि आम क़बीले इन्तिज़ार में थे कि मुसलमानों और बुत परस्तों में जो लड़ाई छिड़ी हुई है देखें इस का क्या अंजाम होता है? इन क़बीलों को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि हरम पर वही मुसल्लत हो सकता है जो सत्य पर हो उनके इस पूर्ण विश्वास में हद दर्जा पक्कापन आधी सदी पहले असहाबे फ़ील, अबरहा और उसके साथियों की घटना से आ गया था। क्योंकि अरब वालों ने देख लिया था कि अबरहा और उस के साथियों ने बैतुल्लाह का रुख़ किया, तो अल्लाह ने उन्हें हलाक कर के भुस बना दिया।

---

13) इस ग़ज़वे की तफ़सील के लिए इन किताबों से मदद ली गई इब्ने हिशाम 2/389-437 बुख़ारी 2/612-615,622, फ़तहुल-बारी 8/3-27 मुस्लिम 1/437-439,2/102,103,130, ज़ादुल-मआद 2/160-168 मुख़तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 322-351

याद रहे कि हुदैबिया-समझौता इस बड़ी विजय का उद्‌गम और प्रस्तावनी था। इस की वजह से अम्न व अमान का दौर-दौरा हो गया था, लोग खुल कर एक दूसरे से बातें करते थे। इस्लाम के बारे में विचार-विमर्श और वार्ताएँ होती थीं। मक्का के जो लोग छिपे हुए मुसलमान थे उन्हें भी इस समझौते के बाद अपने दीन को ज़ाहिर करने और प्रचार करने और उस पर बात चीत करने का मौक़ा मिला। इन हालात के नतीजे में बहुत से लोग मुसलमान हो गए, यहां तक कि जो तायदाद किसी लड़ाई में तीन हज़ार से ज़्यादा न हो सकी थी, इस ग़ज़्वा-ए-फ़त्हे मक्का में दस हज़ार तक जा पहुंची।

इस निर्णायक लड़ाई ने लोगों की आंखें खोल दीं और उन पर पड़ा हुआ वह आख़िरी परदा हटा दिया जो इस्लाम कुबूल करने के रास्ते में रोक बना हुआ था। इस जीत के बाद पूरे अरब प्रायद्वीप के राजनीतिक और धार्मिक क्षितिज पर मुसलमानों का सूरज चमक रहा था और अब धार्मिक नेतृत्व और संसारिक श्रेष्ठता की लगाम उनके हाथ आ चुकी थी।

मानो हुदैबिया-समझौते के बाद जो मुसलमानों के हक़ में लाभप्रद तब्दीली शुरू हुई थी, इस विजय के ज़रिए पूरी हो गयी और इसके बाद एक दूसरा दौर शुरू हुआ जो पूरे तौर पर मुसलमानों के हक़ में था और जिस में पूरी स्थिति मुसलमानों के क़ाबू में थी, और अरब क़ौमों के सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता था कि वे मंडलियों के रूप में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर इस्लाम अपना लें और आप की दावत लेकर दुनिया के कोने-कोने में फैल जाएं। अगले दो वर्षों में इसी की तैयारी की गयी

तीसरा मरहला

यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बराना ज़िंदगी का आख़िरी मरहला है जो आपकी इस्लामी दावत के उन नतीजों की नुमाइन्दगी करता है, जिन्हें आपने लगभग 23 साल की लम्बी जद्दोजेहद, कठिनाइयों व परिश्रमों, हंगामों और फ़ित्नों, फ़सादों और लड़ाइयों और ख़ूनी झगड़ों के बाद हासिल किया था।

इन लम्बे वर्षों में मक्का-विजय सब से अहम कामियाबी थी जो मुसलमानों ने हासिल की। इसकी वजह से हालात का धारा बदल गया और अ़रब के माहौल में तब्दीली आ गई। यह जीत हक़ीक़त में अपने पहले और बाद के दोनों ज़मानों के दर्मियान हद्दे फ़ासिल (अंतर करने वाली सीमा) की हैसियत रखती है। चूंकि क़ुरैश अरब वालों की नज़र में दीन की हिफ़ाज़त करने वाले और मदद करने वाले थे और पूरा अ़रब इस बारे में उन के अधीन था, इसलिए क़ुरैश के हथियार डाल देने का मतलब यह था कि पूरे अ़रब प्रायद्वीप में मूर्ति-पूजा वाले धर्म का काम ख़त्म हो गया।

यह आख़िरी मरहला दो हिस्सों में बंटा हुआ है-------

1. मुजाहिदा (कठोरतम परिश्रम) और क़िताल (लड़ाई),

2. इस्लाम क़ुबूल करने के लिए क़ौमों और क़बीलों की दौड़।

ये दोनों शक्लें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और इस मरहले में आगे पीछे भी और एक दूसरे के दौरान भी पेश आती रही हैं। अलबत्ता हम ने पुस्तक-क्रम यह अपनाया है कि एक को दूसरे से अलग वर्णन करें। चूंकि पिछले पृष्ठों में लड़ाइयों की बात चल रही थी और अगली लड़ाई उसी की एक शाखा का रूप रखती है, इसलिए यहां लड़ाइयों ही का वर्णन पहले किया जा रहा है।

ग़ज़वा-ए-हुनैन

मक्का की विजय एक अचानक चोट के बाद मिली थी, जिस पर अरब दंग थे और पड़ोसी क़बीलों में इतनी शक्ति न थी कि इस यकायकी घटना को दूर कर सकें। इसलिए कुछ अड़ियल, शक्तिशाली और मग़रूर क़बीलों को छोड़ कर बाक़ी सारे क़बीलों ने हथियार डाल दिय थे। अड़ियल क़बीलों में हवाज़िन और सक़ीफ़ चोटी पर थे। इनके साथ मुज़र, जुशम और साद बिन बक्र के क़बीले और बनू हिलाल के कुछ लोग भी शामिल हो गए थे। इन सब क़बीलों का ताल्लुक़ कैसे ईलान से था। इन्हें यह बात अपने स्वाभिमान और आदर के ख़िलाफ़ मालूम हो रही थी कि मुसलमानों के सामने हथियार डाल दें। इसलिए इन क़बीलों ने मालिक बिन औफ़ नसरी के पास जमा होकर तय किया कि मुसलमानों पर धावा बोल दिया जाए।

दुश्मन का कूच करना और औतास में पड़ाव

इस फ़ैसले के बाद मुसलमानों से लड़ने के लिए उनका रवाना होना अमल में आया तो जनरल कमांडर——मालिक बिन औफ़——लोगों के साथ उन के माल-मवेशी और बाल-बच्चे भी खींच लाया और आगे बढ़ कर औतास घाटी में पड़ाव डाल दिया। यह हुनैन के क़रीब बनू हवाज़िन के इलाक़े में एक घाटी है, लेकिन यह हुनैन की घाटी से अलग है। हुनैन एक दूसरी घाटी है जो ज़ुल मजाज़ के बाज़ू में स्थित है। वहां से अरफ़ात होते हुए मक्के की दूरी दस मील से ज़्यादा है।[1]

1) फ़तहुल-बारी 8/27,42

युद्ध-विशेषज्ञ की ज़ुबानी सेनापति की ग़लती निकाली गयी

औतास में उतरने के बाद लोग कमांडर के पास जमा हुए। उन में दुरैद बिन सिम्मा भी था---- यह बहुत बूढ़ा हो चुका था और अब अपने युद्ध ज्ञान और मश्वरे के सिवा कुछ करने के लायक़ न था, लेकिन वह असल में बड़ा बहादुर और माहिर योद्धा रह चुका था--------उसने मालूम किया, तुम लोग किस घाटी में हो? जवाब दिया, औतास में। उस ने कहा, यह सवारों की सब से अच्छी अभ्यास स्थली है, न पथरीली और खाईदार है, न भुरभुरा निचला हिस्सा। लेकिन क्या बात है कि मैं ऊंटों की बिलबिलाहट, गधों की ढेंचू, बच्चों का रोना और बकरियों की मिमयाहट सुन रहा हूं? लोगों ने कहा, मालिक बिन औफ़, फ़ौज के साथ उन की औरतें, बच्चे और माल-मवेशी भी खींच लाया है। इस पर दुरैद ने मालिक को बुलाया और पूछा, तुम ने ऐसा क्यों किया है? उस ने कहा मैंने सोचा कि हर आदमी के पीछे उस के परिवार और माल को लगा दूं, ताकि वह उनकी हिफ़ाज़त के जज़्बे के साथ लड़े। दुरैद ने कहा, "अल्लाह की क़सम! तुम निरे भेड़ों के चरवाहे हो, भला हार खाने वाले को भी कोई चीज़ रोक सकती है? देखो अगर लड़ाई में तुम ग़ालिब रहे हो तो भी तुम्हारे लिए तीर व तलवार से सुसज्जित आदमी ही फ़ायदेमंद है और अगर हार गये तो फिर तुम्हें अपने घर और माल के सिलसिले में रुसवा होना पड़ेगा। फिर दुरैद ने कुछ क़बीलों और सरदारों के बारे में सवाल किया और इसके बाद कहा, "ऐ मालिक! तुमने बनू हवाज़िन की औरतों और बच्चों को सवारों के मुक़ाबले में लाकर कोई सही काम नहीं किया है। इन्हें इन के इलाक़े की सुरक्षित जगहों और इन की क़ौम की ऊपरी जगहों में भेज दो। इसके बाद घोड़ों की पीठ पर बैठ कर बद-दीनों से टक्कर लो। अगर तुम जीत गए तो पीछे वाले तुमसे आ मिलेंगे और अगर तुम हारे तो बहरहाल तुम्हारे बाल-बच्चे और माल-मवेशी सुरक्षित रहेंगे।"

लेकिन जनरल कमांडर मालिक ने यह मश्वरा रद्द कर दिया और कहा, अल्लाह की क़सम! मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम बूढ़े हो चुके हो और तुम्हारी अक़्ल भी बूढ़ी हो चुकी है। अल्लाह की क़सम! या तो हवाज़िन मेरा आज्ञापालन करें या मैं इस तलवार पर टेक लगा दूंगा और यह मेरी पीठ के आर-पार निकल जाएगी।'' हक़ीक़त में मालिक को यह गवारा न हुआ कि इस लड़ाई में दुरैद का भी नाम या मश्वरा शामिल हो। हवाज़िन ने कहा, हमने तुम्हारा आज्ञापालन किया। इस पर दुरैद ने कहा, यह ऐसी लड़ाई है जिसमें मैं न (सही तौर पर) शरीक हूं और न (बिल्कुल) अलग हूं।

یالیتنی فیها جذع　　أخب فیها واضع

اقود وطفاء الدمع　　کأنها شاۃ صدع

''काश, मैं इस में जवान होता, दौड़ भाग और कोशिशें करता, टांग के लम्बे, बालों वाले और बीच के क़द की बकरी जैसे घोड़े का नेतृत्व करता।''

दुश्मन के जासूस

इस के बाद मालिक के वे जासूस आए जो मुसलमानों के हालात का पता लगाने पर नियुक्त किए गए थे। उनकी हालत यह थी कि उनका जोड़-जोड़ टूट-फूट गया था। मालिक ने कहा, तुम्हारी तबाही हो, तुम्हें यह क्या हो गया है? उन्होंने कहा, हमने कुछ चितकबरे घोड़ों पर सफ़ेद इंसान देखे और इतने में, अल्लाह की क़सम! हमारी वह हालत हो गई जिसे तुम देख रहे हो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जासूस

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी दुश्मन के रवाना होने की ख़बरें मिल चुकी थीं, चुनांचे आप ने अबू हदरद

राज़ि० का यह हुक्म देकर रवाना फ़रमाया कि लोगों के बीच घुस कर रहें और उनके हालात का ठीक-ठीक पता लगा कर वापस आएं और आपको सूचना दें। उन्होंने ऐसा ही किया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हुनैन की तरफ़

शनिवार, 6 शव्वाल सन् 08 हि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का से कूच फ़रमाया। आज आपको मक्का में आए हुए 19 वां दिन था। बारह हज़ार की सेना आप के साथ थी। दस हज़ार वे जो मक्का-विजय के लिए आपके साथ तशरीफ़ लायी थी, और दो हज़ार मक्का के निवासियों में से, जिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लममें अधिकतर नव-मुस्लिम थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़वान बिन उमैया से सौ ज़िरहें, हथियार और औज़ार के साथ उधार लीं और अत्ताब बिन असीद रज़ि० को मक्का का गवर्नर मुक़र्रर किया।

दोपहर बाद एक सवार ने आ कर बताया कि मैं ने फ़्लां और फ़्लां पहाड़ पर चढ़ कर देखा तो क्या देखता हूं कि बनू हवाज़िन सब के सब ही आ गए हैं। उनकी औरतें, चौपाए और बकरियां सब साथ हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया, यह सब इनशाअल्लाह कल मुसलमानों का माले ग़नीमत होगा। रात आई तो हज़रत अनस बिन अबी मर्सद ग़नवी रज़ि० स्वयं सेवक के रूप में संतरी की ज़िम्मेदारियां निभाईं।[2]

हुनैन जाते हुए लोगों ने बैर का एक बड़ा सा हरा पेड़ देखा, जिसको ज़ाते अनवात कहा जाता था। (मुश्रिक) अरब उस पर अपने हथियार लटकाते थे, उस के पास जानवर ज़िब्ह करते थे और वहां दरगाह और मेला लगाते थे। कुछ सैनिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

---

2) अबू दाऊद औनुल मअबूद के साथ 2/317 बाब फ़ज़्लुल-हरस फ़ी सबीलिल्लाह

अलैहि व सल्लम से कहा, आप हमारे लिए ज़ाते अनवात बना दीजिए जैसे इन के लिए ज़ाते अनवात है। आप ने फ़रमाया, अल्लाहु अकबर! उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जान है, तुम ने वैसी ही बात कही, जैसी मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कही थी; اِجْعَلْ لَّنَا اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ "हमारे लिए भी एक माबूद (उपास्य) बना दीजिए जिस तरह उन के लिए माबूद हैं" ये तौर-तरीक़े हैं। तुम लोग भी यक़ीनी तौर पर पहलों के तौर-तरीक़ों पर सवार होगे।[3]

(बीच रास्ते में) कुछ लोगों ने सेना की भारी संख्या देख कर कहा था कि हम आज हरगिज़ मग़्लूब नहीं हो सकते और यह बात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बोझ बन गयी थी।

इस्लामी सेना पर तीरअंदाज़ो का अचानक हमला

इस्लामी सेना मंगल और बुध के बीच की रात 10 शव्वाल को हुनैन पहुंची, लेकिन मालिक बिन औफ़ यहां पहले ही पहुंच कर अपनी सेना रात के अंधेरे में उस घाटी के अदंर उतार कर उसे रास्तों, सड़कों, घाटियों, छिपी जगहों और दर्रों में फैला और छिपा चुका था और उसे यह हुक्म दे चुका था कि मुसलमान ज्यों ही ज़ाहिर हों, उन्हें तीरों से छलनी कर देना, फिर उन पर एक दम इकट्ठे टूट पड़ना।

इधर भोर ही में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सेना को ठीक-ठाक किया और झंडा बांध-बांध कर लोगों में बांटे, फिर सुबह के झटपटे में मुसलमानों ने आगे बढ़ कर हुनैन घाटी में क़दम रखा। वे दुश्मन के मौजूद होने की कोई ख़बर न रखते थे। वे बिल्कुल न जानते थे कि इस घाटी के तंग दर्रों के अंदर सक़ीफ़ व हवाज़िन के जियाले उनकी घात में बैठे हैं, इसलिए वे बे-ख़बरी की हालत में पूरे

---

3) तिरमिज़ी बाब लतरकबुन्न: सुनन मन कान:क़बलकुम 2/41 मुसनद अहमद 5/281

इत्मीनान के साथ उतर रहे थे कि अचानक उन पर तीरों की वर्षा शुरू हो गई, फिर तुरन्त ही उन पर दुश्मन के परे के परे इकट्ठे टूट पड़े। (इस अचानक हमले से मुसलमान संभल न सके) और उनमें ऐसी भगदड़ मची कि कोई किसी की तरफ़ देख न रहा था, बिल्कुल खुली पराजय थी, यहां तक कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ने------जो अभी नया-नया मुसलमान था--------कहा, अब इनकी भगदड़ समुद्र से पहले न रुकेगी और जबला या कलदह बिन जुनैद ने चीख़ कर कहा, देखो आज जादू झूठा हो गया।

यह इब्ने इस्हाक़ का बयान है। बरा बिन आज़िब रज़ि० का बयान जो सहीह बुख़ारी में रिवायत किया गया है, इस से अलग है। इनका इर्शाद है कि हवाज़िन तीरअंदाज़ थे। हमने हमला किया तो भाग खड़े हुए। इसके बाद हम ग़नीमत पर टूट पड़े तो तीरों से हमारा स्वागत किया गया।[4]

और हज़रत अनस रज़ि० का बयान जो सहीह मुस्लिम में रिवायत किया गया है, वह देखने में तो इससे भी कुछ अलग है, लेकिन बड़ी हद तक इसकी ताईद करता है। हज़रत अनस का इर्शाद है कि हम ने मक्का जीत लिया फिर हुनैन पर चढ़ाई की। मुश्रिक इतनी उम्दा सफ़ें बना कर आए जो मैं ने कभी नहीं देखी थीं। सवारों की पंक्ति, फिर पैदल सेना की पंक्ति, फिर उन के पीछे औरतें, फिर भेड़-बकरियां, फिर दूसरे जानवर, हम लोग बड़ी संख्या में थे। हमारे सवारों के दाहिने हिस्से में ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० थे, मगर हमारे सवार हमारी पीठ के पीछे पनाह लेने लगे और थोड़ी देर में हमारे सवार भाग खड़े हुए, अअराब भी भागे और वे लोग भी जिन्हें तुम जानते हो।[5]

4) बुख़ारी बाब व यौम: हुनैनिन इज़ अअजबतकुम
5) फ़तहुल-बारी 8/298

बहरहाल जब भगदड़ मची, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाईं ओर होकर पुकारा: "लोगो! मेरी ओर आओ मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद हूं।" उस वक़्त उस जगह आपके साथ कुछ मुहाजिरों और परिवार वालों के सिवा कोई न था।[6]

इन सब से नाज़ुक लम्हों में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बे-मिसाल बहादुरी ज़ाहिर हुई यानी इस जबरदस्त भगदड़ के बावजूद आपका रुख़ कुफ़्फ़ार की तरफ़ था और आगे क़दम बढ़ाने के लिए अपने ख़च्चर को एड़ लगा रहे थे और यह फ़रमा रहे थे-----

اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ   اَنَا ابْنُ عَبْدِ المُطَّلِبْ

"(मैं नबी हूं, यह झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं।)"

लेकिन उस वक़्त अबू सुफ़ियान बिन हारिस रज़ि० ने आपके ख़च्चर की लगाम पकड़ रखी थी, और हज़रत अब्बास रज़ि० ने रकाब थाम ली थी। दोनों ख़च्चर को रोक रहे थे कि कहीं तेज़ी से आगे न बढ़ जाए। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा अब्बास रज़ि० को ------जिनकी आवाज़ ख़ासी ऊंची थी---हुक्म दिया कि सहाबा किराम रज़ि० को पुकारें। हज़रत अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं ने बड़ी ऊंची आवाज़ से पुकारा: पेड़ वालों----! (बैअ़ते रिज़वान वालों---!) कहां हो? अल्लाह की क़सम! वे लोग मेरी आवाज़ सुन कर इस तरह मुड़े जैसे गाय अपने बच्चों पर मुड़ती है और जवाब

---

6) इब्ने इसहाक़ के मुताबिक़ इनकी तादाद 9 या 10 थी नववी का इर्शाद है कि आप के साथ 12 आदमी साबित क़दम रहे। इमाम अहमद और हाकिम ने इब्ने मसूद से रिवायत किया है कि मैं हुनैन के दिन रसूलुल्लाह(सल्ल०) के साथ था लोग पीठ फेर कर भाग गए मगर आपके साथ 80 मुहाजिरीन और अनसार साबित क़दम रहे हम पैदल थे और हम ने पीठ नहीं फेरी। तिरमिज़ी ने सनदे हसन के द्वारा इबने उमर की हदीस रिवायत की है इनका कहना है कि मैंने अपने लोगों को हुनैन के दिन देखा कि उन्होंने पीठ फेर ली है और रसूलुल्लाह(सल्ल०) के साथ 100 आदमी भी नहीं थे। (फ़तहुल-बारी 8/29-30)

के तौर पर कहा, हां-हां, आए-आए।[7] हालत यह थी कि आदमी अपने ऊंट के मोड़ने की कोशिश करता और न मोड़ पाता तो अपनी ज़िरह उसकी गरदन में डाल फेंकता और अपनी तलवार और ढाल संभाल कर ऊंट से कूद जाता और ऊंट को छोड़-छाड़ कर आवाज़ की तरफ़ दौड़ता। इस तरह जब आपके पास सौ आदमी जमा हो गए, तो उन्होंने दुश्मन का स्वागत किया और लड़ाई शुरू कर दी।

इसके बाद अंसार की पुकार शुरू हुई, ओ अंसारियों! ओ अंसारियों! फिर यह पुकार बनू हारिस बिन ख़ज़रज के अंदर सीमित हो गयी। इधर मुसलमान टुकड़ियों ने जिस रफ़्तार से मैदान छोड़ा था, उसी रफ़्तार से एक के पीछे एक आते चले गए और देखते-देखते दोनों फ़रीक़ों में धुवांधाड़ लड़ाई शुरू हो गयी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ाई के मैदान की ओर नज़र उठा कर देखा तो घमसान का रन पड़ रहा था, फ़रमाया, "अब चूल्हा गर्म हो गया है?" फिर आप ने ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर दुश्मन की ओर फेंकते हुए फ़रमाया, شَاهَتِ الْوُجُوهُ (चेहरे बिगड़ जाएं) यह मुट्ठी भर मिट्टी इस तरह फैली कि दुश्मन का कोई आदमी ऐसा न था जिस की आंख उस से भर न गयी हो। इसके बाद उनकी ताक़त टूटती चली गयी और उनका काम ठंडा पड़ता गया।

दुश्मन की ज़बरदस्त हार

मिट्टी फेंकने के बाद कुछ ही घड़ियां बीती थीं कि दुश्मन की ज़बरदस्त हार हो गई। सक़ीफ़ के लगभग सत्तर आदमी क़त्ल किए गए और उनके पास जो कुछ माल, हथियार, औरतें और बच्चे थे, मुसलमानों के हाथ आए।

---

7) मुस्लिम 2/100

यही वह तब्दीली है जिसकी ओर अल्लाह ने अपने इस कथन में इशारा किया है----

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ۝ ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۝

"और (अल्लाह ने) हुनैन के दिन (तुम्हारी मदद की) जब तुम्हें तुम्हारी अधिकता ने घमंड में डाल दिया था, पस वह तुमहारे कुछ काम ने आयी और धरती फैलाव के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम लोग पीठ फेर कर भागे। फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर अपनी शान्ति उतारी और ऐसी सेना उतारी जिसे तुमने नहीं देखा और कुफ़्र करने वालों को सज़ा दी और यही कुफ़्र करने वालों का बदला है।' (9:25-26)

पीछा किया जाना

हार जाने के बाद दुश्मन के एक गिरोह ने तायफ़ का रुख़ किया, एक नख़ला की ओर भागा और एक ने औतास की राह ली। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू आ़मिर अशअ़री रज़ि० के नेतृत्व में पीछा करने वालों की एक टीम औतास की ओर रवाना की। दोनों फ़रीक़ों में थोड़ी सी झड़प हुई, इसके बाद मुश्रिक भाग खड़े हुए। अलबत्ता उसी झड़प में उस टुकड़ी के कमांडर अबू आमिर अशअ़री रज़ि० शहीद हो गए।

मुसलमान घुड़सवारों की एक दूसरी टीम ने नख़ला की ओर पसपा होने वाले मुश्रिकों का पीछा किया और दुरैद बिन सम्मा को जा पकड़ा जिसे रबीआ़ बिन रफ़ीअ़ रज़ि० ने क़त्ल कर दिया।

हारे हुए मुश्रिकों के तीसरे और सब से बड़े गिरोह का पीछा करने में जिस ने तायफ़ का रास्ता लिया था, ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम माले ग़नीमत जमा फ़रमाने के बाद रवाना हुए।

ग़नीमत

ग़नीमत (जीतने के बाद) का माल यह था— क़ैदी छः हज़ार, ऊंट चौबीस हज़ार, बकरी चालीस हज़ार से ज़्यादा, चांदी चार हज़ार औक़िया (यानी एक लाख साठ हज़ार दिरहम, जिस की मात्रा छः क्विन्टल से कुछ ही किलो कम होती है) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन सब को जमा करने का हुक्म दिया। फिर इसे जिअ़िर्राना में रोक कर हज़रत मस्ऊद बिन अम्र गिफ़ारी रज़ि० की निगरानी में दे दिया और जब तक तायफ़ की लड़ाई से फ़ारिग़ न हो गए उसे न बांटा।

क़ैदियों में शैमा बिन्ते हारिस सादिया भी थीं जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूध-शरीक बहन थीं। जब उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लाया गया और उन्होंने अपना परिचय कराया, तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक निशानी के ज़रिए पहचान लिया, फिर उनका बड़ा मान-सम्मान किया, अपनी चादर बिछा कर बिठाया और एहसान फ़रमाते हुए उन्हें उनकी क़ौम में वापस कर दिया।

गज़वा-ए-तायफ़

यह लड़ाई असल में ग़ज़वा-ए-हुनैन का ही भाग है, चूंकि हवाज़िन और सक़ीफ़ के ज़्यादा तर हारे हुए लोग अपने जनरल कमांडर मालिक बिन औफ़ नसरी के साथ भाग कर तायफ़ ही आए थे और यहीं क़िले में बन्द हो गए थे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुनैन से फ़ारिग़ हो कर और जिअिर्राना में ग़नीमत का माल जमा फ़रमा कर इसी माह शव्वाल सन् 08 हि० में तायफ़ का इरादा किया।

इस उद्देश्य के लिए ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के नेतृत्व में एक हज़ार फ़ौज का हरावल दस्ता (अगली टुकड़ी) रवाना किया गया, फिर आप ने खुद तायफ़ का रुख़ फ़रमाया। रास्ते में नख़ला-ए-यमानिया, फिर क़र्ने मनाज़िल, फिर लेह से गुज़र हुआ। लेह में मालिक बिन औफ़ का एक क़िला था, आपने उसे तुड़वा दिया, फिर सफ़र जारी रखते हुए तायफ़ पहुंचे और क़िला तायफ़ के क़रीब पड़ाव डाल कर उसका घेराव कर लिया।

घेराव कुछ लम्बा हो गया। चुनांचे सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत है कि यह चालीस दिन तक जारी रहा। जीवनी-लेखकों में से कुछ ने इसकी मुद्दत बीस दिन बताई है, कुछ ने दस दिन से ज़्यादा, कुछ ने अठारह दिन और कुछ ने पंद्रह दिन।[1]

---

1) फ़त्हुल-बारी 8/45

घेराव के समय में दोनों ओर से तीरअंदाज़ी और पत्थर बाज़ी की घटनाएं भी सामने आती रहीं बल्कि पहले-पहल जब मुसलमानों ने घेराव किया तो क़िले के भीतर से उन पर इस ज़्यादती के साथ तीरअंदाज़ी की गई कि लगता था, टिड्डी दल छाया हुआ है। इससे कई मुसलमान घायल हुए, बारह शहीद हुए और उन्हें अपना कैम्प उठा कर मौजूदा मस्जिदे तायफ़ के पास ले जाना पड़ा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस स्थिति से निपटने के लिए तायफ़ वालों पर तोपें गाड़ दीं और कई गोले फेंके जिस से क़िले की दीवार में दराड़ पड़ गई और मुसलमानों की एक जमाअत दब्बाबा के अंदर घुस कर आग लगाने के लिए दीवार तक पहुंच गई, लेकिन दुश्मन ने उन पर लोहे के जलते टुकड़े फेंके, जिससे मजबूर हो कर मुसलमान दब्बाबा के नीचे से बाहर निकल आए, मगर बाहर निकले तो दुश्मन ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी, जिससे कुछ मुसलमान शहीद हो गए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुश्मन को क़ाबू में करने के लिए एक और रणनीति के रूप में हुक्म दिया कि अंगूर के पेड़ काट कर जला दिए जाएं । मुसलामानों ने तनिक बढ़-चढ़ कर ही कटाई कर दी। इस पर सक़ीफ़ ने अल्लाह और रिश्तेदारी का वास्ता देकर निवेदन किया कि पेड़ों को काटना बंद कर दें। आप ने अल्लाह के लिए और रिश्तेदारी की ख़ातिर हाथ रोक लिया।

घेराबंदी के समय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एलान करने वाले ने एलान किया, जो दास क़िले से उतर कर हमारे पास आ जाए वह आज़ाद है। इस एलान पर 23 आदमी क़िले से निकल कर मुसलमानों में आ शामिल हुए।[2] उन्हीं में हज़रत अबू बक्रा रज़ि० भी

---

2) बुख़ारी 2/260

थे। वह क़िले की दीवार पर चढ़ कर एक चर्ख़ी या गरारी की मदद से (जिसके ज़रिए रहट से पानी खींचा जाता है) लटक कर नीचे आए थे, चूंकि गरारी को अरबी में बकरा कहा जाता है) इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की उपाधि अबू बक्रा रख दी। इन सब दासों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज़ाद कर दिया और हर एक को एक-एक मुसलमान के हवाले कर दिया कि उसे सामान जुटाए। यह दुर्घटना क़िले वालों के लिए बड़ी जान-लेवा थी।

जब घेराव लम्बा हो गया और क़िला क़ाबू में आता नज़र न आया और मुसलमानों पर तीरों की वर्षा और गर्म लोहों की चोट पड़ी और इधर क़िले वालों ने साल भर के लिए खाने-पीने का सामान भी जमा कर लिया था———तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नौफ़ल बिन मुआविया दैली से मश्वरा तलब किया। उसने कहा, लोमड़ी अपने भट्ट में घुस गयी है। अगर आप उस पर डटे रहे तो पकड़ लेंगें और अगर छोड़कर चले गए तो वह आप का कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घेराव ख़त्म करने का फ़ैसला फ़रमा लिया और हज़रत उमर रज़ि० के ज़रिए लोगों में एलान कराया कि हम इनशाअल्लाह कल वापस होंगे, लेकिन यह एलान सहाबा किराम रज़ि० पर भारी गुज़रा, वे कहने लगे, हुंह तायफ़ जीते बिना वापस होंगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अच्छा तो कल सुबह लड़ाई पर चलना है चुनांचे दूसरे दिन लोग लड़ाई पर गए, लेकिन चोट खाने के सिवा कुछ हासिल न हुआ तो उस के बाद आप ने फिर फ़रमाया कि हम इनशाअल्लाह कल वापस होंगे। इस पर लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी और उन्होंने बिना कुछ कहे सुने सफ़र का सामान बांधना शुरू कर दिया। यह स्थिति देख कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कुराते रहे।

इस के बाद जब लोगों ने डेरा-डंडा उठा कर कूच किया तो आप ने फ़रमाया कि यूं कहो—آئِبُوْنَ، تَائِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

(हम पलटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत गुज़ार हैं और अपने पालनहार का गुण-गान करते हैं।)

कहा गया, कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सक़ीफ़ पर बद-दुआ करें। आप ने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! सक़ीफ़ को हिदायत दे और उन्हें ले आ।"

जिइर्राना में ग़नीमत के माल का बटवारा

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तायफ़ का घेराव ख़त्म कर के वापस आए तो जिइर्राना में कई दिन ग़नीमत का माल बांटे बिना ठहरे रहे। इस देर करने का मक़सद यह था कि हवाज़िन का प्रतिनिधि मंडल तौबा कर के आप की सेवा में आ जाए और उसने जो कुछ खोया है सब ले जाए, लेकिन देर के बावजूद जब आपके पास कोई न आया तो आप ने माल बांटना शुरू कर दिया, ताकि क़बीलों के सरदार और मक्का के बड़े लोग, जो बड़े लोभ से झांक रहे थे, उन की ज़ुबान ख़ामोश हो जाए। मुअल्लफ़तुल क़ुलूब[3] के लिए भाग्य ने पहल की और उन्हें बड़े-बड़े हिस्से दिए गये।

अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को चालीस औक़िया (कुछ कम छः किलो चांदी) और एक सौ ऊंट दिए गए। उस ने कहा, मेरा बेटा यज़ीद? आपने उतना ही यज़ीद को भी दिया। उसने कहा, और मेरा बेटा मुआविया? आपने उतना ही मुआविया को भी दिया (यानी अकेले अबू सुफ़ियान को उसके बेटों समेत लगभग 18 किलो चांदी और तीन सौ ऊंट हासिल हो गए।)

3) यानी वो लोग जो नए नए मुसलमान हुए हों और उनका दिल जोड़ने के लिए उन्हें माली मदद दी जाए ताकि वो इसलाम पर मज़बूती से जम जाएं

हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० को एक सौ ऊंट दिए गए। उसने और सौ ऊंटों का सवाल किया, तो उसे फिर एक सौ ऊंट दिए गए। इसी तरह सफ़वान बिन उमैया को सौ ऊंट फिर सौ ऊंट और फिर सौ ऊंट (यानी तीन सौ ऊंट) दिए गए।[4]

हारिस बिन कलदा रज़ि० को भी सौ ऊंट दिए गए और कुछ और कुरशी व ग़ैर-कुरशी सरदारों को सौ-सौ ऊंट दिए गए, कुछ दूसरों को पचास-पचास और चालीस-चालीस ऊंट दिये गए, यहां तक कि लोगो में मशहूर हो गया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह बे-पनाह भेंट देते हैं कि उन्हें उपवास का डर ही नहीं। चुनांचे माल की तलब में बद्दू आप पर टूट पड़े और आपको एक पेड़ की ओर सिमटने पर मजबूर कर दिया। संयोग कि आपकी चादर पेड़ में फंस कर रह गई। आप ने फ़रमाया, "लोगों मेरी चादर दे दो और उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर मेरे पास तिहामा के पेड़ों की तायदाद में भी चौपाए हों, तो उन्हें भी तुम पर बांट दूंगा। फिर तुम मुझे न कंजूस पाओगे, न डरपोक और न झूठा।"

इसके बाद आपने अपने ऊंट के बाज़ू में खड़े होकर उसकी कोहान से कुछ बाल लिए और चुटकी में रख कर बुलन्द करते हुए फ़रमाया, "लोगो! अल्लाह की क़सम! मेरे लिए तुम्हारे फ़ै के माल में कुछ भी नहीं, यहां तक कि इतना बाल भी नहीं, सिर्फ़ पांचवां हिस्सा है और पांचवां हिस्सा भी तुम पर ही पलटा दिया जाता है।"

मुअल्लफ़तुल क़ुलूब को देने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को हुक्म दिया कि माले ग़नीमत और फ़ौज को इकट्ठा कर के लोगों पर ग़नीमत के बांटने का हिसाब लगाएं। उन्होंने ऐसा किया तो एक-एक फ़ौजी के हिस्से में

4) अश-शिफ़ा बि-तअरीफ़े हुक़ूक़िल-मुस्तफ़ा क़ाज़ी अयाज़ 1/86

चार-चार ऊंट और चालीस-चालीस बकरियां आयीं। जो घुड़सवार था, उन्हें बारह ऊंट और एक सौ बीस बकरियां मिलीं।

यह बांट अपने पीछे एक हिक्मत भरी सियासत रखती थी, क्योंकि दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपनी अक़्ल के रास्ते से नहीं, बल्कि पेट के रास्ते से सत्य पर लाए जाते हैं, यानी जिस तरह जानवरों को एक मुट्ठी हरी घास दिखा दीजिए और वे उसकी ओर बढ़ते लपकते अपनी सुरिक्षत जगहों तक जा पहुंचते हैं, उसी तरह ज़िक्र किए गए इंसानों की क़िस्म के लिए भी विभिन्न प्रकार के आकर्षणों की ज़रूरत पड़ती है, ताकि वे ईमान से जाने-पहचाने होकर उसके लिए जोश वाले बन जाएं।[5]

अंसार का दुख और बेचैनी

यह राजनीति पहले-पहल समझी न जा सकी, इसी लिए कुछ ज़ुबानों पर आपत्ति के शब्द आ गए। अंसार पर ख़ास तौर पर इस राजनीति की चोट पड़ी थी----क्योंकि वे सब के सब हुनैन के इन उपहारों से पूरी तरह वंचित रखे गए, हालांकि कठिनाई के समय में उन्हीं को पुकारा गया था। और वही उड़ कर आए थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मिल कर इस तरह लड़ाई लड़ी थी कि ज़बरदस्त हार शानदार जीत में बदल गयी थी, लेकिन अब वे देख रहे थे कि भागने वालों के हाथ भरे हुए हैं और वे ख़ुद महरूम और ख़ाली हाथ हैं।[6]

इब्ने इसहाक़ ने अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत की है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश और अरब क़बीलों को वे भेंट दिए और अंसार को कुछ न दिया तो अंसार ने दिल

---

5) मुहम्मद ग़ज़ाली फ़िक़्हुस्सीरा 298-299

6) मुहम्मद ग़ज़ाली फ़िक़्हुस्सीरा 298-299

ही दिल में पेच व ताव खाया और उनमें बहुत कहा-सुनी हुई, यहां तक कि एक कहने वाले ने कहा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ौम से जा मिले हैं। इसके बाद हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० आपके पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आपने इस हासिल किए हुए फ़ै के माल में जो कुछ किया है, उस पर अंसार अंदर ही अंदर आप पर तिलमिला रहे हैं। आपने उसे अपनी क़ौम में बांट दिया, अरब क़बीलों को बड़े-बड़े दान दिए, लेकिन अंसार को कुछ न दिया। आपने फ़रमाया, "ऐ साद! इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है?" उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं भी तो अपनी क़ौम ही का एक आदमी हूं। आपने फ़रमाया, "अच्छा तो अपनी क़ौम को इस छोलदारी में जमा करो।" साद रज़ि० ने निकल का अंसार को इस छोलदारी में जमा किया। कुछ मुहाजिर भी आ गए तो उन्होंने दाख़िल होने दिया, फिर कुछ दूसरे लोग भी आ गए तो उन्हें वापस कर दिया। जब सब लोग जमा हो गए तो हज़रत साद रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि क़बीला अंसार आपके लिए जमा हो गया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए, अल्लाह का गुण-गान किया, फिर फ़रमाया———

"अंसार के लोगो: तुम्हारी यह क्या फुसफुसाहट है जो मुझे मालूम हुई है! और यह क्या नाराज़गी है जो दिल ही दिल में तुमने मुझ पर महसूस की है! क्या ऐसा नहीं कि मैं तुम्हारे पास इस हालत में आया कि तुम गुमराह थे, अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दी और मुहताज थे, अल्लाह ने तुम्हें ग़नी बना दिया और आपस में दुश्मन थे, अल्लाह ने तुम्हारे दिल जोड़ दिए?" लोगों ने कहा, क्यों नहीं! अल्लाह और उसके रसूल की बड़ी दया और कृपा है।

इसके बाद आपने फ़रमाया, "अंसार के लोगों! मुझे जवाब क्यों नहीं देते?" अंसार ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! भला हम आपको क्या जवाब दें? अल्लाह और उस के रसूल की दया कृपा है। आपने फ़रमाया, "देखो, अल्लाह की क़सम! अगर तुम चाहो, तो कह सकते हो——और सच ही कहोगे और तुम्हारी बात सच ही मानी जाएगी——कि आप हमारे पास इस हालत में आए कि आपको झुठलाया गया था, हमने आप की पुष्टि की, आप को बे-यार व मददगार छोड़ दिया गया था, हमने आप की मदद की, आप को धुत्कार दिया गया था, हम ने आप को ठिकाना दिया, आप मुहताज थे, हम ने आप का दुख दूर किया और भरपूर साथ दिया।

"ऐ अंसार के लोगों! तुम अपने दिल में दुनिया की एक मामूली सी घास के लिए नाराज़ हो गए, जिसके ज़रिए मैंने लोगों का दिल जोड़ा था, ताकि वे मुसलमान हो जाएं और तुमको तुम्हारे इस्लाम के हवाले कर दिया था? ऐ अंसार! क्या तुम इससे राज़ी नहीं हो कि लोग ऊंट और बकरियां ले कर जाएं और तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लेकर अपने डेरों में पलटो? उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर हिजरत न होती तो मैं भी अंसार ही का एक व्यक्ति होता, अगर सारे लोग एक राह चलें और अंसार दूसरी राह चलें तो मैं भी अंसार ही की राह चलूंगा। ऐ अल्लाह! दया कर अंसार पर और उनके बेटों पर और उनके बेटों के बेटों (पोतों) पर।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बातें सुन कर लोग इतना रोए कि उनकी दाढ़ियां भीग गयीं और कहने लगे, "हम राज़ी हैं कि हमारे हिस्से और नसीब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हों।" इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस हो गए और लोग भी बिखर गए।[7]

---

7) इब्ने हिशाम 2/499-500 एसी ही रिवायत बुख़ारी में भी है 2/620-621

हवाज़िन के प्रतिनिधि-मंडल का आना

ग़नीमत का माल बंट जाने के बाद हवाज़िन का प्रतिनिधि मंडल मुसलमान हो कर आ गया। ये कुल चौदह आदमी थे। इन का सरदार जुहैर बिन सुरद था और उनमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दूध-शरीक चचा अबू बरक़ान भी था। मंडल ने सवाल किया कि आप मेहरबानी कर के क़ैदी और माल वापस कर दें और इस ढंग से बात की कि दिल पसीज जाए।[8] आप ने फ़रमाया, मेरे साथ जो लोग हैं उन्हें देख ही रहे हो और मुझे सच बात ज़्यादा पसंद है इसलिए बताओ कि तुम्हें अपने बाल-बच्चे अधिक प्रिय हैं या माल? उन्होंने कहा, हमारे नज़दीक पारिवारिक श्रेष्ठता के बराबर कोई चीज़ नहीं। आप ने फ़रमाया, अच्छा तो जब मैं ज़ुहर की नमाज़ पढ़ लूं तो तुम लोग उठ कर कहना कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईमान वालों की तरफ़ सिफ़ारिशी बनाते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ सिफ़ारिशी बनाते हैं कि आप हमारे क़ैदी हमें वापस कर दें। इस के बाद जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उन लोगों ने यही कहा। जवाब में आप ने फ़रमाया, जहां तक उस हिस्से का ताल्लुक़ है जो मेरा है और बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब का है तो वह तुम्हारे लिए है और मैं अभी लोगों से पूछे लेता हूं। इस पर अंसार और मुहाजिरों ने उठ कर कहा, जो कुछ हमारा है वह सब भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है। इसके बाद अक़रअ़ बिन हाबिस ने कहा, लेकिन जो कुछ मेरा और बनू तमीम

---

8) इब्ने इसहाक का ब्यान है कि इन में इनके 9 अशराफ़ थे उन्हों ने इसलाम कुबूल किया, बैअ़त की, बातचीत की और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! आप ने जिन्हें क़ैद किया है इनमें माऐं और बहने हैं और फूफियाँ और ख़ालाऐं हैं। और यही कौम के लिए रुस्वाई की वजह होती हैं।(फ़तहुल-बारी 8/33) वाज़ेह रहे कि माओं वग़ैरह में मुराद रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दूध के रिशते से होने वाली माऐं, ख़ालाएं, फूफियाँ और बहनें है इनके ख़तीब ज़ुहैर बिन सुरद थे अबू बरक़ान के नाम में मतभेद है चुनाँचे इन्हें अबू परवान और अबू मरवान भी कहा गया है।

का है, वह आप के लिए नहीं, और उयैना बिन हिस्न ने कहा कि जो कुछ मेरा और बनू फ़ज़ारा का है वह भी आपके लिए नहीं और अब्बास बिन मिरदास ने कहा, जो कुछ मेरा और बनू सुलैम का है, वह भी आपके लिए नहीं। इस पर बनू सुलैम ने कहा, जी नहीं, जो कुछ हमारा है वह भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है। अब्बास बिन मिरदास ने कहा, तुम लोगों ने मेरी तौहीन कर दी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "देखो, ये लोग मुसलमान हो कर आए हैं (और इसी ग़रज़ से) मैं ने उनके क़ैदियों को बांटने में देर की थी ओर अब मैंने उन्हें इख़्तियार दिया तो उन्होंने बाल-बच्चों के बराबर किसी चीज़ को नहीं समझा, इसलिए जिस किसी के पास कोई क़ैदी हो और वह ख़ुशी से वापस कर दे, तो यह बहुत अच्छा रास्ता है और जो कोई अपने हक़ को रोकना ही चाहता हो तो वह भी उन के क़ैदी तो उन्हें वापस कर ही दे। अलबत्ता आगे जो सब से पहला फ़ै का माल (लड़ाई में मिला माल) हासिल होगा, उसमें से हम उस आदमी को एक के बदले छः देंगे।" लोगों ने कहा, हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ुशी से देने को तैयार हैं। आप ने फ़रमाया, हम जान न सके कि आप में से कौन राज़ी है और कौन नहीं। इसलिए आप लोग वापस जाएं और आप के चौधरी हज़रात आपके मामले को हमारे सामने पेश करें। इस के बाद सारे लोगों ने उन के बाल-बच्चे वापस कर दिए, सिर्फ़ उयैना बिन हिस्न रह गया जिस के हिस्से में एक बुढ़िया आई थी। उस ने वापस करने से इंकार कर दिया, लेकिन आख़िर में उसने भी वापस कर दिया। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारे क़ैदियों को एक-एक क़िब्ती चादर अता फ़रमा कर वापस कर दिया।

उमरा और मदीना को वापसी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़नीमत के माल को बांटने से छुट्टी पा कर जिइर्राना ही से उमरे का एहराम बांधा और

उमरा अदा किया। इस के बाद अत्ताब बिन असीद रज़ि० को मक्का का जिम्मेदार बना कर मदीना रवाना हो गए। मदीना वापसी 24 ज़ीक़ादा सन् 08 हि० को हुई।

मुहम्मद ग़ज़ाली कहते हैं, जीत के इन वक़्तों में जबकि अल्लाह ने आपके सर पर खुली जीत का ताज रखा और उस वक़्त में जबकि आप इसी बड़े नगर में आठ साल पहले तश्रीफ़ लाए थे कितनी लंबी चौड़ी दूरी है।

आप यहां इस हालत में आए थे कि आपको खदेड़ दिया गया था और आप अमान चाहते थे, अजनबी और घबराए हुए थे और आपको लगाव और मुहब्बत की खोज थी। वहां के निवासियों ने आप की ख़ूब आव-भगत की, आपको जगह दी, और आप की मदद की, और जो नूर आप के साथ उतारा गया था, उसकी पैरवी की और आप के लिए सारी दुनिया की दुश्मनी को कोई अहमियत न दी। अब वही आप हैं कि जिस शहर ने एक डरे हुए मुहाजिर की हैसियत से आप का स्वागत किया था, आज आठ साल बाद वही शहर आपका इस हैसियत से स्वागत कर रहा है कि मक्का आप के अधीन है और उस ने अपने बड़कपन और अज्ञानता को आप के पैरों तले डाल दिया है और आप उसकी पिछली ग़लती माफ़ कर के उसे इस्लाम के ज़रिए श्रेष्ठता प्रदान कर रहे हैं।

إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

"निश्चित रूप से जो आदमी सच्चाई और सब्र अपनाए तो बेशक अल्लाह नेकी करने वालों का बदला बर्बाद नहीं करता।[9]" (12:90)

---

[9] फ़िक़्हुस-सीरा 303 फ़तह मक्का और ग़ज़्वा-ए-ताइफ़ की तफ़सील के लिए देखें ज़ादुल-मआद 2/160-201, इब्ने हिशाम 2/389 501, बुख़ारी 2/612-622, फ़तहुल-बारी 8/3-85

मक्का-विजय के बाद के सराया और कर्मचारियों का रवाना किया जाना

इस लम्बी और सफ़ल यात्रा से वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में कुछ लम्बे समय तक ठहरे। इस बीच आप प्रतिनिधि-मंडलों का स्वागत करते रहे, सरकारी कर्मचारियों को भेजते रहे, दीन की दावत देने वालों को रवाना फ़रमाते रहे और जिन्हें अल्लाह के दीन में दाख़िले और अ़रब के भीतर अभरने वाली शक्ति को मान्यता देने में अभिमान रोक बना हुआ था, उन्हें पराजित करते रहे। इन बातों का हल्का सा चित्र सेवा में दिया जा रहा है।

ज़कात वसूल करने वाले

पिछली वार्ताओं से मालूम हो चुका है कि मक्का-विजय के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 08 हि० के आख़िर में तशरीफ़ लाए थे। सन् 09 हि० का मुहर्रम का चांद निकलते ही आपने क़बीलों के पास सदक़ों की वसूली के लिए ज़िम्मेदार भेजे, जिनकी सूची इस तरह है------

ज़िम्मेदारों के नाम	वह क़बीला जिससे ज़कात वूसल करनी थी
1. उयैना बिन हिस्न रज़ि०	बनू तमीम
2. यज़ीद बिन अल-हुसैन रज़ि०	असलम और गिफ़ार

3. इबाद बिन बशीर अशहली रज़ि०	सुलैम और मुज़ैना
4. राफ़ेअ् बिन मुकीस रज़ि०	जुहैना
5. अ़म्र बिन अल-आस रज़ि०	बनू फ़ज़ारा
6. ज़हहाक बिन सुफ़ियान रज़ि०	बनू किलाब
7. बशीर बिन सुफियान रज़ि०	बनू काब
8. इब्नुल-लुतबिया अ़ज़्दी रज़ि०	बनू जुबयान
9. मुहाजिर बिन अबी उमैया रज़ि०	शहर सनआ़ (इन की मौजूदगी में इनके ख़िलाफ़ अस्वद अंसी ने सनआ़ में बाइकाट किया था)
10. ज़ियाद बिन लबीद रज़ि०	इलाक़ा हिज़रमूत
11. अ़दी बिन हातिम रज़ि०	तई और बनू असद
12. मालिक बिन नुवैरा रज़ि०	बनू हंज़ला
13 ज़बरक़ान बिन बद्र रज़ि०	बनू साद (की एक शाखा)
14. क़ैस बिन आ़सिम रज़ि०	बनू साद (की दूसरी शाखा)
15. अ़ला बिन अल-हज़्रमी रज़ि०	इलाक़ा बहरैन
16. अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि०	इलाक़ा नजरान (ज़कात और जिज़िया दोनों वसूल करने के लिए)

स्पष्ट रहे कि ये सारे ज़िम्मेदार (कर्मचारी) मुहर्रम 09 हि० ही में नहीं रवाना कर दिए गए थे, बल्कि कुछ की रवानगी ख़ासी देर से उस वक़्त अ़मल में आयी थी जब मुताल्लिक़ा क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। अलबत्ता इस ध्यान के साथ इन ज़िम्मेदारों की रवानगी की शुरूआ़त मुहर्रम सन् 09 हि० में हुई थी और इसी से हुदैबिया समझौते के बाद इस्लामी दावत की कामियाबी के फैलाव का अंदाज़ा लगाया जा सकता है, बाक़ी रहा मक्का-विजय के बाद का दौर तो इसमें तो लोग अल्लाह के दीन में झुंड के झुंड दाख़िल हुए।

सराया

जिस तरह क़बीलों की तरफ़ ज़कात वसूल करने के लिए ज़िम्मेदार भेजे गए, उसी तरह अ़रब प्रायद्वीप के आम इलाक़ों में अम्न व अमान क़ायम हो चुकने के बावजूद कुछ जगहों पर कई फ़ौजी मुहिमें भी भेजनी पड़ीं। सूची इस तरह है———

1.सरिय्या उयैना बिन हिस्न फ़ज़ारी (मुहर्रम सन् 09 हि०)

उयैना रज़ि० को पचास सवारों की कमान दे कर बनू तमीम के पास भेजा गया था। वजह यह थी कि बनू तमीम ने क़बीलों को भड़का कर जिज़िया अदा करने से रोक दिया था। इस मुहिम में कोई मुहाजिर या अंसारी न था।

उयैना बिन हिस्न रज़ि० रात को चलते और दिन को छिपते हुए आगे बढ़े, यहां तक कि मैदान में बनू तमीम पर हल्ला बोल दिया। वे लोग पीठ फेर कर भागे और उनके ग्यारह आदमी, इक्कीस औ़रतें और तीस बच्चे गिरफ़्तार हुए जिन्हें मदीना ला कर रमला बिन्ते हारिस के मकान में ठहराया गया।

फिर इनके सिलसिले में बनू तमीम के दस सरदार आए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर जा कर यूं आवाज़ लगाई, ऐ मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास आओ। आप बाहर तशरीफ़ लाए तो ये लोग आपसे चिमट कर बातें करने लगे, फिर आप उन के साथ ठहरे रहे, यहां तक कि ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद मस्जिदे नबवी के आंगन में बैठ गए। उन्होंने गर्व और अभिमान में मुक़ाबले की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और अपने वक्ता उतारिद बिन हाजिब को पेश किया। उसने भाषण दिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़तीबे इस्लाम (इस्लाम के वक्ता) हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास को हुक्म दिया और उन्होंने जवाबी तक़रीर (भाषण) की। इसके बाद उन्होंने अपने कवि ज़बरक़ान बिन बद्र को आगे बढ़ाया और

उसने कुछ गर्व भरे पद्य कहे। इसका जवाब इस्लामी शायर (कवि) हस्सान बिन साबित रज़ि० ने दिया।

जब दोनों वक्ता और दोनों कवि अपना काम कर चुके तो अक़रअ़ बिन हाबिस ने कहा, इनका वक्ता हमारे वक्ता से ज़्यादा ज़ोरदार और इनका कवि हमारे कवि से ज़्यादा ज़ोरदार है। इनकी आवाज़ें हमारी आवाज़ों से ज़्यादा ऊंची हैं और इन की बातें हमारी बातों से ज़्यादा ऊंची हैं। इसके बाद इन लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्हें अच्छे उपहार दिए और इनकी औ़रतें और बच्चे इन्हें वापस कर दिए।[1]

02. सरिय्या कुत्बा बिन आ़मिर (सफ़र सन् 09 हि०)

यह सरिय्या तुरबा के क़रीब तिबाला के इलाक़े में क़बीला ख़सअ़म की एक शाखा की ओर रवाना हुआ। कुत्बा बीस आदमियों के साथ रवाना हुए। दस ऊंट थे जिन पर ये लोग बारी-बारी सवार होते थे। मुसलमानों ने रात को छापा मारा, जिस पर ज़बरदस्त लड़ाई भड़क उठी और दोनों फ़रीक़ के अच्छे भले लोग घायल हुए। कुत्बा कुछ दूसरे लोगों के साथ मारे गए, फिर भी मुसलमान भेड़-बकरियों और बाल-बच्चों को मदीना हांक लाए।

3.सरिय्या ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान किलाबी (रबीउल अव्वल सन् 09 हि०)

यह टुकड़ी बनू किलाब को इस्लाम की दावत देने के लिए भेजी गयी थी लेकिन उन्होंने इंकार करते हुए लड़ाई छेड़ दी। मुसलमानों ने इन्हें परास्त किया और उनका एक आदमी मार दिया।

1) अहले मग़ाज़ी का ब्यान यही है कि यह घटना मुहर्रम 9 हिजरी में घटी। लेकिन यह बात समझ में नहीं आती क्योंकि घटनाक्रम से मालूम होता है कि अक़रअ़ बिन हाबिस इससे पहले मुसलमान नहीं हुए थे। जबकि खुद सीरत लिखने वालों का कहना है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बनू हवाज़िन के क़ैदियों को वापस करने के लिए कहा तो इसी अक़रअ़ बिन हाबिस ने कहा कि मैं और बनू तमीम वापिस नहीं करेंगे इसका मतलब यह हुआ कि अक़रअ बिन हाबिस इस मुहर्रम 9 हिजरी वाली घटना से पहले मुसलमान हो चुके थे।

4.सरिय्या अलक़मा बिन मुजरज़ मुदलजी (रबीउल आख़िर सन् 09 हि०)

इन्हें तीन सौ आदमियों की कमान दे कर जद्दा तट की ओर भेजा गया। वजह यह थी कि कुछ हब्शी जद्दा के तट के क़रीब जमा हो गये थे और वे मक्का वालों के ख़िलाफ़ डाका डालना चाहते थे। अ़लक़मा रज़ि० समुद्र में उतर कर एक द्वीप तक बढ़े। हब्शियों को मुसलमानों के आने का पता चला तो वे भाग खड़े हुए।[2]

5.सरिय्या अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि०(रबीउल अव्वल सन् 09 हि०)

इन्हें क़बीला तई के एक बुत को----- जिस का नाम क़लस (कलीसा) था----- ढाने के लिए भेजा गया था। आपके नेतृत्व में एक सौ ऊंट और पचास घोड़ों समेत डेढ़ सौ आदमी थे, झंडियां काली और फुरेरा सफ़ेद था, मुसलमानों ने फ़ज्र के वक़्त हातिम ताई के मुहल्ले पर छापा मार कर क़लस को ढा दिया और क़ैदियों, जानवरों और भेड़-बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इन्हीं क़ैदियों में हातिम ताई की बेटी भी थीं, अलबत्ता हातिम के बेटे अदी शाम देश भाग गए। मुसलमानों ने क़लस के ख़ज़ाने में तीन तलवारें और तीन ज़िरहें पाईं और रास्ते में ग़नीमत का माल बांट लिया अलबत्ता चुना गया माल अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अलग कर दिया और आले हातिम (हातिम के घर के लोगों) को नहीं बांटा।

मदीना पहुंचे तो हातिम की बेटी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दया का निवेदन करते हुए कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यहां जो आ सकता था लापता है, बाप गुज़र चुके है और मैं बुढ़िया हूं। सेवा करने की ताक़त नहीं रखती। आप मुझ पर एहसान कीजिए, अल्लाह आप पर ऐहसान करेगा।" आपने मालूम किया तुम्हारे लिए कौन आ सकता था? बोलीं, अ़दी बिन

2) फ़तहुल-बारी 8/59

हातिम! फ़रमाया, वही जो अल्लाह और रसूल से भागा है फिर आप आगे बढ़ गए। दूसरे दिन उस ने फिर यही बात दोहरायी और आपने फिर वही फ़रमाया जो कल फ़रमाया था। तीसरे दिन उसने फिर यही बात कही, तो आप ने एहसान फ़रमाते हुए उसे आज़ाद कर दिया। उस वक़्त आप के बग़ल में एक सहाबी थे, शायद हज़रत अली रज़ि०------उन्होंने कहा, आप से सवारी का भी सवाल करो। उस ने सवारी का सवाल किया। आप ने सवारी जुटाने का हुक्म भी कर दिया।

हातिम की बेटी लौट कर अपने भाई अदी के पास शाम देश गयीं। जब उनसे मुलाक़ात हुई तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बतलाया कि आप ने ऐसा कारनामा अंजाम दिया है कि तुम्हारे बाप भी वैसा नहीं कर सकते थे। उनके पास चाव या डर के साथ जाओ, चुनांचे अदी किसी अमान या लेख के बिना आप की सेवा में हाज़िर हो गए। आप उन्हें अपने घर ले गए और जब सामने बैठे तो आप ने अल्लाह का गुण-गान किया, फिर फ़रमाया, "तुम किस चीज़ से भाग रहे हो? क्या لا إله إلا الله कहने से भाग रहे हो? अगर ऐसा है तो बताओ तो क्या तुम्हें अल्लाह के सिवा किसी और माबूद (उपास्य) की जानकारी है?" उन्हों ने कहा, नहीं। फिर आप ने कुछ देर बात की, इस के बाद फ़रमाया, "अच्छा तुम इस से भागते हो कि अल्लाहु अकबर कहा जाए तो क्या तुम अल्लाह से बड़ी कोई चीज़ जानते हो?" उन्होंने कहा, नहीं। आपने फ़रमाया, "सुनो! यहूदियों पर अल्लाह के ग़ज़ब की मार है और ईसाई गुमराह हैं।" उन्होंने कहा, तो मैं एक रुख़ा मुसलमान हूं। यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा मारे ख़ुशी के दमक उठा। इसके बाद आप के हुक्म से उन्हें एक अंसारी के यहां ठहरा दिया गया और वे सुबह व शाम आपकी ख़िदमत में आते रहे।[3]

3) ज़ादुल-मआद 2/205

इब्ने इस्हाक़ ने हज़रत अदी से यह भी रिवायत की है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपने सामने अपने घर में बिठाया तो फ़रमाया, ओ-------! अ़दी बिन हातिम! क्या तुम मज़हब के तौर पर रकोसी न थे? अ़दी कहते हैं कि मैंने कहा, क्यों नहीं? आपने फ़रमाया, क्या तुम अपनी क़ौम में माले ग़नीमत का चौथाई लेने पर अ़मल पैरा नहीं थे? मैंने कहा, क्यों नहीं! आप ने फ़रमाया, हालांकि यह तुम्हारे दीन में हलाल नही। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! और इसी से मैंने जान लिया कि वाक़ई आप अल्लाह के भेजे हुए रसूल हैं, क्योंकि आप वह बात जानते हैं जो जानी नहीं जाती।[4]

मुस्नद अहमद की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अ़दी! इस्लाम लाओ सलामत रहोगे। मैं ने कहा, मैं तो खुद एक दीन का मानने वाला हूं। आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं तुम्हारा दीन तुम से बेहतर तौर पर जानता हूं। मैं ने कहा, आप मेरा दीन मुझ से बेहतर तौर पर जानते हैं? आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां! क्या ऐसा नहीं कि तुम मज़हबी तौर पर रकोसी हो, और फिर भी अपनी क़ौम के ग़नीमत के माल का चौथाई खाते हो? मैं ने कहा, क्यों नहीं! आपने फ़रमाया कि यह तुम्हारे दीन के हिसाब से हलाल नहीं। आपकी इस बात पर मुझे सर झुकाना पड़ा।[5]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अदी से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैठा था कि एक आदमी ने आ कर अकाल की शिकायत की, फिर दूसरे आदमी ने आ कर डकैती की शिकायत की। आपने फ़रमाया, "अ़दी! तुमने हियरा देखा है? अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम देख लोगे कि ऊंट पर बैठी औरत

4) इब्ने हिशाम 2/581

5) मुस्नद अहमद 4/257, 378

हियरा से चल कर आएगी, ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ करेगी और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा और अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम किसरा के ख़ज़ाने जीतोगे और अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम देखोगे कि आदमी चुल्लू-भर कर सोना या चांदी निकालेगा और ऐसे आदमी को खोजेगा, जो उसे क़ुबूल कर ले तो कोई उसे क़ुबूल करने वाला न मिलेगा———'

इसी रिवायत के आख़िर में हज़रत अदी का बयान है कि मैंने देखा कि ऊंट पर बैठी औरत हियरा से चल कर ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ करती है और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर नहीं और मैं ख़ुद उन लोगों में था जिन्होंने किसरा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ाने जीत लिए और अगर तुम लोगों की ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम लोग वह चीज़ भी देख लोगे जो नबी अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाई थी कि आदमी चुल्लू-भर सोना या चांदी निकालेगा और ऐसे आदमी को तलाश करेगा, जो उसे क़ुबूल कर ले तो कोई उसे क़ुबूल करने वाला न मिलेगा——[6]

---

6) बुख़ारी अहमद 1/507

ग़ज़वा-ए-तबूक

ग़ज़वा-ए-फ़त्हे मक्का हक़ और बातिल (सत्य-असत्य) के बीच एक निर्णायिक लड़ाई थी। इस लड़ाई के बाद अ़रब वालों के नज़दीक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत में कोई संदेह बाक़ी नहीं रह गया था, इसलिए हालात की रफ़्तार पूरी तरह बदल गई। और लोग अल्लाह के दीन में जत्थे के जत्थे दाख़िल हो गए। इसका कुछ अंदाज़ा उन विवरणों से लग सकेगा जिन्हें हम प्रतिनिधि-मंडलों के अध्याय में लाएंगे और कुछ अ़दांज़ा उस तायदाद से भी लगाया जा सकता है जो विदाई-हज में हाज़िर हुई थी-----बहरहाल अब अंदरूनी कठिनाइयों का लगभग अंत हो चुका था और मुसलमान शरीअ़ते इलाही की शिक्षा आ़म करने और इस्लाम की दावत फैलाने के लिए एकाग्र हो चुके थे।

ग़ज़्वे की वजह

मगर अब ऐसी ताक़त का रुख़ मदीने की ओर हो चुका था जो बिला वजह मुसलमानों से छेड़-छाड़ कर रही थी। यह ताक़त रूमियों की थी जो उस वक़्त धरती पर सबसे बड़ी फ़ौजी ताक़त की हैसियत रखती थी। पिछले पन्नों में यह बताया जा चुका है कि इस छेड़-छाड़ की शुरूआत शुरहबील बिन अ़म्र ग़स्सानी के हाथों अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दूत हज़रत हारिस बिन उमैर अज़्दी रज़ि० की हत्या से हुई, जब कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम का संदेश लेकर बसरा के शासक के पास तशरीफ़ ले गए थे। यह भी बताया जा चुका है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में एक सेना भेजी थी, जिसने रूमियों से मूता की धरती पर भयानक टक्कर ली, पर यह सेना उन घमंडी ज़ालिमों से बदला लेने में सफल न हुई, अलबत्ता उसने दूर व नज़दीक के अरब निवासियों पर बड़े अच्छे प्रभाव छोड़े।

क़ैसरे रूम इन प्रभावों को और इनके नतीजे में अरब क़बीलों के भीतर रूम से आज़ादी और मुसलमानों का साथ देने वाली भावनाओं को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। उसके लिए यक़ीनी तौर पर यह एक "ख़तरा" था, जो एक-एक क़दम उसकी सीमा की ओर बढ़ रहा था और अरब से मिली हुई सीमा शाम देश के लिए चुनौती बनती जा रही थी, इसलिए क़ैसर ने सोचा कि मुसलमानों की ताक़त को एक बड़े और न हरा सकने वाले ख़तरे की शक्ल अपना लेने से पहले-पहले कुचल देना ज़रूरी है ताकि रूम से मिले हुए अरब क्षेत्रों में 'फ़िले' और 'हंगामें' सर न उठा सकें।

इन वजहों से अभी मूता की लड़ाई पर एक साल भी न बीता था कि क़ैसर ने रूम के निवासियों और अपने अधीन अरबों यानी आले ग़स्सान आदि पर आधारित फ़ौज जुटानी शुरू कर दी और एक ख़ूनी और निर्णायक लड़ाई की तैयारी में लग गया।

रूम व ग़स्सान की तैयारियों की आम ख़बरें

इधर मदीना में बराबर ख़बरें पहुंच रही थीं कि रूमी मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक निर्णायक लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं। इसकी वजह से मुसलमानों को हर वक़्त खटका लगा रहता था और उनके कान कोई भी अनजानी आवाज़ सुन कर तुरन्त खड़े हो जाते थे। वह समझते थे कि रूमियों का रेला आ गया। इसका अंदाज़ा इस घटना से होता है कि इसी

सन् 09 हि० में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पाक बीवियों से नाराज़ होकर एक महीने के लिए ईला[1] कर लिया था और उन्हें छोड़ कर एक कोठे में अलग हो गए थे। सहाबा किराम रज़ि० को शुरू में स्थिति मालूम न हो सकी थी। उन्होंने समझा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तलाक़ दे दी है और इसकी वजह से सहाबा किराम रज़ि० में ज़बरदस्त रंज व ग़म फैल गया था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० इस घटना का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मेरा एक अंसारी साथी था। जब मैं (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में) मौजूद न रहता, तो वह मेरे पास ख़बर लाता और जब वह मौजूद न होता तो मैं उसके पास ख़बर ले जाता—ये दोनों ही मदीने के क़रीब रहते थे, एक दूसरे के पड़ोसी थे और बारी-बारी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते थे—उस ज़माने में हमें शाहे ग़स्सान का ख़तरा लगा हुआ था। हमें बताया गया था कि वह हम पर धावा बोलना चाहता है और इसकी वजह से हमारे सीने भरे हुए थे। एक दिन अचानक मेरा अंसारी साथी दरवाज़ा पीटने लगा और कहने लगा खोलो- खोलो! मैंने कहा, क्या ग़स्सानी आ गए। उसने कहा, नहीं बल्कि इससे भी बड़ी बात हो गयी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बीवियों से अलग हो गए हैं।[2]

एक दूसरी रिवायत में यूं है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कहा; हम में चर्चा थी कि ग़स्सानी हम पर चढ़ाई करने के लिए घोड़ों को नाल लगवा रहे हैं। एक दिन मेरा साथी अपनी बारी पर गया और इशा के वक़्त वापस आ कर मेरा दरवाज़ा बड़े ज़ोर से पीटा और कहा, क्या वह

1) औरत के पास न जाने की क़सम खा लेना अगर यह क़सम चार महीने या इससे कम वक़्त के लिए है तो इस पर शरीअत के हिसाब से कोई हुक्म लागू न होगा और अगर यह 'ईला' चार महीने से ज़्यादा वक़्त के लिए है तो फिर चार माह पूरे होते ही शरई अदालत हस्तक्षेप (मुदाख़िलत) करेगी कि शौहर या तो बीवी को बीवी की तरह रखे या इसे तलाक़ दे। कुछ सहाबा के मुताबिक़ सिर्फ़ चार महीने गुज़र जाने से तलाक़ हो जाएगी
2) बुख़ारी 2/730

(उमर रज़ि०) सो गए हैं? मैं घबड़ा कर बाहर आया। उसने कहा कि बड़ी दुर्घटना हो गई। मैंने कहा, क्या हुआ? क्या ग़स्सानी आ गए, उसने कहा, नहीं, बल्कि उससे भी बड़ी घटना, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है।[3]

इससे इस स्थिति की विकटता का अंदाज़ा लगाया जा सकता है जो उस समय रूमियों की ओर से मुसलमानों के सामने थी। इसमें और ज़्यादा बढ़ौतरी मुनाफ़िक़ों की उन चालबाज़ियों से हुई जो उन्होंने रूमियों की तैयारी की ख़बरें मदीना पहुंचने के बाद शुरू कीं। चुनांचे इसके बावजूद कि ये मुनाफ़िक़ देख चुके थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मैदान में सफल हैं और धरती की किसी ताक़त से नहीं डरते, बल्कि जो रुकावटें आपकी राह में रोक बनती हैं, वे टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं इस के बावजूद इन मुनाफ़िक़ों ने यह उम्मीद बांध ली कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन्होंने अपने सीनों में जो पुरानी आरज़ू छिपा रखी है और जिस ज़माने के चक्कर का वह एक लम्बे समय से इन्तिज़ार कर रहे हैं अब उस के पूरा होने का वक़्त क़रीब आ गया है। अपने इसी विचार की बुनियाद पर उन्होंने एक मस्जिद की शक्ल में (जो मस्जिदे ज़ुरार के नाम से मशहूर हुई) मक्कारी और षड्यंत्र का एक भट्ट तैयार किया जिस की बुनियाद ईमान वालों के दर्मियान फूट डालने और अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कुफ़्र और उन से लड़ने वालों के लिए घात की जगह जुटाने के नापाक मक़सद पर रखी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से गुज़ारिश की कि आप उस में नमाज़ पढ़ा दें। इस से मुनाफ़िक़ों का मक़सद यह था कि वे ईमान वालों को धोखे में रखें और उन्हें पता न लगने दें कि इस मस्जिद में उन के ख़िलाफ़ चाल और षड्यंत्र की कार्यवाहियां अंजाम दी जा रही हैं और मुसलमान इस

3) बुख़ारी 1/334

मस्जिद में आने-जाने वालों पर नज़र न रखें। इस तरह यह मस्जिद मुनाफ़िक़ों और उनके बाहरी दोस्तों के लिए एक शान्तिमय घोंसले और भट्ट का काम दे। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस 'मस्जिद' में नमाज़ अदा करने को लड़ाई से वापसी तक के लिए टाल दिया, क्योंकि आप तैयारी में लगे हुए थे। इस तरह मुनाफ़िक़ अपने मक़सद में सफल न हो सके और अल्लाह ने उनका परदा वापसी से पहले ही चाक कर दिया। चुनांचे आपने लड़ाई से वापस आकर उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाए उसे गिरवा दिया।

रूम व ग़स्सान की तैयारी की ख़ास ख़बरें

इन हालात और ख़बरों का मुसलमान सामना कर ही रहे थे कि उन्हें अचानक शाम देश से तेल लेकर आने वाले नब्तियों[4] से मालूम हुआ कि हिरक़्ल ने चालीस हज़ार सिपाहियों की एक भारी सेना तैयार कर रखी है और रूम के एक बड़े कमांडर को उस की कमान सौंपी है। अपने झंडे तले ईसाई क़बीलों लख़्म व जुज़ाम आदि को भी जमा कर लिया है और उन की सेना का अगला हिस्सा बलक़ा पहुंच चुका है। इस तरह एक बड़ा ख़तरा रूप धार कर मुसलमानों के सामने आ गया।

हालात की नज़ाकत में बढ़ोतरी

फिर जिस बात से स्थिति और नाज़ुक हो रही थी, वह यह थी कि ज़माना तेज़ गर्मी का था, लोग तंगी और अकाल की आज़माइश से दो चार थे, सवारियां कम थीं, फल पक चुके थे इसलिए लोग फल और साए में रहना चाहते थे, वे तुरन्त रवाना होना न चाहते थे इन सब से बढ़ कर यह कि सफ़र की दूरी और रास्ते की पेचीदगी और कठिनाई भी सामने थी।

---

4) नाबित बिन इसमाईल अलैहिस्सलाम की नस्ल जिन्हें एक वक़्त पड़ा और उत्तरी हिजाज़ में बड़ी बुलन्दी हासिल थी। ज़वाल (पतन) के बाद आहिस्ता-आहिस्ता ये लोग मामूली किसानों और ताजिरों के दर्जे में आ गए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से एक निश्चित क़दम उठाने का फ़ैसला

लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हालात व तब्दीली को बड़ी गहरी नज़र से देख रहे थे। आप समझ रहे थे कि अगर आपने इन निर्णायक घड़ियों में रूमियों से लड़ने में काहिली और सुस्ती से काम लिया, रूमियों को मुसलमानों के प्रभाव वाले इलाक़ों में घुसने का मौक़ा दिया और वे मदीना तक बढ़ और चढ़ आए तो इस्लामी दावत पर इस के बहुत ही बुरे प्रभाव पड़ेंगे। मुसलमानों की फ़ौजी साख उखड़ जाएगी और वह अज्ञानता जो हुनैन की लड़ाई में भारी चोट लगने के बाद आख़िरी सांस ले रही है, दोबारा ज़िंदा हो जाएगी और मुनाफ़िक़ जो मुसलमानों पर ज़माने की गर्दिश का इन्तिज़ार कर रहे हैं और अबू आमिर फ़ासिक़ के ज़रिए शाहे रूम से सम्पर्क बनाए हुए हैं, पीछे से ठीक उस वक़्त मुसलमानों क पीठ में तलवार घोंप देंगे जब आगे से रूमियों का रेला उन पर भयानक हमले कर रहा होगा। इस तरह वे बहुत सारी कोशिशें बेकार चली जाएंगी जो आपने और आप के सहाबा किराम रज़ि० ने इस्लाम को फैलाने में की थीं और बहुत सारी सफलताएं-असफलता में बदल जाएंगी जो लम्बी और ख़ूनी लड़ाइयों और लगातार सैनिक दौड़-धूप के बाद प्राप्त की गयी थीं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन नतीजों को अच्छी तरह समझ रहे थे। इसलिए तंगी और तेज़ी के बावजूद आप ने तय किया कि रूमियों को दारुल इस्लाम की तरफ़ बढ़ने की मोहलत दिए बिना ख़ुद उनके इलाक़े और सीमाओं में घुसकर उनके ख़िलाफ़ एक फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई लड़ी जाए।

रूमियों से लड़ाई की तैयारी का एलान

यह मामला तय कर लेने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० में एलान फ़रमा दिया कि लड़ाई की तैयारी करें।

अरब क़बीलों और मक्का वालों को भी पैग़ाम दिया कि लड़ाई के लिए निकल पड़ें। आपका क़ायदा था कि जब किसी लड़ाई का इरादा फ़रमाते तो किसी और ही तरफ़ चल पड़ते, लेकिन स्थिति की नज़ाकत और तंगी की ज़्यादती की वजह से अब की बार आप ने साफ़-साफ़ एलान फ़रमा दिया कि रूमियों से लड़ने का इरादा है, ताकि लोग पूरी तैयारी कर लें। आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर लोगों को जिहाद पर उभारा भी और लड़ाई ही पर उभारने के लिए सूरः तौबा का भी एक टुकड़ा उतरा। साथ ही आप ने सदक़ा व ख़ैरात करने की फ़ज़ीलत बयान की और अल्लाह की राह में अपना अच्छा माल ख़र्च करने पर उभारा।

ग़ज़वे की तैयारी के लिए मुसलमानों की दौड़-धूप

सहाबा किराम रज़ि० ने ज्यों ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद सुना कि आप रूमियों को लड़ाई की दावत दे रहे हैं, झट उसे पूरा करने के लिए दौड़ पड़े और पूरी तेज़ रफ़्तारी से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। क़बीले और बिरादरियां चारों तरफ़ से मदीना में उतरना शुरू हो गयीं और सिवाए उन लोगों के जिनके दिलों में निफ़ाक़ की बीमारी थी किसी मुसलमान ने इस लड़ाई से पीछे रहना गवारा न किया। अलबत्ता तीन मुसलमान इससे अलग हैं कि ईमान के सहीह होने के बावजूद उन्होंने लड़ाई में शिरकत न की। हालत यह थी कि ज़रूरतमंद और फ़ाक़ामस्त लोग आते और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्ख़्वास्त करते कि उन के लिए सवारी जुटा दें, ताकि वे भी रूमियों से होने वाली इस लड़ाई में शिरकत कर सकें, और जब आप उनसे विवशता बताते कि——

لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ

"मैं तुम्हें सवार करने के लिए कुछ नहीं पाता तो वे इस हालत में

वापस होते कि उनकी आंखों से आंसू रवां होते कि वे ख़र्च करने के लिए कुछ नहीं पा रहे हैं।" (9:92)

इसी तरह मुसलमानों ने सदक़ा व ख़ैरात करने में भी एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश की। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने शाम देश के लिए एक क़ाफ़िला तैयार किया था जिसमें पालान और कजावे समेत दो सौ ऊंट थे और दो सौ ऊक़िया (लगभग साढ़े उनत्तीस किलो) चांदी थी। आप ने यह सब सदक़ा कर दिया। इसके बाद फिर एक सौ ऊंट पालान और कजावे समेत सदक़ा किया। इसके बाद एक हज़ार दीनार (लगभग साढ़े पांच किलो सोने के सिक्के) ले आए और उन्हें नबी की गोद में बिखेर दिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें उलटते जाते थे और फ़रमाते जाते थे, आज के बाद उस्मान रज़ि० जो भी करें उन्हें नुक़सान न होगा।[5] इस के बाद हज़रत उस्मान रज़ि० ने फिर सदक़ा किया और सदक़ा किया। यहां तक कि उनके सदक़े की मात्रा नक़दी के अलावा नौ सौ ऊंट और एक सौ घोड़े तक जा पहुंची।

उधर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० दो सौ ऊक़िया (लगभग साढ़े 29 किलो) चांदी ले आए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अपना सारा माल सेवा में डाल दिया और बाल-बच्चों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के सिवा कुछ न छोड़ा। उन के सदक़े की मात्रा चार हज़ार दिरहम थी और सबसे पहले यही अपना सदक़ा लेकर तशरीफ़ लाए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने आधा माल ख़ैरात किया। हज़रत अब्बास रज़ि० बहुत सा माल लाए। हज़रत तलहा रज़ि०, साद बिन उबादा रज़ि० और मुहम्मद बिन मुस्लिम रज़ि० भी काफ़ी माल लाए। हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि० 90 वसक़ (यानी साढ़े तेरह हज़ार किलो, 13

5) तिरमिज़ीः मनाक़िबे उस्मान बिन अफ़्फ़ान 2/211

1/2टन) खजूर ले कर आए। बाक़ी सहाबा भी लगातार अपने थोड़े या ज़्यादा सदक़े ले आए, यहां तक कि किसी किसी ने एक मुद या दो मुद (माप की क़िस्म) सदक़ा किया कि वे इस से ज़्यादा की ताक़त नहीं रखते थे। औरतों ने भी हार बाज़ू बंद, पाज़ेब, बाली और अंगूठी वग़ैरह जो कुछ हो सका, आप की ख़िदमत में भेजा। किसी ने भी अपना हाथ न रोका और कंजूसी से काम न लिया। सिर्फ़ मुनाफ़िक़ थे जो सदक़ों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने वालों पर ताने किया करते थे (कि यह धोखेबाज़ है) और जिन के पास अपनी मशक़्क़त के सिवा कुछ न था, उनका मज़ाक़ उड़ाते थे कि यह एक दो मुद खजूर से क़ैसर के राज्य को जीतने उठे हैं। (9:79)

इस्लामी सेना तबूक के रास्ते में

इस धूम-धाम, जोश, उत्साह और भाग-दौड़ के नतीजे में सेना तैयार हो गई, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० को और कहा जाता है कि सिबाअ़ बिन अरफ़ता रज़ि० को मदीना का गवर्नर बनाया और हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० को अपने बाल-बच्चों की देख-भाल के लिए मदीना ही में रहने का हुक्म दिया, लेकिन मुनाफ़िक़ों ने उन पर ताने दिए इसलिए वह मदीना से निकल पड़े और अल्लाह के रसूल सल्ललाहु अलैहि व सल्लम से जा मिले, लेकिन आपने उन्हें फिर मदीना वापस कर दिया। और फ़रमाया——"क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं कि मुझ से तुम्हें वही ताल्लुक़ हो जो हज़रत मूसा अलैहि० से हज़रत हारून अलैहि० को थी, अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी न होगा।"

बहरहाल अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस इन्तिज़ाम के बाद उत्तर की ओर चल पड़े (नसाई की रिवायत के मुताबिक़ यह जुमेरात (बृहस्पतिवार) का दिन था) मंज़िल तबूक थी, लेकिन फ़ौज बड़ी थी। तीस हज़ार योद्धा थे। इससे पहले मुसलमानों की

इतनी बड़ी फ़ौज कभी नहीं जुट पायी थी, इसलिए मुसलमान ख़ूब माल खर्च करने के बावजूद सेना को पूरी तरह तैयार न कर सके थे, बल्कि सवारी और तोशे (सामान) की सख़्त कमी थी, चुनांचे अठारह-अठारह आदमियों पर एक-एक ऊंट था, जिस पर ये लोग बारी-बारी सवार होते थे। इसी तरह खाने के लिए कभी-कभी पेड़ों की पत्तियां इस्तेमाल करनी पड़ती थीं, जिस से होंठों में वरम आ गया था। मजबूर होकर ऊंटों को ------कमी के बावजूद------ज़िब्ह करना पड़ा ताकि उस के पेट और आंतों के अंदर जमा हुआ पानी और तरी पी जा सके। इसलिए इसका नाम जैशे उसरत (तंगी की फ़ौज) पड़ गया।

तबूक के रास्ते में फ़ौज का गुज़र हिज्र यानी समूद की बस्तियों से हुआ। समूद वह क़ौम थी जिसने वादियुल क़ुरा के अंदर चट्टानें काट-काट कर मकान बनाए थे। सहाबा किराम रज़ि० ने वहां के कुंए से पानी ले लिया था, लेकिन जब चलने लगे तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "तुम यहां का पानी न पीना, और इससे नमाज़ के लिए वुज़ू न करना और जो आटा तुम लोगों ने गूंध रखा है उसे जानवरों को खिला दो, ख़ुद न खाओ।" आपने यह भी हुक्म दिया कि लोग उस कुंए से पानी लें जिस से सालेह अलैहि० की ऊंटनी पानी पिया करती थी।

बुख़ारी व मुस्लिम में इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिज्र (दयारे समूद) से गुज़रे तो फ़रमाया, "इन ज़ालिमों के रहने की जगहों में दाख़िल न होना कि कहीं तुम पर भी वही मुसीबत न आ पड़े जो उन पर आई थी, हां, मगर रोते हुए" फिर अपना सर ढका और तेज़ी से चल कर घाटी पार कर गए।[6]

---

6) बुख़ारी बाब नुज़ूलुन-नबी (सल्ल०) अलल-हिज्र 2/637

रास्ते में फ़ौज को पानी की ज़बरदस्त ज़रूरत पड़ी, यहां तक कि लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकवा किया। आपने अल्लाह से दुआ की। अल्लाह ने बादल भेज दिए, वर्षा हुई, लोगों ने जी भर कर पानी पिया और ज़रूरत का पानी लाद भी लिया।

फिर जब तबूक के क़रीब पहुंचे तो आपने फ़रमाया, "कल इनशाअल्लाह, तुम लोग तबूक के चश्मे पर पहुंच जाओगे, लेकिन चाश्त से पहले नहीं पहुंचोगे। इसलिए जो आदमी वहां पहुंचे, उस के पानी को हाथ न लगाए, यहां तक कि मैं आ जाऊं।" हज़रत मुआज़ रज़ि० का बयान है कि हम लोग वहां पहुंचे तो वहां दो आदमी पहले ही पहुंच चुके थे। चश्मे से थोड़ा-थोड़ा पानी आ रहा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि क्या तुम दोनों ने उसके पानी को हाथ लगाया है? उन्होंने कहा, जी हां! आपने उन दोनों से जो कुछ अल्लाह ने चाहा, फ़रमाया। फिर चश्मे से चुल्लू के ज़रिए थोड़ा-थोड़ा पानी निकाला, यहां तक कि कुछ जमा हो गया। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस में अपना चेहरा और हाथ धोया और उसे चश्मे में उंडेल दिया। इसके बाद चश्मे से ख़ूब पानी आया। सहाबा किराम रज़ि० ने ख़ूब जी भर कर पिया, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "ऐ मुआज़! अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम इस जगह को बाग़ों से हरा-भरा देखोगे।[7]"

रास्ते ही में या तबूक पहुंच कर——रिवायतों में मतभेद है——अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "आज रात तुम पर कड़ी आंधी चलेगी, इसलिए कोई न उठे और जिस के पास ऊंट हो वह उसकी रस्सी मज़बूती से बांध दे।" चुनांचे तेज आंधी चली। एक आदमी खड़ा हो गया तो आंधी ने उसे उड़ा कर तई की दो पहाड़ियों के पास फेंक दिया।[8]

---

7) मुस्लिम मुआज़ बिन जब्ल की रिवायत 2/246

8) मुस्लिम मुआज़ बिन जब्ल की रिवायत 2/246

रास्ते में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि आप ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ें इकट्ठी और मग़्रिब और इशा की नमाज़ें इकट्ठी पढ़ते थे। जमा तक़दीम भी करते थे और जमा ताख़ीर भी (जमा तक़दीम का मतलब यह है कि ज़ुह्र और अस्र दोनों ज़ुह्र के वक़्त में और मग़्रिब और इशा दोनों मग़्रिब के वक़्त में पढ़ी जाएं। और जमा ताख़ीर का मतलब यह है कि ज़ुह्र और अस्र दोनों अस्र के वक़्त में और मग़्रिब और इशा दोनों इशा के वक़्त में पढ़ी जाएं)

इस्लामी सेना तबूक में

इस्लामी सेना ने तबूक में उतर कर पड़ाव डाल दिया। वह रूमियों से दो-दो हाथ करने के लिए तैयार थी। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सेना को ख़िताब कर के बहुत शानदार तक़रीर की। दुनिया और आख़िरत की भलाई का चाव दिलाया, अल्लाह के अज़ाब से डराया और उसके इनामों की ख़ुशख़बरी दी। इस तरह सेना का हौसला बुलन्द हो गया। उन में तोशे, ज़रूरत के सामान की कमी की वजह से जो कमी और ख़राबी थी वह भी दूर हो गयी। दूसरी ओर रूमियों और उनके हामियों का यह हाल हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की ख़बर सुन कर उनके भीतर भय की लहर दौड़ गयी। उन्हें आगे बढ़ने और टक्कर लेने की हिम्मत न हुई और वे देश के भीतर विभिन्न शहरों में बिखर गये। उनकी इस पालीसी का असर अ़रब प्रायद्वीप के भीतर और बाहर मुसलमानों की फ़ौजी साख पर बहुत अच्छा पड़ा और मुसलमानों ने ऐसे-ऐसे अहम राजनीतिक फ़ायदे हासिल किए कि लड़ाई की शक्ल में उसका हासिल करना आसान न होता। विस्तृत विवरण इस तरह है।

ऐला के शासक यहन्ना बिन रूबा ने आप की सेवा में हाज़िरी देकर जिज़िया की अदाएगी मंज़ूर की और मिल कर रहने का समझौता किया। जरबा और अज़रुह के निवासियों ने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर जिज़िया देना मंज़ूर कर लिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए एक लेख लिखा जो उनके पास सुरक्षित था। आप ने ऐला के हाकिम को भी एक लेख लिख कर दिया, जो यह था------

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमः यह अम्न का परवाना है अल्लाह की ओर से और अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से यहना बिन रूबा और ऐला के निवासियों के लिए। जल-काल में उनकी नावों और क़ाफ़िलों के लिए अल्लाह का ज़िम्मा है और मुहम्मद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िम्मा है और यही ज़िम्मा उन शामी और समुद्री निवासियों के लिए है जो यहना के साथ हों। हां! अगर उन का कोई आदमी कोई गड़बड़ करेगा तो उसका माल उस की जान के आगे रोक न बन सकेगा और जो आदमी उसका माल ले लेगा उस के लिए वह हलाल होगा। उन्हें किसी चश्मे पर उतरने और ख़ुश्की या समुद्र के रास्ते पर चलने से मना नहीं किया जा सकता।"

इसके अलावा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को चार सौ बीस सवारों की टुकड़ी देकर दूम-तुल-जुन्दल के हाकिम उकैदिर के पास भेजा और फ़रमाया, तुम इसे नील गाय का शिकार करते हुए पाओगे। हज़रत ख़ालिद रज़ि० वहां तशरीफ़ ले गए। जब इतनी दूरी पर रह गये कि क़िला साफ़ नज़र आ रहा था तो अचानक एक नील गाय निकली और क़िले के दरवाज़े पर सींग रगड़ने लगी। उकैदिर उस के शिकार को निकला, चांदनी रात थी। हज़रत ख़ालिद रज़ि० और उन के सवारों ने उसे जा लिया और गिरफ़्तार कर के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया। आपने उस की जान बख़्शी और दो हज़ार ऊंट, आठ सौ गुलाम, चार सौ ज़िरहें और चार सौ नेज़े देने की शर्त पर समझौता कर लिया। उस ने जिज़िया भी देने का इक़रार किया। चुनांचे

आपने उससे यहना समेत दूमा, तबूक, ऐला और तैमा की शर्तों के मुताबिक़ मामला तय किया।

इन हालात को देख कर, वे क़बीले जो अब तक रूमियों के हाथ का खिलौना बने हुए थे, समझ गए कि अब अपने इन पुराने अभिभावकों पर भरोसा करने का समय ख़त्म हो चुका है, इसलिए वे भी मुसलमानों के समर्थक बन गए। इस तरह इस्लामी हुकूमत की सीमाएं फैल कर सीधे-सीधे रूमी सीमा से जा मिलीं और रूमियों के आला-ए-कारों (मुखलगों) का बड़ी हद तक ख़ात्मा हो गया।

मदीना को वापसी

इस्लामी सेना तबूक से पूरी तरह जीत कर वापस आयी। कोई टक्कर न हुई। अल्लाह लड़ाई के मामले में ईमान वालों के लिए काफ़ी हुआ। अलबत्ता रास्ते में एक जगह एक घाटी के पास बारह मुनाफ़िक़ों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने की कोशिश की। उस वक़्त आप उस घाटी से गुज़र रहे थे और आप के साथ सिर्फ़ हज़रत अम्मार रज़ि० थे जो ऊंटनी की नकेल थामे हुए थे और हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० थे जो ऊंटनी हांक रहे थे। बाक़ी सहाबा किराम दूर घाटी के निचले हिस्से से गुज़र रहे थे। इसलिए मुनाफ़िक़ों ने इस मौक़े को अपने नापाक मक़सद के लिए उपयुक्त समझा और आपकी तरफ़ क़दम बढ़ाया। इधर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके दोनों साथी पहले की तरह रास्ता तय कर रहे थे कि पीछे से इन मुनाफ़िक़ों के क़दमों की आवाज़ें सुनाई दीं। ये सब चेहरों पर ढाटा बांधे हुए थे और अब आप पर लगभग चढ़ ही आए थे कि आपने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० को उनकी ओर भेजा। उन्होंने उनकी सवारियों के चेहरे पर अपनी एक ढाल से चोट लगानी शुरू की, जिससे अल्लाह ने उन्हें रोब में डाल दिया और वे तेज़ी से भाग कर लोगों में जा मिले। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके नाम बताए और उनके इरादे की

ख़बर दी। इसीलिए हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम "राज़दां" कहा जाता है। इस घटना से मुताल्लिक़ अल्लाह का यह इर्शाद आया------وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا

"उन्हों ने उस काम का इरादा किया, जिसे वे पा न सके।"(9:74)

सफ़र के ख़ात्मे पर जब दूर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना के चिन्ह दिखाई पड़े तो आप ने फ़रमाया, "यह रहा ताबा और यह रहा उहुद, यह वह पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत करता है और जिस से हम मुहब्बत करते हैं।" इधर मदीना में आपके आने की ख़बर पहुंची तो औरतें, बच्चे और बच्चियां बाहर निकल पड़ी और पूरे सम्मान के साथ सेना का स्वागत करते हुए यह गीत गुनगुनाया[9]-------

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ

"हम पर सनीयतुल वदाअ़ से चौदहवीं का चांद निकला, जब तक पुकारने वाला अल्लाह को पुकारे, हम पर शुक्र वाजिब है।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक के लिए रजब में रवाना हुए थे और वापस आए तो रमज़ान का महीना था। इस सफ़र में पूरे पचास दिन लगे—बीस दिन तबूक में और तीस दिन आने-जाने में। यह आपकी ज़िंदगी की आख़िरी लड़ाई थी, जिसमें आप स्वयं शरीक हुए।

पीछे रह जाने वाले

यह लड़ाई अपने ख़ास हालात को देखते हुए अल्लाह की ओर से एक कड़ी आज़माइश भी थी जिससे ईमान वाले और दूसरे लोगों में अंतर हो गया और इस क़िस्म के मौक़े पर अल्लाह का तरीक़ा भी यही है, इर्शाद है------

---

9) यह इब्ने क़य्यिम का इर्शाद है और इस पर वाद-विवाद (ब्यान) गुज़र चुकी है।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّى يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ

"अल्लाह ईमान वालों को उसी हालत पर छोड़ नहीं सकता जिस पर तुम लोग हो, यहां तक कि नापाक को पाक से अलग कर दे।" (3:179)

चुनांचे इस लड़ाई में सारे के सारे सच्चे ईमान वालों ने शिरकत की और इस से ग़ैर-हाज़िरी निफ़ाक़ (कपटाचार) की निशानी क़रार पाई, चुनांचे स्थिति यह थी कि अगर कोई पीछे रह गया था और उस का ज़िक्र अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया जाता तो आप फ़रमाते कि इसे छोड़ो। अगर इसमें भलाई है तो अल्लाह इसे जल्द ही तुम्हारे पास पहुंचा देगा और अगर ऐसा नहीं है तो फिर अल्लाह ने तुम्हें इस से राहत दे दी है। ग़रज़ इस लड़ाई से या तो वे लोग पीछे रहे जो विवश थे या वे लोग जो मुनाफ़िक़ थे, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से ईमान का झूठा दावा किया था और अब झूठा बहाना कर के लड़ाई में शरीक न होने की इजाज़त ले ली थी और पीछे बैठे रहे थे या सिरे से इजाज़त लिए बिना ही बैठे रह गए थे। हां, तीन आदमी ऐसे थे जो सच्चे और पक्के ईमान वाले थे और किसी जायज़ वजह के बिना पीछे रह गए थे। उन्हें अल्लाह ने आज़माइश में डाला और फिर उनकी तौबा क़ुबूल की।

इसका विवरण यह है कि वापसी पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में दाख़िल हुए तो मामूल के मुताबिक़ सब से पहले मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए, वहां दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर लोगों के लिए बैठ गए। इधर मुनाफ़िक़ों ने जिनकी तायदाद अस्सी से कुछ ज़्यादा थी[10], आ-आ कर विवशताएं बतानी शुरू कीं और क़समें खाने लगे।

---

10) वाक़िदी ने कहा है कि यह तअदाद मुनाफ़िक़ीन अनसार की थी इनके अलावा बनी ग़िफ़ार वग़ैरह अअराब में से क्षमा (मुआफ़ी) मांगने वालों की तअदाद भी 82 थी फिर अब्दुल्लाह बिन उबई और इसके मानने वाले थे और इनकी भी अच्छी-ख़ासी तअदाद थी (देखिए फ़तहुल-बारी 8/119)

आपने उनसे उनका ज़ाहिर कुबूल करते हुए बैअत कर ली और मग़्फ़िरत की दुआ की। और उन का बातिन अल्लाह के हवाले कर दिया।

बाक़ी रहे तीनों सच्चे मोमिन ——यानी हज़रत काब बिन मालिक रज़ि०, मुरारह बिन रुबैअ रज़ि० और हिलाल बिन उमैया रज़ि०——तो उन्होनें सच्चाई अपनाते हुए माना कि हमने किसी मजबूरी के बिना लड़ाई में शिरकत नहीं की थी। इसपर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया कि इन तीनों से बातचीत न करें। चुनांचे उन के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त बाइकाट शुरू हो गया। लोग बदल गए, धरती भयानक बन गई और फैलाव के बावजूद तंग हो गई, ख़ुद उनकी अपनी जान पर बन आई, सख़्ती यहां तक बढ़ी कि चालीस दिन गुज़रने के बाद हुक्म दिया गया कि अपनी औरतों से भी अलग रहें जब बाइकाट पर पचास दिन पूरे हो गए तो अल्लाह ने उनकी तौबा कुबूल किए जाने की ख़ुशख़बरी उतारी। कहा गया———

وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُھُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ۭ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ؀

"और अल्लाह ने उन तीन आदमियों की भी तौबा कुबूल की जिनका मामला पीछे कर दिया गया था, यहां तक कि जब ज़मीन अपने फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गयी और उनकी जान भी उन पर तंग हो गयी और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि अल्लाह से (भाग कर) पनाह की कोई जगह नहीं है मगर उसी की तरफ़, फिर अल्लाह उन पर रुजूअ हुआ ताकि वे तौबा करें, यक़ीनन अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।" (9:118)

इस फ़ैसले के नाज़िल होने पर मुसलमान आम तौर से और ये तीनों सहाबा किराम ख़ास तौर से बेहद ख़ुश हुए। लोगों ने दौड़-दौड़ कर ख़ुशख़बरी दी, ख़ुशी से चेहरे खिल उठे और ईनाम और सदक़े दिए। हक़ीक़त में यह उनकी ज़िंदगी का सबसे अच्छा दिन था।

इसी तरह जो लोग मजबूरी की वजह से लड़ाई में शरीक न हो सके थे, उनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया-------

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ

"कमज़ोरों पर, रोगियों पर और जो लोग ख़र्च करने के लिए कुछ न पाएं, उन पर कोई हरज नहीं जबकि वे अल्लाह और रसूल का भला चाहने वाले हों।" (9:91)

इनके बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी मदीना के क़रीब पहुंच कर फ़रमाया था, "मदीना में कुछ लोग ऐसे हैं कि तुमने जिस जगह भी सफ़र किया और जो घाटी भी तय की, वह तुम्हारे साथ रहे, उन्हें मजबूरी ने रोक रखा था।" लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! वे मदीना में रहते हुए भी (हमारे साथ थे) आप ने फ़रमाया, (हां) मदीना में रहते हुए भी।

इस ग़ज़्वे का असर

यह ग़ज़्वा अ़रब प्रायद्वीप पर मुसलमानों का असर फैलाने और उसे ताक़त पहुंचाने में बड़ा असरदार साबित हुआ। लोगों पर यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो गयी कि अब अ़रब प्रायद्वीप में इस्लाम की ताक़त के सिवा और कोई ताक़त ज़िंदा नहीं रह सकती। इस तरह जाहिलों और मुनाफ़िक़ों की वे बची-खुची आरज़ूएं और उम्मीदें भी ख़त्म हो गयीं जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ ज़माने की गर्दिश के इन्तिज़ार में उन के दिल के कोनों में छिपी थीं, क्योंकि उनकी सारी उम्मीदों और आरज़ूओं की

धुरी रूमी ताक़त थी और इस लड़ाई में उस का भी भ्रम खुल-गया था इसलिए इन लोगों के हौसले टूट गए और इन्होंने हक़ीक़त के सामने हथियार डाल दिये कि अब इस से भागने और छुटकारा पाने का कोई रास्ता ही नहीं रह गया था।

और इसी स्थिति की बुनियाद पर अब इस की भी ज़रूरत नहीं रह गयी थी कि मुसलमान मुनाफ़िक़ों के साथ नर्मी का मामला करें, इसलिए अल्लाह ने उन के ख़िलाफ़ सख़्त रवैया अपनाने का हुक्म दिया। यहां तक कि उन के सदक़े क़ुबूल करने, उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने, उन के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करने और उन की ——क़ब्रों पर खड़े होने से रोक दिया और उन्होंने मस्जिद के नाम पर षड़यंत्र और फ़ित्नों का जो घोंसला तैयार किया था, उसे ढा देने का हुक्म दिया। और उन के बारे में ऐसी-ऐसी आयतें उतारीं कि वे बिल्कुल नंगे हो गए और उन्हें पहचानने में कोई संदेह न रहा, मानो मदीना वालों के लिए इन आयतों ने उन मुनाफ़िक़ों पर उंगलियां रख दीं।

इस लड़ाई के प्रभावों का अंदाज़ा इस से भी किया जा सकता है कि मक्का-विजय के बाद (बल्कि इस से पहले भी) अरब के प्रतिनिधि-मंडल यद्यपि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आना शुरू हो गये थे, लेकिन उन की भरमार इस लड़ाई के बाद ही हुई।[11]

इस ग़ज़वे से मुताल्लिक़ क़ुरआन का उतरना

इस ग़ज़वे से मुताल्लिक़ सूरः तौबा की बहुत सी आयतें उतरीं, कुछ आयतें रवानगी (प्रस्थान) से पहले कुछ रवानगी के बाद सफ़र के बीच और कुछ मदीना वापस आने के बाद। इन आयतों में ग़ज़वे के

11) इस ग़ज़वे की तफ़सील इन किताबों से ली गई है। इब्ने हिशाम 2/515-537, ज़ादुल-मआद 3/2-13 बुख़ारी 2/623-637, 1/252,414, मुस्लिम शरह नववी के साथ 2/246, फ़त्हुल-बारी 8/110-126, मुख़्तसरुस-सीरा (शेख़ अब्दुल्लाह) 291-407

हालात बताए गए हैं। मुख़लिस (सदभावक) मुजाहिदों की फ़ज़ीलत ब्यान की गई हैं और सच्चे ईमान वाले जो लड़ाई में गये थे और जो नहीं गए थे, उन की तौबा के कुबूल होने का उल्लेख है आदि-आदि।

इस वर्ष की कुछ अहम घटनाएं

इस सन् (09 हि०) में एतिहासिक महत्त्व की भी बहुत सी घटनांए घटीं।

1. तबूक से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद उवैमिर अजलानी और उनकी पत्नी के बीच लिआन हुआ।

2. ग़ामिदीया औरत को जिसने आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर बदकारी का इक़रार किया था, रज्म किया गया। जब इस औरत ने बच्चे को जन्म देने के बाद जब दूध छुड़ा लिया तब इसे रज्म किया गया था।

3. असहमा नज्जाशी शाहे हब्शा ने वफ़ात पाई और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी ग़ायबाना जनाज़े की नमाज़ पढ़ी।

4. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी उम्मे कुलसूम रज़ि० की वफ़ात हुई। उन की वफ़ात पर आप को बड़ा दुख हुआ और आपने हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया कि अगर मेरे पास तीसरी लड़की होती, तो उस की शादी भी तुमसे कर देता।

5. तबूक से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने वफ़ात पाई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ की और हज़रत उमर रज़ि० के रोकने के बावजूद उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। बाद में वह्य नाज़िल हुई और उस में हज़रत उमर रज़ि० का साथ देते और समर्थन करते हुए मुनाफ़िक़ों पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से मना कर दिया गया।

हज सन् 09 हि०

(हज़रत अबू बक्र रज़ि० के नेतृत्व में)

इसी साल ज़ी-कअ़दा में या ज़िलहिज्जा (सन् 09 हि०) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज के मनासिक अदा करने की ग़रज़ से अबू बक्र रज़ि० को हज का अमीर बना कर रवाना फ़रमाया।

इसके बाद सूरः बराअ़त का शुरू का हिस्सा नाज़िल हुआ जिसमें मुश्रिकों से किए गए वायदे को बराबरी की बुनियाद पर ख़त्म करने का हुक्म दिया गया था। इस हुक्म के आ जाने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० को रवाना फ़रमाया ताकि वह आपकी ओर से इसका एलान कर दें। ऐसा इसलिए करना पड़ा कि ख़ून और माल के समझौतों के सिलसिले में अ़रब का यही तरीक़ा था (कि आदमी या तो ख़ुद एलान करे या अपने ख़ानदान के किसी आदमी से एलान कराए। ख़ानदान के बाहर के किसी आदमी का किया हुआ एलान माना नहीं जाता था) हज़रत अबू बक्र रज़ि० से हज़रत अ़ली रज़ि० की मुलाक़ात अर्ज या ज़जनान घाटी में हुई। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने मालूम किया कि अमीर हो या मातहत? हज़रत अ़ली रज़ि० ने कहा, नहीं बल्कि मातहत हूं। फिर दोनों आगे बढ़े------हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने लोगों को हज कराया। जब (दसवीं तारीख़) यानी क़ुर्बानी का दिन आया तो हज़रत अ़ली बिन अबी

तालिब ने जमरा के पास खड़े हो कर लोगों में वह एलान किया जिसका हुक्म अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया था यानी तमाम अहद (समझौता) वालों का समझौता ख़त्म कर दिया और उन्हें चार महीने की मोहलत दी। इसी तरह जिनके साथ कोई समझौता न था, उन्हें चार महीने की मोहलत दी। अलबत्ता जिन मुशिरकों ने मुसलमानों से वायदा निभाने में कोई कोताही न की थी और न मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी की मदद की थी, उन का वायदा उन की तय की हुई मुद्दत तक बाक़ी रखा।

और हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने सहाबा किराम रज़ि० की एक जमाअत भेज कर यह आम एलान कराया कि आगे से कोई मुशिरक हज नहीं कर सकता और न कोई नंगा आदमी अल्लाह के घर का तवाफ़ कर सकता है।

यह एलान मानो अरब प्रायद्वीप से मूर्ति-पूजा के ख़ात्मे का एलान था यानी इस साल के बाद मूर्ति-पूजा के लिए आने-जाने की कोई गुंजाइश नहीं।[1]

---

1) इस हज की तफ़सील के लिए देखिए बुख़ारी 1/220, 451, 2/626,671, ज़ादुल-मआद 3/25-26, इब्ने हिशाम 2/543-546 तथा तफ़सीर की किताबों में सूरते बराअत की शुरू की आयतों की तफ़सीर

ग़ज़वात पर एक नज़र

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ज़वात, सराया और सैनिक मुहिमों पर एक नज़र डालने के बाद कोई भी आदमी जो लड़ाई के माहौल, पृष्ठि-भूमि और प्रभावों और परिणामों का ज्ञान रखता हो, यह माने बिना नहीं रह सकता कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया के सब से बड़े और कमाल वाले फ़ौजी कमांडर थे। आपकी सूझ-बूझ सब से ज़्यादा सही और आप की बुद्धिमत्ता और जागरुकता सब से ज़्यादा गहरी थी। आप जिस तरह नुबुवत और रिसालत के गुणों में "सैयदुर्रुसुल" (रसूलों के सरदार) और अअ़ज़मुल अंबिया (नबियों में सब से बड़े) थे, उसी तरह सैनिक नेतृत्व के गुण में भी अकेले ज़हीन इंसान थे। चुनांचे आप ने जो भी लड़ाई लड़ी, उस के लिए ऐसी स्थिति और दशा का चुनाव फ़रमाया जो सूझ-बूझ, सोच विचार और हिक्मत और बहादुरी के ठीक मुताबिक़ थी, किसी लड़ाई में सूझ-बूझ, फ़ौज का क्रम और नाज़ुक क्षेत्रों में उस की तैनाती, लड़ाई की सब से मुनासिब जगह के चुनाव और सामरिक योजना आदि में आपसे कभी कोई चूक नहीं हुई और इसी लिए इस बुनियाद पर आपको कभी कोई चोट नहीं सहनी पड़ी, बल्कि उन तमाम सामरिक मामलों और समस्याओं के सिलसिले में आपने अपने उठाए क़दमों से साबित कर दिया कि दुनिया बड़े-बड़े कमांडरों के ताल्लुक़ से जिस तरह के नेतृत्व का ज्ञान रखती है, आप उससे बहुत कुछ अलग एक निराली ही क़िस्म की कमांडर क्षमता

के मालिक थे, जिसके साथ हारने का कोई सवाल ही न था। इस मौक़े पर यह बता देना भी ज़रूरी है कि उहद और हुनैन में जो कुछ पेश आया, उस की वजह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किसी कार्यविधि की कोई कमज़ोरी न थी, बल्कि उस के पीछे हुनैन में फ़ौज के कुछ लोगों की कुछ कमज़ोरियां काम कर रही थीं, और उहद में आप की बड़ी अहम नीति और ज़रूरी हिदायतों को बड़े निर्णायक क्षणों में नज़रअंदाज़ कर दिया गया था।

फिर इन दोनों लड़ाइयों में जब मुसलमानों को नुक़्सान उठाने की नौबत आयी, तो आपने जिस बुद्धि का प्रयोग किया वह अपनी मिसाल आप थी। आप दुश्मन के मुक़ाबले में डटे रहे और अपनी सूझ-बूझ वाली नीतियों से उसे या तो उसके मक़सद में नाकाम कर दिया--------जैसा कि उहद में हुआ-------या लड़ाई का पांसा इस तरह पलट दिया कि मुसलमानों की हार, जीत में बदल गई------जैसा कि हुनैन में हुआ------हालांकि उहद जैसी ख़तरनाक स्थिति और हुनैन जैसी बे-लगाम भगदड़ सेनापतियों की निर्णय-शक्ति ख़त्म कर देती है और उन के अअ़साब (स्नायुओं) पर इतना बुरा असर डालती है कि उन्हें अपने बचाव के अ़लावा और कोई चिन्ता नहीं रह जाती।

ये बातें तो इन ग़ज़वात (लड़ाइयों) के ख़ालिस फ़ौजी और जंगी पहलू से थी। बाक़ी रहे दूसरे पहलू तो वे भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। आपने इन लड़ाइयों के द्वारा शान्ति स्थापित की, उपद्रव की आग बुझाई। इस्लाम और मूर्ति-पूजा के संघर्ष में शत्रु का दबदबा तोड़ कर रख दिया और उन्हें इस्लामी दावत व तब्लीग़ की राह आज़ाद छोड़ने और समझौता करने पर मजबूर कर दिया। इसी तरह आपने इन लड़ाइयों की बदौलत यह भी मालूम कर लिया कि आपका साथ देने वालों में कौन से लोग मुख़लिस हैं और कौन से लोग कपटाचारी जो दिल के भीतर विद्रोह और बिगाड़ की भावनाएं छिपाए हुए हैं।

फिर आप ने मोर्चा बन्दी के अमली नमूनों के ज़रिए मुसलमान कमांडरों की एक ज़बरदस्त जमाअत भी तैयार कर दी जिन्होंने आप के बाद इराक़ व शाम के मैदानों में फ़ारस व रूम से टक्कर ली और लड़ाई की नीति और तकनीक में उन के बड़े-बड़े कमांडरों को मात दे कर उन्हें उन के मकानों और भू-भाग से, मालों और बागों से, चश्मों और खेतों से, आराम देने वाले और इज़्ज़तदार जगहों से और मज़ेदार नेमतों से निकाल बाहर किया।

इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन ग़ज़वात की वजह से मुसलमानों के लिए मकान, खेती, पेशे और काम का इन्तिज़ाम फ़रमाया। बेघर और मुहताज शरणार्थियों की समस्याएं हल कीं। हथियार, घोड़े, साज़ व सामान और लड़ाई के ख़र्च जुटाए और यह सब कुछ अल्लाह के बंदों पर तनिक भर भी ज़ुल्म व ज़्यादती और जौर व जफ़ा किए बिना हासिल किया।

आप ने उन वज्हों और मक़सदों को भी तब्दील कर डाला जिनके लिए अज्ञानता काल में लड़ाई के शोले भड़का करते थे यानी अज्ञानता काल में लड़ाई नाम था लूट-मार और क़त्ल व ग़ारत गरी का, ज़ुल्म व ज़्यादती और बदले का, कमज़ोरों को कुचलने, आबादियां वीरान करने और इमारतें ढाने का, औरतों को अपमानित करने और बूढ़ों, बच्चों और बच्चियों के साथ सख़्ती से पेश आने का, खेती बाड़ी और जानवरों को हलाक करने और ज़मीन में तबाही व फ़साद मचाने का, मगर इस्लाम ने इस लड़ाई की आत्मा बदल कर के उसे एक पाक जिहाद में बदल दिया, जिसे बड़े ही उचित और बुद्धि में समाने वाले कारणों के तहत शुरू किया जाता है और उसके ज़रिए ऐसे सज्जनतापूर्ण और उच्च मक़सद हासिल किए जाते हैं, जिन्हें हर समय और हर देश में मानव समाज में प्रतिष्ठा की वजह समझा गया है, क्योंकि अब लड़ाई का अर्थ यह हो गया था कि इंसान को ज़ुल्म व ज़्यादती के निज़ाम से निकाल

कर न्याय और इंसाफ़ के निज़ाम में लाने की सशस्त्र कोशिश की जाए। यानी एक ऐसी व्यवस्था को जिस में ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा हो, उलट कर एक ऐसी व्यवस्था बनायी जाए जिस में ताक़तवर कमज़ोर हो जाए जब तक कि उस से कमज़ोर का हक़ न ले लिया जाए। इसी तरह अब लड़ाई का मतलब यह हो गया था कि इन कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों को छुटकारा दिलाया जाए जो दुआएं करते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमें उस बस्ती से निकाल जिस के निवासी ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से वली बना और अपने पास से मददगार बना, साथ ही इस लड़ाई का मतलब यह हो गया कि अल्लाह की ज़मीन को बेईमानी, ख़राबी, ज़ुल्म व सितम और बदी व गुनाह से पाक कर के उसकी जगह अम्न व अमान, रहमत व मुरव्वत, हक़ पहुचांने का काम किया जाए और मुरव्वत और इंसानियत की व्यवस्था बहाल की जाए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ाई के लिए सज्जनता भरे नियम भी बनाए और अपने सैनिकों और कमांडरों के लिए उनकी पाबन्दी ज़रूरी बताते हुए किसी हाल में उन से बाहर जाने की इजाज़त न दी। हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी आदमी को किसी सेना या टुकड़ी का ज़िम्मेदार बनाते तो उसे ख़ास उस के अपने नफ़्स के बारे में अल्लाह के तक़्वा (भय-संयम) की और उस के मुसलमान साथियों के बारे में ख़ैर (भलाई) की वसीयत फ़रमाते, फिर फ़रमाते, "अल्लाह के नाम से अल्लाह की राह में लड़ाई करो, जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया, उन से लड़ाई करो, लड़ाई करो, ख़ियानत न करो, वायदा-ख़िलाफ़ी न करो, नाक कान वग़ैरह न काटो, किसी बच्चे को क़त्ल न करो आदि"

इसी तरह आप आसानी बरतने का हुक्म देते और फ़रमाते, "आसानी करो, सख़्ती न करो, लोगों को सुकून दिलाओ, नफ़रत न पैदा करो।"[1] और जब रात में आप किसी क़ौम के पास पहुंचते तो सुबह होने से पहले छापा न मारते, साथ ही आपने किसी को आग में जलाने से बड़ी सख़्ती के साथ मना किया। इसी तरह बांध कर क़त्ल करने और औरतों को मारने और उन्हें क़त्ल करने से भी मना किया और लूट-पाट से रोका। यहां तक कि आप ने फ़रमाया कि लूट का माल मुरदार से ज़्यादा हलाल नहीं। इसी तरह आपने खेती बाड़ी तबाह करने, जानवर हलाक करने और पेड़ काटने से मना फ़रमाया अलावा इस शक्ल के कि इस की सख़्त ज़रूरत आ पड़े और पेड़ काटे बिना कोई रास्ता न हो। मक्का-विजय के मौक़े पर आपने यह भी फ़रमाया, "किसी घायल पर हमला न करो, किसी भागने वाले का पीछा न करो, और किसी क़ैदी को क़त्ल न करो।" आपने यह सुन्नत भी जारी फ़रमाई कि दूत की हत्या न की जाए। साथ ही आपने समझौता करने वालों (ग़ैर मुस्लिम नागरिकों) के क़त्ल से भी बड़ी कड़ाई से रोका, यहां तक कि फ़रमाया "जो आदमी किसी (ग़ैर मुस्लिम) को क़त्ल करेगा, वह जन्नत की ख़ुश्बू नहीं पाएगा, हालांकि उसकी ख़ुश्बू चालीस साल की दूरी से पाई जाती है।"

ये और इस तरह के दूसरे ऊंचे क़िस्म के नियम थे जिन की वजह से लड़ाई का कार्य जाहिलियत की गंदगियों से पाक व साफ़ हो कर पवित्र जिहाद में बदल गया।

1) मुस्लिम 2/82,83

जत्थे के जत्थों का अल्लाह के दीन में दाख़िला

जैसा कि हमने अ़र्ज़ किया, मक्का-विजय वाली लड़ाई एक निर्णायक लड़ाई थी, जिस ने मूर्ति-पूजा को समाप्त कर दिया और सारे अ़रब के लिए सत्य-असत्य की पहचान साबित हुई। इस की वजह से उन के संदेह जाते रहे। इसीलिए इसके बाद उन्होंने बड़ी तेज़ रफ़्तारी से इस्लाम अपना लिया। हज़रत अ़म्र बिन सलमा रज़ि० का बयान है कि हम लोग एक चश्मे पर (आबाद) थे जो लोगों के गुज़रने का रास्ता था। हमारे यहां से क़ाफ़िले गुज़रते रहते थे और हम उनसे पूछते रहते थे कि लोगों का क्या हाल है? उस आदमी------यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम----का क्या हाल है? और कैसा है? लोग कहतेः "वह समझता है कि अल्लाह ने उसे पैग़म्बर बनाया है, उसके पास वह्य भेजी है, अल्लाह ने यह और यह वह्य की है।" मैं यह बात याद कर लेता था, मानो वह मेरे सीने में चिपक जाती थी और अ़रब इस्लाम में दाख़िल होने के लिए मक्का-विजय का इन्तिज़ार कर रहे थे। कहते थे, "इसे और इसकी क़ौम को (पंजा आज़माने के लिए) छोड़ दो। अगर वह अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ गया तो सच्चा नबी है। चुनांचे जब मक्का-विजय की घटना घटी तो हर क़ौम ने अपने इस्लाम के साथ (मदीना की ओर) चलने में जल्दी की और मेरे बाप भी मेरी क़ौम के

इस्लाम के साथ तशरीफ़ ले गए और जब (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी देकर) वापस आए तो फ़रमाया, मैं तुम्हारे पास अल्लाह की क़सम! एक सच्चे नबी के पास से आ रहा हूं। आपने फ़रमाया है कि फ़्लां नमाज़ फ़्लां वक़्त पढ़ो और फ़्लां नमाज़ फ़्लां वक़्त पढ़ो और जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुम में से एक आदमी अज़ान कहे और जिसे कुरआन ज़्यादा याद हो, वही इमाम बने।[1]

इस हदीस से अंदाज़ा होता है कि मक्का-विजय की घटना हालात को बदलने में, इस्लाम को ताक़त देने में, अरब के लोगों का दृष्टिकोण निश्चित कराने में और इस्लाम के सामने उन्हें हथियार डाल देने में कितने गहरे और दूर तक पहुंचने वाले प्रभाव रखता था। यह स्थिति तबूक की लड़ाई के बाद और ज़्यादा पक्की हो गयी। इसलिए हम देखते हैं कि इन दो वर्षों ----सन् 09 हि० और सन् 10 हि०-----में मदीना आने वाले प्रतिनिधि मंडलों का तांता बंधा हुआ था और लोग अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे थे, यहां तक कि वह इस्लामी सेना जो मक्का-विजय के अवसर पर दस हज़ार सैनिकों वाली थी, उस की तायदाद तबूक की लड़ाई में (जब कि अभी मक्का-विजय पर पूरा एक साल भी नहीं बीता था) इतनी बढ़ गयी कि वह तीस हज़ार सैनिकों के ठाठें मारते हुए समुद्र में बदल गया, फिर हम विदाई हज में देखते हैं कि एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चवालीस हज़ार मुसलमानों की बाढ़ आ गयी है, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चारों ओर इस तरह लब्बैक पुकारता, अल्लाहु अकबर कहता और गुण-गान गुनगुनाता है कि दुनिया गूंज उठती है और घाटियां व पहाड़ियां तौहीद के गीत से थर्रा जाते हैं।

1) बुख़ारी 2/615, 616

प्रतिनिधि-मंडल

युद्ध विशेषज्ञों ने जिन प्रतिनिधि-मंडलों का वर्णन किया है उन की तायदाद सत्तर से ज़्यादा है, लेकिन यहां न तो इन सब के ज़िक्र की गुंजाइश है और न इन के विस्तार में जाने का कोई बड़ा फ़ायदा होने वाला है, इसलिए हम केवल उन ही प्रतिनिधि-मंडलों का उल्लेख कर रहे हैं जो एतिहासिक दृष्टि से महत्त्व रखते हैं। पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि अगरचे आम क़बीलों के प्रतिनिधि मंडल मक्का-विजय के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आना शुरू हुए थे लेकिन कुछ क़बीले ऐसे भी थे जिनके प्रतिनिधि मंडल मक्का-विजय से पहले ही मदीना आ चुके थे। यहां हम उनका उल्लेख भी कर रहे हैं---

1. अ़ब्दुल क़ैस प्रतिनिधि-मंडल

इस क़बीले का प्रतिनिधि-मंडल दो बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आया था, पहली बार सन् 05 हि० में या इस से भी पहले और दूसरी बार आमुल वफ़ूद यानी सन् 09 हि० में। पहली बार इस के आने की वज़ह यह हुई कि इस क़बीले का एक आदमी मुंक़िज़ बिन हब्बान व्यापार का सामान लेकर मदीना आया-जाया करता था, वह जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के बाद पहली बार मदीना आया और उसे इस्लाम का ज्ञान हुआ तो वह मुसलमान हो गया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक पत्र लेकर अपनी क़ौम के पास गया। उन लोगों ने भी इस्लाम अपना लिया और उन के 13 या 14 आदमियों का एक प्रतिनिधि-मंडल हुर्मत (सम्मान) वाले महीने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इसी बार इस प्रतिनिधि-मंडल ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ईमान और पीने की चीज़ों के बारे में सवाल किया था प्रतिनिधि-मंडल का सरदार अल-अशज्ज अल अ़सरी था[2] जिसके बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

2) मिरआतुल-मफ़ातीह 1/71

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि तुम में दो ऐसी आदतें हैं जिन्हें अल्लाह पसंद करता है------------

1. दूरदर्शिता 2. और सहनशीलता

दूसरी बार इस क़बीले का प्रतिनिधि-मंडल जैसा कि बताया गया प्रतिनिधि-मंडल वाले साल में आया था। उस वक़्त उन की तायदाद 40 थी और उनमें अला बिन जारूद अ़ब्दी था जो ईसाई था, लेकिन मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम बहुत ख़ूब रहा।[3]

2. दौस प्रतिनिधि मंडल

यह प्रतिनिधि-मंडल सन् 07 हि० के शुरू में मदीना आया। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर में थे। आप पिछले पन्नों में पढ़े चुके हैं कि इस क़बीले के लीडर हज़रत तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी रज़ि० उस वक़्त मसुलमान हुए थे जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में थे। फिर उन्होंने अपनी क़ौम में जा कर इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का काम लगातार किया, लेकिन उन की क़ौम बराबर टालती और देर करती रही। यहां तक कि हज़रत तुफ़ैल उन की ओर से निराश हो गए। फिर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि आप क़बीला दौस पर बद-दुआ़ कर दीजिए, लेकिन आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! दौस को हिदायत दे। और आपकी इस दुआ़ के बाद इस क़बीले के लोग मुसलमान हो गए। हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने अपनी क़ौम के सत्तर या अस्सी घरानों के लोगों को ले कर सन् 07 हि० के शुरू में उस वक़्त मदीना हिजरत की, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर में तश्रीफ़ रखते थे। इस के बाद हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने आगे बढ़ कर ख़ैबर में आपका साथ पकड़ लिया।

---

3) शरह मुस्लिम लिन-नववी 1, 33, फ़तहुल-बारी 8/85, 86

3. फ़र्वा बिन अम्र जुज़ामी का दूत

हज़रत फ़र्वा, रूमी सैनिकों के अंदर एक अरबी कमांडर थे। उन्हें रूमियों ने अपनी सीमाओं से मिले हुए अरब क्षेत्रों का गवर्नर बना रखा था। उनका केन्द्र मआन (दक्षिणी जार्डन) था और क़ब्ज़ा पास-पड़ोस के क्षेत्रों में था। उन्होंने मूता की लड़ाई (सन् 08 हि०) में मुसलमानों की लड़ाई, वीरता और लड़ाई में पक्कापन देख कर इस्लाम अपना लिया और एक दूत भेज कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने मुसलमान होने की सूचना दी। उपहार के रूप में एक खच्चर भी भिजवाया। रूमियों को उनके मुसलमान होने की जानकारी हुई तो उन्होंने पहले तो उन्हें गिरफ़्तार कर के क़ैद में डाल दिया, फिर अधिकार दिया कि या तो विधर्मी हो जाएं या मौत के लिए तैयार रहें। उन्होंने धर्म से विमुख होने पर मौत को प्रमुखता दी, चुनांचे उन्हें फ़लस्तीन में अफ़रा नामी एक चश्मे पर सूली देकर शहीद कर दिया गया।[4]

4. सदा प्रतिनिधि मंडल

यह प्रतिनिधि-मंडल सन् 08 हि० में जिअ़िर्राना से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वापसी के बाद सेवा में आया। इसकी वजह यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चार सौ मुसलमानों की एक मुहिम तैयार करके उसे हुक्म दिया कि यमन का वह कोना रौंद आएं जिसमें क़बीला सदा रहता है। यह मुहिम अभी क़नात घाटी के सिरे पर पड़ाव डाले हुए थी कि हज़रत ज़ियाद बिन हारिस सदाई को इसकी जानकारी हो गई। वह भागम-भाग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे पीछे जो लोग हैं, मैं उनके नुमाइंदे की हैसियत से हाज़िर हुआ हूं इसलिए आप सेना वापस बुला लें। और मैं आपके लिए अपनी

4) ज़ादुल-मआद 3/45

क़ौम की ज़मानत लेता हूं। आपने क़नात घाटी ही से सेना को वापस बुला लिया। इसके बाद हज़रत ज़ियाद ने अपनी क़ौम में वापस जा कर उन्हें उभारा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हों। उनके उभारने पर पंद्रह आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम कुबूल करने पर बैअ़त की, फिर अपनी क़ौम में वापस जा कर इस्लाम का प्रचार किया और उनमें इस्लाम फैल गया। हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर उनके एक सौ आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचे और लाभान्वित हुए।

5. कअ़ब बिन ज़ुहैर बिन अबी सुलमा का आना

यह आदमी एक कवि-घराने की आंख का तारा था और ख़ुद भी अ़रब का एक बहुत बड़ा कवि था, यह काफ़िर था और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बुराई किया करता था इमाम हाकिम के कहने के मुताबिक़ यह भी उन अपराधियों की लिस्ट में शामिल था जिनके बारे में मक्का के जीते जाने के मौक़े पर हुक्म दिया गया था कि अगर वे ख़ाना-ए-काबा का परदा पकड़े हुए पाए जाएं तो भी उनकी गरदन मार दी जाए। लेकिन यह आदमी बच निकला। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा-ए-तायफ़ (सन् 08 हि०) से वापस हुए तो काब के पास उस के भाई बुहैर बिन ज़ुहैर ने लिखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का के कई उन लोगों को क़त्ल करा दिया है जो आपकी बुराई करते और आप को कष्ट पहुंचाया करते थे। क़ुरैश के बचे-खुचे कवियों में से जिसके जिधर सींग समाए हैं निकल भागा है, इसलिए अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रूरत है तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास उड़ कर आ जाओ, क्योंकि कोई भी आदमी तौबा करके आपके पास आ जाए तो आप उसे क़त्ल नहीं करते और अगर यह बात मंज़ूर नहीं करते तो फिर

जहां निजात मिल सके निकल भागो। इसके बाद दोनों भाइयों में और अधिक पत्र व्यवहार हुआ, जिसके नतीजे में काब बिन ज़ुहैर को ज़मीन तंग महसूस होने लगी और उसे अपनी जान के लाले पड़ते नज़र आए। इसलिए वह अन्त में मदीना आ गया और जुहैना के एक आदमी के यहां मेहमान हुआ, फिर उसी के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो जुहैनी ने इशारा किया और वह उठ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जा बैठा और अपना हाथ आप के हाथ में रख दिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे पहचानते न थे। उस ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! काब बिन ज़ुहैर तौबा कर के मुसलमान हो गया है और आप से अम्न (शांति) चाहने वाला बन गया है, तो क्या मैं अगर उसे आप की सेवा में हाज़िर कर दूं तो आप उस की इन चीज़ों को स्वीकार कर लेंगे?" आपने फ़रमाया, हां! उसने कहा, मैं ही काब बिन ज़ुहैर हूं। यह सुन कर एक अंसारी सहाबी उस पर झपट पड़े और उस की गरदन मारने की इजाज़त चाही। आप ने फ़रमाया, "छोड़ दो, वह आदमी तौबा कर के और पिछली बातों से हाथ छुड़ा कर आया है।"

इस के बाद उसी मौक़े पर काब बिन ज़ुहैर ने अपना मशहूर क़सीदा (गुण-गान) आपको पढ़कर सुनाया, जिसकी शुरूआत यूं है----

بانت سُعادُ فقلبی الیومَ متبول — متیم إثرها لم یفد، مکبول

"सुआद दूर हो गई तो मेरा दिल बेक़रार है, उसके पीछे गिरफ़्तार और बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। उस का फ़िद्या नहीं दिया गया।"

इस क़सीदे में काब ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मजबूरी बताते हुए और आपकी प्रशंसा करते हुए आगे यूं कहा है------

نُبِّئتُ انَّ رسول الله اَوعَدَنی وَالعفوعند رسول الله مأمولُ

مَهْلًاهداک الذی اعطاک نافلة ال ...قران فیها مواعیظ وتفصیل

لاتأخذن بأقوال الوشاۃ وَلَم أُذنِبْ ولو کَثُرَت فِی الاقاویلُ

لقدأقومُ مقامًا لویقومُ به أری ، وأسمعُ مالویسمعُ الفِیلُ

لَظَلَّ یَرعدُ إلاّاَنْ یکونَ له من الرسول بإذن اللّٰه تنزیلُ

حتی وضعت یمینی ما أنازعُهٗ فی کف ذی نقمات قیله القیلُ

فَلَهُوَاَخوفُ عندی إذ اُکلّمُهٗ وقیل إانک منسوبٌ ومسؤلُ

من ضیغم بضراء الارض مخدره فی بطن عثر غیل دونه غیلُ

إنَّ الرسول لنورٌ یُستضاءُ بِهٖ مُهَنّدٌ مِن سُیُوفِ اللّٰه مَسلُوْلُ

''मुझे बताया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे धमकी दी है, हालांकि अल्लाह के रसलू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से माफ़ करने की उम्मीद है। आप ठहरें, चुग़लख़ोरों की बात न लें---- वह ज़ात आपकी रहनुमाई करे जिसने आपको नसीहतों और विस्तार से भरे हुए क़ुरआन की भेंट दी है---अगरचे मेरे बारे में बातें बहुत कही गयी हैं लेकिन मैंने अपराध नहीं किया है। मैं ऐसी जगह खड़ा हूं और वे बातें देख और सुन रहा हूं कि अगर हाथी भी वहां खड़ा हो और इन बातों को सुने और देखे तो थर्राता रह जाए, सिवाए इस शक्ल के कि उस पर अल्लाह की इजाज़त से रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नवाज़िश हो, यहां तक कि मैंने अपना हाथ किसी झगड़े के बिना उस माननीय हस्ती के हाथ में रख दिया जिसे बदला लेने पर पूरी क़ुदरत है और जिसकी बात बात है। जब मैं उससे बात करता हूं-------जबकि मुझसे कहा गया है कि तुम से फ़्लां-फ़्लां बातें जुड़ी हुई

हैं और तुम से पूछ-ताछ की जाएगी---तो वे मेरे नज़दीक उस शेर से भी ज़्यादा भयानक होते हैं जिस की कछार किसी हलाक करने वाली घाटी के पेट में स्थित किसी ऐसी सख़्त ज़मीन में हो जिससे पहले भी ज़्यादा हलाकत ही हो। यक़ीनी तौर पर रसूल एक नूर हैं जिनसे रोशनी हासिल की जाती है। अल्लाह की तलवारों में से एक सौंती हुयी हिन्दुस्तानी तलवार है।''

इसके बाद काब बिन ज़ुहैर रज़ि० ने क़ुरैश मुहाजिरों की तारीफ़ की क्योंकि काब के आने पर उनके किसी आदमी ने भलाई के सिवा कोई बात और हरकत नहीं की थी, लेकिन उन की प्रशंसा के समय अंसार पर व्यंग किया, क्योंकि उनके एक आदमी ने उन की गरदन मारने की इजाज़त चाही थी। चुनांचे कहा-------

يمشون مشى الجمال الزهر يعصمهم ضرب اذا عرد السود التنا بيل

''वे (क़ुरैश) सुंदर, मटकते ऊंट की चाल चलते हैं और तलवार चलाना ही उन की हिफ़ाज़त करता है, जबकि नाटे-खोटे, काले-कलूटे लोग रास्ता छोड़ कर भागते हैं।''

लेकिन जब वह मुसलमान हो गया और उसके इस्लाम में अच्छाई आ गई तो उसने एक क़सीदा (गुण-गान) अंसार की प्रशंसा में कहा और उनकी शान में उससे जो ग़लती हो गई थी उसे दूर किया, चुनांचे उस क़सीदे में कहा-------

من سره كرم الحياة فلا يزل في مقنب من صالحى الانصار

ورثوا المكارم كابرا عن كابر إنّ الخيارَهم بنو الاخيار

''जिसे करीमाना ज़िंदगी पसंद हो, वह हमेशा नेक भले अंसार के किसी दस्ते में रहे। उन्होंने ख़ूबियां बाप-दादा से विरासत में पाई हैं। हक़ीक़त में अच्छे लोग वही हैं जो अच्छों की औलाद हों।''

6. अज़रा प्रतिनिधि-मंडल

यह प्रतिनिधि मंडल सफ़र सन् 09 हि० में मदीना आया। इसमें 12 आदमी थे। इस में हमज़ा बिन नोमान रज़ि० भी थे। जब प्रतिनिधि मंडल से पूछा गया कि आप कौन लोग हैं? तो उनके प्रतिनिधि ने कहा, हम बनू अज़रा हैं, कुसई के सौतेले भाई। हम ने ही कुसई की ताईद की थी और ख़ुज़ाआ और बनू बक्र को मक्का से निकाला था। (यहां) हमारी रिश्तेदारियां हैं। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वागत किया और शाम देश के जीते जाने की शुभ सूचना दी, साथ ही इन्हें काहिन औरतों से सवाल करने से मना किया और उन ज़िब्ह किए गए जानवरों से मना किया जिन्हें ये लोग (शिरक की हालत में) ज़िब्ह किया करते थे। इस प्रतिनिधि-मंडल ने इस्लाम कुबूल किया और कुछ दिन ठहर कर वापस गया।

7. बली प्रतिनिधि-मंडल

यह प्रतिनिधि-मंण्ल रबीउल अव्वल सन् 09 हि० में मदीना आया और मुसलमान हो कर तीन दिन ठहरा रहा। ठहरने के दौरान प्रतिनिधि-मंडल के सरदार अबू अज़-ज़बीब ने मालूम किया कि क्या मेहमानों के आव-भगत में भी अजर (बदला) है? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां! किसी फ़क़ीर या मालदार के साथ जो भी अच्छा व्यवहार करोगे वह सदक़ा है। उसने पूछा, मेहमानी की मुद्दत कितनी है? आपने फ़रमाया, तीन दिन। उसने पूछा, किसी लापता आदमी की खोई हुई भेड़-बकरी मिल जाए तो क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया, वह तुम्हारे लिए है। या तुम्हारे भाई के लिए है या फिर भेड़िए के लिए है। इसके बाद उसने खोए हुए ऊंट के बारे में सवाल किया। आपने फ़रमाया, तुम्हें इससे क्या मतलब? उसे छोड़ दो, यहां तक कि उसका मालिक उसे पा जाए।

8. सक़ीफ़ प्रतिनिधि-मंडल

यह प्रतिनिधि-मंडल रमज़ान सन् 09 हि० में तबूक से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद हाज़िर हुआ। इस क़बीले में इस्लाम फैलने की शक्ल यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ी-क़अ़दा सन् 08 हि० में जब तायफ़ की लड़ाई से वापस हुए तो आप के मदीना पहुंचने से पहले ही इस क़बीले के सरदार उर्वा बिन मस्ऊद रज़ि० ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम अपना लिया। फिर अपने क़बीले में वापस जा कर लोगों को इस्लाम की दावत दी। वह चूंकि अपनी क़ौम का सरदार था और सिर्फ़ यही नहीं कि उस की बात मानी जाती थी, बल्कि उसे उस क़बीले के लोग अपनी औरतों और लड़कियों से भी अधिक प्रिय रखते थे, इसलिए उस का विचार था कि लोग उसका आज्ञापालन करेंगे, लेकिन जब उस ने इस्लाम की दावत दी तो इस आशा के बिल्कुल ख़िलाफ़ लोगों ने उस पर हर ओर से तीरों की बौछार कर दी और उसे जान से मार डाला। फिर उसे क़त्ल करने के बाद कुछ महीने तो यूं ही ठहरे रहे, लेकिन इस के बाद उन्हें एहसास हुआ कि पास-पड़ोस का क्षेत्र जो मुसलमान हो चुका है, उस से हम मुक़ाबले की ताक़त नहीं रखते, इसलिए उन्होंने आपस में मश्वरा कर के तय किया कि एक आदमी को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में भेजें और इस के लिए अ़ब्दे या लील बिन अम्र से बातचीत की, मगर वह तैयार नहीं हुआ। उसे डर था कि कहीं उसके साथ भी वही व्यवहार न किया जाए जो उर्वा बिन मस्ऊद रज़ि० के साथ किया जा चुका है, इसलिए उसने कहा, मैं यह काम उस वक़्त तक नहीं कर सकता जब तक मेरे साथ कुछ और आदमी न भेजो, लोगों ने उस की यह मांग मान ली और उसके साथ दोस्त क़बीलों में से दो आदमी और बनी मालिक में से तीन आदमी लगा दिए। इस तरह कुल छः आदमियों का प्रतिनिधि-मंडल तैयार हो गया।

इसी प्रतिनिधि मंडल में हज़रत उस्मान बिन अबिल-आस सक़फ़ी भी थे जो सबसे कम उम्र थे।

जब ये लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे तो आपने उनके लिए मस्जिद के एक कोने में एक कुब्बा लगवा दिया, ताकि ये कुरआन सुन सकें और सहाबा किराम रज़ि० को नमाज़ पढ़ते हुए देख सकें। फिर ये लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आते-जाते रहे और आप उन्हें इस्लाम की दावत देते रहे। आखिर उनके सरदार ने सवाल किया कि आप अपने और सक़ीफ़ के बीच एक समझौता पत्र लिख दें, जिसमें ज़िना कारी, शराब पीने और सूद खाने की इजाज़त हो। इन के माबूद (उपास्य) 'लात' को बाक़ी रहने दिया जाए, उन्हें नमाज़ से माफ़ रखा जाए और उनकी मूर्तियां खुद उन के हाथों न तुड़वाई जाएं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनमें से कोई भी बात मंज़ूर न की, इसलिए उन्होंने तंहाई में मश्वरा किया, मगर उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने हथियार डाल देने के सिवा कोई उपाय नज़र न आया। आख़िर उन्होंने यही किया और अपने आप को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले करते हुए इस्लाम अपना लिया। अलबत्ता यह शर्त लगाई कि 'लात' को ढाने का इंतिज़ाम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद फ़रमा दें, सक़ीफ़ उसे अपने हाथों से हरगिज़ न ढाएंगे। आपने यह शर्त मंज़ूर कर ली और लेख लिख दिया, और उस्मान बिन अबिल-आस सक़फ़ी को उनका अमीर बना दिया, क्योंकि वही इस्लाम को समझने और दीन व कुरआन की तालीम हासिल करने में सबसे ज़्यादा आगे और इसके लोभी थे। इसकी वजह यह थी कि प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य हर दिन सुबह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते थे, लेकिन उस्मान बिन अबिल-आस रज़ि० को अपने डेरे पर छोड़ देते थे। इसलिए जब

प्रतिनिधि-मंडल वापस आकर दोपहर में आराम करता तो हज़रत उस्मान बिन अबिल-आस रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर कुरआन पढ़ते और दीन की बातें मालूम करते और जब आपको आराम फ़रमाते हुए पाते तो इसी मक़सद के लिए हज़रत अबू बक्र रज़ि० की सेवा में चले जाते। हज़रत उस्मान बिन अबिल-आ़स की गवर्नरी बड़ी बरकत वाली साबित हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद जब सिद्दीक़ी ख़िलाफ़त में धर्म विमुखता की लहर चली और सक़ीफ़ ने भी धर्म विमुख होने का इरादा किया तो हज़रत उस्मान बिन अबिल-आस रज़ि० ने ख़िताब कर के कहा, "सक़ीफ़ के लोगो! तुम सबसे आख़िर में इस्लाम लाए हो, इसलिए सबसे पहले धर्म विमुख न हो जाओ।" यह सुन कर लोग धर्म विमुख होने से रुक गए और इस्लाम पर जमे रहे।

बहरहाल प्रतिनिधि-मंडल ने अपनी क़ौम में वापस आ कर असल हक़ीक़त छिपाए रखी और क़ौम के सामने लड़ाई और मार-धाड़ का हव्वा खड़ा किया और दुख और रंज ज़ाहिर करते हुए बताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे मांग की है कि इस्लाम अपना लें और ज़िना, शराब और सूद छोड़ दें, वरना भारी लड़ाई की जाएगी। यह सुन कर पहले तो सक़ीफ़ अज्ञानता अभिमान में डूब गए और वे दो तीन दिन तक लड़ाई ही की बात सोचते रहे, लेकिन फिर अल्लाह ने उनके दिलों में रोब डाल दिया और उन्होंने प्रतिनिधि-मडंल से गुज़ारिश की कि वह फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाए और आप की मांगें मान ले। इस मरहले पर पहुंच कर प्रतिनिधि-मंडल ने असल हक़ीक़त ज़ाहिर की और जिन बातों पर समझौता हो चुका था, उन्हें ज़ाहिर किया। सक़ीफ़ ने उसी वक़्त इस्लाम अपना लिया।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लात को ढाने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के नेतृत्व में कुछ सहाबा

रज़ि० की एक छोटी सी टुकड़ी रवाना की। हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० ने खड़े हो कर गुर्ज़ उठाया और अपने साथियों से कहा, अल्लाह की क़सम! मैं थोड़ा आप लोगों को सक़ीफ़ पर हंसाऊंगा। इसके बाद लात पर गुर्ज़ मार कर ख़ुद ही गिर पड़े और एड़ियां पटकने लगे। यह बनावटी दृश्य देख कर तायफ़ वालों पर हौल छा गया, कहने लगे अल्लाह मुग़ीरह को हलाक करे उसे देवी ने मार डाला। इतने में हज़रत मुग़ीरह रज़ि० उछल कर खड़े हो गए और फ़रमाया, अल्लाह तुम्हारा बुरा करे। यह तो पत्थर और मिट्टी का तमाशा है। फिर उन्होंने दरवाज़े पर चोट लगायी और उसे तोड़ दिया। इस के बाद सब से ऊंची दीवार पर चढ़े और उनके साथ कुछ और सहाबा रज़ि० भी चढ़े। फिर उसे ढाते-ढाते ज़मीन के बराबर कर दिया, यहां तक कि उस की बुनियाद भी खोद डाली और उस का गहना और पहनावा निकाल लिया । यह देख कर सक़ीफ़ हैरान रह गए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० गहना और वस्त्र ले कर अपनी टीम के साथ वापस हुए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब कुछ उसी दिन बांट दिया और नबी की मदद और दीन (धर्म) के सम्मान पर अल्लाह का गुण गान किया।[5]

9. यमन के शाहों का पत्र

तबूक से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद हिमयर के बादशाहों यानी हारिस बिन अब्दे किलाल, नुऐम बिन अब्दे किलाल और रओन, हमदान और मुआफ़िर के सरदार नोमान बिन क़ील का पत्र आया। लाने वाला मालिक बिन मुर्रा रहावी था। इन बादशाहों ने अपने इस्लाम लाने और शिरक व मुश्रिकों से अलगाव की ख़बर दे कर उसे भेजा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पास उत्तर लिख कर स्पष्ट कर दिया कि ईमान वालों के हक़ और उनकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं? आपने उस पत्र में समझौता करने वालों के

5) ज़ादुल-मआद 3/26-28, इब्ने हिशाम 2/537-542

लिए अल्लाह का ज़िम्मा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िम्मा भी दिया था, शर्त यह थी कि वे तय किया हुआ जिज़्या अदा करें। इस के अलावा आपने कुछ सहाबा को यमन रवाना फ़रमाया, और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० को उन का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया।

10. हमदान प्रतिनिधि मंडल

यह प्रतिनिधि-मंडल सन् 09 हि० में तबूक से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद सेवा में हाज़िर हुआ और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के लिए एक लेख लिख कर, जो कुछ उन्हों ने मांगा था दे दिया और मालिक बिन नम्त को उन का सरदार बनाया। उन की क़ौम के जो लोग मुसलमान हो चुके थे उनका गवर्नर बनाया और बाक़ी लोगों के पास इस्लाम की दावत देने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को भेज दिया। वह छः महीना ठहर कर इस्लाम की दावत देते रहे, लेकिन लोगों ने इस्लाम स्वीकार न किया। फिर आपने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि० को भेजा और हुक्म दिया कि वह ख़ालिद को वापस भेज दें। हज़रत अ़ली रज़ि० ने क़बीला हमदान के पास जा कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त सुनाया और इस्लाम की दावत दी तो सब के सब मुसलमान हो गए। हज़रत अ़ली रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उन के इस्लाम अपना लेने की पत्र द्वारा शुभ सूचना दी। आपने पत्र पढ़ा तो सज्दे में गिर गए, फिर सर उठा कर फ़रमाया, हमदान पर सलाम, हमदान पर सलाम।

11. बनी फ़ज़ारा प्रतिनिधि मंडल

यह प्रतिनिधि मंडल 09 हि० में तबूक से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद आया। इसमें दस से कुछ ज़्यादा लोग थे और सब के सब इस्लाम ला चुके थे। इन लोगों ने अपने क्षेत्र के अकाल

की शिकायत की, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर तशरीफ़ ले गये और दोनों हाथ उठा कर बारिश की दुआ की। आपने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! अपने देश और अपने चौपायों को सींच, अपनी रहमत फैला और अपने मुर्दा शहर को ज़िंदा कर। ऐ अल्लाह! हम पर ऐसी वर्षा बरसा जो हमारी फ़रियाद पूरी कर दे, राहत पहुंचा दे, ख़ुश गवार हो, फैली हुई सर्वव्यापी हो, जल्द आए, देर न करे, लाभप्रद हो, हानिकारक न हो। ऐ अल्लाह! रहमत की वर्षा, अज़ाब की वर्षा नहीं और न ढाने वाली, न डुबाने वाली और न मिटाने वाली वर्षा। ऐ अल्लाह! हमें वर्षा से सींच और दुश्मनों के ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा।[6]"

12. नजरान प्रतिनिधि-मंडल

यह मक्का से यमन की ओर सात मरहले पर एक बड़ा क्षेत्र था जिस में 73 बस्तियां थीं। तेज़ रफ़्तार सवार एक दिन में पूरा इलाक़ा तय कर सकता था।[7] इस क्षेत्र में एक लाख योद्धा थे जो सब के सब ईसाई धर्म के मानने वाले थे।

नजरान प्रतिनिधि मंडल सन् 09 हि० में आया। इसमें साठ लोग थे। 24 आदमियों की गिनती 'बड़ों' में होती थी, जिनमें से तीन आदमियों को नजरान वालों का नेतृत्व प्राप्त था। एक आ़क़िब जिस के ज़िम्मे प्रशासन था और उस का नाम अ़ब्दुल मसीह था, दूसरा सैयद जो संस्कृति और राजनीति से मुताल्लिक़ मामलों का निगरां था और उसका नाम ऐहम या शुरहबील था, तीसरा असक़फ़ (लाट पादरी) जो धार्मिक और आध्यात्मिक नेता था। इसका नाम अबू हारिसा बिन अलक़मा था।

प्रतिनिधि-मंडल ने मदीना पहुंच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात की। फिर आपने उनसे कुछ प्रश्न पूछे और उन्होंने

6) ज़ादुल-मआद 3/48

7) फ़तहुल-बारी 8/94

आप से कुछ प्रश्न पूछे। इसके बाद आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और कुरआने हकीम की आयतें पढ़ कर सुनाईं। लेकिन उन्होंने इस्लाम कुबूल न किया और पूछा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मसीह अलैहि० के बारे में क्या कहते हैं? इसके जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस दिन, दिन भर कुछ न कहा, यहां तक कि आप पर ये आयतें उतरीं:--

اِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ○ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ○

"बेशक ईसा अ़लैहि० की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर उससे कहा हो जा, तो वह हो गया। सत्य तेरे पालनहार की ओर से है, पस संदेह करने वालों में से न हो। फिर तुम्हारे पास ज्ञान आ जाने के बाद जो कोई तुम से उस (ईसा) के बारे में हुज्जत करे तो उससे कह दो कि आओ हम बुलाएं अपने-अपने बेटों को और अपनी-अपनी औरतों को और खुद अपने आपको, फिर मुबाहला (अल्लाह से गिड़गिड़ा कर दुआ) करें, पस अल्लाह की लानत ठहराएं झूठों पर। (3:59,60,61)

सुबह हुई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन ही आयतों की रोशनी में उन्हें हज़रत ईसा अलैहि० के बारे में अपनी बात बताई और इसके बाद दिन भर उन्हें सोच-विचार के लिए आज़ाद छोड़ दिया। लेकिन उन्होंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में आपकी बात मानने से इंकार कर दिया। फिर जब अगली सुबह हुई--जबकि

प्रतिनिधि मंडल के सदस्य हज़रत ईसा अलैहि० के बारे में आप की बात मानने और इस्लाम लाने से इंकार कर चुके थे------तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें मुबाहले की दावत दी और हसन व हुसैन रज़ि० समेत एक चादर में लिपटे हुए तशरीफ़ लाए। पीछे पीछे हज़रत फ़ातिमा रज़ि० चल रही थीं। जब प्रतिनिधि मंडल ने देखा कि आप वाक़ई बिल्कुल तैयार हैं तो तंहाई में जा कर मश्वरा किया। आक़िब और सैयद दोनों ने एक दूसरे से कहा, "देखो, मुबाहला न करना। अल्लाह की क़सम! अगर यह नबी है और हम ने इस से मुलाअनत कर ली तो हम और हमारे पीछे हमारी संतान कदापि सफल न होंगे। धरती पर हमारा एक बाल और नाखुन भी तबाही से न बच सकेगा।" आख़िर उनकी राय यह ठहरी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही को अपने बारे हकम (सरपंच) बनाया जाए। चुनांचे उन्होंने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि आप की जो मांग हो, हम उसे मानने को तैयार हैं। इस प्रस्ताव पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे जिज़्या लेना मंज़ूर कर लिया और दो हज़ार जोड़े कपड़ों पर समझौता कर लिया।' एक हज़ार रजब के महीने में और एक हज़ार सफ़र के महीने में। और तय किया कि हर जोड़े के साथ एक ऊक़िया (एक सौ बावन ग्राम चांदी) भी अदा करनी होगी। इसके बदले आप ने उन्हें अल्लाह और उस के रसूल का ज़िम्मा अता फ़रमाया और दीन के बारे में पूरी आज़ादी दे दी। इस सिलसिले में आप ने उन्हें एक बाक़ायदा लेख लिख दिया। उन लोगों ने आप से गुज़ारिश की कि आप उन के यहां एक अमीन (अमानतदार आदमी) भेजें। इस पर आपने समझौते का माल वसूल करने के लिए इस उम्मत के अमीन हज़रत उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को रवाना फ़रमाया।

इसके बाद उनके अंदर इस्लाम फैलना शुरू हुआ। जीवनी-लेखकों का बयान है कि सैयद और आक़िब नजरान पलटने के बाद मुसलमान

हो गए। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से सदक़े और जिज़्ये लाने के लिए हज़रत अली रज़ि० को रवाना फ़रमाया और ज़ाहिर है कि सदक़ा मुसलमानों ही से लिया जाता है।[8]

13. बनी हनीफ़ा प्रतिनिधि-मंडल

यह प्रतिनिधि मंडल सन् 09 हि० में मदीना आया। इस में मुसैलमा कज़्ज़ाब समेत 17 आदमी थे।[9] मुसैलमा का सिलसिला-ए-नसब (वंशावली) इस प्रकार है---मुसैलमा बिन सुमामा बिन कबीर बिन हबीब बिन हारिस-----यह प्रतिनिधि मंडल एक अंसारी सहाबी के मकान पर उतरा। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम में दाख़िल हो गया, अलबत्ता मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में रिवायतें विभिन्न हैं। तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से मालूम होता है कि उसने अकड़, गर्व और सरदारी का लोभ ज़ाहिर किया और प्रतिनिधि-मंडल के शेष सदस्यों के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर नहीं हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले तो कथन-कर्म से अच्छे और सज्जनता वाले व्यवहार के ज़रिए उसका दिल रखना चाहा, लेकिन जब देखा कि उस आदमी पर इस व्यवहार का कोई फ़ायदेमंद असर नहीं पड़ा तो आपने अपनी बुद्धिमत्ता से ताड़ लिया कि उस के भीतर दुष्टता है।

इस से पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सपना देख चुके थे कि आप के पास धरती के ख़ज़ाने ला कर रख दिए गए हैं और इसमें से सोने के दो कंगन आपके हाथ में आ पड़े हैं। आपको ये दोनों बहुत

---

8) फ़तहुल-बारी 8/94-95, ज़ादुल-मआद 3/38-41 नजरान के प्रतिनिधि-मण्डल (वफ़्द) की तफ़सील में रिवायात के अनदर काफ़ी मतभेद है कुछ तहक़ीक़ करने वालों का मान्ना है कि नजरान का प्रतिनिधि मण्डल दो बार मदीने आया लेकिन हमारा ख़्याल वही है जो हमने संक्षिप्त में ऊपर ब्यान किया है।

9) फ़तहुल-बारी 8/87

बोझल और दुखद महसूस हुए। चुनांचे आपको वह्य की गई कि इन दोनों को फूंक दीजिए। आपने फूंक दिया तो वे दोनों उड़ गए। इसका फल आपने यह निकाला कि आपके बाद दो कज़्ज़ाब (परले दर्जे के झूठे) निकलेंगे। चुनांचे जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अकड़ दिखाई और इंकार किया-----वह कहता था कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुकूमत के कारोबार को अपने बाद मेरे हवाले करना तय किया, तो मैं उन की पैरवी करूंगा-----तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के पास तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आप के हाथ में खजूर की एक शाखा थी और आप के साथ आप के वक्ता हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास रज़ि० थे। मुसैलमा अपने साथियों के बीच मौजूद था, आप उसके सर पर जा खड़े हुए और बातें कीं। उसने कहा, "अगर आप चाहें तो हम हुकूमत के मामले में आपको आज़ाद छोड़ दें, लेकिन अपने बाद इसको हमारे लिए तय फ़रमा दें।" आप ने (खजूर की शाखा की ओर इशारा करते हुए) फ़रमाया, "अगर तुम मुझ से यह टुकड़ा चाहोगे तो तुम्हें यह भी न दूंगा और तुम अपने बारे में अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए फ़ैसले से आगे नहीं जा सकते और अगर तुमने पीठ फेरी तो अल्लाह तुम्हें तोड़ कर रख देगा। अल्लाह की क़सम! मैं तुझे वही आदमी समझता हूं जिसके बारे में मुझे वह (सपना) जो दिखाया गया है और यह साबित बिन क़ैस हैं जो तुम्हें मेरी ओर से जवाब देंगे।" इसके बाद आप वापस चले आए।[10]

अन्त में वही हुआ जिसका अंदाज़ा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी फ़िरासत (चातुर्य) से कर लिया था, यानी मुसैलमा कज़्ज़ाब यमामा वापस जाकर पहले तो अपने बारे में विचार करता रहा, फिर दावा किया कि उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

10) बुख़ारी बाब वफ़्दु बनी हनीफ़ा और बाब क़िस्सतुल-असवद अल-अनसी 2/627, 628 और फ़त्हुल बारी 8/87-93

व सल्लम के साथ नुबुवत के कामों में शरीक कर लिया गया है, चुनांचे उस ने नुबुवत का दावा किया और झूठ गढ़ने लगा, अपनी क़ौम के लिए ज़िना और शराब हलाल कर दी और इन सब बातों के साथ-साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में यह गवाही भी देता रहा कि आप अल्लाह के नबी हैं। इस आदमी की वजह से इसकी क़ौम फ़ित्ने में पड़ कर उसकी अनुयायी और हम आवाज़ बन गई। नतीजा यह निकला कि इसका मामला संगीन हो गया। इसका इतना मान सम्मान हुआ कि उसे यमामा का रहमान कहा जाने लगा। और अब उस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक पत्र लिखा, "मुझे इस काम में आप के साथ शरीक कर दिया गया है, आधी हुकूमत हमारे लिए है और आधी कुरैश के लिए।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में लिखा, "ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बनाता है और अंजाम मुत्तक़ियों के लिए है।[1]"

इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि इब्ने नवाहा और इब्ने असाल मुसैलमा के दूत बन कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए थे। आपने मालूम फ़रमाया, "तुम दोनों गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं?" उन्होंने कहा, हम गवाही देते हैं कि मुसैलमा अल्लाह का रसूल है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मैं अल्लाह और उसके रसूल (मुहम्मद) पर ईमान लाया, अगर मैं किसी दूत को क़त्ल करता, तो तुम दोनों को क़त्ल कर देता।[2]"

मुसैलमा कज़्ज़ाब ने सन् 10 हि० में नुबूवत का दावा किया था और रबीउल-अव्वल सन् 12 हि० में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के

---

(1) ज़ादुल-मआद 3/31,32

(2) मुसनद अहमद, मिश्कात 2/347

दौर में यमामा के अंदर क़त्ल किया गया। इस का क़ातिल वही वहशी था जिसने हज़रत हमज़ा रज़ि० को क़त्ल किया था।

नुबुवत का एक दावेदार तो यह था जिसका यह अंजाम हुआ और नुबुवत का दूसरा दावेदार अस्वद अनसी था, जिस ने यमन में विद्रोह कर रखा था। उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात से सिर्फ़ एक दिन और एक रात पहले हज़रत फ़ीरोज़ रज़ि० ने क़त्ल किया। फिर आप के पास उसके बारे में वह्य आई और आप ने सहाबा किराम रज़ि० को इस घटना की ख़बर दी। इस के बाद यमन से हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास बाक़ायदा ख़बर आई।[13]

14.बनी आ़मिर बिन सअ़सआ़ प्रतिनिधि-मंडल

इस प्रतिनिधि मंडल में अल्लाह का दुश्मन आ़मिर बिन तुफ़ैल, हज़रत लबीद का सौतेला भाई अरबद बिन क़ैस, खालिद बिन जाफ़र और जब्बार बिन असलम शामिल थे। ये सब अपनी क़ौम के सरदार और शैतान थे। आ़मिर बिन तुफ़ैल वही आदमी है जिस ने बिरे (कुआं) मऊना पर 70 सहाबा किराम रज़ि० को शहीद कराया था। इन लोगों ने जब मदीना आने का इरादा किया तो आमिर और अरबद ने आपस में षड़यंत्र रचा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धोखा दे कर अचानक क़त्ल कर देंगे। चुनांचे जब यह प्रतिनिधि मंडल मदीना पहुंचा तो आ़मिर ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात-चीत शुरू की और अरबद घूम कर आप के पीछे पहुंचा और एक बालिश्त भर तलवार म्यान से बाहर निकाली, लेकिन इसके बाद अल्लाह ने उस का हाथ रोक लिया और वह तलवार नंगी न कर सका। अल्लाह ने अपने नबी को बचाए रखा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दोनों पर बददुआ की, जिसका नतीजा यह हुआ कि वापसी पर अल्लाह ने अरबद और

---

13) फ़तहुल-बारी 8/93

उसके ऊंट पर बिजली गिरायी, जिस से अरबद जल मरा। इधर आमिर एक सलूलिया औरत के यहां उतरा और इसी बीच उस की गरदन में गिलटी निकल आई। इसके बाद वह यह कहता हुआ मर गया कि आह! ऊंट की गिलटी जैसी गिलटी और एक सलूलिया के घर में मौत?

सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि आमिर ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर कहा---------- "मैं आप को तीन बातों का इख़्तियार देता हूँ;

1. आपके लिए घाटी के निवासी हों और मेरे लिए आबादी के,

2. या मैं आपके बाद आप का ख़लीफ़ा होऊं,

3. वरना मैं ग़तफ़ान को एक हज़ार घोड़े और एक हज़ार घोड़ियों समेत आप पर चढ़ा लाऊंगा।"

इस के बाद वह एक औरत के घर में ताऊन का शिकार हो गया, (जिस पर उसने दुखी हो कर) कहा, क्या ऊंट की गिलटी जैसी गिलटी? और वह भी बनी फ़्लां की एक औरत के घर में? मेरे पास मेरा घोड़ा लाओ, फिर वह सवार हुआ और अपने घोड़े पर ही मर गया।

15. तजीब प्रतिनिधि मंडल

यह प्रतिनिधि मंडल अपनी क़ौम के सदक़ों को, जो फ़क़ीरों से ज़्यादा बच गए थे, लेकर मदीना आया। प्रतिनिधि-मंडल में तेरह आदमी थे, जो क़ुरआन व सुनन के बारे में पूछते और सीखते थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ बातें मालूम कीं, तो आपने वे बातें उन्हें लिख दीं, वह ज़्यादा मुद्दत नहीं ठहरे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें तोहफ़े दिए तो उन्होंने अपने एक नवजवान को भी भेजा जो डेरे पर पीछे रह गया था। नवजवान ने ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, "हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह की क़सम! मुझे मेरे इलाक़े से इसके सिवा

कोई और चीज़ नहीं लायी है कि आप अल्लाह से मेरे लिए यह दुआ फ़रमा दें कि मुझे अपनी बख़्शिश और रहमत से नवाज़े और मेरी मालदारी मेरे दिल में रख दे।" आपने उस के लिए यह दुआ फ़रमाई। नतीजा यह हुआ कि वह आदमी सब से ज़्यादा क़नाअत पसंद हो गया और जब धर्म-विमुखता की हवा चली तो सिर्फ़ यही नहीं कि वह इस्लाम पर जमा रहा, बल्कि अपनी क़ौम को वाज़ व नसीहत भी की तो वह भी इस्लाम पर जमी रही। फिर प्रतिनिधि-मंडल वालों ने विदाई हज सन् 10 हि० में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दोबारा मुलाक़ात की।

16. तई प्रतिनिधि-मंडल

इस प्रतिनिधि-मंडल के साथ अरब के प्रसिद्ध घुड़सवार ज़ैद-अल-ख़ैल रज़ि० भी थे। इन लोगों ने जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातचीत की और आप ने उन पर इस्लाम पेश किया तो उन्होंने इस्लाम अपना लिया और बहुत अच्छे मुसलमान हुए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ि० की प्रशंसा करते हुए फ़रमाया कि मुझ से अरब के जिस किसी आदमी की ख़ूबी बयान की गयी और फिर वह मेरे पास आया तो मैंने उसे उसकी प्रसिद्धी से कुछ कम ही पाया, मगर इस के ख़िलाफ़ ज़ैद अल-ख़ैल रज़ि० की प्रसिद्धि उन की ख़ूबियों को नहीं पहुंच सकी, और आपने उनका नाम ज़ैद अल-ख़ैर रख दिया।

इस तरह सन् 09 हि० और सन् 10 हि० में लगातार प्रतिनिधि मंडल आए। जीवनी-लेखकों ने यमन, अज़्द, कुज़ाआ के बनी साद, हुज़ैम, बनी आमिर बिन क़ैस, बनी असद, बहरा, ख़ौलान, मुहारिब, बनी हारिस बिन काब, ग़ामिद, बनी मुनतफ़िक़, सलामान, बनी अब्स, मुज़ैना, मुराद, ज़ुबैद, किन्दा, ज़ी मर्रा, ग़स्सान, बनी ऐश और नख़अ के प्रतिनिधि मंडलों का उल्लेख किया है। नख़अ का प्रतिनिधि-मंडल

आख़िरी प्रतिनिधि-मंडल था जो मुहर्रम 11 हि० के बीच में आया था और उसमें दो सौ आदमी थे, बाक़ी ज़्यादातर प्रतिनिधि मंडलों का आना सन् 09 हि० और सन् 10 हि० में हुआ था। सिर्फ़ कुछ प्रतिनिधि मंडल सन् 11 हि० में आए थे।

इन प्रतिनिधि मंडलों के लगातार आने से पता लगता है कि उस वक़्त इस्लामी दावत को कितना फैलाव और लोकप्रियता मिली हुई थी। इस से यह भी अंदाज़ा होता है कि अ़रब के लोग मदीना को कितने आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते थे, यहां तक कि उसके सामने हथियार डाल देने के सिवा कोई रास्ता ही नहीं पाते थे। हक़ीक़त में मदीना अ़रब प्रायद्वीप की राजधानी बन चुका था और किसी के लिए इस से आंखे बचा लेना संभव नहीं था। अलबत्ता हम यह नहीं कह सकते कि इन सब लोगों के दिलों में इस्लाम धर्म असर कर चुका था, क्योंकि इनमें भी बहुत से ऐसे अक्खड़ बद्दू थे जो सिर्फ़ अपने सरदारों की ताबेदारी में मुसलमान हो गये थे, वरना इन में क़त्ल व ग़ारतगरी का जो झुकाव जड़ पकड़ चुका था, उससे वे पाक साफ़ नहीं हुए थे, और अभी इस्लामी शिक्षाओं ने इन्हें पूरे तौर पर सभ्य नहीं बनाया था। चुनांचे कुरआन करीम की सूरः तौबा में इनके कुछ लोगों के गुण यूं बयान किए गए हैं———

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

"अअ़राब (बद्दू) कुफ़्र और निफ़ाक़ (कपटाचार) में ज़्यादा सख़्त हैं और इस बात के ज़्यादा लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो कुछ उतारा है उसकी सीमाओं को न जानें और

अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है और कुछ अअ़राब जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे जुर्माना समझते हैं और तुम पर गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं। उन ही पर बुरी गर्दिश है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।" (9:97:98)

जबकि कुछ दूसरे लोगों की तारीफ़ की गयी है और उनके बारे में यह फ़रमाया गया है-------

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

"और कुछ अअ़राब अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह की कुर्बत और रसूल की दुआओं का ज़रिया बनाते हैं। याद रहे कि यह उन के लिए क़रीब होने का ज़रिया है। बहुत जल्द अल्लाह इन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।" (9:99)

जहां तक मक्का, मदीना, सक़ीफ़, यमन और बहरैन के बहुत से नागरिकों का ताल्लुक़ है, तो उनके अंदर इस्लाम पक्का था और उन ही में से बड़े सहाबा रज़ि० और मुसलमानों के सरदार हुए।[14]

---

14) यह बात ख़िज़री ने मुहाज़िरात 1/144 में कही है और जिन मण्डलों के बारे में कुछ लिखा गया है या इशारा किया गया है इनकी तफ़सील के लिए देखिए बुख़ारी 1/13, 2/626-630, इब्ने हिशाम 2/501-503, 510-514, 537-542, 560-601, ज़ादुल मआद 3/26-60, फ़तहुल-बारी 8/83-103, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/184-217

दावत की कामियाबी और असरात

अब हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िंदगी के आख़िरी दिनों के बयान तक पहुंच रहे हैं, लेकिन उस बयान के लिए क़लम को आगे बढ़ाने से पहले मुनासिब मालूम होता है कि तनिक ठहर कर आपके उस शानदार काम पर एक सरसरी नज़र डाल लें जो आपकी ज़िंदगी का सार है और जिसकी वजह से आपको तमाम नबियों और पैग़म्बरों में यह नुमायां जगह हासिल हुई कि अल्लाह ने आप के सर पर शुरू के और आख़िर के नेतृत्व का ताज रख दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा गया कि;

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا

"ऐ चादर ओढ़ने वाले! रात में खड़ा हो, मगर थोड़ा।" (73:1-2)

और

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنْذِرْ

"ऐ कम्बल ओढ़ने वाले! उठ और लोगों को संगीन अंजाम से डरा दे।" (74:1-2)

फिर क्या था? आप उठ खड़े हुए और अपने कंधे पर इस धरती की सब से बड़ी अमानत का भारी बोझ उठाए बराबर खड़े रहे। यानी सारी मानवता का बोझ, सारे अक़ीदे का बोझ और विभिन्न मैदानों में जंग और जिहाद और दौड़-भाग का बोझ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मानव-अन्तरात्मा के मैदान में लड़ाई व जिहाद और दौड़-धूप का बोझ उठाया जो अज्ञानता के सोच-विचार में डूबा हुआ था जिसे ज़मीन और उसके रंगा-रंग खिंचाव के बोझ ने बोझल कर रखा था। जो वासना की बेड़ियों और फंदों में जकड़ा हुआ था और जब इस अन्तरात्मा को अपने कुछ सहाबा की शक्ल में अज्ञानता और ज़मीनी ज़िंदगी के तह दर तह बोझ से आज़ाद कर लिया तो एक दूसरे मैदान में एक दूसरी लड़ाई, बल्कि लड़ाई पर लड़ाई शुरू कर दी। यानी अल्लाह की दावत के वे दुश्मन जो दावत और उस पर ईमान लाने वालों के ख़िलाफ़ टूटे पड़ रहे थे और इस पाक पौधों को पनपने, मिट्टी के अंदर जड़ पकड़ने, वातारवण में शाखाओं के लहराने और फलने-फूलने से पहले उस की पनपने की जगह ही में मार डालना चाहते थे। दावत के इन दुश्मनों के साथ आप ने बराबर लड़ाइयां शुरू कीं और अभी आप अरब प्रायद्वीप की लड़ाइयों से फ़ारिग़ न हुए थे कि रूम ने इस नयी उम्मत को दबोचने के लिए उस की सरहदों पर तैयारियां शुरू कर दीं।

फिर इन तमाम कार्यवाहियों के दौरान अभी पहली लड़ाई——यानी अन्तरात्मा की लड़ाई——ख़त्म नहीं हुई थी, क्योंकि यह हमेशा की लड़ाई है। इसमें शैतान से मुक़ाबला है और वह मानवी अन्तरात्मा की गहराइयों में घुस कर अपनी सरगर्मियां जारी रखता है और एक क्षण के लिए ढीला नहीं पड़ता। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की ओर लोगों को बुलाने में लगे हुए थे। और विभिन्न मैदानों के लगातार संघर्षों में लगे हुए थे, दुनिया आपके क़दमों पर ढेर थी, मगर आप तंगी व तुर्शी से गुज़र बसर कर रहे थे। ईमान वाले आपके चारों ओर अम्न व राहत का साया फैला रहे थे, पर आप जद्दो जेहद और मशक़्क़त अपनाए हुए थे। लगातार और कड़ी मेहनत से वास्ता था, पर इन सब पर आपने सब्रे जमील इख़्तियार कर रखा था। रात में नमाज़ें पढ़ते थे,

अपने रब की इबादत करते थे, उसके कुरआन की ठहर-ठहर कर क़िराअत करते थे और सारी दुनिया से कट कर उसकी ओर मुतवज्जह हो जाते थे, जैसाकि आपको हुक्म दिया गया था।[1]

इस तरह आपने इस संघर्ष में बीस साल से ऊपर गुज़ारे और इस दौरान आपको कोई एक मामला दूसरे मामले से ग़ाफ़िल न कर सका, यहां तक कि इस्लामी दावत इतने बड़े पैमाने पर सफल हुई कि अक़्लें हैरान रह गयीं। सारा अ़रब प्रायद्वीप आपके हुक्म के अधीन हो गया। इस के क्षितिज से अज्ञानता की गंदगी छट गयी, बीमार अक़्लें तंदुरुस्त हो गयीं, यहां तक कि बुतों को छोड़ बल्कि तोड़ दिया गया, तौहीद की आवाज़ों से वातावरण गूंजने लगा, नये ईमान से जीवन पाये हुए मैदान अज़ानों से लरज़ने लगे और उसकी सीमाओं को अल्लाहु अकबर की आवाज़ें चीरने लगीं। क़ारी लोग कुरआन मजीद की आयतें तिलावत करते और अल्लाह के हुक्मों को क़ायम करते हुए उत्तर-दक्षिण में फैल गए।

बिखरी हुई क़ौमें और क़बीले एक हो गए। इंसान बंदों की बंदगी से निकल कर अल्लाह की बंदगी में दाख़िल हो गया। अब न कोई क़ाहिर है न मक़हूर, न मालिक है और न मम्लूक, न हाकिम है और न महकूम, न ज़ालिम है और न मज़्लूम, बल्कि सारे लोग अल्लाह के बंदे और आपस में भाई-भाई हैं। एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं और अल्लाह के हुक्मों की पाबंदी करते हैं। अल्लाह ने उन से जाहिलियत का ग़ुरुर (दम) व अभिमान और बाप-दादा पर फ़ख़्र का ख़ात्मा कर दिया है। अब अरबी को अजमी पर और अजमी को अरबी पर, गोरे को काले पर, काले को गोरे पर कोई बरतरी नहीं। बरतरी की कसौटी सिर्फ़ तक़्वा है, वरना सारे लोग आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से थे।

ग़रज़ इस दावत की वजह से अरबी एकत्व, मानवीय एकत्व, और सामूहिक न्याय वजूद में आ गया। मानव-जाति को संसारिक समस्याएं

---

1) सय्यद कुतुब फ़ी ज़िलालिल-कुरआन 29/168, 169

और परलोकिक मामलों में अच्छा रास्ता मिल गया। दूसरे लफ़्ज़ों में ज़माने की रफ़्तार बदल गयी, धरती बदल गयी, इतिहास की धारा मुड़ गयी और सोचने के अंदाज़ बदल गए।

इस दावत से पहले दुनिया पर अज्ञानता छायी हुई थी, उसकी अन्तरात्मा सड़ी-गली थी और आत्मा बदबूदार थी। मूल्य और पैमाने गड़बड़ थे, जुल्म और गुलामी का दौर-दौरा था। जुल्म भरी खुशहाली और तबाह करने वाली महरूमी की मौज ने दुनिया को तहत-नहस कर रखा था, उस पर कुफ़्र और गुमराही के अंधे और मोटे परदे पड़े हुए थे, हालांकि आसमानी धर्म और दीन मौजूद थे, पर इनमें बिगाड़ ने जगह पा ली थी और कमज़ोरी घुस आयी थी, इसकी पकड़ ख़त्म हो चुकी थी और वह सिर्फ़ बे-जान और बे-रूह क़िस्म के जामिद रस्म व रिवाज का योग बन कर रह गये थे।

जब इस दावत ने मानव जीवन पर अपना असर दिखाया तो मानव-आत्मा को अंधविश्वास बंदगी व गुलामी, बिगाड़ और दुर्गन्ध और अफ़रा-तफ़री से निजात दिलायी और इंसानी समाज को जुल्म व सरकशी, परेशानी व बर्बादी, वर्गीय विभाजन, शासकों के जुल्म और काहिनों के रुसवा करने वाले क़ब्ज़े से छुटकारा दिलाया और दुनिया को पाकी, पाकदामनी, ईजाद व तामीर, आज़ादी और नयापन, मारफ़त व यक़ीन, भरोसा और ईमान, न्याय व इंसाफ़ और करामत और अमल की बुनियादों पर ज़िन्दगी के उभार, हयात की तरक़्क़ी और हक़दार तक हक़ पहुंचाने के लिए तामीर किया।[2]

इन तब्दीलियों की वजह से अरब प्रायद्वीप ने एक ऐसी बरकतों वाली उठान को देखा जिसकी मिसाल इंसानी वजूद के किसी दौर में नहीं देखी गयी और इस द्वीप का इतिहास अपनी उम्र के उन अछूते दिनों में ऐसा जगमगाया कि इससे पहले कभी नहीं जगमगाया था।

---

2) सय्यद कुतुब फ़ी ज़िलालिल-क़ुरआन ماذا خسر العالم بانحطاط المسلمين के मुक़द्दमे में प्र०14

विदाई हज

दावत व तब्लीग़ का काम पूरा हो गया और अल्लाह के मालिक व माबूद होने की ताकीद, इस के अ़लावा किसी के माबूद होने का इंकार और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत की बुनियाद पर एक नए समाज की तामीर व तश्कील अ़मल में आ गयी। अब मानो ग़ैबी हातिफ़ आपके दिल व दिमाग़ को यह एहसास दिला रहा था कि दुनिया में आप के ठहरने का समय ख़त्म होने के क़रीब है, चुनांचे आपने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि० को सन् 10 हि० में यमन का गवर्नर बना कर रवाना फ़रमाया, तो विदा करते वक़्त और बातों के अ़लावा यह भी फ़रमाया, "ऐ मुआ़ज़! शायद तुम मुझ से मेरे इस साल के बाद न मिल सकोगे, बल्कि शायद मेरी इस मस्जिद और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे।" और हज़रत मुआज़ रज़ि० यह सुन कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुदाई के ग़म से रोने लगे।

सच तो यह है कि अल्लाह चाहता था कि अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस दावत के फल दिखला दे जिस की राह में आप ने बीस वर्ष से ज़्यादा दिनों तक तरह-तरह की मुश्किलें और मशक़्क़तें सही थीं और उस की शक्ल यह हो कि आप हज के मौक़े पर मक्के के चारों तरफ़ आबाद अरब क़बीलों के लोगों और नुमाइन्दों के साथ जमा हों, फिर वह आपसे दीन का क़ानून मालूम करें और आप उनसे यह

गवाही लें कि आपने अमानत अदा कर दी, रब के पैग़ाम की तब्लीग़ फ़रमा दी और उम्मत का भला चाहने का हक़ अदा कर दिया। अल्लाह की इस मशीयत के मुताबिक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उस तारीख़ी हज्जे मबरूर के लिए अपने इरादे का एलान फ़रमा दिया तो अरब के मुसलमान जत्थे के जत्थे पहुंचना शुरू हो गए। हर एक की आरज़ू थी कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पांवों के निशान (रास्ते) को अपना रास्ता बनाए और आप की पैरवी करे।[1] फिर सनीचर के दिन जबकि ज़ीक़ादा में चार दिन बाक़ी थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कूच की तैयारी फ़रमाई।[2] बालों में कंघी की, तेल लगाया, तहबंद पहना, चादर ओढ़ी, क़ुर्बानी के जानवरों को क़लादा पहनाया और ज़ुहर के बाद कूच किया और अस्र से पहले ज़ुल-हुलैफ़ा पहुंच गए। वहां अस्र की दो रकअत नमाज़ पढ़ी और रात भर ठहरे रहे, सुबह हुई तो सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, "रात मेरे पालनहार की ओर से एक आने वाले ने आ कर कहा, इस मुबारक घाटी में नमाज़ पढ़ो और कहो, हज में उमरा है।[3]"

फिर ज़ुहर की नमाज़ से पहले आपने एहराम के लिए स्नान किया। इस के बाद हज़रत आइशा रज़ि० ने आप के पाक जिस्म और मुबारक सर में अपने हाथ से ज़रीरा और मुश्क भरी ख़ुश्बू लगाई। ख़ुश्बू की चमक आपकी मांग और दाढ़ी में दिखाई पड़ती थी, मगर आपने यह ख़ुश्बू धोयी नहीं, बल्कि बाक़ी रखी। फिर अपना तहबंद पहना, चादर ओढ़ी, दो रकअत ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद मुसल्ले ही पर हज

---

1) यह बात मुस्लिम में हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत की गई है देखिए बाब हज्जतुन-नबी (सल्ल०) 1/394

2) हाफ़िज़ इब्ने हज्र ने इसकी बहुत अच्छी तहक़ीक़ की है और उन रिवायतों में जो यह आया है कि ज़ीक़अदा के पाँच दिन बाक़ी थे तब आप (सल्ल०) रवाना हुए इसको सही भी कहा है देखिए फ़तहुल-बारी 8/104

3) इसे बुख़ारी ने हज़रत उमर (रज़ि०) से रिवायत किया है 1/207

और उमरा दोनों का एक साथ एहराम बाधंते हुए लब्बैक की आवाज़ बुलन्द की, फिर बाहर तशरीफ़ लाए, कुसवा ऊंटनी पर सवार हुए और दोबारा लब्बैक की आवाज़ बुलन्द की। इस के बाद ऊंटनी पर सवार खुले मैदान में तशरीफ़ ले गए तो वहां भीं लब्बैक पुकारा।

इसके बाद आपने अपना सफ़र जारी रखा। हफ़्ते भर बाद जब शाम ही को मक्का के क़रीब पहुंचे तो ज़ी तुवा में ठहर गए। वहीं रात गुज़ारी और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर स्नान किया, फिर मक्का में सुबह होते ही दाख़िल हुए। यह रविवार 4 ज़िलहिज्जा 10 हि० का दिन था---रास्ते में आठ रातें गुज़री थीं----- औसत रफ़्तार से इस दूरी का यही हिसाब भी है——मस्जिदे हराम पहुंच कर आप ने पहले ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ किया, फिर सफ़ा व मर्वा के दर्मियान सअ़ी की (दौड़ लगाई) मगर एहराम नहीं खोला, क्योंकि आप ने हज व उमरा का एहराम एक साथ बांधा था और अपने साथ हद्‌य (कुर्बानी के जानवर) लाए थे। तवाफ़ व सअ़ी (दौड़) से फ़ारिग़ हो कर आप ऊपरी मक्का में जहून के पास ठहरे, लेकिन दोबारा तवाफ़े हज के सिवा कोई और तवाफ़ नहीं किया।

आप के जो सहाबा किराम अपने साथ हद्‌य (कुर्बानी का जानवर) नहीं लाए थे, आप ने उन्हें हुक्म दिया कि अपना एहराम उमरा में तब्दील कर दें और बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा मर्वा की सअ़ी पूरी करके पूरी तरह हलाल हो जाएं, लेकिन चूंकि आप ख़ुद हलाल नहीं हो रहे थे, इसलिए सहाबा किराम रज़ि० को तरद्दुद (संकोच) हुआ। आपने फ़रमाया; अगर मैं अपने मामले की वह बात पहले जान गया होता जो बाद में मालूम हुई तो मैं हद्‌य न लाता और अगर मेरे साथ हद्‌य न होती तो मैं भी हलाल हो जाता। आपका यह इर्शाद सुन कर सहाबा किराम ने सरे इताअ़त झुका दिया और जिसके पास हद्‌य न थी, वे हलाल हो गए।

हुदूदे-हरम और मीक़ात का नक़्शा

आठ ज़िलहिज्जा---तर्वीया के दिन--आप मिना तशरीफ़ ले गए और वहां 9 ज़िल हिज्जा की सुबह तक क़ियाम फ़रमाया। जुहर, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र (पांच वक़्त) की नमाज़ें, फिर इतनी देर रूके रहे कि सूर्योदय हो गया इसके बाद अरफ़ा को चल पड़े। वहां पहुंचे नमिरा घाटी में कुब्बा तैयार था, उसी पर उतर गए। जब सूरज ढल गया तो आप के हुक्म से कुसवा पर कजावा कसा गया और आप घाटी के बीच में तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आप के चारों ओर एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चवालीस हज़ार इंसानों का समुद्र ठाठें मार रहा था। आप ने उन के बीच एक ज़ोरदार खुत्बा दिया, आपने फ़रमाया---

"लोगों! मेरी बात सुन लो, क्योंकि मैं नहीं जानता शायद इस साल के बाद इसी जगह पर मैं तुम से कभी न मिल सकूंगा।[4]"

तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल एक दूसरे पर उसी तरह हराम है जिस तरह तुम्हारे आज के दिन की, चालू महीने और मौजूदा शहर की हुरमत है। सुन लो! जाहिलियत की हर चीज़ मेरे पांवों तले रौंद दी गयी, जाहिलियत के ख़ून भी ख़त्म कर दिए गए और हमारे ख़ून में से पहला ख़ून जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं, वह रबीआ़ बिन हारिस के बेटे का ख़ून है--------यह बच्चा बनू साद में दूध पी रहा था कि इन्ही दिनों में हुज़ैल क़बीले ने उसे क़त्ल कर दिया------और जाहिलियत (अज्ञानता-युग) का सूद (ब्याज) ख़त्म कर दिया गया और हमारे सूद में से पहला सूद जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं, वह अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब का सूद है। अब यह सारा का सारा सूद ख़त्म है।

हां, औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि तुमने उन्हें अल्लाह की अमानत के साथ लिया है और अल्लाह के कलिमे के ज़रिए हलाल किया हैं। उन पर तुम्हारा हक़ यह है कि वे तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे आदमी को न आने दें जो तुम्हें पसंद नहीं। अगर वे ऐसा करें तो तुम

4) इब्ने हिशाम 2/603

उन्हें मार सकते हो, लेकिन सख़्त मार न मारना और तुम पर उनका हक़ यह है कि तुम उन्हें भले तरीक़े के साथ खिलाओ और पहनाओ।

और मैं तुम में ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूं कि अगर तुमने उसे मज़बूती से पकड़े रखा, तो उसके बाद हरगिज़ गुमराह न होगे और वह है अल्लाह की किताब।[5]

लोगो, याद रखो, मेरे बाद कोई नबी नहीं और तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं, इसलिए अपने रब की इबादत करना, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ुशी-ख़ुशी अपने माल की ज़कात देना, अपने पालनहार के घर का हज करना अपने हाकिमों के आदेश का पालन करना। ऐसा करोगे तो अपने पालनहार की जन्नत में दाख़िल होगे।[6]

और तुम से मेरे बारे में पूछा जाने वाला है तो तुम लोग क्या कहोगे? सहाबा रज़ि ने कहा, हम शहादत (गवाही) देते हैं कि आप ने तब्लीग़ कर दी, यानी संदेश पहुंचा दिया और भला चाहने का हक़ अदा कर दिया।

यह सुन कर आपने शहादत की उंगली (यानी अंगूठे के बाद की उंगली) को आसमान की ओर उठाया और लोगों की ओर झुकाते हुए तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह! गवाह रह।[7]

आपकी बातों को रबीआ बिन उमैया बिन ख़ल्फ़ अपनी ऊंची आवाज़ से लोगों तक पहुंचा रहे थे।[8] जब आप ख़ुत्बा दे चुके तो अल्लाह ने यह आयत उतारी—

5) मुस्लिम हज्जतुन-नबी (सल्ल०) 1/397
6) इब्ने माजा, इब्ने असाकिर, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/263
7) मुस्लिम 1/397
8) इब्ने हिशाम 2/605

''الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا''

"आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया।" (5:3)

हज़रत उमर रज़ि० ने यह आयत सुनी तो रोने लगे। मालूम किया गया कि आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाया इसलिए कि कमाल (उन्नती) के बाद नुक़्स (पतन) ही तो है।[9]

ख़ुत्बे के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान दी और फिर इक़ामत कही। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद हज़रत बिलाल रज़ि० ने फिर इक़ामत कही और आप ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और इन दोनों नमाज़ों के दर्मियान कोई और नमाज़ नहीं पढ़ी। इसके बाद सवार होकर आप ठहरने की जगह पर तशरीफ़ ले गए। अपनी ऊंटनी क़ुसवा का पेट चट्टानों की ओर किया और हबले-मुशात (पैदल चलने वालों की राह में वाक़े रेतीले तोदे) के सामने किया और क़िबला रुख़ बराबर इसी हालत में रुके रहे यहां तक कि सूरज डूबने लगा। थोड़ा पीलापन ख़त्म हुआ, फिर सूरज की टिकिया ग़ायब हो गयी। इसके बाद आपने हज़रत उसामा रज़ि० को पीछे बिठाया और वहां से चल कर मुज़दलिफ़ा तशरीफ़ लाए। मुज़दलिफ़ा में मग़्रिब और इशा की नमाज़ें एक अज़ान और दो इक़ामत से पढ़ीं, बीच में कोई नफ़्ल नमाज़ (नहीं पढ़ी इस के बाद आप लेट गए और फ़ज्र होने तक आप लेटे रहे। अलबत्ता सुबह ज़ाहिर होते ही अज़ान की इक़ामत के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। इसके बाद क़ुसवा पर सवार होकर मशअ़रे हराम तशरीफ़ लाए और क़िब्ला रुख़ हो कर अल्लाह से दुआ की और उस की तक्बीर, (अल्लाहु अकबर) तह्लील (लाइला-ह

9) बुख़ारी इब्ने उमर से देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन 1/265

इल्लल्लाह) और तौहीद के कलिमे कहे। यहां इतनी देर तक ठहरे रहे कि ख़ूब उजाला हो गया। इसके बाद सूरज निकलने से पहले-पहले मिना के लिए रवाना हो गए और अब की बार हज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास रज़ि० को अपने पीछे सवार किया। बत्ने मुहस्सर में पहुंचे तो सवारी को तनिक तेज़ी से दौड़ाया, फिर जो बीच का रास्ता जमरा-ए-कुबरा पर निकलता था, उस से चल कर जमरा-ए-कुबरा पर पहुंचे——उस समय वहां एक पेड़ भी था और जमरा-ए-कुबरा उस पेड़ के ताल्लुक़ से भी मशहूर था-----इस के अ़लावा जमरा-ए-कुबरा को जमरा-ए-अ़क़्बा और जमरा-ए-ऊला भी कहते हैं-------फिर आप ने जमरा-ए-कुबरा को सात कंकड़ियां मारीं और हर कंकड़ी के साथ तक्बीर कहते जाते थे। कंकड़ियां छोटी-छोटी थीं जिन्हें चुटकी में ले कर चलाया जा सकता था। आप ने ये कंकड़ियां बत्ने वादी में खड़े हो कर मारी थीं। इस के बाद आप कुर्बानगाह तशरीफ़ ले गये और अपने मुबारक हाथ से 63 ऊंट ज़िब्ह किए। फिर हज़रत अ़ली रज़ि० को सौंप दिया और उन्होंने बाक़ी 37 ऊंट ज़िब्ह किए। इस तरह सौ ऊंट की तायदाद पूरी हो गयी। आप ने हज़रत अ़ली रज़ि० को भी अपनी हद्य (कुर्बानी) में शरीक फ़रमा लिया था। इस के बाद आप के हुक्म से हर ऊंट का एक-एक टुकड़ा काट कर हांडी में डाला और पकाया गया फिर आप ने और हज़रत अ़ली रज़ि० ने उस गोश्त में से कुछ खाया और उस का शोरबा पिया।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सवार हो कर मक्का तशरीफ़ ले गए। बैतुल्लाह का तवाफ़ फ़रमाया——इसे तवाफ़े इफ़ाज़ा कहते हैं---और मक्का ही में जुहर की नमाज़ अदा फ़रमाई, फिर (चाहे ज़म-ज़म पर) बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब के पास तशरीफ़ ले गए। वे हाजियों को ज़म-ज़म का पानी पिला रहे थे। आपने फ़रमाया, बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब! तुम लोग पानी खींचो। अगर यह डर न होता कि पानी पिलाने के इस काम में लोग तुम्हें मग़्लूब कर देंगे, तो मैं भी तुम

लोगों के साथ खींचता"------यानी अगर सहाबा किराम रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुद पानी खींचते हुए देखते तो हर सहाबी खुद पानी खींचने की कोशिश करता और इस तरह हाजियों को ज़म-ज़म पिलाने का सम्मान जो बनू अब्दुल मुत्तलिब को हासिल था, उस की व्यवस्था उन के काबू में न रह जाती। चुनांचे अब्दुल मुत्तलिब ने आप को एक डोल पानी दिया और आप ने इस में से जी भर कर पिया।[10]

आज यौमुन्नहर (कुर्बानी का दिन) था, यानी ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज भी दिन चढ़े (चाश्त के वक़्त) एक खुत्बा दिया। खुत्बे के वक़्त आप ख़च्चर पर सवार थे और हज़रत अली रज़ि० आप की बातें सहाबा किराम रज़ि० को सुना रहे थे। सहाबा किराम रज़ि० कुछ बैठे और कुछ खड़े थे।[11] आप ने आज के खुत्बे में भी कल की कई बातें दोहरायीं। सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू बकर रज़ि० का यह बयान रिवायत किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें यौमुन्नहर (दस ज़िलहिज्जा) को खुत्बा दिया, फ़रमाया------

"ज़माना घूम-फिर कर अपनी उसी दिन की हालत पर पहुंच गया है जिस दिन अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया था। साल बारह महीने का है जिस में से चार महीने हराम के हैं तीन लगातार यानी ज़ी-क़अ़दा, ज़िल हिज्जा और मुहर्रम और एक रजबे मुज़र जो जमादिल उख़रा और शअ़बान के बीच है।"

---

10) मुस्लिम जाबिर से बाब हज्जतुन-नबी (सल्ल०) 1/397-400

11) अबू दाऊद बाब اى وقت يخطب يوم النحر 1/269

आपने यह भी फ़रमाया कि यह कौन सा महीना है? हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। इस पर आप खामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा कि आप इसका कोई और नाम रखेंगे, लेकिन फिर आप ने फ़रमाया क्या यह ज़िलहिज्जा नहीं है? हम ने कहा, क्यों नहीं? आप ने फ़रमाया, यह कौन सा शहर है? हम ने कहा, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं। इस पर आप ख़ामोश रहे, यहां तक कि हम ने समझा, आप इस का कोई और नाम रखेंगे, मगर आप ने फ़रमाया, क्या यह बल्दा (मक्का) नहीं है? हम ने कहा, क्यों नहीं? आप ने फ़रमाया, अच्छा तो यह दिन कौन सा है? हम ने कहा, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं इस पर आप ख़ामोश रहे, यहां तक कि हम ने समझा, आप इस का कोई और नाम रखेंगे मगर आप ने फ़रमाया, क्या यह यौमुन्नहर (कुर्बानी का दिन यानी दस ज़िल हिज्जा) नहीं है? हम ने कहा, क्यों नहीं? आपने फ़रमाया, अच्छा तो सुनो कि तुम्हारा ख़ून, तुम्हारा माल और तुम्हारी आबरू एक दूसरे पर ऐसे ही हराम है जैसे तुम्हारे इस शहर और तुम्हारे इस महीने में तुम्हारा आज का दिन हराम है।

और तुम लोग बहुत जल्द अपने पालनहार से मिलोगे और वह तुम से तुम्हारे कामों के बारे में पूछेगा, इसलिए देखो! मेरे बाद पलट कर गुमराह न हो जाना कि आपस में एक दूसरे की गरदनें मारने लगो। बताओ, क्या मैंने तबलीग़ कर दी? सहाबा किराम रज़ि० ने कहा, हां। आपने फ़रमाया, ऐ अल्लह! गवाह रह———जो आदमी मौजूद है वह ग़ैर मौजूद तक (मेरी बातें) पहुंचा दे, क्योंकि कुछ वे लोग जिन तक (ये बातें) पहुंचाई जाएंगी, वे कुछ (मौजूदा) सुनने वाले से कहीं ज़्यादा इन बातों के हालात को समझ सकेंगे।[12]

12) बुख़ारी बाबुल-खुतबा अय्यामु मिना 1/234

एक रिवायत में है कि आप ने इस ख़ुत्बे में यह भी फ़रमाया, "याद रखो! कोई भी जुर्म करने वाला अपने सिवा किसी और पर जुर्म नहीं करता (यानी उस जुर्म के बदले में कोई और नहीं, बल्कि ख़ुद मुजरिम ही पकड़ा जाएगा) याद रखो! कोई जुर्म करने वाला अपने बेटे पर या कोई बेटा अपने बाप पर जुर्म नहीं करता (यानी बाप के जुर्म में बेटे को या बेटे के जुर्म में बाप को नहीं पकड़ा जाएगा) याद रखो शैतान निराश हो चुका है कि अब तुम्हारे इस शहर में कभी भी उसकी पूजा की जाएगी, लेकिन अपने जिन कामों को तुम लोग तुच्छ समझते हो, उन में उस का पालन किया जाएगा और वह इसी से राज़ी होगा।[13]"

इस के बाद आप अय्यामे तश्रीक़ (11-12-13 ज़िल हिज्जा को) मिना में ठहरे रहे। इस बीच आप हज के मनासिक (रस्में) भी अदा फ़रमा रहे थे। और लोगों को शरीअ़त के हुक्म भी सिखा रहे थे, अल्लाह का ज़िक्र भी फ़रमा रहे थे। मिल्लते इब्राहीमी की सुन्नत भी क़ायम कर रहे थे और शिर्क के आसार और निशानियों का सफ़ाया भी कर रहे थे। आप ने अय्यामे तश्रीक़ में भी एक दिन ख़ुत्बा दिया, चुनांचे सुनने अबी दाऊद में अच्छी सनद के साथ रिवायत है कि हज़रत सरा बिन्ते बनहान रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें रऊस[14] के दिन ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया, क्या यह अय्यामे तश्रीक़ के बीच का दिन नहीं है![15] आपका आज का ख़ुत्बा भी कल (यौमुन्नहर) के ख़ुत्बे जैसा था और यह ख़ुत्बा सूरः नस्र के उतरने के बाद दिया गया था।

अय्यामे तश्रीक़ के ख़ात्मे पर दूसरे यौमुन्नफ़्र पर यानी 13 ज़िलहिज्जा को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिना से कूच

---

13) तिरमिज़ी 2/38,155, इब्ने माजा किताबुल-हज, मिशकात 1/234

14) अर्थात 12 ज़िल-हज्जा (औनुल-मअबूद 2/143)

15) अबूदाऊद बाब ای یوم یخطب بمنی 1/269

फ़रमाया और अबतह घाटी के ख़ीफ़ बनी कनाना में जा ठहरे। दिन का बाक़ी हिस्सा और रात वहीं गुज़ारी और ज़ुहर, अस्र, मग़्रिब और इशा की नमाज़ें वहीं पढ़ीं, अलबत्ता इशा के बाद थोड़ा सा सो कर उठे, फिर सवार हो कर बैतुल्लाह तशरीफ़ ले गए और तवाफ़े विदाअ़ फ़रमा आए।

और अब हज के तमाम मनासिके हज (हज के ज़रुरी अर्कान) से फ़ारिग़ हो कर आपने सवारी का रुख़ मदीना मुनव्वरा के रास्ते पर डाल दिया, इसलिए नहीं कि वहां पहुंच कर आराम फ़रमायें, बल्कि इसलिए कि अब फिर अल्लाह के लिए अल्लाह की राह में एक नयी कोशिश शुरू करें।[16]

---

16) हज्जतुल-विदाअ की तफ़सील के लिए देखिए बुख़ारी किताबुल-मनासिक 2/631, मुस्लिम बाब हज्जतुन-नबी (सल्ल०), फ़तहुल बारी भाग 3 शरह किताबुल-मनासिक और 3/103-110, इब्ने हिशाम 2/601-605, ज़ादुल-मआद 1/196, 218-240

आख़िरी फ़ौजी मुहिम

रोमन एम्पायर की किब्रियाई (अहम) को गवारा न था कि वह इस्लाम और मुसलमानों के ज़िंदा रहने का हक़ मान ले। इसी लिए उसके राज्य में रहने वाला कोई व्यक्ति इस्लाम में आ जाता तो उसकी जान की ख़ैर न रहती जैसा कि मआन के रूमी गवर्नर हज़रत फ़रवा बिन अम्र जुज़ामी के साथ पेश आ चुका था।

इस बे-नकेल साहस और इस बेजा गर्व की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़र सन् 11 हि० में एक भारी सेना की तैयारी शुरू फ़रमाई और हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को उस का सेनापति बनाते वक़्त हुक्म दिया कि बलक़ा का इलाक़ा और दारूम के फ़लस्तीनी भू-भाग सवारों के ज़रिए रौंद आओ। इस कार्यवाही का मक़सद यह था कि रूमियों को भयभीत करते हुए उनकी सीमाओं पर स्थित अरब क़बीलों का विश्वास बहाल किया जाए और किसी को यह सोचने की गुंजाइश न दी जाए कि कलीसा की हिंसात्मक कार्यवाहियों पर कोई पूछने वाला नहीं और इस्लाम ना अपनाने का मक़सद सिर्फ़ यह है कि अपनी मौत को दावत दी जा रही है।

इस अवसर पर कुछ लोगों ने सेनापति की नव-उम्री की आलोचना की और मुहिम में शामिल होने में वक़्त लगाया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम लोग इनको

सेनापति होने का ताना दे रहे हो तो इन से पहले इन के बाप को सेनापतित्व पर ताने दे चुके हो, हालांकि वह अल्लाह की क़सम! सेनापति बनने के योग्य थे और मेरे नज़दीक सब से प्रिय लोगों में से थे और ये भी उन के बाद मेरे नज़दीक सब से प्रिय लोगों में से हैं।[1]

बहरहाल सहाबा किराम रज़ि० ने हज़रत उसामा रज़ि० के चारों ओर जमा हो कर उन की सेना में शामिल हो गए और सेना ने रवाना होकर मदीना से तीन मील दूर जर्फ़ में पड़ाव डाला। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी के बारे में चिन्ताजनक ख़बरों की वजह से आगे न बढ़ सकी, बल्कि अल्लाह के फ़ैसले के इन्तिज़ार में वहीं ठहरने पर मजबूर हो गयी और अल्लाह का फ़ैसला यह था कि यह सेना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िलाफ़त के दौर की पहली फ़ौजी मुहिम क़रार पाए।[2]

---

1) बुख़ारी बाब बअसुन-नबी (सल्ल०) उसामा 2/612

2) बुख़ारी बाब बअसुन-नबी(सल्ल०) उसामा 2/612 इब्ने हिशाम 2/606

पाक ज़िन्दगी
का
आख़िरी अध्याय

रफ़ीक़े अअ़ला की ओर

विदाई निशानियां

जब दीन की दावत पूरी हो गई और अ़रब की नकेल इस्लाम के हाथ में आ गई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातों से, भावनाओं से, हालात से और अ़मल से ऐसी निशानियां सामने आने लगीं जिनसे मालूम होता था कि अब आप इस मुस्तआ़र (अस्थायी) ज़िंदगी को और इस मिट जाने वाली दुनिया के रहने वालों को अल्‌विदाअ़ कहने वाले हैं, जैसे———

आप ने रमज़ान सन् 10 हि० में बीस दिन एतिकाफ़ फ़रमाया, जबकि हमेशा दस ही दिन एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे, फिर हज़रत जिब्रील अ़लैहि ने आपको इस साल कुरआन का दो बार दौर कराया, जबकि हर साल एक ही बार दौर कराया करते थे। आप ने आख़िरी हज में फ़रमाया, "मुझे मालूम नहीं, शायद मैं इस साल के बाद अपनी इस जगह पर तुम लोगों से कभी न मिल सकूंगा।" जमरा-ए-अक़बा के पास फ़रमाया "मुझ से अपने हज के कामों को सीख लो, क्योंकि मैं इस साल के बाद शायद हज न कर सकूंगा।" आप पर अय्यामे तश्रीक़ के बीच में सूरः नस्र उतरी और उससे आपने समझ लिया कि अब दुनिया से रवानगी का वक़्त आ पहुंचा है और यह मौत की ख़बर है।

सफ़र सन् 11 हि० के शुरू में आप उहद के दामन में तशरीफ़ ले गए और शहीदों के लिए इस तरह दुआ फ़रमाई मानो ज़िंदों और मुर्दों

से विदा हो रहे हैं। फिर वापस आ कर मिंबर पर बैठे और फ़रमाया, "मैं तुम्हारा मीरे कारवां (क़ाफ़िले का सरदार) हूं और तुम पर गवाह हूं। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त अपना हौज़ (हौज़े कौसर) देख रहा हूं। मुझे ज़मीन और ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां दी गई हैं और अल्लाह की क़सम! मुझे यह डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, बल्कि डर इसका है कि दुनिया के बारे में आपस में मुक़ाबला करोगे।[1]"

एक दिन आधी रात को आप बक़ीअ़ तशरीफ़ ले गए और बक़ीअ़ वालों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ की, फ़रमाया, "ऐ क़ब्र वालो! तुम पर सलाम! लोग जिस हाल में हैं उसके मुक़ाबले में तुम्हें वह हाल मुबारक हो जिस में तुम हो। फ़ित्ने अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह एक के पीछे एक चले आ रहे हैं और बाद वाला पहले वाले से ज़्यादा बुरा है।" इसके बाद यह कह कर क़ब्र वालों को ख़ुशख़बरी दी कि हम भी तुम से आ मिलने वाले हैं।

मरज़ की शुरूआत

29 सफ़र सन् 11 हि० सोमवार को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक जनाज़े में बक़ीअ़ तशरीफ़ ले गए। वापसी के वक़्त रास्ते ही में सर दर्द शुरू हो गया और बुख़ार इतना तेज़ हो गया कि सर पर बंधी हुई पट्टी के ऊपर से महसूस की जाने लगी। यह आपके मरज़ुल-मौत का आरंभ था। आपने इसी मरज़ की हालत में ग्यारह दिन नमाज़ पढ़ाई। रोग की कुल मुद्दत 13 या 14 दिन थी।

आख़िरी सप्ताह

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीयत दिन प्रतिदिन बोझल होती जा रही थी। इस बीच आप पाक बीवियों से पूछते रहते थे कि मैं कल कहां रहूंगा? मैं कल कहां रहूंगा? इस सवाल से आप जो चाहते थे पाक बीवियां उसे समझ गयीं। चुनांचे उन्होंने इजाज़त दे

---

1) मुत्तफ़क़ अलैहि, बुख़ारी 2/585

दी कि आप जहां चाहें रहें। इस के बाद आप हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में चले गए। जाते हुए हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० का सहारा लेकर बीच में चल रहे थे, सर पर पट्टी बंधी हुई थी और पांव ज़मीन पर घिसट रहे थे, इस दशा में आप हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में तशरीफ़ लाए और मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी सप्ताह वहीं गुज़ारा।

हज़रत आइशा रज़ि० मुअव्विज़ात और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से याद की हुई दुआएं पढ़ कर आप पर दम करती रहती थीं और बरकत की उम्मीद में आपका हाथ आपके मुबारक जिस्म पर फेरती रहती थीं।

वफ़ात से पांच दिन पहले

वफ़ात से पाचं दिन पहले बुधवार को जिस्म की हरारत ज़्यादा हो गयी जिसकी वजह से तक्लीफ़ भी बढ़ गयी और बेहोशी छा गयी। आपने फ़रमाया, "मुझ पर अलग-अलग कुंवों के सात मश्कीज़े बहाओ ताकि मैं लोगों के पास जाकर वसीयत कर सकूं।" इस हुक्म को पूरा करते हुए आपको एक लगन में बिठा दिया गया और आपके ऊपर इतना पानी डाला गया कि आप 'बस-बस' कहने लगे।

इस वक़्त आपने (बुख़ार में) कुछ कमी महसूस की और मस्जिद में तशरीफ़ ले गए----सर पर पट्टी बंधी हुई थी--- मिंबर पर बैठे और बैठ कर ख़ुत्बा दिया। सहाबा किराम आस-पास जमा थे, फ़रमाया, "यहूदियों और ईसाईयों पर अल्लाह की लानत------कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।" एक रिवायत में है, "यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की मार कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।[2]" आप ने यह भी फ़रमाया, "तुम लोग मेरी क़ब्र को बुत न बनाना कि उस की पूजा की जाए।[3]"

2) बुख़ारी 1/62, मुअत्ता इमाम मालिक 360

3) बुख़ारी 1/62, मुअत्ता इमाम मालिक 365

फिर आपने अपने आपको क़िसास (बदला) लेने के लिए पेश किया और फ़रमाया, "मैंने किसी की पीठ पर कोड़ा मारा हो, तो यह मेरी पीठ हाज़िर है, वह बदला ले-ले और किसी की बे-आबरूई की हो, तो यह मेरी आबरू हाज़िर है, वह बदला ले-ले।"

इसके बाद आप मिंबर से नीचे तशरीफ़ लाए, ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई और फिर मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और अदावत (दुश्मनी) वग़ैरह से मुताल्लिक़ अपनी पिछली बातें दोहराई। एक आदमी ने कहा, आपके ज़िम्मे मेरे तीन दिरहम बाक़ी हैं। आपने फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० से फ़रमाया, इन्हें अदा कर दो। इसके बाद अंसार के बारे में वसीयत फ़रमायी! फ़रमाया—

"मैं तुम्हें अंसार के बारे में वसीयत करता हूं, क्योंकि वे मेरे दिल व जिगर हैं, उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी, मगर उन के हक़ बाक़ी रह गए हैं, इसलिए उनके नेकोकार (नेक काम करने वालों) से क़ुबूल करना और उन के ग़लत करने वालों से दर गुज़र करना।" एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया, "लोग बढ़ते जाएंगे और अंसार घटते जाएंगे, यहां तक कि खाने में नमक के बराबर हो जाएंगे। इसलिए तुम्हारा जो आदमी किसी नफ़ा और नुक़सान पहुंचाने वाले काम का वाली (ज़िम्मेदार) हो, तो वह उनके नेकोकारों से क़ुबूल करे और उनके ख़ता करने वालों से दरगुज़र करे।[4]"

इस के बाद आप ने फ़रमाया——"एक बंदे को अल्लाह ने इख़्तियार दिया कि वह या तो दुनिया की चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में से जो कुछ चाहे अल्लाह उसे दे दे या अल्लाह के पास जो कुछ है उसे इख़्तियार कर ले तो उस बंदे ने अल्लाह के पास वाली चीज़ को इख़्तियार कर लिया।" अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० का बयान है कि यह

4) बुख़ारी 1/536

बात सुन कर अबू बक्र रज़ि० रोने लगे और फ़रमाया, "हम अपने मां बाप समेत आप पर क़ुर्बान।" इस पर हमें ताज्जुब हुआ। लोगों ने कहा, इस बूढ़े को देखो! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो एक बंदे के बारे में यह बता रहे हैं कि अल्लाह ने उसे इख़्तियार दिया कि दुनिया की चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत से जो चाहे अल्लाह उसे दे दे या वह अल्लाह के पास जो कुछ है, उसे अपना ले और यह बूढ़ा कह रहा है कि हम अपने मां-बाप के साथ आप-पर क़ुर्बान। (लेकिन कुछ दिन बाद स्पष्ट हुआ कि) जिस बंदे को इख़्तियार दिया गया था, वह खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे और अबू बक्र रज़ि० हम में सब से ज़्यादा इल्म वाले थे।[5]

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मुझ पर साथ देने और माल ख़र्च करने में सब से ज़्यादा एहसान अबू बक्र रज़ि० ने किए हैं और अगर मैं अपने रब के अलावा किसी और को ख़लील बनाता तो अबू बक्र रज़ि० को ख़लील बनाता। लेकिन (उनके साथ) इस्लाम के भाई-चारे और मुहब्बत (का ताल्लुक़) है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा बाक़ी न छोड़ा जाए, बल्कि उसे ज़रूर ही बंद कर दिया जाए, सिवाए अबू बक्र रज़ि० के दरवाज़े के।[6]"

चार दिन पहले

वफ़ात से चार दिन पहले जुमेरात (बृहस्पतिवार) को आप बड़ी पीड़ा झेल रहे थे, फ़रमाया, "लाओ मैं तुम्हें एक लेख लिख दूं, जिसके बाद तुम लोग कभी गुमराह न होगे।" उस समय घर में कई आदमी थे जिन में हज़रत उमर रज़ि० भी थे। उन्होंने कहा, आप पीड़ा में हैं और तुम्हारे पास क़ुरआन है, बस अल्लाह की यह किताब तुम्हारे लिए काफ़ी है। इस पर घर के अंदर मौजूद लोगों में मतभेद हो गया और वे झगड़ पड़े। कोई कह रहा था, लाओ, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

5-6) मुत्तफ़क़ अलैहि मिश्कात 2/546,556, बुख़ारी 1/516

सल्लम लिख दें और कोई वही कह रहा था जो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा था, इस तरह जब लोगों ने ज़्यादा शोर, और मतभेद किया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मेरे पास से उठ जाओ।[7]"

फिर उसी दिन आपने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई------एक इस बात की वसीयत की कि यहूदियों, ईसाईयों और मुश्रिकों को अरब प्रायद्वीप से निकाल देना। दूसरे इस बात की वसीयत की कि प्रतिनिधि-मंडलों के साथ वैसा ही नम्र व्यवहार करना, जिस तरह आप किया करते थे। अलबत्ता तीसरी बात को रिवायत करने वाला भूल गया कि शायद यह किताब व सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रहने की वसीयत थी या उसामा रज़ि० की सेना को रवाना करने की वसीयत थी या आप का यह इर्शाद था कि "नमाज़ और तुम्हारे मातहतों" यानी लौंडियों और गुलामों का ध्यान रखना।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरज़ की शिद्दत के बावजूद उस दिन तक, यानी वफ़ात से चार दिन पहले (बृहस्पतिवार) तक तमाम नमाज़ें ख़ुद ही पढ़ाया करते थे। उस दिन भी मग़्रिब की नमाज़ आप ही ने पढ़ाई और उसमें सूरः वल मुर्सलाते उर्फ़न पढ़ी।[8]

लेकिन इशा के वक़्त मरज़ का बोझ इतना बढ़ गया कि मस्जिद में जाने की ताक़त न रही। हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम फ़रमाया कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली? हम ने कहा, "नहीं! ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! सब आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं।" आपने फ़रमाया, मेरे लिए लगन में पानी रखो। हमने ऐसा ही किया। आपने गुस्ल फ़रमाया और इसके बाद उठना चाहा, लेकिन आप पर बेहोशी छा गयी, फिर तबीयत

7) मुत्तफ़क़ अलैहि: बुख़ारी 1/22, 429,449,2/638
8) बुख़ारी उम्मुल-फ़ज़्ल से: बाब मरज़ुन-नबी (सल्ल०) 2/637

ठीक हुई तो आप ने मालूम किया, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली? हमने कहा, "नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! सब आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं।" इस के बाद दोबारा और फिर तीसरी बार वही बात पेश आई जो पहली बार पेश आ चुकी थी कि आप ने गुस्ल फ़रमाया, फिर उठना चाहा तो आप पर ग़शी छा गई। आख़िरकार आप ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० को कहलवा भेजा कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं, चुनांचे हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उन दिनों में नमाज़ पढ़ाई।[9] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िंदगी में उन की पढ़ाई हुई नमाज़ों की तायदाद 17 है।

हज़रत आइशा रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तीन या चार बार मालूम किया कि इमामत का काम हज़रत अबू बक्र के बजाए किसी और को सौंप दें। उनकी मंशा यह था कि लोग अबू बक्र रज़ि० के बारे में अशुभ होना न सोचें, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर बार इंकार फ़रमा दिया और फ़रमाया, "तुम सब यूसुफ़ वालियां हो।[10] अबू बक्र रज़ि० को हुक्म दो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।[11]"

9) मुत्तफ़क अलैहि, मिश्कात 1/102

10) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस सलाम के सिलसिले में जो औरतें अज़ीज़े मिस्र की बीवी की मलामत(भर्त्सना) कर रही थीं वह यों तो इस के काम के घटियापन ज़ाहिर कर रही थी लेकिन यूसुफ़ (अलैहिस-सलाम) को देख कर जब उन्होंने अपनी उंगलिया काट लीं तो मालूम हुआ कि यह खुद भी उनकी आशिक थीं अर्थात वह जबान से कुछ कह रही थीं लेकिन दिल मे कुछ और ही बात थी। यही बात यहाँ भी थी। यों तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा जा रहा था कि अबू बक्र रक़ीकुल-क़ल्ब (दयालू) हैं आप की जगह खड़े होंगे तो रोने की वजह से कुरआन पढ़ नहीं पाऐंगे या सुना न सकेंगे। लेकिन दिल में यह बात थी कि अगर अल्लाह न करे हुज़ूर (सल्ल०) इसी बीमारी में रेहलत फ़रमा (मर) गए तो अबू बक्र (रज़ि०) के बारे में नुहूसत (अमंगलता) और बद-शगूनी (अपशकुनता) का ख़्याल लोगों के दिलों में बेठ जाऐगा। चूंकि हज़रत आईश (रज़ि०) का इस गुज़ारिश (निवेदन) में दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीबियाँ) शरीक थीं इसलिए आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम सब यूसुफ़ वालियाँ हो अर्थात तुम्हारे भी दिल में कुछ है और ज़बान से कुछ कह रही हो।

11) बुख़ारी 1/99

एक दिन या दो दिन पहले

सनीचर या इतवार (शनिवार या रविवार) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी तबीयत में कुछ सुधार महसूस किया, चुनांचे दो आदमियों के बीच में चल कर जुहर की नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए। उस वक़्त अबू बक्र रज़ि० सहाबा किराम रज़ि० को नमाज़ पढ़ा रहे थे। वह आप को देख कर पीछे हटने लगे। आप ने इशारा फ़रमाया कि पीछे न हटें और लाने वालों से फ़रमाया कि मुझे उन के बाज़ू में बिठा दो। चुनांचे आप को अबू बक्र रज़ि० के बाएं तरफ़ बिठा दिया गया। इस के बाद अबू बक्र रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ की इक़्तिदा (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना) कर रहे थे और सहाबा किराम रज़ि० को तक्बीर सुना रहे थे।[12]

एक दिन पहले

वफ़ात से एक दिन पहले रविवार को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने तमाम गुलामों को आज़ाद फ़रमा दिया। पास में सात दीनार थे उन्हें सदक़ा कर दिया। अपने हथियार मुसलमानों को हिबा फ़रमा दिये। रात में चिराग़ जलाने के लिए हज़रत आइशा रज़ि० ने तेल पड़ोसिन से उधार लिया। आप की ज़िरह एक यहूदी के पास तीस साअ़ (लगभग 75 किलो) जौ के बदले रेहन रखी हुई थी।

मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी दिन

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि सोमवार को मुसलमान फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने में लगे हुए थे, और हज़रत अबू बक्र रज़ि० इमामत फ़रमा रहे थे—कि अचानक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे का परदा हटाया और सहाबा किराम रज़ि० जो सफ़ें बांधे नमाज़ में लगे हुए थे, नज़र डाली, फिर

12) बुख़ारी 1/98-99

मुस्कुराए। इधर अबू बक्र रज़ि० अपनी एड़ी के बल पीछे हटे कि सफ़ में जा कर मिलें। उन्होंने समझा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाना चाहते हैं। हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (के इस अचानक ज़ाहिर होने से) मुसलमान इतने ख़ुश हुए कि चाहते थे कि नमाज़ के अदंर ही फ़ित्ने में पड़ जाएं। (यानी आपका मिज़ाज पूछने के लिए नमाज़ तोड़ दें।) लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने हाथ से इशारा फ़रमाया कि अपनी नमाज़ पूरी कर लो, फिर हुजरे के अंदर तशरीफ़ ले गए और परदा गिरा लिया।[13]

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर किसी दूसरी नमाज़ का वक़्त नहीं आया।

दिन चढ़े चाश्त के वक़्त आप ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को बुलाया और उनसे कान में कुछ कहा, वह रोने लगीं। आपने उन्हें फिर बुलाया और कान में कुछ कहा, तो वह हंसने लगीं। हज़रत आ़इशा रज़ि० का बयान है कि बाद में हमारे मालूम करने पर उन्होंने बताया कि (पहली बार) नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझ से कानाफूंसी करते हुए बताया कि आप इसी मरज़ में वफ़ात पा जाएंगे, इसलिए मैं रोई, फिर आपने मुझ से कानाफूंसी करते हुए बताया कि आपके घर वालों में सबसे पहले मैं आप के पीछे जाऊंगी, इस पर मैं हंसी।[14]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को यह ख़ुशख़बरी भी दी कि आप दुनिया की सारी औरतों की सरदार हैं।[15]

---

13) बुख़ारी बाब मरज़ुन-नबी(सल्ल०) 2/240

14) बुख़ारी 2/638

15) कुछ रिवायात से मालूम होता है कि बातचीत और ख़ुशख़बरी देने की यह घटना आपकी हयाते मुबारका के आख़िरी दिन नहीं बल्कि आख़िरी हफ़्ते में घटी थी देखिए रहमतुल-लिल-आलमीन 1/282

उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस ज़बरदस्त बेचैनी के शिकार थे, उसे देख कर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० बे-इख़्तियार पुकार उठीं, واكرب أباه, "हाय, अब्बा जान की तक्लीफ़।" आप ने फ़रमाया, "तुम्हारे अब्बा पर आज के बाद कोई तक्लीफ़ नहीं।[16]"

आप ने हसन व हुसैन रज़ि० को बुला कर चूमा और उनके बारे में ख़ैर की वसीयत फ़रमाई, पाक बीवियों को बुलाया और उन्हें वाज़ व नसीहत की।

इधर हर क्षण तक्लीफ़ बढ़ती जा रही थी और उस विष का असर भी ज़ाहिर होना शुरू हो गया था जिसे आप को ख़ैबर में खिलाया गया था। चुनांचे आप हज़रत आइशा रज़ि० से फ़रमाते थे, "ऐ आइशा रज़ि०! "ख़ैबर में जो खाना मैं ने खा लिया था, उसकी तक्लीफ़ बराबर महसूस कर रहा हूं। इस वक़्त मुझे महसूस हो रहा है कि उस विष के असर से मेरी नसें कटती जा रही हैं।[17]"

आप ने सहाबा किराम को भी वसीयत फ़रमाई, फ़रमाया, الصلاة الصلاة وما ملكت أيمانكم "नमाज़, नमाज़ और तुम्हारे मातहत (यानी लौंडी-गुलाम) आपने ये शब्द कई बार दोहराये।[18]

नज़अ़ की हालत

फिर नज़अ़ की हालत (ज़िंदगी का आख़िरी समय) शुरू हो गयी और हज़रत आइशा रज़ि० ने आपको अपने ऊपर सहारा देकर टेक लिया। उनका बयान है कि अल्लाह की एक नेमत मुझ पर यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे घर में मेरी बारी के दिन मेरे लब्बे और सीने के बीच वफ़ात पायी और आपकी वफ़ात के

---

16) बुख़ारी 2/641

17) बुख़ारी 2/637

18) बुख़ारी 2/637

वक़्त अल्लाह ने मेरा लुआब (मुंह का गीलापन) और आप का लुआब इकट्ठा कर दिया। हुआ यह कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ि० आप के पास तश्रीफ़ लाए, उन के हाथ में मिस्वाक थी और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ से टेक लगाए हुए थे। मैंने देखा कि आप मिस्वाक की ओर देख रहे हैं। मैं समझ गयी कि आप मिस्वाक चाहते हैं। मैंने पूछा, आपके लिए ले लूं? आपने सर से इशारा फ़रमाया कि हां। मैंने मिस्वाक लेकर आपको दी तो आपको कड़ी महसूस हुई। मैंने कहा, इसे आपके लिए नर्म कर दूं? आपने सर के इशारे से कहा, हां। मैंने मिस्वाक नर्म कर दी और आपने बहुत अच्छी तरह मिस्वाक की। आपके सामने कटोरे में पानी था। आप पानी में दोनों हाथ डाल कर चेहरा पोंछते जाते थे और फ़रमाते जाते थे" لا اله الا الله "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं' मौत के लिए सख़्तियां हैं।[19]"

मिस्वाक से फ़ारिग़ होते ही आप ने हाथ या उंगली उठाई, निगाह छत की ओर बुलन्द की, और दोनों होंठों पर कुछ हरकत हुई। हज़रत आइशा रज़ि० ने कान लगाया तो आप फ़रमा रहे थे "उन नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और नेक लोगों के साथ जिन्हें तूने इनाम से नवाज़ा, ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे रफ़ीक़े आला में पहुंचा दे। ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आला।[20]"

आख़िरी वाक्य तीन बार दोहराया और उसी वक़्त हाथ झुक गया और आप रफ़ीक़े आला से जा मिले। انا لله وانا اليه راجعون

यह घटना 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हि०, सोमवार को चाश्त की तेज़ी के वक़्त घटी। उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र 63 साल चार दिन हो चुकी थी।

---

19) बुख़ारी 2/640

20) बुख़ारी बाब मरज़ुन-नबी (सल्ल०) तथा बाब आख़िरु मा तकल्लमन-नबी (सल्ल०) 2/638-641

अथाह शोक

इस दुखद घटना की ख़बर तुरन्त फैल गयी। मदीना वालों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। हर ओर अंधेरा छा गया। हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे यहां तशरीफ़ लाए, उससे बेहतर और चमचमाता दिन मैंने कभी नहीं देखा और जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफ़ात पाई, उससे ज़्यादा दुखद और अंधेरा दिन भी हमने कभी नहीं देखा।[21]

आप की वफ़ात पर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने अति दुखी दिल से फ़रमाया,

يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ، يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ، يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ

"हाय अब्बा जान! जिन्होंने पालनहार की पुकार पर लब्बैक कहा, हाय अब्बा जान! जिनका ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस है। हाय अब्बा जान! हम जिब्रील अलैहि० को आपकी मौत की ख़बर देते हैं।[22]"

हज़रत उमर रज़ि० का मौक़िफ़ (द्रष्टिकोण)

वफ़ात की ख़बर सुन कर हज़रत उमर रज़ि० के होश जाते रहे। उन्होंने खड़े हो कर कहना शुरू किया, "कुछ मुनाफ़िक़ समझते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हो गई लेकिन हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात नहीं हुई, बल्कि आप अपने पालनहार के पास तशरीफ़ ले गए हैं, जिस तरह मूसा बिन इमरान अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले गए थे और अपनी क़ौम से चालीस दिन ग़ायब रह कर उनके पास वापस आ गए थे, हालांकि वापसी से पहले कहा जा रहा था कि वह इंतिक़ाल कर चुके हैं।

21) दारमी, मिशकात 2/547

22) बुख़ारी बाब मरज़ुन-नबी (सल्ल०) 2/641

अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी ज़रूर पलट कर आएंगे और उन लोगों के हाथ पांव काट डालेंगे जो समझते हैं कि आपकी मौत हो चुकी है।[23]"

हज़रत अबू बक्र रज़ि० का मौक़िफ़ (द्रष्टिकोण)

उधर हज़रत अबू बक्र रज़ि० सख़ में स्थित अपने मकान से घोड़े पर सवार हो कर तशरीफ़ लाए और उतर कर मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए। फिर लोगों से कोई बात किए बिना सीधे हज़रत आइशा रज़ि० के पास गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरादा फ़रमाया। आपका मुबारक जिस्म धारीदार यमनी चादर से ढका हुआ था। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने चमचमाते चेहरे पर से चादर हटाई और उसे चूमा और रोए, फिर फ़रमाया, "मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान! अल्लाह आप पर दो मौत जमा नहीं करेगा। जो मौत आप पर लिख दी गयी थी, वह आप को आ चुकी।"

इस के बाद हज़रत अबू बक्र रज़ि० बाहर तशरीफ़ लाए। इस वक़्त भी हज़रत उमर रज़ि० लोगों से बात कर रहे थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उनसे कहा, उमर (रज़ि०) बैठ जाओ। हज़रत उमर रज़ि० ने बैठने से इंकार कर दिया। उधर सहाबा किराम रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० को छोड़ कर हज़रत अबू बक्र रज़ि० की ओर मुतवज्जह हो गए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया;

اما بعد مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّداً ﷺ فان محمداً قَدْ مَاتَ، وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ، قَالَ اللّٰهُ: وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشَّاكِرِينَ

---

23) इब्ने हिशाम 2/655

"अम्मा बाद! तुम में से जो आदमी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पूजा करता था तो (वह जान ले कि) मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मौत आ चुकी है और तुम में से जो आदमी अल्लाह की इबादत करता था, तो यक़ीनी तौर पर अल्लाह हमेशा ज़िंदा रहने वाला है, कभी नहीं मरेगा। अल्लाह का इर्शाद है, मुहम्मद नहीं हैं मगर रसूल ही, उनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, तो क्या अगर--- उन्हें मौत आ जाए या वह क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम लोग अपनी एड़ी के बल पलट जाओगे? और जो आदमी अपनी एड़ी के बल पलट जाए तो (याद रखे कि) वह अल्लाह को कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकता और अल्लाह बहुत जल्द शुक्र करने वालों को बदला देगा।"(3:144)

सहाबा किराम रज़ि० को जो अब तक शोक की ज़्यादती से हैरान व परेशान थे उन्हें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का यह ख़िताब सुन कर यक़ीन आ गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाक़ई रुख़्सत हो चुके हैं। चुनांचे हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का बयान हैं कि अल्लाह की क़सम! ऐसा लगता था मानो लोगों ने जाना ही न था कि अल्लाह ने यह आयत उतारी है, यहां तक कि अबू बक्र रज़ि० ने उस की तिलावत की तो सारे लोगों ने उन से यह आयत ली और अब जिस किसी इंसान को मैं सुनता तो वह इसी आयत की तिलावत कर रहा होता।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! मैंने ज्यों ही अबू बक्र रज़ि० को यह आयत तिलावत करते हुए सुना, बड़ा हैरान हो गया, यहां तक कि मेरे पांव मुझे उठा ही नहीं रहे थे, और यहां तक कि अबू बक्र रज़ि० को इस आयत की तिलावत करते सुन कर मैं ज़मीन पर गिर पड़ा, क्योंकि मैं जान गया कि वाक़ई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मौत वाक़े हो चुकी है।[24]"

---

24) बुख़ारी 2/640-641

कफ़न-दफ़न और नमाज़े जनाज़ा

इधर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कफ़न-दफ़न से पहले ही आप की जानशीनी के बारे में मतभेद हो गया। सक़ीफ़ा बनी साइदा में मुहाजिरों और अंसार के बीच ज़ोरदार वार्ता हुई और आख़िर में हज़रत अबू बक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त पर सहमति हो गई। इस काम में सोमवार का बाक़ी दिन बीत गया और रात आ गई। लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कफ़न-दफ़न के बजाए इस दूसरे काम में लग गए, फिर रात गुज़री और मंगल की सुबह हुई। उस वक़्त तक आपका मुबारक जिस्म एक धारीदार यमनी चादर में ढका बिस्तर पर ही रहा। घर के लोगों ने बाहर से दरवाज़ा बंद कर दिया था।

मंगल के दिन आपके कपड़े उतारे बिना ग़ुस्ल (स्नान) दिया गया। ग़ुस्ल देने वाले लोग ये थे-----हज़रत अब्बास रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत अब्बास रज़ि० के दो बेटे फ़ज़्ल और क़ुसुम, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए गए ग़ुलाम शक़रान, हज़रत उसामा बिन ज़ैद और औस बिन ख़ौली रज़ि०। हज़रत अब्बास, फ़ज़्ल और क़ुसुम रज़ि० आप की करवट बदल रहे थे। हज़रत उसामा रज़ि० और शक़रान रज़ि० पानी बहा रहे थे। हज़रत अली रज़ि० ग़ुस्ल दे रहे थे और हज़रत औस रज़ि० ने आपको अपने सीने से टेक रखा था।

इस के बाद आप को तीन सफ़ेद यमनी चादरों में कफ़नाया गया, उनमें कुरता और पगड़ी न थी।[25] बस आपको चादरों ही में लपेट दिया गया था।

आपकी आख़िरी आरामगाह के बारे में भी सहाबा किराम रज़ि० की राएं अलग-अलग थीं, लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए

---

25) बुख़ारी 1/169, मुस्लिम 1/306

सुना है कि कोई नबी भी नहीं उठाया गया, मगर वह वहीं दफ़नाया गया जहां उठाया गया। इस फ़ैसले के बाद हज़रत तलहा रज़ि० ने आपका वह बिस्तर उठाया जिसपर आपकी वफ़ात हुई थी और उसके नीचे क़बर खोदी क़बर बग़ली खोदी गई थी।

इसके बाद बारी-बारी दस-दस सहाबा किराम ने हुजरा शरीफ़ में दाख़िल हो कर जनाज़े की नमाज़ पढ़ी। कोई इमाम न था, सब से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ानदान के लोग (बनू हाशिम) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, फिर मुहाजिरों ने, फिर अंसार ने, फिर मर्दों के बाद औरतों ने और उनके बाद बच्चों ने।

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने में मंगल का दिन पूरा गुज़र गया और बुधवार की रात आ गई। रात में आपके पाक जिस्म को दफ़ना दिया गया। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि हमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दफ़न होने का इल्म न हुआ, यहां तक कि हमने बुध की रात के बीच के समय में फावड़ों की आवाज़ सुनी।[26]

---

26) मुख़तसरुस-सीर (शेख़ अब्दुल्लाह) 471 वफ़ात की घटना की तफ़सील के लिए देखिए बुख़ारी बाब मरज़ुन-नबी (सल्ल०) और इसके बाद के कुछ अबवाब (अध्याय) तथा फ़त्हुल-बारी, मुस्लिम, मिश्कातुल-मसाबीह बाब वफ़ातुन-नबी (सल्ल०), इब्ने हिशाम 2/649-665, तलक़ीहु फ़ुहूमि अहलिल-असर 38,39, रहमतुल-लिल-आलमीन 1/277-286. वक़्त हमने रहमतुल-लिल-आलमीन से लिया है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घराना

1. हिजरत से पहले मक्का में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घराने में सिर्फ़ आप और आप की बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० थीं। शादी के वक़्त आपकी उम्र 25 साल थी और हज़रत ख़दीजा रज़ि० की उम्र 40 साल। हज़रत ख़दीजा रज़ि० आपकी पहली बीवी थीं और उनके जीते जी आपने कोई और शादी नहीं की। आपकी औलाद में हज़रत इब्राहीम के अलावा तमाम लड़के और लड़कियां इन ही हज़रत ख़दीजा रज़ि० के पेट से थीं। लड़कों में से तो कोई ज़िंदा न बचा, अलबत्ता लड़कियां ज़िंदा रहीं। उनके नाम ये हैं।-----ज़ैनब रज़ि०, रुक़ैया रज़ि०, उम्मे कुलसूम रज़ि० और फ़ातिमा रज़ि०---------ज़ैनब रज़ि० की शादी हिजरत से पहले उन के फुफेरे भाई हज़रत अबुल आस बिन रुबैअ़ रज़ि० से हुई। रुक़ैया और उम्मे कुलसूम रज़ि० की शादी एक के बाद एक कर के हज़रत उस्मान रज़ि० से हुई। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी बद्र और उहद की लड़ाई की दर्मियानी मुद्दत में हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से हुई और उनके पेट से हसन, हुसैन, ज़ैनब, और उम्मे कुलसूम रज़ि० पैदा हुई।

मालूम है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्मत के मुक़ाबले में यह ख़ास ख़ुसूसियत हासिल थी कि आप अलग-अलग

मक़सदों की वजह से चार से ज़्यादा शादियां कर सकते थे, चुनांचे जिन औरतों से आपने निकाह किया उनकी तायदाद ग्यारह थी, जिनमें से नौ औरतें आपकी वफ़ात के वक़्त ज़िंदा थीं और दो औरतें आपकी ज़िंदगी ही में वफ़ात पा चुकी थीं (यानी हज़रत ख़दीजा और उम्मुल मसाकिन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ि०) इनके अ़लावा और दो औरतें हैं जिनके बारे में मतभेद है कि आपका उनसे निकाह हुआ था या नहीं, लेकिन इस पर सहमति है कि उन्हें आपके पास विदा नहीं किया गया। नीचे हम उन पाक बीवियों के नाम और उनके थोड़े से हालात एक क्रम के साथ पेश कर रहे हैं--------

2. हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ़ रज़ि०: इन से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात के कुछ दिनों बाद नुबुवत के दसवें साल शव्वाल के महीना में शादी की। आपसे पहले हज़रत सौदा रज़ि० अपने चचेरे भाई सकरान बिन अ़म्र के निकाह में थीं और वह उन्हें विधवा छोड़ कर इंतिक़ाल कर चुके थे।

3. हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियाल्लाहु अन्हुमा: इन से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नुबुवत के ग्याहरवें साल शव्वाल के महीने में शादी की, यानी हज़रत सौदा रज़ि० से शादी के एक साल बाद और हिजरत से दो वर्ष पांच माह पहले। उस वक़्त उनकी उम्र छः वर्ष थी, फिर हिजरत के सात महीने बाद शव्वाल सन् 01 हि० में उन्हें विदा किया गया। उस वक़्त उन की उम्र नौ वर्ष थी और वह कुंवारी थीं। इनके अ़लावा किसी और कुंवारी औरत से आपने शादी नहीं की। हज़रत आ़इशा रज़ि० आपकी सब से प्रिय बीवी थीं और उम्मत की औरतों में बेशक सबसे ज़्यादा फ़क़ीह (धर्म-शास्त्र जानने वाली) और इल्म वाली (ज्ञान) ख़ातून (महिला) थीं।

4. हज़रत हफ़सा बिन्त उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०: इनके पहले शौहर ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० थे जो बदर और उहद की

दर्मियानी मुद्दत में वफ़ात पा गए और वह विधवा हो गईं, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे शादी कर ली। शादी की यह घटना सन् 03 हि० की है।

5. हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ि०: यह क़बीला बनू हिलाल बिन आमिर बिन सअ़सआ़ से ताल्लुक़ रखती थीं। मिस्कीनों पर दया-भाव और नम्र-स्वभाव की वजह से इनकी उपाधि उम्मुल मसाकीन पड़ गयी थी। यह हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जहश के निकाह में थीं। वह उहद की लड़ाई में शहीद हो गए तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सन् 04 हि० में उन से शादी कर ली, मगर सिर्फ़ आठ माह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में रह कर वफ़ात पा गयीं।

6. उम्मे सलमा हिन्द बिन्त अबी उमैया रज़ियाल्लाहु अन्हा: यह अबू सलमा रज़ि० के निकाह में थीं। जमादिल आख़िर सन् 04 हि० में हज़रत अबू सलमा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो इन के बाद शव्वाल सन् 04 हि० में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनसे शादी कर ली।

7. ज़ैनब बिन्त जहश बिन रियाब रज़ि०: यह क़बीला बनू असद बिन ख़ुज़ैमा से ताल्लुक़ रखती थीं। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थीं। उन की शादी पहले हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० से हुई थी, जिन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बेटा समझा जाता था, लेकिन हज़रत ज़ैद रज़ि० से निबाह न हो सका और उन्होंने तलाक़ दे दी। इद्दत ख़त्म होने के बाद अल्लाह ने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़िताब करते हुए यह आयत्त उतारी فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا "जब ज़ैद ने उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली तो हमने उन्हें आपके निकाह में दे दिया।" (33:37)

उन्हीं के ताल्लुक़ से सूर: अहज़ाब की और कई आयतें आयीं, जिनमें ले-पालक के झगड़े का दो टोक फ़ैसला कर दिया गया———सविस्तार विवरण आगे आ रहा है———हज़रत ज़ैनब रज़ि० से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शादी ज़ीक़ादा 05 हि० में या उस से कुछ दिनों पहले हुई।

8. जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ि०: इनके पिता क़बीला ख़ुज़ाआ की शाखा बनुल-मुस्तलिक़ के सरदार थे। हज़रत जुवैरिया बनुल-मुस्तलिक़ के क़ैदियों में लाई गयी थीं और हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास के हिस्से में पड़ी थीं। उन्होंने हज़रत जुवैरिया रज़ि० से एक निश्चित रक़म के बदले आज़ाद करने का मामला तय कर लिया। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ओर से निश्चित रक़म अदा फ़रमा दी और उनसे शादी कर ली। यह शअ़बान सन् 05 हि० की घटना है।।

9. उम्मे हबीबा रमला बिन्त अबी सुफ़ियान रज़ि०: यह उबैदुल्लाह बिन जहश के निकाह में थीं और इसके साथ हिजरत कर के हब्शा भी गई थीं। लेकिन उबैदुल्लाह ने वहां जाने के बाद विधर्मी होकर ईसाई धर्म अपना लिया और फिर वहीं उस का देहान्त हो गया, लेकिन उम्मे हबीबा अपने दीन और अपनी हिजरत पर क़ायम रहीं। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहर्रम 07 हि० में अ़म्र बिन उमैया ज़ुमरी को अपना पत्र दे कर नज्जाशी के पास भेजा तो नज्जाशी को यह पैग़ाम भी दिया कि उम्मे हबीबा रज़ि० से आपका निकाह कर दे। उसने उम्मे हबीबा रज़ि० की मंज़ूरी के बाद उनसे आपका निकाह कर दिया, और शुरहबील बिन हसना रज़ि० के साथ उन्हें आपकी सेवा में भेज दिया।

10. हज़रत सफ़िय्या बिन्त हुयई बिन अख़तब रज़ि०: यह बनी इसराईल से थीं और ख़ैबर में क़ैद की गयीं, लेकिन अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपने लिए चुन लिया और आज़ाद कर के शादी कर ली। यह ख़ैबर-विजय (सन् 07 हि०) के बाद की घटना है।

11. हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ि०: यह उम्मुल फ़ज़्ल लुबाबा बिन्त हारिस रज़ि० की बहन थीं। इनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ी-क़अदा सन् 07 हि० में उमरा-ए-क़ज़ा से फ़ारिग़ होने-----और सहीह क़ौल के मुताबिक़ एहराम से हलाल होने ---के बाद शादी की।

ये ग्यारह बीवियां हुईं जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आयीं और आपकी संगति में रहीं। इनमें से दो बीवियां यानी हज़रत ख़दीजा रज़ि० और हज़रत ज़ैनब उम्मुल मसाकीन की वफ़ात आप की ज़िंदगी ही में हुई और नौ बीवियां वफ़ात के बाद ज़िंदा रहीं। इन के अलावा दो और औरतें, जो आप के पास रुख़्सत नहीं की गयीं, उन में से एक क़बीला बनू किलाब से ताल्लुक़ रखती थीं और एक क़बीला किन्दा से। यही क़बीला किन्दा वाली ख़ातून जौनिया के नाम से मशहूर हैं। इन का आपसे निकाह हुआ था या नहीं और इनका नाम व नसब क्या था, इस बारे में जीवनी लेखकों में बड़े मतभेद हैं जिनके विस्तार में जाने की हम कोई ज़रूरत महसूस नहीं करते।

जहां तक लौंडियों का मामला है तो मशहूर यह है कि आपने दो लौंडियों को अपने पास रखा, एक मारिया क़िब्तिया रज़ि० को, जिन्हें मिस्र के बादशाह मुक़ौक़िस ने हदिए के तौर पर भेजा था, उनके पेट से आप के बेटे इब्राहीम पैदा हुए, जो बचपन ही में 28 या 29 शव्वाल सन् 10 हि० मुताबिक़ 27 जनवरी 632 ई० में मदीना के अंदर इंतिक़ाल कर गए।

दूसरी लौंडी रैहाना बिन्ते ज़ैद रज़ि० थीं जो यहूदियों के क़बीले बनू नज़ीर या बनू कुरैज़ा से ताल्लुक़ रखती थीं। यह बनू कुरैज़ा के क़ैदियों

में थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्हें अपने लिए चुना था और वह आपकी लौंडी थीं। इनके बारे में कुछ खोजियों का विचार है कि उन्हें नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लौंडी की हैसियत से नहीं रखा था, बल्कि आज़ाद कर के शादी कर ली थी, लेकिन इब्ने क़य्यिम की नज़र में पहला कथन तर्जीह देने के लायक़ है। अबू उबैदा ने इन दो लौंडियों के अ़लावा और दो लौंडियों का ज़िक्र किया है जिसमें से एक का नाम जमीला रज़ि० बताया जाता है जो किसी लड़ाई में गिरफ़्तार हो कर आई थीं और दूसरी कोई और लौंडी थीं जिन्हें हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि० ने आपको भेंट के रूप में दिया था।[1]

यहां ठहर कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक ज़िंदगी के एक पहलू पर तनिक विचार करने की ज़रूरत है। आपने अपनी ज़िंदगी के बड़े ताक़तवर और अच्छे दिन यानी लगभग तीस वर्ष सिर्फ़ एक बीवी को काफ़ी समझते हुए गुज़ार दिए वह भी ऐसी बीवी पर जो लगभग बुढ़िया थी यानी पहले हज़रत ख़दीजा रज़ि० पर और फिर हज़रत सौदा रज़ि० पर। तो क्या यह विचार किसी भी दर्जे में सहीह हो सकता है कि इस तरह इतनी मुद्दत गुज़ार देने के बाद जब आप बुढ़ापे के क़रीब पहुंच गये तो आपके अंदर यकायक जिंसी (लैंगिक) शक्ति इतनी बढ़ गई कि आपको एक पर एक नौ शादियां करनी पड़ीं। जी नहीं! आपकी ज़िंदगी के इन दोनों हिस्सों पर नज़र डालने के बाद कोई भी होशमंद आदमी इस विचार को उचित नहीं ठहरा सकता। सच तो यह है कि आपने इतनी बहुत सी शादियां कुछ दूसरे ही उद्देश्य के लिए की थीं जो आम शादियों के तय शुदा मक़सद से बहुत ही अधिक महान और आदरदायित्व थे।

इस का विवरण यह है कि आप ने हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़सा रज़ि० से शादी कर के हज़रत अबू बक्र रज़ि० और

1) देखिए ज़ादुल-मआद 1/29

हज़रत उमर रज़ि० से ससुराली रिश्ता जोड़ा। इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ि० से लगातार अपनी दो बेटियों, पहले हज़रत रुकैया रज़ि०, फिर हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० की शादी कर के और हज़रत अली रज़ि० से अपने कलेजे के टुकड़े हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी कर के जो रिश्ते बनाए, उनका उद्देश्य यह था कि आप इन चारों बुज़ुर्गों से अपने ताल्लुक़ात पक्के कर लें, क्योंकि ये चारों बुज़ुर्ग सब से पेचीदा मरहलों में इस्लाम के लिए फ़िदाकारी और जांबाज़ी का जो विशेष गुण रखते थे, वह मशहूर है।

अरबों का चलन था कि वे ससुराली रिश्ते का बड़ा आदर करते थे। उनके नज़दीक दामादी का रिश्ता अलग-अलग क़बीलों में क़ुर्बत का बड़ा महत्वपूर्ण अध्याय था और दामाद से लड़ाई लड़ना और मोर्चा बंदी करना बड़े शर्म और लज्जा की बात थी। इस चलन को सामने रख कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ शादियां इस मक़सद से कीं कि अलग-अलग लोगों और क़बीलों की इस्लाम दुश्मनी का ज़ोर तोड़ दें और उन के द्वेष और घृणा की चिंगारी बुझा दें। चुनांचे हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० क़बीला बनी मख़ज़ूम से ताल्लुक़ रखती थीं जो अबू जहल और ख़ालिद बिन वलीद का क़बीला था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे शादी कर ली तो ख़ालिद बिन वलीद में वह सख़्ती न रही जिसका प्रदर्शन वह उहद में कर चुके थे, बल्कि थोड़े ही दिनों बाद उन्होंने अपनी मर्ज़ी, ख़ुशी और ख़्वाहिश से इस्लाम अपना लिया। इसी तरह जब आप ने अबू सुफ़ियान की बेटी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० से शादी कर ली तो फिर अबू सुफ़ियान आपके मुक़ाबले में न आया और जब हज़रत जुवैरिया रज़ि० और हज़रत सफ़िय्या रज़ि० आपके निकाह में आ गयीं तो क़बीला बनुल-मुस्तलिक़ और क़बीला बनू नज़ीर ने मोर्चा-बंदी छोड़ दी। हुज़ूर के निकाह में इन दोनों बीवियों के आने के बाद इतिहास में उनके क़बीलों के किसी हंगामें

और लड़ाई की दौड़-भाग का पता नहीं मिलता, बल्कि हज़रत जुवैरिया रज़ि० तो अपनी क़ौम के लिए सारी औरतों से ज़्यादा बरकत वाली साबित हुई, क्योंकि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से शादी कर ली तो सहाबा किराम ने उनके एक सौ घरानों को जो क़ैद में थे आज़ाद कर दिया और कहा कि ये लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ससुराली हैं। इनके दिलों पर इस एहसान (उपकार) का जो ज़बरदस्त असर हुआ होगा, वह ज़ाहिर है।

इनमें सब से बड़ी बात यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक असभ्य क़ौम को प्रशिक्षित करने, उनके नफ़्स को पाक करने और संस्कृति व सभ्यता सिखाने पर नियुक्त थे जो संस्कृति व सभ्यता से, संस्कृति की ज़रूरी बातों की पाबंदी से और समाज को बनाने-संवारने की ज़िम्मेदारियों से बिल्कुल अनजान थी और इस्लामी समाज का गठन जिन नियमों की बुनियाद पर करना था, उन में मर्दो और औरतों के मिलने की गुंजाइश न थी, इसलिए मेल न रखने के इस सिद्धान्त की पाबंदी करते हुए औरतों को सीधे-सीधे प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता था, हालांकि उन की शिक्षा-दीक्षा की ज़रूरत मर्दों से कुछ कम अहम और ज़रूरी न थी, बल्कि कुछ ज़्यादा ही ज़रूरी थी।

इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सिर्फ़ यही एक रास्ता रह गया था कि आप अलग-अलग उम्र और योग्यता की इतनी औरतों को चुन लें जो इस उद्देश्य के लिए काफ़ी हों, फिर आप उन्हें शिक्षा-दीक्षा दे दें, उनको प्रशिक्षित कर दें, उनके नफ़्स साफ़ कर दें, उन्हें शरीअत के हुक्म सिखा दें और इस्लामी सभ्यता व संस्कृति से इस तरह सजा दें कि वे देहाती और शहरी, बूढ़ी और जवान हर तरह की औरतों को सिखा पढ़ा सकें और शरीअत के मस्अले उन्हें बता सकें और इस तरह औरतों में प्रचार की मुहिम के लिए काफ़ी हो सकें।

चुनांचे हम देखते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरेलू हालात को उम्मत तक पहुंचने का सेहरा ज़्यादातर इन उम्महातुल मोमिनीन ही के सर है, इसमें भी ख़ास तौर से वे उम्मुल मोमिनीन हैं जिन्होंने लम्बी उम्र पायी। मिसाल के तौर पर हज़रत आइशा रज़ि० कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कामों और बातों को ख़ूब ख़ूब लोगों को बताया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक निकाह एक ऐसी जाहिली रस्म तोड़ने के लिए भी अमल में आया था जो अरब समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही थी और बड़ी पक्की हो चुकी थी, यह रस्म थी किसी को ले-पालक बनाने की। लेपालक को अज्ञानता के युग में वही अधिकार मिले हुए थे और उन के लिए वही चीज़ें हराम थीं जो सगे बेटे को हुआ करती हैं। फिर यह चलन और तरीक़ा अरब समाज में इतना जड़ पकड़ चुका था कि उसका मिटाना आसान न था, लेकिन यह नियम उन बुनियादों और सिद्धान्तों से बड़ी सख़्ती के साथ टकराता था, जिन्हें इस्लाम ने निकाह, तलाक़, मीरास और दूसरे मामलों में मुक़र्रर फ़रमाया था। इस के अलावा अज्ञानता का यह सिद्धान्त अपने दामन में बहुत से ऐसे बिगाड़ और गन्दी बातें भी लिए हुए था, जिनसे समाज को पाक करना इस्लाम के पहले नम्बर के मक़सदों में था। इसलिए इस अज्ञानता भरे नियम को तोड़ने के लिए अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शादी हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि० से फ़रमा दी। हज़रत ज़ैनब रज़ि० पहले हज़रत ज़ैद रज़ि० के निकाह में थीं जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह-बोले बेटे थे, मगर दोनों में निबाह मुश्किल हो गया और हज़रत ज़ैद रज़ि० ने तलाक़ देने का इरादा कर लिया। यह वह वक़्त था जब तमाम कुफ़्फ़ार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ मोर्चा-बन्द थे और खाई की लड़ाई के लिए जमा होने की तैयारी कर रहे थे। उधर अल्लाह की

ओर से ले-पालक बनाने की रस्म के ख़ात्मे के इशारे मिल चुके थे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह डर पैदा हुआ कि अगर इन ही हालात में हज़रत ज़ैद रज़ि० ने तलाक़ दे दी और फिर आपको हज़रत ज़ैनब रज़ि० से शादी करनी पड़ी तो मुनाफ़िक़, मुश्रिक और यहूदी बात का बतंगड़ बना कर आपके ख़िलाफ़ ज़बरदस्त प्रचार करेंगे और भोले-भाले मुसलमानों को तरह-तरह के वस्वसों में डाल कर उन पर कुप्रभाव डालेंगे, इसलिए आपकी कोशिश थी कि हज़रत ज़ैद रज़ि० तलाक़ न दें ताकि इसकी सिरे से नौबत ही न आए।

लेकिन अल्लाह को यह बात पसंद न आयी और उसने आपको (मुहब्बत भरी) चेतावनी दी, चुनांचे फ़रमाया---------

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ

وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ

"और जब आप उस आदमी से कह रहे थे, जिस पर अल्लाह ने इनाम किया है और आपने इनाम किया है, (यानी हज़रत ज़ैद रज़ि० से) कि तुम अपने ऊपर अपनी बीवी को रोक रखो और अल्लाह से डरो और अपने मन में वह बात छिपाए हुए थे, जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप लोगों से डर रहे थे, हालांकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार था कि आप उससे डरते।" (33:37)

आख़िर में हज़रत ज़ैद रज़ि० ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे ही दी। फिर उनकी इद्दत बीत गयी तो उनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शादी का फ़ैसला उतरा। अल्लाह ने आप पर यह निकाह ज़रूरी कर दिया था और कोई इख़्तियार और गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। इस सिलसिले में उतरने वाली आयत यह है-----

فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِيٓ

أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا

"जब ज़ैद रज़ि० ने उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली तो हम ने उसकी शादी आपसे कर दी, ताकि ईमान वालों पर अपने मुंह-बोले बेटों की बीवियों के बारे में कोई हरज न रह जाए, जबकि वे मुंह-बोले बेटे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें।" (33:37)

इसका मक़सद यह था कि मुंह-बोले बेटों के बारे में अज्ञानता वाला नियम व्यवहारिक रूप से भी तोड़ दिया जाए, जिस तरह इससे पहले इस इर्शाद के ज़रिए कह कर तोड़ा जा चुका था----

ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ

"इन्हें इन के बाप के ताल्लुक़ से पुकारो, यही अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ़ की बात है।"---- (33:5)

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ

"मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (मुहर) हैं।" (33:40)

इस मौक़े पर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि जब समाज में कोई रिवाज अच्छी तरह जड़ पकड़ लेता है, तो सिर्फ़ बात के ज़रिए उसे मिटाना या उसमें तब्दीली लाना ज़्यादातर वक़्तों में मुम्किन नहीं हुआ करता; बल्कि जो आदमी उसके ख़ात्मे या तब्दीली की ओर बुलाता हो, उस का अमली नमूना रहना भी ज़रूरी हो जाता है। हुदैबिया-समझौते के मौक़े पर मुसलमानों की ओर से जो हरकत ज़ाहिर हुई उससे यह हक़ीक़त अच्छी तरह खुल कर सामने आ जाती है। इस मौक़े पर कहां तो मुसलमानों की फ़िदाकारी का यह हाल था कि जब उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी रज़ि० ने उन्हें देखा तो देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का थूक और खंखार भी उनमें से किसी न किसी

सहाबी के हाथ ही में पड़ रहा है और जब आप वुज़ू फ़रमाते हैं तो सहाबा किराम रज़ि० आपके वुज़ू से गिरने वाला पानी लेने के लिए इस तरह टूटे पड़ रहे हैं कि मालूम होता है कि आपस में उलझ पड़ेंगे। जी हां! यह वही सहाबा किराम थे जो पेड़ के नीचे मौत या न भागने पर बैअत करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ जाना चाहते थे और ये वही सहाबा किराम थे जिन में अबू बक्र व उमर रज़ि० जैसे रसूल के जां निसार भी थे, लेकिन इन ही सहाबा किराम को------जो आप पर मर मिटना अपनी बड़ी भलाई और कामियाबी समझते थे------जब आप ने समझौता तय कर लेने के बाद हुक्म दिया कि उठ कर अपनी हद्य (कुर्बानी के जानवर) ज़िब्ह कर दें तो आप का हुक्म पूरा करने के लिए कोई टस से मस न हुआ, यहां तक कि आप बेचैनी और परेशानी के शिकार हो गए। लेकिन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने आप को मश्वरा दिया कि आप उठ कर चुपचाप अपना जानवर ज़िब्ह कर दें और आप ने ऐसा ही किया तो हर आदमी आप के इस तरीक़े की पैरवी के लिए दौड़ पड़ा और तमाम सहाबा रज़ि० ने लपक-लपक कर अपने जानवर ज़िब्ह कर दिए। इस घटना से समझा जा सकता है कि किसी जमे हुए रिवाज को मिटाने के लिए कथनी-करनी के प्रभावों में कितना अधिक अंतर है। इसलिए लेपालक का अज्ञानता पूर्ण नियम अमली तौर पर तोड़ने के लिए आप का निकाह आप के मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० की तलाक़ शुदा बीवी से कराया गया।

इस निकाह का अमल में आना था कि मुनाफ़िक़ों ने आप के ख़िलाफ़ बहुत बड़े पैमाने पर झूठा प्रचार शुरू कर दिया और तरह-तरह की अफ़वाहें और वस्वसे फैलाए। जिसके कुछ न कुछ प्रभाव भोले-भाले मुसलमानों पर भी पड़े। इस प्रचार को तक़वियत (बल) देने के लिए एक शरई पहलू भी मुनाफ़िक़ों के हाथ आ गया था कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० आप की पांचवीं बीवी थीं जबकि मुसलमान एक वक़्त में चार बीवियों

से ज़्यादा का हलाल होना जानते ही न थे। इन सबके अलावा प्रचार की असल जान यह थी कि हज़रत ज़ैद रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटे समझे जाते थे और बेटे की बीवी से शादी बड़ी बेहयाई की बात समझी जाती थी। आख़िर में अल्लाह ने सूरः अहज़ाब में इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में काफ़ी और संतुष्ट कर देने वाली आयतें उतारीं और सहाबा रज़ि० को मालूम हो गया कि इस्लाम में मुंह-बोले बेटे की कोई हैसियत नहीं और यह कि अल्लाह ने कुछ अति श्रेष्ठ और विशेष मक़सदों के तहत अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख्य रूप से शादी की तायदाद के सिलसिले में यह छूट दी है जो किसी और को नहीं दी गई।

उम्महातुल मोमिनीन (उम्मत की मांओं) के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रहना-सहना बड़ा ही सज्जनता पूर्ण, उच्च और अच्छे ढंग का था। पाक बीवियां भी उच्च चरित्र, सब्र, शुक्र, विनम्रता, सेवा और दाम्पत्य जीवन का आदर्श रूप थीं, हालांकि आप बड़ी रूखी, फीकी और सख़्त ज़िंदगी गुज़ार रहे थे जिसे सहन कर लेना दूसरों के बस की बात नहीं। हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी मैदे की नर्म रोटी खायी हो, यहां तक कि अल्लाह से जा मिले और न आप ने अपनी आंख से कभी भुनी हुई बकरी देखी।[2] हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि दो-दो महीने गुज़र जाते, तीसरे महीने का चांद नज़र आ जाता और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में आग न जलती। हज़रत उर्वा ने मालूम किया कि तब आप लोग क्या खाती थीं, फ़रमाया कि बस दो काली चीज़ें यानी खजूर और पानी।[3] इस मज़्मून की हदीसें बहुत ज़्यादा हैं।

---

2) बुख़ारी 2/956

3) बुख़ारी 2/956

इस तंगी और परेशानी के बावजूद पाक बीवियों से कोई नापसंदीदा हरकत न हुई– सिर्फ़ एक बार ऐसा हुआ और वह भी इसलिए कि एक तो मानव प्रकृति का तक़ाज़ा ही कुछ ऐसा है, दूसरे इसी बुनियाद पर कुछ हुक्म मशरूअ (लागू) करने थे–चुनांचे अल्लाह ने इसी मौक़े पर आयते तख़ईर (चुनाव करने की आयत) उतारी, जो यह थी--------

يَآ أَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلاً ۝ وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَإِنَّ اللّٰهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيْمًا ۝

"ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और ज़ीनत चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें साज़ व सामान देकर भलाई के साथ विदा कर दूं और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत को चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए ज़बरदस्त बदला तैयार कर रखा है।" (33:28-29)

अब इन पाक बीवियों की बुज़ुर्गी और बड़ाई का अंदाज़ा कीजिए कि इन सब ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रमुखता दी और इन में से कोई एक भी दुनिया की ओर न झुकीं।

इसी तरह सौतनों के बीच जो घटनाएं प्रतिदिन घटा करती हैं, पाक बीवियों के बीच भारी तायदाद के बावजूद इस तरह की घटनाएं बहुत ही कम पेश आयीं और वह भी बशरी तक़ाज़े के तहत और उस पर भी जब अल्लाह ने नाराज़गी जताई तो दोबारा इस तरह की कोई हरकत ज़ाहिर नहीं हुई। सूरः तहरीम की शुरू की पांच आयतों में इसी का उल्लेख है।

आख़िर में यह अर्ज़ कर देना भी अनुचित न होगा कि हम इस मौक़े पर बीवियों की तायदाद पर वार्ता की ज़रूरत नहीं समझते, क्योंकि

जो लोग इस विषय पर सबसे ज़्यादा ले-दे करते है, यानी यूरोप के निवासी, वे खुद जिस तरह का जीवन जी रहे हैं; जिस कड़ुवाहट और भाग्यहीनता का जाम पी रहे हैं, जिस तरह की रुसवाइयों और अपराधों में लथ-पथ हैं और बहु-पत्नी विवाह के नियम से फिर कर जिस क़िस्म के रंज व दुख और मुसीबतों से दो-चार हैं वह हर तरह की बहस और झगड़े से बे-नियाज़ कर देने के लिए काफ़ी है। यूरोप के लोगों का भाग्यहीन जीवन बहु-पत्नी विवाह के नियम के सत्य होने की सबसे सच्चा गवाह है और नज़र वालों के लिए इसमें बड़ा सबक़ है।

चरित्र व आचरण

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे सुंदर और पूर्ण चरित्र वाले थे जो अवर्णनीय है। इसका प्रभाव यह था कि मन आपकी उच्चता और श्रेष्ठता से अपने आप भर उठता था, चुनांचे आपकी रक्षा, उच्चता और श्रेष्ठता में लोगों ने ऐसी-ऐसी जांनिसारी का प्रमाण दिया, जिसकी मिसाल दुनिया के किसी और व्यक्तित्त्व के सिलसिले में पेश नहीं की जा सकती। आपके साथी आप से बेपनाह प्रेम करते थे। उन्हें गवारा न था कि आप को खरोंच भी आए, भले ही इसके लिए उन की गरदनें ही क्यों न काट दी जाएं। इस तरह की मुहब्बत की वजह यही थी कि आदत के तौर पर जिन बातों पर जान छिड़की जाती है, उनमें से जितना हिस्सा बड़ी मात्रा में आप को मिला हुआ था, किसी और इसांन को न मिला। नीचे हम अपनी कमज़ोरियों और जानकारियों के न होने के स्वीकार करते हुए उन रिवायतों का सार प्रस्तुत कर रहे हैं जिनका ताल्लुक़ इन पूर्णता प्राप्त गुणों से है।

मुबारक हुलिया

हिजरत के वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उम्मे माबद खुज़ाइया के ख़ेमे से गुज़रे तो उसने आपकी रवानगी के बाद अपने शौहर से आपके मुबारक हुलिए का जो नक़्शा खींचा, वह यह था——"चमकता रंग, ताबनाक चेहरा, ख़ूबसूरत बनावट, न तोंदलेपन का ऐब, न गंजे पन की ख़राबी, चमकदार सौंदर्य के साथ ढला हुआ

ढांचा, सुरमई आंखें, लम्बी पलकें, भारी आवाज़, लम्बी गरदन, सफ़ेद व काली आंखें, काली सुर्मे वाली पलकें, बारीक और आपस में मिले हुए अबरू, चमकदार काले बाल, ख़ामोश हों तो प्रतिष्ठावान, बात-चीत करें तो आकर्षक, दूर से देखने में सब से चमकदार और सौन्दर्य वाले, क़रीब से सब से सुंदर और बात करने में चाशनी, बात स्पष्ट और दो टूक, न थोड़ी न बेकार, अंदाज़ ऐसा कि मानो लड़ी से मोती झड़ रहे हैं, बीच का क़द, न नाटा कि निगाह में न जचे, न लम्बा की नागवार लगे, दो शाखाओं के बीच एक ऐसी शाखा की तरह हैं जो सब से ज़्यादा ताज़ा और देखने में बेहतर है, साथी आप के चारों ओर से घेरा बनाए हुए कुछ फ़रमाएं तो तवज्जोह से सुनते हैं, कोई हुक्म दें तो लपक कर बजा लाते हैं, जिसकी सब से ज़्यादा पैरवी की जाए व सब से ज़्यादा प्रतिष्ठित, न कड़ुवी ज़ुबान वाले, न बेकार की बातें करने वाले।"[1]

हज़रत अली रज़ि० आपके गुण बयान करते हुए फ़रमाते हैं आप न लंबे-तड़ंगे थे न नाटे-खोटे, लोगों के हिसाब से बीच के क़द के थे। बाल न ज़्याद घुंघराले थे न बिल्कुल खड़े-खड़े, बल्कि दोनों के बीच-बीच की स्थिति थी। गाल न बहुत ज़्यादा गोश्त से भरा हुआ था, न ठोढ़ी छोटी और माथा पस्त, चेहरा किसी क़दर गोलाई लिए हुए था, रंग गोरा गुलाबी, आंखें लाली जैसी, पलकें लम्बी, जोड़ों और मोंढों की हड्डियां बड़ी-बड़ी, सीने पर नाफ़ तक बालों की हल्की सी लकीर, बाक़ी जिस्म बाल से ख़ाली, हथैली और पांव गोश्त से भरे हुए, चलते तो कुछ झटके से पांव उठाते और यूं चलते मानो किसी ढलवान पर चल रहे हैं। जब किसी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे वजूद के साथ फ़रमाते। दोनों कंधों के बीच नुबुवत की मुहर थी। आप सारे नबियों में आख़िरी थे, सब से ज़्यादा सख़ी दाता और सब से बढ़ कर साहसी और सब से ज़्यादा

1) ज़ादुल-मआद 2/54

सच्चा स्वर और सबसे ज़्यादा वायदों को पूरा करने वाले, सब से ज़्यादा नर्म तबीयत और सब से शरीफ़ साथी, जो आपको अचानक देखता चौंक जाता, जो जान-पहचान के साथ मिलता, प्रिय मानता। आपके गुणों का बयान करने वाला यही कह सकता है कि मैंने आप से पहले और आपके बाद आप जैसा नहीं देखा।[2]"

हज़रत अ़ली रज़ि० की एक रिवायत में है कि आपका सर बड़ा था, जोड़ों की हड्डियां भारी-भारी थीं, सीने के बीच बालों की लम्बी लकीर थी। जब आप चलते तो कुछ झुक कर चलते मानो किसी ढलान से उतर रहे हैं।[3]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० का बयान है कि आपका दहाना (मुंहाना) फैला हुआ था, आंखें हल्की सुर्ख़ी लिए हुए और ऐड़ियां बारीक।[4]

हज़रत अबुत तुफ़ैल रज़ि० कहते हैं कि आप गोरे रंग, मलीह (मनोहर)चेहरे और दर्मियानी क़द के थे।[5]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० का इर्शाद है कि आपकी हथेलियां फैली हुई थीं और रंग चमकदार, न बिल्कुल सफ़ेद, न गेहुवां, वफ़ात के वक़्त तक सर और चेहरे के बीस बाल भी सफ़ेद न हुए थे।[6] सिर्फ़ कनपटी के बालों में कुछ सफ़ेदी थी और कुछ बाल सर के सफ़ेद थे।[7]

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैंने आपके निचले होंठ के नीचे अन्फ़क़ा (दाढ़ी बच्चा) में सफ़ेदी देखी।[8]

---

2) इब्ने हिशाम 1/401-402 तिरमिज़ी शरह तोहफ़तुल-अहवाज़ी के साथ 4/303
3) तिरमिज़ी शरह तोहफ़तुल-अहवाज़ी के साथ 4/303
4) मुस्लिम 2/258
5) मुस्लिम 2/258
6) बुख़ारी 1/502
7) बुख़ारी 1/502, मुस्लिम 2/259
8) बुख़ारी 1/501,502

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ि० का बयान है कि आपके अन्फ़क़ा (दाढ़ी बच्चा) में कुछ बाल सफ़ेद थे।[9]

हज़रत बरा रज़ि० का बयान है कि आपका बदन दर्मियाना था, दोनों कंधों के दर्मियान दूरी थी। बाल दोनों कानों की लौ तक पहुंचते थे। मैंने आपको लाल जोड़ा पहने हुए देखा, कभी कोई चीज़ आपसे सुंदर न देखी।[10]

पहले आप अहले किताब जैसा होना पसंद करते थे, इसलिए बाल में कंघी करते तो मांग न निकालते, लेकिन बाद में निकाला करते थे।[11]

हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं आपका चेहरा सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत था और आपके चरित्र व आचरण सब से बेहतर थे।[12]

उसे मालूम किया गया कि क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा तलवार जैसा था उन्होंने कहा, "नहीं बल्कि चांद जैसा था।" एक रिवायत में है कि आपका चेहरा गोल था।[13]

रबीअ़ बिन्त मुअ़व्विज़ रज़ि० कहती हैं कि अगर तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखते तो लगता कि तुमने उगते हुए सूरज को देखा है।[14]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० का बयान है कि मैंने एक बार चांदनी रात में आपको देखा, आप पर लाल जोड़ा था। मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखता और चांद को देखता। आख़िर (इस नतीजे पर पहुंचा कि) आप चांद से ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं।[15]

9) बुख़ारी 1/502
10) बुख़ारी 1/502
11) बुख़ारी 1/503
12) बुख़ारी 1/502, मुस्लिम 2/258
13) बुख़ारी 1/502, मुस्लिम 2/259
14) दारमी, मिश्कात 2/517
15) तिरमिज़ी फ़िश-शमाइल 2, दारमी, मिश्कात 2/517

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का बयान है कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा ख़ूबसूरत कोई चीज़ नहीं देखी। लगता था सूरज आप के चेहरे में रवां-दवां है और मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़कर किसी को तेज़ रफ़्तार नहीं देखा। लगता था ज़मीन आपके लिए लपेटी जा रही है। हम तो अपने आपको थका मारते थे और आप बिल्कुल निश्चिंत रहते ।[16]

हज़रत काब बिन मालिक का बयान है कि जब आप ख़ुश होते तो चेहरा दमक उठता, मानो चांद का एक टुकड़ा है।[17]

एक बार आप हज़रत आइशा रज़ि० के पास तशरीफ़ रखते थे, पसीना आया तो चेहरे की धारियां चमक उठीं। यह दशा देख कर हज़रत आइशा रज़ि० ने अबू कबीर हुज़ली का यह पद्य पढ़ा--------

واذا نظرت الى اسرة وجهه برقت كبرق العارض المتهلل

"जब उनके चेहरे की धारियां देखो तो वे यूं चमकती हैं जैसे रोशन बादल चमक रहा हो।[18]"

अबू बक्र रज़ि० आपको देख कर यह पद्य पढ़ते--------

امين مصطفىٰ بالخير يدعو كضوء البدر زايله الظلام

"आप अमीन हैं, चुने हुए और बुज़ुर्ग हैं, भलाई की दावत देते हैं, मानो माहे कामिल की रोशनी हैं जिससे अंधेरा आंख मिचोली खेल रहा है।[19]"

हज़रत उमर रज़ि० ज़ुहैर का यह पद्य पढ़ते जो हरम बिन सिनान के बारे में कहा गया था कि----------

16) तिरमिज़ी शरह तोहफ़तुल-अहवज़ी के साथ 4/306, मिशकात 2/513

17) बुख़ारी 1/502

18) रहमतुल-लिल-आलमीन 2/172

19) ख़ुलासतुस-सियर 20

لو كنت من شيئ ء سوى البشر كنت المضيء لليلة البدر

"अगर आप बशर के सिवा किसी और चीज़ से होते तो आप ही चौदहवीं की रात को रोशन करते।"

फिर फ़रमाते कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे ही थे।[20]

जब आप ग़ज़बनाक होते तो चेहरा लाल हो जाता मानो दोनों गालों में अनार का दाना निचोड़ दिया गया है।[21]

हज़रत जाबिर बिन समुरा का बयान है कि आपकी पिंडुलियां किसी क़दर पतली थीं और आप हंसते तो सिर्फ़ मुस्कुराते (आंखें सुरमई थीं) तुम देखते तो कहते कि आपने आंखों में सुरमा लगा रखा है, हालांकि सुरमा न लगा होता।[22]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का इर्शाद है कि आप के आगे के दोनों दांत अलग-अलग थे। जब आप बातें करते तो इन दांतों के दर्मियान से नूर जैसा निकलता दिखाई देता।[23]

गरदन मानो चांदी की सफ़ाई लिए हुए गुड़िया की गरदन थी, पलकें लम्बी, दाढ़ी घनी, माथा चौड़ा, अबरू पैवस्ता और एक दूसरे से अलग, नाक ऊंची, गाल हल्के, लब्बे से नाफ़ तक छड़ी की तरह दौड़ा हुआ बाल और इस के सिवा पेट और सीने पर कहीं बाल नहीं, अलबत्ता बाज़ू और मोंढों पर बाल थे, पेट और सीना बराबर, सीना बराबर (समतल) और फैला हुआ, कलाइयां बड़ी-बड़ी और हथेलियां चौड़ी, क़द

---

20) ख़ुलासतुस-सियर 20

21) मिश्कात 1/22, तिरमिज़ी अबवाबुल-क़द्र बाब मा फ़ित-तश्दीद फ़िल-ख़ौज़ फ़िल-क़द्र 2/35

22) तिरमिज़ी शरह तोहफ़तुल-अहवज़ी के साथ 4/306

23) तिरमिज़ी, मिश्कात 2/518

खड़ा, तलवे ख़ाली, अंग बड़े-बड़े, जब चलते तो झटके के साथ चलते, कुछ झुकाव के साथ आगे बढ़ते और आसान चाल से चलते।[24]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कोई हरीर व दीबा नहीं छुआ जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हथेली से ज़्यादा नर्म हो और न कभी कोई अंबर या मुश्क या कोई ऐसी सुगंध सूंघी जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुश्बू से बेहतर रही हो।[25]

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैंने आपका हाथ अपने चेहरे पर रखा, तो वह बर्फ़ से ज़्यादा ठंडा और मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार था।[26]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि०------जो बच्चे थे--------कहते हैं, "आपने मेरे गाल पर हाथ फेरा, तो मैंने आप के हाथ में ऐसी ठंडक और ऐसी ख़ुश्बू महसूस की, मानो आप ने उसे अत्तार के इत्रदान से निकाला है।[27]"

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि आपका पसीना मानो मोती होता था और हज़रत उम्मे सुलैम कहती हैं कि यह पसीना ही सब से अच्छी ख़ुश्बू हुआ करती थी।[28]

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि, "आप किसी रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और आपके बाद कोई और गुज़रता तो आपके जिस्म या पसीने की सुगन्ध की वजह से जान जाता कि आप यहां से तशरीफ़ ले गए हैं।[29]"

---

24) खुलासतुस-सियर 19,20
25) बुख़ारी 1/503, मुस्लिम 2/257
26) बुख़ारी 1/502
27) मुस्लिम 2/256
28) मुस्लिम 2/256
29) दारमी, मिश्कात 2/517

आपके दोनों कंधों के दर्मियान नुबुवत की मुहर थी जो कबूतरी के अंडे जैसी और मुबारक जिस्म ही के जैसी थी। ये बाएं कंधे की कुर्री (नर्म हड्डी) के पास थी, इस पर मस्सों की तरह तिलों का जमघट था।[30]

नफ़्स का गुण और चरित्र की श्रेष्टता

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुली और ज़ोरदार भाषा का प्रयोग करते थे। आप तबीयत की रवानी, शब्द के निखार, वाक्यों की प्रौढ़ता, अर्थ की सुदंरता और बनावट से दूरी के साथ-साथ व्यापक बातों से नवाज़े गए थे। आपको अमूल्य हिक्मतों और अरब की तमाम भाषाओं का ज्ञान दिया हुआ था: चुनांचे आप हर क़बीले से उसी की भाषा और मुहावरों में बातें करते थे। आप में बदवियों के बयान का ज़ोर और सम्बोधित करने की शक्ति और नागरिकों की शिष्टता और श्रेष्ठता जमा थी और वह्य पर आधारित रब की ताईद अलग से।

उदारता, सहन-शक्ति, समर्थ होने पर भी क्षमा और कठिन घड़ियों में जमाव ऐसे गुण थे कि जिनके ज़रिए अल्लाह ने आपको ट्रेंड किया था। हर सहनशील और उदार व्यक्ति की कोई न कोई कमज़ोरी और कोई न कोई बोली में असावधानी जानी जाती है, मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चरित्र की श्रेष्ठता का हाल यह था कि आप के ख़िलाफ़ दुश्मनों का कष्ट पहुंचाना बदमाशों की बदमाशी और ज़्यादती जितनी बढ़ती गयी आपके जमाव और सहन शक्ति में उतनी ही वृद्धि होती गयी। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब भी दो कामों के बीच अधिकार दिया जाता तो वही काम अपनाते जो आसान होता, जब तक कि वह गुनाह का काम न होता। अगर गुनाह का काम होता तो आप सब से बढ़ कर उस से दूर रहते। आपने कभी अपने लिए बदला नहीं लिया।

---

30) मुस्लिम 2/259, 260

अलबत्ता अगर अल्लाह का अनादर किया जाता तो आप अल्लाह के लिए बदला लेते।[31]

आप सब से बढ़ कर गुस्से से दूर थे और सब से जल्द राज़ी हो जाते थे। दानशीलता का गुण ऐसा था कि उस का अंदाज़ा ही नहीं किया जा सकता। आप उस आदमी की तरह देते और नवाज़ते थे जिसे निर्धनता का डर ही न हो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सब से ज़्यादा दानशील थे। और आप की दानशीलता की नदी रमज़ान में उस वक़्त जोश पर होती जब हज़रत जिब्रील अ़लैहि० आपसे मुलाक़ात फ़रमाते और हज़रत जिब्रील अ़लैहि० रमज़ान में हर रात आपसे मुलाक़ात फ़रमाते और कुरआन का दौर कराते। पस अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैर की सख़ावत में (रहमत के ख़ज़ानों से माला माल कर के) भेजी हुई हवा से भी ज़्यादा पेश-पेश होते थे।[32] हज़रत जाबिर रज़ि० का इर्शाद है कि ऐसा कभी न हुआ कि आपसे कोई चीज़ मांगी गई हो और आपने नहीं कह दिया हो।[33]

वीरता, धैर्य और साहस में भी आपका स्थान सब से ऊंचा और श्रेष्ठ था। आप सब से ज़्यादा बहादुर थे। अति कठिन और मुश्किल अवसरों पर जबकि अच्छे-अच्छे वीरों और योद्धाओं के पांव उखड़ गए, आप अपनी जगह खड़े रहे और पीछे हटने के बजाए आगे ही बढ़ते गए, क़दम तनिक भी न डगमगाए। बड़े-बड़े योद्धा भी कभी न कभी भागे और पसपा हुए हैं मगर आप में यह बात कभी न पायी गयी। हज़रत अ़ली रज़ि० का बयान है कि जब ज़ोर का रन पड़ता और लड़ाई के शोले ख़ूब भड़क उठते तो हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

31) बुख़ारी 1/503
32) बुख़ारी 1/502
33) बुख़ारी 1/502

की आड़ लिया करते थे। आपसे बढ़कर कोई आदमी दुश्मन के क़रीब न होता।[34]-----हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि एक रात मदीना वालों को ख़तरा महसूस हुआ लोग आवाज़ की ओर दौड़े तो रास्ते में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस आते हुए मिले। आप लोगों से पहले ही आवाज़ की ओर पहुंच (कर ख़तरे की जगह का जायज़ा ले) चुके थे। उस वक़्त आप अबू तलहा रज़ि० के नंगे (बग़ैर ज़ीन के) घोड़े पर सवार थे। गरदन में तलवार-लटका रखी थी और फ़रमा रहे थे, डरो नहीं, डरो नहीं[35] (कोई ख़तरा नहीं)।

आप सब से ज़्यादा लज्जाशील और पस्त निगाह थे। अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप परदे वाली कुंवारी औरत से भी ज़्यादा हयादार थे। जब आप को कोई बात नागवार गुज़रती तो चेहरे से पता लग जाता।[36] अपनी नज़रें किसी के चेहरे पर गाड़ते न थे, निगाह पस्त रखते थे और आसमान के मुक़ाबले ज़मीन की तरफ़ नज़र ज़्यादा देर तक रहती थी। आमतौर से नीची निगाह से देखते, हया और चरित्र का हाल यह था कि किसी से नागवार बात आमने-सामने न कहते और किसी की कोई नागवार बात आप तक पहुंचती तो नाम लेकर उसका ज़िक्र न करते, बल्कि यूं फ़रमाते कि क्या बात है कि कुछ लोग ऐसा कर रहे हैं। फ़रज़दक़ के इस पद्य की सब से ज़्यादा सही मिसाल आप थे————

يغضى حياء و يغضى من مهابته فلا يكلم الاحين يبتسم

"आप हया की वजह से अपनी निगाह पस्त रखते हैं और आपके रोब की वजह से निगाहें पस्त रखी जाती हैं, चुनांचे आपसे उसी वक़्त बातें की जाती हैं जब आप मुस्कुरा रहे हों।"

34) शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ 1/89 सिहाह और सुनन में भी इस विषय (मज़मून) की रिवायात हैं।

35) मुस्लिम 2/252, बुख़ारी 1/407

36) बुख़ारी 1/504

आप सबसे ज़्यादा न्यायप्रिय, पाकदामन, सच्चे स्वर वाले और अमानत दार थे। यह आपके दोस्त-दुश्मन सभी स्वीकारते हैं। नबी बनाये जाने से पहले आपको अमीन (अमानतदार) कहा जाता था और अज्ञानता युग में आपके पास फ़ैसले के लिए मुक़दमे लाए जाते थे। जामे तिर्मिज़ी में हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि एक बार अबू जहल ने आपसे कहा, "हम आपको झूठा नहीं कहते अलबत्ता आप जो कुछ लेकर आए हैं उसे झुठलाते हैं।" इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी--------

فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ

"ये लोग आपको नहीं झुठलाते, बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं।[37]" (6:33)

हिरक्ल ने अबू सुफ़ियान से मालूम किया कि क्या इस (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो बात कही है उसके कहने से पहले तुम लोग उन पर झूठ का आरोप लगाते थे? तो अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि "नहीं।"

आप सब से ज़्यादा विनम्र और तकब्बुर (अभिमान) से दूर थे। जिस तरह बादशाहों के लिए उन के सेवक (चापलोस) खड़े रहते हैं उस तरह अपने लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को खड़े होने से मना फ़रमाते थे, मिस्कीनों की बीमार-पुर्सी करते थे, ग़रीबों के साथ उठते-बैठते थे, दास की दावत मंजूर फ़रमाते थे। सहाबा किराम में किसी भेद-भाव के बिना एक आम आदमी की तरह बैठते थे। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप अपने जूते खुद गांठते थे, अपने कपड़े खुद सिलते थे सिलते थे और अपने हाथ से इस तरह काम करते थे जैसे तुम में से कोई आदमी अपने घर के काम-काज

37) मिश्कात 2/521

करता है। आप भी इंसानों में से एक इंसान थे। अपने कपड़ो में जुएं ढूंढते थे अपनी बकरी खुद दूहते थे और अपना काम खुद करते थे।[38]

आप सब से बढ़ कर वायदे की पाबंदी और रिश्तों का ख़्याल रखते थे, लोगों के साथ सब से ज़्यादा मुहब्बत और रहम व मुरव्वत से पेश आते थे, रहन-सहन और लेन-देन में सब से अच्छे थे। आपका चरित्र सब से ज़्यादा ऊंचा था। दुष्चरित्र से सब से ज़्यादा दूरी और नफ़रत थी, न आदत के तौर पर बेहयाई की बातें करते और न तकल्लुफ़ के साथ, न लानत करते थे, न बाज़ार में चीख़ते-चिल्लाते थे, न बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि माफ़ी और दर-गुज़र से काम लेते थे, किसी को अपने पीछे चलता हुआ न छोड़ते थे और न खाने-पीने में अपने दासों और दासियों पर रोब डालने की कोशिश करते थे, अपने सेवक का काम खुद ही कर देते थे, कभी अपने सेवक को उफ़ नहीं कहा, न किसी काम के करने या न करने पर गुस्सा दिखाया। मिस्कीनों से मुहब्बत करते, उनके साथ उठते-बैठते और उनके जनाज़ों में हाज़िर होते थे। किसी फ़कीर को उसके फ़ाक़ा (भूखा रहने) की वजह से तुच्छ नहीं समझते थे। एक बार आप सफ़र में थे, एक बकरी काटने पकाने का मश्वरा हुआ। एक ने कहा, जिब्ह करना मेरे ज़िम्मे, दूसरे ने कहा खाल उतारना मेरे ज़िम्मे, तीसरे ने कहा पकाना मेरे ज़िम्मे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ईंधन की लकड़ियां जमा करना मेरे ज़िम्मे। सहाबा ने अर्ज़ किया, हम आपका काम कर देंगे। आपने फ़रमाया, "मैं जानता हूं तुम लोग मेरा काम कर दोगे, लेकिन मैं पसंद नहीं करता कि अपने लिए तुम्हारे मुक़ाबले कोई अन्तर करूं, क्योंकि अल्लाह अपने बंदे की यह हरकत ना पसंद करता है कि अपने आपको अपने साथियों से अलग समझे।" इसके बाद आपने उठ कर लकड़ियां जमा फ़रमाईं।[39]

---

38) मिश्कात 2/520

39) ख़ुलासतुस-सियर 22

आइए तनिक हिन्द बिन अबी हाला की ज़ुबानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं सुनें। हिन्द रज़ि० अपनी एक लम्बी रिवायत में कहते हैं "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बराबर ग़मों (दुखों) के शिकार थे। हमेशा सोच-विचार करते रहते थे, आप के लिए राहत न थी, बे-ज़रूरत न बोलते थे, देर तक चुप रहते थे। शुरू से आख़िर तक बात पूरे मुंह से करते थे, यानी सिर्फ़ मुंह के किनारे से न बोलते थे, नपी-तुली और दो टूक बातें कहते थे, जिनमें न बेकार की बातें होती थीं, न कोई कोताही। नर्म स्वभाव के थे, अत्याचार करने वाले न थे और न ही तुच्छ। नेमत मामूली भी होती तो भी उस का आदर करते थे, किसी चीज़ की निन्दा नहीं करते थे, खाने की न बुराई करते थे न तारीफ़। सत्य को कोई नुक़्सान पहुंचाता तो जब तक बदला न ले लेते आपके ग़ज़ब को न रोका जा सकता था, अलबत्ता बड़े दिल वाले थे, अपने लिए न गुस्सा होते न बदला लेते। जब इशारा फ़रमाते तो पूरी हथेली से इशारा फ़रमाते और ताज्जुब के वक़्त हथेली पलटते, जब गुस्सा होते तो रुख़ फेर लेते और जब खुश होते तो निगाह पस्त फ़रमा लेते, आपकी अकसर हंसी मुस्कान के रूप में थी। मुस्कुराते तो दांत ओलों की तरह चमकते।

बेकार की बातों से ज़ुबान रोके रखते, साथियों को जोड़ते थे तोड़ते न थे, हर क़ौम के इज़्ज़तदार आदमी की इज़्ज़त करते थे और उसी को उनका ज़िम्मेदार बनाते थे। लोगों (की दुष्टता) से बचते और उनसे बचाव इख़्तियार फ़रमाते थे, लेकिन इसके लिए किसी से अपने खुले दिल को ख़त्म न फ़रमाते थे।

अपने साथियों की ख़बर रखते थे और लोगों के हालात मालूम फ़रमाते, अच्छी चीज़ को पसंद फ़रमाते और बुरी चीज़ को बुरा समझते। बीच का रास्ता अपनाते, उतार-चढ़ाव से दूर रहते, ग़ाफ़िल भी न होते थे कि शायद लोग भी ग़ाफ़िल या दुखी हो जाएं। हर हालत के लिए

तैयार रहते थे। सत्य से कोताही न फ़रमाते थे, न सत्य की सीमाएं फांद कर असत्य की ओर निकल जाते थे। जो लोग आपके क़रीब रहते थे, वे सब से अच्छे लोग थे और इन में भी आपके नज़दीक बेहतर वह था जो सब से बढ़ कर हित चाहने वाला हो और सब से ज़्यादा मूल्य आपके नज़दीक उसका था जो सब से अच्छा हितैषी और सहायक हो।

आप उठते-बैठते अल्लाह का ज़िक्र ज़रूर फ़रमाते, जगहें तय न फ़रमाते--------यानी अपने लिए कोई नुमायां जगह मुक़र्रर न फ़रमाते---जब क़ौम के पास पहुंचते तो मज्लिस में जहां जगह मिल जाती बैठ जाते और उसी का हुक्म भी फ़रमाते। मज्लिस के सभी लोगों पर बराबर तवज्जोह फ़रमाते, यहां तक कि कोई बैठने वाला यह न महसूस करता कि कोई आदमी आपके नज़दीक उस से ज़्यादा इज़्ज़तदार है। कोई किसी ज़रूरत से आपके पास बैठता या खड़ा होता तो आप इतने सब्र के साथ उस के लिए रुके रहते कि वही पलट कर वापस होता। कोई किसी ज़रूरत का सवाल कर देता तो आप उसे दिए बग़ैर या अच्छी बात कहे बग़ैर वापस न फ़रमाते। आपने अपने अच्छे अख़्लाक़ से सबको नवाज़ा, यहां तक कि आप सब के लिए बाप का दर्जा रखते थे और सब आपके नज़दीक एक जैसा हक़ रखते थे, किसी को बरतरी थी तो तक़्वा की बुनियाद पर। आपकी मज्लिस हिल्म व हया और सब्र व अमानत की मज्लिस थी। उस में आवाज़ें बुलन्द न की जाती थीं और न हुर्मतों का मर्सिया (शोक) होता था----यानी किसी की आबरु जाने का डर न था---- लोग तक़्वा के साथ आपस में मुहब्बत व हमदर्दी रखते थे। बड़े का आदर करते थे, छोटे पर दया करते थे, ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी करते थे और अनजाने को अपनापन देते थे।

आपके चेहरे पर हमेशा हंसी रहती, सहल (आसानी) चाहते और नर्म पहलू रखते, ज़ुल्म वाले और सख़्ती वाले न थे, न ज़्यादा ज़ोर से

बोलते थे, न बेहयाई की बात करते थे, न ज़्यादा गुस्सा करते थे न बहुत प्रशंसा करते थे। जिस चीज़ की ख़्वाहिश न होती उस से ग़फ़लत बरतते थे। आपसे निराशा नहीं होती थी। आपने तीन बातों से अपने आपको बचाए रखा—

1. दिखावे से,
2. किसी चीज़ की ज़्यादती से,
3. और बेकार की बात से।

और तीन बातों से लोगों को बचाए रखा, यानी

1. आप किसी की निन्दा नहीं करते थे,
2. किसी को शर्म नहीं दिलाते थे,
3. और किसी में ऐब नहीं निकालते थे।

आप वही बात ज़ुबान पर लाते थे जिसमें सवाब की उम्मीद होती। जब आप बात फ़रमाते तो आपके साथी यूं सर झुकाए होते मानो सरों पर परिंदे बैठे हैं और जब आप ख़ामोश होते तो लोग बातें करते। लोग आपके पास गप-बाज़ी न करते। आपके पास जो कोई बोलता, सब उसके लिए ख़ामोश रहते, यहां तक कि वह अपनी बात पूरी कर लेता। उनकी बात उनके पहले आदमी की बात होती। जिस बात से सब लोग हंसते इस से आप भी हंसते और जिस बात पर सब लोग ताज्जुब करते, उस पर आप भी ताज्जुब करते। अनजान (आदमी) अगर सख़्त बातों से काम लेता तो उस पर आप सब्र करते और फ़रमाते, "जब तुम लोग ज़रूरतमंद को देखो कि वह अपनी ज़रूरत की तलब में है तो उसे ज़रूरत के सामान से नवाज़ दो।" आप एहसान का बदला देने वाले के सिवा किसी से तारीफ़ की तलब नहीं करते।[40]

---

40) शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ 1/121-126 तथा देखिए शमाईले तिरमिज़ी

ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ि० का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी मज्लिस में सब से ज़्यादा वक़ार वाले होते, अपने पांव वग़ैरह न फैलाते, बहुत ज़्यादा ख़ामोश रहते, बे-ज़रूरत न बोलते, जो आदमी ना-मुनासिब बात बोलता, उस से रुख़ फेर लेते। आपकी हंसी मुस्कुराहट थी और कलाम दो टूक' न बेकार न कोताह। आपके सहाबा की हंसी भी आप की पैरवी में मुस्कुराहट की हद तक ही होती।[41]

सार यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कमाल वाले अनुपम गुणों से सुसज्जित थे। आपके पालनहार ने आपको उच्च आचरण दे रखा था, यहां तक कि खुद उसने आपकी प्रशंसा करते हुए कहा—

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

"यक़ीनन आप श्रेष्ठ चरित्र वाले हैं।" (68:4)

और ये ऐसे गुण थे जिनकी वजह से लोग आपकी ओर खिंच आए, दिलों में आपकी मुहब्बत बैठ गयी और आपको नेतृत्व का वह पद प्राप्त हुआ कि लोग आप पर निछावर हो गए। इन ही गुणों की वजह से आपकी क़ौम की सख़्ती और अकड़ नर्मी में बदल गयी, यहां तक कि यह अल्लाह के दीन में जत्थे के जत्थे दाख़िल हो गयी।

याद रहे कि हमने पिछले पन्नों में आपके जिन गुणों का उल्लेख किया है वह आपके अछूते गुणों की कुछ छोटी-छोटी झलकियां हैं वरना आपके मज्द व शर्फ़ और शमाइल व ख़साइल की बुलन्दी और कमाल का यह आलम था कि उनकी हक़ीक़त और तह तक न पहुंचना संभव है, न उसकी गहराई नापी जा सकती है।

41) शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ 1/107

भला अस्तित्व में आए इस सब से महान इंसान की महानता के अन्त तक किसकी पहुंच हो सकती है जिस ने बुजुर्गी और श्रेष्ठता की सबसे ऊंची चोटी पर अपना नशेमन बनाया और अपने रब के नूर से इस तरह रौशन हुआ कि अल्लाह की किताब ही को उसका गुण बताया गया यानी-----

"क़ारी नज़र आता है, हक़ीक़त में है क़ुरआन"

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

ए अल्लाह दुरुद भेज मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनकी औलाद पर जिस तरह तूने दुरुद भेजा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर और उनकी औलद पर यक़ीनन तू प्रशंसा के लायक़ और बुजुर्ग है। ए अल्लाह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनकी औलाद को बर्कत दे जिस तरह तूने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद को बर्कत दी बेशक तू प्रशंसा के लायक और बुजुर्ग है।

16 रमज़ानुल मुबारक 1404 हि०
17 जून 1984 ई०

सफ़िय्युर्रहमान मुबारकपुरी
हुसैनाबाद, मुबारकपुर
ज़िला आज़मगढ़ (उ०प्र०) भारत

ग्रन्थ-सूची

ग्रन्थ	लेखक
1. अख़बारुल किराम बि-अख़बारिल मस्जिदिल हराम	1. शहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद अल-असदी अल-मक्की
2. अल-अदबुल मुफ़रद	2. मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुख़ारी
3. अल-अअलाम	3. ख़ैरुद्दीन अज़-ज़िरकली
4. अल-बिदाया वन-निहाया	4.इस्माईल बिन कसीर अद-दिमश्क़ी
5. बुलूग़ुल मराम मिन अदिल्लतिल अहकाम	5.अहमद बिन हज्र अल-असक़लानी
6. तारीख़ु अरज़िल क़ुरआन	6.सैयद सुलैमान नदवी
7. तारीख़े इस्लाम	7.अक्बर शाह ख़ान नजीबाबादी
8. तारीख़ुल-उमम वल-मुलूक	8.इब्ने जरीर अत-तबरी
9. तारीख़ु उमर बिन अल-ख़त्ताब	9. अबुल फ़र्ज अब्दुर्रहमान बिन अल-जौज़ी
10. तोहफ़तुल-अहवज़ी	10. अबुल अली अब्दुर्रहमान अल-मुबारकपुरी
11. तफ़सीर इब्ने कसीर	11. इस्माईल बिन कसीर अद-दिमश्क़ी
12. तफ़हीमुल-क़ुरआन	12. सैयद अबुल-अअला अल-मौदूदी
13. तलक़ीहु फ़ुहूमि अहलिल-असर	13. अबुल-फ़र्ज अब्दुर्रहमान बिन अल-जौज़ी
14. जामिउत-तिरमिज़ी	14. अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरा अत-तिरमिज़ी
15. अल-जिहाद फ़िल-इस्लाम (उर्दू)	15. सैयद अबुल-अअला अल-मौदूदी
16. ख़ुलासतुस-सियर	16. मुहिब्बुद्दीन अबू जअफ़र अहमद बिन अब्दुल्लाह अत-तबरी
17. रहमतुल लिल आलमीन	17. मुहम्मद सुलैमान सलमान मनसूरपुरी
18. रसूले अकरम की सियासी ज़िंदगी	18. डाक्टर हमीदुल्लाह (पेरिस)
19. अर्रौज़ुल-अनफ़	19. अबुल-क़ासिम अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह अस-सुहैली
20. ज़ादुल-मआद	20. हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम
21. सफ़्फ़ुत्तफ़ासीर	
22. सुनन इब्ने माजा	22. अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा अल-क़ज़वीनी
23. सुनन अबी दाऊद	23. अबू-दाऊद सुलैमान अल-अशअस-अस सिजिस्तानी
24. सुनन अन-निसाई	24. अबू अब्दुर्रहमान अहमद बिन शुऐब अन-निसाई
25. अस-सीरतुल हलबिय्या	25. इब्ने बुरहानुद्दीन
26. अस-सीरतुन-नबविय्या	26. अबू मुहम्मद अब्दुल-मलिक बिन हिशाम बिन अय्यूब अल-हमीरी
27. शरह शुज़ूरुज़-ज़हब	27. अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह जमालुद्दीन बिन यूसुफ़ अल-मअरुफ़ बि-इब्ने हिशाम अल-अंसारी
28. शरह सहीह मुस्लिम	28. अबू ज़करिया मुहयुद्दीन यहया बिन शर्फ़ अन-नववी
29. शरह अल-मवाहिबुल लदुन्निय्या	29. अज़-ज़रक़ानी
30. अश-शिफ़ा बि तअरीफ़ि हुक़ूक़िल-मुसतफ़ा	30. अल-क़ाज़ी अयाज़
31. सहीह अल-बुख़ारी	31. मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुख़ारी
32. सहीह मुस्लिम	32. मुस्लिम बिन अल-हज्जाज अल-क़ुशैरी
33. सहीफ़तु हबक़ूक़	
34. सुल्हुल-हुदैबिय्या	34. मुहम्मद अहमद बाशमील
35. अत-तबक़ातुल-कुबरा	35. मुहम्मद बिन सअद
36. औनुल-मअबूद शरह अबी दाऊद	36. अबुत-तय्यब शमसुल-हक़ अल-अज़ीमाबादी
37. ग़ज़वा-ए-उहद	37. मुहम्मद अहमद बाशमील

39. गज़वा-ए-ख़ैबर	39. मुहम्मद अहमद बाशमील
40. गज़वा-ए-बनी कुरैज़ा	40. मुहम्मद अहमद बाशमील
41. फ़त्हुल-बारी	41. अहमद बिन अली बिन हजर अल-अस्क़लानी
42. फ़िक्हुस-सीरा	42. मुहम्मद अल-ग़ज़ाली
43. फ़ी ज़िलालिल-कुरआन	43. सैयद कुतुब
44. अल-कुरआनुल-करीम	
45. क़ल्बु जज़ीरतिल-अरब	45. फ़ुवाद हमज़ा
46. मा ज़ा ख़सिरल-आलमु बि- इनहितातिल-मुस्लिमीन	46. सैयद अबुल हसन अली अल-हसनी अन नदवी
47. मुहाज़िरातु तारीख़िल- उममिल-इस्लामिय्या	47. शेख़ मुहम्मद अल-ख़ुज़री बिक
48. मुख़्तसर सीरतुर्रसूल	48. शेख़ुल-इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब अन-नजदी
49. मुख़्तसर सीरतुर्रसूल	49. शेख़ अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब अन-नजदी
50. मदारिकुत तनज़ील	50. लिन-नराफ़ी
51. मिरआतुल मफ़ातीह भाग 2	51. शेख़ उबैदुल्लाह अर्रहमानी अल-मुबारकपुरी
52. मुरुजुज़-ज़हब	52. अबुल हसन अली अल-मसऊदी
53. अल-मुस्तदरक	53. अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद अल-हाकिम अन्नीशापूरी
54. मुसनद अहमद	54. अल-इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल
55. मुसनद अद-दारिमी	55. अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अद-दारिमी
56. मिश्कातुल-मसाबीह	56. वलीयुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अत-तबरेज़ी
57. मुअजमुल बुलदान	57. याकूत अल-हमवी
58. अल-मवाहिबुल लदुन्निय्या	58. अल-कस्तलानी
59. मुअत्ता अल-इमाम मालिक	59. अल-इमाम मालिक बिन अनस अल-असबही
60. वफ़ाउल-वफ़ा	60. अली बिन अहमद अस-समहूदी